विनय-कोश

पं० महावीर प्रसाद मालवीय ।

॥ श्री ॥

विनयकोश

जिसमें

गोस्वामी तुलसीदासजी कृत विनय-पत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों को अकारादि क्रम से संग्रह करके उनके विविध अर्थ दिये गये हैं और ऐतिहासिक शब्दों की व्याख्या श्रुति, स्मृति, शास्त्र और पुराणों से खोज कर की गई है।

सम्पादक

पण्डित महावीर प्रसाद मालवीय वैद्य उपनाम "वीर कवि"
ज्ञानपुर, बनारस-स्टेट।

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

संवत् १९८० विक्रमाब्द।

प्रथम बार] [मूल्य २) रुपया

प्रस्तावना

गोस्वामी तुलसीदासजी कृत विनय-पत्रिका में संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी और प्रान्तिक भाषाओं के शब्द न्यूनाधिक रूप में सम्मिलित हैं। प्रत्येक शब्दों का जब तक अर्थज्ञान न हो तब तक पदों का भावार्थ समझना कठिन है। रामचरितमानस के शब्दों का कोश बन चुका है; किन्तु विनय-पत्रिका के शब्दों का संग्रह करके अकारादि क्रम से किसी कोश का निर्माण नहीं हुआ है, इस अभाव की पूर्ति के लिये यह 'विनयकोश' तैयार किया गया है। इसमें अमर-कोश, श्रीधरकोश, मङ्गलकोश, हिन्दीशब्दसागर, (पकार पर्यन्त) तुलसी-शब्दार्थप्रकाश, वृहन्निघण्टुरत्नाकर, करीमुल्लुग़ात और लुग़त किशवरी से सहायता ली गई है।

"विनयकोश" में जहाँ कहीं अर्बी अथवा फ़ारसी भाषा के शब्द आये हैं उनके सामने ब्राकेट के भीतर अर्बी तथा फ़ारसी शब्द लिखा गया है। अनेकार्थी शब्दों के अर्थ लिखने में १-२-३-४-५ इत्यादि अंक देकर तब उनके पर्यायी शब्द लिखे गये हैं। उन अंकों से यह प्रकट किया गया है कि इस शब्द के इतने प्रकार के अर्थ हैं। अधिकांश प्रसिद्ध शब्दों के अन्य पर्यायी शब्द जहाँ कोश में आये हैं उनके अर्थ में पहले प्रसिद्ध शब्द ही कामा के बीच में अथवा बिना कामा के भी दिये गये हैं। उससे यह तात्पर्य्य सूचित किया गया है कि कामा के भीतर का शब्द किम्बा अर्थ में लिखा हुआ प्रथम शब्द देखने से उसका पूरा विवरण मिलेगा। जैसे-'ब्रह्मा' शब्द के नीचे विशेष विवरण है और विरञ्चि, विधि, विधाता, धाता आदि अन्य पर्यायी नाम जो अन्यत्र यथास्थान कोश में मिलेंगे उनके सामने अर्थ में पहले 'ब्रह्मा' शब्द मिलेगा। प्रायः सभी शब्दों के विषय में

इसी प्रकार समझना चाहिये। समासवाले पदों का+ऐसा चिह्न देकर अधिकांश पदच्छेद कर दिया गया है और ऐतिहासिक शब्दों के सामने उनके इतिहास भी दिये गये हैं।

प्रायः हिन्दी कोश निर्माण करनेवाले महाशयों ने वर्ण एवम् मात्रा के क्रम भिन्न भिन्न प्रकार से रक्खे हैं। उनमें संस्कृत न जाननेवालों को शब्दों के ढूँढ़ने में कठिनता पड़ती है इसलिए विनयकोश में हमने अक्षर और मात्राओं का क्रम हिन्दी वर्णमाला के अनुसार ही निम्न प्रकार रक्खा है—"अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, क्ष, त्र, ज्ञ, । निरीक्षक महाशयों को उपर्युक्त प्रणाली की ओर ध्यान रख कर विनयकोश के शब्द ढूँढ़ने में बड़ी सरलता होगी।

भाषा-लालित्य के लिये मूल-पदों में गोस्वामीजी ने 'श और ण' अक्षरों का वहिष्कार कर दिया है तथा 'व' के स्थान में अधिकांश 'ब' का प्रयोग किया है। कविजी की शैली के अनुसार शब्दों का संग्रह करके हमने उनके शुद्ध रूप को ले आने की चेष्टा की है। जैसे—सिव शब्द मूल के अनुसार है उसके अर्थ में शुद्ध संस्कृत 'शिव' शब्द रक्खा है और उसका पूरा विवरण भी वहीं किया गया है। पाठक इस बात का स्मरण रक्खें कि ' ' इस प्रकार के कामा के बीच शब्दों में विस्तार का संकेत है।

मि० फाल्गुण शुक्ल ७ शुक्रवार
संवत् १९७९ विक्रमाब्द।

सज्जनों का कृपाकांक्षी—
महावीर प्रसाद मालवीय वैद्य "वीर कवि"
ज्ञानपुर, बनारस-स्टेट।

विनय-कोश

अ—संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का पहला अक्षर। इसका उच्चारण कण्ठ से होता है, इससे यह कण्ठय वर्ण कहलाता है। (२) जिस शब्द के पहले यह लगता है उसका अर्थ उलटा हो जाता है, जैसे—अकाल, अनादि, अनीश्वर, अकारण आदि। (३) ब्रह्मा, विरञ्चि, विधि। (४) विष्णु, अच्युत, हरि। (५) सूर्य, भानु, रवि। (६) इन्द्र, बासव, देवराज। (७) पवन, वायु, हवा। (८) कुवेर, वैश्रवण, धनद। (९) अग्नि, अनल, आग। (१०) सरस्वती, कीर्त्ति, महिमा। (११) संसार, जगत, लोक। (१२) अमृत, अमिय, सुधा। (१३) उत्पन्न करनेवाला।

अकण्टक—कण्टक रहित, निर्विघ्न, निरुपाधि, बाधा हीन, बेखटक, बिना रोकटोक। (२) शत्रु विहीन, विनाशत्रु का, बैरी रहित।

अकथ / अकथनीय—अवर्णनीय, अनिर्वचनीय, जो कहा न जा सके। कहने की सामर्थ्य के बाहर। जिसका वर्णन न हो सके।

अकनि-अकनना, कान लगा कर सुनना। आहट लेना। ध्यान देने पर कान में पड़नेवाला शब्द।

अकम्पन—अकम्प्य, स्थिर, अचल, अटल, न काँपनेवाला। (२) दृढ़, कठोर, मज़बूत। (३) एक राक्षस का नाम। रावण का अनुचर।

अकरन—कर्म का अभाव, कर्म न किए हुए के समान होना। कर्म का निष्फल होना। (२) ईश्वर, परमात्मा, इन्द्रियों से रहित। (३) बिना कारण का, अकारण, बेसबब। (४) न करने योग्य, दुष्कर, जिसका करना कठिन हो।

अकल—कला रहित, अखण्ड, सर्वाङ्ग पूर्ण। (२) अङ्गहीन, अनङ्ग, जिसके अवयव न हो। (३) परमात्मा का एक विशेषण।

अकसर—(अर्बी)। एकाकी, अकेला, तनहा, बिना साथ का। (२) प्रायः, बहुधा, बहुत करके।

अकाज—कार्य की हानि, विघ्न, बिगाड़, हर्ज, नुक़सान। (२) दुष्कर्म, खोटा काम, बुराकार्य (३) निष्प्रयोजन, व्यर्थ, बिना काम।

अकाथ—व्यर्थ, अकारथ, निरर्थक, वृथा, निष्फल, फ़ज़ूल, वाहियात।

अकाम—निस्पृह, इच्छा रहित, बिना काम का, कामना बिहीन। (२) व्यर्थ, निष्प्रयोजन, बिना काम के। (३) दुष्कर्म, खोटा काम, बुरा कार्य।

अकारन—अकारण, बिना कारण का, हेतु रहित, बिना वजह का।

अकाल—दुकाल, दुर्भिक्ष, कहत, महँगी। (२) कुसमय, अनवसर, अनुपयुक्त समय। (३) घाटा, कमी न्यूनता।

अकास—आकाश, व्योम, गगन।

अकिञ्चन—निर्धन, दरिद्र, दीन, कङ्गाल, ग़रीब, धनहीन, मुहताज, जिसके पास कुछ न हो। (२) परिग्रह त्यागी, आवश्यकता से अधिक धन का संग्रह न करनेवाला (३) जिसको भोगने के लिए कर्म न रह गया हो, कर्म शून्य, साधु धर्म।

अकुण्ठ—तीक्ष्ण, तीव्र, जो कुण्ठित न हो, चोखा, पैना, तेज़। (२) उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया।

अकुल—कुल रहित, कुटुम्ब बिहीन, बिना कुल का। (२) अकुलीन, नीचकुल, बुरे ख़ानदान का। (३) तुच्छ, क्षुद्र, कमीना।

अकुलाति / अकुलाती—अकुलाना का वर्तमान कालिक रूप, घबड़ाती है, व्याकुल होती है।

अकुलाना—व्यग्र होना, व्याकुल होना। दुखी होना, घबड़ाना, बेचैन होना। (२) ऊबना, आवेग में आना, जल्दी करना, उकताना (३) मग्न होना, विह्वल होना, लीन होना।

अकुलीन—नीच कुल का, तुच्छ वंश में उत्पन्न, कुजाति, क्षुद्र, कमीना।

अकृपाल—कृपालुता रहित, निर्दय, निठुर। (२) क्रोधित, कुपित, नाराज़।

अकेल—अकेला, एकाकी, तनहा, बिना साथ का। (२) अद्वितीय, निराला, लासानी। (३) केवल, निरार, सिर्फ़।

अखण्ड—खण्ड रहित, अविच्छिन्न, समग्र, अटूट, सम्पूर्ण, समूचा, जिसके टुकड़े न हों। (२) लगातार, सिलसिलेवार, एकरस। (३) निर्विघ्न, बेरोक, बेखटके।

अखारा, अखारो—अखाड़ा, मल्लयुद्ध के लिए बना हुआ स्थान, कुश्ती लड़ने की जगह। सभा, दरबार, मजलिस, रङ्गशाला, रङ्गभूमि। (२) साधुओं की साम्प्रदायिक मण्डली, जमायत, सन्तों का अड्डा। (४) नाचनेवालों का दल, नर्त्तकों का गिरोह, तमाशा दिखाने और गवैयों का झुण्ड। (५) अजिर, आँगन, सहन, मैदान।

अखिल—सम्पूर्ण, समग्र, सब, बिल्कुल, पूरा, तमाम। (२) अखण्ड, सर्वाङ्ग पूर्ण, अटूट।

अग—अचर, स्थावर, न चलनेवाला, जड़। (२) पर्वत, पहाड़, गिरि। (३) वृक्ष, विटप, पेड़। (४) सूर्य, दिवाकर, भानु। (५) शरीर, अङ्ग, देह। (६) मूर्ख, अनजान, अनाड़ी। (७) सर्प, साँप, कीरा।

अँग—शरीर, अङ्ग, देह। (२) अंश, भाग, हिस्सा।

अगनित—अगणित, असंख्य, अनगिनत, जिसकी गणना न हो। बेशुमार, बेहिसाब। (२) अनेक, बहुत, अपार।

अगति—दुर्गति, दुर्दशा, बुरीगति, ख़राबी (२) मोक्ष की अप्राप्ति, बन्धन, नरक, मोक्ष का उलटा, मृत्यु के पीछे शव की दाह क्रिया आदि का यथाविधि न होना। (३) अचल पदार्थ, जड़, जो चल न सके।

अगम, अगम्य—दुर्गम, न जाने योग्य, पहुँच के बाहर, अवघट, गहन, जहाँ कोई जा न सके। (२) कठिन, विकट मुशकिल,। (३) दुर्लभ, अलभ्य, न मिलने योग्य। (४) अत्यन्त, अपार, बहुत। (५) दुर्बोध, बुद्धि के परे, न जानने योग्य (६) अथाह, अगाध, बहुत गहरा।

अगर—अगरु, योगज, वृक्ष विशेष। (२) फ़ारसी-भाषा—यदि, जो, जौन।

अगरु—प्रवर, योगज, अगर, एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है। इसका पेड़ आसाम, भूटान और पूर्वी बङ्गाल में होता है। यह देवताओं के पूजन में धूप किया जाता है तथा औषधि के काम में भी आता है। इसकी असली काली लकड़ी पानी में डूब जाती है और बहुत महँगी बिकती है।

अगाध—अतलस्पर्श, अथाह, बहुत गहरा। (२) अत्यन्त, असीम, अपार, बहुत। (३) दुर्बोध, अगम्य, न जानने योग्य।

अगिन, अगिनि—'अग्नि', अनल, पावक। (२) अगिया-बास, अगियासन, यज्ञकुश। (३) अगिना, बया, एक चिड़िया जो गौरैया के समान होती है।

अगिलो—अगला, अग्रभाग का, आगे का। (२) प्रथम, पूर्ववर्त्ती, पहिला। (३) प्राचीन, विगत समय का, पुराना। (४) आगामी, भविष्य, आनेवाला। (५) प्रधान, अग्रगण्य, अगुवा। (६) पूर्वज, पुरखा, पुरनियाँ। (७) अन्य, अपर, दूसरा। (८) चतुर, चालाक, होशियार आदमी।

अगुन—अगुण, गुण रहित, निर्गुण, धर्म वा व्यापार शून्य, सत-रज-तम विहीन। (२) निर्गुणी, मूर्ख, अनाड़ी। (३) अवगुण, दूषण, दोष।

अगोचर—अव्यक्त, अप्रगट, इन्द्रियातीत, बोधागम्य, अप्रत्यक्ष, अदृश्य, जिसका अनुभव इन्द्रियों को न हो, जो देखने में न आवे।

अग्नि—अनल, कृशानु, ज्वलन, दहन, धूमध्वज, धनञ्जय, पावक, वह्नि, वर्हि, विभावसु, वैश्वानर, वायुसख, शिखाबास, सप्तार्चि, हुतभुक्, अगिन, आग, आगि, आगी, उष्णता, तेज का गोचर

रूप, पञ्चतत्वोँ मेँ से एक। वैद्यक मतानुसार अग्नि तीन प्रकार की है, काष्ठ आदि के जलने से उत्पन्न होनेवाली, आकाश में बिजली से और हृदयस्थित पित्त रूप जठराग्नि। अग्नि कोण के देवता, आठ लोकपालों में से एक (२) पाचनशक्ति, पचने की ताक़त, हाज़मा की क़ूअत। (३) ज्वाल, अर्चि, शिखा। (२) बड़वानल, और्व, बाड़व। (५) चीता चित्रक, वह्नि नामा एक प्रकार का छोटा वृक्ष। (६) निम्बू नीबू, निबुआ। (७) सुवर्ण, सोना, कञ्चन।

अग्र—अगला, आगे का, प्रथम, प्रधान, प्रमुख, श्रेष्ठ, उत्तम। (२) अगला भाग, आगे का हिस्सा, सिरा, नोक।

अग्रकृत—आगे का किया हुआ, पूर्वसम्पादित, प्रथम का रचा, पहले का बनाया हुआ।

अग्रणी—प्रधान, अगुवा, मुखिया।

अग्रगण्य—जिसकी गिनती पहिले हो, प्रधान, अगुवा, मुखिया। (२) श्रेष्ठ, उत्तम, बड़ा।

अघ—पाप, पातक, दुष्कर्म। (२) दुःख, व्यथा, कष्ट। (३) व्यसन, अकर्त्तव्य का प्रेम, बुरी लत। (४) अघासुर नाम का दैत्य जिसको श्रीकृष्णचन्द्रजी ने मारा था।

अघट—न होने योग्य, जो घटित न हो सके, जो कार्य मेँ परिणत न हो सके। (२) कठिन, दुर्घट, कष्टसाध्य। (३) अनुपयुक्त, अयोग्य, बेमेल, जो ठीक न घटे। (४) अक्षय, न चुकने योग्य, जो कम न हो। (५) स्थिर, एकरस, जो सम भाव रहे।

अघटित—असम्भव, न होने योग्य, जिसके होने की सम्भावना न हो, जो हुआ न हो, ग़ैरमुमकिन। (२) अनिवार्य, अमिट, अवश्य होनेवाला। (३) अनुपयुक्त, अयोग्य, अनुचित, ना मुनासिब।

अघधाम—पापायतन, पातक गृह, पाप का घर।

अघबन—वृजिनाटवी, पाप का वन, बड़ा पापी।

अघवृन्द—पाप का समूह, अघराशि।

अघरासि—कलुषपुञ्ज, पाप की राशि।

अघाइ } अघाई }—'अघाना' शब्द का भूतकालिक रूप, अफरना, छकना, भोजन करके तृप्त होना। (२) प्रसन्न होना, सन्तुष्ट होना, मन भरना। (३) थकना, ऊबना, पूर्णता को पहुँचना।

अघाउ—सन्तुष्टता, तृप्ति, इच्छा पूरी होना।

अघात—'आघात' प्रहार, चोट। (२) अघाना, पेट भरना, भोजन से तृप्त होना।

अघाति } अघाती }—'अघाना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप, तृप्त होती है।

अघाना—तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, इच्छा का पूर्ण होना, मन का भरना। (२) भोजन वा पान से तृप्त होना, अफरना, छकना। (३) प्रसन्न होना, हर्ष से परिपूर्ण, खुश होना। (४) थकना, ऊबना, उबियाना। (५) पूर्णता को पहुँचना, हद तक प्राप्त होना।

अघाहीँ—तृप्त होते हैँ, अघाते हैँ, पेट भरते हैँ।

अघी—पापी, किल्विषी, अधर्मी।

अङ्क—चिह्न, आँक, छाप, निशान। (२) लेख, अक्षर, लिखावट। (३) आँकड़ा, संख्या का चिह्न, अदद, एक दो आदि। (४) भाग्य, तक़दीर, क़िस्मत। (५) धब्बा, कलङ्क, दाग़। (६) अनखा, डिठौना, काजल की बिन्दी। (७) अँकवार, गोद, कनियाँ। (८) शरीर, अङ्ग, देह। (९) बार, दफ़ा, मर्तबा। (१०) पाप, अघ, अधर्म। (११) दुःख कलेश, कष्ट। (१२) आलिङ्गन करना, परिरम्भण करना, प्यार से गले लगना।

अङ्कित—चिह्नित, छाप किया हुआ, निशान हुआ। (२) लिखित, खचित, लिखा हुआ। (३) वर्णित, कथित, कहा हुआ।

अङ्कुस—अङ्कुश, आँकुस, गजबाग, हाथी को क़ाबू मेँ रखने का हथियार।

अङ्ग—शरीर, तन, देह, बदन, जिस्म। (२) अंश, खण्ड, भाग, हिस्सा। (३) प्रकार, भेद, तरह। (४) उपाय, यत्न, तदबीर। (५) सुहृद, सहायक, तरफ़दार। (६) ओर, कइती,

तरफ़। (७) प्रकृति, स्वभाव, आदत। (८) प्रिय, प्रियवर, प्यारे। (९) वेद के छे अङ्ग, यथा—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द। (१०) अवयव, शरीर का एक देश वा अङ्ग। (११) योग के आठ अङ्ग, यथा—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि।

अङ्गद—बिजायठ, बाजूबन्द, बहूँटा, बाहु पर पहनने का गहना। (२) बाली के पुत्र, तारानन्दन, सुग्रीव का भतीजा। (३) लक्ष्मणजी के दो पुत्रोँ मेँ से एक का नाम, लक्ष्मणनन्दन।

अङ्गहीन—(अङ्ग+हीन) पङ्गु, पङ्गुल, लुञ्ज, जिसके अङ्ग कोई नष्ट हुए होँ। (२) निरुपाय, साधन रहित, जिसके पास कोई यत्न की सामग्री न हो। (३) कामदेव, अनङ्ग।

अङ्घ्रि—चरण, पाँव, गोड़।

अँचइ } —पान करके, आचमन करके, पीकर।
अँचई } —अचवना, धोना, भोजन के पीछे हाथ मुँह धोकर कुल्ली करना।

अचर—स्थावर, जड़, न चलनेवाला, अचल।

अचरज—आश्चर्य्य, अचम्भा, तअज्जुब।

अचल—निश्चल, स्थिर, ठहरा हुआ, जो न चले, अटल, अविचल। (२) चिरस्थायी, टिकाऊ, सब दिन रहनेवाला। (३) दृढ़, पक्का, नहीं डिगनेवाला। (४) पर्वत, शैल, पहाड़। (५) अजेय, अटूट, जो नष्ट न हो।

अचला—पृथ्वी, धरती, ज़मीन। (२) स्थिर, जो न चले, ठहरी हुई।

अचलाकार—(अचल+आकार,) पर्वताकार, पहाड़ की आकृति का। (२) पृथ्वी के आकार का।

अचिन्त } —कल्पनातीत, बोधागम्य, अज्ञेय,
अचिन्त्य } जिसका चिन्तन न हो सके, जो ध्यान मेँ न आ सके। (२) अतुल, अकूत, जिसका अटकल न हो सके। (३) निश्चिन्त, चिन्ता रहित, बेफ़िक्र। (४) आशातीत, आशा से अधिक, उम्मेद से ज़्यादह। (५) आकस्मिक, अकस्मात, बिना सोचा विचारा।

अचेत—संज्ञा हीन, चेतना रहित, मूर्च्छित, बेसुध, बेहोश। (२) व्याकुल, विह्वल, विकल। (३) असावधान, बेपरवाह, ग़ाफ़िल। (४) अनजान, अनभिज्ञ, बेख़बर। (५) मूर्ख, मूढ़, नासमझ। (६) जड़, अज्ञानता, माया।

अच्युत—विष्णु, विश्वम्भर, केशव। (२) नित्य, अविनाशी, दृढ़, स्थिर, अटल (३) जो गिरा न हो, जो त्रुटि न करे, जो न चूके, जो विचलित न हो।

अछत—विद्यमान, उपस्थित, मौजूद। (२) उपस्थिति में, विद्यमानता में, मौजूदगी में, रहते हुए, सामने (३) आखत, अक्षत, चावल। (४) अतिरिक्त, सिवाय, अलावे।

अज—ब्रह्मा, विधि, विरञ्चि। (२) अजन्मा, स्वयम्भू, जिसका जन्म न हो। (३) विष्णु, माधव, हरि। (४) शिव, महेश, महादेव। (५) कामदेव, अनङ्ग, मार। (६) छाग, बकरा, खसी। (७) माया, शक्ति, शाम्बरी। (८) सूर्यवंशीय एक राजा जो दशरथ के पिता थे।

अजर—जरा रहित, जो बूढ़ा न हो, जो सदा एकरस रहे। (२) जो न पचे, नहीं हज़म होनेवाला, न पचनेवाला।

अजहुँ } —अद्यापि, अजौं, अब भी, अबतक,
अजहूँ } अभी तक।

अजाची—अयाची, न माँगनेवाला, सम्पन्न, भरा पूरा, अयाचक, जो न माँगे।

अजान—अबोध, नासमझ, अनभिज्ञ, अनजान, अबूझ, जो न जाने। (२) अपरिचित, अज्ञात, न जाना हुआ।

अजामिल—यह कन्नौज देश का रहनेवाला ब्राह्मण था। एक शूद्रा व्यभिचारिणी पर मोहित होकर अपनी विवाहिता पत्नी को त्याग दिया और मदिरापान, मांसभक्षण, हिंसा, चोरी, बटपारी, जुआ खेलना आदि कुकर्मों में अनुरक्त धर्मभ्रष्ट होकर जीवन निर्वाह करने लगा। कोई भी पापकर्म और दुराचार करने से मुँह न मोड़ता, दिन रात प्राणियों को

दुःख देने के सिवाय उसको दुनियाँ में दूसरा काम ही न था। इसी प्रकार असंख्यों दुष्कर्म करते उसकी आयु के अट्ठासी वर्ष बीत गये, इसके दस पुत्र थे। छोटे पुत्र का नाम महात्मा के उपदेश से नारायण रक्खा और उस पर बड़ा प्रेम करता था। अन्त समय में यमदूत जब उसका प्राण निकालने लगे तब सङ्कट पड़ने पर अपने प्रिय पुत्र नारायण का नाम लेकर पुकारा। नाम के प्रभाव से विष्णु भगवान के पार्षदों ने पहुँच कर उसे यमदूतों से छुड़ा लिया और वैकुण्ठ धाम को ले गये। इसकी विस्तृत कथा हमारे बनाये छन्दोबद्ध अभिनव विश्रामसागर नामक ग्रन्थ में है।

अजित—अपराजित, अजीत; जो जीता न जासके, जो किसी से जीता न गया हो। (२) विष्णु, केशव, मुरारि। (३) शिव, शङ्कर, महादेव।

अजिर—आँगन, अँगनाई, चौक, सहन। (२) पवन, वायु, हवा। (३) शरीर, तनु, देह। (४) दादुर, मेंढक, मेघा। (५) इन्द्रियों के विषय।

अजेय—अजीत, दुर्जय, न जीतने योग्य, जिसको कोई जीत न सके।

अजै—अजय, पराजय, हार। (२) अजैय, अजीत, जो जीता न जा सके।

अजौं—अजहूँ, अब भी, अबतक।

अँजोरि—उजियाला करके, प्रकाश करके, मसाल आदि से अन्धकार दूर करके।

अञ्जन—सुरमा, आँजन, काजल, नेत्र रोग नाशक औषधि। (२) रात्रि, रजनी, रात। (३) स्याही, मसी, रोशनाई। (४) माया, अज्ञान, मोह (५) एक पर्वत का नाम।

अञ्जना, अञ्जनी—कुञ्जर नामक बन्दर की पुत्री, केशरी नामक बन्दर की भार्या जिसके गर्भ से हनूमानजो उत्पन्न हुए थे। हनूमान की माता। कहीं कहीं अञ्जना को गौतम मुनि की कन्या लिखा है।

अञ्जलि, अञ्जली—अँजुरी, दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाया हुआ सम्पुट, दोनों हथेलियों के मिलाने से बीच का गहरा स्थान जिसमें पानी वा और कोई वस्तु भर सकते हैं।

अटकठ—अटखट, अण्डबण्ड, टेढ़ामेढ़ा, बेढङ्गा, अट्ट सट्ट।

अटकै—'अटकना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप, अड़ै, ठहरै, रुकै,। (२) उलझै, फँसै, लगा रहे। (३) प्रेम में फँसै, प्रीतिमें लगै, स्नेह करै। (४) विवाद करै, झगड़ै, लड़ै।

अटत—'अटना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप, चलता है, घूमता है, विचरता है, फिरता है। (२) यात्रा करता है, सफ़र करता है, जगह जगह घूमता है।

अटपट—ऊटपटाङ्ग, अण्डबण्ड, टेढ़ामेढ़ा, उलटा-पुलटा। (२) दुस्तर, विकट, कठिन, मुशकिल (३) लटपट, लड़खड़, गिरता पड़ता। (४) जटिल, गूढ़, गहिरा (५) अद्भुत, अनोखा, अजीब।

अटल—अचल, निश्चल, स्थिर, जो न टले। (२) ध्रुव, पक्का, निश्चय। (३) नित्य, सतत, जो सदा बना रहे। (४) अवश्यम्भावी, जो अवश्य हो, जिसका होना निश्चित हो।

अटवी—वन, कानन, जङ्गल।

अणिमा—आठों सिद्धियों में से पहली सिद्धि जिससे योगी जन सूक्ष्म रूप धारण करके किसी को दिखाई नहीं पड़ते।

अणिमादि, अणिमादिक—(अणिमा+आदिक) आठों सिद्धियाँ, यथा-अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व।

अणु—सूक्ष्मकण, परमाणु, छोटा टुकड़ा। (२) अतिसूक्ष्म, अत्यन्त छोटा, जो दिखाई न दे वा कठिनता से देख पड़े।

अण्ड—ब्रह्माण्ड, विश्व, लोकमण्डल। (२) अण्डा, पेशी, बैज़ा, वह गोल वस्तु जिसमें पक्षी, जलचर आदि अण्डज जीव पैदा होते हैं।

अण्डज—अण्डे से उत्पन्न होनेवाले जीव, जैसे सर्प, पक्षी, मछली, इत्यादि।

अतनु—शरीर रहित, देह विहीन, बिना तन का (२) कामदेव, मन्मथ, मार (३) स्थूल, पुष्ट, मोटा।

अतर्क, अतर्क्य } —अचिन्त्य, अनिर्वचनीय, कल्पनातीत, जिसके विषय में किसी प्रकार की विवेचना न हो सके, जिस पर तर्क वितर्क न हो सके, जो अनुमान में न आवे।

अति—अधिक, बहुत, ज़्यादा। (२) अधिकता, सीमा का उल्लङ्घन, ज़्यादती।

अतिकल्प—महाकल्प, बड़ाकल्प, महाप्रलय।

अतिकाय—दीर्घकाय, स्थूल, मोटा, बड़े डील डौल का, बड़ा लम्बा चौड़ा। (२) रावण का पुत्र, एक राक्षस का नाम जिसको लक्ष्मणजी ने मारा था।

अतिकाल—विलम्ब, देर, अरसा। (२) अनुपयुक्त अवसर, कुसमय, बेमौक़ा।

अतिथि—अभ्यागत, पाहुन, मेहमान, जो हर तिथि में न आवे, जिसके आने का समय निश्चित न हो। (२) व्रात्य, मुनि, यती, वह सन्यासी जो एक रात से अधिक कहीं न ठहरता हो।

अतिसय, अतिहि } —अतिशय, अत्यन्त, बहुत, ज़्यादा

अतीत—व्यतीत, भूत, गत, बीता हुआ, गुज़रा हुआ। (२) विरक्त, निर्लेप, असङ्ग (३) पृथक, न्यारा, अलग (४) मृत, मृतक, मरा हुआ (५) विरक्त साधु, बीतराग सन्यासी, यति (६) अतिथि, पाहुन, मेहमान (७) अतिरिक्त, परे, बाहर।

अतीति—'अतीत' व्यतीत, बीती हुई।

अतुल—अद्वितीय, अतोल, जिसकी तुलना न हो सके। (२) अमित, असीम, अपार, अनन्त। (३) अनुपम, उपमा रहित, बेजोड़, लासानी।

अतुलनीय—अपरिमित, बहुत अधिक, बे अन्दाज़, जिसका वज़न वा अटकल न हो सके। (२) अनुपमेय, अद्वितीय।

अतुलित—'अतुल' असंख्य, बेशुमार।

अत्यन्त—अतिशय, बहुत अधिक, हद से ज़्यादा, बे अन्दाज़।

अत्युक्ति—(अति × उक्ति), बढ़ावा, मुबालिग़ा, बढ़ा चढ़ा कर वर्णन की शैली। (२) एक अलङ्कार का नाम जिसमें शूरता उदारता आदि गुणों का अद्भुत और अतथ्य वर्णन होता है, जैसे—जाचक तेरे दान तें, भये कलपतरु भूप।

अथ—अब, अनन्तर, उपरान्त। (२) एक मङ्गल सूचक शब्द जो ग्रन्थ के आरम्भ में लिखा जाता है, जैसे—अथ विनयपत्रिका लिख्यते।

अथर्बन—अथर्वण, अथर्व, ब्रह्मवेद, चौथावेद, चार वेदों में से एक का नाम। इस वेद में शान्ति, पौष्टिक, अभिचार आदि का प्रतिपादन विशेष है। उपवेद इसका धनुर्वेद है। कर्म काण्डियों को इस वेद का जानना परमावश्यक है।

अथवा—या, वा, किम्बा, एक वियोजक अव्यय जिसका प्रयोग उस स्थान पर होता है जहाँ दो वा कई शब्दों में से किसी एक का ग्रहण अभीष्ट हो।

अथाई—बैठक, चौबारा, दालान, बैठने की जगह, वह मकान जहाँ लोग इष्टमित्रों से मिलते जुलते और बैठ कर बातें करते हैं। (२) सभा, गोष्ठी, दरबार, मजलिस। (३) घर के सामने का चबूतरा जिस पर लोग उठते बैठते हैं। (४) वह स्थान जहाँ बस्ती के लोग इकट्ठा होकर बातचीत वा पञ्चायत करते हैं। पञ्चों के बैठने का स्थान।

अद, अदन } —भक्षण, खाना, भोजन करना।

अदभ्र—समूह, अनन्त, अपार। (२) अधिक, बहुत, ज़्यादा।

अदिति—दक्षप्रजापति की कन्या, कश्यप मुनि की भार्य्या, देवताओं की माता, जिससे सूर्य्य आदि तेंतीस देवता उत्पन्न हुए हैं।

अदिन—दुर्दिन, कुदिन, बुरादिन, कुसमय, सङ्कट का समय (२) अभाग्य, दुर्भाग्य, दुर्दैव, बदक़िस्मती।

अद्रस्य—अदृश्य, अलख, जो दिखाई न दे। (२) अन्तर्द्धान, लुप्त, ग़ायब। (३) परोक्ष, अगोचर, जिसका ज्ञान पाँच इन्द्रियों को न हो।

अद्भुत—आश्चर्य्यजनक, विस्मय कारक, विलक्षण, विचित्र, अपूर्व, अलौकिक, अनूठा, अजीब।

(२) काव्य के नौ रसों में से एक रस जिसमें अनिवार्य्य विस्मय स्थायीभाव की परिपुष्टता दिखाई जाती है।

अद्रि—पर्वत, गिरि, पहाड़।

अद्रिचारी—पर्वतों पर विचरनेवाला, पहाड़ पर चलनेवाला, शैल विहारी।

अद्वितीय—अनुपम, बेजोड़, जिसकी बराबरी का दूसरा न हो। (२) एकाकी, अकेला, एक। (३) अद्भुत, विलक्षण, अजीब (४) प्रधान, मुख्य, प्रमुख।

अद्वैत—द्वितीय रहित, अनुपम, बेजोड़ (२) एकाकी, अद्वितीय, अकेला। (३) ब्रह्म, ईश्वर, परमात्मा।

अद्वैतदर्सी—अद्वैतदर्शी, ब्रह्मदर्शी, ईश्वर को देखनेवाला। (२) अनुपम दृष्टिवाला, ब्रह्म और जीव को एक माननेवाला, ब्रह्मज्ञानी।

अध—अधः, नीचे, तले। (२) अर्द्ध, आधा, निस्फ़।

अधन—धनहीन, निर्धन, कङ्गाल, ग़रीब।

अधम—पापी, अधर्मी, अघी, वह जो सब की निन्दा करे (२) निकृष्ट, नीच, खोटा, बुरा।

अधमई—अधमता, नीचता, खोटापन।

अधर—ओष्ठ, विम्बाधर, ओठ। (२) अन्तरिक्ष, शून्य स्थान, आकाश, बिना आधार का स्थान। (३) अस्थिर, चञ्चल, जो पकड़ में न आवे। (४) अधम, नीच, बुरा। (५) अधूरा, पूरा न होना, अद्धड़ में रहना। (६) असमञ्जस होना, दुविधा में पड़ना, पसोपेश होना। (७) पाताल, नागलोक, नीचे का लोक।

अधरम } अधर्म } —पाप, पातक, दुराचार, असद्कर्म, अन्याय, कुकर्म, बुराकाम।

अधर्मी—पापी, कुकर्मी, दुराचारी।

अधार—आधार, अवलम्ब, सहारा।

अधि—पर, ऊपर, ऊँचा, एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाया जाता है। (२) प्रधान, मुख्य, ख़ास। (६) अधिक, बहुत, ज़्यादा।

अधिक—विशेष, बहुत, ज़्यादा। (२) अतिरिक्त, शेष, सिवा, फ़ालतू, बचा हुआ। (३) एक अलङ्कार का नाम जिसमें आधेय को आधार से अधिक वर्णन करते हैं।

अधिकाई—अधिकता, विपुलता, विशेषता, बहुतायत, ज़्यादती। (२) महत्व, महिमा, बड़ाई।

अधिकार—आधिपत्य, प्रभुत्व, प्रधानता, कार्यभार, मलिकई। (२) स्वत्व, हक़, अख़्तियार। (३) प्राप्ति, दावा, कब्ज़ा। (४) सामर्थ्य, शक्ति, क्षमता। (५) योग्यता, परिचय, ज्ञान, जानकारी, लियाक़त (६) शीर्षक, प्रकरण, सिरा। (७) अधिक, विशेष, बहुत।

अधिकारी—प्रभु, स्वामी, मालिक। (२) स्वत्वधारी, हक़दार, उपयुक्त पात्र, अख़्तियार रखनेवाला।

अधिकृत—प्राप्त, उपलब्ध, हाथ में आया हुआ, अधिकार में प्राप्त हुआ। (२) अध्यक्ष, अधिकारी, मालिक।

अधिप } अधिपति } —अधीश, स्वामी, मालिक, नायक, मुखिया, सरदार, अफ़सर, हाकिम। (२) राजा, भूपाल, नरेश।

अधिभौतिक—आधिभौतिक, व्याघ्र सर्पादि जीवों कृत बाधा, जाव व शरीरधारियों द्वारा प्राप्त हुई पीड़ा।

अँधियार—अन्धकार, तम, अँधेरा।

अँधियारो—अँधियार, अँधेरा, अन्धकार। (२) उत्साह हीनता, उदासी-खिन्नता।

अधिष्ठाता—अध्यक्ष, प्रधान, नियन्ता, मुखिया, करनेवाला। (२) कार्य का अधिकार रखनेवाला। किसी काम का देख भाल करनेवाला, वह जिसके हाथ में किसी कार्य्य का भार हो।

अधीत—पठित, पढ़ा हुआ, बाँचा हुआ।

अधीन—आश्रित, वशीभूत, आज्ञाकारी, दबैल, मातहता, वश का, क़ाबू का। (२) विवश, पराधीन, लाचार। (३) सेवक, दास, टहलू।

अधीनता—आज्ञाकारिता, परवशता, मातहती। (२) दीनता, लाचारी; बेबसी, ग़रीबी।

अधीर—कादर, डरपोंक, बुज़दिल। (२) उद्विग्न, व्यग्र, व्याकुल, बेचैन, घबड़ाया हुआ। (३)

चञ्चल, उतावला, आतुर, बेसब्र। (४) असन्तोषी, लालची, लोभी।

अधीरता—व्याकुलता, बेचैनी, घबराहट। (२) आतुरता, चञ्चलता, उतावलापन।

अधीस, अधीस्वर—अधीश, अधीश्वर, अध्यक्ष, स्वामी, प्रभु, मालिक, सरदार। (२) राजा, भूपाल, नरेश।

अधोमुख—नीचे मुख किये हुए, औंधा, उलटा।

अध्ययन—पठनपाठन, विद्याभ्यास, पढ़ाई।

अध्यक्ष—अधीश, स्वामी, मालिक। (२) प्रधान, मुखिया, नायक। (३) अधिकारी, अधिष्ठाता, किसी कार्य का स्वत्व रखनेवाला।

अन—यह अव्यय स्वर से आरम्भ होनेवाले शब्दों के पहिले निषेध सूचित करने के लिए लगाया जाता है जैसे—अनन्त, अनीश्वर, अनधिकार इत्यादि। परन्तु हिन्दी में यह उपसर्ग कभी कभी सस्वर होता है और व्यञ्जन से आरम्भ होनेवाले शब्दों के पहिले भी लगाया जाता है, जैसे-अनचाह, अनबोल, अनरीति आदि।

अनइस—अनैस, अहित, बुराई। (२) अनिष्ट, अप्रिय, ख़राब, जो इष्ट न हो, बुरा, जिसकी इच्छा न हो।

अनख—कोप, क्रोध, रिस, गुस्सा, नाराज़ी। (२) दुःख, ग्लानि, खिन्नता। (३) ईर्षा, द्वेष, डाह। (४) अनरीति, कुचाल, झंझट। (५) अनखा, डिठौना, काजल की बिन्दी। (६) नख रहित, बिना नख का।

अनगनित, अनगिनत—अगणित, अनगिनती, असंख्य, बेशुमार, बहुत, जिसकी गिनती न हो।

अनघ—पाप रहित, निष्पाप, निर्दोष, बेगुनाह। (२) पवित्र, शुद्ध, निर्मल। (३) वह जो पाप न हो, पुण्य, धर्म्म।

अनङ्ग—कामदेव, मनसिज, रतिनाथ। (२) देह रहित, बिना शरीर का, अतनु।

अनङ्गअरि—शिव, रुद्र, कामदेव के शत्रु।

अनचह्यो—अनिच्छित, अप्रिय, नहीं चाहा हुआ।

अनचाह—न चाहनेवाला, अनचाहत, प्रेम न करनेवाला मनुष्य। (२) अनिच्छा, अप्रिय, नहीं सुहानेवाला।

अनछिन्न—अखण्ड, जो छिन्न भिन्न न हो।

अनजान—अज्ञ, अनभिज्ञ, नासमझ, नादान। (२) अपरिचित, अज्ञात, बिना जाना हुआ, बिना पहिचान का। (३) सीधा, सूध, भोलाभाला।

अनट—उपद्रव, अत्याचार, अनीति, अन्याय।

अनत—अन्यत्र, अन्नत, और कहीं, दूसरी जगह, पराये स्थान में। (२) सीधा, अनम्र, जो झुका हुआ न हो।

अनन्त—(अन+अन्त) असीम, अपार, बेहद, जिसका अन्त न हो, बहुत बड़ा। (२) असंख्य, अनेक, बेशुमार। (३) अविनाशी, अक्षय, नित्य। (४) विष्णु, केशव, वैकुण्ठनाथ। (५) लक्ष्मण, लछिमन, सुमित्रानन्दन। (६) शेषनाग, अहिपति, फणीश। (७) बलराम, बलदेव, हलधर। (८) आकाश, व्योम, गगन। (६) अभ्रक, अभ्र, वज्र। (१०) सम्हालू, सिन्दुवार, मेउँड़ी का वृक्ष (११) अनन्त चतुर्दशी, भादों शुक्ल चौदस की तिथि। (१२) एक गहना जो बाहु पर पहना जाता है और चौदह सूत का एक गण्डा जो भादों शुक्ल चतुर्दशी के दिन पूजित कर बाहु पर बाँधते हैं।

अनन्य—(अन+अन्य) दूसरा नहीं, अन्य से सम्बन्ध न रखनेवाला, एकनिष्ठ, एक ही में लीन, अनन्यभक्त।

अनपायनी—अनपायिनी, निश्चल, अचल, स्थिर, जिसके पाँव न हो, जो चलनेवाली न हो।

अनपावनी—अप्राप्य, दुर्लभ, अनपायी, जो दूसरे को न मिले, औरों को न मिलनेवाली। (२) अनश्वर, नित्य, जिसका कभी नाश न हो।

अनबोल—अनबोला, न बोलनेवाला, बिना वाणी का। (२) मौन, चुप्पा, अवाक। (३) गूँगा, मूक, बेज़बान।

अनभल—अहित, हानि, बुराई।

अनभले—निन्दित, हेय, ख़राब, बुरा।

अनभाई—अनभाया, अप्रिय, अरुचिकर, नापसन्द, जो न भावे, जिसकी चाह न हो।
अनमोल—अमूल्य, बेमोल, जिसका कोई मूल्य न हो सके। (२) मूल्यवान्, बहुमूल्य, क़ीमती। (३) सुन्दर, श्रेष्ठ, उत्तम।
अनय—अनीति, अन्याय, अत्याचार। (२) दुर्भाग्य, विपत्ति, अमङ्गल।
अनयास—अनायास, अचानक, अकस्मात्।
अनरथ—अनर्थ, उपद्रव, ख़राबी।
अनरस—रस हीनता, शुष्कता, विरसता, रुखाई। (२) कोप, गुस्सा, रिस। (३) दुःख, निरानन्द, उदासी। (४) मनोमालिन्य, अनबन, मनमोटाव, बिगाड़। (५) विरोध, बैर, बुराई।
अनरीति—कुप्रथा, कुरीति, कुचाल, बुरा रिवाज़। (२) अन्यथाचार, अनुचित व्यवहार, ख़राब तरीक़ा।
अनर्थ—विरुद्ध अर्थ, अयुक्त अर्थ, उलटा मतलब। (२) उपद्रव, उत्पात, अनिष्ट, आपद्, विपद्, बुराई, ख़राबी, ग़ज़ब।
अनर्थकारी—उपद्रवी, उत्पाती, अनिष्टकारी, हानिकारी, नुक़सान पहुँचानेवाला। (२) विरुद्ध अर्थ करनेवाला, उलटा मतलब निकालनेवाला।
अनर्थरूप—उत्पात की सूरत, उपद्रव का रूप, हानि का स्वरूप।
अनल—अग्नि, अनल, पावक। (२) चित्रक, चित्ता, चीता। (३) भल्लातक, भिलावाँ, भेला।
अनवद्य—अनिन्द्य, निर्दोष, बेऐब।
अनवरत—अजस्त्र, अहर्निश, निरन्तर, लगातार, सदैव, हमेशा।
अनवरषे—बिनावर्षाके, अनबरसे, बिना बरसे।
अनवस्थित—अस्थिर, क्षुब्ध, अशान्त, चञ्चल, अधीर। (२) निराधार, निरवलम्ब, बेसहारा, बेठिकाना।
अनबिचार—बिना विचार, बूझ रहित, नासमझी।
अनहित / अनहितो—अहित, अपकार, बुराई, हानि। (२) अमित्र, अपकारी, शत्रु।
अनाचार—(अन+आचार) निन्दित आचरण, कुव्यवहार, कदाचार, भ्रष्टता, दुराचार। (२) कुप्रथा, कुरीति, कुचाल।
अनाज—अन्न, दाना, ग़ल्ला।
अनाथ—नाथ हीन, स्वामी रहित, बिना मालिक का। (२) असहाय, अशरण, जिसे कोई सहारा न हो। (३) दीन, दुखी, मुहताज। (४) बिना माबाप का, जिसका पालन पोषण करनेवाला कोई न हो, लावारिस।
अनाथपति—अनाथों के स्वामी, असहायों के प्रभु, दीनों के मालिक। (२) श्रीरामचन्द्रजी।
अनादर—निरादर, अवज्ञा, आदर का अभाव। (२) अपमान, अप्रतिष्ठा, तिरस्कार, बेइज्ज़ती। (३) एक अलङ्कार का नाम जिसमें प्राप्त वस्तु के तुल्य दूसरी अप्राप्त वस्तु की इच्छा के द्वारा प्राप्त वस्तु का अनादर सूचित किया जाता है।
अनादि—आदि रहित, जिसका आदि न हो, जो सब दिन से हो। जिसके आरम्भ का कोई काल न हो। स्थान और काल से अबद्ध। (२) शास्त्रकारों ने ईश्वर, जीव और प्रकृति इन तीनों को अनादि माना है।
अनामय—निरामय, रोगरहित, स्वस्थ, आरोग्य, चङ्गा, तन्दुरुस्त। (२) निर्दोष, दोषरहित, बेऐब।
अनायास—सहसा, बिना परिश्रम, अकस्मात्, बिना उद्योग, अचानक, बिना प्रयास, एकाएक, बैठे बिठाये, अनयास, बेमिहनत, सहज में, सुगमता पूर्वक, आसानी से।
अनारम्भ—आरम्भ रहित, अनुष्ठान विहीन।
अनिकेत—स्थान रहित, बिना घर का, जिसे रहने के लिए मकान न हो। खानाबदोश, उठल्लू। (२) सन्यासी, यती, विरक्त।
अनित्य—नश्वर, क्षणभङ्गुर, नाशवान्। (२) अध्रुव, अस्थायी, चन्दरोज़ा, जो सब दिन न रहे। (३) असत्य, झूठा, मिथ्या।
अनियत—अनिश्चित, अनिर्दिष्ट, अनिर्द्धारित, जो नियत न हो। (२) अस्थिर, अदृढ़, जिसका ठीक ठिकाना न हो। (३) अपरिमित, असीम, अनन्त। (४) असाधारण, असामान्य, ग़ैरमामूली।

अनिल—पवन, वायु, हवा।

अनिस—अनिश, निरन्तर, अनवरत, लगातार।

अनिष्ट—अवाञ्छित, अनभिलषित, इच्छा के प्रतिकूल। जो इष्ट न हो। (२) अमङ्गल, अहित, बुराई, हानि, ख़राबी।

अनिहै—आनेगा, ले आवेगा। ग्रहण करेगा।

अनिहैँ—आनेंगे, ले आवेंगे। ग्रहण करेंगे।

अनी—नोक, सिरा, कोर। (२) अनीक, सेना, दल। (३) समूह झुण्ड, वृन्द। (४) ग्लानि, खेद, रञ्ज। (५) नाव का अगला भाग, गलही।

अनीक—सेना, कटक, फ़ौज। (२) समूह, झुण्ड, यूथ। (३) युद्ध, सङ्ग्राम, लड़ाई। (४) निकृष्ट, बुरा, ख़राब।

अनीति—अन्याय, अनय, बेइन्साफ़ी, नीतिका विरोध, नीति के विपरीत कार्य। (२) अत्याचार, दुराचार, अन्धेर। (३) अधमाई, नटखटी, शरारत।

अनीप—अनिप, सेनापति, फ़ौज का अफ़सर।

अनीस—अनीश, ईशरहित, अनाथ, बिना मालिक का। (२) असमर्थ, अयोग्य, अलायक़। (३) स्वतन्त्र, निरङ्कुश, आज़ाद। (४) जीव, आत्मा, ईश्वर से भिन्न वस्तु। (५) विष्णु, अच्युत, केशव। (६) सब से ऊपर, जिसके ऊपर कोई न हो, सर्वेश्वर। (७) अनिष्ट, बुरा, ख़राब।

अनीह—इच्छा रहित, निस्पृह, निष्काम, जिसको किसी बात की चाह न हो। (२) निश्चेष्ट, चेष्टा रहित, बेपरवाह।

अनु—यह उपसर्ग जिन शब्दों के पहिले लगता है उन में इन अर्थों का संयोग करता है—(१) पीछे। जैसे—अनुगामी, अनुकरण (२) सदृश। जैसे—अनुकूल, अनुरूप। (३) साथ। जैसे—अनुग्रह, अनुपान। (४) प्रत्येक। जैसे—अनुदिन, अनुक्षण (५) बारम्बार। जैसे—अनुशीलन, अनुगुणन। (६) अणु, सूक्ष्मकण, छोटा टुकड़ा।

अनुकथन—कथोपकथन, वार्त्तालाप, क्रमबद्ध वचन, बातचीत, कहे के पीछे कहना।

अनुकम्पा—अनुग्रह, दया, कृपा। (१) सहानुभूति, समवेदना, हमदर्दी।

अनुकरन—अनुकरण, समान आचरण, देखादेखी कार्य्य करना, नक़ल। (२) पीछे आनेवाला, अनुगामी, पीछे गमन करनेवाला।

अनुकूल } अनुकूला }—अनुसार, सदृश, समान, मुआफ़िक़। (२) हितकर, सहाय, पक्ष में रहनेवाला। (३) प्रसन्न, ख़ुश, रज़ामन्द। (४) ओर, कइती, तरफ़। (५) वह नायक जो एकही विवाहिता स्त्री में अनुरक्त हो। (६) राम-दल के एक बन्दर का नाम। (७) एक अलङ्कार का नाम जिसमें प्रतिकूल से अनुकूल वस्तु की सिद्धि दिखाई जाती है।

अनुक्रम—क्रम, सिलसिला, तरतीब।

अनुग—अनुगामी, अनुयायी, पीछे चलनेवाला। (२) सेवक, दास, टहलू, चाकर, नौकर।

अनुगन्ता—अनुगमन करनेवाला, पीछे जानेवाला, अनुगामी। (२) सहाय करनेवाला, मददगार।

अनुगम्य—प्राप्त, लब्ध, मिला हुआ। (२) पीछे जाने योग्य, साथ गमन करने लायक़, बराबर पहुँचनेवाला।

अनुगामी—अनुयायी, अनुगमन करनेवाला, पीछे जानेवाला। (२) सेवक, दास, चाकर। (३) समान आचरण करनेवाला, तुल्य व्यवहारी। (४) आज्ञाकारी, आज्ञा माननेवाला, हुक्म पर चलनेवाला। (५) सहबास वा सम्भोग करनेवाला।

अनुग्रह—कृपा, दया, मिहरबानी।

अनुग्रहीत—अनुगृहीत, उपकृत, जिस पर अनुग्रह किया गया हो। (२) कृतज्ञ, उपकार माननेवाला, एहसानमन्द।

अनुचर—अनुगामी, अनुगत, पीछे चलनेवाला। (२) सेवक, दास, नौकर। (३) सहचर, साथी, सङ्गी।

अनुज—लघुबन्धु, छोटा भाई, जो पीछे उत्पन्न हुआ हो

अनुतप्त—उत्तप्त, तपा हुआ, गरम। (२) दुखी, खेदयुक्त, रञ्जीदा।

अनुताप—तपन, दाह, जलन । (२) दुःख, खेद, रञ्ज । (३) पश्चात्ताप, पछतावा, अफ़सोस ।

अनुदिन—नित्यप्रति, प्रतिदिन, रोज़मर्रा ।

अनुपम—अनुपमेय, उपमा रहित, बेजोड़, बेमिस्ल, बेनज़ीर, जिसकी बराबरी का दूसरा न हो, लासानी ।

अनुपमेय—अनुपम, उपमा रहित, बेनज़ीर ।

अनुपान—औषधि का सहकारी, दवा का सहयोगी, वह वस्तु जो औषधि के साथ वा ऊपर से खाई जाय ।

अनुबन्ध—संसर्ग, लगाव, बन्धन । (२) आरम्भ, उत्थान, शुरू । (३) अनुसरण, साथ साथ चलना, पीछे चलना । (४) आदि अन्त, योग्यायोग्य, आगापीछा । (५) व्याकरण मैं वह प्रत्यय का लोप होनेवाला इत्संज्ञक साङ्केतिक वर्ण जो गुण वृद्धि आदि के लिये उपयोगी हो । (६) बात, पित्त और कफ़ मैं से जो अप्रधान हो । (७) वेदान्त मैं एक एक विषय का अधिकरण ।

अनुभये—उत्पन्न हुए, उपजे, भये ।

अनुभव—उपलब्ध ज्ञान, तजरबा, परीक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान । (२) स्मृति भिन्न ज्ञान, वह ज्ञान जो साक्षात् करने से प्राप्त हो, करने से पदार्थ ज्ञान । (३) ज्ञान, विवेक, समझदारी ।

अनुभवगम्य—उपलब्ध ज्ञान से प्राप्य, परीक्षा द्वारा मिला हुआ ज्ञान, जो समझदारी तजरबा करने से प्राप्त हो ।

अनुभवति—अनुभव करती है, बोध करती है, जिसने देख सुन कर जानकारी प्राप्त की हो ।

अनुभवे—अनुभव किया, देख सुन कर स्वयम् करके जाना, तजरबा किया ।

अनुभवै—अनुभव हो, जानकारी हो, तजरबा हो । (२) जान पड़े, समझ में आवे, सूझै ।

अनुमत—आज्ञा, अनुज्ञा, हुक्म ।

अनुमति—सम्मति, सलाह, राय । (२) आज्ञा, अनुज्ञा, हुक्म, इजाज़त (३) चतुर्दशी युक्त पूर्णिमा, वह पूर्णिमा तिथि जिसमें चन्द्रमा की कला पूरी न हो

अनुमान—विचार, भावना, अटकल, अन्दाज़ा, क़यास ।

अनुयायी—अनुगामी, अनुग, पीछे चलनेवाला । (२) सेवक, दास, अनुचर ।

अनुरक्त—प्रेमयुक्त, आसक्त, अनुरागी । (२) लीन, लवलीन, आशिक़ ।

अनुराग—प्रेम, स्नेह, मुहब्बत ।

अनुरूप—सदृश, समान, सरीखा, तुल्य रूप का । (२) अनुकूल, उपयुक्त, योग्य ।

अनुवर्त्ती—अनुगामी, अनुयायी, अनुसरण करने वाला, पीछे चलनेवाला । (२) सेवक, दास, चाकर ।

अनुशासन—आज्ञा, आदेश, हुक्म । (२) उपदेश, शिक्षा, सिखावन । (३) व्याख्यान, वक्तृता, विवरण ।

अनुसन्धान—अन्वेषण, खोज, ढूँढ़, जाँचपड़ताल, तलाश, तहक़ीक़ात । (२) चेष्टा, प्रयत्न, कोशिश । (३) अनुगमन, पश्चाद् गमन, पीछे लगना ।

अनुसर—अनुसार, समान, एकरूप ।

अनुसार—अनुकूल, सदृश, समान, मुआफ़िक़, अनुहार, एकरूप ।

अनुसृत्य—अनुसरण, अनुकरण, पीछे जाना । (२) प्रतिच्छाया, प्रतिलिपि, नक़ल ।

अनुहर—अनुहार, अनुकूल, योग्य ।

अनुहरत—अनुकूल, उपयुक्त, योग्य । (२) अनुसार, सदृश, समान ।

अनुहार—अनुसार, सदृश, समान, सरीखा, एकरूप, तुल्य, मुआफ़िक़ । (२) प्रकार, भेद, तरह । (३) आकृति, बनावट, गढ़न ।

अनुहारि—अनुसार, अनुकूल, मुताबिक़ । (२) समान, तुल्य, बराबर । (३) उपयुक्त, योग्य, लायक़ । (४) आकृति, चेहरा, मुखानी ।

अनूठा—अपूर्व, विलक्षण, विचित्र, अद्भुत, अनोखा, अजीब । (२) सुन्दर, अच्छा, बढ़िया ।

अनूप—अनुपम, उपमा रहित, अद्वितीय, बेजोड़ । (२) जलप्राय देश, वह स्थान जहाँ जल अधिक हो । (३) महिषी, भैंस ।

अनूपम—अनुपम, उपमारहित, अद्वितीय, जिसकी उपमा न हो। (२) सुन्दर, मनोहर।

अनृत—मिथ्या, असत्य, झूठ। (२) अन्यथा, विपरीत, उलटा।

अनेक—एक से अधिक, बहुत, ज़्यादा।

अनेरो—अनेरा, निष्प्रयोजन, मिथ्या, व्यर्थ, झूठ। (२) अन्यायी, दुष्ट, निकम्मा।

अनैसी—अप्रिय, अनिष्ट, जो इष्ट न हो, ख़राब।

अनैसे—दुष्ट भाव से, निकृष्ट रीति से, बुरी तरह से। (२) अहित चिन्तक, बुरी निगाह से देखने वाला, बुराई चाहनेवाला।

अनोखा—अद्भुत, विलक्षण, अनूठा, निराला। (२) नूतन, नवीन, नया। (३) सुन्दर, मनोहर, खूबसूरत।

अन्त—समाप्ति, अवसान, इति, अख़ीर (२)। पराकाष्ठा, अवधि, सीमा, हद, छोर, पार। (३) मृत्यु, मरण, अन्तकाल, विनाश। (४) परिणाम, फल, नतीजा। (५) शेषभाग, अन्तिम-अंश, पिछला हिस्सा। (६) समीप, निकट, नज़दीक। (७) दूर, बाहर, फ़ासले पर। (८) अन्तर, अन्तःकरण, हृदय, मन। (२) भेद, रहस्य, छिपा हुआ भाव, मन की बात।

अन्तक—यमराज, काल, यम। (२) नाशक, प्रलयकारी, अन्त करनेवाला। (३) मृत्यु, मौत, कज़ा। (४) ईश्वर, परमात्मा, नारायण। (५) शिव, रुद्र, ईशान। (६) सन्निपात ज्वर का एक भेद जो असाध्य और प्राणनाशक है।

अन्तकारी—अन्तकर, संहार करनेवाला, नाशकारी।

अन्तकाल—अन्तिम समय, मरणकाल, मरने का समय, मृत्यु, मौत, आख़िरी वक्त।

अन्तकृत—अन्तक, काल, विनाश करनेवाला।

अन्तर—विभिन्नता, भेद, अलगाव, फ़र्क़। (२) ओट, आड़, परदा। (३) अवकाश, बीच, फ़ासला। (४) छिद्र, छेद, सूराख़। (५) अन्य, और दूसरा। (६) अन्तःकरण, हृदय, मन। (७) पृथक्, अलग, जुदा। (८) भीतर, मध्य, अन्दर। (९) छिपाना, ढाँकना, दुराना। (१०) अन्तर्द्धान, ग़ायब, लुप्त।

अन्तरअयन—अन्तर्गृही, तीर्थों की एक परिक्रमा विशेष, तीर्थस्थल के भीतर पड़नेवाले प्रधान प्रधान स्थानों की यात्रा जो परिक्रमा के ढङ्ग से पूरी की जाती है।

अन्तर्गत—अन्तर्भूत, सम्मिलित, समाया हुआ, भीतर आया हुआ। (२) गुप्त, छिपा हुआ, भीतरी। (३) अन्तःकरणस्थित, हृदय के भीतर का, मन के बीच का। (४) मन, चित्त, हृदय।

अन्तर्द्धान—अदृश्य, अदर्शन, अन्तर्हित, तिरोहित, तिरोधान, अप्रगट, गुप्त, अन्तर्ध्यान, लोप, छिपाव, ग़ायब, छिपा हुआ।

अन्तर्ध्यान—अन्तर्द्धान, लुप्त, अलक्ष, ग़ायब।

अन्तर्यामी—भीतर की बात जाननेवाला, हृदय की बात का ज्ञान रखनेवाला, मन की बात का ज्ञाता। (२) हृदय में स्थित होकर प्रेरणा करने वाला, उर प्रेरक, मन को आज्ञा देनेवाला। (३) ईश्वर, परमेश्वर, चैतन्य।

अन्तःकरन—अन्तःकरण, हृदय, चित्त, मन।

अन्ध—अन्धा, नेत्रहीन, बिना आँख का। (२) अज्ञानी, अविवेकी, अनजान, मूर्ख। (३) असावधान, अचेत, ग़ाफ़िल। (४) उन्मत्त, मतवाला, मस्त। (५) अन्धकार, तम, अँधेरा। (६) पानी, जल, नीर।

अन्धक—अन्धा, नेत्रहीन मनुष्य, दृष्टि रहित व्यक्ति। (२) कश्यप और दिति का पुत्र एक दैत्य जिसके सहस्र सिर थे, यह अन्धक इसलिए कहलाता था कि देखते हुए भी मद के मारे अन्धों के समान चलता था। स्वर्ग से पारिजात लाते समय यह शिवजी के द्वारा मारा गया। इसीसे शिवजी को अन्धकारि वा अन्धकरिपु कहते हैं। (३) क्रोष्टी नामक यादव के पौत्र और युधाजित का लड़का। अन्धक नाम की यादवों की शाखा इन्हीं से चली। इनके भाई वृष्णि थे जिनसे वृष्णिवंशी यादव हुए, इसी वंश में श्रीकृष्ण

चन्द्रजी उत्पन्न हुए हैं। (४) बृहस्पति के बड़े भाई उतथ्यऋषि के पुत्र महातपा नामक ऋषि। इनकी माता का नाम ममता था।

अन्धकार—तिमिर, तमिस्र, तम, ध्वान्त, अँधियार, अँधेरा, महा अन्धकार को अन्धतमस, चारों ओर के अँधेरे को सन्तमस और थोड़े अन्धकार को अवतमस कहते हैं। (२) अज्ञान, मोह, अविवेक। (३) कान्तिहीनता, उदासी, ग़म।

अन्धकूप—अन्धेरा कुआँ, अन्धा कुआँ, वह इनारा जिसका पानी सूख गया हो और घास पात से ढका हो। (२) एक नरक का नाम।

अन्धकोरग—(अन्धक+उरग), अन्धक दैत्य रूपी सर्प, अन्धक दैत्य पर साँप का आरोप।

अन्धेर—अनीति, अन्याय, अविचार, । (२) उपद्रव, अत्याचार, ज़ुल्म। (३) अनर्थ, कुप्रबन्ध, भौसा, धींगाधींगी, गड़बड़।

अन्न—धान्य, अनाज, नाज, दाना, ग़ल्ला। (२) खाद्य पदार्थ, खाने की चीज़, भोज्य वस्तु। (३) ओदन, भात, पकाया हुआ चावल। (४) सूर्य, दिवाकर। (५) विष्णु, हरि। (६) पृथ्वी, धरती, ज़मीन। (७) प्राण, जीव, आत्मा। (८) पानी, सलिल, जल। (९) अन्य, और, दूसरा। (१०) विरूद्ध, विपरीत, उलटा।

अन्नपूरना—अन्नपूर्णा, अन्न की अधिष्ठात्री देवी, दुर्गा का एक रूप, पार्वती, काशी की प्रधान देवी हैं।

अन्ने—अन्य, और, दूसरे।

अन्य—भिन्न, दूसरा, और कोई, पराया, ग़ैर, अपर, अन्न।

अन्यथा—असत्य, मिथ्या, झूठ। (२) विरुद्ध, विपरीत, उलटा, और का और। (३) नहीं तो, नतो।

अन्याय } अन्याव } —अनीति, अविचार, अत्याचार, ज़ुल्म।

अन्ये—अन्य, और, दूसरे।

अप—यह उपसर्ग जिस शब्द के पहिले आता है उसके अर्थ में निम्न लिखित विशेषता उत्पन्न करता है। जैसे—(१) निषेध। यथा अपकार, अपमान, (२) दूषण। अपकर्म, अपकीर्त्ति। (३) विकृति। अपकुत्ति, अपाङ्ग। (४) विशेषता। अपहरण, अपकलङ्क। (५) आप का संक्षिप्त रूप जो यौगिक शब्दों में आता है, यथा-अपस्वार्थी, अपकाजी। (६) विरुद्ध, विपरीत, उलटा। (७) निकृष्ट, बुरा, ख़राब। (८) अधिक, बहुत।

अपकर्ष—नीचे को खींचना, गिराना, च्युत करना। (२) अपमान, निरादर, बेक़दरी, किसी वस्तु वा व्यक्ति के मूल्य वा गुण को कम समझना अथवा बतलाना। (३) न्यूनता, घटाव, उतार, कमी।

अपकार—अनभल, अहित, अनुपकार, बुराई, हानि, नुक़सान। (२) अनिष्ट साधन, द्वेष, द्रोह। (३) अपमान, तिरस्कार, अनादर। (४) असद् व्यवहार, अत्याचार, बुरा कर्म।

अपकारी—अनिष्ट-साधक, हानिकारक, बुराई करनेवाला। (२) विरोधी, द्वेषी, बैरी।

अपकीर्त्ति—अकीर्त्ति, अयश, निन्दा, अपकीरति, बदनामी।

अपजस—अपयश, दुष्कीर्त्ति, कलङ्क।

अपडर—मिथ्याभय, बिना डर के डरना, अपभय, अपनी ही भूल से व्यर्थ भयभीत होना। जैसे-अँधेरे में रस्सी को साँप अनुमान कर डर जाना। (२) भय, डर, शङ्का, भीति।

अपत—पापी, अधम, नीच। (२) आच्छादन रहित, नग्न, नङ्गा। (३) पत्रहीन, अपत्र, बिना पत्तों का। (४) निर्लज्ज, लज्जा रहित, बेहया।

अपति—दुर्दशा, दुर्गति, अगति। पति हीन, विधवा, बिना पति की।

अपनपौ—आत्मीयता, सम्बन्ध, अपनायत। (२) आत्मस्वरूप, आत्मभाव, निजस्वरूप। (३) ज्ञान, संज्ञा, सुध। (४) ममता, गर्व, अभिमान। (५) आत्मगौरव, मर्य्यादा, इज़्ज़त। (६) अपने को, अपने तईं।

अपना—आत्मीय, स्वजन, निज का।

अपनाइ—अपना कर, अपनी ओर करके, निज का बना कर।

अपनाइये—अपना किजिए, अपनी ओर कीजिए, निज का बनाइये।
अपनायत—अपनपौ, आत्मीयता, सम्बन्ध।
अपभय—अपडर, मिथ्याभय, झूठा डर।
अपमान—अवहेलना, अनादर, अवज्ञा, विडम्बना। (२) तिरस्कार, निन्दा, बेइज़्ज़ती।
अपयश—अपकीर्त्ति, अयश, दुष्कीर्त्ति, बदनामी, बुराई। (२) कलङ्क, लाञ्छन, धब्बा।
अपर—पूर्वका, पहिला, जो पर न हो। (२) अन्य, भिन्न, और, दूसरा। (३) अन्तिम, पिछला, जिससे कोई पीछे न हो।
अपरा—पदार्थ विद्या, लौकिक विद्या, अध्यात्म वा ब्रह्म विद्या के अतिरिक्त अन्य विद्या। (२) अन्या, और, दूसरी। (३) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि। (४) प्रतीची, पश्चिम, पच्छिम दिशा।
अपराध—पाप, दोष, जुर्म। (२) भूल, चूक, क़सूर।
अपराधी—पापी, दोषी, मुलज़िम। (२) अधर्मी, अन्यायी, चूक करनेवाला।
अपरिमित—अगणित, असंख्य, अनन्त। (२) असीम, अपार, बेहद।
अपवर्ग—मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति।
अपवर्गद—निर्वाण प्रद, मुक्ति दायक, मोक्षदाता। (२) श्रीरामचन्द्र, ईश्वर, परमात्मा।
अपवर्गपति—मोक्ष के स्वामी, मुक्ति के मालिक, श्रीरामचन्द्रजी
अपवाद—निन्दा, प्रवाद, अपकीर्त्ति, बुराई। (२) पाप, दोष, कलङ्क। (३) अनुमति, सम्मति, विचार, राय। (४) आज्ञा, आदेश, हुक्म। (५) प्रतिवाद, खण्डन, विरोध। (६) बाधक शास्त्र, विशेष, उत्सर्ग का विरोधी, वह नियम विशेष जो व्यापक नियम से विरुद्ध हो।
अपह—विनाशक, हनन, नाश करनेवाला।
अपहन—विनाश करना, हनन करना, मारना। (२) दूर करना, भगाना, हटाना।
अपहर, अपहरण—छीनना, ले लेना, हर लेना। (२) चोरी, लूट, डाकेज़नी। (३) सङ्गोपन, छिपाव, दुराव।
अपहरति—छीनती है, ले लेती है, हर लेती है।
अपहर्त्ता, अपहारक, अपहारी—छीननेवाला, ले लेनेवाला, हर लेनेवाला। (२) चोर, लुटेरा, डाकू।
अपाउ—उपद्रव; अत्याचार, अन्याय, अपाय। (२) निरुपाय, बेबस, बेक़ाबू।
अपाय—उपद्रव, अन्यथाचार, अत्याचार, अनीति, कुचाल। (२) लँगड़ा, अपाहिज, बिना पैर का। (३) असमर्थ, निरुपाय, बेक़ाबू। (४) ध्वंस, नष्ट, नाश। (५) विश्लेष, भिन्नता, अलगाव। (६) अपगमन, पिछड़ना, पीछे हटना।
अपार—सीमा रहित, अनन्त, असीम, जिसका पार न हो, बेहद। (२) असंख्य, अगणित, बेशुमार। (३) अधिक, बहुत, समूह।
अपावन—अपवित्र, अशुद्ध, मलिन।
अपि—निश्चय, ठीक। (२) भी, ही।
अपूर्व—अद्भुत, अलौकिक, अनोखा। (२) अनुपम, श्रेष्ठ, उत्तम। (३) अपूरब, जो पहिले न रहा हो।
अप्रमेय—अपरिमित, अपार, अनन्त, जो नापा न जा सके, अतोल।
अप्रिय—अरुचिकर, जो प्रिय न हो, जो पसन्द न हो। (२) शत्रु बैरी, दुश्मन।
अफल—निष्फल, फल हीन, जिसमें फल न हो, बिना फल का। (२) व्यर्थ, निष्प्रयोजन, बेमतलब। (३) वन्ध्या, बाँझ, बहिला।
अब—इस क्षण, इस समय, इस घड़ी। (२) इसके आगे, इतने पर भी, भविष्य में।
अबल—निर्बल, अशक्त, कमज़ोर।
अबला—स्त्री, नारी, औरत।
अबहीँ—इसी समय, इसी वक्त, अभी।
अबुझ—अबूझ, ना समझ, गँवार।
अबुध—अज्ञानी, नासमझ, मूर्ख।
अबूझ,—अबोध, अज्ञानी, नादान।
अबेर—विलम्ब, अतिकाल, देर।
अब्ज—कमल, सरोज, सरसिज। (२) जल से उत्पन्न वस्तु शङ्ख, चन्द्रमा, धन्वन्तरि आदि।
अब्द—वर्ष, साल, बरिस। (२) मेघ, बादल, घन।

(३) आकाश, व्योम, नभ। (४) मुस्ता, नागरमोथा। (५) कपूर, चन्द्र। (६) एक पर्वत का नाम।

अब्धि—समुद्र, सिन्धु, सागर। (२) सर, सरोवर, ताल।

अभय—निर्भय, निडर, बेख़ौफ़।

अभयदान—निर्भय करना, शरण देना, रक्षा करना, भय से बचाने का बचन देना।

अभयबाँह—निर्भय होने का बल देना, सहायता के लिए वचन देना, अपनी भुजाओं के बल से दूसरे को भय से बचाने के लिए प्रतिज्ञा बद्ध होना, अभयवचन, अभयदान।

अभाग—अभाग्य, दुर्दैव, बदक़िस्मती।

अभागा }
अभागी } —मन्दभाग्य, भाग्यहीन, बदक़िस्मत।

अभाग्य—प्रारब्धहीनता, दुर्दैव, अभाग, बुरा दिन, बदक़िस्मती।

अभाव—अविद्यमानता, अनस्तित्व, न होना, अदम मौजूदगी। (२) त्रुटि, कमी, टोटा, घाटा। (३) कुभाव, दुर्भाव, विरोध।

अभि—एक उपसर्ग जो शब्दों में लग कर उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है—(१) सामने। जैसे-अभ्युत्थान, अभ्यागत। (२) बुरा। जैसे-अभियुक्त। (३) इच्छा। जैसे—अभिलाषा। (४) समीप। जैसे-अभिसारिका। (५) बारम्बार, अच्छी तरह। जैसे-अभ्यास। (६) दूर। जैसे-अभिहरण। (७) ऊपर। जैसे-अभ्युदय।

अभिअन्तर—अभ्यन्तर, भीतर, अन्दर।

अभिचार—पुरश्चरण, अथर्व वेदोक्त मन्त्र, यन्त्र द्वारा मारण और उच्चाटन आदि हिंसाकर्म। (२) तन्त्र के प्रयोग जो छे प्रकार के होते हैं। मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और वशी-करण। स्मृति में इन कर्मों को उपपातकों में माना है।

अभिप्राय—तात्पर्य्य, आशय, प्रयोजन, अर्थ, मतलब, गरज़, इरादा।

अभिमत—मनोनीत, वाञ्छित, इष्ट, पसन्द का। (२) मत, सम्मति, राय। (३) अभिलाषित वस्तु, मनचाही बात, चाहा हुआ। (४) विचार, अभिप्राय, मन का भाव।

अभिमान—अहङ्कार, गर्व, अहमिति, घमण्ड, ग़रूर, अहमत्व।

अभिमानी—अहङ्कारी, गर्वीला, घमण्डी।

अभिराम—सुन्दर, रम्य, प्रिय, मनोहर, आनन्द दायक। (२) सुख, आनन्द, चैन।

अभिरामिनी—आनन्द दायिनी, सुख देनेवाली, चैन दानी। (२) रमण करनेवाली, शोभा पसारने वाली, मनोहारिणी।

अभिलाख—अभिलाषा, मनोरथ, कामना।

अभिलाष—इच्छा, कामना, मनोरथ, चाह, ख़ाहिश। (२) वियोग-शृङ्गार के अन्तर्गत दस दशाओं में से एक, प्रिय से मिलने की कामना।

अभिलाषी—आकांक्षी, इच्छा करनेवाला, ख़ाहिशमन्द।

अभीष्ट—अभिमत, अभिप्रेत, मनचाही बात, वाञ्छित, चाहा हुआ, इच्छित।

अभेरा—मुठभेड़, टक्कर, रगड़ा, दरेर। (२) दरार, दर्रा, पृथ्वी का फटा हुआ स्थल जो प्रायः कीचड़ सूखने पर होता है।

अभै—अभय, निर्भय, बेडर।

अभ्यन्तर—मध्य, अभि-अन्तर, बीच। (२) हृदय, मन, चित्त। (३) भीतर, अन्दर।

अभ्यास—अनुशीलन, आवृत्ति, साधन, मश्क़, पूर्णता प्राप्त करने के लिए बार बार किसी काम को करना। (२) आदत, बान, टेव, रब्त। (३) एक अलङ्कार का नाम जिसमें किसी दुष्कर बात को सिद्ध करनेवाले कार्य्य का कथन होता है।

अमङ्गल—अकल्याण, अशुभ, मङ्गल रहित।

अमर—चिरजीवी, दीर्घजीवी, बहुत दिनों तक जीनेवाला, सब दिन जीवित रहनेवाला। (२) देवता, विबुध, सुर। (३) पारद, रसेन्द्र, पारा। (४) अस्थिसंहारी, हड़जोड़, लता विशेष जो टूटी हड्डी जोड़ने में काम आती है।

अमरपुर—अमरावती, अमरपुरी, देवताओं का नगर, इन्द्रलोक, देवलोक।

अमरष—अमर्ष, रिस, क्रोध, गुस्सा। (२) असहिष्णुता, अक्षमा, वह द्वेष जो ऐसे मनुष्य का कोई अपकार न कर सकने के कारण उत्पन्न होता है जिसने अपने गुणों का तिरस्कार किया हो। (३) एक सञ्चारी भाव जिसमें दूसरे के अहङ्कार को नष्ट करने की उत्कट इच्छा होती है।

अमरेश—इन्द्र, अमरपति, वासव।

अमल—निर्मल, स्वच्छ, साफ़। (२) निर्दोष, अनघ, निरपराध। (३) प्रभाव, शक्ति, असर। (४) भोगकाल, समय, वक्त। (५) व्यसन, बान, आदत, टेव, लत। (६) अधिकार, शासन, हुकूमत। (७) व्यवहार, आचरण, साधन। (८) अभ्रक, अभ्र, गगन। (६) नशा, भङ्ग गाँजा आदि।

अमलाम्बु—(अमल+अम्बु), निर्मल जल, साफ़ पानी। स्वच्छ सलिल।

अमान—निरभिमान, गर्व रहित, सीधासादा। (२) अप्रतिष्ठित, अनादृत, मान रहित, तुच्छ। (३) परिमाण रहित, अपरिमित, बहुत, बेहद। (४) शरण, पनाह, रक्षा।

अमानी—अहङ्कारशून्य, निराभिमान, गर्वहीन। (२) मनमानी व्यवस्था, अपने मन की कारवाई, अन्धेर।

अमाय—माया रहित, निष्कपट, छलहीन।

अमाया—निर्लिप्त, अमाय, माया रहित, निर्लेप। (२) निःस्वार्थ, निष्कपट, निरछल।

अमित—अपरिमित, असीम, बेहद, जिसका परिमाण न हो। (२) अधिक, बहुत, बहु।

अमिय
अमी } —अमृत, सुधा, पियूष।

अमृत—पियूष, अमृत, सुधा, अमिय, पीयूष, अमी, वह पदार्थ जिसके पीने से जीव अमर हो जाता है। पुराणानुसार यह समुद्र मथन से निकले हुए १४ रत्नों में से एक रत्न माना जाता है। (२) पानी, जल, नीर। (३) सुस्वादु द्रव्य, मधुर पदार्थ, मीठी वस्तु। (४) मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति। (५) यज्ञ के पीछे की बची हुई सामग्री, खीर, अन्नादि। (६) वह वस्तु जो बिना माँगे मिले। (७) औषधि, दवा। (८) क्षीर, दुग्ध, दूध। (६) पारा। (१०) बच्छनाग विष।

अमोघ—अव्यर्थ, अचूक, निष्फल न होनेवाला, लक्ष्य पर पहुँचनेवाला, खाली न जानेवाला।

अमोल—अमूल्य, अनमोल, जिसका मूल्य निर्द्धारित न हो सके।

अम्ब—माता, जननी, अम्बा। (२) दुर्गा, पार्वती।

अम्बक—आँख, नेत्र, नयन। (२) जनक, पिता, बाप। (६) ताम्र, ताम, ताँबा।

अम्बर—आकाश, व्योम, गगन। (२) वस्त्र, पट, कपड़ा। (३) मेघ, घन, बादल। (४) अभ्रक, अभ्र, अबरक। (५) एक इत्र।

अम्बरीष—अयोध्या का एक सूर्यवंशी राजा जो इक्ष्वाकु से अट्ठाइसवीं पीढ़ी में हुआ था। यह परम वैष्णव, धर्म्मात्मा और ईश्वर भक्त था। एक बार राजा के समीप परीक्षार्थ दुर्वासा ऋषि आये। उस दिन एकादशी तिथि का व्रत और जागरण हुआ। दूसरे दिन प्रातः काल मुनि चलने को तैयार हुए। राजा ने भोजनोत्तर प्रस्थान करने की प्रर्थना की। मुनि स्नानार्थ सरयू के किनारे गये और सन्ध्या-वन्दन आदि करने लगे। इधर द्वादशी का अन्त समझ कर पारण के लिए गुरु की आज्ञा लेकर राजा ने चरणामृत पान किया। दुर्वासा के आने पर यथातथ्य कह दिया। इतने ही पर मुनि कुपित हो राजा को भस्म करना चाहा। भक्त राजा का अनादर भगवान से नहीं सहते बना, उन्हों ने अम्बरीष की रक्षा करने के लिए तुरन्त सुदर्शनचक्र को प्रेरित किया। चक्र के भय से दुर्वासा तीनों लोकों में भागते फिरे और अन्त में राजा अम्बरीष ने प्रार्थना करके मुनि को चक्र से बचाया। इस ग्लानि से दुर्वासा ने तपस्या की, जब

भगवान प्रसन्न हुए और कहा बरदान माँगो तब दुर्वासा ने यह बर माँगा कि राजा अम्बरीष को दस हजार जन्म लेना पड़े। भगवान ने कहा वह मेरा सच्चा दास है और उसने तुम्हारा कोई अपकार नहीं किया तुम द्वेष से व्यर्थ ही उस को दुःख देना चाहते हो किन्तु मैं उसको कष्ट न होने दूँगा। अन्य जीवों का एक हज़ार बार और मेरा एक बार जन्म लेना बराबर है। इसलिए अम्बरीष के बदले मैं ही दस बार जन्म धारण करूँगा। अम्बरीष की कथा महाभारत, भागवत, हरिवंश, रामायण आदि में है और हमारे बनाये भाषा के अभिनव विश्रामसागर में भी है विशेष विवरण 'दुर्वासा' शब्द में देखो।

अम्बा—माता, जननी, अम्मा। (२) दुर्गा, देवी, भगवती, पार्वती, गौरी, उमा।

अम्बासि—(अम्बा+असि) माता हो, जननी हो।

अम्बिके—माता, जननी, माँ। (२) दुर्गा, गौरी, पार्बती।

अम्बु—पानी, सलिल, जल।

अम्बुज—कमल, पद्म, पङ्कज। (२) ब्रह्मा।

अम्बुद, अम्बुधर—मेघ, घन, बादर। (२) मुस्ता, मोथा, नागर मोथा

अम्बुनिधि—समुद्र, सिन्धु, सागर।

अम्बुबर—निर्मलजल, शुद्ध पानी, पवित्र जल।

अम्भोज—कमल, कञ्ज,सरोज। (२) जल से उत्पन्न चन्द्रमा, शङ्ख आदि।

अम्भोद—मेघ, अम्बुद, जलद। (२) मुस्ता, मोथा, नागरमोथा।

अम्भोदनाद—मेघनाद, इन्द्रजीत, रावण तनय (२) मेघगर्ज्जन, घननाद, बादलों की गरज।

अम्भोदनादघ्न—मेघनाद को हनन करनेवाले लक्ष्मण, सुमित्रानन्दन।

अम्भोधि—समुद्र, सागर, जलनिधि।

अम्ल—खट्टा, खटाई, तुर्श, जिह्वा से अनुभूत होनेवाले छे रसों में से एक।

अयन—आश्रम, स्थान, घर। (२) समय, काल, वक्त। (३) गति, चाल, ढङ्ग। (४) गाय या भैंस के थन के ऊपर का वह भाग जिसमें दूध भरा रहता है। (५) अंश, भाग, हिस्सा। (६) मार्ग,पथ,राह। (७) सूर्य्य वा चन्द्रमा की दक्षिण से उत्तर और उत्तर से दक्षिण की चाल जिसको दक्षिणायन और उत्तरायण कहते हैं।

अजस—अयश, अपकीर्त्ति, निन्दा।

अयशी—अजसी, अपकीर्त्तिवाला, बदनाम।

अयाची—अयाच्य, अयाचक, न माँगनेवाला। (२) सम्पन्न, समृद्ध, धनी।

अयान—अजान, अबोध, नासमझ।

अयानप—अज्ञानता, अनजानपन, नासमझी। (२) सीधापन, भोलापन, सिधाई।

अयोग्य—अनुपयुक्त, जो योग्य न हो, बेठीक। (२) अकुशल, अपात्र, निकम्मा, बेकाम, नालायक़। (३) अनुचित, नामुनासिब, बेजा।

अयोध्या—कोशलपुर, अवधपुरी, कोशला, सूर्य्यबंशी राजाओं की राजधानी। सरयू नदी के किनारे बैवस्वत मनु का बसाया नगर। श्रीरामचन्द्रजी का जन्मस्थान। सात महापुरियों में से एक।

अरगाई—'अरगाना' शब्द का वर्तमान कालिकरूप, चुप्पी साधना, मौन होना, चुप होना, सन्नाटा खींचना। (२) अलगाना, पृथक होना, किनारा खींचना।

अरन्य—बन, अरण्य, जङ्गल।

अरनि—अड़नि, ठहरनि। (२) टेक बाँधना, हठ ठानना, ज़िद पकड़ना।

अरपि—अर्पि, अर्पण करके, भेंट करके, बख़शीश करके।

अरविन्द—कमल, अम्बुज, कञ्ज।

अराति—शत्रु, बैरी, दुश्मन। (२) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य्य जो मनुष्य के आन्तरिक बैरी हैं।

अराधन—आराधन, उपासना, पूजा।

अरि—शत्रु, बैरी, दुश्मन। (२) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य्य।

अरिकृत—शत्रु का किया, दुश्मन की करतूत।
अरिगन—शत्रु वृन्द, बैरी समूह, दुश्मनों का झुण्ड।
अरिदर्प—शत्रु का घमण्ड, दुश्मन का ग़रूर।
अरिष्ट—दुःख, क्लेश, पीड़ा। (२) विपत्ति, आपदा आफ़त। (३) अमङ्गल, दुर्भाग्य, दुर्दिन। (४) अपशकुन, अशुभचिन्ह, असगुन। (५) मृत्यु कारक योग, दुष्ट ग्रहों की प्रतिकूलता। (६) काक, कौवा काग। (७) चील्ह, कङ्क, चिल्होर। (८) निम्ब, नींब, नीम। (९) फेनिल, निर्मली, रीठा का पेड़। (१०) एक प्रकार का अरक जो दवा और मीठा के साथ-सड़ा कर तैयार किया जाता है। (११) अनिष्ट सूचक उत्पात, जैसे भूकम्प आदि।
अरी—अड़ी, थमी, रुकी, ठहरी। (२) शत्रु, बैरी, अरि। (३) सम्बोधनार्थक अव्यय, इसका प्रयोग स्त्रियों ही के लिए होता है।
अरु—और, अन्य, भिन्न।
अरुचि—अनिच्छा, इच्छा का अभाव, रुचि का न होना। (२) घृणा, घिन, नफ़रत। (३) अग्निमान्द्य रोग, मन्दाग्नि, भोजन की इच्छा न होना।
अरुझान्यो—उलझ्यो, फँस्यो, लिपट्यो।
अरुन—अरुण, रक्त, लाल, गहरा-लाल रङ्ग। (२) सूर्य्य, भानु। (३) गरुड़ाग्रज, सूरसूत, सूर्य्य का सारथी। (४) कुंकुम, काश्मीरज, केसर। (५) सिन्दूर, रक्तरज, सेंधुर। (६) गुड़, गुर, ऊख के रस का पकाया हुआ पदार्थ। (७) मन्दार, अर्क, मदार। (८) वह लालिमा जो सूर्य्यास्त के समय पश्चिम दिशा में दिखलाई पड़ती है (९) एक दानव का नाम। (१०) एक प्रकार का कुष्ठरोग।
अरूझै—उलझै, फँसै, लिपटै, लगै।
अरो—अड़ो, अड़ा हुआ, टिका, ठहरा हुआ।
अरयो—अड़यो, अड़ गया, टिक गया।
अर्क—सूर्य्य, दिवाकर, भानु। (२) मन्दार, मदार, आक। (३) स्फटिक मणि, श्वेतरत्न, बिल्लौर पत्थर। (४) वृक्षादि के पत्ते वा छाल का निचोड़ा हुआ रस, स्वरस, राँग। (५) भाफ से संग्रह किया हुआ पानी, अरक़।
अर्चा—पूजा, उपासना, सत्कार।
अर्चि—अग्निशिखा, लवर, लौ। (२) तेज दीप्ति, प्रकाश। (३) किरण, रश्मि, किरिन। (४) पूजा करके, उपासना करके।
अर्चित—पूजित, आदृत, सम्मानित, आदर-प्राप्त।
अर्च्य—पूज्य, पूजनीय, पूजा के योग्य।
अर्जुन—धनञ्जय, पार्थ, नर, किरीटी, फाल्गुन, जिष्णु, वृहन्नल, गाण्डीवी, विजय, कपिध्वज आदि। पाँचों पाण्डवों में से मझले भाई का नाम जो धनुर्विद्या में निपुण और प्रसिद्ध योद्धा थे। (२) ककुभ, नदीसर्ज, कोह का वृक्ष। (३) शुक्ल, उज्वल, सफ़ेद। (४) सहस्रार्जुन, हैहयवंशी एक राजा का नाम।
अर्नव—अर्णव, समुद्र सागर।
अर्थ—शब्द की शक्ति, शब्द का अभिप्राय, लफ़्ज़ों का मतलब, मनुष्य के हृदय का आशय जो शब्दों से प्रगट हो। (२) एक अलंकार का नाम जिसमें अर्थ में चमत्कार पाया जाता है। इसके मुख्य तीन भेद हैं वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यङ्गार्थ। (३) प्रयोजन, अभिप्राय, मतलब। (४) इष्ट, काम, ख़्वाहिश। (५) हेतु, निमित्त, सबब। (६) चतुर्वर्ग में से एक। (७) धन, सम्पत्ति, अर्थशास्त्र के अनुसार मित्र-पशु, भूमि, धन-धान्य आदि की प्राप्ति और वृद्धि। (८) इन्द्रियों के विषय शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध।
अर्थवित्—अर्थविद, अर्थ का ज्ञाता, सुचतुर।
अर्द्ध—अर्ध, आधा, निस्फ़, दो भागों में से एक भाग।
अर्द्धाङ्ग—(अर्द्ध+अङ्ग) शरीरका दाहिना वा बाँया भाग।
अर्ध—अर्द्ध, आधा, निस्फ़।
अर्पन—अर्पण, दान, देना, किसी वस्तु पर से अपना अधिकार हटा कर दूसरे का स्थापित करना। (२) उपहार, भेंट, नज़र।
अर्पि—अर्पण करके, देकर, भेंट करके।
अर्भक—शिशु, बालक, लड़का। (२) अल्प, लघु, छोटा। (३) मूर्ख, लण्ठ, बेवकूफ़। (४) दुर्बल, खिन्न, दुबला।

अर्वाक्—पीछे, इधर, इस ओर। (२) समीप, निकट, नज़दीक। (३) प्रथम बाचक, पहिले का बोधक, सर्व प्रथम का बोध करानेवाला। (४) अर्वाक स्रोता=ऊर्द्धरेता का उलटा, जिसका वीर्यपात हुआ हो।

अर्वाग—अर्वाक्, पीछे, इधर।

अलक—केश, बाल, घुघुरारे बाल।

अलख—अदृश्य, अप्रत्यक्ष, जो दिखाई न पड़े।

अलग—भिन्न, पृथक्, न्यारा, जुदा, अलहदा।

अलङ्कार—आभूषण, गहना, ज़ेवर। (२) अर्थ और शब्द की वह युक्ति जिससे काव्य की शोभा हो। वर्णन करने की वह रीति जिससे उसमें प्रभाव और रोचकता आजाय। इसके तीन भेद हैं, यथा—शब्दालङ्कार, अर्थालङ्कार और उभयालङ्कार।

अलप—अल्प, लघु, थोड़ा।

अलम्—यथेष्ट, पर्य्याप्त, पूर्ण, काफ़ी।

अलसातो—अलसाता, आलस्य करता, क्लान्त होता।

अलाप—आलाप, सम्भाषण, कथोपकथन, बात-चीत। (२) सङ्गीत के सात स्वरों का साधन, तान।

अलायक—अयोग्य, निकम्मा, नालायक़।

अलि—भ्रमर, मधुकर, भौंरा। (२) सहचारी, सखी, अली। (३) बिच्छू, वृश्चिक, बीछी। (४) श्रेणी, पंक्ति, क़तार।

अलिनि—भ्रमरी, मधुकरी, भौंरी।

अली—अलि, भ्रमरी, भौंरी। (२) सहचरी, सखी। (३) वृश्चिक, बिच्छू। (४) श्रेणी, पाँती।

अलीक—मिथ्या, अनृत, झूठ। (२) अप्रतिष्ठित, मर्य्यादा रहित, बेहया।

अलेखी—अत्याचारी, उपद्रवी, अन्यायी, अन्धेर करनेवाला, गड़बड़ मचानेवाला। (२) गुप्तकाण्डी, छौंकट, चालबाज़।

अलोने—अलोन, लवण रहित, विना नमक का, जिसमें नोन न पड़ा हो। (२) स्वाद रहित, फीका, बेमज़ा।

अलोल—अचञ्चल, स्थिर, टिका हुआ, जो चञ्चल न हो।

अल्प—सूक्ष्म, न्यून, कम, अलप, थोड़ा, कुछ, छोटा, लघु, नन्हा। (२) एक अलंकार का नाम जिसमें आधेय की अपेक्षा आधार की अल्पता वा छोटाई वर्णन की जाती है।

अवकास—अवकाश, स्थान, जगह। (२) अवसर, समय, मौक़ा। (३) अन्तरिक्ष, शून्यस्थान, ख़ाली जगह। (४) अन्तर, दूरी, फ़ासिला।

अवगाह—अथाह, अत्यन्त गम्भीर, बहुत गहिरा। (२) अनहोनी, कठिन, न होने योग्य। (३) सङ्कट का स्थान, कठिनाई, मुश्किल का मोक़ाम। (४) जल में हिल कर स्नान करना। (५) प्रवेश करना, पैठना, हलना।

अवगाहत—अवगाहना, थाहलेना, थहाना। (२) पैठ कर, डूब कर, प्रवेश करके। (३) जल में प्रवेश कर स्नान करना, निमज्जन करना।

अवगाही—मग्न होकर, पैठ कर, डूब कर। (२) थाह लेकर, थहाकर, मन्थन करके। (३) स्नान करके, निमज्जन कर, नहाकर। (४) मथ कर, विचलित कर, हलचल डाल कर। (५) चला कर, डुला कर, हिला कर। (६) सोच कर, समझ कर, विचार करके।

अवगुन—अवगुण, दोष, ऐब। (२) अपराध, बुराई, खोटाई।

अवचट—अचानक, अचक्का, औचक। (२) अण्डस, कठिनाई, चपकुलिस।

अवछिन्न—अवच्छिन्न, पृथक्, अलग किया हुआ, जिसका किसी पदार्थ से अवच्छेद किया गया हो।

अवटत—अवटना, औटना, किसी द्रव पदार्थ को कड़ाही में डाल कर आग पर रख चला कर गाढ़ा करना। (२) आलोड़न करना, मथना, महना।

अवटि—चुरा कर, पका कर, औट कर। (२) अलोड़न कर, मथ कर।

अवडेरे—अवडेर, घुमा कर पेच में फँसाना, फन्दे में डालना। (२) भाग्यहीन, अभागा, बदक़िस्मत।

अवढर—औढर, मनमौजी, जिधर मन में आया

उसी ओर ढल पड़ना। (२) जिसकी प्रकृति का कुछ ठिकाना न हो, जो शत्रु मित्र पर बराबर दया करता हो, जो हँसी-मज़ाक करने वाले पर भी अनुग्रह करता हो।

अवतार—शरीर-धारण, जन्म, औतार। (२) विष्णु भगवान के चौबीस अवतार, पुराणानुसार भगवान का संसार में शरीर धारण करना। किसी देवता का संसार में जन्म लेना। (३) उतरना, नीचे आना, सृष्टि में आना।

अवतारी—शरीरधारी, जन्म लेनेवाला, नीचे आनेवाला।

अवतंस—भूषण, अलङ्कार, गहना। (२) शिरोभूषण, टीका, माथे पर पहनने का एक आभूषण। (३) श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा। (४) मुकुट, कीट, राजाओं के सिर पर शोभित होनेवाला एक आभूषण। (५) माला, हार। (६) बाली, मुरकी, कान का गहना। (७) कर्णपूर, कर्णफूल, स्त्रियों, के कान में पहिरने का एक ज़ेवर।

अवद्य—पापी, अधम, निन्दित। (२) निकृष्ट, गर्हित, त्याज्य, कुत्सित, नीच।

अवध—अयोध्या, कोशलपुरी, कोशला।

अवधपति—अयोध्या के राजा, अवध नरेश, कोशलेन्द्र। (२) श्रीरामचन्द्रजी, भरताग्रज।

अवधबासी—अयोध्या निवासी स्त्री पुरुष आदि, अवध बसेरी, अयोध्या में बसनेवाला।

अवधि—पराकाष्ठा, सीमा, हद। (२) निर्धारित, समय, मियाद, मुक़र्रर वक्त, (३) अन्तिमकाल, अन्त समय, आख़िर वक्त़। (४) पर्यन्त, तक, तलक।

अवधूत—सन्यासी, योगी, साधु। (२) विनष्ट, नाश किया हुआ, नसाया हुआ।

अवधेस—(अवध+ईश) अवधेश, अयोध्या के राजा। (२) श्रीरामचन्द्रजी, दाशरथि।

अवनि, अवनी—पृथ्वी, धरती, ज़मीन।

अवनिप, अवनीस—राजा, अवनीपति, अवनीश, पृथ्वी पति, भूपाल।

अवराधन—आराधना, उपासना, पूजा।

अवराधिये—आराधन कीजिए, उपासना कीजिए, पूजा वा सत्कार करिये।

अवर्त्त—आवर्त्त, भँवर, घुमाव, चक्कर। (२) नाद, शब्द, हल्ला, शोर।

अवलम्ब—आश्रय, आधार, सहारा।

अवलम्बन—धारण करना, ग्रहण करना, अनुसरण करना। (२) आश्रय लेना, आधार वा सहारा लेना।

अवली—पंक्ति, श्रेणी, पाँती। (२) समूह, वृन्द, झुण्ड।

अवलोक—देख कर, चितय कर, निहार कर।

अवलोकना—चितवना, देखना, निहारना। (२) अनुसन्धान करना, जाँचना, खोज लगाना।

अवश—अबस, विवश, लाचार, बेक़ाबू।

अवशेष—अवशिष्ट, शेष, बचा हुआ, बाक़ी। (२) अन्त, इति, समाप्ति।

अवश्य—निश्चय करके, निःसन्देह, ज़रूर।

अवसर—समय, काल, वक्त़। (२) अवकाश, फ़ॉफ़र, फ़ुरसत, । (३) संयोग, दैवयोग, इत्तिफ़ाक़। (४) एक अलङ्कार का नाम जिसमें किसी घटना का ठीक अपेक्षित समय पर घटित होना वर्णन किया जाता है।

अवसान—समाप्ति, अन्त, अख़ीर। (२) विराम, ठहराव, रुकाव। (३) मृत्यु, मौत। (४) सीमा, हद। (५) सन्ध्या, सायङ्काल।

अवसेरे—अवसेर, प्रतीक्षा, प्रत्याशा, बाट जोहना, इन्तज़ार करना। (२) चिन्ता, व्यग्रता, उचाट। (३) दुःख, बेचैनी, हैरानी, (४) विलम्ब, देर, अबेर। (५) उलझन, अटकाव।

अवस्था—दशा, स्थिति, हालत। (२) आयु, उम्र, जीवनकाल। (३) समय, काल, वक्त़। (४) वेदान्त दर्शन के अनुसार मनुष्य की चार अवस्थाएँ हैं—जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। (५) मनुष्य जीवन की आठ अवस्थाएँ होती हैं कौमार, पौगण्ड, कैशोर, यौवन, बाल, वृद्ध, और वर्षीयान्।

अवाई—आगमन, आना, आमद । (२) आने की खबर ।

अविकार—निर्दोष, विकार रहित, जिसमें विकार न हो, बेऐब ।

अविकारी—निर्विकार, दोष रहित, विकार शून्य ।

अविगत—अनिर्वचनीय, अवर्णनीय, अकथ्य, जो कथन न किया जा सके। (२) नित्य, अविनाशी, जो नाश न हो। (३) अज्ञात, अविदित, जो प्रगट न हो, जो जाना न जाय ।

अविचल—अचल, स्थिर, अटल, जो विचलित न हो ।

अविचार—अज्ञान, अविवेक, नासमझी । (२) अनीति, अन्याय, विचार का अभाव ।

अविछिन्न—अविच्छिन्न, अटूट, लगातार । (२) निर्विघ्न, बाधाहीन, बेरोक ।

अविद्यमान—अनुपस्थित, जो उपस्थित न हो, अदममौजूदगी । (२) असत्य, मिथ्या, झूठा ।

अविद्या—अज्ञान, मोह, मिथ्याज्ञान । (२) माया, कपट, छल । (३) विपरीत ज्ञान, उलटी समझ, इन्द्रियों के दोष तथा कुसंस्कार से उत्पन्न खोटा विचार ।

अविनय—उद्दण्डता, ढिठाई, बेअदबी, गुस्ताखी ।

अविनाशी—अबिनासी, नाश रहित, अक्षय, नित्य ।

अविरल—सघन, निविड़, घना, गझिन, जो बीड़र न हो ।

अविवेक—अज्ञान, अविचार, नादानी ।

अव्यक्त—अगोचर, अप्रत्यक्ष, जो स्पष्ट न हो । (२) अज्ञात, अविदित, जो ज्ञात न हो । (३) अनिर्वचनीय, अवर्णनीय, अकथ्य । (४) ब्रह्म, ईश्वर, परमेश्वर । (५) विष्णु, अच्युत । (६) शिव, हर । (७) कामदेव, अनङ्ग । (८) प्रधान, प्रकृति, (९) वेदान्त शास्त्रानुसार अज्ञान, सूक्ष्म शरीर और सुषुप्ति अवस्था ।

अव्यय—अक्षय, नित्य, सदा एक रस रहनेवाला । (२) आदि-अन्त रहित, विकारशून्य, जो विकार को न प्राप्त हो । (३) ब्रह्म, ईश्वर । (४) शिव, शङ्कर । (५) विष्णु, केशव । (६) व्याकरण में वह शब्द जिसका सब लिङ्गों, सब विभक्तियों और सब वचनों में समान रूप से प्रयोग हो ।

अव्याहत—अप्रतिरुद्ध, अव्युच्छिन्न, बेरोक, जो कहीं रोका न जाय, सर्वत्र गमन करनेवाला ।

अशक्त—निर्बल, बलहीन, कमज़ोर । (२) अक्षम, असमर्थ, नाक़ाबिल ।

अशक्य—असाध्य, शक्ति के बाहर, न होने योग्य ।

अशङ्क—निर्भय, निडर, असङ्क, बेख़ौफ़ ।

अशन—अन्न, आहार, भोजन । (२) भक्षण, खाना ।

अशनि—वज्र, गाज, बिजली ।

अशरण—अनाथ, अरक्षित, निराश्रित, बेपनाह, जिसे कहीं शरण न हो ।

अशित—भुक्त, भोजन किया हुआ, खाया हुआ । (२) असित, काला, स्याह ।

अशिव—अकल्याण, अशुभ, अमङ्गल ।

अशुचि—अपवित्र, नापाक । (२) मलिन, गन्दा ।

अशुद्ध—अपवित्र, अशुचि, नापाक । (२) असंस्कृत, बेठीक, ग़लत, बिना शोधा हुआ ।

अशुद्धता—अपवित्रता, मैलापन, गन्दगी । (२) भूल, ग़लती, शुद्धता का अभाव ।

अशुभ—अकल्याण, अमङ्गल, असुभ । (२) पाप, दोष, अपराध । (३) आपदा, सङ्कट, बुराई ।

अशोक—शोक रहित, दुःख शून्य, असोच । (२) प्रसन्न, सुखी, सचैन । (३) ताम्रपल्लव, हेमपुष्प, एक वृक्ष का नाम जिसके पत्ते आमके समान होते हैं ।

अश्व—वाजि, तुरङ्ग, घोड़ा ।

अश्वमेध—वाजिमेध, हयमेध, एक प्रकार का यज्ञ जिसमें घोड़े के मस्तक पर जयपत्र बाँध कर उसे भूमण्डल में घूमने के लिए छोड़ते थे । उसके साथ सेना रखवाली करती जाती थी । जब भूमण्डल में घूम कर वह घोड़ लौटता था तब उसकी चर्बी से हवन किया जाता था । यह यज्ञ केवल बड़े प्रतापी जगद्विख्यात शूर राजा करते थे और साल भर में यह यज्ञ पूरा होता था ।

अष्ट—आठ, चार की दूनी संख्या ।

अष्टसिद्धि—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व—यही आठों सिद्धियों के नाम हैं।

अस—ऐसा, इस प्रकार का, इस तरह का। (२) समान, तुल्य, बराबर। (३) यह, एव, निश्चय-वाचक।

असक्त—अशक्त, असमर्थ, नाक़ाबिल।

असक्य—अशक्य, असाध्य, न होने योग्य।

असङ्गत—अयुक्त, अयोग्य, बेठीक। (२) अनुचित, बेजा, नामुनासिब। (३) अनमेल, बेमेल। (४) असङ्गति नाम का एक अलङ्कार जिसमें कार्य्य कारण के बीच देश काल सम्बधी अन्यथात्व दिखाया जाता है।

असत्य—मिथ्या, झूठ, दरोग़।

असन—अशन, भोजन, खाना।

असनि—अशनि, वज्र, गाज।

असमञ्जस—अड़चन, अण्डस, कठिनाई, चपकुलिस। (२) दुबधा, आगापीछा, पसोपेश।

असमय—कुअवसर, बुरा समय, विपत्ति का समय। (२) बिना समय, बेवक्त, बेमौक़ा।

असमर्थ—अशक्त, सामर्थ्य हीन, निर्बल, बेताक़त। (२) अयोग्य नालायक़, नाक़ाबिल।

असम्भव—अनहोनी, जो हो न सके, नामुमकिन। (२) एक अलङ्कार का नाम जिसमें अनहोनी बातों का होना दिखाया जाता है।

असरन—अशरण, असहाय, अरक्षक, अनाथ।

असहाय—निःसहाय, निराश्रय, जिसे कोई सहारा न हो।

असह्य—असहनीय, न सहने योग्य, जो बरदाश्त न हो।

असाध—असाध्य, दुष्कर, कठिन।

असाधक—अनभ्यासी, साधनहीन, उद्योग रहित।

असाध्य—दुष्कर, कठिन, असाध, न करने योग्य, जिसका साधन न हो सके। (२) न आरोग्य होने योग्य, लाइलाज।

असाधु—दुष्ट, खल, दुर्जन। (२) पापी, अधर्मी, अत्याचारी। (३) अशिष्ट, दुःशील, बेहूदा।

असार—निःसार, तत्व शून्य, सार रहित। (२) शून्य, ख़ाली, छूँछ। (३) तुच्छ, लघु, छोटा।

असि—खड्ग, कृपाण, तलवार। (२) ऐसी, इस प्रकार की। (३) असी नाम की नदी जो काशीपुरी के दक्षिण गङ्गाजी में मिली है।

असित—काला, करिया, स्याह। (२) कुटिल, वक्र, टेढ़ा। (३) दुष्ट, खल, बुरा। (४) एक ऋषि का नाम। (५) शनि, शनैश्चर।

असिद्ध—अपूर्ण, अधूरा, जो पूरा न हो। (२) अप्रमाणित, जो सिद्ध न हो। जो साबित न हो। (३) निष्फल, व्यर्थ, वृथा। (४) कच्चा, अपक्क, जो पका न हो। (५) जो बन कर तैयार न हुआ हो। जिसके तैयार होने में कसर हो।

असुझ—अन्धकारमय, अँधेरा, असूझ। (२) अत्यधिक, अपार, बहुत विस्तृत। (३) विकट, कठिन, जिसके करने का उपाय न सूझे।

असुर—दैत्य, दनुज, दानव, राक्षस। (२) अधर्मी, अत्याचारी, नीच वृत्ति का पुरुष।

अस्त—अदर्शन, तिरोधान, लोप, तिरोहित, छिपा हुआ। (२) अदृश्य, डूबा हुआ। जो दिखाई न दे। (३) नष्ट, ध्वस्त, नाश हुआ।

अस्तु—अच्छा, भला, ख़ैर। (२) जो हो, चाहे जो हो।

अस्तुति—निन्दा, अपकीर्त्ति, छोटाई। (२) स्तुति, प्रशंसा, बड़ाई।

अस्थि—हाड़, कुल्य, हड्डी।

अस्माकं—हमारा, हमको, हमें।

अस्त्र—वह हथियार जो फेंक कर शत्रु पर चलाया जाय। जैसे-बाण, शक्ति, चक्र, बन्दूक़ आदि।

अस्त्रधर—अस्त्रधारी, हथियार धारण करनेवाला।

अहँकार—अहङ्कार, गर्व, घमण्ड।

अहँकारी—अहङ्कारी, गर्वी, घमण्डी।

अहङ्कार—अभिमान, अहमत्व, अहमिति, हंकार, गर्व, घमण्ड, ग़रूर, अपने को सब से बड़ा और दूसरों को अपने से छोटा समझने का भाव। (२) अन्तःकरण की एक वृत्ति। मैं और मेरा का भाव। ममत्व।

अहङ्कारी—अभिमानी, घमण्डी।
अहमिति—अहङ्कार, घमण्ड, ग़रूर।
अहलाद—आनन्द, हर्ष, खुशी।
अहल्या—'अहिल्या' गौतमी।
अहार—आहार, अशन, भोजन।
अहारी—आहारी, भोजन करनेवाला।
अहि—सर्प, साँप, कीरा। (२) खल, दुष्ट, ठग।
अहिखेल—सर्पों के सङ्ग का खेल, साँप के साथ का खेलवाड़। (२) दुष्टों का खेल, ख़तरनाक-तमाशा। जोखिम का खेलवाड़।
अहित—शत्रु, बैरी, दुश्मन। (२) अकल्याण, अमङ्गल, बुराई। (३) अनुपकारी, हानिकारक, अनहित करनेवाला।
अहितल्प—शेषसय्या, साँपों की सेज।
अहिपति—शेषनाग, सर्पेश, साँपों के मालिक।
अहिभूषन—शिव, पिनाकी, सर्पों का भूषण पहिननेवाले, अहिभूषण।
अहिल्या—गौतमी, अहल्या, गौतम ऋषि की पत्नी जो पति के शाप से पत्थर हुई थी। गौतम मुनि का आश्रम बक्सर के समीप गङ्गा तट पर प्रसिद्ध है। अहिल्या के सहित ये इसी आश्रम में तपश्चर्य्या करते थे। एक बार इन्द्र अहिल्या की सुन्दरता देख कर कामभाव से उस पर मोहित हुए। ब्राह्म मुहूर्त्त का छल से मुनि को भ्रम उत्पन्न कराया, वे गङ्गा स्नान को गये। इसी अवसर में इन्द्र ने अहल्या से रतिदान चाहा। इन्द्र को जान कर दिव्य रति की इच्छा से उसने स्वीकार कर लिया। इन्द्र ज्यों हीं कुटी के बाहर हुआ कि उसी समय गौतमजी स्नान करके आ गये। इन्द्र को देख कर तपोबल से उसके अकार्य्य-कर्म को जान कर शाप दिया कि तू सहस्र भगवाला हो जा और व्यभिचारिणी अहल्या पत्थर हो जावे। विनती करने पर कहा कि परमात्मा रामचन्द्र के चरण स्पर्श से अहल्या शुद्ध होकर अपनी गति को प्राप्त होगी और उनका दूलह रूप में दर्शन पाने पर तेरे हज़ारों भग नेत्र हो जाँयगे। यह कह कर गौतमजी हिमालय पर्वत पर तप करने के लिए चले गये। विश्वामित्र मुनि की यज्ञ रक्षा कर जनकपुर जाते समय रामचन्द्रजी ने चरण-स्पर्श करके उसका शापोद्धार किया और दूलह वेष में दर्शन देकर इन्द्र को सहस्र आँख-वाला बना दिया। इसी से रामचरितमानस में गोस्वामीजी ने कहा है कि—रामहिँ चितव सुरेश सुजाना। गौतम शाप परमहित माना।
अहीर—गोप, ग्वाला, गोपालक।
अहीश—शेषनाग, अहिपति, फणेश।
अक्ष—आँख, नेत्र, नयन (२) गाड़ी, छकड़ा, सग्गड़। (३) व्यवहार, मामला, मुक़दमा। (४) धुरा, पहिये की धुरी। वह लोह दण्ड जिस पर पहिया घूमती है। (५) इन्द्रिय, हृषीक, इन्द्री (६) गरुड़, वैनतेय। (७) आत्मा, जीव। (८) विभीतक, बहेड़ा। (९) सौवर्चल, सोँचरनोन। (१०) कर्ष, सोलह मात्रा का प्रमाण। (११) रावण का पुत्र अक्षयकुमार जिसको हनूमान् जी ने मारा था।
अक्षत—अखण्डित, सर्वाङ्गपूर्ण, समूचा, जिसमेँ घाव न किया गया हो। (२) तण्डुल, चावल। (३) यव, जौ।
अक्षय—अनश्वर, अविनाशी, जिसका नाश न हो। (२) कल्पान्त स्थायी। कल्प के अन्त तक रहने वाला।
अक्षर—नित्य, अविनाशी, स्थिर। (२) अकारादि वर्ण, हरफ़, मनुष्य के मुख से निकली हुई ध्वनि को सूचित करने का चिह्न। (३) ब्रह्म, ईश्वर। (४) आत्मा, जीव। (५) पानी, जल। (६) आकाश, व्योम। (७) मोक्ष, निर्वाण। (८) धर्म, सुकृत। (९) तपस्या, तप, ईश्वर आराधन।
अक्षि—आँख, नेत्र, नयन।
अक्षोभ—अनुद्वेग, दृढ़ता, धीरता, स्थिरता, शान्ति, क्षोभ का अभाव। (२) क्षोभ रहित, गम्भीर, स्थिर, शान्त।
अत्र—यहाँ, इस स्थान पर। इस जगह पर। (२) अस्त्र का अपभ्रंश। हथियार।

अत्रि—सप्तर्षियों में से एक। ये ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं। इनकी स्त्री अनसूया थीं और दत्तात्रेय, दुर्वासा तथा चन्द्रमा इनके पुत्र हैं।
अज्ञ—अज्ञानी, मूर्ख, नासमझ, नादान।
अज्ञता—मूर्खता, जड़ता, नादानी, अनाड़ीपन।
अज्ञात—अपरिचित, बिना जाना हुआ। (२) बिना जाने, अनजाने।
अज्ञान—अविद्या, मोह, मूर्खता, जड़ता, अनजानपन, ज्ञान का अभाव। (२) अजान, मूर्ख, जड़, नासमझ।
आइ—आयु, जीवन, ज़िन्दगी। (२) 'आना' शब्द का भूतकालिक रूप। आई, प्राप्त हुई।
आउ—आयु, आइ, जीवन। (२) 'आना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। आओ।
आँक—अङ्क, चिह्न, निशान। (२) अक्षर, वर्ण, हरफ़। (३) निश्चित सिद्धान्त, दृढ़ निश्चय, पक्की ठहराई हुई बात। (४) अंश, भाग, हिस्सा। (५) अँकवार, गोद, कनियाँ। (६) संख्या का चिह्न, आँकड़ा, अदद।
आकर—खानि, उत्पत्ति स्थान, पैदाइश की जगह। (२) भण्डार, कोश, ख़ज़ाना। (३) व्युत्पन्न, दक्ष, कुशल। (४) श्रेष्ठ, उत्तम, भला। (५) भेद, जाति, किस्म। (६) अधिक, बहुत, ज़्यादा
आकरषै—आकर्षण करे, अपनी ओर खींचे।
आकर्ष—खिँचाव, कशिश, एक जगह के पदार्थ को बल से दूसरी जगह ले जाना। (२) इन्द्रिय, गो, हृषीक। (३) बिसात, जिस पर पासा खेला जाय, चौपड़।
आकर्षन—आकर्षण, खींचने की शक्ति, भौतिक पदार्थों की एक शक्ति जिससे वे अन्य पदर्थों को अपनी ओर खींचते हैं।
आकार—आकृति, मूर्त्ति, रूप, स्वरूप, सूरत। (२) डीलडौल, क़द। (३) सङ्गठन, बनावट। (४) चिह्न, निशान। (५) चेष्टा, प्रयत्न, कोशिश।
आकाश—अन्तरिक्ष, व्योम, गगन, नभ, अम्बर, अनन्त, अभ्र, अब्द, खं, वियत्, नाक, द्यौः, द्यु, पुष्कर, सुरवर्त्म, अक्षर, अनङ्ग, मरुत्वर्त्म, मेघवर्त्म विहायस, कुनाभि, महाविल, मेघाध्वा, त्रिविष्टप, विष्णुपद, आकास, अकास, आसमान। वह शून्य स्थान जिसमें विश्व के छोटे बड़े सब पदार्थ सूर्य्य, चन्द्र, ग्रह, उपग्रह आदि स्थित हैं और जो सब पदार्थों के भीतर व्याप्त है। (२) पञ्चतत्वों में से एक। प्रकृति का एक विकार जिसका गुण शब्द है।
आकास—आकाश, व्योम, गगन।
आकांक्षा—इच्छा, अभिलाषा, वाञ्छा, ख़्वाहिश। (२) अपेक्षा, आवश्यकता, ज़रूरत। (३) अनुसन्धान, खोज, तलाश।
आकुल—व्यग्र, उद्विग्न, क्षुब्ध, व्याकुल, घबड़ाया हुआ। (२) युक्त, व्याप्त, संकुल, सहित। (३) विह्वल, कातर, अस्वस्थ, दुखी।
आकुलित—व्याकुल, आकुलता युक्त, घबड़ाया हुआ। (२) व्याप्त, युक्त, सहित।
आकृति—आकार, रूप, गढ़न।
आकृष्ट—आकर्षित, खींचा हुआ।
आको—आक, मदार, अर्क, अकौआ।
आक्रान्त—आवृत, घिरा हुआ, छिका हुआ। (२) जिस पर आक्रमण किया गया हो, जिस पर हमला हुआ हो। (३) वशीभूत, पराजित, बेबस। (४) आकीर्ण, व्याप्त, भरा हुआ। (५) श्रान्त, श्रमित, थका हुआ।
आँख—लोचन, नयन, नेत्र, अम्बक, विलोचन, चक्षु, अक्षि, ईक्षण, दृक, दृष्टि, वीक्षण, प्रेक्षण, अक्खि अँक्ख, आँखि, आँखी, देखने की इन्द्रिय, निगाह, वह इन्द्रिय जिससे प्राणियों को रूप अर्थात् वर्ण विस्तार तथा आकार का ज्ञान होता है। मनुष्यादि के शरीर में यह एक ऐसी इन्द्रिय है जिस पर आलोक के द्वारा पदार्थों का विम्ब खिँच जाता है। (२) अंकुर, अँखुआ।
आखत—अक्षत, तण्डुल, चावल। (२) वह अनाज जो विवाहादि के समय नेगी परजों को कोई विशेष कार्य्य आरम्भ करते समय दिया जाता है।
आखर—अक्षर, वर्ण, हरफ़। (२) शब्द।

आँखि—आँख, चक्षु, नेत्र ।
आगत—प्राप्त, उपस्थित, आया हुआ । (२) अतिथि, पाहुना, मेहमान ।
आगम—आगमन, अवाई, आमद । (२) भवितव्यता, सम्भावना, होनहार । (३) आगामी, भविष्य काल, आनेवाला समय । (४) समागम, सङ्गम, मिलाप । (५) उत्पत्ति, जन्म, पैदाइश । (६) आशा, भरोसा, उम्मेद । (७) आय, धनागम, आमदनी । (८) शास्त्र, किसी देवता या मुनि का बनाया हुआ उपदेश पूर्ण ग्रन्थ । (९) वृक्ष, पेड़ ।
आगमन—आना, अवाई, आमद । (२) प्राप्ति, आय, लाभ ।
आगर—घर, गृह, मकान । (२) समूह, बहुत, ढेर । (३) आकर, उत्पत्तिस्थान, खान । (४) भण्डार, कोश, ख़ज़ाना । (५) श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया । (६) दक्ष, चतुर, होशियार । (७) अगरी, ब्योंड़ा । (८) छाजन, छप्पर ।
आगार—घर, मन्दिर, मकान । (२) स्थान, जगह, ठौर । (३) भण्डार, कोश, ख़ज़ाना ।
आगि—अग्नि, अनल, आग ।
आगिली—भविष्य की, अगली, आगे की ।
आगिलो—भविष्य का, अगला, आगे का ।
आगे—सम्मुख, समक्ष, सामने । (२) और दूर पर । और बढ़ कर । 'पीछे' का उलटा । (३) उपस्थिति में । जीवनकाल में । जीते जी । (४) अनन्तर, इसके पीछे, बाद । (५) पूर्व, प्रथम, पहिले । (६) अतिरिक्त, सिवाय, अलावा । (७) प्रत्यक्ष, उपस्थित, मौजूद ।
आग्रह—अनुरोध, हठ, ज़िद । (२) आवेश, बल, ज़ोर । (३) परायणता, तत्परता, मुस्तैदी ।
आघात—प्रहार, चोट, मार । (२) धक्का, टक्कर, ठोकर । (३) वधस्थान, बूचड़खाना ।
आचरन—आचरण, व्यवहार, बर्ताव, चाल चलन । (२) लक्षण, चिह्न, अलामत । (३) आचार शुद्धि, पवित्रता, सफ़ाई । (४) अनुष्ठान, शास्त्र विहित कर्म करना । नियम पूर्वक उत्तम काम करना ।
आचरु—आचरण कर, वर्ताव करे ।
आचरे—आचरण करने से, व्यवहार करने पर ।
आचार—आचरण, व्यवहार, वर्ताव । (२) शुद्धि, पवित्रता, सफ़ाई । (३) शील, शुद्धाचरण, पवित्र चरित्र ।
आचारी—आचारवान्, चरित्रवान्, शुद्धआचरण करनेवाला । (२) श्रीवैष्णव, रामानुज सम्प्रदाय के वैष्णव ।
आचार्य्य—गुरु, उपदेशक, उपनयन के समय गायत्री मन्त्र का उपदेश देनेवाला । (२) अध्यापक, शिक्षक, वेद पढ़ानेवाला । (३) पूज्य, पुरोहित, यज्ञ के समय कर्मोपदेश देनेवाला । (४) ब्रह्म सूत्र के प्रधान चार भाष्यकार हैं—शङ्कराचार्य्य, रामानुजाचार्य्य, माध्वाचार्य्य और वल्लभाचार्य्य ।
आच्छन्न—आवृत, ढका हुआ । (२) तिरोहित, लुप्त, छिपा हुआ ।
आच्छादन—वस्त्र, वसन, कपड़ा । (२) अपवारण, पिधान, ढकना । (३) छाजन, छप्पर, छवाई ।
आच्छादित—आच्छन्न, आवृत, ढका हुआ । (२) तिरोहित, अदृश्य, छिपा हुआ ।
आज—वर्तमान दिन, जो दिन बीत रहा है । (२) वर्तमान काल, इस समय, इस वक्त । (३) वर्तमान समय में । इन दिनों में ।
आजलौं—वर्तमान दिन तक । अबतक, आजतक । (२) आज की अवधि पर्य्यन्त । इस समय तक ।
आजानु—आजानुबाहु, जाँघ पर्य्यन्त लम्बी भुजाएँ । जिसकी बाहेँ घुटने तक लम्बी हों ।
आठ—अष्ट, चार की दूनी संख्या ।
आठइँ—अष्टमीतिथि, आठैं, आठों । (२) आठवाँ ।
आठप्रकृति—भूमि, जल, अग्नि, पवन, आकाश, मन, बुद्धि और अहङ्कार ।
आडम्बर—ऊपरी बनावट, झूठा आयोजन, ढोंग, कपट वेष जिससे वास्तविक रूप छिप जाय ।
आढ़—ओट, आड़, ओझल, परदा । (२) आश्रय, शरण, रक्षा, पनाह । (३) अड़ान, रुकावट, रोक । (४) थूनी, टेक, थाम ।

आढ़न—आड़न, ओड़न, ढाल । (२) बिना ओट का, आड़ नहीं, परदा रहित । (३) आश्रय हीन, रक्षा रहित, बिना सहारे का ।
आतङ्क—प्रताप, दबदबा, रोब । (२) भय, डर, ख़ौफ़ । (३) रुज, रोग, बीमारी । (४) दुःख, पीड़ा, क्लेश ।
आतप—सूर्य्य का प्रकाश, घाम, धूप, रौदा । (२) उष्णता, तपन, गर्मी । (३) ज्वर, ताप, बोख़ार ।
आतमा—आत्मा, जीव, प्राण ।
आतिथ्य—अतिथि का सत्कार, पहुनाई, मेहमानदारी । (२) मेहमान को देने लायक़ चीज़ ।
आतुर—व्याकुल, व्यग्र, घबराया हुआ । (२) उद्विग्न, अधीर, बेचैन । (३) दुखी, पीड़ित रोगी । (४) उत्सुक, उत्कण्ठित, ख़्वाहिशमन्द । (५) शीघ्र, तुरन्त, जल्दी ।
आतो—आता, प्राप्त होता, पहुँचता ।
आत्म—आत्मा, जीव । (२) स्वकीय, अपना ।
आत्मघात—आत्महत्या, खुदकुशी, अपने हाथों अपने को मार डालने का काम ।
आत्मज—पुत्र, लड़का, बेटा । (२) कामदेव, अनङ्ग । (३) शोणित, रक्त, ख़ून ।
आत्मजा—पुत्री, लड़की, बेटी ।
आत्मा—जीव, जीवन तत्व, जान । (२) पवन, वायु हवा । (३) देह, शरीर, तनु । (४) सूर्य्य, भानु । (५) अग्नि, पावक । (६) स्वभाव, प्रकृति, । (७) ब्रह्म, ईश्वर । इस शब्द का प्रयोग विशेष कर जीव और ब्रह्म के अर्थ मे होता है । (८) मन, बुद्धि, चित्त तथा अहङ्कार चारों अन्तरेन्द्रियों का भी बोधक है ।
आदर—सत्कार, प्रतिष्ठा, सम्मान, इज़्ज़त, क़दर ।
आदरणीय—सम्माननीय, सत्कार के योग्य ।
आदरित—आदृत, सम्मानित, आदर किया गया ।
आदान—स्वीकार, ग्रहण, लेना ।
आदि—प्रथम, पहिला, शुरू । (२) आरम्भ, मूल कारण, बुनियाद । (३) आदिक, इत्यादि, वगैरह ।
आदिकवि—वाल्मीकि मुनि, रामायण के प्रथम आचार्य्य ।
आदित—सूर्य्य, भानु, दिवाकर ।
आदित्य—अदिति के पुत्र, देवता, सुर । (२) सूर्य्य, रबि, निशि अरि । (३) अदिति से उत्पन्न सूर्य्य, आदि तैंतीसों देवता वृन्द ।
आदी—आदि, प्रथम, शुरू । (२) आर्द्रक, अदरक ।
आदेव—आदेय, लेने के योग्य, मानने लायक ।
आदेश—आज्ञा, इजाज़त, हुक्म । (२) उपदेश, शिक्षा, सिखावन । (३) प्रणाम, नमस्कार ।
आध—अर्द्ध, आधा, निस्फ़ ।
आँधर—नेत्रहीन, सूर, अन्धा ।
आँधरे—अन्धे, बिना आँखवाले ।
आधार—आश्रय, अवलम्ब, सहारा । (२) मूल, नीव, बुनियाद । (३) आलबाल, थाला, गोंड़ा ।
आधि—मानसिक व्यथा, चिन्ता, फ़िक्र । (२) बन्धक, गिरो, रेहन ।
आधीन—अधीन, आश्रित, मातहत, दबइल । (२) विवश, लाचार, बेक़ाबू । (३) सेवक, दास, टहलू । (४) दीन, कङ्गाल, ग़रीब ।
आधीश—अधिपति, अधीश, स्वामी, मालिक ।
आधु—अर्द्ध, आधा, निस्फ़ ।
आधेय—आधार-स्थित वस्तु । जो वस्तु किसी के आधार पर रहे । वह चीज़ जो किसी के सहारे पर टिकी हुई हो । (२) स्थापनीय, ठहराने योग्य, रखने लायक़ ।
आन—अन्य, और, दूसरा । (२) मर्य्यादा, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त । (३) शपथ, सौगन्द, कसम । (४) अकड़, ठसक, ऐंड़ । (५) बिजय-घोषणा, दुहाई, जीत का डङ्का । (६) रचना, ढङ्ग, बनावट । (७) लज्जा, शर्म, हया, अदब, लिहाज़ । (८) शङ्का, भय, डर, । (९) प्रतिज्ञा, हठ, टेक ।
आनति—आनने से । ले आने से । (२) विनीत, विशेष नम्र, अत्यन्त झुका हुआ ।
आनद—आनन्द, हर्ष, खुशी ।
आनन—मुख, वदन, मुँह ।
आनन्द—हर्ष, आह्लाद, प्रसन्नता, मोद, सुख, चैन, खुशी ।
आनन्दकर / आनन्दकारी }—आनन्द उत्पन्न करने वाला । सुख देनेवाला, सुखकारी ।

आनन्दघन—आनन्द का मेघ, सुख के बादल। (२) आनन्द-समूह, सुख की राशि।

अनन्दद } अनन्दप्रद —आनन्द दायक,हर्ष प्रदान करनेवाला।

आनन्दवन—वाराणसी, काशी, बनारस। (२) आनन्द की राशि, सुख का ढेर।

आनन्दसिन्धु—आनन्द-सागर, सुख का समुद्र।

आनना—ले आना, लाना, समीप पहुँचाना।

आप—पानी, सलिल, नीर। (२) ईश्वर, परमात्मा, परब्रह्म। (३) तुम और वे के स्थान में आद-रार्थक प्रयोग। जैसे—आप कहाँ रहे, आप कब से आये हैं ?।

आपगा—नदी, सरिता, सरि।

आपत्ति—आपद्, आपदा, विपत्ति, सङ्कट, आफ़त। (२) दुःख, कष्ट, क्लेश, विघ्न। (३) दुर्दिन, कष्ट का समय। बुरा दिन, कुसमय।

आपदा—आपत्ति, सङ्कट, आफ़त।

आपन—स्वकीय, निज का, अपना।

आपन्न—आपद्ग्रस्त, दुःखी, सङ्कट से घिरा हुआ। (२) प्राप्त, लब्ध, मिला हुआ।

आपान—स्वकीय, निज की, अपनी। (२) मदिरा पान का स्थान। वह जगह जहाँ शराबियों की मण्डली मद पान के लिए इकट्ठी होती हो।

आपु—स्वयम्, अपुना, ख़ुद। (२) आप, एक आदरार्थक शब्द जो तुम के स्थान में प्रयोग किया जाता है।

आप्त—प्राप्त, लब्ध, मिला हुआ। (२) दक्ष, कुशल, वाक़िफ़। (३) निर्भ्रान्ति, यथार्थ, सत्य। (४) विश्वस्त, विश्वासनीय, विश्वास के योग्य।

आभ—आभा, दीप्ति, चमक।

आभरन—आभरण, आभूषण, अलङ्कार, भूषण, गहना, ज़ेवर। इनकी गणना बारह है-नूपुर, किङ्किणी, चूड़ी, अँगूठी, कङ्कण, विजायठ, हार, कण्ठश्री, वेसर, बिरिया, टीका और सीसफूल। (२) पोषण, पालन, परवरिश।

आभा—द्युति, प्रभा, दीप्ति, कान्ति, चमक, झलक। (२) प्रतिबिम्ब, छाया, परछाहीं।

आभास—प्रतिबिम्ब, छाया, झलक। (२) सङ्केत, पता, इशारा। (३) मिथ्याज्ञान, झूठी समझ।

आभूषण—अलङ्कार, भूषण, आभरण, गहना, ज़ेवर, 'आभूषन'।

आम—आम्र, सहकार, अम्बा। (२) अपक्व, कच्चा, ख़ाम। (३) अर्बी भाषा के अनुसार-सामान्य, साधारण, मामूली। (४) प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर।

आमय—व्याधि, रोग, बीमारी।

आमिष—मांस, अमिष, गोश्त।

आमोद—आनन्द, हर्ष, प्रसन्नता, ख़ुशी। (२) मनोविनोद, दिलबहलाव, तफ़रीह। (३) सुग-न्धि, दूर से आनेवाली महँक।

आय—प्राप्ति, लाभ, धनागम, आमदनी। (२) आया हुआ, बना। (३) अहै, आहि, है।

आयत—विस्तृत, दीर्घ, विशाल, लम्बा चौड़ा। (२) अर्बी भाषा के अनुसार- इञ्जील का वाक्य। क़ुरान का वचन।

आयतन—घर, मन्दिर, मकान। (२) विराम का स्थान। विश्राम स्थल, ठहराने की जगह। (३) ज्ञान के सञ्चार का स्थान, देवाराधान की जगह, देवालय।

आयसु—आज्ञा, आदेश, हुक्म।

आया—'आना' शब्द का भूतकाल। प्राप्त हुआ, पहुँचा।

आयु—जीवनकाल, आयुष, आयुर्बल, आयुष्य, वय, उम्र, उमर, आइ, आई, आउ, ज़िन्दगी।

आयुध—शस्त्र, हथियार, औज़ार।

आयुष—आयु, अवस्था, उमर।

आये—'आना' शब्द का भूतकाल। आये, पहुँचे।

आयो—प्राप्त हुआ, पहुँचा।

आरज—आर्य्य, श्रेष्ठ, उत्तम।

आरन्य—वन, आरण्य, जङ्गल। (२) वनैला, जङ्गली।

आरत—कादर, दुःखी, आर्त्त, चोट खाया हुआ।

आरति—आर्त्ति, क्लेश, दुःख। (२) व्याकुलता। (३) विरक्ति।

आरती—नीराञ्जन, घृत अथवा कपूर से प्रज्वलित दीपक को किसी मूर्त्ति के चरणों पर बारबार,

नाभि पर दो बार, मुख के पास एक बार और सर्वाङ्ग पर सात बार घुमाते हैं। इसे आरती कहते हैं। षोड़शोपचार में से एक प्रकार।

आरम्भ—अनुष्ठान, उत्थान, शुरू, किसी कार्य्य की प्रथमावस्था का सम्पादन। (२) आदि, शुरू का हिस्सा।

आराति—शत्रु, बैरी, दुश्मन।

आराधन—पूजा, उपासना, सेवा। (२) सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, ख़ुश करना।

आराध्य—पूज्य, पूजनीय, सेवा करने योग्य।

आराम—बाग़, उपबन, फुलवारी। (२) फ़ारसी भाषा के अनुसार-स्वस्थ, चङ्गा, तन्दुरुस्त। (३) आनन्द, सुख, चैन। (४) विश्राम, थकावट मिटाना, दम लेना। (५) स्वास्थ्य, चङ्गापन, तन्दुरुस्ती।

आरि—हठ, टेक, ज़िद। (२) अड़ कर, टेक बाँध कर।

आरूढ़—आरोही, सवार, चढ़ा हुआ। (२) दृढ़, स्थिर, अटल।

आरोग्य—स्वस्थ, नीरोग, चङ्गा, तन्दुरुस्त।

आरोप—आरपोण, स्थापित करना, मढ़ना, लगाना। (२) रोपना, बैठाना, वृक्षादि को एक जगह से उखाड़ कर दूसरी जगह लगाना।

आरोपित—रोपा हुआ, लगाया हुआ।

आर्त्त—कादर, दुखी, पीड़ित।

आर्त्ति—कादरता, दुःख, दीनता।

आर्द्र—गीला, ओद, तर।

आर्य्य—श्रेष्ठ, उत्तम, भला। (२) पूज्य, मान्य, बड़ा, श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न।

आलय—घर, गृह, मकान। (२) स्थान, जगह।

आलबाल—आबाल, थाला, गौंड़ा।

आलस—अकर्मण्यता, सुस्ती, काहिली। (२) अकर्मण्य, आलसी, काहिल। (३) एक सञ्चारी भाव जिसमें शारीरिक शक्ति के रहते उद्योग में मन्दता उत्पन्न होना वर्णन किया जाता है।

आलसी—अकर्मण्य, सुस्त, काहिल।

आव—आयु, उम्र, ज़िन्दगी। (२) 'आना' शब्द का वर्त्तमान काल। आओ।

आवई—आवे, आवै।

आवते—आते, प्राप्त होते, मिलते।

आवरण—आच्छादन, आबरन, ढकना। (२) घेरा, घेरेवाली भीत। चहारदीवारी। (३) ओट, ओझल, परदा। (४) चर्म, ओढ़न, ढाल।

आवर्त्त—पानी का भवँर। जल का चक्कर। (२) चिन्ता, सोच, फ़िक्र। (३) एक प्रकार का रत्न। राजावर्त्त, लाजवर्त्त। (४) संसार, जगत, दुनियाँ।

आवागमन—आना जाना, अवाई जवाई, आमदरफ़्त। (२) जन्म और मरण, बार बार मरने और जन्म लेने का बन्धन।

आविर्भाव—प्राकट्य, प्रादुर्भाव, प्रगट। (२) उत्पत्ति, उपज, पैदाइश। (३) आविष्कार होना। ईज़ाद। (४) आवेश, आतुरता, जोश।

आविल—पाप, कलुष, मैला।

आवृत—आच्छादित, छाया हुआ, ढँका हुआ। (२) अवरुद्ध, घिरा हुआ, छेका हुआ।

आवृत्ति—बार बार किसी बात का अभ्यास। एकही काम को बार बार करना।

आवेश—आतुरता, आबेस, चित्त की प्रेरणा। वेग, जोश, झोंक। (२) सञ्चार, व्याप्ति, प्रवेश, दौरा। (३) भूत प्रेत की बाधा।

आवै—'आना' शब्द का वर्तमान काल। आवे।

आवौं—आता हूँ। प्राप्त होता हूँ।

आशङ्का—भय, डर, ख़ौफ़। (२) सन्देह, शक, सुवहा। (३) अनिष्ट की भावना। बुराई का ख़ौफ़।

आशय—तात्पर्य्य, अभिप्राय, मतलब। (२) इच्छा, बासना, ख़ाहिश। (३) स्थान, आधार, जगह। (४) गड्ढा, गड़हा।

आशा—अप्राप्त के पाने की इच्छा और थोड़ा बहुत निश्चय। अभिलषित वस्तु की प्राप्ति के थोड़े बहुत निश्चय से उत्पन्न सन्तोष। उम्मेद। (२) भरोसा, आसरा, सहायता पाने की उम्मेद। (३) दिशा, ओर, तरफ़। (४) दक्ष प्रजापति की एक कन्या। (५) सङ्गीत में एक राग जो भैरव राग का पुत्र कहा जाता है।

आशिष—आशीर्वाद, असीस, दुआ।
आशिषाकर—(आशिष+आकर) अशीर्वाद की खान। असीस का भण्डार।
आशु—शीघ्र, तुरन्त, जल्दी।
आशुतोष—शीघ्र सन्तुष्ट होने वाला। तुरन्त प्रसन्न होनेवाला। जो शत्रु-मित्र पर बराबर दयालु हो।
आश्चर्य्य—विस्मय, अचम्भा, अचरज, तअज्जुब। (२) अद्भुतरस का स्थायी भाव। वह मनोविकार जो किसी नई अभूतपूर्व, असाधारण, बहुत बड़ी और समझ में न आने वाली बात के देखने सुनने वा ध्यान में आने से उत्पन्न होता है।
आश्रम—ऋषियों और मुनियों का निवास-स्थान। तपोवन, तपस्या की जगह। (२) कुटी, कुटीर, मठ, साधु सन्त के रहने का स्थान। (३) स्मृति में कही हुई हिन्दुओं के जीवन की भिन्न भिन्न अवस्थाएँ। वे अवस्था चार हैं—ब्रह्मचर्य्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्यास।
आश्रय—आधार, अवलम्ब, सहारा। (२) शरण, पनाह, ठिकाना। (३) भरोसा, ज़रिया, जीवन निर्वाह का हेतु। (४) घर, मन्दिर, मकान।
आश्रित—अधीन, शरणागत, भरोसे पर रहने वाला। (२) सेवक, दास, टहलू। (३) ठहरा हुआ, सहारे पर टिका हुआ।
आश्वासन—सान्त्वना, तसल्ली, दिलासा।
आस—आशा, उम्मेद।
आसक्त—अनुरक्त, लीन लिप्त। (२) लुब्ध, मोहित।
आसन—स्थिति, बैठक, बैठने की विधि। (२) यह अष्टाङ्ग योग का तीसरा अङ्ग है और पाँच प्रकार का है—पद्मासन, सिद्धासन, गरुड़ासन, कमलासन और मयूरासन। (३) बैठने की वस्तु। वह वस्तु जिस पर बैठें—जैसे पीढ़ा, चौकी, आसनी आदि। (४) कामशास्त्र में ८४ आसन गिनाये गये हैं। (५) साधुओं का टिकान। विरागी साधु बैठने के स्थान को आसन कहते हैं।
आसन्न—समीपस्थ, प्राप्त, निकट आया हुआ।
आसरा—आशा, भरोसा, आस। (२) आधार, अवलम्ब, सहारा।
आसा—आशा, भरोसा, सहारा।
आसीन—विराजमान, बैठा हुआ।
आस्पद—पद, प्रतिष्ठा, ओहदा। (२) वंस, कुल, जाति। (३) कार्य्य, कृत्य, काम। (४) स्थान, जगह, ठौर।
आस्वाद—स्वाद, रस, ज़ायका, मज़ा।
आहट—खड़का, पाँव की चाप, आरव, आने का शब्द। वह शब्द जो चलते समय पाँव तथा दूसरे अङ्गों से होता है। (२) पता, टोह, सुराग़, वह आवाज़ जिससे किसी जगाह पर किसी के रहने का अनुमान हो।
आहार—भोजन, अहार, खाना। (२) खाने की वस्तु।
आक्षिप्त—गिरा हुआ, ढकेला हुआ। फेंका हुआ। (२) अपवादित, निन्दित, दूषित।
आक्षेप—अपवाद लगाना, दोष लगाना, निन्दा करना। (२) गिराना, फेंकना, पवारना। (३) ध्वनि, व्यङ्ग अर्थात् जिस ध्वनि की सूचना निषेधात्मक वर्णन द्वारा मिले। (४) एक अलङ्कार का नाम जिसमें कार्य्य में बाधा डालने का तात्पर्य्य वर्णन हो।
आज्ञा—आदेश, निर्देश, निदेश, हुक्म, बड़ों का छोटों को किसी काम के लिये कहना। (२) स्वीकृति, अनुमति, छोटों की प्रार्थना के अनुसार बड़ों का उसे कोई काम करने की इजाज़त देना।
आज्ञाकारी—आज्ञापालक, हुक्म माननेवाला। (२) सेवक, दास, किङ्कर।
आज्ञानुवर्ती—आज्ञा के अनुसार बरताव करनेवाला। हुक्म के मोताबिक़ चलनेवाला। (२) सेवक, अनुगामी, दास।

(इ)

इ—वर्णमाला में स्वर के अन्तर्गत तीसरा वर्ण इसका स्थान तालु और प्रयत्न विवृत। 'ई' इसका दीर्घ रूप है। (२) कामदेव, अनङ्ग, मन्मथ।
इच्छा—आकाङ्क्षा, वाञ्छा, स्पृहा, ईहा, रुचि, अभिलाषा, कामना, मनोरथ, लिप्सा, इषा,

दोहद, तृष्णा, तर्ष, चाह, लालसा, ख़्वाहिश। एक मनोवृत्ति जो किसी ऐसी वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान ले जाती है जिससे किसी प्रकार के सुख की सम्भावना होती है। वेदान्त और सांख्य में इच्छा को मन का धर्म्म माना है। परन्तु न्याय और वैशेषिक में इसे आत्मा का व्यापार माना गया है।

इच्छित—अभिप्रेत, अभीष्ट, चाहा हुआ।

इच्छुक—अभिलाषी, चाहनेवाला।

इत—इधर, यहाँ, इस ओर।

इतना—इस मात्रा का। इस क़दर।

इति—समाप्ति, पूर्णता, अन्त, समाप्ति सूचक अव्यय। (२) यह, ऐसा।

इतो—इतना, इस मात्रा का। इस क़दर।

इदम्—यह, इह।

इन—'इस' का बहुबचन।

इनारुन—इन्द्रवारुणी, इन्द्रायन, माहर। एक लता जो बिल्कुल तरबूज की लता के समान होती है। सिन्ध, डेरा-इस्माइलखाँ, मुलतान, भावलपुर तथा दक्षिण और मध्य भारत में यह आप से आप उपजती है। इसका फल नारङ्गी के बराबर होता है जिसमें ख़रबूज़े की तरह फाँकें कटी होती हैं पकने पर इसका रङ्ग पीला हो जाता है। लाल रङ्ग का भी इन्द्रायन होता है। यह फल देखने में बड़ा सुन्दर पर अपने कडुपपन के लिये प्रसिद्ध है और दस्तावर होता है। प्रायः वैद्य लोग रेचक के लिए इसका औषधिकर्म्म में प्रयोग करते हैं।

इन्दिरा—लक्ष्मी, रमा। (२) छबि, शोभा, कान्ति।

इन्दु—चन्द्रमा, निशाकर, चन्द्र।

इन्दुकर—कौमुदी, चाँदनी, चन्द्रमा की किरण।

इन्द्र—मघवा, विड़ौजा, पाकशासन, अमरेश, सुनासीर, पुरुहूत, पुरन्दर, बासव, बज्री, वृत्रहा, सुरपति, शचीपति, देवराज, देवाधिप, मेघवाहन, वज्रपाणि, नाकनाथ, पर्वतारि, नमुचिसूदन, लेखर्षभ, सङ्क्रन्दन, दिवस्पति, सुत्रामा, हरिहय, जिष्णु, मरुत्वान्, वृद्धश्रवा, शतमन्यु, वृषा, सहस्राक्ष, महेन्द्र, पुलोमारि, पुरन्दशा, अर्ह। यह देवताओं का राजा है। इसका बाहन ऐरावत हाथी, अस्त्र वज्र, स्त्री शची, पुत्र जयन्त और नगरी अमरावती है। इन्द्र विषयलोलुपता में प्रसिद्ध है। गौतममुनि की भार्य्या अहिल्या के साथ इसने व्यभिचार किया था। धर्म्मात्मा प्राणियों के शुभानुष्ठान् से भयभीत होकर प्रायः यह उसमें बाधक होता है। इसे अपने इन्द्रासन छिन जाने का सदा ही डर लगा रहता है। (२) ऐश्वर्य्यवान, विभूतिसम्पन्न, विभवशाली। (३) श्रेष्ठ, उत्तम, बड़ा। (४) राजा, मालिक, स्वामी। (५) जीव, आत्मा, प्राण। (६) रात्रि, रजनी, निशा। (७) चौदह की संख्या विशेष।

इन्द्रिय—हृषीक, गो, विषयी, इन्द्री। शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। सांख्य ने कर्म करने वाले अङ्गों को इन्द्रिय मान कर इसके दो भाग किये हैं—ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय। दोनों प्रकार की इन्द्रियाँ पाँच पाँच हैं। जिनसे केवल विषयों का ज्ञान होता है वे ज्ञानेन्द्रिय हैं। जैसे-आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा। जिनके द्वारा विविध कर्म किये जाते हैं वे कर्मेन्द्रिय हैं। यथा-वाणी, हाथ, पाँव, गुदा और लिङ्ग। इनके अतिरिक्त मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार ये चार अन्तरेन्द्रियाँ मानी गई हैं। वेदान्तियों ने यही चौदह इन्द्रिय माना है। इनके पृथक् पृथक् देवता कल्पित किये हैं। जैसे-कान के दिशा, त्वचा के वायु, नेत्र के सूर्य्य, जिह्वा के प्रचेता, नासिका के अश्विनीकुमार, वाणी के अग्नि, पैर के विष्णु, हाथ के इन्द्र, गुदा के मित्र, लिङ्ग के प्रजापति, मन के चन्द्रमा, बुद्धि के ब्रह्मा, चित्त के अच्युत और अहङ्कार के शङ्कर देवता हैं। न्याय के मत से पृथ्वी का अनुभव घ्राण से, जल का जिह्वा से, तेज का आँख से, वायु का त्वचा से और आकाश का कान से होता है।

इन्द्री—इन्द्रिय, हृषीक, गो।

इन्द्रीविषय—देखना, सुनना, गन्ध लेना, स्वाद का ज्ञान और स्पर्शज्ञान-ये पाँचों क्रमशः ज्ञानेन्द्रियों के विषय हैं। बोलना, पकड़ना, चलना, मलत्याग और मैथुन—ये पाँचों क्रमशः कर्मेन्द्रियों के विषय हैं।

इमि—एवम्, इस प्रकार, इस तरह।

इयार (फ़ारसी—यार)। मित्र, सङ्गी, दोस्त।

इरषा—ईर्षा, डाह, हसद।

इव—सदृश, तुल्य, समान, नाईं, तरह, उपमावाचक शब्द।

इष्ट—अभिप्रेत, वाञ्छित, अभिलषित, चाहा हुआ। (२) इष्टदेव, कुलदेव, वह देवता जिसकी पूजा से कामना सिद्ध होती है। (३) मित्र, सखा, दोस्त। (४) अधिकार, वश, कब्ज़ा।

इस—'यह' शब्द का विभक्ति के पहले आदिष्ट रूप।

इह—यह, इस जगह, इस लोक में, यहाँ।

इहाँ—यहाँ, इस जगह, इस स्थान में।

इहै—यही, यहै, निश्चय बोधक।

(ई)

ई—हिन्दी वर्णमाला का चौथा अक्षर। यह यथार्थ में 'इ' का दीर्घ रूप है। इसके उच्चारण का स्थान तालु है। (२) लक्ष्मी, रमा, कमला। (३) ही, निश्चय सूचक। ज़ोर देने का शब्द। (४) यह, इह, यही।

ईति—खेती को हानि पहुँचानेवाले सात प्रकार के उपद्रव—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, चूहे लगना, टिड्डी पड़ना, पक्षियों की अधिकता, अपने राजा की धौंस और दूसरे राजा की चढ़ाई। (२) दुःख, क्लेश, पीड़ा। (३) प्रवास, विदेश-निवास, परदेश में रहना।

ईंधन—इन्धन, जलावन, जलाने की लकड़ी वा कण्डा।

ईर्षा—ईर्ष्या, ईर्षणा, डाह, हसद। दूसरे की बढ़ती देख कर जो हृदय में जलन होती है उसको ईर्षा कहते हैं।

ईर्ष्या—ईर्षा, डाह, हसद।

ईश—शिव, चन्द्रशेखर, ईशान। (२) स्वामी, प्रभु, मालिक। (३) राजा, नरेश, भूपाल। (४) ईश्वर, परमात्मा, परमेश्वर।

ईशान—शिव, महादेव, रुद्र। (२) ईशान कोन, पूरब और उत्तर दिशा का कोना। (३) सूर्य्य, दिवाकर, भानु। (४) स्वामी, अधिपति, मालिक। (५) ग्यारह की संख्या और ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र।

ईश्वर—परमेश्वर, परमात्मा, भगवान। (२) स्वामी, प्रभु, मालिक। (३) शिव, पिनाकी, रुद्र।

ईस—ईश, स्वामी, ईश्वर, मालिक।

ईहा—इच्छा, वाञ्छा, ख़्वाहिश। (२) चेष्टा, प्रयत्न, उद्योग। (३) लोभ, तृष्णा, लालच।

(उ)

उ—हिन्दी वर्णमाला का पाँचवाँ अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है। यह तीन मुख्य स्वरों में है। (२) मनुष्य, नर, आदमी। (३) ब्रह्मा, विधि, विधाता। (४) भी, निश्चय वाचक अव्यय।

उकठे—शुष्क, सूखे, झुराए हुए काठ।

उक्त—कथित, भाषित, कहा हुआ।

उक्ति—कथन, वचन, कहनूति। (२) अनोखा वाक्य, कवियों की उक्ति।

उग्र—प्रचण्ड, उत्कट, तीव्र, तीक्ष्ण, तेज़। (२) कठिन, कठोर, कड़ा। (३) रौद्र, घोर, भीषण। (४) प्रबल, बली, ज़बर्दस्त। (५) शिव, महादेव। (६) विष्णु, नारायण। (७) सूर्य्य, भानु। (८) बाँका, टेढ़ा, तिरछा। (९) क्षत्री पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न एक सङ्कर जाति। (१०) वछनाग, वत्सनाभ विष।

उग्रकर्मा—भीषण कर्म्म करनेवाला। उद्दण्डता पूर्णकाम करनेवाला। अत्ययन्त पराक्रमी।

उग्ररूप—उत्कट स्वरूप, विकट वेष

उग्रसेन—मथुरा का राजा। कंस का पिता।

उघरना—उद्‌घाटन, आवरण का हटना, खुलना, नङ्गा होना, उघार होना। (२) प्रकाशित होना, प्रगट होना, ज़ाहिर होना। (३) असली रूप में प्रगट होना, असलियत का खुलना।
उचाट—विरक्ति, उदासीनता, अपमानपन, मन का न लगना। (२) उच्चाटन, किसी के चित्त को कहीं से हटाना। तन्त्र के छे प्रयोगों में से एक।
उचाटि—उच्चाटन करके, हटा कर, दूर करके।
उचित—योग्य, ठीक, मुनासिब, वाजिब।
उच्च—ऊँचा, उन्नत। (२) श्रेष्ठ, उत्तम, महान्।
उछङ्ग—गोद, कनियाँ, कोरा।
उछाह—उत्साह, उमङ्ग, हौसला। (२) मङ्गल-कार्य्य, उत्सव, समैया, जलसा। (२) इच्छा, उत्कंण्ठा, ख़्वाहिश।
उजागर—प्रसिद्ध, विख्यात, ज़ाहिर। (२) प्रकाशित, दीप्तिमान, जगमगाता हुआ।
उजारि—ध्वस्त, उच्छिन्न, गिरा पड़ा। (२) उजाड़, उजाड़नेवाला, सत्यानाशी।
उजियारे—प्रकाशमान्, दीप्तिमान्, उजाला करने वाले। (२) उजागर, प्रसिद्ध, ज़ाहिर।
उज्वल—शुक्ल, श्वेत, सफ़ेद। (२) स्वच्छ, निर्मल, विशद, शुभ्र। (३) निष्कलङ्क, निर्दोष, बेदाग़। (४) प्रकाशमान, दीप्तिमान्, आबदार।
उठना—खड़ा होना, ऊँचा होना, नीची स्थिति से ऊपर आना। (२) उदय होना, निकलना। (३) जागना। (४) व्यय होना, खर्च होना।
उठाना—नीचे से ऊपर ले जाना, ऊपर ले लेना। धारण करना। (२) बैठे हुए प्राणी को खड़ा करना। (३) स्थान त्याग करना, हटाना। (४) जगाना। (५) व्यय करना।
उड़—उडु, नक्षत्र, तारा। (२) 'उड़ना' शब्द का वर्तमान काल।
उड़त—'उड़ना' शब्द का वर्तमान काल। उड़ता है।
उडु—नक्षत्र, ऋक्ष, तारका, नखत, तारा, तरई।
उडुगण—नक्षत्र समूह, तारका वृन्द।
उत—वहाँ, उधर, उस ओर।
उतङ्ग—उन्नत, ऊँचा, बलन्द। (२) श्रेष्ठ, उत्तम।
उतपति—उत्पत्ति, जन्म, पैदाइश।
उतरहिँ—उतरते हैं। पार होते हैं।
उत्कट—उग्र, विकट, तीव्र।
उत्कण्ठा—प्रबल इच्छा, अत्यन्त अभिलाषा। (२) एक सञ्चारी भाव जिसमें किसी कार्य के करने में विलम्ब न सह कर उसे चटपट करने की अभिलाषा होती है।
उत्कण्ठित—उत्सुक, चाव से भरा हुआ।
उत्कर्ष—प्रकर्ष, अधिकता, बढ़ती। (२) प्रशंसा, महिमा, बड़ाई। (३) श्रेष्ठता, उत्तमता, बड़प्पन। (४) समृद्धि, परिपूर्णता।
उत्कृष्ट—सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, अच्छे से अच्छा।
उत्तम—श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, सब से अच्छा। (२) छोटी रानी सुरुचि से उत्पन्न राजा उत्तानपाद का पुत्र। ध्रुव का सौतेला भाई।
उत्तर—उदीची, दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। ईशान और वायव्य कोण के बीच की दिशा। (२) प्रति वाक्य, जवाब, किसी प्रश्न को सुन कर उसके समाधान के लिए कही हुई बात। (३) प्रतीकार, बदला, हूँड़ा। (४) उपरान्त का, पिछला, बाद का। (५) श्रेष्ठ, बढ़ कर, बढ़िया। (६) पूर्व का, ऊपर का, पहिले का। (७) एक अलङ्कार का नाम जिस में उत्तर के सुनते ही प्रश्न का अनुमान किया जाता है।
उत्पत्ति—उद्‌गम, उद्भव, जन्म, पैदाइश, उपज। (२) सृष्टि, लोक रचना, कुदरत की बनावट। (३) आरम्भ, आदि, शुरू।
उत्पन्न—पैदा, जन्मा हुआ।
उत्पल—कमल, पद्म, नीलकमल।
उत्पात—उपद्रव, अशान्ति, ऊधम। (२) कष्ट पहुँचानेवाली आकस्मिक घटना, दङ्गा, हङ्गामा।
उत्पादक—उत्पन्न करनेवाला। पैदा करनेवाला।
उत्सव—मंगल कार्य, उछाह, जलसा। (२) पर्व, समैया, तेवहार। (३) आनन्द, विहार।
उत्साह—उमङ्ग, उछाह, जोश, हौसला (२) साहस, हिम्मत, दिलेरी। (३) उत्साह की पूर्णावस्था

को वीररस कहते हैं। इससे वीररस का यह स्थायी भाव है।
उथपन—स्थानभ्रष्ट, उजड़ा हुआ। उखड़ा हुआ।
उथपे—उजड़े हुए। स्थान से पतित हुए।
उदक—पानी, जल, नीर,।
उदधि—समुद्र, सिन्धु, सागर।
उदय—प्रगट होना, निकलना, ऊपर आना। (२) उद्गम, उदय होने का स्थान। उदयाचल। (३) वृद्धि, उन्नति, बढ़ती।
उदर—तुन्द, जठर, पेट। (२) अन्तर, भीतरका भाग।
उदार—दाता, दानशील, देनेवाला। (२) श्रेष्ट, महान, बड़ा। (३) जो सङ्कीर्ण चित्त न हो। ऊँचे दिल का। सखरज। (४) शिष्ट, शीलवान्, सरल, सीधा। (५) दक्षिण, अनकूल, मुवाफ़िक़।
उदास—विरक्त, वैराग्यवान, जिसका चित्त किसी पदार्थ से हट गया हो। (२) निरपेक्ष, तटस्थ, झगड़े से अलग। (३) दुःख, खेद, रञ्ज। (४) दुखी, अनमना, रञ्जीदा।
उदासी—विरक्त पुरुष, त्यागी, सन्यासी। (२) निरानन्द, खिन्नता, ग़म। (३) नान्हकशाही साधुओं का एक भेद। जो शिखा नहीँ रखते, सन्यासियोँ की तरह सिर घुटाते और लङ्गोट पहिनते हैं।
उदासीन—उदास, विरक्त, त्यागी, निरपेक्ष।
उदित—प्रगट, निकला हुआ। जो उदय हुआ हो। ज़ाहिर। (२) स्वच्छ, उज्वल। (३) कथित, कहा हुआ। (४) प्रफुल्लित, प्रसन्न।
उद्दित—उदित, प्रकाशित, ज़ाहिर।
उद्धत—उग्र, प्रचण्ड, अक्खड़,। (२) प्रगल्भ, बड़ा ढीठ।
उद्धरन—उद्धार करना, मुक्त करना, बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था में लाना। (२) उद्धारकरनेवाला, छुड़ानेवाला, बचानेवाला उबारनेवाला।
उद्धार—मुक्ति, त्राण, निस्तार, छुटकारा, रिहाई। (२) उन्नति, सुधार, बुरी दशा से अच्छी दशा में आना।
उद्धृत—उगला हुआ। (२) ऊपर उठाया हुआ। (३) अन्य स्थान से ज्योँ का त्योँ लिया हुआ।
उद्भट—प्रबल, प्रचण्ड, ज़बर्दस्त। (२) श्रेष्ट, महान्।
उद्भव—उत्पत्ति, जन्म, पैदाइश।
उद्यान—उपवन, बग़ीचा, फुलवारी।
उद्योग—प्रयत्न, प्रयास, कोशिश। (२) उद्यम, कामधन्धा, कारबार।
उद्योत—प्रकाश, उजाला, रोशनी। (२) झलक, चमक, आभा।
उद्योतकारी—प्रकाशक, उजेला करनेवाला।
उधर्‌यो—उद्धार किया, उबारा, बचाया।
उधारे—उद्धार किये, उबारे, बचाये।
उधार्‌यो—उद्धार कियो, उबार्‌यो।
उन—'उस' का बहुवचन। विशेष—'वह' का किसी विभक्ति के साथ संयोग होने से 'उस' रूप हो जाता है।
उन्नत—ऊँचा, ऊपर उठा हुआ। (२) वृद्धि प्राप्त, समृद्ध, बढ़ा हुआ। (३) श्रेष्ठ, महत्, बड़ा।
उन्मत्त—मदान्ध, मतवाला, जो आपे में न हो। (२) विक्षिप्त, बावला, पागल।
उप—यह उपसर्ग जिन शब्दोँ के पहिले लगता है उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है। समीपता—जैसे, उपकूल, उपगमन। सामर्थ्य—जैसे, उपकार। न्यूनता—जैसे, उपमन्त्री, उपसभापति। व्याप्ति—जैसे, उपकीर्ण।
उपकार—हित साधन, भलाई, नेकी। (२) लाभ, लाहु, फ़ायदा।
उपकारिनी—उपकारिणी, हितकारिणी, भलाई करनेवाली।
उपकारी—हितकारक, भलाई करनेवाला।
उपखान—उपाख्यान, वृत्तान्त, हाल। (२) पुरानी कथा, कहानी, क़िस्सा।
उपचार—व्यवहार, प्रयोग, विधान। (२) चिकित्सा, दवा, इलाज। (३) षोड़शोपचार, धर्म्मानुष्ठान, पूजनकी विधि। (४) सेवा, ख़िदमत, बीमारदारी।
उपज—उत्पत्ति, उद्भव, पैदावार। (२) उद्भावना, नई उक्ति, मन में आई नई बात। (३) मनगढ़न्त, मन की गढ़ी हुई बात।
उपजत—उत्पन्न होता है। उपजता है।

उपजावै—उपजाता है। पैदा करता है।

उपदेश—शिक्षा, सीख, नसीहत, हित की बात कहना। (२) दीक्षा, गुरुमन्त्र।

उपद्रव—उत्पात, अशान्ति, आकस्मिक बाधा, विप्लव, बलवा, ऊधम, हलचल, दङ्गाफ़साद।

उपधि—समीप, निकट, नज़दीक। (२) छल, कपट, जान बूझ कर और का और कहना। (३) हेतु, कारण, प्रयोजन।

उपमा—उपमान, सादृश्य, समानता, तुलना, मिलान, पटतर, जोड़, मुशाबहत। किसी वस्तु, व्यापार वा गुण को दूसरी वस्तु, व्यापार वा गुण के समान प्रगट करने की क्रिया। वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय। वह जिसके समान कोई दूसरी वस्तु बतलाई जाय। वह जिसके धर्म्म का आरोप किसी वस्तु में किया जाय। (२) एक अर्थालङ्कार जिसमें उपमा और उपमेय के बीच भेद रहते हुए भी उनका समान धर्म्म बतलाया जाता है।

उपमाई—सादृश्यता, समानता, बराबरी।

उपमान—उपमा, सादृश्य, पटतर।

उपमेय—उपमा के योग्य। जिसकी उपमा दी जाय। वर्णनीय, वर्ण्य, वह वस्तु जिसकी उपमा दी जाय। वह वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु के समान बतलाई गई हो। जैसे—'मुख चन्द्र' में मुख उपमेय है और चन्द्र उपमान है।

उपरान्त—अनन्तर, पीछे, बाद।

उपल—पत्थर, शिला, पथरा। (२) बिनौरी, ओला, बादलों द्वारा गिरनेवाला पत्थर। (३) अहिल्या गौतमी, गौतम मुनि की पत्नी।

उपबन—आराम, बाग़, बगीचा। (२) वाटिका, फुलवारी। (३) छोटे छोटे जङ्गल। वह बन जो सघन वन के समीप विरल हो किम्वा, वस्ती से मिला जुला हो।

उपवास—लङ्घन, निराहार, फ़ाक़ा। वह व्रत जिसमें भोजन छोड़ दिया जाता है। (२) अन्न जल न ग्रहण करना। अनाहार रहना।

उपवीत—यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत, जनेऊ। (२) उपनयन संस्कार, व्रतबन्ध, बरुआ।

उपशम—शान्ति, निवृत्त, इन्द्रियनिग्रह, बासनाओं को दबाना। (२) निवारण का उपाय। तदबीर, इलाज, चारा।

उपस्थित—विद्यमान, मौजूद, हाज़िर, पास आया हुआ, समीप में बैठा हुआ।

उपहार—पुरस्कार, भेंट, नज़र।

उपहास—हँसी, दिल्लगी। (२) निन्दा, बुराई।

उपाई, उपाउ—उपाय, यत्न, तदबीर।

उपाधि—उपद्रव, उत्पात, ऊधम। (२) प्रतिष्ठा सूचक पद। पदवी, ख़िताब (३) छल, कपट, और वस्तु को और बतलाने की धोखेबाज़ी। (४) धर्म्मचिन्ता, कर्त्तव्य का विचार।

उपाय—यत्न, साधन, युक्ति, तदबीर, उपाउ, उपाव, वह क्रिया जिससे अभीष्ट तक पहुँचे। (२) समीप पहुँचना, निकट आना। (३) चिकित्सा, इलाज।

उपासक—भक्त, सेवक, आराधक, उपासना करने वाला, पूजा करनेवाला।

उपासन—सेवा करना, पूजा करना, सेवा में हाज़िर रहना।

उपासना—परिचर्य्या, आराधन, पूजा, टहल। (२) उपवास करना, निराहार रहना।

उपेक्षणीय—त्यागने योग्य, दूर करने के लायक़। (२) उपेक्षा भाव, न त्याग न ग्रहण।

उबर्यो—उबरा, शेष रहा, बाक़ी बचा।

उबारा—उद्धार किया, बचाया, छुड़ाया (२) उद्धार, छुटकारा, बचाव।

उबीठे—उबिठा, चित्त से उतरा, अरुचिकर हुआ। (२) ऊबे, उकताने।

उभय—युगल, उभौ, दोनों।

उमग—उमङ्ग, उत्साह, हौसला।

उमङ्ग—आनन्द उल्लास, सुखदायक मनोवेग। चित्त का उभाड़। उत्साह, उमग, जोश, हौसला, मौज, लहर। (२) पूर्णता, अधिकता, उभाड़।

उमा—पार्वती, गिरिजा, गौरी।

उमाकान्त
उमापति
उमावर } —शिव, पिनाकी, महादेव ।

उर—उरस्, वक्षस्थल, छाती। (२) हृदय, मन, चित्त।
उरग — सर्प, अहि, साँप ।
उरगनायक—शेषनाग, साँपों के मालिक ।
उरगरिपु—सर्पों के शत्रु, गरुड़, वैनतेय ।
उरगाद—सर्पों के भक्षक, गरुड़ ।
उरगारि—सर्पों के बैरी, गरुड़ ।
उरगारियान—गरुड़ के सवार विष्णु भगवान ।
उरसि—उर, वक्षस्थल, छाती । (२) हृदय, चित्त ।
उऋन—ऋणमुक्त, ऋणरहित, कर्ज़ का अदा होना। कर्ज़ से छुटकारा पाना।
उरिन—उऋण, ऋणमुक्त होना।
उरुगाय—विष्णु, जनार्दन, वैकुण्ठनाथ । (२) स्तुति, प्रशंसा, तारीफ़ । (३) प्रशंसित, जिसका गान किया जाय । (४) विस्तृत, फैला हुआ, जिसकी गति विस्तृत हो । (५) सूर्य्य, भानु, दिवाकर।
उर्मिला—राजा जनक की कन्या। सीताजी की छोटी बहिन जो लक्ष्मणजी को व्याही गई थी ।

उर्मिलारमन
उर्मिलारवन } —लक्ष्मण, उर्मिलाकान्त, उर्मिला को रमानेवाले।

उर्विधर—शेषनाग, सर्पेश । (२) पर्वत, पहाड़ ।
उर्विपति—राजा, भूपति । (२) विष्णु, केशव ।
उर्वी—पृथ्वी, धरती, ज़मीन ।
उलटि—उलट कर, घूमकर, फिर कर ।
उलटी—विरुद्ध, विपरीत, और का और होना । (२) वमन, छर्दि, क़ै ।
उलटे—विरुद्ध क्रम से । बेठिकाने, और तौर से । जैसे होना चाहिये उससे विपरीत ढङ्ग से होना ।
उलटो—विपर्य्यय, विपरीत, ख़िलाफ़ ।
उलूक—उल्लूपक्षी, घुघुआ ।
उसर—ऊसर, वह भूमि जिसमें तृण न उत्पन्न हो ।
उसास—उसाँस, लम्बी साँस, ऊपर को चढ़ती हुई साँस । (२) श्वास, साँस, दम ।

(ऊ)

ऊ—हिन्दी वर्णमाला का छठाँ अक्षर । इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है । (२) शिव, महादेव । (३) चन्द्रमा, शशि । (४) भी, ही, निश्चय सूचक अव्यय । (५) वह ।
ऊँच—उच्च, ऊँचा, ऊपर उठा हुआ । (२) श्रेष्ठ, उत्तम, बड़ा ।
ऊपर—ऊँचाई पर । ऊँचे स्थान में । आकाश की ओर । (२) प्रथम, पहिले । (३) परे, श्रेष्ठ । (४) अतिरिक्त, अलावे ।
ऊर्द्ध्व—ऊर्ध, ऊर्ध्व, ऊपर, ऊपर की ओर । (२) ऊँचा, ऊपर का । (३) खड़ा, ठाढ़ ।
ऊर्द्ध्वरेता—ऊर्धरेता, ऊर्ध्वरेता, ब्रह्मचारी, जो अपने वीर्य्य को गिरने न दे । स्त्री प्रसङ्ग से परहेज़ करनेवाला । (२) हनुमान, वायुनन्दन । (३) शिव, महादेव । (४) सनकादि ऋषीश्वर । (५) भीष्म पितामह ।
ऊसर—वह भूमि जिसमें रेह अधिक हो और कुछ उत्पन्न न हो । वह बनजर ज़मीन जिसमें किसी प्रकार के पौधे न जमें । निरुपजाऊ परती आराज़ी ।
ऊसरो—ऊसर भी, निरुपजाऊ धरती भी ।

(ए)

ए—एक स्वर जो हिन्दी वर्णमाला का सातवाँ अक्षर है और इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है । (२) विष्णु, केशव । (३) यह, इह । (४) एक अव्यय जिसका सम्बोधन या बुलाने के लिए प्रयोग किया जाता है ।
एक—एकाइयों में सब से छोटी और पहली संख्या । (२) अद्वितीय, अनुपम, अकेला, एकही। (३) अनिश्चित, कोई, किसी । (४) समान, तुल्य, एकही प्रकार का ।
एकअङ्ग—एकाङ्ग, एक ओर, एक तरफ़ा । (२) एकाङ्गी प्रीति । एकही ओर का प्रेम ।
एकठाई—एकत्रित, इकट्ठा, एक जगह, एकठौर ।

एकरस—समान, एक ढङ्ग का। न बदलनेवाला। (२) ईश्वर, जो जन्म मृत्यु से रहित हो।

एकरूप—एकही रूप का, समान आकृति का, एकही रङ्ग ढङ्ग का। (२) ज्योँ का त्योँ। वैसाही, जैसे का तैसा।

एकाग्र—एक ओर स्थित, चञ्चलता रहित, सावधान। (२) अनन्य चित्त। जिसका ध्यान एक ओर लगा हो।

एकान्त—अत्यन्त, नितान्त, बिल्कुल। (२) पृथक्, अलग, अकेला। (३) निर्जन स्थान, निराला, सूनी जगह जहाँ कोई न हो।

एकादशी—ग्यारस, प्रत्येक पाख की ग्यारहवीँ तिथि। वैष्णव मत के अनुसार इस तिथि को अन्न खाना वर्जित है।

एते—इतने, इस प्रमाण के।

एतो—इतनो, इस मात्रा का।

एव—एक निश्चयार्थक शब्द। ही, भी।

एवम्—ऐसाही, इसी प्रकार। (२) और, ऐसे ही, और।

एह—यह, येह।

एहि—'एक' का वह रूप जो उसे विभक्ति के पहले प्राप्त होता है।

एहु—एह, यह, यही।

(ऐ)

ऐ—हिन्दी वर्णमाला का आठवाँ अक्षर। इसका उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है। (२) अयि, हे, एक सम्बोधन अव्यय। (३) शिव, महादेव, शङ्कर।

ऐन। अयन, स्थान, जगह। (२) अर्बी भाषा के अनुसार—ठीक, उपयुक्त, सटीक। (३) पूरापूरा बिल्कुल।

ऐश्वर्य्य—विभूति, धनसम्पत्ति, लक्ष्मी। (२) आधिपत्य, प्रभुत्व, मलिकई। (३) अणिमादिक सिद्धियाँ।

ऐसा—इस प्रकार का, इस ढङ्गका, इसके समान।

ऐसे—इस प्रकार से, इस तरह से, इस ढङ्ग से।

ऐसो—ऐसा, इस प्रकार का। इसके समान।

(ओ)

ओ—हिन्दी वर्णमाला का नवाँ अक्षर जिसका उच्चारण ओष्ठ और कण्ठ से होता है। (२) ब्रह्मा, विरञ्चि, विधाता। (३) एक सम्बोधन सूचक शब्द। (४) और, संयोजक शब्द। (५) ओह, विस्मय सूचक शब्द। (६) एक स्मरण सूचक शब्द।

ओऊ—वे भी। वह भी।

ओक—निवास स्थान, रहने की जगह, घर। (२) आश्रय, ठिकाना। (३) वमन करने की इच्छा, ओकाई, मतली।

ओघ—समूह, ढेर। (२) धारा, प्रवाह, बहाव।

ओट—आड़, ओझल, व्यवधान, विक्षेप जो दो वस्तुओं के बीच किसी तीसरी वस्तु के आ जाने से होता है। (२) शरण, रक्षा, पनाह।

ओढ़ाई—कपड़े से आच्छादित किया। ओढ़ाया।

ओतो—उतना, उस क़दर का। उस प्रमाण का।

ओर—अन्त, छोर, किनारा, सिरा। (२) आरम्भ, आदि, शुरू। (३) दिशा, कइती, तरफ़। (४) पक्ष, सहायक, मददगार।

ओस—शीत, शबनम, हवा में मिली भाफ जो रात की सरदी से जम कर और जलबिन्दु के रूप में हवा से अलग होकर पदार्थोँ पर लग जाती है। अधिक सरदी पाकर ओसही पाला हो जाती है।

ओसकन—ओस के कण। ओस की अत्यल्प बूँदे।

औ

औ—हिन्दी वर्णमाला का दसवाँ वर्ण जिसका उच्चारण स्थान कण्ठ और ओठ है। (२) और। (३) शेषनाग, अनन्त। (४) पृथ्वी, विश्वम्भरा।

औगुण—अवगुण, दोष, बुराई।

औचट—अवचट, अचानक, अनचीते में।

औटत—अवटत, उबालते हुए, चुराते हुए।
औतार—अवतार, जन्म, पैदाइश।
और—अन्य, अन्यतर, इतर, भिन्न, अपर, दूसरा, अवर, एक संयोजक शब्द जो दो शब्दों वा वाक्यों के जोड़ने में प्रयोग किया जाता है। (२) अधिक, बहुत, ज्यादा।
औसर—अवसर, समय, मौक़ा।
औसान—अवसान, अन्त, अख़ीर।
औसि—अवश्य, निश्चित, निश्चय करके।

(अं)

अं—हिन्दी वर्णमाला का ग्यारहवाँ अक्षर जिसका उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है।
अंश—भाग, हिस्सा, बखरा। (२) कला, सोलहवाँ भाग।
अंशु—किरण, प्रभा, रश्मि। (२) सूत, तागा, डोरा। (३) लेश, अत्यन्त सूक्ष्मभाग। (४) सूर्य्य, भानु, दिवाकर। (५) एक ऋषि का नाम।
अंस—अंश, भाग, हिस्सा।

(क)

क—हिन्दी वर्णमाला का पहला व्यञ्जन वर्ण जिस का उच्चारण कण्ठ से होता है (२) ब्रह्मा, विधाता। (३) विष्णु, कमलापति। (४) सूर्य्य, रवि। (५) अग्नि, पावक। (६) पवन, वायु। (७) कामदेव, अनङ्ग। (८) यम, काल। (९) दक्ष, प्रजापति। (१०) राजा, भूपाल। (११) प्रकाश, उजाला। (१२) आत्मा, जीव। (१३) शरीर, देह। (१४) मन, चित्त। (१५) मयूर, मोर।
कइ—अनेक, कई, एक से अधिक।
कइफेरे—कई फेरा, बहुत घुमाव, अनेक फेरवा।
कँगाल—दरिद्र, कङ्गाल, निर्धन, ग़रीब।
कङ्क—लोहपृष्ठ, क्षेमकरी, लाल पङ्खवाली चील्ह जिसकी गर्दन सफ़ेद होती है। (२) काँक, सफेद चील्ह, श्वेत रङ्गवाली चिल्होर। (३) बक, बगुला। (४) यमराज, अन्तक। (५) क्षत्रिय, क्षत्री।
कङ्कन—कङ्कण, ककना, चूड़ा, ढरकौआ, हाथ की कलाई में पहनने का एक गहना। (२) एक धागा, जिसमें सरसों आदि की पुटली पीले कपड़े में बाँध कर एक लोहे की मुँदरी के साथ बिवाह के समय से पहले दूलह वा दुलहिन के हाथ में रक्षार्थ बाँधते हैं।
कङ्गाल—दरिद्र, निर्धन, ग़रीब। (२) कँगला, भुक्खड़, अकाल का सताया हुआ मङ्गन।
कच—बाल, चिकुर, केश।
कछु—कुछ, थोड़ा सा, ज़रा।
कछुक—कुछ एक, थोड़ा सा।
कछू—कुछ, थोड़ा, ज़रा।
कज्जल—काजल, कारिख, कजली, करिखा, करिया, कारो, काला रङ्ग का। (२) सुरमा, अञ्जन, आँजन। (३) स्याही, मसी, रोशनाई।
कञ्चन—सुवर्ण, सोना। (२) धन, सम्पत्ति। (३) धतूर, कनक, (४) स्वच्छ, सुन्दर, मनोहर। (५) स्वस्थ, नीरोग, तन्दुरुस्त। (६) रक्तकाञ्चन, लाल फूल वाला कचनार का वृक्ष।
कञ्चुक—चोलक, चपकन, अचकन, लम्बा अङ्गा। (२) कञ्चुकी, चोली, अँगिया। (३) वस्त्र, वसन, कपड़ा। (४) वर्म्म, कवच, बख़्तर। (५) केचुल, केचुली।
कञ्चुकी—कञ्चुकि, चोली, अँगिया, कुरती। (२) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार, नक़ीब।
कञ्ज—कमल, पद्म, सरोज।
कञ्जनाभ—कमलनाभ, जिसकी नाभ से कमल उत्पन्न हो, विष्णु, श्रीपति।
कञ्जाभ—कमलकी आभा। कमल की कान्ति।
कञ्जारुन—अरुणकञ्ज, रक्तोत्पल, लालकमल।
कटक—सेना, लश्कर, फ़ौज। (२) कङ्कन, चूड़ा, ढरकौआ। (३) समूह, ढेर। (४) सथरी, चटाई। (५) चक्र, पहिया।
कटककारी—सैन्य संग्रह कर्त्ता, सेना तैयार करनेवाला। फ़ौज जुटानेवाला।

कटकाङ्गदादि—(कटक+अङ्गद+आदि) कङ्कन और विजायठ आदि ज़ेवर।

कटत—'कटना' शब्द का वर्त्तमान काल। टुकड़े २ होता है, कटता है। (२) खपता है, विकता है।

कटाक्ष—बाँकी चितवन, तिरछी नज़र। (२) व्यंग्य, आक्षेप, ताना।

कटि—लङ्क, करिहाँव, कमर, शरीर का मध्य भाग जो पेट के पीछे और पीठ के नीचे पड़ता है।

कटिप्रदेश—लङ्कस्थान, करिहाँव की जगह। कमर।

कटु—कटुक, चरपरा, कड़ुवा, तीक्ष्ण, तीत, छे रसों में एक रस जिसका अनुभव जीभ से होता है। जैसे-सोंठ मिर्च आदि। (२) अनिष्ट, बुरा लगनेवाला। कटुवचन जो मन को न भावे।

कटुक—कटु, कड़ुआ, तीत। (२) दुर्वचन।

कटै—'कटना' शब्द का वर्तमान काल, काटता है। टुकड़े टुकड़े होता है।

कठिन—दृढ़, कठोर, सख़्त। (२) दुष्कर, दुःसाध्य, मुश्किल। (३) कठिनता, कष्ट, सङ्कट।

कठिनाई—कठोरता, कड़ाई, सख़्ती। (२) असाध्यता, मुशकिलात। (३) निर्दयता, बेरहमी। (४) दृढ़ता, मज़बूती।

कठोर—कठिन, कड़ा, सख़्त। (२) निर्दय, निठुर, बेरहम।

कठोरे—कठोरतापूर्ण। कड़ाई से भरपूर।

कड़ाह—कटाह, कड़ाहा, कड़ाही, आँच पर चढ़ाने का लोहे का बहुत बड़ा गोल बरतन जिसके दो तरफ़ पकड़ने के लिए कड़े लगे रहते हैं। इसमें घी डाल कर पूड़ी हलुवा बनाते हैं और दूध आदि पकाया जाता है।

कड़ुवा—कटु, कड़ुआ, चरपरा, तीत। (२) अप्रिय।

कण—कन, किनका, रवा।

कण्ट—कण्टक, काँट, काँटा।

कण्टक—कण्ट, काँटा, काँट (२) विघ्न, बाधा, बखेड़ा। (३) बाधक, विघ्नकर्ता, बखेड़ा करनेवाला। (४) कवच, बख़्तर।

कण्टकाकुल—(कण्टक+आकुल) काँटे से व्याप्त। काँटों से घबड़ाया हुआ।

कण्ठ—गल, गला, टेंटुआ। (२) घाँटी, ललरी, गले की वे नलियाँ जिनसे भोजन पेट में उतरता है और आवाज़ निकलती है। (३) स्वर, शब्द, आवाज़। (४) तट, किनारा, काँठा।

कण्डु—पामा, खाज, खुजली।

कत—क्यों, काहे को, किसलिए।

कतहुँ
कतहूँ } —कहीं भी। किसी स्थान पर भी।

कति—कितने। (२) कौन। (३) किस संख्या में। किस क़दर (४) अगणित, बहुत, बेशुमार।

कथक—कत्थक, कथिक, एक जाति जिसका पेशा गाना, बजाना और नाचना है। (२) पौराणिक, कथक्कड़, कथा कहनेवाला।

कथन—बात, बखान, कहना।

कथा—जो कथन हो। धर्म्म विषयक व्याख्यान। सद्ग्रन्थ का आख्यान। (२) समाचार, हाल, ख़बर। (३) वादविवाद, कहासुनी।

कथिक—कथक, कत्थक।

कथिक को दण्ड—कथक का डण्डा। वह लकड़ी जिसके सिरे पर घुंघुरू लगा रहता है और लड़कों को सिखाते समय ताल का सङ्केत उसी से करते हैं। गोसाईंजी ने इसकी उपमा अस्थिरता के लिए दी है।

कथित—वर्णित, भाषित, कहा हुआ।

कदन—मरण, मृत्यु, मौत। (२) विनाश, नष्ट, ध्वंस। (३) पाप, हिंसा, घात। (४) घातक, हिंसक, मारनेवाला। (५) युद्ध, संग्राम, लड़ाई। (६) दुःख, कष्ट, पीड़ा।

कदरज—कदर्य्य, सूम, एक पापी मनुष्य का नाम।

कदराई—कादरता, भीरुता।

कदर्य्य—सूम, कञ्जूस, मक्खीचूस, जो स्वयम् कष्ट उठाकर और अपने परिवार को कष्ट देकर धन इकट्ठा करे। (२) कदरज, एक पापी मनुष्य का नाम।

कदलि—कदली, रम्भा, केला।

कदली—रम्भा, मोचा, सुफला, निःसारा, भानुफला, गुच्छफला, वनलक्ष्मी, वारणवल्लभा, अंशुम-

स्फला इत्यादि इसके पर्यायी नाम हैं। प्राकृत में केला, केरा, कदलि कहते हैं। केले के वृक्ष भारतवर्ष, बरमा, चीन, मलाया के टापुओं, अफ़्रिका, अमेरिका, दक्षिणी योरप आदि गरम स्थानों में होते हैं। इसके पत्ते गज़ डेढ़ गज़ लम्बे और हाथ भर चौड़े होते हैं। इस पेड़में डालियाँ नहीं होतीं, अरुई वण्डे आदि की तरह पूती ही से एक एक पत्ते निकलते हैं। इस वृक्ष में पानी के सिवाय हीर होता ही नहीं। इसके फूल लाल, फल गुच्छे में आते हैं। वे कच्चपन में हरे रंग के और पकने पर पीले होते हैं। केले की अनेक जातियाँ होती हैं, उनका उल्लेख करने से विस्तार बढ़ जायगा और वह यहाँ अभीष्ट नहीं है।

कदाचित्—कदाचन, कदाच, कश्चित, शायद।

कदापि—कभी भी। किसी समय। हर्गिज़।

कद्रू—कश्यप की एक स्त्री जिससे सर्प पैदा हुए थे। सर्पों की माता।

कन—किनका, कण, रवा, ज़र्रा, अत्यन्त छोटा टुकड़ा। (२) कना, चावल से निकली मैल जो धूल के समान निकलती है। (३) अन्न, अनाज, दाना।

कनक—सुवर्ण, कञ्चन, सोना। (२) नागकेसर, फलक। (३) हरवल्लभ, धतूरा। (४) रक्त काञ्चन, लाल कचनार। (५) पलाश, टेसू, ढाक। (६) गेहूँ का आटा, कनिक।

कनककशिपु—हिरण्यकशिपु, प्रहलाद भक्त का पिता।

कनिष्ठ—अत्यन्त लघु, बहुत छोटा। (२) पीछे का, जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। (३) निकृष्ट, हीन।

कनौड़ो—उपकृत, दबइल, एहसानमन्द, उपकार से दबनेवाला। (२) लज्जित, सङ्कुचित, शरमिन्दा। (३) क्षुद्र, तुच्छ, नीच। (४) कलङ्कित, निन्दित, बदनाम। (५) एकाक्ष, काना। (६) अपङ्ग, जिसका कोई अङ्ग खण्डित हो।

कन्त—स्वामी, पति, मालिक। (२) ईश्वर, परमात्मा।

कन्द—बादर, वारिद, मेघ। (२) मूल, जड़, सोढ़। (३) सूरन, ओल, ज़मीकन्द। (४) पिण्डालु, कन्दग्रन्थि, शकरक़न्द। (५) फ़ारसी भाषा के अनुसार—क़न्द, ओला, मिश्री।

कन्दर्प—कामदेव, मदन, मार।

कन्दाकर—(कन्द+आकर) बादरों की खान, मेघराशि। (२) आकाश, व्योम, गगन।

कन्दु—गेंद, कन्दुक, गेंदा।

कन्दुक—कन्दु, गेन्दुक, गेंद। (२) गोलतकिया, गल-तकिया, गेंडुआ। (३) पूगीफूल, गुवाक, सोपारी।

कन्ध—कन्धा, काँध, गरदन। (२) शाख, डाली।

कन्धर—ग्रीवाँ, कन्धा, काँध। (२) बादर, मेघ, धुरवा। (३) मुस्ता, मोथा।

कन्धा—कन्ध, वाहुमूल, मोढ़ा, मनुष्य के शरीर का वह भाग जो गले और मोढ़े के बीच में है।

कन्या—पुत्री, बेटी, लड़की। (२) अविवाहिता लड़की, क्वारी कन्या। (३) घृतकुमारी, घीकुवार। (४) स्थूलैला, बड़ी इलायची। (५) बाराहीकन्द, गेंठी। (६) वन्ध्याकर्कोटकी, बाँझखेखसा।

कपट—छल, दम्भ, धोखा, अपना अभिप्राय साधन के लिए हृदय की बात को छिपाने की वृत्ति। (२) छिपाव, दुराव, भेदभाव।

कपटी—कपट करनेवाला, छली, धोखेबाज़, दग़ाबाज़, धूर्त्त, पाखण्डी।

कपर्द—कपर्दिका, वराटिका, कौड़ी। (२) जटाजूट, शिवजी की जटा।

कपाट—पट, किवाड़, केवारी।

कपाल—उत्तमाङ्ग, सिर, मस्तक, कपार, खोपड़ी। (२) भाग्य, क़िस्मत, तक़दीर।

कपाली—शिव, महेश, खोपड़ी की माला पहनने वाला।

कपास—सूत्रपुष्पा, मनवाँ, एक पौधा जिसके ढोंढ़ से रूई निकलती है। इसके अनेक भेद हैं।

कपि—वानर, बन्दर। (२) हनूमान, पवनकुमार। (३) सुग्रीव, सुकण्ठ।

कपिकेलि—वानरी लीला, बन्दरों का तमाशा।

कपिकेशरी—वानरसिंह, निर्भीक कीश, वानरों में सिंह के समान पराक्रमी।

कपिपति—वानरराज, वन्दरों का मालिक, कपियों का प्रधान। (२) सुग्रीव, सुकण्ठ।

कपिल—भूरा, धुमैला, मटमैला। (२) पिङ्ग, पिङ्गल, तामड़ा रङ्ग का। वह रङ्ग जो भूरा पन और ललाई लिए हुए हो। (३) श्वेत, शुक्ल, सफ़ेद। (४) एक मुनि का नाम जो सांख्य शास्त्र के प्रवर्त्तक माने जाते हैं जिन्हों ने सगर के पुत्रों को भस्म किया था। (४) अग्नि, अनल। (५) शिव, महादेव। (६) सूर्य्य, भानु। (७) विष्णु, केशव। (८) श्वान, कुत्ता। (९) मूसा, चूहा। (१०) शिलाजतु, सिलाजीत। (११) वरुण, बरना वृक्ष।

कपिश—काला और पीला रङ्ग मिलाने से जो भूरा रङ्ग बनता है। पीलाभूरा, लालभूरा, मटमैला। (२) कपिल, भूरा, धुमैला।

कपीश—वानरों का मालिक। (२) सुग्रीव। (३) हनूमान।

कपीश्वर—कपीश, कपिपति, बानरों का मालिक। (२) हनूमान। (२) सुग्रीव।

कपूत—कुपुत्र, दुष्टपुत्र, वह पुत्र जो कुमार्गी हो, वह लड़का जो अपने कुल धर्म से विरुद्ध आचरण करे।

कपूर—कर्पूर, चन्द्र, सिताभ्र, रेणुसार, शीतकर, काफ़ूर। इसके वृक्ष चीन और जापान में अधिकता से उत्पन्न होते हैं। यह वृक्षदारचीनी की जाति का है। कलकत्ता और सहारनपुर के कम्पनीबाग़ों में भी इसके पेड़ हैं। इस वृक्ष की पतली पतली चैलियें, डालियें और जड़ों के टुकड़े बन्द बरतन में जिसमें कुछ दूर तक पानी भरा रहता है इस ढङ्ग से रक्खे जाते हैं कि उनका लगाव पानी से न रहे। बरतन के नीचे आग जलाई जाती है, लकड़ियें में से कपूर उड़ कर ऊपर के ढक्कन में जम जाता है। कपूर के वृक्ष कई प्रकार के होते हैं किन्तु यहाँ उनका विस्तार अनावश्यक है। यह देवाराधन में आरती के काम में आता है और औषधि वर्ग में इसका कई तरह के रोगों पर प्रयोग होता है।

कपोल—गण्डस्थल, गाल, रुख़सार।

कफ—श्लेष्मा, बलग़म, वह गाढ़ी लसीली और अण्ठेदार वस्तु जो खाँसने वा थूकने से बाहर आती है तथा नाक से भी निकलती है। (२) वैद्यक शास्त्र के अनुसार शरीर के भीतर की एक धातु जिसके रहने का स्थान आमाशय, हृदय, कण्ठ, सिर और सन्धि है। कुपित होने पर यह दोषों में गिना जाता है।

कब—किस समय, किस वक़्त। (२) नहीं, कदापि नहीं।

कबतक—किस समय पर्यन्त। किस घड़ी तक।

कबन्ध—रुण्ड, सिर से रहित देह। बिना सिर का धड़। (२) पेट, उदर। (३) बादर, मेघ। (४) पानी, जल। (५) एक दानव का नाम जो देवो का पुत्र था। इसका मुँह इसके पेट में था और यह विश्वावसु नाम का गन्धर्व शाप से दानव हुआ था। उपद्रव करने से इन्द्र ने इस पर वज्र प्रहार किया जिससे सिर धँस कर पेट में चला गया किन्तु मरा नहीं। दण्डकारण्य में श्रीरामचन्द्रजी ने इसका संहार करके शाप मुक्त किया था।

कबलों—कबतक, कबलग, किस समय तक।

कबहुँ, कबहूँ—कभी, किसी समय भी, कभी भी।

कबूलत—(अर्बी भाषा—क़बूल)। स्वीकार करता, अङ्गीकार करता, मञ्जूर करता, क़बूलता।

कम—(फ़ारसी भाषा)। अल्प, न्यून, थोड़ा, तनिक। (२) निकृष्ट, बुरा, ख़राब। (६) प्रायः नहीं, बहुधा नहीं, अकसर नहीं।

कमठ—कूर्म, कच्छप, कछुआ। एक जलजन्तु जिसकी पीठ पर बड़ी कड़ी ढाल की तरह की खोपड़ी होती है। इस खोपड़ी के नीचे वह अपना सिर और पैर सिकोड़ लेता है। इसकी गरदन लम्बी और दुम बहुत छोटी सी होती है। इसकी मादा अण्डा देकर उसका सेवन नहीं करती। प्रायः जल से बाहर नदी तालाबों के किनारे अण्डा देकर रेत से ढँक

देती है और आप जल में चली जाती है फिर उन अण्डों के पास नहीं आती। पर मन उसका अण्डों ही में लगा रहता है। समय पर अण्डे फूट जाते हैं उनमें से बच्चे निकल कर आप ही आप जल में प्रवेश करते हैं।

कमण्डलु—कमण्डल, कुण्डी, तुम्बा, सन्यासियों का पात्र।

कमनीय—सुन्दर,मनोहर। (२) कामना करने योग्य।

कमल—अब्ज, अम्बु, अम्भोज, अम्भोरुह, अरविन्द, इन्दिरालय, उत्पल, कुशेशय, कोकनद, जलज, जलजात, तामरस, नलिन, पङ्कज, पङ्करुह, पङ्केरुह पद्म, पुष्कर, बनज, महोत्पल, राजीव, विसप्रसून, शतपत्र, सहस्त्रपत्र, सरसीरुह, सरस,सरसिज,सारस,श्रीवास,श्रीपर्ण इत्यादि कमल के बहुतेरे नाम हैं। पानी में होनेवाला एक पौधा जो संसार के सभी भागों में पाया जाता है। यद्यपि इसके अनेक भेद हैं किन्तु सफेद, लाल, पीला और नीला चार प्रकार का कमल प्रसिद्ध है। इसका फूल बहुत ही सुहावना होता है और दिन में विकसित तथा रात्रि में सङ्कुचित रहता है। इसी से कवि लोग इसको सूर्य्य का एकाङ्गी प्रेमी कहते हैं और मुख, हाथ आँख आदि की कोमलता एवम् रङ्ग में कमल की उपमा देते हैं। (२) पानी, जल, नीर।

कमला—लक्ष्मी, रमा, इन्दिरा।

कमलारमन / कमलारवन —विष्णु, लक्ष्मीकान्त, रमाको रमानेवाले।

कमलिनी—नलिनी, छोटा कमल।

कमाता—अर्जित करता। उपार्जन करता। कमाई करता। (२) व्यापार वा उद्यम से धन उपार्जन करता। सेवा सम्बन्धी छोटे छोटे कामों को करता। मज़दूरी करता। (३) काम के योग्य बनता। काम करता। उद्योग-रत होता।

कम्प—वेपथु, कँपकँपी, काँपना। (२) शृङ्गार रस के आठ सात्विक अनुभावों में से एक, जिसमें शीत-कोप-भयादि से अकस्मात सारे शरीर में कँपकँपी सी मालूम होती है।

कम्पन—कम्प, कँपकँपी, लरज़ा।

कम्बल—कमरा, ऊन का बना हुआ मोटा वस्त्र।

कम्बु—शङ्ख, सुनाद, दर। (२) शम्बुक, घोंघा। (३) हाथी, कुञ्जर, गज।

कर—हाथ,हस्त, पानि। (२) किरण, रश्मि, मरीचि। (३) मालगुज़ारी, महसूल, प्रजा के उपार्जित धन में से राजा का भाग। (४) उत्पन्न करनेवाला, पैदा करनेवाला, करनेवाला। (५) हस्ति-शुण्ड,हाथी का सूँड़। (६) पत्थर,ओला,बिनौरी। (७) पाखण्ड, छल, फ़रेब। (८) एक प्रत्यय जो 'का' का बोध कराता है। यह शब्दों के बीच आधार आधेय-कार्य्य-कारण आदि अनेक भावों को प्रगट करने के लिए आता है।

करकर—हाथ हाथ, हाथोहाथ, हर एक के हाथ में। (२) किरकिरा, थूल।

करज—अङ्गुलि, उँगली, अँगुरी। (२) नख, नाख़ून। (३) करञ्ज, कञ्जा।

करत—'करना' शब्द का वर्तमान काल। करता है।

करतब—कर्त्तव्य, करनी, करतूत। (२) कर्म, कार्य, काम। (३) गुण, कला, हुनर। (४) करामात, जादू, टोना।

करतल—हथेली, हाथ की गदोरी।

करतव्य—कर्त्तव्य, करतब। (२) उचित कर्म, धर्म, फ़र्ज़।

करतार—करनेवाला, बनानेवाला। (२) विधाता। (३) ईश्वर।

करताल—करतालिका, करतल की ध्वनि। दोनों हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द। (२) एक प्रकार का बाजा जिसमें झाँझ वा घुँघुरू लगा रहता है और हाथ से बजता है।

करतालिका—करताल, करतल की ध्वनि।

करतूत / करतूति —करतब, करनी, काम।

करन—कान, कर्ण, श्रुति। (२) इन्द्रिय, हृषीक। (३) शरीर, देह। (४) हेतु, कारण, वजह। (५) महाभारत में वर्णित एक प्रसिद्ध योद्धा का नाम।

करनादि—(कर्ण+आदि), दुर्योधन वर्ग के योद्धा।
करनि } —करतब, करतूत, कर्म। (२) अन्त्येष्टि
करनी } क्रिया, मृतकसंस्कार।
करम—कर्म, काम, करनी, करतूत। (२) क्रम, सिलसिला, तरतीब। (३) भाग्य, क़िस्मत, तक़दीर, कर्म का फल। (४) अरबी भाषा के अनुसार—कृपा, अनुग्रह, मिहरबानी।
करमकरम—क्रमक्रम, धीरे धीरे, बारी बारी, सिलसिलेवार।
करमाली—सूर्य्य, मरीचिमाली, भानु।
करवाल } —खड्ग, कृपाण, तलवार।
करवालिका }
करषै—कर्षण करे, खींचै, अपनी ओर घसीटै। (२) सुखावे, खुश्क करे। (३) निमन्त्रित करे, बुलावे। (४) समेटै, बटोरै।
करसि—करती हो। करनेवाली हो।
करसी—उपरी, कण्डा, गोइँठा। (२) उपरी का चूर।
करहि—करै, अमल में लावे।
करहुगे—करोगे, अमल में लावोगे।
कराई—कराया, भुगताया, अमल में लाया, अञ्जाम दिया। (२) दाल का छिलका। उर्द, अरहर, चना आदि के ऊपर की भूसी। (३) श्यामता, कालापन, करिआई।
कराल—भीषण, भयानक, डरावना। (२) काग।
करालिका—भयावनी, डरावनी, भय उपजाने वाली।
कराह—कड़ाह, कटाह, कड़ाही।
करि—हाथी, गयन्द, गज। (२) करके।
करित—करता, करतूत फैलाता।
करिबीत्यो—कर चुके, कर गुज़रे, किया।
करिबेहित—करने के लिए। करने के वास्ते।
करिय—करिये, कीजिए, अमल में लाइये।
करिलेहि—कर लेओ, कर लो, करो।
करी—हाथी, गज। (२) किया, कर गुज़रा।
करील—निष्पत्र, करीर, कचड़ा, यह काँटेदार वृक्ष झाड़ी के रूप में ऊसर और ककरीली भूमि में होता है। इसमें पत्ते नहीं होते, केवल गहरे हरे रङ्ग की पतले पतले बहुत से डण्ठलें निकलते हैं। फागुन चैत में इसमें गुलाबी रङ्ग के फूल लगते हैं। फल गोल गोल जिसको टेंटी वा कचड़ा कहते हैं, उनका अचार बनता है। करील का झाड़ ब्रज और राजपूताने में बहुत होता है। पत्र हीन होने के कारण प्रायः कवियों ने उपमा में ग्रहण किया है।
करीश। गजेन्द्र, गजराज।
करीशहि—गजेन्द्र को, हाथियों के मालिक को।
करु—करो, आज्ञा सूचक शब्द।
करुआई—कडुआपन, तीतापन, तिताई।
करुन—करुण, करुणायुक्त, दयार्द्र। वह मनोविकार जो दूसरों के दुःख के ज्ञान से उत्पन्न होता है और पर दुःख हरण के लिये प्रेरणा करता है। दया। (२) वह दुःख जो अपने प्रिय कुटुम्बी, इष्ट मित्र आदि के वियोग से उत्पन्न होता है। शोक। (३) काव्य के नव रसों में से एक जिसका स्थायी भाव शोक है।
करुना—करुणा, करुण, दया, रहम, तर्स। (२) शोक, दुःख, रञ्ज।
करुनाकन्द—करुणाकन्द, दया के मेघ, कृपा की जड़।
करुनाकर—करुणाकर, दया की खान।
करुनाकोस—करुणाकोश, दया के भण्डार।
करुनाधाम—करुणाधाम, दया के घर।
करुनानिधान—करुणानिधान, दया के स्थान, जिसका हृदय दया से भरा हो।
करुनानिधि—करुणानिधि, कृपा के सागर।
करुनाभवन—करुणाभवन, दया के मन्दिर।
करुनामय—करुणामय, दया के रूप।
करुनायतन } —करुणायतन, करुणायन, दया के
करुनायन } स्थान।
करुनार्द्र—करुणार्द्र, दया से सराबोर।
करुनाब्धि } —करुणाब्धि, करुणासिन्धु, दया
करुनासिन्धु } के समुद्र।
करेरो—कठिन, कड़ा, करेर, कर्रा।

करै—करे, आचरै।
करैया—करवैया, करनेवाला।
करोरि—कोटि, करोड़, करोर, सौ लाख। (२) समूह, असंख्य, अपार।
कर्कश—कठिन, करेर, कड़ा। (२) तीव्र, प्रचण्ड, तेज़। (३) क्रूर, निठुर, कठोर हृदय। (४) खड्ग, तलवार। (५) काँटेदार, कँटीला, खुरखुरा। (६) अधिक, समूह, बहुत।
कर्ण—कान, श्रुति, श्रवण। (२) अर्कनन्दन, चाम्पेश, कुन्ती का सब से बड़ा पुत्र जो कुमारी अवस्था में सूर्य्य से उत्पन्न हुआ था और दुर्योधन की सेना का प्रधान भट था।
कर्णघण्ट—कर्णघण्टा, काशीजी में एक तीर्थ का नाम।
कर्णधार—करनधार, नाविक, माँझी, मल्लाह केवट। (२) पतवार, कलवारी। (३) पतवार थामनेवाला मल्लाह।
कर्णलिपि—कान से सुन कर लिखा हुआ लेख। श्रवण-गोचर होने के साथ ही लिखा जाने वाला लेख। सुनने के मान लिखने की शैली।
कर्णिका—कर्णफूल, करनफूल, कान का एक गहना। (२) पद्मबीजकोष। कमल का छुत्ता जिसमें कँवलगट्टे निकलते हैं। (३) लेखनी, कलम। (४) सेवती, सफ़ेदगुलाब। (५) अग्निमन्थ, अरनी का पेड़। (६) हाथ की बिचली उँगली। (७) हाथी के सूँड़ की नोक। (८) मेषशृङ्गी, मेढ़ासिङ्गी।
कर्त्ता—करनेवाला, काम करनेवाला। (२) रचनेवाला, बनानेवाला। (३) ब्रह्मा, विधाता। (४) ईश्वर, परमात्मा। (५) व्याकरण के छे कारकों में पहला जिससे क्रिया के करनेवाले का ग्रहण होता है। जैसे मेघनाद मारता है। यहाँ मारने की क्रिया का करनेवाला मेघनाद कर्त्ता हुआ।
कर्त्तार—कर्त्ता, करनेवाला। (२) ब्रह्मा, बिधि। (३) ईश्वर, परमेश्वर।
कर्द—कर्दम, कीचड़, चहटा।
कर्दम—पङ्क, जम्बाल, कर्द, शाद, कीच, कीचड़ चहला, चहटा, खाँच। (२) पाप, अघ। (३) मांस, पल। (४) प्रतिविम्ब, छाया। (५) स्वायम्भुव मन्वन्तर के एक प्रजापति जिनकी पत्नी का नाम देवहूति और पुत्र का नाम कपिलदेव था। ये छाया से उत्पन्न, सूर्य्य के पुत्र थे इससे इनका नाम कर्दम पड़ा।
कर्दमावृत—(कर्दम+आवृत) कीच से आच्छादित। मल मूत्र से घिरा हुआ, गर्भबास।
कर्पूर—कपूर, रेणुसार, काफ़ूर।
कर्म—क्रिया, कार्य्य, काम, करनी, करतूत। वह जो क्रिया जाय। (२) भाग्य, प्रारब्ध, क़िस्मत, कर्म का फल। (३) अन्त्येष्टि क्रिया, मृतसंस्कार, क्रिया-कर्म। (४) जन्म भेद से कर्म के चार विभाग किये गये हैं—सञ्चित, प्रारब्ध, क्रियमाण और भावी। (५) व्याकरण में वह शब्द जिसके वाच्य पर कर्त्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े। जैसे भीम ने दुर्योधन को मारा। यहाँ भीम के मारने का प्रभाव दुर्योधन में पाया गया, इससे वह कर्म हुआ।
कर्मजाल—कर्मसमूह, बहु करनी। (२) कर्म का बन्धन।
कर्मदाग—कर्म का कलङ्क। करनी का धब्बा। करतूत के चिह्न।
कर्मपथ—कर्ममार्ग, काम की डगर।
कर्मभूमि—कर्म की धरती, करनी की ज़मीन।
कर्मी—कर्म करनेवाला, करमी, किसी फल की इच्छा से यज्ञादि कर्म करनेवाला।
कर्षण—करषन, खींचना, अपनी ओर समेटना। अपने समीप घसीट कर लाना। (२) जोतना, बाह करना, खेत में हल चलाना। (३) कृषिकर्म, खेती का काम।
कल—सुन्दर, मनोहर, शोभन। (२) सुख, चैन, आराम। (३) आरोग्यता, सेहत, तन्दुरुस्ती। (४) तुष्टि, सन्तोष। (५) भविष्य में, पर काल में, आने वाले समय में। (६) गया दिन, बीता हुआ दिन। (७) युक्ति, ढङ्ग, चतुराई। (८) यन्त्र, पेंच, कई पुरज़ों से बनी हुई वस्तु जिससे कोई काम लिया जाय। (९) वीर्य्य।

कलई—(अर्बीभाषा) क़लई, मुलम्मा, राँगे का पतला लेप जो बरतन पर कसाव से बचाने के लिये अग्नि द्वारा चढ़ाते हैं। (२) राँगा, वङ्ग। (३) चूना, कली। (४) आवरण, बनावट, ऊपरी तड़क भड़क।

कलकण्ठ—वनप्रिय, कोकिल, कोयल। (२) सुन्दर कण्ठ, मनोहर गला जिसका हो।

कलङ्क—लाञ्छन, धब्बा, दाग़, बदनामी। (२) अवगुण, दोष, ऐब।

कलधौत—सुवर्ण, कञ्चन, सोना। (२) रजत, चाँदी। (३) सुन्दर ध्वनि, मीठी आवाज़।

कलप—कल्प, प्रलयकाल, कल्पान्त। (२) कल्पवृक्ष। (३) केशकल्प, ख़िज़ाब।

कलपवल्ली—कल्पलता, कल्पवृक्ष।

कलभ—शिशु हाथी। हाथी का बच्चा।

कलरव—मधुर ध्वनि, मीठी आवाज़, प्यारी बोली। (२) कोकिल, कलकण्ठ। (३) कपोत, कबूतर।

कलस—कलश, कुम्भ, घट, कलसा, घड़ा, गगरी। (२) मन्दिर आदि का शिखर। देवालयों, मन्दिरों की चोटी पर लगा हुआ सुवर्ण, पीतल और पत्थर आदि का कङ्गूरा। (३) प्रधान अङ्ग, श्रेष्ठ व्यक्ति। (४) शिखर, चोटी, सिरा। (५) एक तोल जो ८ सेर के बराबर होता है।

कलह—युद्ध, लड़ाई, झगड़ा। (२) विवाद, कहा सुनी। (३) पथ, रास्ता, राह।

कलहंस—राजहंस, जिन हंसों के पैर तथा चोंच लाल और देह उज्वल हो वे राजहंस कहलाते हैं। (२) वर्तक पक्षी, बतक। (३) ब्रह्म, परमात्मा। (४) श्रेष्ठ राजा, उत्तम भूपाल। (५) एक वर्णवृत्त का नाम।

कलहंसवत—राजहंस की भाँति।

कलत्र—स्त्री, पत्नी, भार्य्या, जोड़ू। (२) नितम्ब, चूतड़। (३) दुर्ग, गढ़, क़िला।

कला—अंश, भाग, हिस्सा। (२) समय का एक विभाग जो तीस काष्ठा का होता है। (३) छन्द शास्त्र के अनुसार एक मात्रा। (४) किसी काम को नियम और व्यवस्था के अनुसार करने की विद्या। किसी कार्य को भली भाँति करने का कौशल। हुनर, फ़न। (५) चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग। चन्द्रमा की षोड़श कलायें हैं, इसी से वे कलाधर कहे जाते हैं। (६) सूर्य्य का बारहवाँ भाग। सूर्य्य के तेज को कला कहते हैं, उनकी संख्या बारह है। (७) कामशास्त्र के अनुसार गाना, बजाना, नाचना, नाटक करना, चित्रक़ारी आदि ६४ कलायें हैं। (८) शोभा, प्रभा, छटा। (९) ज्योति, आभा, चमक। (१०) विभूति, ऐश्वर्य। (११) कौतुक, लीला, खेल। (१२) छल, कपट, धोखेबाज़ी। (१३) मिस, बहाना, हीला। (१४) युक्ति, करतब, ढङ्ग। (१५) यन्त्र, पेंच, कल।

कलाकोस—कलाकोश, कौतुक निधान, खिलवाड़ी। (२) गुणों के भण्डार।

कलातीत—(कला+अतीत) कलाओं से पृथक्। समस्त कलाओं से न्यारे। (२) ईश्वर।

कलाधर—चन्द्रमा, मयङ्क। (२) शिव, ईशान। (३) एक छन्द का नाम जो दण्डक के भेद में है।

कलाप—समूह, यूथ, झुण्ड। (२) व्यापार, व्यवसाय, रोज़गार। (३) त्रोण, तून, तरकस। (४) करधनी, कमरबन्द, पेटी। (५) भूषण, गहना, ज़ेवर। (६) चन्द्रमा, निशाकर। (७) पूला, मुट्ठा, पुलिन्दा। (८) मोरपक्ष, मुरैले का पङ्खा, मोर की पूँछ।

कलि—विवाद, कलह, झगड़ा। (२) पाप, कलुष, अघ। (३) संग्राम, युद्ध, लड़ाई। (४) क्लेश, दुःख, पीड़ा। (५) शूरबीर, जवाँमर्द। (६) त्रोण, तरकस। (७) श्याम, काला, करिया। (८) कलियुग, मलयुग, चार युगों में से चौथा युग जो दुराचार के लिये प्रसिद्ध है।

कलिका—कुड्मल, कली, बिना खिला फूल। (२) मुहुर्त्त, कला। (३) अंश, भाग। (४) कलौंजी, मँगरैल।

कलिकाल—कलियुग, पाप का समय।

कलिन—कलियाँ, 'कली' शब्द का बहु वचन।

कलिमल—पाप, अघ, कलुष।

कलियुग—कलि, कलिकाल, मलयुग, कलऊ, पाप

का युग। चार युगों में से चौथा युग जिसमें देवताओं के बारह सौ वर्ष और मनुष्यों के चार लाख बत्तीस हज़ार वर्ष होते हैं। इसमें दुराचार और अधर्म की अधिकता शास्त्रकारों ने कही है।

कलुष—पाप, अघ, पातक। (२) मलिनता, मैल, नापाकी। (३) अवगुण, दोष, ऐब। (४) क्रोध, कोप, गुस्सा। (५) मलिन, मैला, गन्दा। (६) गर्हित, निन्दित। (७) पापी, दोषी, ऐबी।

कलुषजाल—पापसमूह, अघवृन्द, पाप का बन्धन।

कलेऊ—जलपान, कलेवा, प्रातःकाल का लघु भोजन। नाश्ता, नहारी। (२) विवाह के अनन्तर एक रीति जिसमें वर अपने सखाओं के साथ ससुराल में भोजन करने जाता है। (३) सम्बल, पाथेय, वह भोजन जो यात्री घर से चलते समय बाँध लेते हैं।

कलेश—क्लेश, दुःख, कष्ट।

कलिक, कल्की—विष्णु के दसवें अवतार का नाम जो सम्भल (मुरादाबाद) में एक कुमारीकन्या के गर्भ से होगा। कलिक अवतार।

कल्प—कृत्य, विधान, विधि। (२) काल का एक विभाग जिसे ब्रह्मा का एक दिन कहते हैं और वह मनुष्य के वर्षों से चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष का होता है। प्रलय, क्षय, कल्पान्त। चारों युगों का एक हज़ार बार बीतना। (३) तुल्य, समान, बराबर। (४) प्रकरण, विभाग, निबन्ध। (५) प्रातःकाल, सबेरा, भोर। (६) युक्ति, उपाय, तदबीर।

कल्पत—'कल्पना' शब्द का वर्तमान काल, रचना करता है, बनाता है, सजाता है।

कल्पतरु—कल्पवृक्ष, मन्दार, पारिजात।

कल्पवृक्ष—कल्पद्रुम, कल्पतरु, कल्पपादप, कल्पवल्ली, कल्पवेलि, कल्पलता, कल्पशाखी, देवतरु, देववृक्ष, पारिजात, मन्दार, सुरद्रुम, सुरतरु, सुरपादप, सन्तान, देवलोक का एक वृक्ष जो समुद्र मथने के समय समुद्र से निकले हुए चौदहरत्नों में माना जाता है। यह इन्द्र को दिया गया था, इसका नाश कल्पान्त तक नहीं होता और इसके नीचे जानेवाले प्राणी को वाञ्छित फल प्राप्त होना पुराणों के कथनानुसार प्रसिद्ध है।

कल्पना—रचना, बनावट, सजावट। (२) उद्भावना, अनुमान, वह शक्ति जो अन्तःकरण में ऐसी वस्तुओं के स्वरूप उपस्थित करती है जो उस समय इन्द्रियों के सम्मुख उपस्थित नहीं होतीं। (३) अध्यारोप, स्थापन, आरोप। (४) भावना, मान लेना, फ़र्ज़। (५) कलपना, विलखना, दुखी होना, रोना। (६) मन गढ़न्त बात। गढ़ कर बात बनाना।

कल्पनातीत—(कल्पना + अतीत) अनुमान के बाहर।

कल्पवल्ली, कल्पवेलि, कल्पशाखी—कल्पवृक्ष, देवतरु।

कल्पान्त। कल्प, प्रलय, क्षय।

कल्पान्तकारी—प्रलय करनेवाला, अन्तक।

कल्पान्तकृत—प्रलय किया, क्षय किया।

कल्पित—जिसकी कल्पना की गई हो (२) मनगढ़न्त, मनमाना, जो फ़र्ज़ी मान लिया गया हो। (३) बनावटी, नक़ली।

कल्मष—पाप, कलुष, अघ। (२) मल, मैल, गन्दगी। (३) पीब, मवाद, राद।

कल्मषारी—अघारि, पाप के शत्रु। (२) विष्णु।

कल्यान—कल्याण, श्रेयस, शुभ, शिव, मङ्गल, भव्य, भद्र, क्षेम, भावुक, भविक, शस्त, कुशल, भलाई, अच्छाई। (२) शुभ, मङ्गल प्रद, अच्छा, भला। (३) एक राग का नाम।

कल्यानकर्त्ता, कल्यानकारी—मङ्गलारक, कल्याण करनेवाला।

कल्यानधाम—क्षेमगृह, मङ्गलभवन।

कल्यानभाजन—कल्याण के पात्र। मङ्गलभाजन।

कल्यानरासि—कल्याणराशि, मङ्गल का ढेर।

कवच—वर्म, तनुत्र, दंशन, जगर, जागर, कटक, योग, सनाह, कञ्चुक, सँजोया, जिरह बकतर, लोहे की कड़ियों के जाल का बना हुआ पह-

नावा जिसे लड़ाई के समय शरीर रक्षार्थ योद्धा लोग पहनते हैं। (२) आवरण, छाल, छिलका। (३) पटह, डङ्का, बड़ा नगारा। (४) तन्त्रशास्त्र का एक अङ्ग जिसमें भिन्न भिन्न मन्त्रों द्वारा अपने शरीर के अङ्गों की रक्षा के लिए प्रार्थना की जाती है। लोगों का विश्वास है कि कवच का पाठ करने से उपासक समस्त बाधाओं से रक्षित रहता है।

कवन—कौन, एक प्रश्नवाचक सर्वनाम।

कवि—काव्य रचयिता। काव्य करनेवाला। (२) चिकित्सक, वैद्य, दवा करनेवाला। (३) पण्डित, विद्वान, विचक्षण। (४) शुक्र, भार्गव, दैत्यगुरु। (५) ब्रह्मा, स्वयम्भू, धाता। (६) सूर्य्य, दिवाकर, भानु।

कविमुख्य—प्रधान कवि, वाल्मीकि मुनि।

कश्यप—एक ऋषि का नाम जिनके बनाये हुए ऋग्वेद में अनेक मन्त्र हैं और जो मरीचि के पुत्र कहे जाते हैं। (२) एक प्रजापति का नाम जिनकी अदिति और दिति नाम की स्त्रियों से देवता और दैत्यों की उत्पत्ति कही गई है। (३) कमठ, कच्छप, कछुआ। (४) मद्यप, शराबी। (५) काले दाँतवाला।

कश्यपप्रभव—कश्यप से उत्पन्न देवता और दैत्य। देव तथा दैत्य।

कषाय—गैरिक, गेरुआ, गेरू के रङ्ग का। (२) कसैला, बाकठ, कसाइल, छे रसों में से एक। (३) क्वाथ, काढ़ा, जोशाँदा। (४) सुगन्धित, ख़ुशबूदार, महँकनेवाला। (५) श्योनाक, अरलु, सोनापाठा का वृक्ष। (६) रङ्गा हुआ, रङ्गीन। (७) बबूर का गोंद।

कष्ट—क्लेश, दुःख, व्यथा, वेदना, पीड़ा, तकलीफ़।

कष्टरत—क्लेश में लगा हुआ। मुसीबत में फँसा हुआ।

कष्टहर्त्ता—क्लेशहरनेवाला, मुसीबत छुड़ानेवाला।

कष्टी—क्लेशित, दुखी, पीड़ित। (२) प्रसव की पीड़ा से पीड़ित स्त्री।

कस—कैसे, क्योंकर, क्यों। (२) कसाव का संक्षिप्त रूप। कसैला, कषाय। (३) परीक्षा, जाँच, कसौटी। (४) बल, ज़ोर। (५) वश, दबाव, क़ाबू, इख़्तियार। (६) अवरोध, रोक, रुकावट। (७) तत्व, सार, हीर। (८) फ़ारसी भाषा के अनुसार—व्यक्ति, मनुष्य, आदमी। (९) सखा, मित्र, दोस्त।

कसक—प्राचीन विरोध, पुराना बैर, बहुत दिन का मन में रक्खा हुआ द्वेष। (२) साल, टीस, मीठा मीठा दर्द। वह पीड़ा जो किसी चोट के कारण उसके अच्छे हो जाने पर भी रह रह कर उठे। (३) अभिलाषा, हौसला, अरमान। (४) सहानुभूति, हमदर्दी, पराये की पीड़ा देख कर उत्पन्न हुआ दुःख।

कसे—कसने से, बाँधने से, जकड़ने से। (२) परीक्षा करने से, जाँचने से, परखने से। (३) क्लेश देने से, कष्ट पहुँचाने से।

कसैहौं—कसवाऊँगा, बंधवाऊँगा, जकड़वाऊँगा। (२) परीक्षा कराऊँगा, परखवाऊँगा, खरे खोटे की जाँच कराऊँगा।

कसौटी—एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर रगड़ कर सुवर्ण की परख की जाती है। शालिग्राम इसी पत्थर के होते हैं। कसौटी के खरल भी बनते हैं। (२) परीक्षा, जाँच, परख।

कह—'कहना' शब्द का वर्त्तमान काल। कहो, बोलो, उच्चारण करो। क्या? एक प्रश्नवाचक शब्द जो उपस्थित वा अभिप्रेत की जिज्ञासा करता है। (३) कितना, किसमात्रा का। किस क़दर।

कहत—'कहना' शब्द का वर्तमानकाल। कहनेवाला पुरुष। (२) अर्बी भाषा के अनुसार—क़हत, दुर्भिक्ष, अकाल।

कहना—उच्चारण करना, वर्णन करना, बदना, बोलना, मुँह से शब्द निकालना। शब्दों द्वारा अभिप्राय प्रगट करना। (२) प्रगट करना, खोलना, ज़ाहिर करना। (३) सूचना देना, ख़बर करना। (४) उक्ति बाँधना, कविता करना। (५) कथन, बात, आज्ञा।

कहनि—कहन, कथन, उक्ति। (२) वचन, बात। (३) कहनूत, कहावत। (४) कविता, शायरी।
कहर—(अर्बी भाषा-क़हर) सङ्कट, विपत्ति, आफ़त। (२) अमानुषिक कृत्य करना। बलपूर्वक अनुचित दबाव डालना। अत्याचार करना। (३) अगम, दुर्गम, अपार। (४) भयङ्कर, भीषण, घोर।
कहहु—उच्चारण करो, बोलो, कहो।
कहँ—कहाँ। (२) के, लिए, वास्ते।
कहँलगि—कहाँतक, किस सीमा पर्य्यन्त।
कहा—कथन, बात, उपदेश। (२) कैसे, किस प्रकार के। (३) क्या? कौन बात, कैसा?।
कहाँ—किस स्थान पर। किस जगह। स्थान के सम्बन्ध में एक प्रश्नवाचक शब्द।
कहाइ—कहाकर, प्रगट कर, अपने को किसी विषय में प्रसिद्ध करके।
कहाओं—कहाता हूँ। प्रसिद्ध करता हूँ। ज़ाहिर करता हूँ।
कहार—एक शूद्र जाति जो पानी भरने और डोली ढोने का काम करती है।
कहावत—लोकोक्ति, कहनूत, मसल। (२) कहाता हूँ, प्रसिद्ध करता हूँ। (३) उक्ति, कथन, कही हुई बात। (४) मृतक मनुष्य का सन्देसा सम्बन्धियों के पास पहुँचाना।
कहिआयो—कहने में आया। कहना पड़ा।
कहिबी—कहना, प्रगट करना, ज़ाहिर कर देना।
कहियत—कहते हैं। प्रगट करते हैं। (२) कहलाता है। कहा जाता है।
कही—वर्णित, कथित, कही हुई बात।
कहीं—कदाचित, यदि, अगर। (२) बहुत अधिक, अत्यन्त बढ़ कर। (३) निषेधार्थक—नहीं, कभी नहीं। (४) किसी अनिश्चित स्थान में। ऐसे स्थान में जिसका ठीक ठिकाना न हो।
कहु—कहो, बोलो।
कहुँ—कहीं, किसी अनिश्चित स्थान में।
कहैहों—कहाऊँगा, कहलाऊँगा।
का—क्या? कौन वस्तु। कौन बात? एक प्रश्नवाचक शब्द जो उपस्थित वा अभिप्रेत की जिज्ञासा करता है। (२) सम्बन्ध वा षष्ठी का चिह्न, जैसे—राम का घोड़ा। (३) इस प्रत्यय का प्रयोग दो शब्दों के बीच अधिकारी-अधिकृत, आधार-आधेय, अङ्गाङ्गी, कार्य्य-कारण, कर्तृ-कर्म आदि अनेक भावों को प्रगट करने के लिए होता है।
काउ—कदा, कभी, काऊ। (२) कः, कोई। (३) कुछ, किञ्चित्।
काक—काग, वायस, कौआ।
काकिनी—काकिणी, कपर्दी, कौड़ी। (२) गुञ्जा, घुँघची, चिरमिटी। (३) छदाम, टुकड़ा, पैसे का चौथाई भाग जो सवा पाँच गण्डे कौड़ियों का होता है।
काकी—किस की, कौन की। (२) चाची, चची। (३) काग की स्त्री। कौए की मादा।
काके—किस के, कौन के।
काको—कौन को, किस को।
काँख—कँखौरी, बग़ल।
काग—काक, करट, बायस, कौआ।
काँच—काञ्चु, कृत्रिम रत्न, शीशा, एक मिश्र धातु जो बालू और खारी मट्टी को अग्नि पर गलाने से बनती है तथा पारदर्शक होती है। (२) अपक्व, अदृढ़, कच्चा, ख़ाम। (३) काचलवण, कचिया नोन, एक प्रकार का काला नमक। (४) गुदावर्त्त, गुदाचक्र, गुदेन्द्रिय के भीतर का भाग।
काँचो—अपक्व, कच्चा, ख़ाम। (२) दुर्बल, अस्थिर खोटी समझवाला। (३) काँचभी, शीशा भी।
काज—कार्य्य, कृत्य, काम। (२) व्यवसाय, धन्धा, रोज़गार। (३) उद्देश्य, प्रयोजन, मतलब। (४) हेतु, लिए, वास्ते। (५) बिबाह, व्याह, सगाई।
काञ्चन—सुवर्ण, कञ्चन, सोना। (२) काञ्चनार, कचनार। (३) चाम्पेय, पीतपुष्प, चम्पा। (४) राजपुष्प, नागकेसर।
काँट—कण्ट, कण्टक, काँटा।
काटि—काट कर, छाँट कर, छिन्न भिन्न कर। (२)

निवारण कर, छेंक कर, मिटा कर। (३) नष्ट कर।
काटे—काटा, छाँटा, भेदन किया। (२) नष्ट किया, मिटाया।
काठ—काष्ठ, लकड़ी, ईंधन, वृक्ष का सूखा अङ्ग। (२) बन्धन, कलन्दरा, लकड़ी की बेड़ी।
काढ़न—कढ़ना, निकालना, बाहर करना।
काढ़ि—काढ़ कर, निकाल कर, बाहर कर।
काढ़े—काढ़ा, निकाला, बाहर किया।
कातर—कादर, डरपोक, बुज़दिल। (२) आर्त्त, दुखी, कष्ट से भरा हुआ।
काँति—कान्ति, चमक, झलक। (२) शोभा, छबि।
काते—किससे, किस कारण से।
कादर—कातर, भीरु, डरपोक, बुज़दिल। (२) त्रस्त, भयभीत, डरा हुआ। (३) व्याकुल, अधीर, चञ्चल। (४) आर्त्त, दुःखित, पीड़ित।
काँदलो—कर्दम, पङ्क, कीच, कीचड़, काँदो, चहटा (२) काँदल, गोहँड़िल, धूल और मट्टी से मिला हुआ गन्दा पानी। इस प्रकार के रबद्दे से परिपूर्ण स्थान को काँदल कहते हैं।
काँध—कन्धा, वाहुमूल, मोढ़ा।
काँधे—काँधना, अङ्गीकार करना, अँगवना। (२) कन्धा, मोढ़ा।
कान—श्रवण, कर्ण, श्रुति, श्रोत्र, स्रवन, करन, सुनने की इन्द्रिय। वह इन्द्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है। (२) लोक लज्जा, मर्य्यादा, इज्ज़त।
कानन—बन, विपिन, जङ्गल।
कानि—लोकलज्जा, मर्य्यादा, कान, इज्ज़त। (२) सङ्कोच, दबाव, लिहाज़।
कानी—कानि, मर्य्यादा, इज्ज़त। (२) एक आँख वाली। जिस स्त्री की एक आँख फूट गई हो।
कान्तार—दुर्भेद्य और गहन वन। घना जङ्गल। (२) छिद्र, छेद, दरार। (३) भयानक स्थल, भीषण स्थान। (४) केतार, एक प्रकार की ईख।
कान्ति—दीप्ति, आभा, प्रकाश, तेज। (२) शोभा, सौन्दर्य्य, छबि। (३) चन्द्रमा की एक कला का और उनकी स्त्री का नाम।
कान्तिकर—शोभा करनेवाला, छबिकारी।
कान्ह—श्रीकृष्णचन्द्र, बनमाली।
कापै—किस पर, किस के ऊपर।
काम—कामदेव, कन्दर्प, अनङ्ग। (२) इच्छा, मनोरथ, कामना। (३) उद्देश्य, प्रयोजन, मतलब। (४) लगाव, सरोकार, वास्ता। (५) उपयोग, व्यवहार, इस्तेमाल। (६) व्यवसाय, कारबार, रोज़गार। (७) रचना, बनावट कारीगरी। (८) शिव, महादेव। (९) इन्द्रियों को अपने अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति। सहवास वा मैथुन की इच्छा। (१०) चतुर्वर्ग वा चार पदार्थों में से एक।
कामअरि—शिव, रुद्र, कामदेव के शत्रु।
कामजेताग्रणी—कामदेव को जीतने में प्रधान वा अग्रगण्य।
कामतरु—कल्पवृक्ष, कामना के अनुकूल फलदायक।
कामता—कामतानाथ पर्वत। कामदगिरि। (२) चित्रकूट के समीप एक गाँव का नाम।
कामद—अभिमत दायक, वाञ्छित फल दाता, इच्छानुसार फल देनेवाला। (२) ईश्वर, परमात्मा, नारायण।
कामदमणि—चिन्तामणि, इच्छानुकूल फल देनेवाला रत्न। (२) वाञ्छित फल देनेवालों के शिरोभूषण।
कामदेव—अनङ्ग, अनन्यज, असमसर, आतमभू, कन्दर्प, काम, कुसुमेषु, झषकेतु, दर्पक, पञ्चशर, पुष्पधन्वा, प्रद्युम्न, ब्रह्मसू, मकरध्वज, मदन, मनजात, मनसिज, मनोज, मन्मथ, मार, मीनकेतन, रतिपति, रमण, विश्वकेतु, विषमबाण, शम्बरारि, स्मर आदि कामदेव के नाम हैं। स्त्री-पुरुष संयोग की प्रेरणा करनेवाला एक पौराणिक देवता जिसकी स्त्री रति, साथी वसन्त, बाहन कोकिल और अस्त्र फूलों का धनुष बाण है। इसकी ध्वजा पर

मछली का चिह्न है। जब सती ने अपने पिता के यज्ञ में शरीर त्याग दिया तब शिवजी ने यह विचार कर कि अब विवाह न करेंगे समाधि लगाई। इसी बीच तारकासुर ने उग्र तपस्या कर वर माँगा कि मेरी मृत्यु शिव के पुत्र से हो और देवताओं को दुःख देना प्रारम्भ किया। देवताओं ने दुःखित होकर शिव की समाधि भङ्ग करने के लिए कामदेव से कहा। उसने अपना बाण शिवजी पर चलाया और रुद्र भगवान ने क्रुद्ध होकर उसे भस्म कर डाला। उसकी स्त्री रति के रोने और विलाप करने पर शिवजी दयालु होकर बोले कि अब से तेरा स्वामी विना शरीर के रहेगा और द्वारका में श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के घर उसका जन्म होगा। प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध कामदेव के अवतार कहे गये हैं। (२) वीर्य्य, शुक्र, बीज। (३) सम्भोग की इच्छा। स्त्री प्रसङ्ग की ख़ाहिश।

कामधुकगो, कामधुकधेनु—कामधेनु, देवसुरभी।

कामधेनु—सुरधेनु, देवसुरभी, कामदुहा, कामधुकधेनु, कामधुकगो, कामद सुरभि, कामना देनेवाली गाय। एक गाय जो समुद्र मथने से निकली थी। यह चौदह रत्नों में से एक है। इससे जो कुछ अर्थादिक माँगे जाँय वे सब मिलते हैं, ऐसा पुराणों में लिखा है।

कामना—इच्छा, मनोरथ, अभिलाषा।

कामभूरुह—कल्पवृक्ष, देवतरु।

कामरिपु—शिव, कामदेव के बैरी।

कामरूप—यथेच्छरूप धारण करनेवाला। मनमाना रूप धरनेवाला। (२) सुन्दर, मनोहर, सुहावना। (३) छब्बीस मात्रावाले एक छन्द का नाम। (४) आसाम का एक ज़िला जहाँ कामाख्या देवी का स्थान है। इसका प्रधान नगर गोहाटी है।

कामादि, कामादिक—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर। (२) ईर्ष्या, द्वेष, कपट।

कामापवर्गद—काम और मोक्ष दाता। इच्छानुकूल फल और मुक्ति देनेवाला।

कामारि—(काम+अरि) शिव, महादेव।

कामिनी—स्त्री, सुन्दरी, कामवती ललना। काम की इच्छा रखनेवाली स्त्री।

कामी—कामुक, विषयी। (२) इच्छुक, कामना रखनेवाला। ख़ाहिशमन्द।

काय—शरीर, देह, जिस्म। (२) समुदाय, सङ्घ। (३) लक्षण, वस्तुस्वभाव। (४) मूलधन।

कायर—क़ादर, डरपोक, बुज़दिल।

कायिक—शरीर सम्बन्धी। काया से उत्पन्न। देह से किया हुआ।

कारक—करनेवाला, क्रिया से सम्बन्ध रखनेवाला। (२) व्याकरण में संज्ञा वा सर्वनाम शब्द की वह अवस्था जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ सम्बन्ध प्रगट होता है। कारक ६ हैं। कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण।

कारज—कार्य्य, काज, काम।

कारण—हेतु, सबब, वजह। (२) निमित्त, प्रत्यय, जिससे दूसरे वस्तु की सम्प्राप्ति हो। (३) आदि, मूल, जड़। (४) बीज, बिया, कार्य्य को उत्पन्न करनेवाला। (५) साधन, उपाय, तदबीर। (६) विष्णु, केशव। (७) शिव, महादेव।

कारन—कारण, हेतु, वजह।

कारनी—प्रेरक, करानेवाला। (२) भेदक, भेद करानेवाला।

कारागृह—बन्दीगृह, कारागार, जेलख़ाना।

कारी—करनेवाला, बनानेवाला। (२) काली, कालेरङ्गवाली। (३) फ़ारसीभाषा के अनुसार—घातक, मर्मभेदी, गहरा।

कारुनिक, कारुणीक—कृपालु, दयापूर्ण, मेहरबान।

कार्मण, कार्मन—मूलकर्म जिनमें मन्त्र और औषध आदि से मारण, मोहन, वशीकरण इत्यादि किया जाता है। मन्त्र तन्त्र का प्रयोग। (२) कर्मकुशल, कर्म में दक्ष।

कार्मुक—धनुष, चाप, धन्वा। (२) इन्द्रधनुष। (३) बाँस, वेणु।

कार्य—कृत्य, काम, काज, कारज। (२) व्यापार, धन्धा, रोज़गार। (३) परिणाम, फल, नतीजा। (४) प्रयोजन हेतु, मतलब। (५) आरोग्यता।
काल—समय, वक्त, वह सम्बन्ध जिसके द्वारा भूत, भविष्य, वर्तमान आदि की प्रतीति होती है और एक घटना दूसरी से आगे पीछे आदि समझी जाती है। (२) अन्तिमकाल, मृत्यु, अन्त, नाश का समय। (३) यमराज, कृतान्त। (४) दुर्भिक्ष, अकाल, महँगी। (५) उपयुक्त समय, अवसर, मौका। (६) नियत ऋतु, निर्धारित समय। (७) कालासाँप, कराइत।
कालकाल—महाकाल, काल के भी काल।
कालकूट—इसका वृक्ष पीपल वृक्ष के सामन होता है उसकी गोंद को कालकूट कहते हैं। यह एक प्रकार का भयङ्कर विष है, कोङ्कण और मलावार देश में उत्पन्न होता है। (२) काले बच्छनाग को भी कालकूट कहते हैं। यह सिकिम और भूटान में होने वाले सिँगिया की जाति के एक पौधे की जड़ है जिसमें छोटी छोटी गोल चित्तियाँ होती हैं। (३) महाविष, हलाहल, ज़हर।
कालगहा—कालग्रस्त, काल का पकड़ा हुआ।
कालचाल—काल की गति। कलि की चालबाज़ी
कालदृक—काल के समान दृष्टिवाली।
कालनेमि—एक राक्षस का नाम जो रावण का मामा था। इसने सञ्जीवना लाते समय हनूमानजी को साधु वेष बना कर छलना चाहा था किन्तु क़लई खुल जाने पर पवनकुमार के हाथ से मारा गया। (२) एक दानव का नाम जिसने देवताओं को हराकर स्वर्ग अपने अधिकार में कर लिया था अन्त में विष्णु के हाथ से मारा गया और दूसरे जन्म में कंस हुआ।
कालाग्नि—प्रलयाग्नि, प्रलय की आग।
कालिका—चण्डिका, काली, देवी की एक मूर्त्ति। शुम्भ और निशुम्भ नामक दैत्यों के अत्याचार से पीड़ित इन्द्रादिक देवताओं की प्रार्थना पर एक मातङ्गी प्रगट हुई जिसके शरीर से इन देवी का आविर्भाव हुआ। पहले इनका वर्ण काला था इससे कालिका नाम पड़ा। उग्रभयों से रक्षा करने के कारण इनका नाम उग्रतारा भी है और इनके सिर पर एक जटा है इससे एकजटा भी कहलाती हैं। इनके साथ महाकाली, रुद्राणी, उग्रा, भीमा, घोरा, भ्रामरी, महारात्रि और भैरवी ये आठ जोगिनियाँ रहती हैं।
कालीय—कालियानाग। कालिय नामक सर्प जिसका दर्प श्रीकृष्णचन्द्रजी ने चूर्ण किया था।
काव्य—रमणीय अर्थ का प्रतिपादक शब्द। रसात्मक वाक्य। वह वाक्यरचना जिससे चित्त किसी रस वा मनोवेग से पूर्ण हो। (२) काव्य का ग्रन्थ। वह पुस्तक जिसमें कविता हो। (३) शुक्राचार्य, दैत्यगुरु। (४) एक छन्द का नाम।
काशी—वाराणशी, शिवपुरी, बनारस।
काशीपति, काशीश—शिव, शङ्कर, ईशान।
कासी—काशी, बनारस।
कासो, कासोँ—किससे, कौन से।
काह—क्या? कौन वस्तु? का?।
काहि—किसे, किसको। (२) किससे।
काहु, काहू, काहूँ—किसी, कः।
काहे—क्यों। किस लिये।
कि—कैसे? किस प्रकार। (२) या, अथवा, किम्बा। (३) तत्क्षण, शीघ्र, तुरन्त। (४) किम्, एक संयोजक शब्द जो कहना, वर्णन करना, देखना, सुनना इत्यादि क्रिआओं के बाद उनके विषय वर्णन के पहले आता है। जैसे—उसने कहा कि मैं नहीं जाऊँगा। (५) वक्रोक्ति का वाचक जिसका उलटा अर्थ 'नहीं' होता है। काकोक्ति से वाच्यार्थ को पलटनेवाला अव्यय।
किङ्कर—सेवक, दास, टहलू।
किङ्किनी—किङ्किणी, क्षुद्रघण्टिका, कटिभूषण, मेखला, करधनी।

किञ्चित—अल्प, थोड़ा, कुछ, ज़रा सा ।

किञ्जल्क—पद्मकेशर, कमलकेशर । (२) कमलपुष्प की पराग । कमल के फूल की धूलि । (३) पीला, कमल के केशर के रङ्ग का पीत । (४) नागकेशर, नागचम्पा ।

कित—कुत्र, कहाँ । (२) किधर, किस ओर ।

कितना—कियत, किस क़दर, किस परिमाण वा संख्या का? (प्रश्नवाचक)। (२) कितक, कितेक, किते, । (३) अधिक, बहुत, ज़्यादा ।

किधौं—अथवा, वा, या तो, न जानें । (२) कि, दवँ, दहुँ ।

किन—'किस' का बहु वचन । (२) किम्, क्यों न । (३) किण, चिह्न, दाग़ ।

किन्नर—किम्पुरुष, तुरङ्गमुख, गीतमोदी, मयु । एक प्रकार के देवता जिनका मुख घोड़े के समान होता है और जो सङ्गीत में अत्यन्त कुशल होते हैं । ये पुलस्त्य ऋषि के वंशज माने जाते हैं । (२) विवाद, दलील, तक़रीर ।

किम्—क्या ? । (२) कौन सा ? । (३) कैसे ? ।

किमपि—कोई भी, कुछ भी, कैसे भी ।

किमि—किम्, कैसे ? किस प्रकार ? ।

किय—किया, निबटाया ।

कियत—कियत्, कितना ? किस क़दर ? ।

किया—किया हुआ काम । निबटाया ।

किरन—किरण, मरीचि, रश्मि ।

किरन केतु
किरनमालिका
किरनमाली } —सूर्य्य, भानु, रवि ।

किरात—एक प्राचीन जङ्गली जाति जो अत्यन्त नीच म्लेच्छों में गिनी जाती थी ।

किल्विष—पाप, अघ, पातक । (२) रोग, व्याधि,

किल्विषी—पापी, अघी, पातकी । (२) रोगी, व्याधि ग्रस्त, बीमार । (३) दोषी, अपराधी, अवगुणी ।

किसोर—किशोरावस्था, ग्यारह वर्ष से पन्द्रह वर्ष तक की उमर का बालक । (२) पुत्र, बेटा, लड़का ।

की—कि, अथवा, वा, या तो । (२) हिन्दी विभक्ति "का" का स्त्रीलिङ्ग । जैसे-उसकी गाय । (३) 'करना' के भूतकालिक रूप 'किया' का स्त्रीलिङ्ग । (४) क्या ? ।

कीच—पङ्क, कीचड़, चहला ।

कीजिय
कीजिये } —किसी कार्य को करने का आदेश । करिये ।

कीट—कृमि, कीड़ा, किरौना । (२) किट्ट, मल, जमी हुई मैल ।

कीन
कीन्ह } —किया, कर गुज़रा ।

कीबी
कीबे } —करना, निबटाना । (२) करिये, कीजिए ।

कीय—किया, किया हुआ काम ।

कीर—शुक, सुआ, सुग्गा ।

कीरति—कीर्त्ति, यश, बड़ाई ।

कीर्त्तन—यशवर्णन, गुणगान, कथन । (२) हरि कीर्त्तन और भजन आदि ।

कीर्त्ति—यश, ख्याति, बड़ाई, कीरति, नामवरी, नेकनामी । (२) पुण्य, सुकृत, धर्म । (३) विस्तार, व्यास, फैलाव । (४) एक छन्द का नाम ।

कीले—'कीलना' शब्द का भूतकाल । किसी मन्त्र वा युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना । (२) वश में करना । अधीन करना । (३) कील लगाना, मेख गाड़ना । (४) बाँधना, जकड़ना, रूँधना ।

कीस—बानर, मर्कट, कीश ।

कु—कुत्सित, नीच, बुरा । यह संज्ञा के पहले लग कर विशेषण का काम देता है और जिस शब्द के पहले लगाया जाता है उसके अर्थ में नीचता का भाव आ जाता है । (२) पृथ्वी, धरती ।

कुकबन्ध—नीच कबन्ध राक्षस । (२) बिना शिर के अधम शरीर । नीच धड़ ।

कुकरम
कुकर्म } —निन्दितकार्य्य, खोटाकर्म, बुरा-काम ।

कुघाउ
कुघाव } —कुत्सितघाव, बुराज़ख़्म ।

कुङ्कुम—केसर, वाह्लीक, जाफ़रान, । (२) कुङ्कुमा, लाख को लोहे की नली में फूँकते हैं जिससे

वह फूल कर झिल्ली के समान गोला हो जाता है उसमें लालरङ्ग भर कर होली के दिनों में चलाते हैं, वह कुङ्कुमा कहा जाता है।
कुच—स्तन, पयोधर, उरोज, थन।
कुचाल—कुत्सितचाल, अधमआचरण, ख़राब चालचलन। (२) दुष्टता, खोटाई, पाजीपन, बदमाशी।
कुचाली—कुमार्गी, दुष्ट, बदमाश।
कुचाह—अमङ्गल, अशुभबात, बुरीचाह।
कुछ—किञ्चित,अल्प,थोड़ा सा,किछु,कछु,टुक,ज़रा, लघु मात्रा का। (२) कचित, कोई,कोई वस्तु।
कुजाति—कुजात,नीचजाति, अन्त्यज, बुरीक़ौम। (२) अधमपुरुष, पतितमनुष्य।
कुजोग—कुयोग, कुसङ्ग, कुमेल। (२) प्रतिकूल अवस्था, बुरासंयोग।
कुञ्चित—वक्र, कुटिल, टेढ़ा, घूमा हुआ। (२) घूँघरवाले, घुँघुरारे बाल।
कुञ्जर—हाथी, वारण, गज। (२) श्रेष्ठ, पुङ्गव, उत्तम। (२) बाल, केश, चिकुर।
कुञ्जरारि—(कुञ्जर+अरि) सिंह, व्याघ्र, बाघ, हाथी का बैरी।
कुटिल—वक्र, टेढ़ा, घूमा हुआ। (२) कपटी, छली, दग़ाबाज़। (३) खल, दुष्ट।
कुटिलकीट—सर्प, अहि, साँप।
कुटिलाई—कुटिलता, वक्रता, टेढ़ापन। (२) कपट, छल, खोटाई, धोखेबाज़ी।
कुटुम } कुटुम्ब }—परिवार, ख़ानदान, कुनबा।
कुटेव—निकृष्ट अभ्यास, बुरी आदत, कुबानि।
कुठाकुर—अधमस्वामी, नीचमालिक।
कुठार—कुल्हाड़ा, टँगारा, टाँगा। (२) कोठार, कुठिला, अन्न रखने का बड़ा पात्र।
कुड़मल—कली, बिना खिला हुआ फूल।
कुणप—राक्षस, कौणप, निशाचर। (२) शव,मृतक, मुर्दा। (३) कुन्त, भाला, बरछा।
कुण्ठ—गुठला, गोठिल, जो चोखा न हो। (२) मूर्ख लण्ठ, कुन्दज़ेहन।
कुण्ठित—कुन्द, गोठिल, जिसकी धार चोखी न हो। (२) मन्द, निकम्मा, बेकाम।
कुण्ड—छोटा जलाशय, लघुतालाब। (२) कुम्भ, कुण्डा, घड़ा।
कुण्डल—बाली, मुरकी, कान में पहनने का गहना जो सोने वा चाँदी का मण्डलाकार होता है।
कुतरु—कुवृक्ष, बबूर आदि के पेड़।
कुतर्क—वितण्डा, बकवाद, बुरा तर्क, बेढङ्गीदलील।
कुत्सित—गर्हित, निन्दित, अधम, नीच, ख़राब।
कुदाम—खोटासिक्का, ख़राबरुपया। (२) खोटी धातु, लोह काँसा पीतल आदि।
कुदाय—कुदावँ, कुपेच, बुरादावँ। (२) सङ्कट, दुःख, पीड़ा
कुदृष्टि—पाप की दृष्टि, बुरी नज़र।
कुदेव—दैत्य, दानव, बुरेदेवता।
कुधर—पर्वत, शैल, पहाड़।
कुधरधारी—पर्वत धारण करनेवाला। गिरिधर। (२) हनूमान। (३) श्रीकृष्णचन्द्र।
कुधरम } कुधर्म }—अधर्म, पाप, बुरा आचरण।
कुधातु—खोटीधातु लोहा काँसा आदि।
कुनप—राक्षस। (२) भाला। (३) शरीर।
कुनीति—अनीति, अत्याचार, अन्याय।
कुन्त—भाला, बरछा।
कुन्द—श्वेतपुष्प, महामोद, एक फूल जो जूही के समान सफ़ेद और सुगन्धित होता है। (२) छीला, खरादा, छोला। (३) फ़ारसीभाषा के अनुसार—कुण्ठित, गोठिल, गुठला।
कुन्दन—सुवर्ण, स्वर्ण, सोना। (२) सुवर्ण का पतला पत्तर जिसको लगा कर जड़िये नग जड़ते हैं।
कुन्दमिव—(कुन्दं+इव) कुन्द के समान।
कुन्देन्दु—(कुन्द+इन्दु) कुन्द और चन्द्रमा।
कुपथ—कुपन्थ, कुमार्ग, बुरारास्ता। (२) निषिद्ध आचरण, कुचाल।
कुपथ्य—अपथ्य, बदपरहेज़ी। वह आहार विहार जो स्वास्थ्य को हानिकारक हो।

कुपित—क्रुद्ध, क्रोधित। (२) अप्रसन्न, नाखुश।
कुबरी—कुब्जानाइन। कंस की दासी जिसकी पीठ टेढ़ी थी। यह श्रीकृष्णचन्द्र पर अधिक अनुराग रखती थी। (३) मन्थरा, केकई की एक दासी का नाम।
कुबुद्धि—दुर्बुद्धि, जिसकी बुद्धि भ्रष्ट हो। (२) मूर्ख, बेवकूफ़। (३) कुमन्त्रणा, बुरीसलाह।
कुभाँति—कुरीति, बुरीतरह।
कुमति—दुर्मति, कुबुद्धि, नीचमति।
कुमनोरथ—कुत्सितअभिलाषा, कुचाह।
कुमातु—कुत्सितमाता, अधमजननी।
कुमार—पुत्र, बेटा, लड़का। (२) पाँच वर्ष की अवस्था का बालक। (३) युवराज, राजकुमार (४) बिन व्याहा, कुँवारा। (५) कार्त्तिकेय, सेनानी, षड़ानन।
कुमारग—कुमार्ग, कुराह, बुरारास्ता। (२) अधर्म।
कुमारगगामी—बुरे रास्ते में चलनेवाला।
कुमार्ग—कुपन्थ, कुराह, बुरारास्ता। (२) अधर्म, अत्याचार, पाप।
कुमुद—सितोत्पल, चन्द्रकान्त, कैरव, कुवलय, श्वेतकमल, कमोदनी, कोईं, कूईंबेरा, बघोला। यह रात्रि में चन्द्रमा की किरणों से विकसित होता है और दिन में सङ्कुचित रहता है। इसी से चन्द्रमा, कुमुदबन्धु, कहे जाते हैं। (२) नैऋत कोण का दिग्गज। (३) कृपण, कञ्जूस, सूम। (४) लोभी, लालची। (५) एक बन्दर का नाम जो राम रावण के युद्ध में लड़ा था।
कुमुदबन्धु—चन्द्रमा, कुमुद के सहायक।
कुमुदिनी—कुमुद, कैरव। (२) कुमुद्वती।
कुम्भ—कलश, घंट, घड़ा, गगरी। (२) हाथी का मस्तक जो दोनों ओर ऊँचा रहता है। (३) बारह राशि में से एक। ग्यारहवीं राशि। (४) एक पर्व का नाम जो प्रति बारहवें वर्ष हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में पड़ता है। इस अवसर पर उपर्युक्त स्थानों में बड़ा मेला होता है। (५) एक दैत्य का नाम।

कुम्भकर्ण—घटकर्ण, कुम्भकरन, घटकरण, एक भीषण राक्षस योद्धा का नाम जो रावण का भाई था। यह छे महीने सोता और एक दिन जागता था।
कुम्भज—मैत्रावरुणि, अगस्त्य, कुम्भजात, घटसम्भव, घटोद्भव, पीताब्धि, और्वशेय, समुद्रचुलुक, विन्ध्यकूट। एक ऋषि जो घड़े से उत्पन्न हुए थे और समुद्र को चुल्लू में भर कर पान कर लिया तथा विन्ध्याचल पर्वत को लिटा दिया था।
कुम्भजात, कुम्भसम्भव—कुम्भज, अगस्त्य मुनि।
कुम्भीश—कुम्भ नाम का दैत्यराज जिसका भगवती दुर्गा ने संग्राम में नाश किया था।
कुम्हड़ा—कूष्माण्ड, पीतफला, कोहँड़ा, बादरङ्ग। यह एक फैलनेवाली लता है जिस में बड़े बड़े घण्टी के आकार के फूल लगते हैं और फल गोला हरे रङ्ग का पकने पर पीला होता है। इसकी बतिया तर्जनी उँगली दिखाने से सूख जाती है, 'जो तरजनी देखि मरिजाहीं'।
कुम्हिलैहै। कुम्हलायेगा। मुरझा जायगा।
कुयाचक—नीचमङ्गन, बुरामँगता।
कुयोग—कुजोग, बुरा संयोग।
कुरङ्ग—मृग, हिरन, हरना। (२) बादामी वा तामड़े रंग का हरिण। (३) बुरारंग, ख़राब रंगढंग।
कुराय—कुराह, कुराई, बुरा रास्ता, तंग और ऊँची नीची डगर। (२) गड्ढा, खदरा, गड़हा। (३) कूड़ाकर्कट, झाड़झंखाड़, कतवार।
कुरीति—कुप्रथा, कुचाल, बुरारिवाज़।
कुरु—एक सोमवंशी राजा का नाम जिसके वंश में पाण्डु और धृतराष्ट्र हुए थे। (२) कर्त्ता, करनेवाला। (३) ओदन, भात, पका चावल।
कुरुपति, कुरुराज—दुर्योधन, धृतराष्ट्र का पुत्र।
कुरुराजबन्धु—दुर्योधन का भाई दुःशासन। धृतराष्ट के १०० पुत्र थे उनमें दुःशासन राजा दुर्योधन का अत्यन्त प्रेमपात्र और मन्त्री था।

यह बड़ा क्रूर स्वभाव का था। पाण्डव लोग जब जुए में हार गये तब यही द्रौपदी को पकड़ कर सभास्थल में ले आया और उसका वस्त्र खींचकर नग्न करना चाहा था।

कुरूप—कुत्सितरूप, बदसूरत।

कुर्वन्ति—करते हैं, कर रहे हैं।

कुल—वंश, ख़ानदान, कुनबा। (२) सन्तति, सन्तान, औलाद। (३) वर्ण, गोत्र, जाति। (४) समूह, समुदाय, झुण्ड। (५) भवन, घर, मकान। (६) अर्बीभाषा के अनुसार—समस्त सब, सारा, तमाम।

कुलच्छन—कुलक्षण, बुरीअलामत।

कुलपति—घर का मालिक, ख़ानदान का मुखिया।

कुलहीन—अकुलीन, नीचकुल का। (२) अजाती, कुजाति।

कुलक्षण—दुर्लक्षण, कुलच्छन, बुरेचिह्न। (२) दुराचार, कुचाल, बदचलनी। (३) दुराचारी, कुलच्छनी, बुरेलक्षणवाला।

कुलिस—कुलिश, वज्र, गाज। (२) हीरा, अलमास।

कुलीन—उत्तम कुल में उत्पन्न। अच्छे घराने का। श्रेष्ठ वंसवाला। (२) पवित्र, शुद्ध, साफ़। (३) आर्य्य, सभ्य, साधु।

कुवरन—कुवर्ण, नीच वर्ण, बुरी जाति का।

कुवलय—कमल, पद्म। (२) कुमुद, कूईंबेरा।

कुवेर—वैश्रवण, धनाधिप, धनद, धनेश, यक्षराज, नरवाहन, वसु, मनुष्यधर्मा, किन्नरेश, यक्ष, राजराज, त्र्यम्बकसखा, पुण्यजनेश्वर, अलकाधिप, पौलस्त्य, गुह्यकेश्वर, एकपिङ्ग। एक देवता जो इन्द्र की नौ निधियों के भण्डारी और शिवजी के मित्र हैं। ये विश्रवस् ऋषि के पुत्र तथा रावण के सौतेले भाई कहे जाते हैं। इन्हों ने विश्वकर्मा द्वारा लङ्कापुरी बनवाई पर जब रावण ने इनको वहाँ से निकाल दिया तब ये तप करने लगे। इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने इन्हें देवता बना कर उत्तर दिशा का राज्य दिया और इन्द्र का भण्डारी बनाया। ये सम्पूर्ण संसार के धन के स्वामी कहे जाते हैं। इनके एक आँख, तीन पैर और आठ दाँत हैं। देवता होने पर भी इनका पूजन नहीं होता। इनके पुत्र का नाम नल कूबर, पुरी का नाम अलका, मित्र का नाम शङ्कर और विमान का नाम पुष्पक है।

कुश—दर्भ, दाभ, कुसा, एक प्रकार का तृण जो सन्ध्यावन्दन और विवाह आदि मङ्गल कार्य्यों में पवित्रता के लिये ग्राह्य है। प्राचीन काल में इसका यज्ञों में बहुत उपयोग होता था। (२) श्रीरामचन्द्र जी के युगल पुत्रों में से एक। लव के भाई। (३) पानी, जल, नीर। (४) तीक्ष्ण, तीव्र, तेज।

कुशल—क्षेम, मङ्गल, कल्याण, ख़ैरियत। (२) प्रवीण, दक्ष, चतुर। (३) श्रेष्ठ, अच्छा, भला। (४) पुण्यशील, पुण्यात्मा। (५) सामर्थ्य, शक्ति, पौरुष। (६) शिव का एक नाम।

कुशलात—कुशल समाचार, मङ्गल समाचार, क्षेम का हाल, ख़ैरियत।

कुसङ्ग, कुसङ्गति—निन्दितसङ्गति। बुरेलोगों का साथ। बुरीसोहबत।

कुसङ्कट—कुत्सितसंयोग, कुयोग, बुरा इत्तिफ़ाक़, नीचयोग।

कुसमय—अनवसर, बुरावक़्त। (२) दुर्भिक्ष, अकाल, महँगी। (३) सङ्कट का समय। दुख के दिन। (४) न्यूनता, घाटा, कमी।

कुसमाज—कुत्सितमण्डली। बुरामजमा। (२) कुसङ्गति, ख़राबसोहबत।

कुसाज—कुत्सितसाज। बुरा सामान।

कुसासति—दुर्गति, बुरीफ़ज़ीहत।

कुसुम—पुष्प, सुमन, फूल।

कुसुमित—पुष्पित, फूला हुआ।

कुसेवक—निकृष्टसेवक, बुराचाकर।

कुहू—अमावस्या, अमावस।

कुहूनिसा—अमावस्या की रात। अँधेरी रात्रि।

कुत्रापि—(कुत्र+अपि) कहीं भी।

कूकर—श्वान, कुक्कुर, कुत्ता।

कूच—(फ़ारसीभाषा)—प्रस्थान, यात्रा, रवानगी। (२) चला जाना, उठ जाना, पयान करना।

कूट—शिखर, शृङ्ग, पहाड़ की ऊँची चोटी। (२) धान्यपुञ्ज, अन्न की राशि, अनाज का ढेर। (३) छल, धोखा, फ़रेब। (४) मिथ्या, असत्य, झूठ। (५) गुप्तरहस्य, छिपीबात। राज़ की बात जिसको दूसरा न जान सके। (६) अकस, गुप्तबैर, कीना। (७) श्रेष्ठ, प्रधान। (८) हथौड़ा, लोह का मुगरा। (९) वह हास्य वा व्यङ्ग जिसका अर्थ जल्दी समझ में न आवे।

कूटस्थ—सर्वोपरिस्थित। आला दर्जे का। (२) अचल, अटल, जिसमें कुछ चलविचल न हो। (३) अन्तर्व्याप्त, गुप्त, छिपा हुआ, पोशीदा। (४) अविनाशी, नाशरहित। (५) जीव, आत्मा। सांख्य में 'कूटस्थ' ऐसे आत्मा-पुरुष को कहते हैं जो परिणाम रहित हो और जागृत्, स्वप्न, सुषुप्ति, इन तीनों अवस्थाओं में एक समान रहे। न्याय में परमेश्वर को "कूटस्थ" कहा है और उसे जन्म-गुण रहित अर्थात् किसी से न उत्पन्न होनेवाला माना है।

कूप—उदपान, कुआँ, इनारा। (२) कुण्ड, ह्रद गहरागड्ढा। (३) छिद्र, छेद, सुराख़।

कूर—क्रूर, निर्दय, ज़ालिम। (२) खल, दुष्ट, कुमार्गी। (३) असगुनियाँ, मनहूस। (४) भयङ्कर, भीषण, डरावना,। (५) अकर्मण्य, निकम्मा, जिसका किया कुछ न हो सके।

कूरम } —कमठ, कच्छप, कछुआ। (२) विष्णु
कूर्म } भगवान का दूसरा अवतार।

कूल—तट, तीर, किनारा। (२) समीप, निकट, पास। (३) सरोवर, तालाब,। (४)नहर, नाला।

कृकलास—सरट, गिरगिट, गिरगिटान।

कृज्जातना—(कृत+यातना) दुर्दशा किया हुआ।

कृत—सम्पादित, किया हुआ। (२) रचित, बनाया हुआ। (३) तत्सम्बन्धी, सम्बन्ध रखनेवाला। तअल्लुकीन। (४) सतयुग, चारों युगों में से प्रथम युग। (५) चार की संख्या।

कृतकाज—कृतकार्य्य, सफलमनोरथ। (२) सम्पादित कार्य्य। किया हुआ काम।

कृतघ्न—अकृतज्ञ, किये हुए उपकार को न माननेवाला। एहसानफ़रामोश।

कृतज्ञ—कृतविज्ञ, किये हुए उपकार को माननेवाला। एहसान माननेवाला। एहसानमन्द।

कृतान्त—यमराज, अन्तक, समन। (२) मृत्यु, मीचु, मौत। (३) समाप्तकर्त्ता। अन्त करने वाला। (४) पाप, कलुष, अघ। (५) निश्चित बात, सिद्धान्त। (६) पूर्व जन्म में किये हुए शुभ और अशुभ कर्म्मों का फल।

कृतार्थ—कृतकृत्य, सफलमनोरथ, जिसका अभिप्राय पूरा हो चुका हो। (२) सन्तुष्ट, आसूदा। (३) कुशल, चतुर, होशियार। (४) जो मोक्ष प्राप्त कर चुका हो।

कृति—करतूत, करनी, करतब। (२) कार्य्य, काम, काज। (३) आघात, क्षति, चोट। (४) डाकिनी, डाइन, चुड़इल। (५) इन्द्रजाल, जादू। (६) कटारी, करौली। (७) अनुष्टुप जाति का एक छन्द जिसमें बीस बीस अक्षरों के चरण होते हैं। (८) विष्णु, नारायण।

कृतु—कृत, सम्पादित, किया हुआ। (२) रचित, बनाया हुआ। (३) दक्ष, प्रवीण, निपुण। (४) प्रथम युग, सतयुग। (५) सम्बन्ध रखने वाला। तअल्लुकीन।

कृत्य—कर्त्तव्यकर्म, वेद विहित आवश्यक कार्य। (२) भूत, प्रेत, यक्षादि जिनका पूजन अभिचार के लिये होता है। (३) बौद्धों के मत से ज्ञानानुसार कृत्य चौदह प्रकार के होते हैं।

कृत्या—तन्त्र के अनुसार एक राक्षसी जिसे तान्त्रिक लोग अपने अनुष्ठान से उत्पन्न करके किसी शत्रु को विनष्ट करने को भेजते हैं। यह बहुत भयङ्कर मानी जाती है और इसका वर्णन वेदों तक में आया है। (२) अभिचार, पुरश्चरण, मन्त्र तन्त्र द्वारा मारण, मोहन, उच्चाटन आदि हिंसाकर्म। (२) दुष्टा स्त्री। कर्कशा वा कलह करनेवाली नारी। (४) धन, स्त्री और शरीर को नाश करनेवाली शत्रु की क्रिया। वैरी का किया तान्त्रिक अपकार।

कृत्यादि—(कृत्या+आदि) अभिचार मारणादि छे प्रकार के प्रयोग।

कृपण—सूम, कञ्जूस, मक्खीचूस। (२) अधम, क्षुद्र, नीच।

कृपा—अनुग्रह, दया, मिहरबानी, बिना किसी प्रतिकार की आशा के दूसरे की भलाई करने की इच्छा। दूसरे के दुःख दूर करने की उत्कण्ठा। (२) सहिष्णुता, क्षमा, माफ़ी।

कृपाकर—कृपा की खान। दया का भण्डार।

कृपान—कृपाण, खड्ग, तलवार। (२) कटार, छुरा, किर्च। (३) एक छन्द का नाम दण्डक वृत्त जिसके चरण बत्तीस वर्ण के होते हैं।

कृपानिधान—दयानिकेत, कृपा के घर।

कृपानिधि—दयासागर, कृपा के समुद्र।

कृपापात्र—दयाभाजन, कृपा का अधिकारी। वह व्यक्ति जिस पर मिहरबानी हो।

कृपामई—दयायुक्त, कृपामय।

कृपायतन—दया के स्थान, कृपा के मन्दिर।

कृपाल, कृपालु—दयालु, दया के स्थान।

कृपावारिधि, कृपासिन्धु—दयासागर, कृपा के समुद्र।

कृपिन—कृपण, सूम, कञ्जूस। (२) अधम, नीच।

कृपिनतर—अत्यन्तकृपण, महासूम।

कृश—दुर्बल, क्षीण, दूबर, (२) अल्प, तनिक, थोड़ा।

कृशानु—अग्नि, अनल, पावक।

कृषी—कृषि, खेती, किसनई।

कृष्ण—काला, करिया, सियाह। (२) श्याम, नीला, आसमानी। (३) कृष्ण पक्ष, हर महीने का पहला पाख, बदी। (४) श्रीकृष्णचन्द्र, मुरलीधर, वनमाली। (५) काक, कौआ। (६) कोयल, कोइल। (७) सुरमा। (८) लोहा। (९) अर्जुन। (१०) वेदव्यास। (११) एक छन्द का नाम जो छप्पय के भेदों में माना जाता है। (१२) एक असुर का नाम।

कृत्रिम—बनावटी, नक़ली, जाली, जो असली न हो। (२) रसाञ्जन, रसवत। (३) काचलवण, कचियानोन।

के—सम्बन्धसूचक "का" विभक्ति का बहुवचन रूप, जैसे-शिवबोध के बैल। (२) कः का बहुवचन। कौन? केइ, किसने।

केतु—ध्वजा, पताका, झण्डा। (२) चिह्न, निशान। (३) दीप्ति, प्रकाश। (४) ज्ञान, विवेक। (५) नवग्रहों में से एक ग्रह। (६) पुच्छलतारा। दुमदार सितारा। वह तारा जिसके साथ प्रकाशमय पूँछ दिखाई देती है। (७) पुराणानुसार एक राक्षस का कबन्ध। जिसने समुद्र मथन के समय देवताओं के साथ बैठ कर अमृत पान किया। इसलिए विष्णु भगवान ने चक्र से उसका सिर काट डाला। परन्तु अमृत के प्रभाव से वह मरा नहीं। उसका सिर राहु और धड़ केतु हो गया। कहते हैं कि इसे सूर्य्य और चन्द्रमा ही ने पहचाना था। इसी लिए यह अबतक ग्रहण के समय सूर्य्य और चन्द्रमा को ग्रसता है।

केतू—केतु।

केते—कितने? किस संख्या में।

केयूर—बिजायठ, अङ्गद, भुजबन्द, बहुँटा, बाँह में पहनने का गहना।

केर—सम्बन्धसूचक अव्यय। अवधी भाषा में यह "का" "के" विभक्तियों के स्थान में आता है। जैसे—छमहु चूक अनजानत केरी।

केलि—क्रीड़ा, खेल, खेलवाड़। (२) रति, मैथुन, स्त्री प्रसङ्ग। (३) हँसी, मज़ाक़, दिल्लगी। (४) पृथ्वी, धरती, ज़मीन।

केवट—कैवर्त्त, धीवर, मलाह। क्षत्रिय पिता और वैश्या माता से उत्पन्न एक वर्णसङ्कर जाति। इस क़ौम के लोग आजकल नाव चलाने तथा मट्टी खोदने का काम करते हैं।

केवल—एकमात्र, अकेला, निराला, सिर्फ़। (२) श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, उत्तम। (३) शुद्ध, पवित्र, निर्मल। (४) निर्णीत, निश्चित, निर्णय कियाहुआ।

केश—बाल, कुन्तल, कच। (२) विष्णु, केशव। (३)

सूर्य्य, दिवाकर। (४) किरण, रश्मि। (५) वरुण, प्रचेता। (६) विश्व, जगत। (७) सम्पूर्ण, समग्र। (८) ब्रह्म की शक्ति का एक भेद।

केशरिन—सिंहिनी, बाघिन।

केशरी—सिंह, मृगेन्द्र, व्याघ्र। (२) केसरी, एक बन्दर का नाम जो हनूमानजी के पिता कहे जाते हैं।

केशव—विष्णु, लक्ष्मीकान्त। (२) श्रीकृष्णचन्द्र, वनमाली। (३) ब्रह्म, परमेश्वर। (४) केशी, केशिक, सुन्दर बालवाला।

केशवन्दित—विश्ववन्दित, जगत से बन्दनीय, संसार से प्रणाम किया गया। (२) विष्णु, सूर्य्य, प्रचेतादि सब से वन्दनीय।

केस—केश, बाल, चिकुर।

केसरी—केशरी, सिंह, हरि, मृगेन्द्र। (२) हनूमानजी के पिता का नाम। (३) अश्व, घोड़ा। (४) चाम्पेय, नागकेसर।

केसरीकिसोर, केसरीसुवन—हनूमान, केसरी बानर के पुत्र।

केहरि, केहरी—सिंह, केशरी, मृगराज।

केहि, केही, केहू—किम्, किस, यह अवधी "के" का कर्म, सम्प्रदान और अधिकरण रूप है।

केहूँ—किसी भी, किसी प्रकार, किसी तरह।

कै—कति, कितना? कइ, किसक़दर। (२) या, वा, अथवा, या तो। इस शब्द के साथ प्रश्न में "धौं" प्रायः आता है। (२) अर्बीभाषा के अनुसार—वमन, छर्दि, उलटी, क़ै।

कैटभ—मधु नामक दैत्य का छोटा भाई जिसको विष्णु भगवान ने मारा था।

कैतव—कपट, छल, धोखा, बहाना, धूर्त्तता। (२) वैदूर्य्यमणि, लहसुनियाँ। (३) द्यूतक्रीड़ा, जुआ। (४) धूर्त्त, छली, धोखेबाज़।

कैधौं—या, वा, अथवा, किम्बा, किधौं।

कैरव—कुमुद, कूईंबेरा, नीलोफर। (२) श्वेतकमल, सफ़ेदपद्म। (३) शत्रु, बैरी, दुश्मन। (४) जुआरी, जुआ खेलनेवाला।

कैवल्य—अपवर्ग, निर्वाण, मुक्ति, मोक्ष। (२) निर्लिप्तता, शुद्धता, बे-मेलपन। (३) एकता।

कैवल्यपति—मोक्ष के स्वामी, श्रीरामचन्द्रजी।

कैसउ, कैसहु—कैसा हू, किसी प्रकार का भी।

कैसे—किस प्रकार से? किस ढङ्ग से?। (२) क्यों? किस हेतु? किस लिए?

को—कः, कौन, कर्म और सम्प्रदान का विभक्ति प्रत्यय। जैसे-सर्प को मारो।

कोइ, कोई—ऐसा एक (मनुष्य वा पदार्थ) जो अज्ञात हो। न जाने कौन एक। (२) ऐसा एक जो अनिर्दिष्ट हो। बहुतों में से चाहे जो एक अविशेष वस्तु वा व्यक्ति। (३) एक भी, कुछ भी। (४) लगभग, क़रीब क़रीब।

कोउ, कोऊ—कोई, चाहे कोई भी।

कोक—चक्रवाक, चकवापक्षी, सुरख़ाब। (२) दादुर, मेढक। (३) विष्णु, नारायण। (४) वृक, भेड़िया। (५) एक पण्डित का नाम जो रतिशास्त्र का आचार्य्य माना जाता है और कोकदेव के नाम से प्रसिद्ध है। (६) संगीत का छठाँ भेद।

कोकनद—रक्तोत्पल, लालकमल।

कोट—दुर्ग, गढ़, क़िला। (२) प्राचीर, शहर-पनाह। (३) राजप्रासाद, राजमहल। (४) समूह, यूथ, जत्था।

कोटर—निष्कुह, खोढ़रा, वृक्ष का खोखला भाग।

कोटि—शत लक्ष, करोड़, सौ लाख की संख्या। (२) समूह, यूथ, जत्था। (३) वर्ग, श्रेणी, दरजा। (४) उत्कृष्टता, उत्तमता। (५) धनुष का सिरा। कमान का गोशा। (६) किसी वाद विवाद का पूर्व पक्ष।

कोटिक—अमित, असंख्य, बे-शुमार। (२) करोड़।

कोटिगुन—करोड़गुना, अनन्तगुणा।

कोढ़—कुष्ठरोग। एक प्रकार का रक्त और त्वचा सम्बन्धी संक्रामक रोग जो पुरुषानुक्रमिक होता है। वैद्यकशास्त्र के अनुसार कोढ़ १८ प्रकार

का होता है। उनमें सात प्रकार का महाकुष्ट असाध्य कहा गया है शेष ग्यारह प्रकार का साध्य माना जाता है। इस रोग से पीड़ित मनुष्य घृणित और अस्पृश्य समझा जाता है। जब इसमें हाथ, पाँव तथा शरीर का मांस गल कर बहने लगता है तब उसमें खुजली भी चलती है। इसी से कवियों ने कोढ़ को खाज की उपमा दी है। जिसका तात्पर्य्य दुःख पर दुःख है अर्थात् एक तो कोढ़ ही अत्यन्त भीषण दुःखदायी है उसमें खाज का चलना भयङ्कर कष्ट का कारण है।

कोतो—कौन था? को था?

कोदण्ड—धनुष, धन्वा, कमान।

कोदण्डधर—धनुर्धर, धनुष धारण करनेवाला।

कोन—कोण, कोना, गोशा। (२) को न? कौन नहीं।

कोप—क्रोध, ग़ुस्सा।

कोपि—क्रोधि, ग़ुस्सा करके।

कोपित—क्रोधित, रुष्ट, क्रोध किये हुए।

कोभा—कौन हुआ? को हुआ।

कोमल—मृदु, मुलायम, नरम,। (२) सुकुमार, नाज़ुक। (३) सुन्दर, मनोहर। (४) अपरिपक्व, कच्चा, खाम। (५) स्वर का एक भेद।

कोमलताई—कोमलता, मुलायमत, नरमी। (२) मनोहरता, लालित्य, मधुराई।

कोर—कोन, अन्तराल, गोशा। (२) किनारा, सिरा, हाशिया। (३) बैर द्वेष, वैमनस्य। (४) दोष, ऐब, बुराई। (५) पंक्ति, श्रेणी, कतार। (६) कलेवा, छाक, पनपियाव।

कोल—शूकर, क्रोड़, सुअर। (२) बदरीफल, बेर। (३) चबेना, चरबन। (४) चित्रक, चीता। (५) मिर्च, कालीमरिच। (६) शीतलचीनी, कबाब-चीनी। (७) एक जङ्गली जाति जो वन में रह कर जीव हिंसा आदि से जीवन निर्वाह करती है। स्कन्द पुराण में कोल को म्लेच्छ कहा गया है।

कोल्हुन—'कोल्हू' शब्द का बहुवचन।

कोल्हू—तैलिकयन्त्र, तेल वा रस निकालने की कल। जवाजसङ्गी। यह पत्थर, काठ और लोहे का बनता है। कोल्हू में पेरना अर्थात् अधिक कष्ट पहुँचा कर प्राण लेना।

कोविद—पण्डित, विद्वान, सुधी।

कोश—भण्डार, ख़ज़ाना, धन सञ्चय करने का स्थान। (२) आवरण, खोल, ढकना। (३) अण्डकोश, अण्डा। (४) सम्पुट, डिब्बा, गोलक। (५) कुड़मल, फूलों की बँधी कली। (६) अभि-धान, वह ग्रन्थ जिसमें अर्थ वा पर्य्याय के सहित शब्द इकट्ठे किये गये हों। जैसे-विनय-कोश। (७) समूह, यूथ, वृन्द। (८) कुसयारी, रेशम का कोया।

कोशल—अवधप्रान्त। सरयू नदी के दोनों किनारों का प्रदेश। (२) अयोध्यापुरी। (३) एक राजा का नाम।

कोशलसुता—कोशल नामक राजा की कन्या। कौ-शल्या, रामचन्द्रजी की माता।

कोशला—अयोध्या, अवधपुरी।

कोशौघ—बृहद्भाण्डार, बड़ा ख़ज़ाना।

कोष, कोषु—कोश, भण्डार, ख़ज़ाना।

कोस—कोश, ख़ज़ाना। (२) दो मील अर्थात् ३५२० गज लम्बा रास्ता।

कोसो—कौन ऐसा? वह कौन।

कोह—क्रोध, रिस, गुस्सा। (२) अर्जुनवृक्ष, ककुभ, कोह। (३) फ़ारसीभाषा के अनुसार—पर्वत, शैल, पहाड़।

कोंहाते—अप्रसन्न होते। नाराज़ होते।

कौड़ी—कपर्दिका, कपर्दी, वराटिका। समुद्र का एक कीड़ा जो घोंघे की तरह अस्थिकोश के भीतर रहता है।

कौणप—कुणप, राक्षस।

कौतुक—कुतूहल, कौतूहल, खेल, तमाशा। (२) आनन्द, विनोद, प्रसन्नता। (३) आश्चर्य्य, अचम्भा, अचरज। (४) दिल्लगी, हँसी-मज़ाक।

कौन—कः, किम्, कवन। एक प्रश्नवाचक सर्व-नाम जो अभिप्रेत व्यक्ति वा वस्तु की जिज्ञासा करता है। उस मनुष्य वा वस्तु को सूचित

करने का शब्द जिसको पूछना होता है। (२) किस जाति का ? किस प्रकार का ?
कौनप—कौणप, राक्षस, निशाचर।
कौमार—कुमार, पाँच वर्ष की अवस्था का बालक। जन्म से पाँच वर्ष पर्य्यन्त की अवस्था।
कौमुदी—ज्योत्स्ना, चन्द्रिका, चाँदनी, चन्द्रमा की किरणें। (२) शरद की पूर्णिमा। क्वार कार्तिक मास की पूर्णमासी तिथि। (३) कुमुद, कुमुदिनी, कूईबेरा।
कौमोदकी—कौमोदी, विष्णु की गदा।
कौर—कवल, ग्रास, लुकमा, नेवाला, उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय। (२) भिक्षा, भीख, टुकड़ा।
कौरव—कौरव्य, कुरु राजा की सन्तान।
कौसल्या—कौशल्या, राजा कोशल की कन्या। अयोध्यानरेश महाराज दशरथ की सर्वप्रधान पटरानी। रामचन्द्रजी की माता।
कौसिक—कौशिक, कुशिक राजा के पुत्र गाधि जो इन्द्र के अंश से उत्पन्न हुए थे। (२) विश्वामित्र, गाधिनन्दन, कुशिक राजा के वंशज। (३) इन्द्र, शक्र,देवराज। (४) उलूक,उल्लूपक्षी। (५)गुग्गुल, गूगुल,। (६) सँपेरा,मदारी,साँप पकड़नेवाला।
कौसिकी—कौशिकी, चण्डिका, दुर्गा। (२) राजा कुशिक की पोती और ऋचीक मुनि की स्त्री जो अपने पति के साथ सदेह स्वर्ग गई थी। (३) काव्य में चार प्रकार की वृत्तियों में से पहली वृत्ति। जहाँ करुणा, हास्य और श्रृङ्गार रस का वर्णन हो तथा सरल वर्ण आवे उसे कौशिकी वृत्ति कहते हैं।
कौसेय—कौशेय, पाटम्बर, रेशमीवस्त्र।
कौस्तुभ—विष्णु की मणि। वह मणि जो समुद्र मथने से निकली थी जिसको विष्णु भगवान अपने वक्षस्थल पर सदा पहने रहते हैं।
कंस—मथुरा के राजा उग्रसेन का पुत्र जो श्रीकृष्णचन्द्रजी का मामा था और दैत्यों की भाँति अन्यायी होने के कारण कृष्ण भगवान ने उसका वध किया था।
क्या—एक प्रश्नवाचक शब्द जो उपस्थित वा अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा करता है। उस वस्तु के सूचित करने का शब्द जिसे पूछना रहता है। कौन वस्तु ? कौन बात ? (२) क्यों, किस कारण।
क्यों—किसी व्यापार वा घटना के कारण की जिज्ञासा करने का शब्द। किस कारण ? किस निमित्त ? किस वास्ते ?। (२) कैसे ? किस प्रकार ? किस भाँति ?।
क्योंकर—कैसे ? किस भाँति ? किस तरह ?।
क्योंहूँ—कैसे भी, किसी प्रकार भी।
क्रतु—यज्ञ, याग, विशेषतः अश्वमेध यज्ञ। (२) सङ्कल्प, निश्चय, प्रतिज्ञा। (३) इच्छा, अभिलाषा, ख़्वाहिश। (४) ज्ञान, विवेक, समझ। (५) विष्णु, केशव। (६) इन्द्रिय, गो। (७) जीव, आत्मा। (८) श्रीकृष्णचन्द्रजी के एक पुत्र का नाम। (९) ब्रह्मा के एक मानसपुत्र का नाम जो सप्तर्षियों में से हैं।
क्रम—प्रणाली, शैली, तरतीब, सिलसिला, पूर्वापर सम्बन्धी व्यवस्था। वस्तुओं वा कार्यों के परस्पर आगे पीछे आदि होने का नियम। (४) पैर रखने की क्रिया। (३) वह काव्यालङ्कार जिसमें प्रथमोक्त वस्तुओं का वर्णन क्रम से किया जाय। इसे यथासंख्य अलङ्कार भी कहते हैं। (४) वामन का एक नाम जिन्हों ने पृथ्वी को तीन डगों में नापा था।
क्रमक्रम—शनैः शनैः, धीरेधीरे, सिलसिलेवार। एक के पीछे दूसरा तीसरा।
क्रय—मोल लेने की क्रिया, खरीदने का काम, बेसाहना, किसी वस्तु का मूल्य देकर मोल लेना।
क्रव्याद—मांस खानेवाला। वह जो मांस खाता हो। जैसे-राक्षस, सिंह, गिद्ध आदि। (४) चिता की अग्नि। वह आग जिससे मुर्दा जलाया जाता हो।
क्रान्ति—एक दशा से दूसरी दशा में परिवर्तन। उलट फेर। फेरफार। (४) डग भरने की क्रिया, पैर रखना। एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन।

क्रिया—कर्म, कृत्य, किसी प्रकार का व्यापार। किसी काम का होना वा किया जाना। (२) अनुष्ठान, आरम्भ, शुरू। (३) प्रयत्न, चेष्टा, हिलना डोलना। (४) व्याकरण का वह अङ्ग जिससे किसी व्यापार का होना वा करना पाया जाय। जैसे-आना, जाना, मारना इत्यादि। (५) शौच आदि नित्यकर्म। (६) श्राद्ध आदि प्रेतकर्म। (७) प्रायश्चित्त आदि कर्म। (८) उपचार, चिकित्सा, उपाय। (९) न्याय वा विचार का साधन। मुक़द्दमे की कार्रवाई।

क्रीड़ा—आमोदप्रमोद। केलि, कल्लोल, खेलकूद, खेलवाड़। (२) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक यगण और एक गुरु होता है। (३) ताल के साठ भेदों में से एक।

क्रुद्ध—क्रोधयुक्त, कोप से भरा हुआ।

क्रूर—निष्ठुर, निर्दयी, ज़ालिम। (२) परपीड़क। दूसरों को कष्ट पहुँचानेवाला। (३) कर्कश, कठिन, कठोर। (४) तीक्ष्ण, तीव्र, तीखा। (५) उष्ण, गरम, तात। (६) नीच, बुरा, ख़राब। (७) घोर, भीषण, भयानक। (८) बाज पक्षी। (९) पका हुआ चावल।

क्रूरकर्म—भीषण कर्म। निष्ठुरतापूर्ण कार्य्य।

क्रूरकर्मा—क्रूरकर्म करनेवाला। अहनकर्मी। आततायी।

क्रोड़—शूकर, वाराह, सुअर। (२) वक्षःस्थल, भुजान्तर, छाती। (३) गोद, कनियाँ, कोरा। (४) वाराहीकन्द।

क्रोध—अमर्ष, रोष, कोप, गुस्सा, रिस, चित्त का वह उद्वेग जो किसी अनुचित और हानिकारक कार्य्य को होते हुए देख कर उत्पन्न होता है। जिसमें हानिकारक कार्य्य करनेवाले से बदला लेने की इच्छा होती है। साहित्य में इसे रौद्र रस का स्थायीभाव माना है।

क्रोधरत—क्रोध में लगा हुआ। गुस्से से भरा।

क्रोधादि—(क्रोध+आदि) अर्थात् क्रोध, लोभ, मोह, काम, मद, और मत्सरता।

क्लेश—व्यथा, वेदना, दुःख, कष्ट, तकलीफ़। (४) लड़ाई, झगड़ा, टंटा।

क्लेशित—व्यथित, दुःखित, जिसे कष्ट हो।

क्वचित—कोई ही, बहुत कम, शायद ही कोई।

क्वारा—बिनव्याहा, कुँआरा, जिसका विवाह न हुआ हो। जो विवाहित न हो।

ख

ख—हिन्दी वर्णमाला में स्पर्श व्यञ्जन के अन्तर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर। यह महाप्राण है और इसका उच्चारण कण्ठ से होता है। (२) आकाश, व्योम, आसमान। (३) शून्य, सूना, खाली स्थान। (४) इन्द्रिय, हृषीक, गो। (५) सुख, आनन्द, चैन। (६) बिल, छिद्र, छेद। (७) गर्त, गड्ढा, गड़हा। (८) कूप, कुआँ, इनारा। (९) शब्द। (१०) ब्रह्म। (११) कर्म। (१२) स्वर्ग।

खग—पक्षी, विहङ्ग, चिड़िया। (२) आकाश में चलनेवाली वस्तु वा व्यक्ति। जैसे-पवन, सूर्य्य, चन्द्रमा, तारागण, बादल, गन्धर्व, देवता और बाण आदि।

खगपति—गरुड़, बैनतेय, पक्षिराज।

खञ्जन—खञ्जरीट, ममोला, खिड़रिच। यह पक्षी आसाम, बरमा और हिमालय की तराई में अधिकता से होता है। जाड़े के आरम्भ में पहाड़ों के नीचे उतर आता है। यह बहुत चञ्चल होता है इसी से कवि लोग नेत्रों से इसकी उपमा देते हैं।

खटाइ—खटाना, निभना, टिकना। (४) खटाऊ, टिकाऊ, पायदार। (३) निर्वाह होना। गुज़ारा होना। (४) परीक्षा में ठहरना। आज़माइश में ठीक उतरना।

खटोला—छोटी खाट, लघु चारपाई।

खड्ग—खाँड़ा, तलवार का एक भेद। (२) गैंड़ा।

खड्गधाराव्रती—तलवार की धार का व्रत अर्थात् खड्ग की धार पर चलने के समान कठिन व्रत का पालन करना।

खण्ड—भाग, हिस्सा, टुकड़ा। (२) अपूर्ण, खण्डित,

जो पूरा न हो। (३) अल्प, लघु, छोटा। (४) खाँड़, शक्कर, चीनी। (५) खड्ग, खाँड़ा, तलवार। (६) दिक्, दिशा। (७) देश, वर्ष, जैसे-भरतखण्ड। (८) नौ की संख्या। (१०) सञ्चललवण, काला नमक।

खण्डन—भञ्जन, छेदन, तोड़ने फोड़ने की क्रिया। (२) निराकरण, किसी बात को अयथार्थ प्रमाणित करने की क्रिया। किसी सिद्धान्त को प्रमाणों द्वारा असङ्गत ठहराने का कार्य्य।

खण्डनि—भञ्जन करनेवाली। तोड़ने फोड़नेवाली।

खण्डि—भञ्जन करके। तोड़ फोड़ कर।

खण्डित—भग्न, टूटा हुआ। (२) अपूर्ण, जो पूरा न हो, अधूरा।

खद्योत—जुगुनू, सोनकिरवा। (२) सूर्य्य, रवि।

खनत—'खनना' शब्द का वर्तमान काल।

खनना—खोदना, कोड़ना, कुरेदना।

खनावोँ—खनाता हूँ। खुदवाता हूँ।

खनि—खन कर, खोद कर।

खनैगो—खनेगा, खोदेगा।

खपत—खपती, समाई, गुञ्जायश। (२) माल की कटती या बिक्री। उठान।

खम्भ—स्तम्भ, खम्भा। (२) आसरा, सहारा।

खर—गर्दभ, रासभ, गदहा। (२) तीक्ष्ण, तीव्र, तेज। (३) कठिन, कड़ा, सख़्त। (४) करकर, करारा, कुरकुरा। (५) अमाङ्गलिक, अशुभ, हानिकर। (६) आड़ा, तिरछा। (७) घना, मोटा। (८) तृण, तिनका, खढ़। (९) एक राक्षस जो रावण का भाई था और पञ्चवटी में रामचन्द्रजी के हाथ से मारा गया था। (१०) प्रलम्बासुर का एक नाम। (११) खच्चर। (१२) कौवा। (१३) बगुला। (१४) सफ़ेद चिल्होर। (१५) कुरर पक्षी। (१६) छप्पय छन्द का एक भेद। (१७) उत्तम, श्रेष्ठ।

खरखोट—भलाबुरा। निक-नेवर

ख़रगोस—(फ़ारसी भाषा) ख़रगोश, ससा, खरहा, चौगुड़ा, लमहा।

खरदूषन—खर और दूषण नाम के राक्षस जो रावण के भाई थे। इन राक्षसों ने चौदह हज़ार प्रेतों की सेना साथ लेकर पञ्चवटी में श्रीरामचन्द्रजी पर चढ़ाई की और वहीं युद्ध में मारे गये थे।

खरारि } खरारी }—खर राक्षस के शत्रु। खर के वैरी। श्रीरामचन्द्रजी। (२) विष्णु, केशव, लक्ष्मीकान्त। (३) श्रीकृष्णचन्द्र, वनमाली। (४) बलराम, हलायुध।

खरि—खरी, खली। (२) खड़ियामट्टी।

खरी—खली, खरि, सरसों तिल आदि कोल्हू में पेर कर तेल निकाल लेने के बाद उसकी बची हुई सीठी। (२) गर्दभी, गदही। (३) खड़िया, सेतखरी, एक प्रकार की सफ़ेद मिट्टी।

खरु—खर, गर्दभ, गद्हा।

खरे—अच्छे, भले।

खरो—अच्छा, उत्तम, चोखा।

खर्व—ह्रस्व, लघु, छोटा। (२) न्यूनाङ्ग, जिसका अंग भग्न वा अपूर्ण हो। (३) वामन बौना। (४) सौ अरब की संख्या।

खर्बीकरण—लघुकरना। छोटा बनाना। (२) अंग-भंग करना। अवयवों को तोड़ना।

खल—दुर्जन, दुष्ट, दुराचारी मनुष्य। (२) क्रूर, निर्दयी, ज़ालिम। (३) अधम, नीच, बुरा। (४) निर्लज्ज, बेहया। (५) छली, धोखेबाज़, फ़रेबो। (६) पिशुन, चुगुलख़ोर। (७) खरल, ओषधि कूटने वा घोटने का पात्र जो पत्थर, लोह और पीतल आदि का बनता है। (८) वञ्चक, लुटेरा, ठग।

खलई—खलता, दुष्टता, पाजीपन।

खलमण्डली—दुर्जनों की मण्डली। दुष्टों का गिरोह।

खलल—(अर्बीभाषा)—ख़लल, अवरोध, बाधा, रुकावट। (२) विघ्न, फ़ितूर।

खलाना—पचकाना, किसी फूली हुई सतह को नीचे की ओर धसाना। जैसे-पेट खलाना। (२) खाली करना। पात्र आदि में से भरी हुई चीज़ बाहर निकालना। (३) गड्ढा करना। गड़हा बनाना।

खलाये } —पचकाये, नीचे की ओर धँसाये।
खलायो } जैसे—पेट खलायो।

खलु—निश्चय, अवश्य, ज़रूर। (२) निषेध, अस्वीकार। (३) प्रार्थना, बिनती। (४) प्रश्न, सवाल। (५) नियम, पाबन्दी। (६) शब्दालङ्कार।

खस—एक जाति जो प्रचीन काल में जंगलों में कोल भील की तरह निवास कर हिंसा ठगी आदि दुष्कर्मों से अपना जीवन निर्वाह करती थी। वर्तमान में इन्हीं को खासिया भी कहते हैं। इस जाति के वंशज गढ़वाल प्रान्त, काश्मीर और नेपाल में अब तक इसी नाम से विख्यात हैं तथा अपने आप को क्षत्रिय बतलाते हैं और सभ्यता को अपनाने में बहुत उन्नति की है। गोसाँईजी ने इस जाति की गणना श्वपच, सबर, यमन, कोल, भील और किरातादि की श्रेणी में की है। (२) उशीर, वीरण, एक प्रकार की घास जिसकी जड़ सुगन्धित होती है।

खसाना—गिराना, फँकना, नीचे की ओर ढकेलना।

खसैहौं—गिराऊँगा। फँकूँगा।

खाइ—भक्षण कर, खा कर। (२) भोजन किया।

खाई—भक्षण की हुई, भोजन की गई। (२) वह नहर जो गाँव, नगर वा क़िले के चारों ओर रक्षा के लिए खोदी गई हो। खन्दक, खाँई।

खाउ—भक्षण कर। खा जाय।

खाको—(फ़ारसीभाषा ख़ाक)—भस्म, राख। (२) तुच्छ, छोटा, नाचीज़। (३) जो किसी गिनती में न हो। जिसका कहीँ आदर न हो। (४) रेणु, रज, धूलि।

खाँगिहै—खँागेगा, घटेगा चुकैगा।

खाँचि—खींच कर। खचा कर।

खाँची—खींचा, खचाया।

खाँचो—खींचो, खचाओ।

खाज—पामा, खुजली, खसरा, एक रोग जिसमें शरीर पर दाने वा फफोले बहु संख्या में निकलते हैं और उनमें बड़ी खुजली होती है। विनयपत्रिका में कोढ़ की खाज कहा गया है उसका तात्पर्य दुःख में दुःख बढ़ानेवाली वस्तु वा विपत्ति पर विपति लानेवाले काम से है।

खात—'खाना' शब्द का वर्तमानकाल। खाता है। भोजन करता है।

खातो—भोजन कर जाता, खा जाता।

खान—खानि, खदान, वह स्थान जिसे खोद कर धातु, पत्थर आदि निकाले जाँय। (२) भक्षण, भोजन, खाने की क्रिया। (३) सरदार।

खाना—भक्षण करना, भोजन करना, अहार को मुँह में चबा कर निगलना। (२) हड़पजाना, मार लेना, हज़म करना। (३) फ़ारसी भाषा के अनुसार—घर, स्थान, मकान। (४) कोष्ठक, चक्र का विभाग, ख़ाना।

खानि—आकर, खान, खदान। (२) उत्पत्तिस्थान। आधार-स्थल। पैदा होने की जगह। (३) भण्डार, ख़ज़ाना।

खानी—खानि, खान, खदान।

खायगो—भक्षण करेगा, खा जायगा।

खाये } —'खाना' शब्द का भूतकाल। भोजन किया। खाया।
खायो }

खारो—क्षार, खारा, नमकीन।

खास—(अर्बीभाषा-ख़ास)-विशेष, प्रधान, मुख्य। (२) आत्मीय, प्रिय, निज का। (४) स्वयम्, ख़ुद। (२) विशुद्ध, ठीक।

खिझाना—चिढ़ाना, दिक़ करना। तंग करना।

खिझावतो—चिढ़ाता, खिझाता, दिक़ करता।

खिन—क्षण, छन, लमहा।

खिनखिन—क्षणक्षण, छनछन, हरदम।

खिन्न—क्षीण, दुर्बल, डाँगर। (२) छिन्न, भग्न, कटा वा टूटा फूटा हुआ। (३) असहाय, दीनहीन, अनाथ। (४) अप्रसन्न, नाराज़। (५) उदासीन, चिन्तित।

खीझत—चिढ़ना, नाराज़ होना।

खीझे—अप्रसन्न हुए, चिढ़े।

खीन—खिन्न, दुर्बल, असहाय।

खीस—नष्ट, बरबाद। (२) अप्रसन्नता। (३) क्रोध।

खुआर—दुर्दशाग्रस्त, ख़राब। (२) बेइज़्ज़त।

खुआरी—बरबादी, ख़राबी । (२) बेइज़्ज़ती ।
खुर—खुरी, गाय भैंस आदि सींगवाले चौपायों के पैर का निचला छोर जो खड़े होने पर भूमि पर पड़ता है ।
खूब—(फ़ारसीभाषा-ख़ूब) । उत्तम, अच्छा, भला, उमदा । (२) पूर्णरीति से, अच्छी तरह से ।
खेचर—व्योमचारी, आकाशचारी, आसमान में गमन करनेवाले । जैसे-पक्षी, बादल, विमान, पवन, भूतप्रेत, राक्षस, विद्याधर, देवता, सूर्य्य, चन्द्रमा, तारागण आदि । (२) शिव, रुद्र । (३) पारद, पारा ।
खेद—अप्रसन्नता, दुःख, रञ्ज । (२) ग्लानि, मनस्ताप, चित्त की शिथिलता ।
खेरे, खेरो—खेरा, खेड़ा, पुरहाई, छोटा गाँव । दो चार घरों की छोटी बस्ती ।
खेल—केलि, कौतुक, तमाशा । (२) अत्यन्त तुच्छ या हलका काम, । (३) कामक्रीड़ा, विषय बिहार । (४) कोई अद्भुत कार्य्य । विचित्र लीला । (५) स्वाँग, किसी प्रकार का अभिनय । (६) चित्त का उमङ्ग अथवा मन बहलाने के लिए इधर उधर उछल कूद दौड़ धूप या और कोई साधारण मनोरञ्जक कृत्य । जैसे—गेंद आदि खेलना ।
खेलत—'खेलना' शब्द का वर्तमानकाल । खेलता हुआ ।
खेलन—खेलने की वस्तु । खेलवाड़ की चीज़ ।
खेह, खेहर—धूल, धूलि, रज । (२) राख, ख़ाक ।
खोंची—उगहनी, वह थोड़ा अन्न फल आदि जो बाज़ारों में दूकानदार छोटी छोटी सेवाएँ करनेवाले या भिखमङ्गों को देते हैं । (२) भिक्षा ।
खोजत—'खोजना' शब्द का वर्तमानकाल । खोज करता हुआ ।
खोजि—खोज कर । पता लगा कर ।
खोट—दोष, ऐब, बुराई ।
खोटी—दोषी, ऐबी, खोटेपनवाली । (२) छली, कपट करनेवाली ।
खोय—'खोना' शब्द का भूतकाल । खो दिया, बहा दिया, गँवाया । (२) स्वभाव, बान, आदत ।
खोयो—खो दिया । बहाया, गँवाया ।
खोरि—दोष, बुराई, ऐब । (२) खोर, तङ्ग गली । (३) खौर, खोरी, मस्तक पर लगा चन्दन ।
खोलना—आवरण का हटाना । उघारना । (२) बन्धन छुड़ाना । बँधुए को छुटकारा देना ।
खोलि—उघार कर, अवरोध हटा कर । (२) बन्धन मुक्त कर ।
खोवत—'खोना' शब्द का वर्तमानकाल । खोता है, बहाता है, गँवाता है ।
ख्यात—विख्यात, प्रसिद्ध, ज़ाहिर, मशहूर ।
ख्याल—(अर्बीभाषा-ख़याल)—अनुमान, अटकल, अन्दाज़ । (२) ध्यान, चिन्तन, मनन । (३) सम्मति, विचार, भाव । (४) क्रीड़ा, खेल, हँसीदिल्लगी । (५) आदर, सम्मान, लिहाज़ । (६) लावनी, गाने का एक पद्य जिसके कई भेद हैं ।

(ग)

ग—व्यञ्जनके स्पर्श-त्रिक में कवर्ग का तीसरा वर्ण । इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है और शिक्षा में यह "क" का गम्भीर संस्पृष्ट रूप माना गया है । इसका प्रयत्न अघोष अल्प प्राण है । (२) गमन करनेवाला, जानेवाला, पहुँचनेवाला । (३) गवैया, गानेवाला । (४) गीत । (५) गणेश । (६) गन्धर्व । (७) गुरुमात्रा ।
गइ, गई—'गमन' का भूतकाल । प्रस्थानित हुई । चली गई । (२) जाने देना, दरगुज़र करना, छोड़ देना ।
गईबहोर—खोई हुई वस्तु को पुनः लौटानेवाला । बीगड़ी हुई बात को बनानेवाला ।
गगन—आकाश, व्योम, नभ । (२) शून्यस्थान ।
गङ्ग—गङ्गा, देवापगा, जाह्नवी ।
गङ्गजनक—गङ्गा को उत्पन्न करनेवाले विष्णु भगवान ।
गङ्गा—अध्वगा, अलकनन्दा, जह्नुकन्या, जाह्नवी, भागीरथी, मन्दाकिनी, विष्णुपदी, सुरनदी,

सुरनिम्नगा, सुरापगा, स्वरापगा, त्रिपथगा, त्रिस्रोता। भारत वर्ष की एक प्रधान नदी जो हिमालय से निकल कर १५६० मील पूर्व की ओर बह कर बङ्गाल की खाड़ी में गिरती है। इसका जल अत्यन्त स्वच्छ और पवित्र होता है तथा इसमें कभी कीड़े नहीं पड़ते। हिन्दू इस नदी को पवित्र मानते हैं और उसमें स्नान करना पुण्य समझते हैं। जब राजा सगर के साठ हज़ार पुत्रों को कपिलजी ने भस्म कर डाला तब उनके उद्धार के लिए भगीरथ गंगाजी को स्वर्ग से पृथिवी पर लाये। गिरते समय शिवजी ने उन्हें अपनी जटा में धारण किया था इसी से वे गङ्गाधर कहे जाते हैं। जब भगीरथ के साथ गंगाजी गंगासागर को जा रही थीं इसी बीच में जह्नु ऋषि ने उन्हें पी लिया फिर भगीरथ की प्रार्थना पर अपने जानु से बाहर कर दिया। इसी से गंगाजी का नाम जह्नुतनया, जाह्नवी आदि पड़ा। हिन्दुओं के प्रधानतीर्थ हरिद्वार, प्रयाग और काशी आदि इसी के किनारे हैं।

गंगाधर—शिव, महादेव, पार्वतीकान्त।

गच—चूना सुरखी आदि से पिटी हुई ज़मीन। पक्की फ़र्श, लेट। (२) पटाव, छुज्जा, लेट की हुई छत। (३) चूना सुरखी आदि के मेल से बना मसाला जिससे ज़मीन पक्की की जाती है।

गच्छन्ति—गमन करते हैं। चलते हैं। जाते हैं।

गज—हाथी, गयन्द, करि। (२) एक बन्दर का नाम जो रामचन्द्रजी की सेना में था। (३) एक राक्षस का नाम जो महिषासुर का पुत्र था। (४) आठ की संख्या। (५) फ़ारसी भाषा के अनुसार—गज़, लम्बर, लम्बाई नापने का एक माप जो सोलह गिरह या तीन फुट का होता है।

गजचर्म—हाथी का चाम, गयन्द की खाल।

गजमनि—गजमुक्ता, हाथी के मस्तक से उत्पन्न मणि।

गजरथ—वह बड़ा रथ जिसको हाथी खींचते हैं।

गजराज—बड़ा हाथी, हाथियों का मालिक ऐरावत।

गजवदन, गजानन—गणेश, पार्वतीनन्दन, जिसका मुख हाथी का हो।

गजेन्द्र—गजराज, बड़ा हाथी, हाथियों का मालिक। (२) ऐरावत, इन्द्र का हाथी।

गञ्जन—अवज्ञा, तिरस्कार, अनादर। (२) गञ्जना, नाश करना, चूर चूर करना।

गड़े—'गड़ना' शब्द का भूतकाल। मट्टी के नीचे ढँके। ज़मीन के अन्दर गाड़ दिये गये।

गत—गया हुआ, बीता हुआ, गुज़रा हुआ। (२) प्राप्त, आया हुआ। पहुँचा हुआ। समस्त पद में यह शब्द आदि में आने पर 'गया' हुआ 'रहित' 'शून्य' का अर्थ देता है और अन्त में 'प्राप्त' 'आया हुआ' 'पहुँचा हुआ' का अर्थ प्रगट करता है। (३) रहित, हीन, ख़ाली। (४) गति, दशा, अवस्था, हालत। (५) आकृति, वेष, रूप। (६) सुगति, उपयोग, काम में लाना। (७) दुर्गति, दुर्दशा, फ़ज़ीहत।

गति—मोक्ष, मुक्ति, मृत्यु के उपरान्त जीवात्मा की उत्तम दशा। (२) गमन, चाल, निरन्तर स्थान-त्याग की परम्परा। (३) अवस्था, दशा, हालत। (४) प्रवेश, पहुँच, पैठ, दख़ल। (५) प्रयत्न की सीमा, अन्तिम उपाय, आख़िरी दौड़, तदबीर। (६) शरण, अवलम्ब, सहारा। (७) चेष्टा, प्रयत्न, करनी, क्रियाकलाप। (८) रीति, ढङ्ग, दस्तूर। (९) हिलने डोलने की क्रिया। हरकत। (१०) आकृति, वेष, रूप। (११) जीवात्मा का एक शरीर से दूसरे शरीर में जाना। मृत्यु के उपरान्त जीवात्मा की दशा। (१२) ताल और स्वर के अनुसार अङ्ग-चालन। सितार आदि बजाने में कुछ बोलों का क्रमबद्ध मिलान। (१३) लीला, विधान, माया।

गतिदाई—मुक्तिदाता, मोक्ष देनेवाला।

गदगद—गद्गद, अत्यधिक हर्ष के कारण मुख से स्पष्ट शब्द का न निकलना।

गदा—एक प्राचीन अस्त्र का नाम जो लोहे का होता है। इसमें लोहे का एक डण्डा रहता है जिसके सिरे पर लट्टू लगता है और डण्डा पकड़ कर

लट्टू की ओर से शत्रु पर प्रहार किया जाता है।

गद्गद—गदगद, अत्यधिक हर्ष, प्रेम, श्रद्धा आदि के आवेग से इतना पूर्ण हो कि अपने आप को भूल जाय और स्पष्ट शब्द उच्चारण न कर सके। अत्यन्त हर्ष-प्रेम आदि के कारण रुकी हुई वाणी। (२) पुलकित, आनन्दित, प्रसन्न।

गन—गण, समूह, वृन्द, झुण्ड। (२) श्रेणी, जाति, कोटि। (३) पार्षद, सेवक, दूत। (४) पक्षपाती, अनुयायी। (५) छन्दःशास्त्र में तीन वर्णों का समूह। लघु गुरु के क्रम से गण ८ माने गये हैं। यथा-मगण, नगण, भगण, यगण, जगण, रगण, सगण और तगण। (६) देवता, मनुष्य और राक्षस। (७) प्रमथ, शिवगण।

गनत—'गनना' शब्द का वर्तमान काल। गिनता है।

गनति—गिनती है, शुमार करती है।

गनती—गणना, गिनती, शुमार।

गनपति, गनराउ—गणेश, गजानन।

गनि—गणना करके, गिन कर।

गनिका—गणिका, वराङ्गना, वेश्या।

गनिहिँ—लक्ष्मीवानों को। धनियों को। अमीरों को। 'ग़नी' शब्द का बहुवचन।

गनी—(अर्बीभाषा-ग़नी) लक्ष्मीवान, धनी, अमीर।

गने—गणना किये, शुमार किये, गिने।

गनेस—गणेश, गणपति, गणनाथ, गणप, गणराउ, गणाध्यक्ष, गणनायक, गणाधिप, गजमुख, गजवदन, गजास्य, गजानन, आखुग, एकदन्त, द्वैमातुर, विघ्नराज, विघ्नेश, विनायक, परशपाणि, लम्बोदर, शूर्पकर्ण, हेरम्ब। एक देवता जिनका सारा शरीर मनुष्य का और सिर हाथी का सा है। इनके चार हाथ और एक दाँत है। तोंद निकली हुई है, सिर में तीन आँखें और ललाट पर अर्द्ध चन्द्र है। इनकी सवारी चूहा है और पार्वतीजी से उत्पन्न ये शिवजी के पुत्र माने जाते हैं। विघ्न इनके आज्ञाकारी हैं इससे विघ्नेश कहे जाते हैं और गणों के स्वामी होने से गणराज कहलाते हैं। एक बार ब्रह्माजी ने सब देवताओं से पूछा कि तुम लोगों में प्रथम पूजने योग्य कौन है? इस पर सब देवता हम हम करके बोल उठे। यह सुन कर ब्रह्माजी ने कहा कि जो सब के पहले पृथ्वी की परिक्रमा कर के हमारे पास आवेगा उसी को हम पहला स्थान देंगे। इस पर सब देवता अपने अपने वाहनों पर चढ़ कर दौड़े। पर गणेशजी का वाहन चूहा शीघ्र न चल सका वे पिछड़ गये। चिन्तित होकर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए? उसी समय नारदजी वहाँ आ गये। उन्हों ने सम्मति दी कि पृथ्वी पर 'राम' नाम लिख कर और उसकी परिक्रमा करके तुम ब्रह्माजी के पास चले जाओ। उन्हों ने विश्वास मान कर वैसा ही किया और विधाता के पास जा कर सारा वृत्तान्त कह सुनाया। राम नाम के प्रभाव को विचार कर ब्रह्माजी ने गणेशजी को प्रथम पूज्यपद प्रदान किया। तब से वे सभी यज्ञादि मङ्गल कार्य्यों में प्रथम पूज्य हुए हैं।

गनै—गणना करै, शुमार करै, गिनै।

गन्ता—गमन करनेवाला, जानेवाला।

गन्ध—बास, महक, बू। न्याय वा वैशेषिक में गन्ध को पृथिवी का गुण और नासिका का विषय माना है। इसके साधारण भेद दो हैं, सुगन्ध और दुर्गन्ध। (२) सुगन्ध, सुबास, खुशबू। (३) दुर्गन्ध, कुबास, बदबू। (४) लेश, अणुमात्र, ज़रा। (५) संस्कार, सम्बन्ध, छुआछूत।

गन्धर्व—देवताओं का एक भेद जो स्वर्ग में गाने का काम करते हैं। गन्धर्वों में हाहा, हूहू, चित्ररथ, हंस, विश्वावसु, गोमायु, तुम्बुरु और नन्दि प्रधान माने गये हैं। ये सब विद्याधर कहे जाते हैं। (२) घोड़ा। (३) मृग। (४) प्रेत।

गन्धर्वजेता—गन्धर्व को जीत लेनेवाला।

गपत—(फ़ारसीभाषा-गप) 'गप' शब्द का वर्त्तमान काल। गप मारता है। बकवाद करता

है। बेमतलब की बातें बकता है। (२) गप्पी, गप मारनेवाला।

गँभीर—गम्भीर, अथाह, गहरा।

गम—प्रवेश, पहुँच, पैठ। (२) गमन, सहबास, मैथुन। (३) मार्ग, पन्थ, रास्ता। (४) अर्बीभाषा के अनुसार—ग़म, शोक, दुःख, रञ्ज। (५) चिन्ता, ध्यान, फ़िक्र।

गमन—चलना, जाना, यात्रा करना। (२) सम्भोग, सहबास, मैथुन। (३) मार्ग, राह, रास्ता।

गम्भीर—नीचा, गहरा, गँभीर, जिसकी थाह जल्दी न मिले। (२) गहन, घना, गझिन, जिसमें जल्दी घुस न सकें। (३) गूढ़, जटिल, जिसके अर्थ तक पहुँचना कठिन हो। (४) घोर, भीषण, भारी गर्जन। (५) शान्त, सौम्य, सहनशील। (६) शिव, महादेव। (७) एक राग जो श्रीराग का पुत्र माना जाता है।

गम्य—गमनयोग्य, जानेलायक। (२) प्राप्य, लभ्य, प्राप्त। (३) भोग्य, सम्भोग करने योग्य, गमन करने लायक़। (४) साध्य, सहल।

गयन्द—हाथी, कुञ्जर, गज।

गये, गयो—'जाना' क्रिया का भूतकालिक रूप। प्रस्थानित हुए, चले गये।

गर—ग्रीवा, गला, गरदन। (२) विष, माहुर, ज़हर। (३) व्याधि, रोग, बीमारी। (४) फ़ारसी भाषा के अनुसार—बनाने या करनेवाला। जैसे, बाज़ीगर, सौदागर आदि।

गरजि—गर्जन करके, चिग्घाड़ कर।

गरत—'गलना' क्रिया का वर्तमान कलिक रूप। गलता है, पिघलता है। (२) कृश होता है। दुर्बल होता है। कमज़ोर होता है। (३) नष्ट होता है। बेकाम होता है। (४) बहुत अधिक सरदी से हाथ पाँव का ठिठुरना।

गरन—गलनेवाला, पिघलनेवाला।

गरब—गर्व, घमण्ड, ग़रूर।

गरभ—गर्भ, पेट, हमल।

गरम—(फ़ारसीभाषा)। उष्ण, तप्त, जलता हुआ। (२) प्रचंड, प्रबल, तेज़। (३) उग्र, तीक्ष्ण, खरा। (४) आवेशपूर्ण, उत्साहपूर्ण, जोश से भरा। (५) जिसका गुण उष्ण हो। गरमवस्तु, जिसके सेवन से गरमी बढ़े।

गरल—विष, माहुर, ज़हर।

गरलकण्ठ—शिव, रुद्र, नीलकण्ठ। विष को कण्ठ में रखने से यह नाम क्रियावाचक है।

गरि—द्रवीभूत होकर, गल कर, पिघल कर। (२) गल जाना, शरीर से दुबला होना, नष्ट होना।

गरिमा—गुरुत्व, भारीपन, बोझ। (२) महत्व, गौरव, महिमा। (३) गर्व, अहङ्कार, घमण्ड। (४) आत्मश्लाघा, अपनी प्रशंसा की शेखी। (५) आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिससे साधक अपना बोझ चाहे जितना भारी कर सकता है।

गरीब—(अर्बीभाषा—ग़रीब)—दरिद्र, निर्धन, कङ्गाल। (२) नम्र, दीन, विनीत, दुःख या भय से अधीनता प्रगट करनेवाला।

गरीबनेवाज—(फ़ारसीभाषा)। दीनों पर दया करनेवाला। दुखियों का दुःख दूर करनेवाला। ग़रीबों पर मिहरबानी करनेवाला।

गरीबी—ग़रीबी, दरिद्रता, मुहताजी। (२) नम्रता, अधीनता, दीनता।

गरुअ—गरुआ, गरू, भारी, वज़नी। (२) श्रेष्ठ, उत्तम, भला। (३) गम्भीर, सौम्य, शान्त, सहनशील।

गरुआई—गुरुत्व, भारीपन, वज़नी, बोझइल।

गरुड़—अमृताहरण, उरगाद, गुरुत्मान, तरश्वी, तार्क्ष्य, नागान्तक, पन्नगारि, पन्नगाशन, पक्षिराज, विष्णुरथ, वैनतेय, शाल्मलिस्थ और खगेश आदि। ये विनता के गर्भ से उत्पन्न कश्यप के पुत्र हैं और सूर्य्य का सारथी अरुण इनका सहोदर भाई है। ये पक्षियों के राजा, विष्णु के बाहन और सर्पों के शत्रु माने जाते हैं। (२) उकाबपक्षी।

गरू—गरुआ, भारी, वज़नी। (२) श्रेष्ठ, उत्तम।

गरे—गले, द्रव हुए, पिघले।

गरै—गलै, पिघलै, द्रवीभूत होवे।

गरो—गल गया, पिघल गया। (२) ग्रीवा, गर।

गर्यो—गल गया, पिघल गया।

गर्जि—गर्ज कर, गम्भीर नाद करके।

गर्त्त—गड्ढा, गड़हा। (२) दरार, दर्रा। (३) एक नरक।
गर्भ—भ्रूण, गरभ, हमल, पेट के भीतर का बच्चा। (२) गर्भाशय, स्त्री के पेट के भीतर का वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है। (३) फलित ज्योतिष में नये मेघों की उत्पत्ति जिससे वृष्टि का आगम होता है।
गर्भाङ्ग—गर्भाङ्क, गर्भ का अङ्ग। (२) नाटक के अङ्क का एक अंश जिसमें केवल एक दृश्य होता है। इसकी समाप्ति पर पहिली जवनिका उठाई अथवा दूसरी गिराई जाती है और तब दूसरा दृश्य आरम्भ होता है।
गर्व—अहङ्कार, अभिमान, घमण्ड। अपने को सब से बड़ा और दूसरों को तुच्छ समझने का भाव। (२) काव्य के तेंतीस सञ्चारी भावों में से एक।
गर्वगहीले—अहङ्कारी, घमण्डी, गर्व के गहने-वाले। गर्वीले।
गर्वघ्न—गर्व का नाश करनेवाला। गर्वप्रहारी।
गर्वापहरी—(गर्व+अपहारी) गर्व का हरनेवाला। घमण्ड छुड़ानेवाला।
गल—ग्रीवा, गला, गरदन।
गलकम्बल—झालर, ललरी, गाय के गले के नीचे का वह भाग जो लटकता रहता है।
गलानि—ग्लानि, मनस्ताप, खेद।
गलित—गला हुआ, पिघला हुआ। (२) गलनेवाला, पिघलनेवाला। (३) च्युत, चुआ हुआ। (४) जीर्ण शीर्ण, पुराना, सड़ा हुआ। (५) नष्टभ्रष्ट, खण्डित। (६) परिपक्व, परिपुष्ट, भरपूर।
गवन—गमन, जाना, चलना, गवना, गौना, बधू का पहिले पहल पति के घर जाना।
गँवाई—गँवाया, खो दिया, बहा दिया।
गँवाना—खोना, डहकाना, बहा देना, फेंकना।
गँवायो—खोयो, बितायो, बहायो, डहकायो।
गव्य—गो से उत्पन्न, जो गाय से प्राप्त हो जैसे—दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र आदि।
गहँड़ोरिहौं—गोहँड़िल करूँगा। मटमैला करूँगा। गन्दा करूँगा। गँदला करूँगा।
गहत—'ग्रहण' क्रिया का वर्तमानकालिक रूप। पकड़ता है। हस्तगत करता है।
गहति—पकड़ति, धरति, लेति।
गहते—पकड़ते, हस्तगत करते, धरते।
गहन—ग्रहण, पकड़ना, लेने या हस्तगत करने की क्रिया। (२) दुर्भेद्य, घना, दुर्गमस्थान। (३) कठिन, दुरूह, मुश्किल। (४) गम्भीर, अथाह, गहरा। (५) दुःख, कष्ट, विपत्ति। (६) कलङ्क, दोष, ऐब। (७) गहराई, गहरापन, थाह। (८) ग्रहण, उपराग, सूर्य्य वा चन्द्रमा को राहु का ग्रसना। (९) कुञ्ज, निकुञ्ज, वन में गुप्त स्थान। (१०) पानी, जल, नीर। (११) बन्धक, रेहन। (१२) हठ, टेक, ज़िद। (१३) पकड़, पकड़ने का भाव।
गहनि—हठ, टेक, ज़िद। (२) पकड़नि, धरनि।
गहब—पकड़ब, धरब। (२) पकड़ूँगा।
गहबर—व्याकुल, उद्विग्न, घबराया हुआ। (२) दुर्गम, विषम, कठोर। (३) मग्न, लवलीन, किसी ध्यान में बेसुध।
गहर } —विलम्ब, देर, अरसा।
गहरु }
गहा—पकड़ा, धरा। (२) ग्रसा, जकड़ा हुआ।
गहाये—पकड़ाये, धराये।
गहि—पकड़कर, थाम कर। (२) ग्रस कर।
गहीले—गहनेवाले, पकड़नेवाले। (२) गर्वयुक्त, घमण्डो। (३) उन्मत्त, पागल, बौरहा।
गह्वर—दुर्गम, विषम, कठोर। (२) गुप्त, छिपा हुआ, पोशीदा। (३) दुर्भेद्य स्थान। अँधेरी और छिपी जगह। वह स्थान जिसमें छिपने से छिप-नेवाले का पता न चले। (४) दम्भ, पाखण्ड, कपट। (५) वन, कानन, जङ्गल। (६) लतागृह, निकुञ्ज, झाड़ी। (७) कन्दरा, गुफ़ा, गुहा। (८) गम्भीर वा गूढ़ विषय। वह वाक्य जिसके अनेक अर्थ हो सकते हों। (९) पानी, जल, नीर। (१०) बाँबी, बिल, ज़मीन में छोटा सूराख़।
गा—'जाना' क्रिया का भूतकालिक रूप। गया, प्रयाण किया। प्रस्थानित हुआ।

गाइ—'गाना' क्रिया का भूतकालिक रूप। गान करके, बखान कर।

गाइय } —वर्णन करिये, गान कीजिए, बखानिए।
गाइये } (२) वर्णन करता हूँ। गान करता हूँ।

गाई—गान की हुई। बखानी हुई।

गाउ—गाओ, गान करो।

गाउँ—गाँव, मौज़ा। (२) नगर, शहर।

गावौं—गान करता हूँ। बखानता हूँ।

गाँठ, गाँठि, गाँठी } ग्रन्थि, गिरह, रस्सी डोरी तागे आदि में पड़ी हुई उलझन। रस्सी आदि के छोर को मिलाने के लिये घुमा कर कसने का स्थान। (२) गठरी, गट्टर, पुटकी। (३) कपड़े के खूँट में कोई वस्तु लपेट कर लगाई हुई गाँठ। (४) अंग का जोड़।

गाड़ी—शकट, सग्गड़, छकड़ा, घूमनेवाले पहियों के ऊपर ठहरा हुआ लकड़ी लोहे आदि का ढाँचा जिसे बैल खींचते हैं जिसमें आदमियों के बैठने वा माल असबाब रखने के लिए स्थान बना रहता है और एक स्थान से दूसरी जगह पर इसी पर लाद कर पहुँचाते हैं। (२) बग्घी, जोड़ी, टमटम। (३) यान, विमान। (४) पैरगाड़ी, रेलगाड़ी आदि।

गाढ़—दृढ़, कठिन, मज़बूत। (२) अतिशय, अधिक, बहुत। (३) गम्भीर, अथाह, गहरा। (४) दुर्गम, दुरूह, विकट। (५) गाढ़ा, घना, जो पानी की तरह पतला न हो। (६) आपत्ति, सङ्कट, कठिनाई। (७) जुलाहों का करघा।

गाढ़े—गाढ़, दृढ़, मज़बूत। (२) दृढ़ता से, ज़ोर से, मज़बूती से। (३) अच्छीतरह, भलीभाँति, खूब। (४) आपत्ति, सङ्कट, कठिनाई।

गात—शरीर, तन, देह।

गाता—गायक, गानेवाला, गवैया।

गाताग्रणी—गानेवालों में अगुवा। सर्वश्रेष्ठ।

गाथ—स्तोत्र, प्रशंसा, स्तुति। (२) गान, गीत।

गाथा—स्तुति, प्रशंसा, बड़ाई। (२) वृत्तान्त, कथा, हाल (३) श्लोक, छन्द, पद्य।

गाधेय—विश्वामित्र, कौशिक, गाधि के पुत्र।

गान—सङ्गीत, गाना, गाने की क्रिया।

गाना—सङ्गीत, गान, ताल स्वर के नियमानुसार शब्द उच्चारण करना। आलाप के साथ ध्वनि निकालना। (२) गीत, गाने की चीज़। वह वाक्य, पद वा छन्द जो गाया जाता हो। (३) कथन करना। वर्णन करना। विस्तार के साथ कहना। (४) स्तुति करना। प्रशंसा करना। बड़ाई करना।

गामिनी—गमन करनेवाली, जानेवाली, चलनेवाली।

गामी—गमन करनेवाला, जानेवाला, चलनेवाला।

गायक—गानकर्त्ता। गवैया, गानेवाला।

गायन्ति—गाते हैं, गान करते हैं।

गाये—गान किये, वर्णन किये, बखाने।

गायो—गान किया। बखान किया। गाया।

गारि—गारी, गाली, दुर्वचन।

गारी—दुर्वचन, गाली, कलङ्क-जनक आरोप। (२) एक गीत जो बारात वा समधी के भोजन करते समय स्त्रियाँ गाती हैं।

गारो—गारी, गाली, दुर्वचन। (२) गर्व, अहङ्कार, घमण्ड। (३) प्रतिष्ठा, मान, इज़्ज़त। (४) अर्बीभाषा के अनुसार—ग़ार, गड्ढा, गड़हा। (५) कन्दरा, गुफ़ा, गुहा।

गाल—गण्ड, कपोल, मुँह के दोनों ओर ठुढी तथा कनपटी के बीच का और आँखों के नीचे का कोमल भाग। (२) बड़बड़ाने का स्वभाव। मुँहजोरी। बकवाद करने की लत। (३) मध्य, बीच। (४) ग्रास, कौर, वह अन्न जो एक बार मुँह में समा सके। (५) मुख, आनन, मुँह।

गालगूल—व्यर्थ बात, अण्डबण्ड बकवाद। अनापशनाप। फ़जूल बात।

गाँव—ग्राम, गाउँ मौज़ा, देहात की वह छोटी बस्ती जहाँ बहुत से किसानों के घर हों। (२) नगर, शहर, भारी बस्ती। जैसे—गाउँ बसत बामदेव मैं कबहुँ न निहोरे। यहाँ काशीपुरी को गाँव कहा गया है।

गावई—'गाना' क्रिया का वर्तमान कालिक रूप। गान करता है। गाता है।

गावत—गान करता है, गाता है ।

गाहक—ग्राहक, मोल लेनेवाला, ख़रीदार । (२) इच्छुक, प्रेमी, अभिलाषी, चाहनेवाला, क़दर करनेवाला, ढँढ़नेवाला । (३) अवगाह करनेवाला ।

गिद्ध—गृध्र, गीध, एक प्रकार का बड़ा पक्षी जो मांसाहारी होता है । (२) जटायु, रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध जो सूर्य्य के सारथी अरुण का पुत्र और सम्पाति का भाई तथा महाराज दशरथ का मित्र था । सीताजी के उद्धार के लिए रावण से युद्ध करके उसी के हाथ से मारा गया था । श्रीरामचन्द्रजी ने पिता के समान इसकी क्रिया की थी ।

गिनत—'गिनना' शब्द का वर्तमान काल । गिनता है । शुमार करता है । (२) समझता है । (३) प्रतिष्ठा करता है ।

गिनती—गणना, गिनना, शुमार, संख्या निश्चित करने की क्रिया । (२) संख्या, तादाद (३) एक से सौ तक की अङ्कमाला ।

गिनना—गणना करना, शुमार करना, संख्या निश्चत करना । (२) प्रतिष्ठा करना, मान करना, इज़्ज़त करना । (३) समझना, मानना, जानना ।

गिरा—जिह्वा, जीभ, ज़बान । (२) वाणी, वचन, बोल । (३) भारती, ब्रह्माणी, सरस्वती । (४) बोलने की शक्ति । कहने की ताक़त । (५) कविता, शायरी ।

गिरि—पर्वत, शैल, पहाड़ । (२) दशनामी सम्प्रदाय के अन्तर्गत एक प्रकार के सन्यासी जो अपने नामों के पीछे उपाधि की भाँति यह शब्द लगाते हैं ।

गिरिजा—पार्वती, गौरी, उमा ।

गिरिजापति—शिव, पार्वती के स्वामी ।

गिरिसुता—पार्वती, हिमालय की कन्या ।

गीत—गाना, गाने की चीज़ । वह वाक्य, पद वा छन्द जो गाया जाता हो । (२) यश, कीर्त्ति, बड़ाई । (३) सङ्गीत-शास्त्र के अनुसार जो वाक्य धातु और मात्रा युक्त हो वही गीत कहलाता है ।

गीध—गिद्ध, जटायु ।

गुञ्जा—घुँघची, चिरमिटी, चोटली, एक प्रकार की मोटी लता जो प्रायः जङ्गलों में झाड़ियों पर फैली रहती है । इसकी पत्तियों में मिठाई होती है वे इमली की पत्तियों के समान होती हैं और फूल सेम के फूलों के तुल्य होते हैं । मटर की तरह फलियाँ गुच्छों में लगती हैं वे जाड़े में सूख कर फट जाती हैं और उनके भीतर लाल बीज निकलते हैं जो अरहर से कुछ बड़े होते हैं । प्रत्येक दानों के मुख पर स्याही के छींटे रहते हैं । ये बीज देखने में चमकीले और सुहावने लगते हैं । सफ़ेद घुँघची भी होती है और उसके मुख पर भी काला दाग़ रहता है । रङ्ग के भेद से घुँघची दो प्रकार की होती है ।

गुञ्जनि—'गुञ्जा' शब्द का बहुवचन । बहुत सी घुँघचियाँ । घुँघचियों का समूह ।

गुदरि—'गुदरना' शब्द का भूतकालिक रूप भाषण किया, निवेदन किया, कहा ।

गुन—गुण, स्वभाव, धर्म, सिफ़त, वह भाव जो किसी वस्तु के साथ लगा हुआ हो । किसी वस्तु में पाई जानेवाली वह बात जिसके द्वारा वह वस्तु दूसरी वस्तु से पहचानी जाय । (२) सत्व, रज, तम । (३) प्रवीणता, निपुणता, दक्षता । (४) प्रभाव, फल, तासीर, असर । (५) सद्वृत्ति, अच्छा स्वभाव, शील, तारीफ़ की बात । (६) रस्सी, सूत, डोरा, तागा । (७) वह रस्सी जिससे मल्लाह नाव खींचते हैं । (८) धनुष की प्रत्यञ्चा । (९) प्रकृति, आदत, खासियत । (१०) प्रवृत्ति, पैठ, पहुँच । (११) विद्या, कला, हुनर ।

गुनग्राम—गुणधाम, गुणनिधान, धर्म के मन्दिर । विद्या की राशि ।

गुननिधि—गुण का समुद्र, गुण का सागर, भारी गुणी । (२) एक ब्राह्मण का नाम जिसने शिवरात्रि के दिन दर्शन के बहाने शिवमन्दिर में जाकर श्रृङ्गारित मूर्त्ति के आभूषण चुरा कर भाग निकला । पुजारियों ने उसका पीछा

किया और पकड़ कर इतनी मार मारी कि वह मर गया। दयालु शङ्कर भगवान ने दया करके उसे यमजातना से मुक्त कर कैलास बास दिया।

गुनवृत्ति—गुणों के व्यापार, गुणों की सेवा।

गुनहीन—गुणरहित, बिना गुण का, हुनर से ख़ाली। (२) निर्गुणी, मूर्ख, बेवक़ूफ़।

गुनि—चिन्तन कर, विचार कर, समझ कर।

गुनिय—चिन्तन करिये, विचारिये, समझिये। (२) चिन्तन करता हूँ। विचारता हूँ।

गुनी—गुणवाला, जिसमें कोई गुण हो। जो किसी विद्या वा कला में निपुण हो।

गुप्त—गूढ़, छिपा हुआ, पोशीदा। (२) रक्षित, रक्षा किया हुआ। (३) एक पदवी जिसका व्यवहार वैश्य लोग अपने नाम के साथ करते हैं। (४) एक प्राचीन राजवंश।

गुर—गुरु, आचार्य्य, मन्त्रोपदेशक। (२) मूलमन्त्र, सार, वह साधन जिसके करतेही कार्य्य सिद्ध हो। (३) गुड़, इक्षुरसपाक। ऊख का पकाया हुआ रस जो पिण्ड वा भेली के रूप में तैयार किया जाता है।

गुरु—आचार्य्य, किसी मन्त्र का उपदेष्टा। यज्ञोपवीत संस्कार करानेवाला और गायत्री मन्त्र का उपदेश देनेवाला। (२) भारी, गरुआ, वज़नी। (३) बृहत्, बड़ा, लम्बे चौड़े आकारवाला। (४) बृहस्पति, सुरगुरु, देवताओं के आचार्य्य। (५) शिक्षक, सिखाने वा पढ़ानेवाला, उस्ताद। (६) दीर्घवर्ण, दो मात्राओं का अक्षर। (७) वह व्यक्ति जो विद्या, बुद्धि, बल, वय वा पद में अपने से बड़ा हो। श्रेष्ठजन। (८) ब्रह्मा, अज। (९) विष्णु, केशव। (१०) शिव, महादेव।

गुर्वि }
गुर्वी } —गर्भिणी, गर्भवती, हामिला, वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो। (२) श्रेष्ठ स्त्री, वह जो स्त्रियों की शिरोमणि हो। आदिशक्ति, (३) श्रेष्ठतर, अत्युत्तम।

गुल—(फ़रसीभाषा) शतपत्री, सदागुलाब, गुलाब का फूल। (२) पुष्प, सुमन, फूल। गुल, हल्ला शोर।

गुलाम—(अर्बीभाषा) सेवक, चाकर, टहलू, नौकर। (२) मोल लिया हुआ दास। ख़रीदा हुआ टहलू।

गुसाँई—गोसाँई, प्रभु, मालिक। (२) ईश्वर।

गुह—कार्तिकेय, सेनानी, षडानन। (२) गुह नाम का केवट वा मल्लाह जो गङ्गाजी के तट पर शृङ्गवेरपुर का निवासी और श्रीरामचन्द्रजी का मित्र था।

गुहा—कन्दरा, गुफा, बिल। (२) गुह नामवाला केवट। (३) पिठवन।

गूढ़—गुप्त, छिपा हुआ, पोशीदा। (२) गम्भीर, अभिप्राय-गर्भित, जिसमें बहुत सा अभिप्राय छिपा हो। (३) अबोधगम्य, जटिल, जिसका आशय जल्दी समझ में न आवे। (४) एक अलङ्कार जिसे सूक्ष्म भी कहते हैं।

गूढ़गति—गुप्तचाल, छिपी हालत।

गूढ़ार्चि—(गूढ़+अर्चि) छिपा तेज। (२) गुप्त सेवा, छिपी पूजा, पोशीदा ख़ातिरी। (३) कठिन सेवा, बहुत बड़ी उपासना।

गृध्र—गिद्ध, गीध, जटायु।

गृह—घर, मन्दिर, मकान। (२) वंश, कुटुम्ब।

गृहगेहिनी—गृहिणी, गृहभार्य्या, घर की मालकिन।

गृहप—गृहपति, गृहस्थ, अपने घर का मालिक।

गृहपाल—गृहपालक, घर की रक्षा करनेवाला।

गृहस्थ—ज्येष्ठाश्रमी, गृहपति, गृहप, ब्रह्मचर्य्य के उपरान्त विवाह करके दूसरे आश्रम में रहने वाला व्यक्ति। (२) घरवाला। बाल बच्चोंवाला मनुष्य। घर में रहनेवाला आदमी। वह मनुष्य जिसके यहाँ खेती आदि होती हो।

गे—गये, गमन किये।

गेते—गये थे, गये रहे। (२) वे गये।

गेह—घर, गृह, मकान।

गेहनी }
गेहिनी } —गृहणी, भार्य्या, पत्नी, जोड़ू।

गै—गइ, गई, जाती रही।

गो—गौ, सुरभी, गऊ, गाय। (२) इन्द्रिय, हृषीक, इन्द्री। (३) पृथ्वी, धरती, ज़मीन। (४) जिह्वा, जीभ, ज़बान। (५) वाणी, गिरा, बोलने की

शक्ति। (६) सरस्वती, ब्रह्माणी। (७) जननी, माता। (८) नेत्र, आँख। (९) दृष्टि, देखने की शक्ति। (१०) वृषभ, बैल। (११) सूर्य्य, भानु। (१२) चन्द्रमा, शशि। (१३) बाण, तीर। (१४) आकाश, गगन। (१५) स्वर्ग, देवलोक। (१६) पानी, जल। (१७) नौ का अङ्क। (१८) गया, बाता, गुज़रा। (१९) यद्यपि, गोकि। (२०) कहनेवाला।

गोकुल—गो-समूह, गौओं का झुण्ड, गोवंश, (२) गोशाला, खरिका, गौओं के रहने की जगह। (३) एक प्राचीन गाँव जो वर्तमान मथुरा शहर से पूर्व-दक्षिण की ओर प्रायः तीन कोस दूर जमुना के दूसरे पार था। और जिसे आज कल महावन कहते हैं। श्रीकृष्णचन्द्रजी ने अपनी बाल्यावस्था यहीं बिताई थी। आजकल जिस स्थान को गोकुल कहते हैं वह नवीन और इससे भिन्न है।

गोचर—वह विषय जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो सके। वह बात जो इन्द्रियों की सहायता से जानी जा सके। (२) गौओं के चरने का स्थान। चरागाह। (३) प्राप्त, लब्ध, हस्तगत।

गोतीत—अगोचर, इन्द्रियातीत, जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके।

गोता—(अर्बी-ग़ोता) डुब्बी, पानी में डूबने की क्रिया। जल में डुबकी लगाना।

गोप—ग्वाला, अहीर, गौ की रक्षा करनेवाला।

गोपाल—गोपालक, गौ का पालन पोषण करनेवाला। (२) ग्वाला, अहीर। (३) श्रीकृष्णचन्द्र, वनमाली। (४) इन्द्रियपोषक। इन्द्रियों को पालनेवाला।

गोपि—छिपा कर, दुरा कर, ओट करके। (२) गोपी, गोपिका, ग्वालिन।

गोपिका—गोपी, ग्वालिन, अहीरिन। (२) छिपाने वाली। दुरानेवाली।

गोपित—गुप्त किया, दुराया, छिपाया। (२) गुप्त, अप्रगट, छिपाहुआ।

गोपी—ग्वालिन, गोपिका, अहीरिन।

गोमर—गोहिंसक, कसाई, बूचर।

गोमाय
गोमायु } —शृगाल, सियार, गीदड़।

गोमुख—गोवदन, गौ का मुख। (२) नम्र मुख। दीन मुँहवाला। वह मनुष्य जो अत्यन्त भय से विनीत मुख हो।

गोयो—गोया, दुराया, छिपाया।

गोविन्द—विष्णु, दैत्यारि, बासुदेव। (२) श्रीकृष्णचन्द्रजी, वनमाली, वंशीधर। (३) परब्रह्म, परमेश्वर, ईश्वर। (४) तत्वज्ञ, वेदान्त वेत्ता। वेद का जाननेवाला।

गोसाँई—स्वामी, प्रभु, मालिक। (२) विरक्त साधु। अतीत, गुसाँई। (३) ईश्वर, परमात्मा, स्वर्ग का मालिक। (४) श्रेष्ठ, बड़ा, उत्तम। (५) सन्यासियों का एक सम्प्रदाय जिसमें दस भेद होते हैं। (६) गौओं का स्वामी।

गौ—गो, गऊ, गैया।

गौतम—एक ऋषि का नाम जिन्हों ने अपनी स्त्री अहल्या को इन्द्र के साथ अनुचित सम्बन्ध करने के कारण शाप देकर उसे पत्थर बनादिया था। विशेष विवरण 'अहिल्या' शब्द में देखो।

गौन—गमन, यात्रा करना, जाना।

गौर—श्वेत, धवल, उज्वल, सफ़ेद। (२) चन्द्रमा, निशाकर। (२) पीत, पीलारंग। (४) रक्त, लालरंग। (५) अर्बी भाषा के अनुसार—ग़ौर, चिन्तन, ध्यान, सोचविचार।

गौरव—महत्व, बड़प्पन, बड़ाई। (२) गुरुत्व, गुरुता, भारीपन। (३) सम्मान, आदर, इज्ज़त। (४) उत्कर्ष, अधिकता, बढ़ती। (५) अभ्युत्थान, उन्नति।

गौरि
गौरी } —पार्वती, उमा, गिरिजा।

गौरीश—शिव, पार्वती के स्वामी।

ग्रन्थ—पुस्तक, पोथी, किताब।

ग्रन्थि—गाँठ, गाँठी, गिरह। (२) बन्धन, जकड़न। (३) मायाजाल, मायाफाँस। (४) कुटिलता, टेढ़ापन, टेढ़ाई। (५) भद्रमोथा।

ग्रसत—'ग्रसना' शब्द का वर्तमान काल । ग्रसता है, पकड़ता है, लीलता है ।
ग्रसन—ग्रहण, पकड़, थाम्ह । (२) भक्षण, खाने की क्रिया । (२) खाने के लिये पकड़ना । इस तरह दृढ़ता से थाम्हना कि छूटने न पावे ।
ग्रसना—भक्षण करना, निगलना, लीलना । (२) पकड़ना, ग्रहण करना । इस प्रकार पकड़ना कि छूटने न पावे । (३) सताना, दुःख देना ।
ग्रसित—ग्रस्त, पकड़ा हुआ । (२) दुःखी, सताया हुआ ।
ग्रसे—पकड़े, जकड़े हुए ।
ग्रसै—पकड़ै, जकड़ै ।
ग्रस्त—ग्रसित पकड़ा हुआ । (२) भक्षित, खाया हुआ । (३) दुःखी, सताया हुआ ।
ग्रह—सूर्य्य,चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, केतु, राहु, ये नवों ग्रह कहलाते हैं । (२) उडुगन, तारा, तरई । (३) स्कन्द शकुनी आदि बालग्रह जो छोटे बालकों को रोग के रूप में होते हैं । (४) ग्रहण, पकड़, थाम्ह । (५) बुरी तरह पकड़ने वाला वा तंग करने वाला ।
ग्रहन—ग्रहण, उपराग, गहन, पुराणनुसार सूर्य्य वा चन्द्रमा को राहु का ग्रसना । (२) सूर्य्य और चन्द्रमा के बिम्ब पर पृथ्वी की छाया पड़ने से कालापन दिखाई देना । (३) स्वीकार, मंजूर, क़बूल । (४) अर्थ, तात्पर्य्य, मतलब । (५) पकड़ने, लेने वा हस्तगत करने की क्रिया ।
ग्राम—गाँव, गाऊँ, मौज़ा । (२) बस्ती, आबादी, मनुष्यों के रहने का स्थान । (३) समूह, वृन्द, ढेर । (४) नगर, शहर ।
ग्रास—कौर, निवाला, लुकमा, उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय । (२) पकड़, गिरफ़्, पकड़ने की क्रिया । (३) सूर्य्य या चन्द्रमा में ग्रहण लगना ।
ग्राह—मगर, मंगर । (२) ग्रहण करना, पकड़ना ।
ग्राहक—गाहक, मोल लेनेवाला ।
ग्रीव—ग्रीवाँ, गरदन, गला ।
ग्लानि—अक्षमता, अनुत्साह, खेद, शारीरिक वा मानसिक शिथिलता । (२) मन की एक वृत्ति जिसमें किसी अपने कार्य्य की बुराई या दोष आदि को देख कर अनुत्साह, अरुचि और खिन्नता उत्पन्न होती है । (३) साहित्य में वीभत्स रस का एक स्थायी भाव । रति, परिश्रम, मनस्ताप और भूख-प्यास आदि से उत्पन्न दुर्बलता ही ग्लानि है । इसमें शरीर काँपने लगता है, शक्ति घट जाती है और किसी कार्य्य के करने का उत्साह नहीं होता । (४) घृणा, नफ़रत, परहेज़ ।
ग्वाल, ग्वाला—गोप, अहीर, गौओं को पालनेवाला । गोपालक ।

(घ)

घ—हिन्दी वर्णमाला के व्यञ्जनों में से कवर्ग का चौथा वर्ण जिसका कण्ठ से उच्चारण होता है । (२) बादल, मेघ, घन ।
घट—कुम्भ, कलश, घड़ा । (२) शरीर, पिण्ड, देह । (३) अन्तःकरण, हृदय, उर । (४) मध्यम, कम, थोड़ा, घटा हुआ ।
घटकरन—कुम्भकर्ण, रावण का छोटा भाई ।
घटघट—प्रत्येक अन्तःकरण । सब के हृदय में ।
घटज—कुम्भज, अगस्त्य, घटोद्भव ।
घटत—'घटना' शब्द का वर्तमान काल । घटता है, कम होता है ।
घटन—होना, उपस्थित होना । (२) घटनीय, घटित, गढ़ा जाना । (३) घटना ।
घटना—क्षीण होना, छोटा होना, कम होना । (२) कोई बात जो होजाय । वाक़या, हादसा, वारदात । (३) होना, उपस्थित होना । वाक़े होना । (४) आरोप हो जाना । सटीक बैठना । मेल मिल जाना ।
घटसम्भव—कुम्भज, अगस्त्य, घटज ।
घटा—क्षीण हुआ, कम हुआ । (२) उपस्थित हुआ, वाक़ै हुआ । (३) सटीक बैठा, मेल मिल गया । (४) कादम्बिनी, मेघमाला, उमड़े

हुए बादल, (५) समूह, झुण्ड ।
घटि—घट कर । कम हो कर ।
घटै—घट जाय, कम हो जाय। (२) हो, बाक़ी हो ।
घटो—घट गया, कम हुआ । (२) हुआ, बाक़ी हुआ ।
घंटा—घड़ियाल, धातु का एक बाजा जो केवल ध्वनि उत्पन्न करने के लिये होता है। वह घड़ियाल जो समय की सूचना देने के लिये बाजाया जाता है। (२) घड़ी, साठ मिनट का समय । दिन रात का चौबीसवाँ भाग ।
घन—बादल, धाराधर, मेघ । (२) समूह, झुण्ड, ढेर । (३) अधिक, बहुत, ज़्यादा । (४) घनाँ, गझिन, गुञ्जान । (५) दृढ़, कठिन, मज़बूत । (६) लोहारों का बड़ा हथौड़ा जिससे वे लोहा पीटते हैं । (७) कपूर, चन्द्र । (८) घंटा, घड़ियाल । (९) लोहा, अय । (१०) निरन्तर, लगातार।
घनघोर—भीषण ध्वनि, घनघनाहट । (२) मेघगर्जन, बादल की गरज । (३) भीषण, भयावना, जिसका देखना और सुनना भयङ्कर हो । (४) अत्यन्त घना, बहुत गझिन, निहायत गुञ्जान।
घननाद—मेघनाद, इन्द्रजीत, रावण का पुत्र । (२) मेघों का गर्जन, बादलों की गरज ।
घनश्याम—श्रीरामचन्द्रजी । (२) श्रीकृष्णचन्द्र । (३) श्याम मेघ, नीले रङ्ग के बादल ।
घना—सघन, गझिन, गुञ्जान, जिसके अङ्ग वा अंश सटे हों। (२) अधिक, बहुत, ज़्यादा। (३) घनिष्ट, निकट का, नज़दीकी ।
घनी—घना, गझिन । (२) अधिक, ज़्यादा ।
घनीघिन—अधिक घृणा, बड़ी नफ़रत ।
घने
घनेरा } —अत्यन्त अधिक, बहुत से ।
घनेरो
घर—अगार, आगार, आवास, आलय, गृह, गेह, निकेत, निकेतन, वास, भवन, मन्दिर, मकान, शाला, सदन, सद्म, निवास स्थान, मनुष्यों के रहने का स्थान जो दीवार आदि से घेर कर बनाया जाता है । (२) स्वदेश, जन्मस्थान, जन्मभूमि । (३) वंश, कुल, घराना, खानदान । (४) कार्य्यालय, कारख़ाना, दफ़्तर । (५) कोश, भण्डार, ख़ज़ाना । (६) उत्पत्ति स्थान, मूल कारण, उत्पन्न करनेवाला । (७) गृहस्थी, घरबार, मकान का सामान ।
घरनि
घरनी } —गृहिणी, भार्य्या, जोड़ू ।
घरु—घर, मन्दिर, मकान ।
घरो—घड़ा, कलसा, गगरी ।
घर्मांशु—सूर्य्य, भानु, रवि ।
घाट—नदी, सरोवर वा किसी जलाशय का वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते वा नहाते धोते हैं । नदी वा जलाशय के किनारे का वह स्थान जहाँ नाव पर चढ़ कर या पानी में हल कर लोग पार उतरते हैं। (२) मर्म, भेद, रङ्गढङ्ग तौर तरीक़ा। (३) दिशा, ओर, तरफ़ । (४) घाटि, छल, धोखा । (५) कुकर्म, नीच काम, बुराई ।
घाटि—छल, कपट, धोखा । (२) पाप, नीचकर्म । बुराई । (३) न्यून, कम, घट कर ।
घात—प्रहार, चोट, मार, धक्का, ज़रब । (२) हत्या, हिंसा, वध । (३) अहित, अकल्याण, बुराई । (४) सुयोग, अनुकूल स्थिति, दावँ, मतलब साधने का मुआफ़िक़ वक़्त । (५) किसी कार्य्य की सिद्धि के लिए उपयुक्त अवसर की खोज । ताक । (६) कपटयुक्ति, दावँपेच, चालबाज़ी । (७) रङ्ग ढङ्ग, तौर तरीक़ा, चाल ढाल ।
घातक—हिंसक, बधिक, जल्लाद । (२) हत्यारा, हत्या करनेवाला । (३) शत्रु, वैरी, दुश्मन ।
घानी—तिल, सरसों, तीसी आदि तेलहन की वस्तु जितनी एक बार कोल्हू में डाल कर पेरी जा सके उसको घानी कहते हैं ।
घाम—सूर्य्यातप, आतप, रौद्र, धूप । (२) उष्णता, ताप, जलन । (३) सङ्कट, दुःख ।
घाय—क्षत, घाव, ज़ख़्म । (२) आघात, प्रहार, चोट।
घायल—आहत, चुटइल, ज़ख़्मी, जिसको चोट लगी हो ।
घालत—'घालना' क्रिया का वर्तमान कालिक रूप । बिगाड़ता है, नाश करता है ।

घालना—डालना, रखना, किसी वस्तु के भीतर वा ऊपर रखना। (२) नाश करना, बिगाड़ना। (३) वध करना, मार डालना। (४) फेंकना, चलाना, छोड़ना, बहा देना। (५) कर डालना, कर बैठना।
घालि—नष्ट करके, नाश करके।
घाले—नाश किया, बिगाड़ा।
घाव—क्षत, घाय, ज़ख़्म। (२) आघात, प्रहार, चोट। शरीर पर का वह स्थान जो कट या चिर गया हो।
घासी—तृणादि, घास आदि पशुओं का चारा।
घिन—घृणा, नफ़रत।
घिनात—घिनाते हो, नफ़रत करते हो।
घी
घीय } —घृत, घी, सरपि।
घूमत—'घूमना' क्रिया का वर्तमान कालिक रूप। घूमता है, चक्कर खाता है।
घूमना—भ्रमण करना, सैर करना, टहलना। (२) चारों ओर फिरना, चक्कर खाना, मँड़राना। (३) लौटना, वापस आना।
घूमि—घूम कर, लौट कर, फिर कर।
घृत—आज्य, सर्पि, सरपि, हवि, वह्निभोग्य, अमृत, नवनीतज, पवित्र, जीवन, घृतु, घी, घीय, घीव, घिउ, रोग़नज़र्द। तपाया हुआ नैनु। दूध का चिकना सार जिसमें से जल का अंश तपा कर निकाल दिया गया हो।
घृतु—घृत, आज्य, घी।
घेरे—'घेरा' शब्द का वर्तमान काल। घेरे हैं, चारों ओर से छेंके हुए हैं। रुकावट डाले हैं। मण्डल के भीतर किये हैं।
घेरो—घेरा हुआ। छेंका हुआ।
घोर—भीषण, भयङ्कर, भीम, भैरव, भयावना, विकराल, डरावना। (२) सघन, घना, गझिन। (३) कठिन, कठोर, कड़ा। (४) निकृष्ट, निन्दित, बुरा। (५) अत्यन्त, बहुत अधिक। (६) घोड़ा, अश्व, बाजि।
घोरमारी—महामारी, ताऊन, हैज़ा प्लेग आदि जन विध्वन्सकारक संक्रामक रोग।

घोरि—घोल कर, मिला कर, पानी वा दूध आदि में चीनी वा अन्य किसी वस्तु को मिलाकर एकदिल कर डालना। (२) मथना, महँना, एक ही विषय को बार बार कह कर हल करना।
घोरे—'घोड़ा' शब्द का बहुवचन। घोड़े, एक से अधिक अश्व। (२) घोले, मिलाये, हल किये।
घोष—शब्द, नाद, आवाज़। (२) ग्वाला, गोप, अहीर। (३) ग्वालों का बसेरा। अहीरों की बस्ती। (४) गोशाला, गौओं के रहने का स्थान। (५) तट, तीर, किनारा।
घोषु
घोस } —घोष, शब्द, नाद। (२) गरजने की आज्ञा।
घ्न—नाशक, हनन करनेवाला।

(ङ)

ङ—व्यञ्जन वर्ण का पाँचवाँ और कवर्ग का अन्तिम अक्षर। यह स्पर्श है और इसका उच्चारण स्थान कण्ठ तथा नासिका है। (२) विषय, इन्द्रियों के कार्य्य। (३) विषय की इच्छा। (४) भैरव, भीम।

(च)

च—व्यञ्जन का छठाँ अक्षर जिसका उच्चारण स्थान तालु है। (२) श्लोक की पाद पूर्णता बताने-वाला अव्यय। पुनः, फिर। (३) कच्छप, कछुआ। (४) चन्द्रमा, शशि। (५) चोर भड़िहा। (६) दुर्जन, दुष्ट।
चक—चक्र, सुनाभ, सुदर्शनचक्र। लोहे के एक अस्त्र का नाम जो पहिये के आकार का होता है। (२) चक्रवाक, चकवापक्षी। (३) चक्का, पहिया। (४) पट्टी, पुरवा, खेड़ा, छोटा गाँव। (५) भूमि का एक भाग। ज़मीन का एक बड़ा टुकड़ा। (६) अधिकार, दख़ल। (७) भरपूर, अधिक, ज़्यादा। (८) भ्रान्त, भौचक्का, चकपकाया हुआ।

चक्रपानी—विष्णु, चक्रपाणि, चक्रधर।
चकित—आश्चर्य्यान्वित, विस्मित, भ्रान्त, भौचक्का दङ्ग, हक्काबक्का। (२) व्यर्थभय। अपभय, आशङ्का। (३) कादर, डरपोक, बुज़दिल। (४) उद्विग्न, घबराया हुआ। हैरान (५) सशङ्कित, चौकन्ना, हुआ।
चकोर—चकोरक, एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जो नेपाल, नैनीताल आदि स्थानों में तथा पञ्जाब और अफ़ग़ानिस्तान के पहाड़ी जङ्गलों में बहुत मिलता है। इसके ऊपर का रङ्ग काला रहता है जिस पर सफ़ेद सफ़ेद चित्तियाँ होती हैं। पेट का रंग कुछ सफ़ेदी लिए तथा चोंच और आँखें लाल होती हैं। भारतवर्ष में बहुत काल से प्रसिद्ध है कि यह चन्द्रमा का बड़ा भारी प्रेमी है और उसकी ओर एकटक देखा करता है, यहाँ तक कि वह आग की चिनगारियों को चन्द्रमा की किरनें समझ कर खा जाता है। कवि लोगों ने इस प्रेम का उल्लेख अपनी उक्तियों में बराबर किया है। (२) एक वर्णवृत्त का नाम जो सवैया छन्द के भेद में है।
चकोरक—चकोर, एक प्रकार का पहाड़ी तीतर।
चक्र—सुनाभ, सुदर्शन चक्र। लोहे के एक अस्त्र का नाम जो पहिये के आकार का अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाला होता है और प्राचीन काल में युद्ध के समय हाथ से नचा कर शत्रु पर फेंका जाता था। यह विष्णु भगवान का विशेष अस्त्र माना जाता है इसी से वे चक्रधर, चक्रपाणि, चक्री आदि कहे जाते हैं। (२) चक्का चाका, पहिया। (३) चक्रवाकपक्षी, कोक, सुरख़ाब। (४) सेना, दल, फ़ौज। (५) आवर्त्त, घुमाव, चक्कर। (६) समूह, समुदाय, मण्डली। (७) प्रदेश, मण्डल, ग्रामों वा नगरों का समूह। (८) वृत्त, मण्डलाकार घेरा। (९) दिशा, आसा, प्रान्त। (१०) धोखा, भुलावा, फ़रेब। (११) एक वर्णवृत्त का नाम। (१२) तेल पेरने का कोल्हू। (१३) कच्छप, कमठ, कछुआ।

चक्रधर—विष्णु, चक्र धारण करनेवाला। (२) राजा, मण्डलेश। (३) सर्प, साँप। (४) श्रीकृष्णचन्द्र, वनमाली। (५) बाज़ीगर, इन्द्रजाल करनेवाला।
चक्रपाणि, चक्रपानि, चक्रपानी—विष्णु, केशव, जिनके हाथ में सदा चक्र रहता है।
चक्रवर्त्ती—सार्वभौम, आसमुद्रान्त धरती पर राज्य करनेवाला। एक समुद्र से लेकर दूसरे समुद्र तक की पृथ्वी का राजा।
चक्राकुल—चक्रों से युक्त। कच्छपों से व्याप्त। कछुओं से भरी।
चख—आँख, नेत्र, नयन।
चञ्चरीक—भ्रमर, मधुकर, भँवरा।
चञ्चल—अस्थिर, चलायमान, एक स्थिति में न रह कर, जो हिलता डोलता हो। (२) अव्यवस्थित, अधीर, एकाग्र न रहनेवाला। (३) उद्विग्न, घबराया हुआ। (४) नटखट, चुलबुला, शरारती। (५) चपल, उतावला, जल्दबाज़। (६) कामुक, कामी।
चञ्चलता, चञ्चलताई—अस्थिरता, चपलता, जल्दबाज़ी। (२) उद्विग्नता, अधीरता।
चट—शीघ्र, तुरन्त, फ़ौरन। (२) चित्ती, दाग़, धब्बा। (३) कलङ्क, दोष, ऐब। (४) चट कर जाना, खा जाना, चाट पोंछ कर खाना।
चढ़त—'चढ़ना' क्रिया का वर्त्तमान कालिक रूप। चढ़ता है। ऊपर जाता है। (२) देवता की भेंट, किसी देवता को चढ़ाई हुई वस्तु।
चढ़ना—नीचे से ऊपर को जाना। ऊँचे स्थान पर जाना। उँचाई पर गमन करना। (२) ऊपर उठना, उड़ना। (३) उन्नति करना, बढ़ना।
चढ़ाई—चढ़ने की क्रिया वा भाव। (२) उँचाई की ओर लेजानेवाली धरती। वह स्थान जो आगे की ओर बराबर ऊँचा होता गया हो। (३) आक्रमण, धावा, ससैन्य शत्रु पर युद्ध के लिये चढ़ जाना। (४) किसी देवता को अर्पण की हुई वस्तु।
चढ़ि—चढ़कर, उँचाई की ओर जाकर।

चढ़े—ऊपर गये, उन्नत हुए, बढ़े।

चण्ड—तीक्ष्ण, प्रखर, तेज़। (२) उग्र, भीषण, घोर। (३) दुर्दमनीय, प्रबल, महाबली। (४) विकट, कठिन, कठोर। (५) उद्धत, क्रोधी, गुस्सावर। (६) उष्णता, ताप, गरमी। (७) एक दैत्य का नाम जिसको भगवती दुर्गा ने मारा था। विशेष 'निःशुम्भ' शब्द देखो।

चण्डकर—सूर्य्य, दिवाकर, तीक्ष्ण किरणवाले।

चण्डाल—चाण्डाल, श्वपच, डोम। (२) मनु के अनुसार शूद्र पिता और ब्राह्मणी माता से उत्पन्न हुई सन्तान जो अत्यन्त नीच मानी जाती है। (३) कुकर्म्मी, दुरात्मा, पतित मनुष्य।

चण्डोल—चौपहला, चौडण्डी, एक प्रकार की पालकी जो हाथी के हौदे की तरह खुली और डण्डे के ऊपर छाई रहती है।

चतुर—प्रवीण, निपुण, दक्ष, चालाक, होशियार।

चतुर्दश—चौदह, दस और चार। १४

चँद—चन्द्रमा, कलाधर।

चन्दन—तिलक, टीका, मस्तक पर लगा हुआ खौर।

चन्दवदन—चन्द्रानन, चन्द्रमा के समान मुख।

चन्दिनि—चन्द्रिका, चाँदनी, चन्द्रमा का उजाला।

चन्द्र—चन्द्रमा, शशि, सुधाकर। (२) सुन्दर, रमणीय। (३) कपूर, कर्पूर।

चन्द्रललाम—शिव, चन्द्रमा के तिलकवाले।

चन्द्रमा—अज, अमति, अमृत, अमृतसू, अत्रिनेत्रज, इन्दु, उडुप, एणतिलक, एणभृत, एणाङ्क, ओषधीश, कलाधर, कलानिधि, कलावान, कान्त, कुमुदनीपति, कुमुदबान्धव कुमुदेश, कौमुदीपति, क्लेदु, खचमस, ग्लौ; चन्द्र, चन्द, चन्दिर, चित्रचीर, छयाभृत्, जयन्त, जैवातृक, तपस तमोनुद, तमोहर, तारापीड़, तिथिप्रणी, तुङ्गी, तुङ्गीपति, तुषारकिरण, दशवाजी, दशास्य, दक्षजापति, दाक्षायणीपति, दोषाकर, द्विज, द्विजपति, द्विजराज, नक्षत्रनेमि, नक्षत्रराज, निशाकर, निशानाथ, निशापति, निशामणि, निशारत्न, परिज्ञा, पर्व्वधि, पक्षजन्मा, पक्षधर, पत्रज, पीयूषमहा, मृगलाञ्छन, मृगाङ्क, यामिनीपति, रजनीकर, रजनीश, रोहिणीपति, रोहिणीश, लक्ष्मीसहज, विकस, विधु, विश्वप्स्या, शर्वरीश, शशधर, शशभृत, शशलाञ्छन, शशि, शीतभानु, शीतमरीचि, शीतरश्मि, शुभ्रांशु, श्वेतद्युति, श्वेतवाजी, श्वेतवाहन, समुद्रनवनीत, सारस, सिन्धुजन्मा, सिन्धुनन्दन, सिप्र, सुधाकर, सुधाङ्ग, सुधाधार, सुधानिधि, सुधांशु, सोम, हरि, हरिणाङ्क, हिमद्युति, क्षपाकर, क्षपानाथ, क्षीरोदनन्दन, सुधासूति, त्रिनेत्रचूड़ामणि इत्यादि। पुराणानुसार चन्द्रमा समुद्र-मथन के समय निकाले हुए चौदह रत्नों में से हैं और देवताओं के बीच गिनेजाते हैं। जब एक असुर देवताओं की पंक्ति में चुपचाप बैठ कर अमृत पी गया तब चन्द्रमा ने यह वृत्तान्त विष्णु से कह दिया। भगवान ने उस असुर के दो खण्ड कर दिये जो राहु और केतु हुए। वही पुराना बैर लेकर राहु चन्द्रमा को ग्रसा करता है। चन्द्रमा के धब्बे के विषय में भी भिन्न भिन्न कथाएं प्रसिद्ध हैं। हरिवंश में लिखा है कि वह पृथ्वी की छाया है। कुछ लोग कहते हैं कि चन्द्रमा ने अपनी गुरु पत्नी के साथ गमन किया था इसीसे शाप वश काला दाग़ पड़ गया है। कोई कोई गौतम ऋषि के मृगचर्म की चोट का दाग़ कहते हैं और किसी के मत से दक्षप्रजापति के शाप से चन्द्रमा को राजयक्ष्मा रोग हुआ था उसका धब्बा है।

चन्द्रशेखर—शिव, चन्द्रमौलि।

चन्द्रार्क—(चन्द्र+अर्क) चन्द्रमा और सूर्य्य।

चपत—'चपना' का वर्तमान काल। दबता है।

चपना—दाब में पड़ना, कुचल जाना, दबना। (२) लज्जित होना, झिप जाना, शरमाना। (३) नष्ट होना, नाश होना, चौपट होना।

चपल—चञ्चल, अस्थिर, चुलबुला, कुछ काल तक एक स्थिति में न रहनेवाला। (२) उतावला, हड़बड़ी मचानेवाला। जल्दबाज़। (३) क्षणिक, बहुतकाल तक न रहनेवाला। (४) धृष्ट,

चालाक, अवसर न चूकनेवाला। (५) पारद, पारा। (६) चातक, पपीहा।

चपलता—चञ्चलता, उतावली, जल्दबाज़ी। (२) धृष्टता, चालाकी, ढिठाई। (३) काव्य में एक सञ्चारी भाव जिसमें चित्त का स्थिर न रहना और इच्छानुसार आचरण करना मुख्य लक्षण है।

चमू—सेना, सैन्य, फ़ौज़। (२) नियत संख्या की सेना जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घुड़सवार और ३६४५ पैदल होते थे।

चम्पक—चाम्पेय, चम्पा, एक मझोले क़द का पेड़ जिसमें पीले रङ्ग के फूल लगते हैं। इन फूलों में बड़ी तेज़ सुगन्ध होती है। ऐसा प्रसिद्ध है कि चम्पा के फूल पर भौंरे नहीं बैठते।

चय—समूह, ढेर, राशि। (२) गढ़, क़िला।

चर—जङ्गम, आप से आप चलनेवाला। (२) अस्थिर, एक स्थान पर न ठहरनेवाला। (३) आहार करनेवाला। खानेवाला। (४) सेवक, दूत, वह नौकर जो राजा की ओर से खुफ़िया तौर पर अपने तथा पराये राज्यों के भीतरी रहस्यों का पता लगाता है। (५) कपर्दिका, कौड़ी। (६) भौम, मङ्गल।

चरचा—चर्चा, ज़िक्र, तज़किरा।

चरचाउ / चरचौ —चर्चा भी, ज़िक्र भी।

चरति—चरती है, चारा खाती है।

चरन—चरण, अङ्घ्रि, पाद, पद पग, पाँव, पैर, गोड़, टाँग। (२) किसी छन्द, श्लोक या पद्य आदि का एक पद। (३) किसी पदार्थ का चतुर्थांश। किसी चीज़ का चौथाई भाग। (४) मूल, जड़, बेख़। (५) भक्षण, चरने का काम। (६) आचरण, आचार। (७) विचरण करने का स्थान।

चरनारविन्द—(चरण+अरविन्द) पद-कमल।

चरम—अन्तिम, जघन्य, आख़िरी, सब से पीछे का। (२) अन्त, अख़ीर। (३) चर्म, चाम, चमड़ा।

चरहि—भ्रमण करै, विचरै, घूमै। (२) भक्षण करै, भोजन करै, खावै।

चराचर—(चर+अचर) जङ्गम-स्थावर। चेतन और जड़। (२) जगत, संसार, दुनियाँ।

चरित / चरित्र —कृत्य, कार्य्य, करनी, काम, वह जो किया जाय। (२) जीवनी, किसी के जीवन की विशेष घटनाओं वा कार्य्यों आदि का वर्णन। (३) आचरण, बर्ताव, रहन सहन।

चरै—भ्रमण करै, विचरण करै, चलै। (२) भक्षण करै, भोजन करै, खावै।

चर्चा—वर्णन, बयान, ज़िक्र, तज़किरा। (२) वार्त्तालाप, कथनोपकथन, बातचीत। (३) किम्बदन्ती, अफ़वाह। (४) लेपन, पोतना, चन्दनादि का शरीर पर लगाना। (५) दुर्गा, गायत्री रूपा महादेवी।

चर्चित—लेपित, लगाया हुआ, पोता हुआ। (२) जिसकी चर्चा हो। जिसका वर्णन हो।

चर्म—अजिन, चाम, चमड़ा, खाल, चरम। (२) ढाल, सिपर, ओड़न।

चर्मासि—(चर्म+असि) ढाल-तलवार। (२) ढाल हो, ओड़न हो।

चल—चञ्चल, लोल, चलायमान। (२) कम्पन, काँपना, कँपकँपी। (३) कपट, छल, धोखा। (४) दोष, ऐब, बुराई। (५) विष्णु, वैकुण्ठनाथ। (६) शिव, पार्वतीपति। (७) पारद, पारा। (८) दोहा छन्द का एक भेद।

चलत—'चलना' क्रिया का वर्तमान कालिक रूप। चलता है, गमन करता है, जाता है।

चलाइ / चलाई —चलाना, गति देना, किसी को चलने में लगाना। (२) प्रचलित करना, प्रचार करना, जारी करना। (३) निबाहना, पूरा करना, निभाना।

चलि—गमन कर के, चल कर।

चलिय—चलिये, गमन कीजिये। (२) चलता हूँ।

चष—आँख, नेत्र, नयन।

चहत—'चाहना' शब्द का वर्तमान काल। चाहता है। प्रेम करता है। (२) चहेता, जिसे चाहा जाय। जिसके साथ प्रेम किया जाय।

चहुँ }—चार, चारों, चारहू।
चहुँ

चहौं—चाहता हूँ। इच्छा करता हूँ। ख़्वाहिश रखता हूँ।

चखु—आँख, लोचन, नेत्र।

चाउ—चाव, लालसा, अरमान।

चाउर—चावल, तण्डुल।

चाँचरि—चाँचर, चर्चरी राग जिसके अन्तर्गत होली, फाग, लेद आदि माने जाते हैं। होली पर गाने का राग, धमार चौताल आदि। (२) होली का स्वाँग। फाग का खेल-तमाशा।

चाटत—'चाटना' क्रिया का वर्तमान कालिक रूप। चट करता है, चाटता है।

चातक—तोकक, सारङ्ग, पपीहा। एक पक्षी जो वर्षाकाल में बहुत बोलता है। इसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह नदी, तालाब आदि का सञ्चित जल नहीं पीता। केवल बरसता हुआ पानी पीता है। बहुत लोग कहते हैं कि यह स्वाती नक्षत्र के जल के सिवाय दूसरा जल पीता ही नहीं। यह सदा मेघ की ओर टक लगाकर जल की याचना करता है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने तो इसकी टेक को लेकर दोहावली, विनय पत्रिका और रामचरित-मानस आदि ग्रन्थों में अत्यन्त अनोखी उक्तियों में प्रशंसा की है।

चातुरी—चातुर्य्यता, चतुराई, चालाकी।

चाप—धनुष, कोदण्ड, कार्मुक। (२) आहट, ऐक, अन्दाज़ा। (३) सकोच, दबाव।

चापि—चाप कर, दाब कर, दबा कर। (२) फिर भी, निश्चय पूर्वक।

चाम—चर्म, खाल, चमड़ा।

चाय—चाव, उत्साह, उमङ्ग।

चार—गुप्तदूत, चर, जासूस। (२) सेवक, दास, नौकर। (३) चाल, गमन, गति। (४) आचार, रीति, रस्म। (५) चार की संख्या। (६) अचार, चिरौंजी का पेड़।

चारन—चारण, वन्दीजन, भाँट। वंश की कीर्त्ति गानेवाला। (२) राजपूताने की एक जाति। (३) भ्रमण करनेवाला, चलनेवाला। (४) कत्थक, कथक।

चारि—चार की संख्या।

चारिखानि—अण्डज, पिण्डज, उद्भिद और जरा-युज की योनियाँ।

चारित—चलाया हुआ, जो चलाया गया हो। (२) स्वभाव, व्यवहार, चालचलन। (३) कुलाचार, वंश का क्रमागत आचरण। (४) भबके द्वारा खींचा हुआ अर्क़।

चारिफल—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।

चारु—सुन्दर, रुचिर, मनोहर।

चाल—गति, गमन, चलने की क्रिया। (२) गमन प्रकार। चलने का ढङ्ग। गति का ढब। (३) आचरण, व्यवहार, चलन, बर्ताव। (४) प्रथा, परिपाटी, रीति। (५) आकृति, गढ़न, बनावट। (६) धूर्त्तता, छल, चालाकी। (७) प्रकार, बिधि, तरह। (८) आन्दोलन, धूम, हलचल। (९) आहट, खटका, हिलने डोलने से होनेवाला शब्द। (१०) ढङ्ग, तदबीर, कार्य करने की युक्ति।

चालत—'चालन' का वर्तमान काल। चलता है। चल रहा है। (२) प्रचलित, व्यवहार में आनेवाला। चलनेवाला।

चाली—गमन करनेवाला। चलनेवाला। (२) धूर्त्त, नटखट, चालबाज़।

चालु—चलावे, गमन करावे। व्यवहार करे।

चाव—अभिलाषा, लालसा, प्रबल इच्छा। (२) प्रेम, अनुराग, चाह। (३) उत्साह, उमङ्ग, हौसला। (४) उत्कण्ठा, शौक़। (५) प्यार, दुलार, लाड़। (६) आनन्द, हर्ष, ख़ुशी।

चावल—तण्डुल, चाउर, चावर, एक प्रसिद्ध अन्न। धान के बीज की गुठली। अक्षत।

चाह—चाव, लालसा, ख़्वाहिश। (२) प्रेम, प्रीति, अनुराग, मुहब्बत। (३) आदर, पूछ, क़दर। (४) मर्म, गुप्तभेद, समाचार, ख़बर।

चाहत—'चाहना' शब्द का वर्तमान काल। प्रेम करता है, चाहता है, प्रीति करता है।

चाहना—अभिलाषा करना, इच्छा करना। (२) स्नेह करना, प्रेम करना, प्रीति करना। (३) माँगना, याचना करना। (४) प्रयत्न करना। (५) निहारना, ताकना, प्रेम से देखना। (६) ढूँढ़ना, खोजना, तलाश करना।

चाहनि—चाह से, इच्छा से, ख़्वाहिश से, 'चाह' शब्द का बहु वचन।

चाहसि—चाहता है, इच्छा रखता है।

चाहि—इच्छा कर, लालसा कर के। (२) निहार कर, देख कर। (३) अपेक्षाकृत अधिक। ज़रूरत से कहीं बढ़कर।

चाहिए—उपयुक्त है, उचित है, मुनासिब है।

चाही—चहेती, चाही हुई। जो चाही जाय।

चाहे—इच्छा हो। मन में आवे। जी चाहे। (२) या तो। यदि जी चाहे तो। जैसा जी चाहे। (३) होनहार, होना चाहता हो। होनेवाला हो। (४) लालसा किए। उत्कण्ठा किए।

चिउरा—चिवड़ा, चिउड़ा, चूरा। एक प्रकार का चर्वण जो हरे, भिगोये या उबाले धान को गरमाकर कूटने से बनता है।

चिकना—चिक्कण, जो खरदरा न हो। जो साफ़ और बराबर हो। (२) स्निग्ध, तेलौंस, जिसमें तेल हो या लगा हो। (३) सुथरा, साफ़, सँवारा हुआ। (४) तेल, घी, चरबी आदि चिकने पदार्थ। (५) चिकनी चुपड़ी बातें कहनेवाला। खुशामदी।

चिकनाई—चिकनापन, चिकनाहट, चिकना होने का भाव। (२) स्निग्धता, सरसता, तेलौंस पन। (३) चिकना, तेल, घी आदि। (४) स्वच्छता, सुथरापन, सफ़ाई।

चिच्छक्ति—(चित्त+शक्ति) चित्त का बल।

चिञ्चिनी—अम्लिका, इमली का पेड़। इसके वृक्ष भारतवर्ष में प्रायः सर्वत्र होते हैं। पत्तियाँ आँवले के समान और फलियों में फल लगते हैं। इसकी कच्ची फलियाँ तोड़ कर सालन में डालते हैं जिससे खट्टापन आ जाता है और पकी हुई फलियों के ऊपर का छिलका तथा बीज निकाल कर सङ्ग्रह करते हैं वह खटाई के व्यवहार में आता है। इसके बीजों को चियाँ कहते हैं।

चिञ्चिनीचियाँ—इमली का बीज।

चित—चित्त, मन, हृदय।

चितइ—अवलोकि, निहारि, देखि।

चितइये—अवलोकिए, निहारिए, देखिए।

चितई—अवलोकन किया, निहारा, देखा।

चितवन—अवलोकन, कटाक्ष, दृष्टि, चितौन, निगाह, नज़र, निहारने का ढङ्ग।

चितवृत्ति—चित्त की गति। चित्त की अवस्था। योग में चित्तवृत्ति पाँच प्रकार की मानी गई है—प्रमाण, विपर्य्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति। इन सब के भी क्लिष्ट और अक्लिष्ट दो दो भेद हैं। अविद्या आदि क्लेश हेतुक वृत्ति क्लिष्ट तथा उससे भिन्न अक्लिष्ट है।

चितु—चित्त, अन्तःकरण की एक वृत्ति।

चितेरे—चित्रकार, मुसौवर, तसवीर बनानेवाला।

चित्त—अन्तःकरण की एक वृत्ति। हृदय का एक भेद। (२) अन्तःकरण, हृदय, मन, जी, दिल। वह मानसिक शक्ति जिससे धारण भावना आदि की जाती है। वेदान्त के अनुसार अनतःकरण की चार वृत्तियाँ हैं—मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार। सङ्कल्प विकल्पात्मक वृत्ति को मन, निश्चयात्मक वृत्ति को बुद्धि, अनुसन्धानात्मक वृत्ति को चित्त और अभिमानात्मक वृत्ति को अहङ्कार कहते हैं।

चिदाकाश—(चित्+आकाश) आकाश के समान निर्लिप्त और सब का आधारभूत परब्रह्म। परमेश्वर। जिसका हृदय आकाश के समान अनन्त और चैतन्य रूप हो।

चिदानन्द—(चित्+आनन्द) चैतन्य और आनन्दमय परब्रह्म। परमात्मा। (२) चित्त का आनन्द। मन की प्रसन्नता।

चिद्विलास—चैतन्यस्वरूप ईश्वर की माया। (२) चित्त का विलास। मन का खेलवाड़। (३) मन की प्रसन्नता। चित्त का आनन्द।

चिन्तन—ध्यान, बार बार स्मरण। किसी बात को

बार बार मन में लाने की क्रिया । (२) विचार, विवेचना, ग़ौर ।

चिन्ता—ध्यान, स्मृति, भावना । (२) सोच, खटका, फ़िक्र, वह भावना जो किसी प्राप्त दुःख वा दुःख की आशङ्का आदि से हो । (३) साहित्य में चिन्ता करुण रस का व्यभिचारी भाव मानी जाती है अतः वियोग की दश दशाओं में से चिन्ता दूसरी दशा मानी गई है ।

चिन्तापहर्त्ता, चिन्तापहारी—चिन्ता का अपहरण करनेवाला। सोच को छुड़ानेवाला ।

चिन्तामनि—चिन्तामणि, एक अलौकिक रत्न जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि उससे वाञ्छित फल की प्राप्ति होती है। (२) परब्रह्म, परमेश्वर, परमात्मा ।

चिबुक—ठुड्डी, ठोढ़ी, ओठ के नीचे का स्थान ।

चियाँ—इमली का बीज ।

चिर—दीर्घकालवर्त्ती, बहुत दिनों का । अधिक समय का । (२) दीर्घकाल तक, अधिक समय, बहुत दिन ।

चिरकाल—दीर्घकाल, बहुत दिन ।

चिवरा—चिउरा, चिवड़ा, चूरा ।

चिह्न—लक्षण, अलामत, वह लक्षण जिससे किसी वस्तु की पहचान हो । (२) पताका, फरहरा, झण्डी । (३) किसी प्रकार का दाग़ या धब्बा ।

चित्र—आश्चर्य्यजनक, विस्मयकारक, अद्भुत, विचित्र । (२) चितकबरा, रङ्ग बिरङ्गा । कई रङ्गों का । (३) कृत्रिम स्वरूप । तसवीर । किसी व्यक्ति वा वस्तु का आकार जो काग़ज़, कपड़े, लकड़ी, दीवार, शीशे आदि पर विविध रङ्गों द्वारा बनाया जाता है । (४) काव्य में एक प्रकार का अलङ्कार जिसमें पद्यों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते हैं कि हाथी, घोड़े, खड्ग, कमल आदि के आकार बन जाते हैं ।

चित्रकार—चितेरा, चित्र बनानेवाला, मुसौवर ।

चित्रकूट—एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ वन-बास के समय श्रीराम-लक्ष्मण और सीताजी ने बहुत दिनों तक निवास किया था । यह तीर्थ-स्थान बाँदा ज़िले में है और प्रयाग से २७ कोस दक्षिण पड़ता है । इस पहाड़ के नीचे पयस्विनी नदी और मन्दाकिनी गङ्गा बहती हैं । रामनवमी और दीवाली पर यहाँ बड़ा मेला होता है । बहुत दूर से यात्री आते हैं ।

चित्रित—चित्र में खींचा हुआ । चित्र द्वारा दिखाया हुआ । जिसका रङ्ग-रूप तसवीर में दिखाया गया हो । (२) जिस पर चित्र बने हों । जिस पर बेल-बूटे आदि बने हों ।

चीठे—चिट्ठा, लेखा बही, खाता की किताब । (२) आज्ञापत्र, परवानगी, इजाज़त । (३) सूची, किसी रक़म की सिलसिलेवार फ़िहरिस्त । (४) विवरण, ब्योरा, तफ़सील ।

चीन्ह—चिह्न, लक्षण, अलामत । (२) परिचय, पहचान, चिन्हारी ।

चीन्हि—परिचय पा कर, पहचान कर ।

चीन्ही—परिचत, पहचानी, जानी हुई ।

चीन्हे—परिचय युक्त, पहचाने हुए, जाने हुए ।

चुचकारि—चुमकार कर, दुलार कर, प्यार कर के, चुचकारने की क्रिया वा भाव ।

चुप—अवाक, मौन, ख़ामोश ।

चूक—भूल, सहो, ग़लती । (२) अपराध, दोष ।

चूड़ा—चोटी, शिखा, चुटिया । (२) कङ्कण, कड़ा, ढरकौआ । (३) मस्तक, माथा । (४) मोर के सिर पर की चोटी । मोरशिखा । (५) प्रधान नायक । सब का सरदार ।

चूड़ामनि—चूड़ामणि, शिरोरत्न, शिरोमणि, सिर में पहनने का शीशफूल नामक गहना । (२) अग्रगण्य, सब में श्रेष्ठ, मुखिया, सरदार ।

चूर, चूरन—चूर्ण, बुकनी, सफ़ूफ़ ।

चूर्ण—चूरन, चूरण, चूर, बुकनी, सफ़ूफ़, किसी वस्तु को कूट कर कपड़े वा चलनी से छाना हुआ पदार्थ । (२) रेतने अथवा आरी के चीरने से निकलनेवाला चूरा, बुरादा वा भूरा कहलाता है । (३) जो किसी प्रकार तोड़ा फोड़ा या नष्टभ्रष्ट किया गया हो ।

चेत—संज्ञा, चेतना, होश, चित्त की वृत्ति। (२) ज्ञान, बोध, समझ। (३) स्मरण, सुध, ख़याल। (४) चेत्, यदि, अगर। (५) कदाचित्, शायद।
चेतन—प्राणी, जीवधारी। (२) आत्मा, जीव। (३) मनुष्य, आदमी। (४) चैतन्य, परमेश्वर, परब्रह्म।
चेति—सचेत होकर, होश कर के।
चेराई—सेवा, टहल, ख़िदमत।
चेरे } चेरो }—सेवक, दास, टहलू। (२) शिष्य, चेला, शागिर्द।
चैतन्य—चेतनायुक्त, सचेत, सावधान, होशियार। (२) चित् स्वरूप आत्मा, चेतन आत्मा। ज्ञान। न्याय में ज्ञान तथा चैतन्य को एक ही माना है और उसे आत्मा का धर्म बतलाया है। पर सांख्य के मत से ज्ञान से चैतन्य भिन्न है। यद्यपि इसमें रूप, रस, गन्ध आदि विशेष गुण नहीं हैं तथापि संयोग, विभाग और परिमाण आदि गुणों के कारण सांख्य में इसे अलग द्रव्य माना है और ज्ञान को बुद्धि का धर्म बतलाया है। (३) परब्रह्म, परमेश्वर, ईश्वर। (४) प्रकृति।
चैन—सुख, आनन्द, आराम,।
चोट—आघात, प्रहार, मार। (२) घाव, ज़ख्म, प्रहार का प्रभाव। (३) आक्रमण, वार, किसी को मारने के लिए हथियार आदि चलाने की क्रिया। (४) शोक, सन्ताप, मर्मभेदी दुःख। (५) बार, दफ़ा, मरतबा।
चोर—तस्कर, भँड़िहा, चोरी करनेवाला। छिप कर पराई वस्तु का अपहरण करनेवाला। (२) जिसके वास्तविक स्वरूप का ऊपर से देखने से पता न चले।
चोरा—'चोर' शब्द का बहुवचन। चोरों का वृन्द।
चोरि—चुरा कर। छिपा कर। (२) छिपाया।
चोरी—चुराने की क्रिया। छिप कर किसी दूसरे की वस्तु लेने का काम। भँड़िहाई।
चौगुन—चतुर्गुण, चौगुना।
चौगुनी—चतुर्गुणी, चारगुणी।
चौथ—चतुर्थी, प्रति पक्ष की चौथी तिथि। हर पखवारे का चौथा दिन। (२) चतुर्थांश, चौथाई भाग, चौथा।
चौथि—चौथ, चतुर्थी, चौथी तिथि।
चौदस—चतुर्दशी, वह तिथि जो प्रत्येक पक्ष में चौदहवें दिन होती है।
चौदह—चतुर्दश, दस और चार के जोड़ की संख्या।
च्युत—टपका हुआ, चुवा हुआ, गिरा हुआ, झड़ा हुआ। (२) पतित, भ्रष्ट, अपने स्थान से हटा हुआ। (३) पराङ्मुख, विमुख।

(छ)

छ—हिन्दी वर्णमाला में व्यञ्जनों के स्पर्श नामक भेद के अन्तर्गत चवर्ग का दूसरा वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान तालु है। (२) निर्मल, स्वच्छ, साफ़। (३) चञ्चल, लोल, अस्थिर। (४) खण्ड, टुकड़ा। (५) आच्छादन, ढाँकना। (६) गिनती में पाँच से एक अधिक। जिस संख्या में चार और दो हो।
छटा—सौन्दर्य्य, शोभा, छबि। (२) प्रभा, दीप्ति, झलक। (३) बिज्जु, बिजली।
छटाभ—(छटा+आभ)। शोभा की झलक।
छठि—षष्ठी, प्रतिपक्ष की छठीं तिथि। पखवारे का छठाँ दिन।
छठी—छट्ठी, बालक के जन्म से छठाँ दिन। (२) भाग्य, क़िसमत, तक़दीर। (३) छठि, षष्ठी।
छत—क्षत, घाव, ज़ख़्म। (२) पाटन, कोठा, घर की दीवारों पर करी पटिया देकर उस पर चूना, कङ्कड़ आदि डालकर बनाई हुई खुली फ़र्श। (३) आछत, रहते हुए, होते हुए।
छद—आवरण, ढकन, ढकनेवाली वस्तु छाल इत्यादि। (२) पत्र, पङ्ख, चिड़ियों का पर। (३) तमालवृक्ष। (४) तेजपात।
छन—क्षण, तीस कला, चार मिनट।
छपत—'छपना' क्रिया का वर्तमान कालिक रूप। छपता है, गुप्त होता है, लुकता है।
छबि—,सौन्दर्य्य, शोभा।

छम—क्षम, समर्थ, योग्य। (२) शक्ति, बल।
छमत—'क्षमा' का वर्तमान कालिक रूप। क्षमा करता है। माफ़ करता है। (२) षट्शास्त्रों का मत। छत्रों शास्त्रों की सम्मति।
छमा—क्षमा, क्षान्ति, सहनशीलता। (२) पृथ्वी, धरती, ज़मीन।
छमाय—क्षमा कराकर, माफ़ी मँगा कर।
छमि—क्षमा करके, माफ़ कर के।
छमुख—श्यामकार्तिक, कार्तिकेय, षड़ानन।
छर—क्षर, नाशवान, नाश होनेवाला। (२) छल, कपट, फ़रेब।। (३) बादर, मेघ। (४) पानी, जल। (५) जीव, आत्मा। (६) शरीर, देह। (७) अज्ञान, अविवेक।
छरन—क्षरण, स्राव होना। रस रस के चूना (२) छलिया, छलनेवाला, फरेब करनेवाला।
छरनि—छलने की क्रिया। कपट करने का काम।
छरभार—कार्य्य भार, कामकाज का बोझा। (२) कुबोझा, कठिन भार। जो बोझ उठाया न जा सके। (३) झञ्झट, बखेड़ा, व्यर्थ का झगड़ा।
छर्यो—छल लिया, धोखा दिया।
छल—वञ्चना, कपट, धूर्त्तता, धोखेबाजी, वह व्यवहार जो दूसरों को ठगने के लिए किया जाता है। वास्तविक रूप को छिपाने का कार्य्य। जिससे कोई वस्तु या कोई बात और की और देख पड़े। (२) व्याज, मिस, बहाना। (३) दम्भ, पाखण्ड, ढोंग।
छलछाउ—छल की छाया। धोखे की परछाहीँ। (२) छलबाज़ी, ठगपना।
छलछिद्र—कपट व्यवहार, धूर्त्तता, धोखेबाज़ी।
छलछीनता—छल की क्षीणता। कपट का ह्रास। धोखेबाज़ी का अन्त।
छलदान—कपट का दान। वह दान जो कुछ पाने की इच्छा से दिया जाय।
छलन—छल करने का कार्य्य, धूर्त्तता का काम।
छलप्रीति—कपट का प्रेम। वह प्रीति जो अपना मतलब साधने के लिए की जाय।
छलबल—कपट का बल, धोखे का ज़ोर।
छलहीनता—छल का नाश, कपट का अन्त।
छलि—छल कर, धोखा देकर।
छली—कपटी, धोखेबाज़, छल करनेवाला।
छवि—शोभा, सौन्दर्य्य, सुन्दरता। (२) कान्ति, दीप्ति, प्रभा, चमक। (३) प्रतिकृति, चित्र, फोटो।
छत्र—छत्ता, छाता, छतरी। (२) राजाओं का छाता जो राजचिह्नों में से है। यह छाता बहुमूल्य स्वर्णदण्ड आदि से युक्त रत्नजटित तथा मोती की झालरों से अलंकृत होता है। भोजराज कृत युक्त कल्पतरु नामक ग्रन्थ में इसका विस्तृत विवरण है। (३) छत्रक, भूफोड़, कुकुरमुत्ता।
छाई—आच्छादित, छाई हुई। ढँकी हुई। (२) भस्म, राख। (३) पाँस, खाद। (४) छाया, परछाहीं।
छाउ—प्रतिबिम्ब, छाँह, परछाहीं।
छाओं—छाता हूँ, ढँकता हूँ, तोपता हूँ।
छाके—छके हुए, तृप्त, अघाये हुए। (२) विह्वल हुए, मग्न हुए।
छाड़ि—त्याग कर, छोड़ कर।
छाड़िये—त्यागिये, छोड़िये, अलग कीजिए।
छाती—वक्षस्थल, हृदय, सीना। (२) स्तन, पयोधर, कुच। (३) साहस, दृढ़ता, हिम्मत।
छाम—कृश, क्षीण, दुर्बल, कमज़ोर, दूबर।
छाय—छाया, छाँह, परछाहीं।
छाया—छाँह, परछाहीं, परछाई छाय, साया, वह स्थान जहाँ किसी प्रकार के आड़ के कारण सूर्य्य, चन्द्रमा, दीपक या और किसी आलोक प्रद वस्तु का उजाला न पड़ता हो। फैले हुए प्रकाश को कुछ दूर तक रोकनेवाली वस्तु की आकृति जो किसी दूसरी ओर अन्धकार के रूप में दिखाई पड़ती है। (२) प्रतिकृति, तद्रूप वस्तु, सदृश वस्तु, अनुहार, अक्स। (३) शरण, रक्षा, पनाह। (४) अन्धकार, अँधेरा। (५) आर्य्या छन्द का एक भेद। (६) भूत प्रेत का प्रभाव, आसेब। (७) अनुकरण, नक़ल। (८) सूर्य्य की एक पत्नी का नाम। (९) आवरण युक्त, छाया हुआ, ढँका हुआ।

छायो—छाया है, ढका है, तोपा है ।
छार—क्षार, खार । (२) भस्म, राख । (३) रेणु, धूल ।
छाल—वल्कल, वृक्ष की त्वचा, बोकला । (२) खाल, चमड़ा, चर्म । (३) स्नान, नहाना, धोना, अङ्गों को जल से साफ़ करना ।
छालिका—धोनेवाली, स्वच्छकरनेवाली ।
छालित—अन्हवाया, धोया, साफ़ किया ।
छावौं—छाता हूँ, ढँकता हूँ, तोपता हूँ ।
छाँह—छाया, परछाहीं, साया ।
छिद्र—छेद, सूराख़ ।
छिन—क्षण, छन, चार मिनट का समय ।
छिया—पुरीष, विष्ठा, मैला, पाख़ाना । (२) घृणित पदार्थ, घिनौनीवस्तु, नफ़रत की चीज़ ।
छीजै—क्षीण हो, ह्रास हो, कम हो ।
छीन—क्षीण, दुर्बल, खिन्न । (२) शिथिल, मन्द, मलिन ।
छीनता—क्षीणता, निर्बलता, कमज़ोरी । (२) कृशता, खिन्नता, दुबलापन ।
छीनि—छीन कर, दूसरे की वस्तु जबरी से लेकर ।
छुइ—स्पर्श कर के, छू कर ।
छुड़ाई—छोड़ने की क्रिया । (२) छुड़ाया, बन्धन से छुटकारा दिया । बचाया ।
छुड़ाये—छुटकारा दिये, बन्धन मुक्त किये ।
छुधा—क्षुधा, भूख ।
छुधित—क्षुधित, क्षुधावन्त, भूखा ।
छुये—स्पर्श किये, संसर्ग हुए ।
छुर—क्षुर, छूरा, अस्तुरा ।
छुरधार—क्षुरधार, छूरे की धार ।
छूटत—'छूटना' क्रिया का वर्तमान- कालिक रूप । मुक्त होता है । छुटकारा पाता है ।
छेम—क्षेम, कल्याण, मङ्गल ।
छोट—क्षुद्र, न्यून, लघु, छोटा । जो बड़ाई या विस्तार में कम हो । (२) सामान्य, जो पद प्रतिष्ठा में कम हो, जिसमें कुछ महत्व या गौरव न हो । (३) महत्वहीन । ओछा, जिसमें गम्भीरता, उदारता और शिष्टता न हो ।
छोटाई—क्षुद्रता, नीचता, अधमाई । (२) लघुता, हलुकई, छोटापन ।

छोटि
छोटी } —क्षुद्र, लघु, न्यूनतापूर्ण ।
छोड़ाये—छुड़ाये, छुड़ाने से, मुक्त करने से ।
छोभ—क्षोभ, व्याकुलता, बेचैनी ।
छोर—मुक्त करनेवाला, छुड़ानेवाला, बन्धन छोरनेवाला । (२) किनारा, कोर, हाशिया । (३) विस्तार की सीमा, हद । (४) नोक, अनी ।
छोरत—'छोरना' क्रिया, का वर्तमानकालिक रूप । बन्धन मुक्त करता है, बँधुआई से छुटकारा देता है । (२) अपहरण करता है । छीनता है ।
छोह—कृपा, अनुग्रह, दया । (२) स्नेह, प्रेम, प्रीति ।

(ज)

ज—हिन्दी वर्णमाला में व्यञ्जनों के स्पर्श नामक भेद के अन्तर्गत चवर्ग का तीसरा वर्ण । इसका उच्चारण च के समानही तालु से होता है । (२) उत्पन्न, जात, पैदा । (३) वेग, गति । (४) विष, ज़हर । (५) जन्म, उत्पत्ति, पैदाइश । (६) पिता, बाप । (७) जेता, जीतनेवाला । (८) पिशाच, प्रेत । (९) तेज, प्रकाश । (१०) वेगित, वेगवान् । (११) विष्णु, लक्ष्मीकान्त । (१२) जगण, छन्दः शास्त्रानुसार वह गण जिसका मध्य वर्ण गुरु और आदि अन्त के वर्ण लघु होते हैं ।
जई—अङ्कुर, अँखुआ, डाभ । (२) उन फलों की बतिया जिनमें बतिया के साथ फूल भी लगा रहता है । जैसे-खीरे की जई, कुम्हड़े की जई आदि । (३) जौ का छोटा अङ्कुर । (४) एक प्रकार का अन्न जो जौ से मिलता जुलता होता है ।
जउ—यदि, जौं, अगर । (२) यव धान्य ।
जग
जगत } —विश्व, संसार, दुनियाँ ।
जगती—पृथ्वी, वसुन्धरा, धरती ।
जगतीतल—पृथ्वीतल, वसुधातल, धरती का फैलाव । ज़मीन की सतह ।
जगदघ—(जगत+अघ) संसार का पाप ।
जगदन्त—(जगत+अन्त) संसार का अन्त, प्रलय । (२) आवागमन से रहित होना । जन्म-मृत्यु से छुटकारा पाना ।

जगदम्ब—(जगत+अम्ब) जगत की माता, दुर्गा, भगवती।

जगदिम्बके—जगज्जननी, लोकमाता, दुर्गा।

जगदीश—(जगत+ईश) जगन्नाथ, जगदीश्वर। (२) विष्णु, केशव। (३) पृथ्वीनाथ, राजा।

जगनिवास—जगन्निवास, ईश्वर, परमेश्वर।

जगमगत—'जगमगाना' शब्द का वर्तमान काल। जगमगाता है। चमकता है। झलकता है। प्रकाशित हो रहा है।

जगावती—जगाती है, सचेत करती है।

जग्य—यज्ञ, क्रतु, मख।

जङ्घ—जङ्घा, उरु, जाँघ, रान।

जञ्जाल—प्रपञ्च, झंझट, बखेड़ा। (२) बन्धन, फँसाव, फन्दा, उलझन। (३) बड़ा जाल जिससे जीव जन्तु फँसाये जाते हैं। (४) एक प्रकार की बड़ी तोप, जिसको क़िले की धुस्स तोड़ने के काम में लाते हैं।

जटा—जटि, जूट, कोटीर, शट, एक में उलझे हुए सिर के बड़े बढ़े बाल। (२) अवरोह, बरोह, बड़वृक्ष की जटा। (३) वृक्ष की जड़, छाल वा फल के पतले पतले सूत। झाँखर। रेशा, जैसे-पलाश की जटा। नारियल की जटा।

जटाजूट—जटा का जूट। बहुत से बढ़े हुए लम्बे बालों का समूह।

जटामुकुट—जटा का मुकुट।

जटायु—रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध जो सूर्य्य के सारथी अरुण का पुत्र, श्येनी के गर्भ से उत्पन्न, सम्पाति का सहोदरबन्धु और महाराज दशरथजी का मित्र था। जब रावण सीताजी का हरण कर लङ्का को लिए जा रहा था तब यह बड़ी बहादुरी के साथ उससे लड़ा, अन्त में पर कट जाने से भूमि पर गिर गया और श्रीरामचन्द्रजी के आने पर सब समाचार कह कर प्राण त्याग दिया। महान् कृतज्ञ रामचन्द्रजी ने उसके उपकार के पलटे में उसे तिलाञ्जलि, पिण्डदान आदि देकर अन्त्येष्टिक्रिया अपने हाथों से की थी।

जटित—खचित, जड़ा हुआ, पच्ची किया हुआ।

जटिल—दुर्बोध, दुरूह, अत्यन्त कठिन। (२) जटाधारी, जटावाला, वह जिसके सिर पर जटा हो। (३) दुष्ट, क्रूर, हिंसक। (४) ब्रह्मचारी। ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण करनेवाला। (५) 'वट' बड़वृक्ष।

जठर—कुक्षि, कोख, पेट। (२) कठिन, कड़ा, मज़बूत। (३) शरीर, देह। (४) वृद्ध, जठर, बूढ़ा।

जड़—अचेतन, स्तब्ध, चेष्टा हीन। जिसमें चेतनता न हो। जिसकी इन्द्रियों की शक्ति मारी गई हो। (२) मन्दबुद्धि, मूर्ख, नासमझ, (३) शीतल, ठण्ढा, शीत का मारा। सरदी से ठिठुरा हुआ। (४) अनभिज्ञ, अनजान। (५) मूक, गूँगा। (६) बधिर, बहिरा। (७) जिसके मन में मोह हो। जो वेद पढ़ने में असमर्थ हो। (८) पानी, जल। (९) नीवँ, बुनियाद, मूल, वह जिसके ऊपर कोई चीज़ स्थित हो। (१०) कारण, हेतु, सबब। (११) अवलम्ब, आधार, सहारा। (१२) वृक्षों की सोर, बेख़। (१३) सीसाधातु।

जड़कर्म—मूर्खता की करनी। नीच काम।

जड़ताई—स्तब्धता, अचेतनता, जड़ता। (२) मूर्खता, नासमझी, बेवकूफ़ी।

जत—यत्, जितना, जिस मात्रा का।

जतन—यत्न, उपाय, तदबीर।

जथा—यथा, जैसे, जिस प्रकार। (२) मण्डली, टोली, गरोह। (३) सम्पत्ति, धन, पूँजी।

जदपि—यद्यपि, अगर्चे।

जदुपति—यदुपति, श्रीकृष्णचन्द्र। (२) ययाति।

जन—लोग, मनुष्य, आदमी। (२) गँवार, देहाती, गाँव का रहनेवाला। (३) प्रजा, रैय्यत, रिआया। (४) अनुयायी, सेवक, दास। (५) समूह, समुदाय, झुण्ड। (६) घर, भवन, मकान। (७) सात लोकों में से पाँचवाँ लोक जिसमें ब्रह्मा के मानसपुत्र और बड़े बड़े योगीन्द्र रहते हैं।

जनक—उत्पादक, जन्मदाता। उत्पन्न करनेवाला। (२) पिता, बाप, वालिद। (३) मिथिला के एक राजवंश की उपाधि। ये लोग अपने

पूर्वज निमि विदेह के नाम पर वैदेह भी कहलाते थे। सीताजी इस कुल में उत्पन्न सीरध्वज की पुत्री थीं। इस कुल में बड़े बड़े ब्रह्मज्ञानी उत्पन्न हुए हैं जिनकी कथाएँ ब्राह्मणों, उपनिषदों, महाभारत और पुराणों में भरी पड़ी हैं। रामायण और विनयपत्रिका में 'जनक' शब्द अधिकांश सीरध्वज ही का बोधक है। विशेष 'निमि' शब्द देखो।

जनकजा, जनकात्मजा—सीता, जानकी, जनक राजा की पुत्री।

जननि, जननी—माता, अम्बा, महँतारी।

जनम—जन्म, उत्पत्ति, पैदाइश।

जनाइ—सूचना, जनाव, इत्तिला। (२) जना कर, प्रगट करके, ज़ाहिर करके।

जनाई—जनाया, प्रगट किया, ज़ाहिर किया।

जनावत—'जनाव' का वर्तमान काल। जनाता है। प्रगट करता है। ज़ाहिर करता है। (२) जान पड़ता है, सूचित होता है।

जनि—मत, नहीं, न, निषेधार्थक अव्यय। (२) जन्म, उत्पत्ति, पैदाइश। (३) स्त्री, नारी, जिससे कोई उत्पन्न हो। (४) माता, जननी। (५) पुत्र-बधू। पतोहू। (६) पत्नी, भार्य्या, जोड़ू। (७) जन्मभूमि, पैदा होने की जगह।

जनित—जन्य, जन्मा हुआ, उत्पन्न, उपजा हुआ (२) उत्पन्न किया हुआ। पैदा किया हुआ।

जनियत—जानता हूँ, समझता हूँ।

जनिहै—उत्पन्न करेगी, पैदा करेगी, उपजावेगी। (२) जानेगी, समझेगी।

जनु—मानों, उत्प्रेक्षा अलङ्कार का बाचक।

जने—उत्पन्न किये, जन्माये।

जनै—उत्पन्न करे, जन्मावे, पैदा करे।

जनैगी—उत्पन्न करेगी, उपजावेगी।

जन्ता—यन्त्रणा देनेवाला। दण्ड देनेवाला। शासन करनेवाला। (२) यन्त्र, कला, हुनर। (३) जेता, जीतनेवाला। (४) सूत, सारथी, रथ हाँकनेवाला।

जन्तु—प्राणी, जीव, जन्म लेनेवाला। (२) पशु, जानवर, हैवान। (३) मनुष्य के अतिरिक्त कीट पतङ्गादि देहधारी जीव।

जन्तुकृत—प्राणियों, पशुओं और कीट पतङ्गादिकों का किया हुआ।

जन्म—उत्पत्ति, उद्भव, प्रभव, सम्भव, भव, भाव, जनन, जनि, जनी, जनू, जाति, पैदाइश गर्भ में से निकल कर जीवन धारण करने की क्रिया। (२) जीवन, ज़िन्दगी, जीवित रहने की अवस्था। (३) आविर्भाव, प्रादुर्भाव, अस्तित्व प्राप्त करने का काम।

जन्त्र—यन्त्र, कल, औज़ार। (२) ताला। (३) तान्त्रिक।

जप—किसी मन्त्र वा वाक्य का बार बार धीरे धीरे मन में पाठ करना। पुराणों में जप तीन प्रकार का माना गया है—मानस, उपांशु और वाचिक। मन ही मन मन्त्र का अर्थ मनन करके उसे धीरे धीरे इस प्रकार उच्चारण करना कि जिह्वा और ओंठ में गति न हो, मानस जप कहलाता है। जिह्वा और ओंठ को हिलाकर इस प्रकार उच्चारण करना कि कुछ सुनाई पड़े, उपांशु जप कहाता है। वर्णों का स्पष्ट उच्चारण करना वाचिक जप कहा जाता है। सहस्रगुना फल मानस जप, दशगुना उपांशु और एक गुना फल वाचिक जप का कहा गया है। कुछ लोग चौथा जिह्वा जप भी मानते हैं जो उपांशु के अन्तर्गत है, इस में जिह्वा तो हिलती है पर ओंठ में गति नहीं होती और न उच्चारण सुनाई पड़ता है। इसका फल वाचिक जप से शतगुना माना जाता है।

जन्य—जन्म, उत्पत्ति पैदाइश। (२) पुत्र, बेटा। (३) पिता, बाप। (४) जाति, कुल। (५) राष्ट्रीय, जातीय। (६) उद्भूत, जो उत्पन्न हुआ हो। (७) राष्ट्र, किसी एक देश के बासी। (८) जनसाधारण, साधारण मनुष्य। (९) निन्दा, अपवाद। (१०) वर, दूलह। (११) जामाता, दामाद। (१२) किम्बदन्ती, अफ़वाह। (१३) युद्ध, लड़ाई। (१४) हाट, बाज़ार।

जपयाग—जपयज्ञ, जप, जप ही का यज्ञ।
जपत—जापी, जप करनेवाला। (२) जपने से, आप करने से।
जब—जिस समय, जिस वक्त।
जम—यम, अन्तक, यमराज।
जमगन, जमदूत—यमगण, यमदूत, यम के सेवक।
जमुना—यमुना, भानुनन्दिनी।
जमोग—सामने का निश्चय, तसदीक़।
जमोगिये—जमोग कराइये। मोक़ाबिले जमोगा सरेखी वा तसदीक़ करवाइये।
जय—विजय, जीत, विरोधियों को दमन कर के महत्वस्थापन। (२) अग्निमन्थ, अरणी का वृक्ष।
जयति—जयत, जयेत, जैजैकार।
जयो—विजयी हुआ, जय पाया, जीता। (२) उत्पन्न हुआ, पैदा हुआ।
जर—ज्वर, ताप, बोख़ार। (२) जड़, मूल, सोर। (३) जरा, वृद्धावस्था। (४) जर्जर, नाश वा जीर्ण होने की क्रिया।
जरठ—वृद्ध, बुड्ढा, बूढ़ा। (२) बुढ़ापा, बुढ़ाई। (३) जीर्ण, पुराना। (४) कर्कश, कठिन।
जरत—'जरना' का वर्तमान काल। जलता है। भस्म होता है। (२) डाह से जलना।
जरन—जलन, दाह, जलने की पीड़ा।
जरनि—जरन, जलन, जलने की पीड़ा। (२) व्यथा, दुःख, वेदना। (३) ईर्ष्या, डाह।
जरा—वृद्धावस्था, बुढ़ापा, बुढ़ाई। (२) एक व्याध का नाम जिसके वाण से भगवान कृष्ण-चन्द्र देवलोक सिधारे थे। (३) फ़ारसी भाषा के अनुसार—ज़रा, थोड़ा, कम।
जर्जर—जीर्ण, पुराना, जो बहुत जीर्ण होने के कारण बेकाम हो गया हो। (२) खण्डित, टूटा, टुकड़े टुकड़े हुआ। (३) वृद्ध, बुड्ढा। (४) छरीला, पत्थरफूल।
जल—पानी, सलिल, नीर। (२) खस, वीरण उशीर। (३) सुगन्धबाला, नेत्रबाला।
जलचर—जलजन्तु, जलजीव, पानी में रहने वाले जन्तु। जैसे, मछली, कछुआ आदि।
जलज, जलजात—कमल, कञ्ज, सरोज।
जलजान—पोत, बोहित, जहाज़, जलयान।
जलद—मेघ, बादर, घन। (२) जल देनेवाला। जो पानी दे। (३) कपूर, घन। (४) मुस्ता, नागरमोथा।
जलदनाद—मेघगर्जन, बादलों के गम्भीर शब्द। (२) मेघनाद, इन्द्रजीत, रावण का बेटा।
जलदानि—मेघ, बादल। (२) जल देनेवाला।
जलधि—समुद्र, सिन्धु, सागर।
जलनि—जरनि, जरन, दाह।
जलनिधि—समुद्र, सागर, सिन्धु।
जलपात्र—कमण्डल, लोटा, पानी का बरतन।
जलयान—बोहित, पोत, जहाज़। (२) नाव, नौका, डोंगी, किश्ती, वह सवारी जो जल में काम आती है।
जलरथ—बोहित, जहाज़। (२) नाव, नौका।
जलरुह—कमल, सरोज, कञ्ज।
जल्प—कथन, वर्णन, कहना। (२) प्रलाप, व्यर्थ की बात, बकवाद।
जल्पत—'जलपना' शब्द का वर्तमान काल। व्यर्थ बकवाद करता है। बहुत बढ़ बढ़ कर बात करता है। डींग मारता है। सीटता है।
जव—यव, जौ, एक अन्न का नाम।
जवन—यमन, म्लेच्छ। (२) जौ, जो।
जवास—यवास, जवासा, अनन्ता। एक प्रकार का काँटेदार क्षुप जिसकी पत्तियाँ करौंदे की पत्तियों के समान होती हैं। यह नदियों के किनारे बलुई भूमि में आप से आप उगता है ग्रीष्म ऋतु में खूब हरा भरा रहता है और बरसात का पानी पड़ते ही इसकी पत्तियाँ तुरन्त जल जाती हैं। आश्विन के अनन्तर इस में नवीन पत्ते निकलते हैं।
जस—यश, कीर्त्ति, प्रशंसा। (२) जैसे, जिस प्रकार।
जसी—यशी, यशस्वी, कीर्त्तिवान।

जसुमति—यशुमति, यशोदा, नन्दरानी ।
जहँ—जहाँ, जिस जगह ।
जहँ जहँ—जहाँ जहाँ, जिस जिस स्थान पर ।
जहर—(फ़ारसीभाषा) । ज़हर, विष, माहुर । (२) अप्रियकार्य्य । वह बात जो बहुत नागवार मालूम हो । (३) घातक, प्राण लेनेवाला, मार डालनेवाला । (४) बहुत हानि पहुँचानेवाला ।
जहँलगि } जहाँलौं } —जहाँ पर्य्यन्त, जहाँ तक ।
जहाँ—जहँ, जिस स्थान पर ।
जहान—(फ़ारसीभाषा) । जगत, संसार, दुनियाँ ।
जह्नु—एक राजर्षि का नाम । पुराणों के अनुसार जब भगीरथ गङ्गाजी को लेकर आ रहे थे तब ये मार्ग में यज्ञ कर रहे थे । गङ्गा के कारण यज्ञ में विघ्न होने के भय से इन्हों ने सारा जल पान कर लिया । भगीरथ के बहुत प्रार्थना करने पर फिर गङ्गाजी को कान से निकाल दिया था । तभी से गङ्गाजी का नाम जाह्नवी पड़ा । जह्नु, शब्द के साथ कन्या, सुता, तनया, कन्यका आदि पुत्री वाचक शब्द लगाने से गङ्गा का अर्थ होता है ।
जा—उत्पन्न, सम्भूत । (२) माता, जननी । (३) जो, जिस । (४) फ़ारसीभाषा के अनुसार—उचित, वाजिब, मुनासिब ।
जाइ—जाय, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, वृथा, बे मतलब । (२) गमन कर के, चल कर, जाकर । (३) उत्पन्न कर के, पैदा कर के ।
जाई—पुत्री, कन्या, लड़की । (२) जाती, चमेली । (३) जाइ, जा कर ।
जाउ—जाय, जावे ।
जाउँ—जाता हूँ, जाऊँ ।
जाकी—जिसकी, जिस किसी की ।
जाके—जिसके, जिस किसी के ।
जाग—यज्ञ, याग, मख । (२) जागरण, जागने की क्रिया । (३) स्थान, जगह, ठिकाना । (४) घर, गृह, मकान ।
जागत—'जागना, का वर्तमान कालिक रूप । जागता है । सचेत है । (२) प्रकाशित, फैला हुआ ।
जाँघ—जङ्घ, उरु, जङ्घा ।
जाचक—भिक्षुक, याचक, मंगन ।
जाचकता—मंगनता, भिखारीपन ।
जाचन } जाचना } —याचन, याचना, माँगना ।
जाजी—ऋत्विजी, याजी, यज्ञ करनेवाला ।
जात—जन्म, उत्पत्ति, पैदा । (२) पुत्र, बेटा, लड़का । (३) उत्पन्न, जन्मा हुआ, पैदा हुआ । (४) प्राणी, जीव । (५) व्यक्त, प्रगट । (६) प्रशस्त, अच्छा । (७) जाति, वर्ण । (८) अर्बीभाषा के अनुसार—शरीर, काया, देह । (९) जाना, क्रिया का वर्तमान कालिक रूप । जाता है, गमन करता है ।
जातना—यातना, दुर्गति, सासति ।
जातरूप—सुवर्ण, कञ्चन, सोना ।
जाति—वर्ण, जात, क़ौम, मनुष्य-समाज का वह विभाग जो निवासस्थान व वंश परम्परा के विचार से किया जाता है । (२) कुल, वंश, गोत्र । (३) प्रकार, भाँति, तरह । (४) जाती है । दूर होती है ।
जाती—जाति, वर्ण, क़ौम । (२) चमेली । (३) जावित्री, जायपत्री । (४) जायफल । (५) मालती । (६) गमन करती, चलती है ।
जातुधान—राक्षस, यातुधान, निशाचर ।
जाते—जिससे, जिस कारण से ।
जान—ज्ञान, समझ, जानकारी । (२) अनुमान, अटकल, ख्याल । (३) ज्ञानवान, सुजान, चतुर । (४) फ़ारसीभाषा के अनुसार—प्राण, जीव, दम । (५) सामर्थ्य, शक्ति, जोर । (६) तत्व, सार, सब से उत्तम अंश ।
जानकि } जानकी } —सीता, जनकात्मजा, जनकनन्दिनी ।
जानकीजान } जानकीजानि } जानकीजीवन } —श्रीरामचन्द्र, जानकी के प्राण, जिनकी जानकी भार्य्या हैं । जानकी के जीवनाधार ।

जानकीनाथ, जानकीरमण, जानकीरवन, जानकीश — श्रीरामचन्द्र, जानकी के स्वामी, जानकी को रामनेवाले, जानकीपति।

जानत—'जानना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। जानता है, जनवैया वा जानकार है।

जानिबो— जानना, अनुभव करना, मालूम होना।

जानियत—जानता हूँ, अनुभव करता हूँ, समझता हूँ। (२) ज्ञान, समझ, जानकारी।

जानु—घुटना, जाँघ और पिण्डली के मध्य का भाग। (२) जङ्घ, जङ्घा, रान। (३) जानो, समझो, विचारो।

जाप—जप, किसी मन्त्र की विधि-पूर्वक आवृत्ति। राम नाम वा किसी स्तोत्र का बार बार मन में उच्चारण।

जापक—जपकर्त्ता, जपनेवाला, जाप करनेवाला।

जाप्य—जपने योग्य, जाप करने लायक़। (२) याप्य, निकृष्ट, अधम।

जाम—याम, प्रहर, पहर, दिन-रात्रि का आठवाँ भाग। तीन घण्टे का समय।

जामति—'जामना' का वर्तमान काल। अङ्कुरित होती है, जमती है, उगती है, उपजती है।

जामिनि, जामिनी —रात्रि, रजनी, रात। (२) अर्बीभाषा के अनुसार—ज़मानत करना। किसी के बदले अपने ऊपर जिम्मेदारी लेना।

जामौ—जमै, उत्पन्न हो, उगै, अङ्कुरित हो।

जाय—व्यर्थ, निष्प्रयोजन, वृथा, बेमतलब। (२) जा, जावे, किसी को जाने वा हटने के लिये प्रेरित करना। (३) उत्पन्न, पैदा।

जायगो—जायगा, हटेगा, दूर होगा।

जाया—विवाहिता स्त्री, पत्नी, जोरू। (२) पुत्र, बेटा।

जायासि—(जाया+असि) विवाहिता स्त्री हो। पत्नी हो। भार्य्या हो।

जाये—उत्पन्न हुए, पैदा हुए।

जायो—उपजायो, प्रगटायो।

जारत—'जारना' का वर्तमान काल। जलाता है, भस्म करता है, जला रहा है।

जाल—समूह, वृन्द, समुदाय। (२) किसी प्रकार के तार या सूत आदि का झाँझर दूर दूर पर बुना हुआ पट जिसका व्यवहार मछलियों, चिड़ियों और मृगों को पकड़ने के लिये होता है। जीव-जन्तुओं को फँसाने का फन्दा। (३) गर्व, अभिमान, घमण्ड। (४) झरोखा, खिड़की, मोखा। (५) कुड्मल, कली, बिना खिला हुआ फूल। (६) अर्बीभाषा के अनुसार-धोखा, फ़रेब, झूठी कार्रवाई। वह कृत्य वा उपाय जो किसी को धोखा देने या ठगने के अभिप्राय से हो।

जालिका—जाल, फन्दा, फँसाने वाली वस्तु। (२) समूह, राशि, झुण्ड।

जासु—जिसका। 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के परे प्राप्त होता है।

जासोँ—जिससे, जिस प्रकार से।

जाहि, जाही —जिसको, जाको। (२) जिससे, जासोँ। (३) चमेली के समान एक सुगन्धित फूल।

जिअउँ—जीवित हूँ, जीता हूँ।

जिउ—जीव, प्राण, दम।

जिए—जीवित हुए, जी उठे।

जित—जिधिर, जिस ओर, जिसतरफ़। (२) जित्, जेता, जीतनेवाला। (३) जीत, विजय। (४) पराजित, जिसे दूसरे ने जीत लिया हो।

जितई—जिताया, विजय दिया। जीतनेवाला बनाया।

जिता—जेता, विजयी, जीतनेवाला।

जितेन्द्रिय—जिसने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया हो। जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में हों। जो इन्द्रियासक्त न हो। (२) शान्त, सम-वृत्तिवाला।

जितै—जिधर, जिस ओर।

जितैया—विजयी, जीतनेवाला, जितवैया।

जितैहो—जिताओगे, जीत कराओगे।

जितो—जितना, जिस मात्रा से। (२) विजय किया। जीत लिया।

जित्यो—जीता, जीत लिया।

जिन—'जिस' का बहुवचन, जिन्ह। (२) अर्बी भाषा के अनुसार मुसलमानी भूत, जिन्द।

जिमि—यथा, ज्यों, जैसे, जिस प्रकार से। (२) उदाहरण और उत्प्रेक्षा अलङ्कार का वाचक।
जिय—मन, चित्त, हृदय। (२) जीव, प्राणी, शरीरधारी।
जियत—'जीना' का वर्त्तमान काल, जीता है। जीवित है। (२) जीता हूँ, जीवित हूँ।
जिव—जीव, प्राण, दम।
जिष्णो—विजयी, जीतनेवाला, विजय प्राप्त करनेवाला। (२) इन्द्र, शक्र, मघवा। (३) विष्णु केशव, नारायण। (४) सूर्य्य, भानु, रवि। (५) अर्जुन, पारथ।
जिस—'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के परे प्राप्त होता है, जैसे—जिसने, जिसमें, जिसका, जिसको, जिस पर आदि।
जिह्वा—जीभ, रसना, ज़बान।
जी—मन, चित्त, तबीयत, दिल। (२) जीव, प्राण, दम। (३) साहस, हियाव, हिम्मत। (४) सङ्कल्प, विचार, इच्छा। (५) एक सम्मान सूचक शब्द जो किसी के नाम के पीछे लगाया जाता है, जैसे—रामचन्द्रजी, भरतजी आदि। (६) किसी बड़े के कथन प्रश्न या सम्बोधन के उत्तर रूप में जो संक्षिप्त प्रति सम्बोधन होता है उसमें प्रयुक्त होता है, जैसे—यह कथा कैसी रसीली है? जी हाँ अवश्यमेव।
जीकी—मन की, चित्त की, हृदय की।
जीको—चित्त को, मन को, दिल को।
जीत—विजय, फ़तह। (२) लाभ, फ़ायदा।
जीभ—जिह्वा, रसना, रसज्ञा, रसला, रसिका, रसाङ्का, जीहा, जीह, ज़बान, मुख के भीतर रहनेवाली वह इन्द्रिय जिससे, खट्टा, मीठा, लवण आदि रसों का अनुभव और शब्दों का उच्चारण होता है। (२) गिरा, वाणी, वह शक्ति जिसकी सहायता से मनुष्य बातें करता है, बोलने की शक्ति।
जीय—जीव, प्राण। (२) जी, मन, चित्त।
जीर्ण—प्राचीन, पुराना, जीरन, बहुत दिनों का। (२) अत्यन्त वृद्ध, बहुत बुड्ढा, बुढ़ाई से जर्जर। (३) जो पुराना होने के कारण टूट फूट या सड़ गया हो। (४) परिपक्व, जठराग्नि में जिसका परिपाक हुआ हो।
जीव—प्राण, आत्मा, जीवात्मा, जान, जीवनतत्व। प्राणियों के चेतनता का सार। (२) प्राणी, जीवधारी, शरीरी, जानदार। (३) बृहस्पति, सुरगुरु। (४) जीवन, ज़िन्दगी।
जीवत—'जीना' शब्द का वर्त्तमान काल। जीता है, जीवित है।
जीवन—ज़िन्दगी, जीवित रहने की अवस्था, जन्म और मृत्यु के बीच का काल। वह दशा जिसमें प्राणी अपनी इन्द्रियों द्वारा चेतन व्यापार करते हैं। (२) प्राणधारण, जीने का व्यापार, जीवित रहने का भाव। (३) प्राणाधार, परमप्रिय, जिसके कारण कोई जीता रहे, जीवित रखनेवाली वस्तु। (४) पानी, उदक, जल। (५) पवन, वायु, हवा। (६) वृत्ति, जीविका, रोज़ी। (७) जीवक नामक औषधि।
जीह } —जीभ, जिह्वा, रसना।
जीहा }
जु—जो, एक सम्बन्धवाचक सर्वनाम। (२) यदि, अगर।
जुग—युग, एक संख्यावद्ध समय। जैसे सतयुग आदि। (२) युग्म, युगल, जोड़ा। (३) जत्था, गुट्ट, गोल। (४) पीढ़ी, पुश्त। (५) चार की संख्या।
जुगजुग—चिरकाल, बहुत दिन।
जुगत—युक्त, मिला हुआ। (२) युक्ति, तदबीर।
जुगल—युगल, युग्म, जोड़ा।
जुगुति—युक्ति, उपाय, तदबीर।
जुड़ाये—शीतल किए, शान्त किए, ठण्ढा किए।
जुड़ायो—शीतल किया, तृप्त किया, सन्तुष्ट किया।
जुत—युत, युक्त, सहित।
जुरी—जुटी, जुड़ी, सम्बद्ध हुई। (२) मिली प्राप्त हुई।
जुवति } —युवती, स्त्री, तरुणी।
जुवती }

जुवा—युवा, तरुण, जवान। (२) जुआ, द्यूत।
जू—जी, एक आदर सूचक शब्द जो व्रज, बुँदेलखण्ड, राजपूताना आदि में बड़े लोगों के नाम के साथ लगाया जाता है। जैसे—कन्हैयाजू। (२) एक निरर्थक शब्द जो प्रायः पाद पूर्त्ति के लिए कविलोग हिन्दी कविता में प्रयोग करते हैं। जैसे-मञ्जु सुशील जु ते नदलाल को मारैं छरी सों खरी व्रज नारी।
जुआ—द्यूत, कैतव, जुआ।
जूझना—युद्ध करना, लड़ना। (२) युद्ध में प्राण त्याग करना, लड़ कर मर जाना।
जूझै—युद्ध करै, लड़ै। (२) लड़ कर प्राण गँवावे।
जूट—जुट्ट, जूड़ा, जटा की गाँठ। (२) जटा, लट। (३) पटसन, पटसन का बना कपड़ा।
जूठ, जूठन—उच्छिष्ट भोजन, किसी के आगे का बचा हुआ भोजन। वह भोजन जिसमें से कुछ अंश किसी ने मुँह लगा कर खाया हो। (२) भुक्त पदार्थ। उच्छिष्ठ, जूठा। जिसमें किसी ने खाने के लिये मुँह लगा कर छोड़ दिया हो।
जूड़ी—कम्पज्वर, शीतज्वर, जड़ैया का बोखार। वह ज्वर जिसमें ज्वर आने के पहले रोगी को जाड़ से कँपकँपी उत्पन्न होती है।
जूड़े—शान्त, शीतल, ठण्ढे।
जे—'जो' का बहुवचन, जेइ, एक सम्बन्ध वाचक सर्वनाम।
जैजे—जेइ जेइ, जिसने जिसने।
जेता—विजयी, जीतनेवाला, विजय प्राप्त करनेवाला। (२) जितना, जिस क़दर।
जेताग्रणी—विजयी के प्रधान, जीतनेवालों में अगुवा। विजय प्राप्त करनेवालों के सरदार।
जेते—जितने, जिस क़दर के।
जेर—(फ़ारसीभाषा-ज़ेर)। परास्त, पराजित, हराया हुआ। (२) परेशानी उठानेवाला। हैरानी भोगनेवाला। जो बहुत तङ्ग किया जाय।
जेरो—ज़ेर, परास्त, हराया हुआ।
जेंवरी—रस्सी, डोरी, जेंवरि, जेंवरी, बाध, सुतली आदि। सूत, सन, पटुआ, मूज, बगई आदि का बटा हुआ पतला धागा जिसको कई प्रकार से मोटा और पतला बट कर भिन्न भिन्न कामों में प्रयोग करते हैं।
जेंवाइय—भोजन कराइये, जेंवाइये, खिलाइये।
जेहि—जिसको, जिसे।
जेहितेहिं—जिसको तिसको, जिसे तिसे।
जै—जय, जीत, विजय। (२) जितने, जिस संख्या में। (३) स्तुति सूचक शब्द, जैजैकार।
जैजै—जयजय, जैजैकार।
जैति—जयति, जयप्राप्त, विजय पाये हुए।
जैसी—जिस प्रकार की, जिस ढङ्ग की।
जैसे—जिस आकृति के, जिस प्रकार से।
जैसेतैसे—जिस किसी प्रकार से।
जैसो—जैसा, जिस तरह का।
जैहै—जायगा, कूच करेगा।
जैहो—जाओगे, गमन करोगे।
जो—ज्यों, जैसे, जिस प्रकार से। जिस तरह से। जिस भाँति। (२) यदि, अगर। (३) एक सम्बन्ध वाचक सर्वनाम जिसके द्वारा कही हुई संज्ञा या सर्वनाम के वर्णन में कुछ और वर्णन की योजना की जाती है।
जोइ—जो, ज्यों, जैसे। (२) पत्नी, भार्या, जाया।
जोई—देखा, निहारा, अवलोकन किया। (२) जो, जोइ, जिस प्रकार से।
जोग—योग, समाधि, ध्यान। (२) योग्य, समर्थ, लायक़। (३) संयोग, इत्तिफ़ाक़। (४) मिलाप, मेल। (५) सम्बन्ध, तअल्लुक़। (६) समीप, निकट। (७) शुभघड़ी, मङ्गल का समय, अच्छा अवसर।
जोगवत—'जोगवना' क्रिया का वर्त्तमान कालिक रूप। रक्षित रखने का भाव। किसी वस्तु को यत्न से रखने की क्रिया जिसमें वह नष्टभ्रष्ट न होने पावे। (२) सञ्चित करता है। एकत्र करता है। बटोरता है। (३) आदर करता है। लिहाज़ रखता है। (४) जाने देता है। दर गुज़र करता है। (५) पूर्ण करता है। पूरा करता है।
जोगी—योगी, वह जो योग करता हो।

जोति—ज्योति, टेम, दीपक की लौ।
जोती—ज्योति, जोति, प्रकाश। (२) कुरेदी हुई। हल चलाई हुई धरती। (३) घोड़े की रास। लगाम।
जोतो—जोते, हल चलाये।
जोपि } —यद्या, यद्यपि, अगर्चे। (२) अगर, यदि।
जोपै }
जोवन—यौवन, युवावस्था, जवानी।
जोर—समानता, बराबरी, जोड़। (२) फ़ारसी-भाषा के अनुसार-ज़ोर, बल, शक्ति, ताक़त। (३) प्रबलता, तेजी, बढ़ती। (४) अधिकार, वश, क़ाबू। (५) आवेश, वेग, झोंक। (६) भरोसा, आसरा, सहारा। (७) परिश्रम, महिनत। (८) व्यायाम, कसरत।
जोरि—सम्मिलित कर के, मिला कर, जोड़ कर।
जोरिबे—जोड़िबे, जुटाने वा मिलाने को।
जोवत—'जोवना' शब्द का वर्तमान काल। जोहता है, इन्तज़ार करता है। (२) देखता है, निहारता है। (३) ढूँढ़ता है, तलाश करता है। (४) आसरा करता है, राह देखता है।
जोहै—देखै, निहारै। (२) ढूँढ़े, तलाशै।
जौ } —यदि, अगर, जो। (२) जव। (३) यव,
जौं } धान्यराज।
जौन—यः, जो, जवन। (२) यमन, म्लेच्छ।
जौपै—जोपै, यदि, अगर।
जौलों—जबलग, जबतक
ज्यायो—जिलाया, जिआया हुआ, पाला हुआ।
ज्यों—जैसे, जिस प्रकार से, जिस तरह से।
ज्योंज्यों—जैसे जैसे, जिस जिस प्रकार से।
ज्योंत्यों—जैसे तैसे, जिस तिस प्रकार से।
ज्योंहीं—जैसे ही, जिस भाँति से भी।
ज्वर—ताप, जर, बोख़ार। देह की वह गरमी जो स्वाभाविक से अधिक हो और शरीर की अस्वस्थता प्रगट करे। सुश्रुत चरक आदि ग्रन्थों में ज्वर सब रोगों का राजा और आठ प्रकार का माना गया है। (२) उष्णता, दाह, ज़लन, गरमी।
ज्वाल—अर्चि, शिखा, लौ, आग की लपट।
ज्वालमाला—अग्निशिखा का समूह। अर्चिमालिका, लौ की राशि, लपट की श्रेणी।
ज्वाला—अग्निशिखा, लौ, ज्वाल, लपट। (२) ताप, जलन, गरमी। (३) तक्षक की पुत्री ज्वाला जिससे ऋद्र ने विवाह किया था।

(झ)

झ—हिन्दी वर्णमाला का नवाँ व्यञ्जन जो चवर्ग का चौथा वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान तालू है। (२) वृहस्पति, सुरगुरु। (३) ध्वनि, गुञ्जार, शब्द। (४) तीव्र वायु। झञ्झाबात, वर्षा मिली हुई तेज आँधी।
झकझोरा—झटका, धक्का, झोंका। (३) झोंकेदार, जिसमें बार बार झटका वा धक्का लगता हो।
झगरो—झगड़ा, लड़ाई, कलह, टण्टा, बखेड़ा, हुज्जत, तकरार। दो मनुष्यों का परस्पर आवेश-पूर्ण विवाद।
झट—तत्क्षण, तुरन्त, फ़ौरन, झटपट।
झाँई—प्रतिविम्ब, छाया, परछाहीं। (२) अन्धकार, अँधेरा। (३) धोखा, छल, दग़ाबाज़ी। (४) प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि। शब्द का गुञ्जार। (५) एक प्रकार के हलके काले धब्बे जो रक्त-विकार से मनुष्यों के मुखमंडल वा शरीर पर पड़ जाते हैं।
झारी—झार, समूह, झुण्ड। (२) सम्पूर्ण, समस्त, सब। (३) केवल, निपट, एक मात्र। (४) लुटिया की तरह एक प्रकार का पात्र जिसमें जल गिराने के लिए टोंटी लगी रहती है। (५) झाड़ी, झाड़झङ्खाड़। छोटे छोटे पेड़ों का झुरमुट वा उपवन।
झिल्लि } —झिल्लिका, झिल्लीक, झींगुर। (२)
झिल्ली } ऐसी पतली चीज़ जिसके भीतर ढँकी हुई वस्तु दिखाई दे। जैसे-चमड़े की झिल्ली। (३) अत्यन्त सूक्ष्म त्वचा, बहुत बारीक छिलका। (४) अत्यन्त पतला, बहुत बारीक।
झुठाई—असत्यता, झूठापन, झूठे का भाव।

झूठ—असत्य, मिथ्या, सच का उलटा। वह बात जो यथार्थ न हो। वह कथन जो वास्तविक स्थिति के विपरीत हो।

(ञ)

ञ—हिन्दी वर्णमाला का दसवाँ व्यञ्जन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान तालू और नासिका है।

(ट)

ट—हिन्दी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यञ्जन जो टवर्ग का पहला वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके उच्चारण करने में तालू से जीभ लगानी पड़ती है। (२) वामन, बौना। (३) शब्द, आवाज़। (४) चतुर्थांश, चौथाई भाग। (५) नारियल का खोपड़ा।

टई—कपर्द्दिका, कौड़ी, टइया। (२) टही, युक्ति, मतलब निकालने का घात।

टकटोरि—स्पर्श द्वारा अनुसन्धान कर के। हाथ से छूकर पता लगा के। टटोल कर। (२) ढूँढ़ कर, खोज कर, तलाश कर के।

टरत—'टरना' का वर्त्तमान काल। हटता है, दूर होता है, एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता है।

टहल—सेवा, शुश्रूषा, ख़िद्मत, चाकरी।

टाँच—टाँका, डोभ, सिलाई। (२) भाँजी, दूसरे का काम बिगाड़नेवाली बात।

टाँचन—'टाँच' का बहुबचन। टाँकन, सीवन।

टाँचो—टँका हुआ, सिया हुआ।

टाटिका—टाटी, टट्टी, टट्टर, टटरा, बाँस की फट्टियों-सरई-रहठा आदि को परस्पर जोड़ कर वा फैला कर बाँधा हुआ परदा जो आड़, रोक या रक्षा के लिए बनाया जाता है।

टाटी—टाटिका, टट्टी, टटरी।

टारी—हटाया, खसकाया, सरकाया, दूर कर दिया। (२) निवारण किया, मिटा दिया, न रहने दिया। (३) पलट दिया, फेर दिया। (४) बचाया, तरह दिया।

टूटत—'टूटना' का वर्त्तमान कालिक रूप। टूटता है। भग्न होता है। खण्ड खण्ड होता है। टुकड़े टुकड़े होता है।

टेक—हठ, ज़िद, दृढ़सङ्कल्प। मन में ठानी हुई बात। (२) अवलम्ब, आश्रय, सहारा। (३) थाम, थूनी, टिकने या भार देने की वस्तु। (४) संस्कार, बान, टेव, आदत। (५) गीत का वह पद या टुकड़ा जो बार बार गाया जाय।

टेर—पुकार, बुलाहट, हाँक। (२) निर्वाह, निबाह, गुज़र। (३) स्वर, तान, टीप।

टेव—प्रकृति, बान, आदत।

टोटका—तान्त्रिक प्रयोग, यन्त्र मन्त्र, टोना। किसी बाधा को दूर करने तथा मनोरथ सिद्ध करने के लिए कोई ऐसा प्रयोग जो किसी अलौकिक या दैवी शक्ति पर विश्वास करके किया जाय।

(ठ)

ठ—हिन्दी वर्णमाला का बारहवाँ व्यञ्जन जो टवर्ग का दूसरा वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है। (२) शून्य, खाली स्थान। (३) गोचर, इन्द्रिय ग्राह्य वस्तु। (४) मण्डल, घेरा। (५) चन्द्रमण्डल, चन्द्रमा का बिम्ब। (६) महाध्वनि, महान् शब्द। (७) शिव, महादेव।

ठई—दृढ़ सङ्कल्प, पक्का इरादा। ठान ठाना। किसी काम के करने का पक्का मनसूबा कर लेना। दृढ़ता से किसी बात का निश्चय करना।

ठग—वञ्चक, प्रतारक, छली, धूर्त्त बटपार, धोखेबाज़। वह लुटेरा जो छल और धूर्त्तता से पराये का माल हरता है। जबर्दस्ती से पराया धन लूटनेवाला। मित्रता दिखा कर छल से भुलावे में डाल कर दूसरों का माल अपहरण करनेवाला।

ठगहारी—ठगपना, ठगी, बटपारी।

ठनि—ठन कर। तत्परता के साथ कार्यारम्भ करना।

ठनियत—ठानता हूँ, सन्नद्ध होता हूँ।

ठहर—स्थान, ठौर, जगह। (२) चौका, रसोई के लिए मिट्टी से पोती हुई ज़मीन।

ठाईं } ठाँव }—स्थान, ठहर, जगह।

ठाकुर—स्वामी, प्रभु, मालिक। (२) अधिष्ठाता, नायक, सरदार, किसी प्रदेश का अधिपति। (३) ज़मींदार, गाँव का मालिक। (४) ईश्वर, परमेश्वर, भगवान। (५) देव-मूर्त्ति, विशेष कर विष्णु के अवतारों की प्रतिमा।

ठाढ़—खड़ा, बैठने का उलटा। (२) समूचा, साबित, जो पिसा या कुटा न हो।

ठाढ़े—खड़े, बैठने के विपरीत।

ठाँय } ठाँव }—स्थान, ठौर, जगह।

ठिकाना—निवास-स्थान, रहने की जगह, ठहरने का ठौर। (२) स्थान, ठौर, जगह। (३) निर्वाह करने का स्थान। जीविका का सहारा। (४) प्रमाण, ठीक, ठहराव। (५) प्रबन्ध, आयोजन, बन्दोबस्त। (६) अन्त, पारावार, हद। (७) स्थित करना, अड़ाना, ठहराना।

ठीक—यथार्थ, प्रामाणिक, जैसा होना चाहिए वैसा ही। (२) शुद्ध, सही, जिसमें भूल न हो। (३) उचित, योग्य, मुनासिब। (४) उत्तम, भला, अच्छा। (५) दुरुस्त, सीधा दुरुस्त, प्रतिकूल न हो। (६) निश्चित्, पक्का, ठहराया हुआ। (७) योग, जोड़, मीज़ान।

ठोस—दृढ़, कड़ा, मज़बूत, जो भीतर से खाली न हो। जिसके भीतर खाली स्थान न हो। ठस्स। भरा हुआ।

ठौर—स्थान, ठाँव, जगह। (२) अवसर, घात, मौक़ा।

(ड)

ड—हिन्दी वर्णमाला का तेरहवाँ व्यञ्जन जो टवर्ग का तीसरा वर्ण है। इसका उच्चारण आभ्यन्तर प्रयत्न द्वारा तथा जिह्वा के मध्य को मूर्द्धा में स्पर्श कराने से होता है। (२) डर, भय, शङ्का।

डग—परग, फाल, कदम, चलने में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैर उठा कर रखने की क्रिया।

डगर—मार्ग, पन्थ, पैंड़ा, राह, रास्ता। (२) राजमार्ग, शाहीसड़क, राजडगर।

डगे—'डगना' का भूतकालिक रूप। डग गये, हिल गये, स्थान से भ्रष्ट हुए। (२) चूके, भूले, ग़लती कर गये।

डग्यो—डगे, डग गये, खसक पड़े।

डमरु } डमरू }—एक बाजा जिसका आकार बीच में पतला और दोनों सिरों की ओर बराबर चौड़ा होता जाता है। दोनों सिरों पर चमड़ा मढ़ा होता है। इसके बीच में दोनों तरफ़ बराबर बढ़ी हुई डोरी बँधी रहती है जिसके दोनों छोरों पर सूत की घुण्डी लगी होती है। बीच में हाथ से पकड़ कर जब यह बाजा हिलाया जाता है तब दोनों घुण्डियाँ चमड़े पर पड़ती हैं और शब्द होता है। यह बाजा शिवजी को बहुत प्रिय है। बन्दर नचाने वाले और मदारी लोग भी इसी प्रकार का बाजा बजाते हैं।

डर—भय, त्रास, ख़ौफ़।

डरत—'डरना' का वर्त्तमान कालिक रूप। भयभीत होता है। डरता है।

डरपहि—डरै, भयभीत हो।

डरु—डर, भय, त्रास।

डहकत—'डहकना' का वर्त्तमान कालिक रूप। छल करता है। ठगता है, जटता है, धोखा देता है। (२) विलाप करता है, बिलखता है। (३) छितराता है। फैलाता है।

डहकायो—डहकाया, धोखा खाया, ठगा गया, जटा गया। (२) विलाप किया, रोया।

डाकिन } डाकिनि } डाकिनी }—डाइन, चुड़ैल, एक पिशाचिनी जो काली के गणों में मानी जाती है।

डाढ़न—'डाढ़ा' का बहुवचन। अग्नि, दावानल, वन की आग। (२) दाह, ताप, जलन।

डारि—डाल कर, छोड़ कर, बहा कर, फेंक कर।

डासत—'डासना' का वर्त्तमान काल। बिछाता है, डालता है, फैलाता है। (२) डसाते हुए, बिछाते हुए।

डिम—नाटक वा दृश्य काव्य का एक भेद जिसमें माया,इन्द्रजाल,भूत-प्रेतों की लीला,लड़ाई और क्रोध आदि का समावेश विशेष रूप से होता है।

डिमडिम—डिमडिम, डिमडिमी, डुग्गी, डुगडुगिया, डफला। चमड़ा मढ़ा हुआ एक बाजा जो हाथ से लकड़ी द्वारा बजाया जाता है ।

डिम्भ—शिशु, बच्चा, छोटाबालक । (२) मूर्ख, बेवकूफ़, जड़ मनुष्य।(३) आडम्बर, पाखण्ड। (४) अभिमान, घमण्ड ।

डुलावौं—डोलाता हूँ, दौड़ाता हूँ।

डेरा, डेरो —टिकान, ठहराव, पड़ाव, थोड़े काल के लिए निवास। (२) छावनी, कैम्प, टिकने के लिए साफ किया और छाया स्थान। (३) तम्बू, छोलदारी, खेमा। (४) घर, निवासस्थान, मकान। (५) मण्डली गोल, नाचने गाने वालों का दल।

डोरि, डोरी —रज्जु, रसरी रस्सी ।(२) सूत, डोरा, धागा । (३) जेवरि, बाध, कई तागों को बट कर बनाई हुई वस्तु जिससे कुएँ से जल निकालना, किसी को बाँधना, खाट बुनना आदि तरह तरह के काम लिए जाते हैं, जैसे—पानी खींचने की डोरी, बाँधने की डोरी, वंसी की डोरी इत्यादि, ।

डोल—हिंडोला, झूलना, पालना। (२) शिविका, पालकी, डोली। (३) लोहे का एक गोल बरतन जिसे कुएँ में लटका कर पानी खींचते हैं।

डोला—शिविका, पालकी, डोली, खड़खड़िया, मियाना, वह सवारी जिसको कहार कन्धों, पर लेकर चलते हैं। (२) चण्डोल, वह सवारी जो खटोले में लकड़ी बाँध कर और बाँस लगाकर पालकी की तरह कहार ढोते हैं। इसको प्रायः डोली वा डोला कहते हैं।

डोलाऔं—डुलाता हूँ, चलाता हूँ, फिराता हूँ, दौड़ाता हूँ, घुमाता हूँ।

(ढ)

ढ—हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यजन और टवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण स्थान मूर्धा है। (२) ध्वनि, नाद, शब्द । (३) सर्प, साँप। (४) श्वान, कुत्ता। (५) बड़ाढोल।

ढङ्ग—शैली, पद्धति, क्रियाप्रणाली, ढब, तौर, तरीक़ा। (२) प्रकार, भाँति, तरह। (३) रचना, गढ़न, बनावट, ढाँचा । (४) युक्ति, उपाय, तद्बीर। (५) आचरण, व्यवहार, बर्ताव। (६) मिस, बहाना, हीला । (७) आभास, लक्षण, आसार। (८) दशा, अवस्था स्थिति।

ढरत—'ढरना' का वर्त्तमान कालिक रूप, अनुकूल होता है, प्रसन्न होता है, रीझता है।

ढरनि—सहजकृपालुता, स्वाभाविककरुणा, दयाशीलता, दीन की दशा पर हृदय द्रवीभूत होने की क्रिया । (२) चित्त की प्रवृत्ति, झुकाव, किसी ओर लटकना। (३) गति, हरकत, हिलने डोलने की क्रिया। (४) पतन, गिरने वा पड़ने की क्रिया।

ढरिये—स्वाभाविक दया कीजिए, सहज कृपा दरशाइये। (२) अनुकूल वा प्रसन्न हूजिए।

ढिग—समीप, निकट, नज़दीक । (२) तट, किनारा, तीर ।

ढिठाई—धृष्टता, चपलता, गुस्ताख़ी, गुरुजनों के समीप व्यवहार की अनुचित स्वच्छन्दता। (२) निर्लज्जता, बेहयाई, लोकलज्जा का अभाव।

ढीठ—धृष्ट, बेअदब, शोख़, गुस्ताख़, बड़ों का लिहाज़ न रखनेवाला। (२) साहसी हिम्मतवर, किसी बात से जल्दी न डर जानेवाला।

ढीठे—ढीठ, बेअदब, गुस्ताख़।

ढील—अतत्परता, शिथिलता, अनुचित विलम्ब। सुस्ती। (२) बन्धन जो बहुत कसा हो उसे ढीला करने का भाव। (३) जूँ, जुआँ।

(ण)

ण—हिन्दी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यञ्जन और टवर्ग का पाँचवाँ अक्षर। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके उच्चारण में आभ्यन्तर प्रयत्न स्पष्ट और सानुनासिक है, बाह्य प्रयत्न

सम्वार, नाद, घोष और अल्पप्राण है। (२) ज्ञान, विवेक। (३) निर्णय, तसफ़िया (४) आभूषण, गहना। (५) शिव, रुद्र। (६) दातव्य, दान।

(त)

त—हिन्दी वर्णमाला का सोलहवाँ व्यञ्जन और तवर्ग का पहला अक्षर, इसका उच्चारण स्थान दन्त है। (२) अमृत, सुधा। (३) नाव, नौका। (४) तस्कर, चोर। (५) पुण्य, सुकृत। (६) असत्य, झूठ। (७) पूँछ, दुम। (८) गोद, कनियाँ। (९) गर्भ, हमल। (१०) म्लेच्छ, यमन। (११) शठ, खल। (१२) रत्न, जवाहिरात। (१३) तो, तब।

तइ—तपा कर, आँच देकर, जला कर।

तई—तपाया, जलाया, आँच दिया।

तउ / तऊ —तो भी, तब भी, तिस पर भी, तथापि। (२) त्यों, तैसे।

तक—पर्य्यन्त, एक विभक्ति जो किसी वस्तु या व्यापार की सीमा सूचित करती है। (२) टक, टकटकी लगा कर देखना।

तकत—'तकना' का वर्त्तमान काल, अवलोकन करता है, निहारता है, देखता है। (२) आश्रय-लेता है, शरण लेता है, पनाह लेता है।

तकिया—(अर्बी भाषा) आश्रय, सहारा, आसरा, ज़रिया। (२) कपड़े की चौकोर वा गोली थैली जिसमें रूई या पर आदि भर कर सिर के नीचे रखते हैं। वही बड़ी बनाकर ओठगने के काम में आती है उसको मसनद कहते हैं।

तकु—अवलोकन कर, निहार, देख। (२) आश्रय ले, शरण ले, पनाह लेवे।

तज—परित्याग कर, त्याग दे, छोड़ दे। (२) त्याग, ग्रहण का उलटा। (३) दालचीनी। (४) तमाल का वृक्ष।

तजत—'तजना' का वर्तमान कालिक रूप। त्यागता है, छोड़ता है, तजता है।

तज्यो—त्याग किया, परित्याग किया, तज दिया।

तट—कूल, किनारा, तीर। (२) समीप, निकट, पास, नज़दीक। (३) क्षेत्र, खेत। (४) प्रदेश।

तटिनी—नदी, सरिता, दरिया।

तटी—तट, कूल, किनारा। (२) नदी, तटिनी, सरिता। (३) घाटी, तराई।

तड़ित—बिजली, चपला, चञ्चला।

तण्डुल—चावल, अक्षत, चाउर।

ततकाल / तत्काल —तत्क्षण, तुरन्त, फ़ौरन, उसी वक़्त।

तत्पर—सन्नद्ध, उद्यत, मुस्तैद। (२) दक्ष, निपुण, होशियार।

तत्व—वास्तविकता, यथार्थता, असलियत। (२) ब्रह्म, परमात्मा, जगत के मूल कारण। (३) पञ्चभूत अर्थात् पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। (४) सारांश, सारवस्तु, हीर।

तत्वदर्शी / तत्वज्ञ । तत्वज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी, जो तत्व जानता हो, जिसे ब्रह्म, सृष्टि और आत्मा आदि के सम्बन्ध का यथार्थ ज्ञान हो।

तत्क्षण—तत्काल, तुरन्त, फ़ौरन।

तथा—इसीप्रकार, इसी तरह, ऐसे ही। (२) और, व, वो, (३) समानता, बराबरी। (४) निश्चय, ध्रुव। (५) सीमा, हद। (६) सत्य सही।

तथापि—तौ भी, तिस पर भी, तब भी।

तथास्तु—एवमस्तु, ऐसा ही हो, इसी प्रकार हो। (२) तथैव, वैसा ही, उसी प्रकार हो।

तथ्य—सत्यता, यथार्थता, सचाई।

तद्—तदा, तब, उस समय। (२) वह, उसका।

तदनन्तर—उसके उपरान्त, उसके पीछे, उसके बाद। (२) तदन्तर, इस के उपरान्त, इस के बाद।

तदपि—तौ भी, तिस पर भी, तथापि।

तद्भ्रात—उसका बन्धु, उसका भाई।

तन—तनु, शरीर, देह।

तनय—पुत्र, बेटा लड़का।

तनया—पुत्री, बेटी, लड़की।

तनु—शरीर, देह, गात, बदन, जिस्म। (२) अल्प, थोड़ा, तनिक। (३) दिशा, तरफ़, कहती। (४) कृश, दुर्बल, दूबर। (५) सुन्दर, मनोहर, बढ़िया। (६) कोमल, मुलायम, नाज़ुक। (७) त्वक्, खाल, चमड़ा। (८) स्त्री, नारी, औरत। (९) ज्योतिष में लग्न-स्थान। (१०) केंचुलो, साँप की केंचुल।

तन्तु—सूत, डोरा, तागा। (२) ताँत, चमड़े या नसों की बनी हुई डोरी। (३) ग्राह, मगर। (४) विस्तार, फैलाव। (५) शीघ्रता, उतलही, जल्दी। (६) सन्तति, सन्तान, बालबच्चे। (७) वंश की परम्परा। (८) यज्ञ की परम्परा।

तन्मय—लवलीन, दत्तचित्त, लीन, लगा हुआ।

तन्त्र—अधिकार, हक़। (२) उपाय, तदबीर। (३) अधीनता, परवश्यता। (४) कार्य्य, काम। (५) निश्चित सिद्धान्त, पक्का मत। (६) सूत, डोरा। (७) तन्तु, ताँत। (८) वस्त्र, कपड़ा। (९) प्रमाण, सबूत। (१०) औषध, दवा। (११) कारण, हेतु। (१२) राज्य, शासनकाल। (१३) राजकर्मचारी, राजा के नौकर। (१४) राज्यप्रबन्ध, राज्य का इन्तिज़ाम। (१५) पद, ओहदा। (१६) श्रेणी, वर्ग, कोटि। (१७) समूह, बेशुमार। (१८) शपथ, कसम। (१९) घर, मकान। (२०) दल, फ़ौज। (२१) आनन्द, प्रसन्नता। (२२) कुल, खानदान। (२३) उद्देश्य, लक्ष्य। (२४) झाड़ने फूँकने का मन्त्र। (२५) हिन्दुओं का उपासना सम्बन्धी एक शास्त्र जिसके विषय में बहुत लोगों को विश्वास है कि यह शिव प्रणीत है।

तन्त्रशास्त्र—वह शास्त्र जिसमें मारण, उच्चाटन, मोहन, वशीकरण आदि अनेक प्रकार की सिद्धियों के लिए तन्त्रोक्त मन्त्रों द्वारा साधन की क्रियाएँ वर्णित हैं। इस शास्त्र का सिद्धान्त है कि कलियुग में वैदिक मन्त्रों, जपों और यज्ञादि का कोई फल नहीं होता; इस युग में सब प्रकार के कार्य्यों की सिद्धि के लिए तन्त्र-शास्त्र में वर्णित मन्त्रों और उपायों से ही सहायता मिलती है। यह शास्त्र प्रधानतः शाक्तों का है मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन, इन पञ्च मकारों को तान्त्रिक सेवन करते हैं, उनकी चक्रपूजा प्रसिद्ध है। धोबिन, तेलिन आदि स्त्रियों को नङ्गी करके उनकी पूजा करते हैं तथा मद्य, मांस और मत्स्य का अधिकता से व्यवहार करते हैं परन्तु इस शास्त्र के सिद्धान्त और प्रयोग आदि क्रियाएँ बहुत गुप्त रक्खी जाती हैं।

तप—तपस्या, शरीर को कष्ट देनेवाले वे व्रत और नियम आदि जो चित्त को शुद्ध एवम् विषयों से निवृत्त करने के लिए किये जाँय। (२) शरीर या इन्द्रिय को वश में रखने का धर्म्म। (३) नियम, उपासना। (४) अग्नि, पावक। (५) एक लोक का नाम। (६) एक कल्प का नाम। (७) ताप, गरमी। (८) ज्वर, बोख़ार। (९) ग्रीष्मऋतु। ज्येष्ठ और आषाढ़ का महीना।

तपत—'तपना' का वर्त्तमान काल, तपता है, संन्तप्त होता है, कष्ट सहता है, मुसीबत झेलता है। (२) प्रभुत्व दिखाता है। आतङ्क फैलाता है।

तपन—ताप, दाह, आँच, जलन, तपने की क्रिया। (२) सूर्य्य, आदित्य, रवि। (३) ग्रीष्म, गरमी। (४) घाम, धूप। (५) सूर्य्यकान्तमणि, सूरजमुखी। (६) एक नरक का नाम, (७) मदार।

तपनि—दाह, जलन, गरमी, तपने का भाव।

तपस्वी—तापस, तपी, तपस्या करनेवाला। वह प्राणी जो तप करता हो।

तप्त—उष्ण, गरम, तापित, तपा या तपाया हुआ। जलता हुआ। (२) दुःखित, क्लेशित, पीड़ित।

तब—तदा, उस समय, उस वक्त। (२) तदनन्तर, फिर, पीछे, इसके बाद। (३) इस कारण, इस हेतु, इस वजह से।

तबतक—उस समय पर्य्यन्त, उस वक्त तक।

तम—अन्धकार, तिमिर, अँधेरा। (२) अज्ञान, अविवेक, मोह। (३) क्रोध, रिस, गुस्सा। (४) राहु, विधुन्तुद, स्वर्भानु। (५) पाप, पातक, अघ। (६) शूकर, वाराह, सुअर। (७) श्यामता, कालिमा, कालिख। (८) नरक, निरय। (९) तमाल, नीलध्वज। (१०) तमोगुण, तीन गुणों में से एक।

तमकि—'तमकना' का वर्त्तमान काल, तमक कर। क्रोध के आवेश में आकर। गुस्से से भर कर। क्रोधित होकर।

तमकूप—अन्धकूप, अँधेरा कुआँ। (२) अज्ञान।

तमारि, तमारी—सूर्य्य, भानु, रवि अन्धकार के शत्रु।

तमाल—कालस्कन्ध, नीलध्वज, महाबल । एक प्रकार का वृक्ष जो बीस पचीस फुट ऊँचा सुन्दर सदा बहार पहाड़ों पर अधिकता से और जमुना के किनारे भी कहीं कहीं होता है । यह दो प्रकार का होता है, एक साधारण और दूसरा श्याम तमाल । श्याम तमाल कम मिलता है । उसके फूल लाल रङ्ग के और लकड़ी आबनूस की तरह काली होती है । तमाल के पत्ते गहरे हरे रङ्ग के और शरीफे के पत्ते से मिलते जुलते होते हैं । साधारण तमाल के फूल सफ़ेद और बड़े होते हैं । यह वृक्ष बैसाख में फूलता है और एक प्रकार के छोटे फल भी लगते हैं जो बहुत खट्टे होने पर भी कुछ स्वादिष्ट होते हैं । ये फल सावन-भादों में पकते हैं और इन्हें गीदड़ बड़े चाव से खाते हैं ।

तमी—रात्रि, रजनी, रात ।

तमीचर—राक्षस, निशाचर ।

तमोगुण—तमस, अँधेरा, अज्ञान का अन्धकार । (२) सांख्य के अनुसार प्रकृति का तीसरा गुण जो भारी और रोकनेवाला माना गया है । जब मनुष्य में इस गुण की अधिकता होती है तब उसकी प्रकृति काम, क्रोध, हिंसा आदि नीच कर्म और निन्दित बातों की ओर होने लगती है ।

तये } —'तयना' का भूतकाल । सन्तप्त हुए, गरम
तयो } हुए, तपे । (२) दुखी हुए, पीड़ित हुए ।

तर—तल, तले, नीचे (२) अधिकता, एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों में लगा कर दूसरे की अपेक्षा आधिक्य (गुण में) सूचित करता है, जैसे—श्रेष्ठतर, गुरुतर आदि । (३) तरना, उतरना, पार करने की क्रिया । (४) गति, चाल । (५) वृक्ष, तरु । (६) अग्नि, अनल । (७) पन्थ, रास्ता । (८) फ़ारसी भाषा के अनुसार—आर्द्र, गीला, भीगा हुआ । (९) शीतल, ठण्ढा (१०) हरा, हरियर, जो सूखा न हो । (११) भरापूरा, मालदार, ।

तरङ्ग—वीचि, लहर, हिलोर, पानी की वह उछाल जो हवा लगने के कारण होती है । (२) चित्त की उमङ्ग, मन की मौज, उत्साह या आनन्द की अवस्था में सहसा उठनेवाला विचार । (३) वस्त्र, कपड़ा ।

तरङ्गी—तरङ्ग युक्त, जिसमें लहर हो । (२) आनन्दी, लहरी, मनमौजी, जैसा मन में आवे वैसा करनेवाला ।

तरजनी—तर्ज्जनी, अँगूठे के पास की उँगली ।

तरजि—डाट कर, धमका कर, डपट कर ।

तरजिये—डाटिये, डपटिये, धमकाइये । (२) भय दिखाइये, डराइये । (३) क्रोध करके तिरस्कार कीजिये । फटकारिये, दुतकारिये ।

तरत—'तरना' का वर्त्तमान कालिक रूप । तरता है, पार होता है । (२) मुक्त होता है, सद्गति प्राप्त करता है ।

तरन—तरण, पार करना, नदी आदि को पार करने का काम । (२) उद्धार, निस्तार, छुटकारा । (३) बेरा, बेड़ा, पानी पर तैरनेवाला तख़्ता । (४) स्वर्ग, देवलोक ।

तरना—पार करना, पार होना, उतरना । (२) मुक्त होना, शुभ गति प्राप्त करना । भवसागर से पार होना ।

तरनि } —सूर्य्य, तरणि, भानु । (२) नाव, तरणी,
तरनी } नवका, डोंगी, किश्ती ।

तरपन—तर्पण, तृप्त करने की क्रिया ।

तरल—चल, चञ्चल, चलायमान । (२) अस्थिर, क्षणभङ्गुर, क्षणभर में नाश होने वाला । (३) द्रव, पानी की तरह पतला । (४) भास्वर, कान्तिमान्, चमकीला । (५) पोला, खोखला, (६) हार, हार के बीच की मणि । (७) हीरा, वज्र । (८) लोहा, अय । (९) घोड़ा, घोटक, (१०) तल, पेंदा ।

तरस्यो—'तरसना' का भूतकालिक रूप, तरसा, ललका, ख़्वाहिश किया, अभाव का दुःख सहा ।

तरित—तरता उतरता, पार होता ।

तरिय—तरिये, उतरिये, पार होइये । (२) तरता हूँ, पार होता हूँ, उतरता हूँ ।

तरु—वृक्ष, विटप, पेड़ । (२) यमलार्जुन वृक्ष, इसका विवरण 'यमलार्जुन' शब्द में देखो ।

तरुन—तरुण, युवा, जवान । (२) नया, नूतन ।

तरुनता—युवावस्था, जवानी ।

तरुनाई—तरुणता, तरुणाई, जवानी ।

तरुनी—तरुणी, युवास्त्री, नवयौवना ।

तरे—उतरे, पार हुए । (२) तले, नीचे ।

तर्क—हेतु पूर्ण युक्ति, विवेचना, दलील, किसी वस्तु के विषय में अज्ञाततत्व को कारणोपपत्ति द्वारा निश्चित करनेवाली उक्ति या विचार । (२) चमत्कारपूर्ण बात, चतुराई से भरी उक्ति, चोज़ की बात । (३) व्यंग्य, ताना । (४) त्याग करना, छोड़ना ।

तर्क्य—चिन्त्य, विचार्य, जिस पर कुछ सोच विचार करना आवश्यक हो ।

तर्जन—तर्ज्जन, भय-प्रदर्शन, धमकाने का काम । (२) क्रोध, रिस, गुस्सा । (३) तिरस्कार, अनादर, फटकार, डाँटडपट ।

तर्जनी—तर्ज्जनी, प्रदेशिनी, अँगूठे के पास की उँगली, मध्यमा और अँगूठे के बीच की अँगुरी, इस उँगली से प्रायः लोग किसी वस्तु वा व्यक्ति की ओर इशारा करते हैं ।

तर्पण—तर्पन, तरपन, तृप्त करने की क्रिया । सन्तुष्ट करने का कार्य्य । (२) कर्मकाण्ड की एक क्रिया जिसमें देवता, ऋषि और पितरों को प्रसन्न करने के लिये हाथ या अरघे से पानी देते हैं ।

तर्ष—असन्तोष, अप्रसन्नता, असन्तुष्टता । (२) तृष्णा, प्यास, पिपासा । (३) अभिलाषा, इच्छा, ख़्वाहिश । (४) सूर्य्य, भानु । (५) समुद्र, सागर । (६) बेरा, बेड़ा ।

तर्षण—तर्षन, इच्छा, अभिलाषा । (२) तृषा, प्यास, पिपासा ।

तल—पेंदा, तला, नीचे का भाग । (२) गड्ढा, गड़हा । (३) पृष्ठदेश, सतह, किसी वस्तु का बाहरी फैलाव । (४) आधार, सहारा । (५) सप्त पातालों में से पहला । (६) स्वभाव, स्वरूप । (७) हथेली, करतल । (८) पैर का तलुवा ।

तल्प—पर्य्यङ्क, शय्या, सेज, पलँग । (२) अट्टालिका अटारी, कोठा । (३) स्त्री, नारी ।

तव—तुम्हारा, आप का । (२) तुम, आप ।

तस—तादृश, तैसा, तइस, वैसा ।

तस्कर—चोर, भँड़िहा । (२) कान, श्रवण ।

तहँ / तहाँ / तत्र —वहाँ, उस स्थान पर ।

तत्रैव—(तत्र + एव) वहाँ ही, उसी जगह पर ।

तज्ञ—तत्वज्ञ, ब्रह्मदर्शी, तत्वज्ञानी, तत्व का जाननेवाला । (२) ज्ञानी, ज्ञानवान् ।

ता—तद्, उस । (२) एक भाववाचक प्रत्यय जो विशेषण और संज्ञा शब्दों के पीछे लगता है । जैसे—उत्तम, उत्तमता, शत्रु, शत्रुता इत्यादि । (३) फ़ारसीभाषा के अनुसार-पर्य्यन्त, तक, से ।

ताइ—तोप कर, छिपा कर । (२) ताप दे कर, तपा कर, गरम कर के ।

ताई—तोपी हुई, ढँकी हुई, छिपाई हुई । (२) ताप, मन्दज्वर, हलका बोख़ार । (३) तपाया, ताव दिया, गरमाया ।

ताउ—ताव, घमण्ड लिये हुए गुस्से की झोंक । (२) आँच, गरमी ।

ताओं—तोपता हूँ, छिपाता हूँ, ढँकता हूँ ।

ताकि—देखि, निहारि, अवलोकि, चितइ । (२) फ़ारसीभाषा के अनुसार—जिसमें, जिससे, इसलिये कि ।

ताकी—देखी, निहारी, चितई । (२) उसकी ।

ताके—देखे, चितये, निहारे । (२) उसके ।

ताज—(अर्बीभाषा) राजमुकुट, बादशाह की टोपी । (२) कलँगी, तुर्रा ।

ताण्डव—पुरुषों के नृत्य को ताण्डव और स्त्रियों के नृत्य को लास्य कहते हैं । ताण्डव नृत्य शिवजी को अत्यन्त प्रिय है । इसी से कोई कोई तण्डु अर्थात् नन्दी को इस नृत्य का प्रवर्त्तक मानते हैं किसी किसी के मत से ताण्डव नामक ऋषि ने पहले पहल इसकी शिक्षा दी, इसी से इसका नाम ताण्डव हुआ । (२) शिव का नृत्य, शङ्कर का नर्त्तन । (३) उद्धतनृत्य, वह नाच जिसमें बहुत उछल कूद के कारण बहुत गहरा परिश्रम हो ।

ताण्डवित—ताण्डवनृत्य में प्रवृत्त, ताण्डव नाच करते हुए।

तात—आदर और प्यार का एक शब्द या सम्बोधन जो गुरु, पिता, श्वसुर, पूज्य व्यक्ति, मित्र, भाई आदि के लिये व्यवहृत होता है। (२) पिता, जनक, बाप, (३) गुरु, श्रेष्ठ, पूज्य-पुरुष। (४) तप्त, गरम, तपा हुआ।

ताँति—ताँत, तन्तु, भेड़ बकरी की अँतड़ी या चौपायों के पट्ठों को बट कर बनाया हुआ सूत, चमड़े या नसों की बनी हुई डोरी। (२) धनुष की प्रत्यञ्चा, कमान की डोरी।

ताति—तप्त, तात, गरम। (२) पुत्र, बेटा, लड़का,

ताते, ताती—तिससे, इसलिए। (२) तप्त, तात, गरम।

ताने—विस्तृत किए, खींचे, फैलाये।

तान्यो—विस्तार किया, खींचा, फैलाया।

ताप—आँच, दाह, लपट। (२) ज्वर, जर, बोखार। (३) दुःख, कष्ट, पीड़ा। (४) एक प्राकृतिक उष्णता जिसका प्रभाव पदार्थों के पिघलने और भाप बनने आदि के व्यापार में देखा जाता है, कुदरती गरमी। (५) दैहिक, दैविक और भौतिक नाम से ताप तीन प्रकार का कहा जाता है।

तापघ्न—तापहन, कष्टनाशक, दुःख नशानेवाला,

तापर—तिस पर, उस पर।

तापस—तपस्वी, तपी, तप करनेवाला।

ताँबा, ताम—ताम्र, तामा, रक्तधातु।

तामरस—कमल, कञ्ज, सरोज।

तामस—तमोगुण युक्त, जिसमें प्रकृति के उस गुण की प्रधानता हो जिसके अनुसार जीव क्रोध आदि नीच वृत्तियों के वशीभूत होकर आचरण करता है। (२) क्रोध, रिस, गुस्सा। (३) अज्ञान, मोह। (४) अन्धकार, अँधेरा। (५) खल, दुष्ट। (६) सर्प, साँप। (७) उल्लू, घुघुआ।

तामसी—तमोगुणवाली। जैसे—तामसी प्रकृति। (२) महाकाली, कालिका। (३) अँधेरी रात। कृष्णपक्ष की रात्रि। (४) जटामासी, मांसी।

ताम्बूल—पान, नागबेल, मुखभूषण।

ताय—ताप, उष्णता, गरमी। (२) ताव, घमण्ड, क्रोध का आवेश। (३) कष्ट, दुःख, पीड़ा। (४) घाम, धूप, रौदा। (५) ताहि, उसे, उसको। (६) तोपने वा छिपाने की क्रिया।

तायौं—तोपा, छिपाया, ढक्कन दे कर ताया।

तारक, तारन—तारनेवाला, उद्धार करनेवाला, भव-सागर से पार करनेवाला। (२) षड़क्षर मन्त्र (ॐ रामायनमः) जिसका जाप कर के मनुष्य संसार-बन्धन से छूट जाते हैं। (३) नक्षत्र, तारा, तरई। (४) आँख, लोचन, नेत्र। (५) मल्लाह, कर्णधार, वह जो पार उतारे। (६) एक असुर का नाम। (७) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण और एक गुरु होता है। (८) तारण, पार उतारने की क्रिया, दूसरे को पार उतारने का काम। (९) उद्धार, निस्तार, उबार।

तारि—उतार कर, पार कर, उद्धार कर के।

तारी—उतार दिया, पार कर दिया, विस्तार किया। (२) मुक्त किया। छुड़ाया। (३) समाधि, ध्यान, निद्रा।

तारुन्य—तारुण्य, तरुणता, जवानी।

ताल—नाचने या गाने में उसके काल और क्रिया का परिमाण, जिसे बीच बीच में हाथ पर हाथ मार कर सूचित करते जाते हैं। (२) करतल ध्वनि, ताली, वह शब्द जो दोनों हथेलियों को एक दूसरे पर मारने सेउत्पन्न होता है। (३) हथेली, करतल, हाथ का तल। (४) कुश्ती लड़ने के लिये अपने जङ्घे या बाहु पर जोर से हथेली मार कर उत्पन्न किया हुआ शब्द। (५) ताड़ का वृक्ष, तार का फल। (६) जलाशय, बहुत बड़ा तालाब। वह नीची भूमि या लम्बा चौड़ा गड़हा जिसमें बरसात का पानी जमा रहता है। (७) बेल, बिल्वफल। (८) हरताल, पीतन, हरतार।

तालु } —तारू, मुँह के भीतर की ऊपरी छत जो
तालुक } ऊपरवाले दाँतों की पंक्ति से लेकर गले
तालू } की ललरी तक होती है। (२) मस्तिष्क के नीचे का भाग। दिमाग़ का निचला हिस्सा।

ताव—ताप, उष्णता, वह गरमी जो किसी वस्तु को तपाने या पकाने के लिए पहुँचाई जाय। (२) अहङ्कार का वह आवेश जो किसी के बढ़ावा देने ललकारने आदि से उत्पन्न होता है। शेखी की झोंक। (३) अधिकार मिले हुए क्रोध का आवेश, घमण्ड लिए हुए गुस्से की झोंक। (४) किसी वस्तु के तत्काल होने की घोर उत्कण्ठा, ऐसी इच्छा जिसमें उतावलापन हो, चटपट होने की चाह। (५) क्रोध, रिस, गुस्सा।

तावों—ताओं, तोपता हूँ, छिपाता हूँ।

तास } —उसका।
तासु }

तासों—उससे, तासूँ।

ताहि } —उसको, उसे।
ताही }

ताहीते—इसी से, इसी लिए।

ताहु } —उस, उसको।
ताहू }

तिकोन—त्रिकोण, तिरकोना, जिसमें तीन कोने हों।

तिक्त—तीत, तीता, कड़ुआ। जिसका स्वाद नीम, चिरायता आदि के समान हो। (२) छे रसों में से एक। तिक्त और कटु में भेद यह है कि तिक्त का स्वाद अरुचिकर होता है और कटु का स्वाद रुचिकर होता है। जैसे-सोंठ, मिर्च, पीपरि आदि। (३) पित्तपापड़ा, पर्पट। (४) कुटजवृक्ष, कुरैया। (५) वरुण वृक्ष, बरुन का दरख़्त।

तिच्छन—तीक्ष्ण, प्रखर, तेज़।

तिजरा } —अँतरिया वा अँतरा ज्वर। विषमज्वर
तिजारी } का एक भेद जो एक दिन अन्तर देकर आता है।

तित—तहाँ, वहाँ। (२) उधर, उस ओर।

तिन—'तिस' का बहुवचन। जैसे—तिनने, तिनको, तिनसे इत्यादि। (२) तृण, तिनका, घास।

तिनकि }
तिनकी } —उनकी, उनके।
तिनके }

तिमि—उस प्रकार, वैसे। (२) तैसे।

तिमिर—अन्धकार, अँधेरा, तम। (२) आँख का एक रोग जिसके अनेक भेद हैं।

तिय } —स्त्री, बाला, औरत। (२) भार्य्या, पत्नी,
तिया } जोड़ू।

तिरछे—तिरछा, जो न ठीक ऊपर की ओर गया हो और न ठीक बगल की ओर। आड़ा।

तिर्य्यक—तिर्यक्, तिरछा, आड़ा। मनुष्य को छोड़ पशु पक्षी आदि जीव तिर्य्यक् कहलाते हैं। वह इस लिए कि खड़े होने पर उनके शरीर का विस्तार सीधा ऊपर की ओर नहीं रहता, आड़ा होता है। इनका खाया हुआ चारा सीधे ऊपर से नीचे की ओर नहीं जाता वल्कि आड़ा होकर पेट में जाता है।

तिल—स्नेहफल, तैलफल, तिली, तिल्ली, तिल दो प्रकार का होता है-सफ़ेद और काला। यह एक प्रकार का अन्न है जिसे वर्षा के आरम्भ में किसान लोग खेतों में बोते हैं। इसके बीजों को कोल्हू में पेर कर तेल निकालते हैं, वह खाने और सिर तथा शरीर में लगाने के काम में आता है। औषधि कर्म में काले तिल का तेल विशेष गुणवाला और सफ़ेद तिल का तेल न्यून गुणवाला माना जाता है।

तिलक—टीका, वह चिन्ह जो गीले चन्दन, रोरी गोरोचन, केसर से मस्तक बाहु आदि अङ्गों पर साम्प्रदायिक सङ्केत वा शोभा के लिए लगाते हैं। (२) गद्दी, राज्याभिषेक, राजसिंहासन पर प्रतिष्ठा। जैसे-राजतिलक, राजगद्दी। (३) किसी ग्रन्थ की अर्थसूचक व्याख्या, टीका। (४) शिरोमणि, श्रेष्ठ व्यक्ति, उत्तम पुरुष। (५) एक वृक्ष का नाम जिसमें छत्ते के आकार के फूल वसन्त-ऋतु में लगते हैं। यह पेड़ शोभा के लिए बगीचों में लगाया जाता है। इसकी छाल और लकड़ी दवा के काम में आती है।

तिलकधारी—तिलक धारण करनेवाला। चन्दन लगानेवाला।

तिलोक—'त्रिलोक' आकाश, पाताल और पृथ्वी।

तिष्ठन्ति—ठहरते हैं, टिकते हैं, विराम करते हैं।

तिहारी—तुम्हारी, आप की।

तिहारे—तुम्हारे, आप के।

तिहि—तेहि, उसे, उसको।

तिहुँ
तिहूँ }—तीनों।

तीछन—तीक्ष्ण, तेज़, पैना।

तीज—तृतीया, प्रत्येक पाख की तीसरी तिथि।

तीत—तिक्त, तीता कडुवा।

तीन
तीनि }—दो और चार के बीच की संख्या। दो और एक का जोड़।

तीनिकाल—त्रिकाल, भूत-भविष्य और वर्त्तमान। (२) प्रात, मध्याह्न और सन्ध्याकाल।

तीनोंगुण—त्रिगुण, सत, रज और तम।

तीय—स्त्री, तिय, नारी। (२) पत्नी, भार्य्या।

तीर—तट, कूल, किनारा। (२) समीप, निकट, पास। (३) फ़ारसीभाषा के अनुसार—बाण, शर, मार्गण।

तीरतीर—किनारे किनारे।

तीरथ
तीर्थ }—वह पवित्र या पुण्य-स्थान जहाँ धर्म भाव से लोग यात्रा, पूजा, स्नान और दान आदि करते हैं। जैसे-काशी, प्रयाग, हर-द्वार,गया,जगन्नाथ,द्वारका आदि। हिन्दू शास्त्रों तीर्थ तीन प्रकार के माने गये हैं-जङ्गम, मानस और स्थावर। जङ्गमतीर्थ—ब्राह्मण और साधु आदि। मानस तीर्थ—सत्य, क्षमा, दया, दान, सन्तोष, ब्रह्मचर्य्य, ज्ञान, धैर्य्य, मधुरभाषण आदि। स्थावरतीर्थ—काशी, प्रयाग, अयोध्या आदि। (२) शास्त्र, आगम। (३) यज्ञ, मख। (४) ईश्वर, परमेश्वर। (५) मातापिता। (६) अतिथि, मेहमान। (७) उपदेष्टा, गुरु। (८) अग्नि, पावक। (९) ब्राह्मण, विप्र। (१०) एक उपाधि। जैसे—काव्यतीर्थ। (११) पवित्र, पुण्यकाल।

तीव्र—तीक्ष्ण, तेज़, तीखा। (२) दुःसह, असह्य, न सहने योग्य। (३) प्रचंड, भीषण, डरावना। (४) अत्यन्त उष्ण, बहुत गरम। (५) नितान्त, निपट, निरा। (६) अत्यन्त, अतिशय, बहुत। (७) लोहा, लोह, इस्पात। (८) शिव, महादेव, रुद्र।

तीक्ष्ण—तेज नोक या धारवाला। जिसकी धार इतनी चोखी हो जिससे कोई चीज़ तुरन्त कट जाय। (२) तीव्र, प्रखर, तीखा। (३) प्रचंड, उग्र, भीषण। (४) तिक्त स्वाद वाला। जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो। (५) कर्ण-कटु, कडुए वचन। अप्रिय बात। (६) असह्य, न सहने योग्य। (७) उत्ताप, गरमी। (८) विष, ज़हर। (९) युद्ध, लड़ाई। (१०) मरण, मृत्यु। (११) आत्मत्यागी, दूसरों के हित के लिए अपना स्वार्थ छोड़ने वाला। (१२) महामारी, मरी, वबा। (१३) इस्पात लोहा।

तु
तुँ }—तू, तूँ, तुम। (२) आप, एक आदरसूचक सम्बोधन जिसका प्रयोग प्रायः हिन्दी काव्य में होता है।

तुङ्ग—उच्च, उन्नत, ऊँचा। (२) पर्वत, पहाड़। (३) प्रचंड, उग्र। (४) प्रधान, मुख्य। (५) पुन्नाग वृक्ष। नागकेसर। (६) किञ्जल्क, कमलकेसर। (७) शिव, महादेव।

तुच्छ—क्षुद्र, हीन, नाचीज़। (२) अल्प, थोड़ा, कम। (३) ओछा, नीच, खोटा। (४) निःसार, खोखला, भीतर से खाली। (५) सारहीन, भूसी, छिलका।

तुम—'तू' शब्द का बहुवचन। वह सर्वनाम जिसका व्यवहार उस पुरुष के लिए होता है जिससे कुछ कहा जाता है। 'तू' का प्रयोग बहुत छोटों वा बच्चों के लिये ही होता है। परन्तु हिन्दी काव्य में बड़ों के लिए भी इसका व्यवहार होता है, वहाँ शिष्टता के विचार से तू या तुम शब्द का 'आप' आदरसूचक अर्थ किया जाता है।

तुरङ्ग—घोड़ा, अश्व, बाजी।

तुरत—शीघ्र, तुरन्त, जल्दी, झटपट।

तुरीय—वेदान्तियों ने प्राणियों की चार अवस्थाएँ मानी हैं। यह चौथी तुरीयावस्था मोक्ष है जिसमें समस्त भेद-ज्ञान का नाश हो जाता है और आत्मा अनुपहित चैतन्य वा ब्रह्म-चैतन्य हो जाती है। (२) चतुर्थ, चौथा।

तुलसि / तुलसिका / तुलसी—तुलसी का वृक्ष। (२) तुलसीदास।

तुलसीदास—रामचरितमानस और विनयपत्रिका के आचार्य्य गोस्वामी, तुलसीदासजी।

तुलसीश—तुलसी के स्वामी रामचन्द्रजी।

तुला—गुरुत्व नापने का यन्त्र। तराजू, टकौरी, काँटा। (२) मान, तौल, वज़न। (३) सादृश्य, तुलना, मिलान। (४) ज्योतिष की बारह राशियों में से सातवीं राशि। (५) सौ पल, वह तौल जो वर्त्तमान अस्सी रुपये भर वाले सेर से लगभग आठ सेर का होता है।

तुल्य—सदृश, समान, बराबर।

तुव—तव, तुम्हारा। (२) आप का।

तुषार—पाला, हिम, बरफ़। (२) चीनियाँकपूर।

तुहिन—पाला, तुषार, हिम, । (२) शीतलता, ठण्ढक, सरदी। (३) निहार, कुहरा, कुहासा। (४) चाँदनी, चन्द्रमा का प्रकाश।

तुहीं—तुम्हीं, तुमहीं। (२) आप ही।

तूँ / तू—तुम। (२) आप।

तूण। / तूणीर / तून / तूनीर—त्रोण, निषङ्ग, तरकस, तीर रखने का चोंगा।

तूल—रूई, कपास-मदार-सेमर आदि के डोंडे के भीतर का घूआ। (२) तुल्य, समान, बराबर। (३) तूत का पेड़, शहतूत। (४) एक सूती कपड़ा जो चटकीले लाल रङ्ग का होता है।

तृतीय—तृतिय, तीसरा।

तृन—तृण, तिनका, घास।

तृप्त—तुष्ट, अघाया हुआ। जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो। (२) प्रसन्न, खुश।

तृषा—प्यास, पिपास। (२) इच्छा, अभिलाषा। (३) लोभ, लालच।

तृषावन्त / तृषित—तृषालु, पिपासा, प्यासा।

तृष्णा—लालच, लोभ, किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये आकुल करनेवाली इच्छा, (२) तृषा पिपास, प्यास।

तें / ते / तेइ—से, द्वारा (२) वे, वे सब।

तेउ / तेऊ—वेऊ, वे भी।

तेज—दीप्ति, कान्ति, आभा, चमक, दमक। (२) पराक्रम, बल, जोर। (३) ताप, उष्णता, गरमी। (४) तत्व, सार, हीर। (५) वीर्य, शुक्र मनी। (६) प्रताप, रोबदाब, दबदबा। (७) अग्नि, पाँच महाभूतों में से तीसरा भूत जिसमें ताप और प्रकाश होता है। (८) प्रचंडता, उग्रता, तेजी। (९) मक्खन, माखन, नैनू। (१०) सुवर्ण, कञ्चन, सोना। (११) फ़ारसीभाषा के अनुसार—तीक्ष्ण धार का। चोखी धारवाला, जिसकी धार पैनी हो। (१२) बहुमूल्य। महँगा, गिराँ। (१३) चपल, चञ्चल, शीघ्रगामी। (१४) फुरतीला, चटपट काम करनेवाला। (१५) अधिक, बहुत, ज़्यादा।

तेजराशि / तेजरासी—तेजपुञ्ज, महत्प्रभावशाली, बड़ा प्रतापी। (२) सूर्य्य, भानु, रवि।

तेजायतन—तेज के स्थान, प्रतापवान।

तेति—(ते+अति) वे अत्यन्त।

तेते—उतने, उस क़दर।

तेन—वे, वे सब।

तेरियै—तेरी ही, तुम्हारी ही। (२) आप ही की।

तेरी—तुम्हारी, तिहारी। (२) आप की।

तेल—स्नेह, तैल, चिकना, रोग़न, सरसों और तिल आदि कोल्हू में पेर कर निकाला हुआ तरल पदार्थ।

तेहि—उसको, उसे।

तैं—त्वं, तू, तुम। (२) आप।

तैलिकयन्त्र—कोल्हू, जवाज़सङ्गी।

तैसे—वैसे, उसी प्रकार से।

तो—तव, तेरा, तुम्हारा। (२) तब, फिर। (३) हतो, था, रहा।

तोको—तुझको, तुझे।

तोम—समूह, राशि, ढेर।

तोमर—शर्पला, शापल, भाले की तरह का एक प्रकार का अस्त्र जिसका व्यवहार प्राचीन काल में होता था। (२) बारह मात्राओं का एक छन्द जिसके अन्त में एक गुरु-लघु वर्ण आता है। (३) साँगी, बरछी।

तोय—पानी, जल, नीर।

तोर—तेरा, तुम्हारा। (२) आप का।

तोरि—तेरी, तुम्हारी। (२) आप की। (३) तोड़ कर, खण्ड खण्ड कर, टुकड़े टुकड़े कर।

तोष—तृप्ति, तुष्टि, सन्तोष। (२) प्रसन्नता, आनन्द खुशी। (३) अल्प, थोड़ा, कम। (४) श्रीकृष्ण-चन्द्र के एक सखा का नाम।

तोषन—तृप्त करना, सन्तुष्ट करने की क्रिया। (२) तृप्ति, सन्तोष, तोष।

तोषे—तृप्त हुए, प्रसन्न हुए। (२) तुष्ट करने से।

तोसे, तोसौं }—तुम से, तुम्हारे समान।

तोहि—तुझको, तुझे।

तौ—तो, तब। (२) या, अथवा।

तौलि—तौल कर, वज़न करके।

तौलौं—तवतक, तबलग, वहाँ पर्य्यन्त।

त्यक्त—त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, जिसका त्याग कर दिया गया हो।

त्याग—उत्सर्ग, अपवर्जन, दान, किसी पदार्थ पर से अपना अधिकार हटा लेने अथवा उसे अपने पास से अलग करने की क्रिया। (२) विरक्ति, वैराग्य, विराग।

त्यागब—त्यागना, छोड़ना, तजना।

त्यागी—विरक्त, त्याग करने वाला।

त्यौं—त्यौं, उस प्रकार, उस भाँति, उस तरह। (२) तत्काल, तुरन्त, उसी समय।

त्व—अन्य, भिन्न। (२) पद, ओहदा। (३) काल, समय। (४) त्वं, तुम। (५) आप।

त्वत्—त्वदीय, तुम्हारा। (२) आप का।

त्वयि—तुम्हरी, आप की।

(थ)

थ—हिन्दी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यञ्जन और तवर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण स्थान दन्त है। (२) भक्षण, भोजन। (३) रक्षण, रक्षा। (४) भौम, कुज, मङ्गल। (५) भय, डर। (६) पर्वत, पहाड़।

थकना—क्लान्त होना। थक जाना। (२) मिहनत करते करते हार जाना। (३) लोभाना, मुग्ध होना, मोहित हो जाना। (४) उकताना, ऊब जाना, हैरान होना। (५) अकुलाना, दुखी होना। (६) मन्दा पड़ना। धीमा होना। (७) थककर टिकना, अचल होना, ठहर जाना।

थके—थक गये। श्रमित हुए। (२) टिक गए। ठहर गये। (३) लुभा गये। मोहित हुए।

थन—स्तन, कुच, चूँची।

थपत—'थपना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। थपता है। स्थापन करता है। टिकाता है। (२) प्रतिष्ठित करता है, इज़्ज़त देता है।

थपन—स्थापन, ठहराने या जमाने का काम। (२) स्थापित करना, बैठाना, ठहराना।

थल—स्थल, स्थान, जगह, ठिकाना। (२) वह सूखी ज़मीन जहाँ पानी न हो।

थलचर—स्थलचारी, भूचर, पृथ्वी पर चलनेवाले, धरती पर विचारनेवाले जीव।

थहाओं, थहावौं }—थहाता हूँ, थाह लेता हूँ, गहराई का पता लगाता हूँ।

थाकी—थक गई, टिक गई, ठहर गई।

थाके—थक गये, श्रमित हुए, ठहर गये।

थाति—थाती, धरोहर, अमानत। (२) स्थिरता, ठहराव, टिकान। (३) रक्षित द्रव्य, जमा।

थापनो—स्थापन करनेवाले, बैठानेवाले, टिकानेवाले, जमानेवाले।

थापिये—स्थापन कीजिये, बैठाइये, टिकाइये।
थापे—स्थापन किये, टिकाये, ठहराये।
थालिका—आलबाल, थाला, थाँवला, वृक्ष रोपन के लिए घेरा हुआ गोंड़ा।
थिति—स्थिति, स्थायित्व, ठहराव। (२) रहन, रहाइस, विश्राम करने या ठहरने का स्थान। (३) रक्षा, हिफाजत, बने रहने का भाव। (४) अवस्था, दशा, हालत।
थिर—स्थिर, अचल, ठहरा हुआ। (२) शान्त, धीर, जो चञ्चल न हो। (३) स्थायी, दृढ़, टिकाऊ, जो एक ही अवस्था में रहे।
थिरातो—स्थिर होता, अचल होता, ठहरता। (२) शान्त होता, एक ही अवस्था में रहता।
थिराने—थिराया, निर्मल हुआ, साफ़ हुआ। (२) स्थिर हुआ, शान्त हुआ।
थोड़ }
थोर }—अल्प, न्यून, कम, ज़रा सा।
थोरि—लघुता, छोटाई। (२) अल्प, तनिक, थोड़ी।
थोरे—थोड़े, अल्प, न्यून, तनिक, कम।

(द)

द—हिन्दी वर्णमाला में अठारहवाँ व्यञ्जन जो तवर्ग का तीसरा वर्ण है इसका उच्चारण स्थान दन्तमूल है; दन्तमूल में जिह्वा के अगले भाग के स्पर्श से इसका उच्चारण होता है। (२) दन्त, दाँत। (३) पर्वत, पहाड़। (४) स्त्री, भार्य्या। (५) रक्षा, पनाह। (६) खण्डन, निराकरण। (७) दाता, देनेवाला का अर्थ किसी शब्द के अन्त में लगकर होता है जैसे—सुखद, वरद, जलद, धनद आदि।
दइ }
दई }—दैव, ब्रह्मा, विधाता। (२) ईश्वर, परमेश्वर। (३) प्रदान किया, दिया।
दग़ाबाज़—(फ़ारसीभाषा) छली, कपटी, धोखा देनेवाला। (२) धूर्त्त, ठग।
दगाबाज़ी—छल, कपट, धोखा। (२) धूर्त्तता, फ़रेब में डाल कर किसी को धोखा देने का काम।
दच्छ—दक्ष, निपुण, कुशल, चतुर, होशियार। (२) दक्षिण, दाहिन, दाहना। (३) एक प्रजापति का नाम जिनसे देवता उत्पन्न हुए।
दच्छिन—दक्षिण, दक्खिन की दिशा। (२) दहिना, दाहना। (३) अनुकूल, मुवाफ़िक़। (४) दक्ष, चतुर। (५) विष्णु, लक्ष्मीनाथ।
दण्ड—शासन और परिशोध की व्यवस्था। किसी अपराध के बदले में अपराधी को पहुँचाई हुई पीड़ा या हानि सजा, तदारुक। (२) डण्डा, सोटा, लाठी। (३) शासन, शमन, दमन। (४) ध्वजा या पताका का बाँस। (५) यम, अन्तक, दण्डधर। (६) सेना, दल, फ़ौज। (७) अश्व, तुरङ्ग, घोड़ा। (८) घड़ी, साठ पल का काल, २४ मिनट का समय। (९) विष्णु, केशव। (१०) शिव, रुद्र। (११) कुबेर के एक पुत्र का नाम। (१२) इक्ष्वाकु राजा के सौ पुत्रों में से एक जिनके नाम के कारण दण्डकारण्य नाम पड़ा। (१३) राज्यशासन चलाने के लिए चार नीतियों में से तीसरी नीति।
दण्डक—इक्ष्वाकु राजा के एक पुत्र का नाम, ये शुक्राचार्य्य के शिष्य थे, इन्हों ने एक बार गुरु की कन्या का कौमार्य्य भङ्ग किया। इस पर शुक्राचार्य्य ने शाप देकर उन्हें इनके पुर के सहित भस्म कर दिया। इनका देश जङ्गल हो गया और दण्डकारण्य कहलाने लगा। शाप से इस वन के सम्पूर्ण वृक्ष विना फूल पत्ती के ठूँठ रहे। जब परब्रह्म ने नर रूप धारण कर इसमें पदार्पण किया तब यह शाप मुक्त होकर हरा भरा और सुहावना हो गया। (२) शासक, दण्ड देनेवाला पुरुष। (३) छन्दों का एक वर्ग। वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो। (४) दण्डकारण्य, दण्डकवन।
दण्डकवन—दण्डकारण्य, दण्डककानन। वह प्राचीन वन जो विन्ध्य-पर्वत से लेकर गोदावरी नदी के किनारे तक फैला था। दण्डक राजा का देश जो शुक्राचार्य्य के शाप से वन हुआ और भृगुमुनि के शाप से सूख गया था।

वनवास के समय बहुत दिनों तक श्रीरामचन्द्रजी ने यहाँ निवास किया था। प्रभु रामचन्द्रजी के चरणस्पर्श से यह वन शाप से छूट कर हरा भरा हुआ था। यहीं शूर्पणखा के नाक-कान कटे, खरदूषण के सहित चौदह हज़ार राक्षसों का संहार हुआ, मारीच कपट मृग के रूप में मारा गया। और रावण ने छल से सीताहरण किया था।

दण्डपानि—दण्डपाणि, काशी में भैरव की एक मूर्त्ति। 'काशीखण्ड में लिखा है कि पूर्णभद्र नामक एक यक्ष को हरिकेश नाम का एक पुत्र था। वह शिवजी का बड़ा भक्त था। एक बार जब इसने घोर तप किया तब शङ्करजी पार्वती सहित इसके पास आये और बोले कि तुम काशी के दण्डधर हो, वहाँ के दुष्टों का शासन और साधुओं का पालन करो। सम्भ्रम और उद्भ्रम नाम के मेरे दो गण तुम्हारी सहायता के लिए सदा तुम्हारे पास रहेंगे और बिना तुम्हारी पूजा किये कोई काशी में मुक्ति नहीं पा सकेगा। (२) यमराज, अन्तक, काल।

दत्त—प्रदत्त, समर्पित, दिया हुआ।

दधि—दही, खटाई या जावन द्वारा जमाया हुआ दूध। (२) समुद्र, सिन्धु, उदधि। (३) वस्त्र, वसन, कपड़ा।

दधिनिधि—दधिसागर, दही का समुद्र। (२) समुद्र, उदधि, सिन्धु।

दनुज—राक्षस, असुर, दानव, दक्षप्रजापति की कन्या 'दनु' और कश्यप मुनि से उपजी हुई सन्तान।

दनुजसूदन, दनुजारि—विष्णु, रामचन्द्र, राक्षसों के नाशक, दैत्यों के शत्रु।

दनुजेश—दैत्येश्वर, दानवों का मालिक। हिरण्यकश्यप। (२) राक्षसपति रावण।

दन्त—दाँत, दशन, द्विज। (२) ३२ की संख्या।

दबि—दब कर। दाब में आकर, बोझ के नीचे पड़ कर। (२) दबाया, पिछड़ाया, छिपाया।

दम—इन्द्रियों का दमन, इन्द्रियों को वश में रखना और चित्त को बुरे कामों में प्रवृत्त न होने देना। (२) दण्ड, सज़ा जो दमन करने के लिए दी जाती है। (३) विष्णु, हरि। (४) फ़ारसीभाषा के अनुसार—स्वास, साँस। (५) बोलना, कहना, चूँ करना। (६) प्राण, जान, जी। (७) पल, लमहा, उतना समय जितना एक बार साँस लेने में लगता है। (८) जीवनशक्ति, वह शक्ति जिससे कोई पदार्थ अपना अस्तित्व बनाये रखता और काम देता है। (९) धोखा, छल, फ़रेब।

दमक—द्युति, आभा, चमक।

दमन—दबाने की क्रिया, रोकने का काम, वह दण्ड जो किसी को दबाने के लिए दिया जाता है। (२) वश में करने की क्रिया। आधीन में लाने का काम, क़ाबू में करने की हरकत। (३) दम, निग्रह, इन्द्रियों की चञ्चलता रोकना। (४) शिव, महादेव। (५) विष्णु, नारायण। (६) एक ऋषि का नाम जिनके यहाँ दमयन्ती उत्पन्न हुई थी। (७) एक राक्षस का नाम। (८) दौना। (९) कुन्दपुष्प।

दम्भ—पाखण्ड, महत्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के लिये झूठा आडम्बर। धोखे में डालने के लिए ऊपरी दिखावट। (२) अभिमान, घमण्ड, गर्व, ग़रूर।

दम्भापहन—(दम्भ + अपहन)। दम्भ को नष्ट करने वाला, गर्व को मिटानेवाला।

दया—करुणा, रहम, सहानुभूति का भाव, मन का वह दुःख-पूर्ण वेग जो दूसरे के कष्ट को देख कर उत्पन्न होता है और उस कष्ट को दूर करने की प्रेरणा करता है। (२) कृपा, अनुग्रह, मिहरबानी।

दयाधाम—करुणानिकेत, दया के मन्दिर।

दयानिधि—करुणासागर, दया के समुद्र।

दयाल, दयालु—दयावान्, बहुत दया करनेवाला। जिसमें दया का भाव अधिक हो। (२) कृपालु, मिहरबान।

दर—शङ्ख, कम्बु, सुनाद। (२) डर, भय, खौफ़।

(३) दल समूह, सेना। (४) विदारण, फाड़ने की क्रिया। (५) कन्दरा, गुफा। (६) दरार, दर्रा। (७) फ़ारसीभाषा के अनुसार—द्वार, दरवाज़ा। (८) जगह, स्थान। (९) भाव, निर्ख़। (१०) प्रतिष्ठा, महिमा, क़दर। (११) प्रमाण, सबूत। (१२) इक्षु, ईख।

दर्द—(फ़ारसीभाषा)। व्यथा, कष्ट, पीड़ा। (२) दया, करुणा, रहम।

दरन—दरण, दलन, विनाश। (२) नाशक, नाश करनेवाला।

दरनि—दलनेवाली, नाश करनेवाली।

दरपन—दर्पण, आरसी, आइना।

दरबार—(फ़ारसीभाषा)। राजसभा, इजलास। (२) द्वार, दरवाज़ा।

दरमानी—(फ़रसीभाषा)। चिकित्सक, वैद्य, हकीम। वास्तव में शब्द दरमान है जिसका अर्थ चिकित्सा वा इलाज है।

दरश, दरशन, दरस—दर्शन, अवलोकन, देखना।

दरसी—दर्शी, देखनेवाला।

दरिद्र—निर्धन, कङ्गाल, ग़रीब।

दरेरो—दरेरा, रगड़ा, धक्का, रेलपेल।

दर्प—गर्व, घमण्ड, अभिमान। (२) आतङ्क, दबाव, रोब। (३) उद्दण्डता, अक्खड़पन। (४) मान, अहङ्कार के लिए किसी के प्रति कोप।

दर्पण, दर्पन—मुकुर, आरसी, दरपन, दर्पनी, आइना। मुँह देखने का शीशा। (२) उद्दीपन, उत्तेजना, उभारने का कार्य्य।

दर्भ—कुश, दाभ, डाभ, कुसा।

दर्श—अमावस्या तिथि। (२) दर्शन, देखना।

दर्शन—चाक्षुषज्ञान, अवलोकन, साक्षात्कार, देखादेखी, देखना, वह बोध जो दृष्टि के द्वारा हो। (२) वह शास्त्र जिससे तत्वज्ञान हो। वह विद्या जिससे पदार्थों के धर्म, कार्य्य, कारण, सम्बन्ध आदि का बोध हो। (३) आँख, नेत्र। (४) स्वप्न, सपना। (५) दर्पण, आइना। (६) बुद्धि, मनीषा (७) धर्म्म।

दर्शनादेव—दर्शनीय, दर्शन के योग्य।

दर्शी—दरसी, देखनेवाला।

दल—पत्र, पत्ता, पात। (२) सेना, कटक, फ़ौज़। (३) समूह, समुदाय, झुण्ड। (३) मण्डली, चक्र, गरोह। (४) भाग, हिस्सा।

दलकन—धमक, थरथराहट, वह कम्प जो किसी प्रकार के आघात से उत्पन्न हो। (२) फटना, चिरना, दरार। (३) उद्वेग, चौंकानेवाली क्रिया। (४) भय, डर, भीति।

दलदल—पङ्क, कीचड़, चहला, वह ज़मीन जो बहुत गहराई तक गीली हो और जिसमें पैर नीचे को धँसता हो।

दलन—दरण, दरन, पीस कर टुकड़े टुकड़े करने की क्रिया। मल कर चूर चूर करने का काम। (२) ध्वन्स, नष्ट, विनाश, संहार।

दलनि—दलनेवाली, पीस कर टुकड़े टुकड़े करनेवाली, मल कर चूर चूर करनेवाली। (२) नष्ट करनेवाली, विनाश करनेवाली, संहार करनेवाली।

दलि—दल कर, विनाश कर, संहार करके।

दलित—मर्दित, मला हुआ, मीड़ा हुआ। (२) खण्डित, चूर चूर किया हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ। (६) विनष्ट किया हुआ, नाश किया वा रौंदा हुआ।

दव—दवाग्नि, दवारि, दावा, वह आग जो वन में आप से आप लग जाती है। (२) अग्नि, अनल, आग।

दवन—दमन, दबाने की क्रिया। (२) ध्वन्स, नाश, संहार।

दश, दस—नौ और ग्यारह के बीच की संख्या। पाँच और पाँच का जोड़।

दसइँ—दशवीं, दशमीतिथि। प्रत्येक पाख की दसवीं तिथि।

दसकण्ठ, दसकन्ध—रावण, दशवदन, दशानन।

दसदिसा—दशोंदिशाएँ, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, अग्नि, नैरृत, वायव्य, अधः और ऊर्ध्व।

दसन—दाँत, दशन, दन्त।

दशरथ / दशरथ्थ —इक्ष्वाकुवंशीय अयोध्या के राजा जिनके श्रीरामचन्द्र, भरत, लक्ष्मण और शत्रुहन पुत्र थे।

दसबदन—रावण, दशमुख, दशानन।

दसबर्त्तिका—दशवर्त्तिका, दशबत्तियों का दीपक। बत्तियों को घी में लपेट कर इसका व्यवहार नीराञ्जन में किया जाता है।

दसा—दशा, अवस्था, हालत। (२) साहित्य में रस के अन्तर्गत विरही की दश अवस्थाएँ हैं। जैसे-अभिलाष, चिन्ता, स्मरण, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण। (३) फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के जीवन में प्रत्येक ग्रह का नियत भोगकाल।

दसानन—रावण, दशानन, दशबदन।

दहत—'दहना' शब्द का वर्तमान काल। जलाता है, भस्म करता है।

दहन—दाह, भस्म होने की क्रिया। जलने का भाव। (२) अग्नि, पावक, अनल। (३) भिलावाँ। (४) चीता।

दहनि—दाह, जलन, जलने की क्रिया। (२) भस्म करनेवाली, जलानेवाली।

दहसि—भस्म करती हो, जलाती हो।

दक्ष—निपुण, प्रवीण, कुशल, चतुर, दच्छ, होशियार। (२) दक्षिण, दहिना, दाहना। (३) समर्थ, योग्य, लायक़। (४) प्रसन्न, अनुकूल, मुवाफ़िक़। (५) एक प्रजापति का नाम जिनसे देवताओं की उत्पत्ति हुई है। इनकी कथा वेद और पुराणों में विविध प्रकार से वर्णन की गई है।

दक्षसुता—दक्ष की कन्या, दक्ष को सोलह कन्याएँ उत्पन्न हुईं—श्रद्धा, मैत्री, दया, शान्ति, तुष्टि, पुष्टि, क्रिया, उन्नति, बुद्धि, मेधा, मूर्त्ति, तितिक्षा, ह्री, स्वाहा, स्वधा और सती।

दक्षिण—दक्खिन, दच्छिन की दिशा, उत्तर के सामने की दिशा। सूर्य्योदय काल में सूर्य्य की ओर मुँह कर के खड़े होने से जिधर दाहना हाथ पड़े वह दिशा। (२) दाहिना, दहना, बायाँ का उलटा। (३) सरल, उदार, सीधा। (४) दक्ष, निपुण, चतुर। (५) वह पुरुष जो अनेक स्त्रियों पर बराबर प्रेम करता हो। (६) विष्णु, नारायण, केशव।

दा—दायक, दाता, देनेवाला।

दाइनि / दाई —दात्री, देनेवाली।

दाउँ / दाउ —दाँव, घात, मौक़ा। (२) बाज़ी, होड़, दलबन्दी का खेल।

दाग—(फ़ारसीभाषा-दाग़) धब्बा, चित्ती। (२) चिह्न, अङ्क, निशान। (३) कलङ्क, लाञ्छन, दोष, ऐब। (४) जलने का चिन्ह।

दागि—जला कर, धब्बा डाल कर।

दागिहै—जलावेगा, धब्बा लगावेगा।

दाड़िम—दन्तबीज, अनार, एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसके फल गोल और लालरङ्ग के दानों से भरे रहते हैं। यह भारत वर्ष में सर्वत्र होता है किन्तु अफ़गानिस्तान में उत्तम तथा अधिकता से होता है।

दाँत—दन्त, दशन, रदन, रद, द्विज, खरु। अङ्कुर के रूप में निकली हुई हड्डी जो जीवों के मुह, तालू, गले में होती है। यह आहार चबाने, तोड़ने, काटने और ज़मीन खोदने आदि के काम में आती है।

दात / दाता / दातार —दानशील, देनेवाला।

दातास्माकं—(दाता+अस्माकम्)। हमारे दाता। हमे देनेवाले दानी।

दाद—(फ़ारसीभाषा)। न्याय, इन्साफ़, वाजिब फैसला। दादि। (२) प्राकृतभाषा के अनुसार—दद्रु, एक प्रकार का कुष्ठ रोग।

दान—उत्सर्जन, खैरात, देने का कार्य्य। वह धर्मार्थ कर्म जिसमें श्रद्धा या दयापूर्वक दूसरे को अन्न, वस्त्र, धन आदि दिया जाता है। (२) कर, महसूल, चन्दा। (३) वह वस्तु

जो दान में दी जाय। (४) राजनीति के चार उपायों में से एक। कुछ दे कर शत्रु के विरुद्ध कार्य्य साधन की नीति। (५) हाथी के मस्तक से चूनेवाला मद।

दानि, दानी—दाता, जो दान करे, दान करनेवाला व्यक्ति। (२) त्यागी, पुण्यात्मा, परोपकारी।

दाप—दर्प, अभिमान, घमण्ड। (२) क्रोध, गुस्सा, रिस। (३) शक्ति, बल, ज़ोर। (४) प्रताप, तेज, रोब। (५) दुःख, ताप, जलन। (६) उत्साह, उमङ्ग, हौसला।

दाम—रज्जु, रस्सी, रसरी। (२) माला, स्रक्, हार। (३) समूह, राशि, ढेर। (४) विश्व, लोक, जगत। (५) राजनीति की एक चाल जिसमें शत्रु को धन द्वारा वश में करते हैं। (६) मूल्य, मोल, कीमत। (७) धन, सम्पत्ति, रुपया। (८) धातु, सोना चाँदी आदि खानि से उत्पन्न होनेवाली सातों धातुएँ।

दामिनि, दामिनी—बिजली, विज्जु, सौदामिनी।

दाय—दाँव, पेच, चाल। (२) अग्नि, दावा-नल, वन की आग। (३) ताप, दाह, जलन। (४) दुःख, सन्ताप, पीड़ा।

दार—स्त्री, भार्य्या, पत्नी। (२) फ़ारसीभाषा के अनुसार—काठ, लकड़ी।

दारा—स्त्री, पत्नी। (२) दाता, देनेवाला।

दारिद—दरिद्रता, कँगलई, ग़रीबी।

दारु—काष्ठ, काठ, लकड़ी।

दारुन—दारुण, भीषण, भयावना। (२) प्रचण्ड, दुःसह, विकट। (३) विदारक, चीरने वा फोड़ने वाला। (४) भयानक रस। (५) एक नरक का नाम। (६) विष्णु, केशव। (७) शिव, रुद्र। (८) चित्रक, चीते का पेड़।

दारै—विनाश करै, ध्वंस करै, दलै।

दाँव—चाल, पेच, बन्द, कुश्ती जीतने के लिए काम में लाई जानेवाली युक्ति। (२) उपाय, तदबीर, कार्य्य-साधन की युक्ति। (३) कपट, छल, कुटिल युक्ति। (४) चाल, खेलने की बारी। खेलाड़ियों के खेलने का समय जो एक के पीछे दूसरे की ओसरी आती है। (५) उपयुक्तसमय। अवसर, मौका। (६) बार, दफ़ा, मरतबा। (७) पारी, बारी, ओसरी।

दास—सेवक, किङ्कर, टहलू, वह जो अपने को दूसरे की सेवा के लिए समर्पित कर दे। (२) शूद्र, वृषल, चौथे वर्ण का मनुष्य। (३) चोर, दस्यु, तस्कर। (४) धीवर, मल्लाह। (५) आत्मज्ञानी, ज्ञातात्मा। (६) एक उपाधि जो शूद्रों के नामों के अन्त में लगाई जाती है और हरिभक्तजन भी इस उपाधि को ईश्वर सम्बन्ध से अपने नाम के साथ लगाते हैं। जैसे-सूरदास, तुलसीदास, केशवदास आदि।

दाह—जलन, तपन।

दाहक—दाह करनेवाला। जलानेवाला।

दाहने—दाहिने, अनुकूल। (२) दहिने तरफ़।

दाहिन, दाहिने—दक्षिण, दहिना, दाहना अङ्ग। (२) अनुकूल, प्रसन्न, मुवाफ़िक़। (३) दक्खिन दिशा। वह दिशा जो पूर्व मुख खड़े होने पर दाहिनी ओर पड़ती है।

दिक्—दिशा, आसा, ओर, तरफ़।

दिखात—दिखाई देता है, देख पड़ता है।

दिखावै—दिखाता है, प्रत्यक्ष कराता है।

दिखावैं—दिखाते हैं। प्रत्यक्ष कराते हैं।

दिखावौं—दिखाता हूँ।

दिग—दिशा, आसा, दिक्।

दिगपाल—दिक्पाल, दिगीश, दिशापति, लोकपाल, दसों दिशाओं के पालन करनेवाले देवता। यथा—पूर्व के इन्द्र। अग्निकोण के अग्नि। दक्षिण के यमराज। नैऋत कोण के नैऋत। पश्चिम के वरुण। वायुकोण के पवन। उत्तर के कुवेर। ईशान कोण के ईश। आकाश के ब्रह्मा और पाताल के अनन्त।

दिगन्त—दिशा का अन्त। दिशा का छोर। (२) चारों दिशाएँ वा दसों दिशाएँ।

दिगीश—दिगपाल, लोकेश, दिशापति।

दिग्गज—दिशाओं के हाथी। दिशि कुञ्जर।

पुराणानुसार वे आठों हाथी जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाये रहने और उन दिशाओं की रक्षा करने के लिए स्थापित हैं । उनके नाम ये हैं—पूर्व में ऐरावत, पूर्व-दक्षिण के कोने में पुण्डरीक, दक्षिण में वामन, दक्षिण-पश्चिम के कोने में कुमुद, पश्चिम में अञ्जन, पश्चिम-उत्तर के कोने में पुष्पदन्त, उत्तर में सार्वभौम और उत्तर-पूर्व के कोने में सप्ततीक । (२) बहुत बड़ा, अत्यन्त भारी ।

दिक्षित—दीक्षित, शिक्षित, जिसने शिक्षा ग्रहण की हो । जिसने आचार्य से दीक्षा ली हो । जिसने गुरु से मन्त्र लिया हो । (२) जो किसी यज्ञ में प्रवृत्त हो । जिसने सोमयज्ञादि का सङ्कल्प पूर्वक अनुष्ठान किया हो ।

दिति—दक्षप्रजापति की एक कन्या । कश्यप ऋषि की एक पत्नी । दैत्यों की माता । इन के गर्भ से दैत्यों की उत्पत्ति हुई है, इसी से दैत्य-गण दितिज, दितिसुत, दितिनन्दन आदि कहे जाते हैं । इन्हीं के गर्भ से उनचास खण्ड पवन की भी उत्पत्ति हुई है ।

दिन—अहः, दिवस, वासर, सूर्योदय से लेकर सूर्य्यास्त तक का समय । (२) समय, काल, वक़्त । (३) निश्चित काल, उपयुक्तसमय, नियतवक़्त । (४) निरन्तर, सदा, हमेशा ।

दिनकर—सूर्य्य, भानु, रवि ।

दिनदानि
दिनदानी } प्रतिदिन दान करनेवाला । हमेशा दान देनेवाला । वह जो रोज़ रोज़ दान देता हो । ग़रीब-परवर ।

दिनराति—दिन और रात्रि । साठ दण्ड वा चौबीस घण्टे या आठ पहर का समय ।

दिनेश—सूर्य्य, दिवाकर, भानु ।

दिय—'देना' शब्द का भूतकाल । प्रदान किया, दिया ।

दिया—दीपक, दीप, चिराग़ । (२) 'देना' शब्द का भूतकाल । प्रदान किया, अर्पण किया ।

दियावत—'दिलाना' का वर्तमान काल । दूसरों से कह कर किसी को कोई वस्तु दिलाना ।

दियेई—देना ही, दान करना ही ।

दिव—स्वर्ग, नाक, त्रिदशालय । (२) दिन, दिवस, वासर । (३) वन, जङ्गल ।

दिवस—दिन, वासर ।

दिवसेश
दिवाकर }—सूर्य्य, भानु, रवि ।

दिवान—(अरबीभाषा-दीवान) । राजसभा, दरबार, कचहरी, राजा या बादशाह के बैठने की जगह । (२) मन्त्री, प्रधान, वज़ीर । (३) बैठक, दालान, बैठने का कमरा ।

दिव्य—स्वर्गीय, अलौकिक, स्वर्ग से सम्बन्ध रखनेवाला । (२) अत्यन्त सुन्दर । बहुत अच्छा । निहायत उम्दा । (३) शपथ, सौगन्द, कसम । (४) प्रकाशमान, चमकीला । (५) यव, जौ । (६) आँवला । (७) सतावर । (८) ब्राह्मी । (६) हड़ । (१०) लवङ्ग । (११) हरिचन्दन । (१२) कपूर-कचरी । (१३) जीरा । (१४) श्वेत दूर्वा । (१५) गुग्गुल । (१६) चमेली । (१७) शूकर ।

दिव्यतर—अत्यन्त सुन्दर, बहुत मनोहर ।

दिशा
दिसा }—दिक्, आशा, गो, ककुभ, काष्ठा, दिश, दिशि । दिशा दस हैं । पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, अग्नि, नैऋत्य, वायव्य, अधः और ऊर्ध्व । (२) ओर, तरफ़, कइती । (३) दस की संख्या ।

दिहल
दी }—प्रदान किया, दिया ।

दीजे
दीजै }—प्रदान कीजिए, दीजिए ।

दीठ
दीठि }—दृष्टि, आँख की ज्योति । देखने की शक्ति । (२) चितवन, अवलोकन, निगाह, नज़र । (३) परख, पहचान, तमीज । (४) ध्यान, उद्देश्य । (५) नजरि, वह निगाह जिस का किसी अच्छी वस्तु पर बुरा असर पड़े ।

दीठे—देखा, निहारा, अवलोकन किया ।

दीन—दरिद्र, कङ्गाल, ग़रीब । (२) सन्तप्त, कातर, दुःखित । (३) उदास, खिन्न, रञ्जीदा । (४) नम्र, विनीत, भय या दुःख से अधीनता प्रगट करनेवाला । (५) दीन्ह, दिया, प्रदान किया ।

(६) अर्बीभाषा के अनुसार—मत, धर्म्म विश्वास, मज़हब।

दीनता—दरिद्रता, कँगलई, ग़रीबी। (२) नम्रता, विनीतभाव। दुःख से उत्पन्न अधीनता का भाव। (३) आर्त्तभाव, कातरता, दुःखावस्था। (४) उदासी, खिन्नता।

दीनदयाल—दीनों पर दया करनेवाला।

दीनबन्धु—दुखियों का सहायक, ग़रीबनिवाज।

दीनार्त—दरिद्रता से दुखी, कातरता से दीन।

दीन्ह, दीन्हा—दीन, दिया, प्रदान किया।

दीप—दीपक, दिया, चिराग़। (२) द्वीप, समुद्र से घिरा हुआ स्थल। वह बड़ा पृथ्वी का भाग जो चारों ओर सागर से घिरा हो। (३) एक छन्द का नाम।

दीपक—दीप, दीया, चिराग़। (२) एक अलङ्कार जिसमें प्रस्तुत (जो वर्णन का विषय हो) और अप्रस्तुत (जो वर्णन का उपस्थित विषय नहीं, उपमान आदि हो) का एक ही धर्म्म कहा जाता है अथवा बहुत सी क्रियाओं का एक ही कारक होता है। (३) सङ्गीत में छे रागों में से एक। हनुमत के मत से यह छे रागों में दूसरा राग है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है और षड़ज स्वर से आरम्भ होता है। इसके गाने का समय ग्रीष्म ऋतु का मध्याह्न है।

दीपावली—(दीप+अवली)। दीपक की श्रेणी, दीपमाला, चिराग़ों की कतार।

दीप्त—प्रकाशित, चमकता हुआ, जगमगाता हुआ। (२) प्रज्वलित, जलता हुआ। (३) सुवर्ण, सोना। (४) हिङ्गु, हींग। (५) निम्बू, नीबू। (६) सिंह, केशरी।

दीप्ति—प्रकाश, उजाला, रोशनी। (२) द्युति, आभा, चमक। (३) शोभा, कान्ति, छबि। (४) ज्ञान का प्रकाश जिससे विवेक होता है और अज्ञानान्धकार दूर हो जाता है। (५) लाक्षा, लाख।

दीरघ, दीघ—आयत, विस्तीर्ण, बड़ा, लम्बा चौड़ा।

दुआर—द्वार, दरवाज़ा।

दुइज—द्वितीया, दूज, प्रत्येक पाख की दूसरी तीथि।

दुकाल—दुर्भिक्ष, अकाल, क़हत।

दुकूल—वस्त्र, कपड़ा, पट। (२) महीन वस्त्र।

दुकृत—दुष्कृत, कुकर्म, नीच काम।

दुख—दुःख, कष्ट, तकलीफ़।

दुखवत—दुःख देते हुए। कष्ट पहुँचाते हुए।

दुखारी, दुखित, दुखी—व्यथित, कष्टित, पीड़ित।

दुति—द्युति, आभा, चमक। (२) शोभा, छबि, सुन्दरता।

दुनि, दुनी—जगत, संसार, दुनियाँ।

दुर—दुः, कठोर। (२) दूषण। (३) निषिद्ध। (४) निषेध। (५) दुःख। (६) एक तिरस्कार सूचक शब्द जो हटाने के लिए कहा जाता है जिस का अर्थ है 'दूर हो'।

दुराउ—दुराव, छिपाव, कपट।

दुराचार—दुष्ट आचरण, निन्दितकर्म, खोटी चाल, बुरी चालचलन। (२) अन्याय, अनीति, अत्याचार। (३) पाप, अधर्म।

दुराप—निषिद्ध जल, बुरा पानी।

दुराराध्य—कठिनाई से आराधन करने योग्य। जिसको पूजना या सन्तुष्ट करना कठिन हो। (२) विष्णु, केशव। (३) शिव, महेश।

दुराव—छिपाव, भेदभाव, दुराउ, किसी बात को दूसरे से छिपाने का भाव। (२) कपट, छल।

दुरावों—छिपाओ, ओट में रखने का भाव।

दुराशा, दुरासा—व्यर्थ की आशा। ऐसी आशा जो पूरी होनेवाली न हो। झूठी उम्मेद।

दुरित—पाप, अघ, पातक। (२) पापी, अघी, पातकी। (३) उपपातक, छोटा पाप।

दुरै—छिपै, ओट में हो जावे।

दुरैगी—छिपेगी, ओट में हो जायगी।

दुर्ग—दुर्गम, अगम, जहाँ जाना कठिन हो। (२) गढ़, कोट, किला। (३) एक असुर का नाम जिसे मारने के कारण देवी का नाम दुर्गा पड़ा।

दुर्गत } —दुर्दशा, बुरीगति। ज़िल्लत। (२)
दुर्गति } अगति, नरक-बास। वह कष्ट जो परलोक में हो। (३) दरिद्र, दुर्दशा-ग्रस्त।

दुर्गन्ध—कुबास, बदबू।

दुर्गम—अगम, अवघट, जहाँ पहुँचना कठिन हो। (२) विकट, कठिन, दुस्तर। (३) दुर्ज्ञेय, जिसे जानना कठिन हो। जो जल्दी समझ में न आवे। (४) वन, कानन, जङ्गल। (५) सङ्कट का स्थान। भीषणस्थिति। (६) दुर्ग, गढ़, किला। (७) विष्णु, केशव।

दुर्गा—आदिशक्ति,देवी, भगवती, ईश्वरी, वैष्णवी, नारायणी, महामाया, भुवनेश्वरी, महालक्ष्मी, वेदमाता इत्यादि। (२) शिवा, भवानी, सती, गिरिजा, गौरी,उमा, रुद्राणी,पार्वती, कल्याणी, अन्नपूर्णा, वागीश्वरी, चण्डिका आदि। दुर्गा देवी की उत्पत्ति के सम्बन्ध मेँ देवीभागवत मेँ और ही प्रकार की कथा है। कालिका पुराण में दूसरी तरह तथा काशीखण्ड में भिन्न प्रकार कहा है, यहाँ विस्तार भय से सब का उल्लेख नहीं किया जाता है।

दुर्गार्त्ति—(दुर्ग+आर्त्ति)। कठिन दुःख, कठोर कष्ट, भीषण क्लेश।

दुर्घट—कष्टसाध्य, जिसका होना कठिन हो, मुश्किल से होने, लायक। (२) दुर्गम, औघट, अगम, दुस्तर।

दुर्जन—खल, दुष्ट, खोटाआदमी।

दुर्जय—अजेय, जो जीता न जा सके। जिसका जीतना कठिन हो। (२) विष्णु, हरि।

दुर्दशा } —दुर्गति, सासति, ज़िल्लत।
दुर्दसा }

दुर्दिन—निकृष्टदिन, बुरादिन। (२) दुर्दशा का समय। आपदकाल, बुरावक़्त।

दुर्दोष—कठिन अपराध, अक्षम्य अवगुण।

दुर्द्धर्ष } —प्रचण्ड, उग्र, प्रबल। (२) जिसका
दुर्धर्ष } दमन करना कठिन हो। जिसे वश में न ला सकें। जो अधीन न हो सके। (३) रावण के दल का एक राक्षस। (४) प्रगल्भ, अत्यन्त ढीठ। (५) निर्भय, निडर, शङ्का रहित। (६) धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

दुर्मुख—जिसका मुख बुरा हो। भयानक मुखवाला। विकृतानन। (२) अप्रियवादी, कटुभाषी,बुरे वचन बोलनेवाला। (३) महिषासुर के एक सेनापति का नाम। (४) रामचन्द्रजी की सेना का एक बन्दर योद्धा। (५) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। (६) साठ सम्बत्सरों में से एक। (७) गणेशजी का एक गण। (८) शिव, रुद्र।

दुर्लभ—दुष्प्राप्य, जो कठिनता से मिल सके। जिसे पाना सहज न हो (२) अनुपम, अनोखा, बहुत बढ़िया। (३) प्रिय, प्यारा। (४) विष्णु, नारायण। (५) कचूर।

दुर्वासना—दुष्टआकाङ्क्षा। बुरीइच्छा, खोटी कामना, ख़राब ख़्वाहिश।

दुर्वासा—एक मुनि जो अत्रि के पुत्र थे। इनके नाम के विषय में महाभारत में उल्लेख है कि जिसका धर्म्म में दृढ़ विश्वास हो उसे दुर्वासा कहते हैं। ये अत्यन्त क्रोधी थे। इन्हों ने और्व मुनिकी कन्या कन्दली से विवाह किया था और विवाह के समय प्रतिज्ञा की थी कि स्त्री के सौ अपराध तक क्षमा करेंगे। अपनी प्रतिज्ञानुसार सौ अपराध क्षमा किए। उपरान्त होने पर पत्नी को शाप देकर भस्म कर दिया। जब और्व मुनि ने यह सुना तब कन्या की मृत्यु से शोकातुर होकर उन्हों ने दुर्वासा को शाप दिया कि तुम्हारा दर्प चूर्ण होगा। इसी से राजा अम्बरीष के मामले में इन्हें नीचा देखना पड़ा। इनका स्वभाव कुछ सनकी था। इनके शाप और वरदान की अनेक कथाएँ महाभारत तथा पुराणों में भरी हैं। ये न तो किसी वेद मन्त्र के ऋषि हैं और न वैदिक ग्रन्थों में इनका कहीं नाम मिलता है। ये शिवजी के अंश से उत्पन्न कहे जाते हैं। शेष वृत्तान्त 'अम्बरीष' शब्द में देखो।

दुर्विनीत—अशिष्ट, उद्धत, अविनीत।

दुर्विपाक—निकृष्टपरिणाम, बुराफल। (२) दुर्घटना, बुरासंयोग, (३) दुर्भाग्य, दुर्दैव, अभाग्य, बदकिस्मती।

दुर्व्यसन—निन्दितबानि, बुरीलत, ख़राबआदत। बुराचसका।

दुलार—लाड़, प्यार, प्रेम करना। प्रसन्न करने की वह क्रिया जो स्नेह के कारण लोग बच्चों या प्रेमपात्रों के साथ करते हैं। (२) प्रिय को कुछ विलक्षण सम्बोधनों से पुकारना, शरीर पर हाथ फेरना और चूमना आदि।

दुलारत—'दुलार' शब्द का वर्त्तमानकाल। प्यार करता, दुलारता, स्नेह करता।

दुव—द्वि, दो, जोड़ा।

दुवन—खल, दुर्जन, दुष्ट चित्त का मनुष्य। (२) शत्रु, वैरी, दुश्मन। (३) दैत्य, राक्षस।

दुवार—द्वार, दरवाज़ा।

दुशासन, दुसासन—दुःशासन, धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक जो क्रूर स्वभाव था।

दुष्कर—दुःसाध्य, जिसे करना कठिन हो। जो मुश्किल से हो सके। (२) आकाश, व्योम। (३) पाप, अघ, पातक।

दुष्कर्म—कुकर्म, बुराकाम। (२) पाप, अघ।

दुष्कर्मा, दुष्कर्मी—कुकर्मी, बुराकाम करनेवाला (२) पापी, पापात्मा।

दुष्कर्ष—निन्दितकर्षण, कठिनखिँचाव, बुरी खिँचावट। (२) अनुचित बढ़ावा, बुरा जोश।

दुष्कृत—दुःकृत, कुकर्म, बुराकाम।

दुष्ट—खल, दुर्जन, दुराचारी। (२) दूषित, सदोष, दोष-युक्त। (३) कुष्ट, कोढ़।

दुष्टता—दुर्जनता, खलता, बदमाशी। (२) बुराई, खराबी। (३) दोष, ऐब।

दुष्टाटवी—(दुष्ट+अटवी) दुष्टा का वन, खलोँ का जङ्गल। (२) दुष्टवन। भयानक जङ्गल।

दुष्पाप—कठिनपाप, भयानक अघ, घोर पातक।

दुष्प्राप्य—दुर्लभ, जिसका मिलना कठिन हो।

दुष्प्रेदय—दुष्प्रेक्ष, दुर्दशन, भीषण। (२) जिसे देखना कठिन हो। कठिनता से दिखाई देने वाला। जो मुश्किल से देखने में आवे।

दुसह—असह्य, दुःसह, असहनीय, जो सहा न जा सके। (२) कठिन, कठोर, कड़ा।

दुसासन—दुःशासन, दुशासन।

दुस्तर—अगम्य, अपार, अगम। (२) दुःपार, जिसे पार करना कठिन हो। जो कठिनता से पार हो।

दुस्तर्क्य—कठिनता से जिसकी तर्कना की जाय। जो मुश्किल से विचार्य्य हो। अटकल से बाहर।

दुस्त्यज—जिसका त्यागना कठिन हो। जो कठिनाई से छोड़ा जा सके। मुश्किल से छोड़ने लायक।

दुस्सह—दुःसह, असह्य, जिसका सहन करना कठिन हो।

दुहुँ, दुहूँ—दोनों, युगल।

दुःकर—दुष्कर, दुःसाध्य, जिसका करना कठिन हो।

दुःख—कष्ट की दशा। क्लेश, बाधा, कष्ट, दुःख, कलेश, तकलीफ़, वह अवस्था जिस से छुटकारा पाने की इच्छा प्राणियों में स्वाभाविक हो। (२) सङ्कट, विपत्ति, आफ़त। (३) मानसिककष्ट। खेद, रञ्ज। (४) व्यथा, पीड़ा, दर्द। (५) व्याधि, रोग, बीमारी।

दुःखौघ—(दुःख+ओघ) कष्ट की राशि। बहुत बड़ा कलेश। भारी तकलीफ़।

दुःपाप—दुष्पाप, कठिनपाप। भयानकअघ।

दुःपार—दुस्तर, कठिन से पार पाने योग्य।

दुःप्राप्य—दुष्प्राप्य, दुर्लभ, जिसकामिलनाकठिनहो।

दुःप्रेदय—दुष्प्रेदय, दुर्दशन दुष्प्रेक्ष।

दुःशासन—दुशासन, कुरुबन्धु, दुसासन, जिस पर शासन करना कठिन हो। जो किसी का दबाव न माने। धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक जो दुर्योधन का अत्यन्त प्रेमपात्र और मन्त्री था। यह बड़े क्रूर स्वभाववाला था। जब पाण्डव लोग जुए में हार गये, तब इसी ने द्रौपदी को राजसभा में खींच लाया और उसे वस्त्र हीन करने पर उतारू हुआ। यद्यपि पाँचों पति वहीं

विद्यमान थे किन्तु हार जाने के कारण कुछ बोल न सके। पर भीमसेन ने प्रतिज्ञा की कि मैं इसका रक्त पान करूँगा और जब तक इसके रक्त से द्रौपदी के बाल न रङ्गूगा तब तक वह बाल न बाँधेगी। महाभारत के युद्ध में भीमसेन ने अपनी यह भयङ्कर प्रतिज्ञा पूरी की थी।

दुःशील—दुःस्वभाव, बुरीप्रकृति का।

दुःसह—दुस्सह, असह्य, दुसह, अत्यन्त कष्ट। जिसका सहन करना कठिन हो। जो कष्ट से सहा जाय।

दू—द्वि, दो, दुइ। 'दो' शब्द का संक्षिप्त रूप जो समास बनाने के काम में आता है।

दूजा—द्वितीय, दूसरा। (२) अन्य, अपर, और।

दूत—चर, बसीठ, सन्देशा ले जाने या ले आने वाला मनुष्य। (२) अनुचर, सेवक, दास।

दूतिका, दूती —सञ्चारिका, कुटनी, सन्देशा पहुँचाने वाली स्त्री। वह स्त्री जो प्रेमी का सन्देशा प्रेमिका तक और प्रेमिका का सन्देशा प्रेमी तक पहुँचावे।

दूध—दुग्ध, क्षीर, पय, श्वेतरङ्ग का वह तरल पदार्थ जो स्तनपायी जीवों की मादा के स्तनों में रहता है और जिससे उनके बच्चों का बहुत दिनों तक पोषण होता है। (२) कच्चे अन्न और मदार, बरगद आदि वृक्षों में निकलने वाला सफेद रंग का पतला पदार्थ जो दूध के नाम से पुकारा जाता है। जैसे-बड़ का दूध, मदार, कटहल इत्यादि के दूध।

दून—द्विगुण, दुगुना, दूना।

दूनहुँ—दोनों, युगल, उभय।

दूबर—दुर्बल, दुबला, कमजोर।

दूर, दूरि —अन्तर, फासला, समीप का उलटा। जो पास न हो। (२) भिन्न, न्यारा, अलग।

दूलह—वर, दुलहा, नौशा, वह मनुष्य जिसका विवाह हाल में हुआ हो या होने को हो। (२) भर्त्ता, पति ख़ाविन्द।

दूषन—दूषण, दोष, अवगुण, बुराई, ऐब। (२) अपवाद, अपकीर्ति, निन्दा। (३) एक राक्षस का नाम जो खर और त्रिशिरा के सहित रावण की आज्ञा से दण्डक बन (नासिक) में सूर्पणखा की रखवाली के लिए नियुक्त था। लक्ष्मणजी ने सूर्पणखा के कान-नाक काट दिये। इस पर खरदूषण और त्रिशिरा ने चौदह सहस्र राक्षसों के साथ चढाई की और युद्ध में रामचन्द्रजी के हाथ से सब का संहार हुआ था।

दूषनरिपु, दूषनारि, दूषनारी —दूषणरिपु, दूषणारि, दूषण राक्षस के बैरी रामचन्द्रजी।

दूसर—द्वितिय, दूजा, अन्य।

दृक—छिद्र, रन्ध्र, छेद, सुराख़। (२) हीरा, वज्र, एक रत्न का नाम (३) आँख, दृग, नेत्र। (४) दृष्टि, निगाह, नज़र।

दृग—आँख, चक्षु, नैन।

दृढ़—पुष्ट, कड़ा, ठोस, मजबूत, दृढ़। (२) प्रगाढ़, जो ढीला न हो। खूब कस कर बँधा हुआ। (३) स्थायी, टिकाऊ, जोज ल्दी नष्ट या विचलित न हो सके। (४) निश्चित, ध्रुव, पक्का। (५) निडर, ढीठ, कड़े दिल का। (६) हृष्ट-पुष्ट बलवान्, बलिष्ठ। (७) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। (८) विष्णु, नारायण। (९) लोहा अय। (१०) समर्थ, योग्य, लायक़।

दृत—सन्मानित, आहत, आदरित।

दृश्—दर्शन, देखना, निहारना। (२) प्रदर्शक, दिखानेवाला वा देखनेवाला। (३) दृष्टि, निगाह, नज़र। (४) आँख, नेत्र नयन। (५) ज्ञान, विवेक, समझ। (६) दो की संख्या।

दृश्य—कौतुक, लीला, खेल, तमाशा, वह मनोरञ्जक व्यापार जो आँखों के सामने हो। (२) अभिनय, नाटक, वह काव्य जो खेल कर दर्शकों को दिखाया जाय। (३) सुन्दर, मनोहर, सुहावना। (४) दृष्टिगोचर, जो देखने में आसके। (५) दर्शनीय, जो देखने योग्य हो। (६) नेत्रों का विषय, देखने की वस्तु।

दृश्यद्रष्टा—कौतुक देखनेवाला, लीला का दर्शक, खेलवाड़ देखनेवाला।

दृष्ट—देखा हुआ, जिस पर दृष्टि पड़ चुकी हो। (२) जाना हुआ, समझा हुआ। (३) प्रत्यक्ष, प्रगट, ज़ाहिर।

दृष्टि—निगाह, नज़र, देखने की शक्ति, आँख की ज्योति। (२) ध्यान, विचार, अनुमान। (३) उद्देश्य, अभिप्राय, नीयत। (४) पहचान, परख, तमीज़।

दृष्टिगोचर—जो देखने में आ सके, जिसका बोध नेत्रेन्द्रिय द्वारा हो।

दे—अर्पण करे, प्रदान करे, देवै। (२) देवी, देवाङ्गना, देवताओं की रमणी।

देइ
देई } —देता है, प्रदान करता है। (२) देवी, देवरमणी।

देउँ—देता हूँ, अर्पण करता हूँ, देऊँ।

देउ—देव, देवता, सुर। (२) देवो, प्रदान करो।

देख—'देखना' शब्द का वर्त्तमान काल, देखो।

देखत—अवलोकत, चितवत, निहारत।

देखन—देखने की क्रिया या भाव।

देखना—अवलोकन करना, चितवना, किसी वस्तु के अस्तित्व या उसके रूप, रङ्ग आदि का ज्ञान नेत्रों द्वारा प्राप्त करना। (२) ढूँढ़ना, खोजना, तलाश करना। (३) जाँच करना। पतालगाना, मुआयना करना। (४) समझना, विचारना, सोचना। (५) परीक्षा करना, परखना, आज़माना। (६) भोगना, अनुभव करना। (७) शोधना, ठीक करना।

देत—'देना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप। देता है, प्रदान करता है।

देना—प्रदान करना। दूसरे के अधिकार में करना। किसी वस्तु पर से अपना स्वत्व हटा कर दूसरे का स्वत्व स्थापित करना। (२) सौंपना हवाले करना। अपने पास से अलग कर के दूसरे के पास करना। (३) स्थापित करना, रखना। (४) ऋण, क़र्ज़, उधार लिया हुआ रुपया।

देब
देबो } —देने के लिए वचन देना। (२) देना, हारना, अलग करना।

देबोई—देना ही, दान करना ही।

देय—दातव्य, दान योग्य। देने लायक। (२) देवै, दान करै, हवाले करै।

देव—देवता, विबुध, अमर। (२) पूज्यव्यक्ति। पूजनीय प्राणी। तेजस्वीपुरुष। (३) बड़ों के लिए एक आदर सूचक सम्बोधन। (४) राजा के लिये सन्मान-सूचक शब्द। (५) ब्राह्मणों की एक उपाधि। (६) मेघ, बादल। (७) पारा, रसराज। (८) फ़ारसीभाषा के अनुसार—दैत्य, दानव, राक्षस।

देवता—अदितिनन्दन, अमर, अमर्त्य, अमृतान्धस, अस्वप्न, आदितेय, आदित्य, क्रतुभुज्, गीर्वाण, दानवारि, दिवौकस, देव, दैवत, निर्जर, ऋभु, लेख, वह्निर्मुख, विबुध, वृन्दारक, सुपर्वन, सुमनस्, सुर, त्रिदश और त्रिदिवेश आदि। स्वर्ग में रहनेवाला अमर प्राणी। दिव्यशरीरधारी। पुराणों में लिखा है कि कश्यप की अदिति नाम की स्त्री से देवता उत्पन्न हुए हैं। ऋग्वेद में मुख्य देवता ३३ माने गये हैं। देवता मनुष्यों से भिन्न अमर प्राणी माने जाते हैं, इसका ऋग्वेद में स्पष्ट उल्लेख है। पौराणिक काल में वेद के ३३ देवताओं से ३३ कोटि देवताओं की कल्पना की गई है।

देवदेव—देवताओं के देवता, परमेश्वर।

देवमनि—देवमणि, कौस्तुभमणि, चिन्तामणि, देवताओं का रत्न। (२) सूर्य्य, भानु, दिवाकर। (३) घोड़े की एक भँवरी।

देवऋषि—देवर्षि, देवताओं में ऋषि, देवताओं के लोक में रहनेवाले नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और भृगुऋषि आदि देवर्षि माने जाते हैं। (२) नारद।

देवा—'देव' शब्द का बहुवचन। देवता गण। (२) देना, दिया जाना, प्रदान करना।

देवि
देवी } —देवाङ्गना, देवपत्नी, देवता की स्त्री। (२) दुर्गा, चण्डिका, भगवती। (३) दिव्य गुणवाली स्त्री। सुशीला और सदाचारिणी बाला। (४) पटरानी, वह रानी जिसका अभि-

षेक राजा के साथ हुआ हो । (५) ब्राह्मण स्त्रियों की एक उपाधि ।

देश } —प्रदेश, वह भू भाग जो एक ही राजा वा
देस } शासक के अधीन हो, जिसके अन्तर्गत कई प्रान्त नगर और ग्राम आदि हों । (२) स्थान, ठौर, जगह । (३) अवयव, अङ्ग, शरीर का कोई भाग ।

देह—शरीर, तनु, कलेवर ।

देहवन्त—देही, शरीर-धारी ।

देहि—दीजिये, प्रदान कीजिये ।

देही—प्राणी, शरीर-धारी, शरीरवाला । (२) जीवात्मा, आत्मा, प्राण । (३) देहि, दीजिए ।

देहु—प्रदान करो, देवो ।

दै—दे कर, दान कर के ।

दैत्य—असुर, दनुज, दानव, दितिसुत । दिति की सन्तति, कश्यप की दिति नाम्नी स्त्री से उत्पन्न हुई सन्तान । (२) दुष्ट, खल, दुराचारी ।

दैव—प्रारब्ध, भाग्य, होनी, होनेवाली बात । वह अर्जित शुभाशुभ कर्म जो फल-दायक हो । (२) देवता के द्वारा होनेवाला । (३) देवतासम्बन्धी, (४) देवता को अर्पित । (५) देवता, विबुध, अमर । (६) ब्रह्मा, विधाता, बिधि । (७) ईश्वर, परमात्मा, परमेश्वर । (८) आकाश, व्योम, आसमान ।

दो—एक और एक । दो की संख्या । (२) देव, दान करो ? हवाले करो ।

दोइ }
दोउ } —दोनों, युगल ।
दोऊ }

दोष—अवगुण, दूषण, बुराई, ऐब । (२) अभियोग, लाञ्छन, कलङ्क, लगाया हुआ अपराध । (३) अपराध, कसूर, जुर्म । (४) पाप, अघ, पातक । (५) द्वेष, शत्रुता, बैर । (६) वैद्यक के अनुसार शरीर में रहनेवाले बात, पित्त और कफ जिन के कोप से शरीर में विकार उत्पन्न होता है ।

दोहाई—दुहाई देना । न्याय के लिए गोहार मचाना । सहायता के हेतु पुकारना । (२) द्रोहता, बैरत्व, शत्रुता । (३) शपथ, सौगन्द, कसम ।

दं—दाता, देनेवाला ।

दंश—दन्तक्षत, दाँत से काटने का घाव । वह ज़खम जो दाँत के काटने से हुआ हो । (२) व्यङ्ग, कटूक्ति, बौछार, आक्षेप-वचन । (३) द्वेष, बैर, शत्रुता । (४) विषैले जन्तुओं का डङ्क । साँप आदि विषधर जन्तु के काटने का घाव । (५) विच्छू, भौंरा, मधुमक्षिका आदि का डसना वा डङ्क मारना । (६) डंस, डाँस, एक प्रकार की गोमक्षिका । (७) दाँत, दशन, रद । (८) वर्मि, बकतर ।

द्याइबी—दिलाइयेगा । स्मरण कराइयेगा ।

द्युति—दीप्ति, कान्ति, चमक । (२) शोभा, छबि, लावण्यता । (३) किरण, रश्मि, किरिन । (४) एक ऋषि का नाम ।

द्यूत—जूप, जूआ, हार जीत का खेल ।

द्योत—प्रकाश, चमक, उजेला । (२) घाम, आतप, धूप ।

द्रव—तरल पदार्थ । पानी की तरह पतला । जैसे दूध, रस आदि । (२) पिघला हुआ, बहने लायक । आँच खा कर पानी की तरह फैला हुआ । (३) द्रवण, बहाव, दौड़ । (४) विनोद, परिहास, हँसी-दिल्लगी । (५) वेग, गति, चाल । (६) आर्द्र, ओद, गीला ।

द्रवत—'द्रवना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप । द्रवता है, पिघलता है, पसीजता है ।

द्रव्य—वस्तु, पदार्थ, चीज़ । (२) सामग्री, उपादान, सामान । (३) सम्पत्ति, धन, दौलत । (४) औषध, भेषज, दवा ।

द्रष्टा—दर्शक, देखनेवाला । (२) प्रकाशक, साक्षात् वा प्रगट करनेवाला । (३) सांख्य के अनुसार पुरुष और योग के अनुसार आत्मा । आत्मा द्रष्टा और अन्तःकरण दृश्य माना जाता है ।

द्रुत—शीघ्र, तुरन्त, जल्दी (२) द्रवीभूत, पिघला, गला हुआ (३) द्रुतगति, शीघ्रगामी, तेज़ भागनेवाला । (४) विन्दु, शून्य, सुन्ना (५) आकाश, गमन, आसमान । (६) कूप, कुआँ । (७) वृक्ष, पेड़ । (८) बिलाव, बिल्ली । (९) वृश्चिक, बिच्छू ।

द्रुपद—महाभारत के अनुसार उत्तर पाञ्चाल

(पंजाब) का एक राजा। यह चन्द्रवंशी पृषत् पुत्र का था। राजा द्रुपद ने जब द्रोण को मारनेवाले पुत्र की कामना से पुत्रेष्टि यज्ञ किया, तब उसे धृष्टद्युम्न नाम का पुत्र और कृष्णा (द्रौपदी) नाम की कन्या उत्पन्न हुई। जब कन्या बड़ी हुई तब द्रुपद ने उसका विवाह अर्जुन से करना बिचारा। पर लाक्षागृह में आग लगने के पीछे जब बहुत दिनों तक पाण्डवों का पता न लगा तब द्रुपद ने उपयुक्त वर प्राप्त करनेके लिये धूम धाम से स्वयम्बर रचा। उस में ऊपर एक मछली टाँग दी गई जिस से कुछ नीचे हट कर एक चक्र घूम रहा था। द्रुपद ने प्रतिज्ञा की कि जो कोई उस मछली की आँख को बाण से बेधेगा उसी को द्रौपदी दी जायगी। स्वयम्बर में बहुत दूर दूर से राजा लोग आये, कर्ण के साथ दुर्योधन आदि कौरव और श्रीकृष्ण बलदेव के साथ यादव गण भी आये किन्तु वह लक्ष्य किसी से नहीं भिद सका। उन दिनों पाण्डव गुप्त वनबासी हो रहे थे, वे पाँचों भाई भी घूमते घूमते ब्राह्मण के वेषमें वहाँ पहुँचे। जब कोई क्षत्रिय लक्ष्य भेद न कर सका तब कर्ण उठा। पर द्रौपदी ने कहा कि मैं सूतपुत्र के साथ विवाह नहीं कर सकती। अन्त में ब्राह्मण वेषधारी अर्जुन ने उठ कर लक्ष्य भेद किया। पाँचों पाण्डव उन दिनों गुप्त रूप से एक ब्राह्मण के यहाँ माता सहित रहते थे। द्रौपदी को लेकर पाँचों भाई ब्राह्मण के आश्रम पर गये और द्वार पर माता को पुकार कर बोले। माताजी ! आज हम लोग एक रमणीय भिक्षा लाये हैं। कुन्ती ने भीतर से बिना देखे ही कहा—अच्छी बात है, पाँचों भाई मिल कर भोग करो। माता के वचन की रक्षा के लिए पाँचों भाइया ने द्रौपदी के साथ विवाह किया। नारदजी के सामने परस्पर यह प्रतिज्ञा हुई कि जिस समय एक भाई द्रौपदी के पास हो दूसरा उस समय वहाँ न जाय, यदि जाय तो बारह वर्ष उसे वनबास करना पड़े। विशेष 'द्रौपदी' शब्द देखो।

द्रुपदसुता—द्रौपदी, कृष्णा, पाञ्चाली।

द्रुम—वृक्ष, विटप, पेड़।

द्रोण—द्रोणाचार्य्य, ये महर्षि भरद्वाज के पुत्र थे। परशुराम से अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा पाई और अग्निवेश से अपने पिता (भरद्वाज) के शस्त्र पाये। इन्हों ने शरद्वान् की कन्या कृपी के साथ अपना विवाह किया जिस से अश्वत्थामा नामक वीर पुत्र उत्पन्न हुआ। इन से कौरवों पाण्डवों ने अस्त्र शिक्षा पाई थी। (२) कठवत, कठौता, जल आदि रखने का लकड़ी का बरतन। (३) घट, कलश, घड़ा। (४) नाव, नौका, डोंगी। (५) वृक्ष, विटप, पेड़। (६) द्रोणाचल नाम का पहाड़ जो रामायण के अनुसार क्षीरोद समुद्र के किनारे है और जिस पर सञ्जीवनी नाम की जड़ी होती है। (७) एक प्राचीन माप जो तेरह सौ पैंसठ तोले चार मासे अर्थात् इक्कीस सेर के लगभग होता है। (८) वृश्चिक, बिच्छू।

द्रोणि—द्रोणी, द्रोण का पुत्र अश्वत्थामा। द्रोण की स्त्री, कृपी। (२) नाव, नौका, डोंगी। (३) एक प्राचीन तौल जो पाँच सहस्त्र चार सौ इकसठ तोले चार मासे अर्थात् दो मन दो सेर के बराबर होता है। (४) दोनियाँ, दोना। (५) कठवत, काठ का पात्र। (६) कदली, केला। (७) नील का पौधा।

द्रोह—शत्रुता, बैर, दुश्मनी। (२) ईर्ष्या, डाह, दूसरे का अहित चिन्तन।

द्रोही—शत्रु, बैरी, दुश्मन। (२) द्रोह करने वाला। बुराई चाहनेवाला।

द्रौपदी—कृष्णा, पाञ्चाली, सौरिन्ध्री, वेदिजा, याज्ञसेनी, नित्ययौवना। राजा द्रुपद की कन्या। पाँचों पांडवों की प्रिय-पत्नी। दुर्योधन के साथ जुवा खेलते खेलते युधिष्ठिर सब कुछ हार जाने पर अन्त में द्रौपदी को भी हार गये। उस समय दुर्योधन ने भरी सभा में दुःशासन

के द्वारा द्रौपदी को पकड़ मँगाया। दुःशासन ने सभा के बीच उसकी साड़ी खींच कर नग्न करना चाहा, पर द्वारकानाथ की कृपा से वह चीर खींचते खींचते थक गया किन्तु द्रौपदी के शरीर से वस्त्र नहीं हटा। इस अपमान से क्रुद्ध होकर भीम ने प्रतिज्ञा की कि दुर्योधन ने जौन सी जङ्घा द्रौपदी को दिखाई है उसे मैं अवश्य तोड़ूँगा और इस क्रूर अत्याचारी के कलेजेका रक्तपान करूँगा। कुरुक्षेत्र के युद्ध में भीम ने अपनी वह प्रतिज्ञा पूरी की। विशेष 'द्रुपद' शब्द देखो।

द्वन्द्व—युग्म,जोड़ा, दो वस्तुएँ जो एक साथ हों। (२) कलह, झगड़ा,लड़ाई। (३) रहस्य, गुप्त-बात। भेद की छिपी बात। (४) द्वन्द युद्ध। दो वीरों का परस्पर संग्राम। (५) दुर्ग, गढ़, क़िला। (६) स्त्री-पुरुष वा नर मादा काजोड़ा।

द्वादशि } द्वादशी } —दुआस, बारसि, प्रत्येक पक्ष की बारहवीं तिथि।

द्वार—दुआरि, दुआरी, दरवाजा, घर में आने जाने के लिए दीवार में खुला हुआ स्थान। (२) मुख,मुँहड़ा,मुहाना। (३) सांख्यकारिका मेंअन्तःकरणज्ञान का प्रधान स्थान कहा गया है और ज्ञानेन्द्रियाँ उसके द्वार बतलाईगई हैं।

द्वारा—कर्त्तृत्व से, कारण से, हेतुसे, साधन से जरिये से, सहायता से, वसीलेसे, (२) मार्ग, राह,रास्ता। (३)द्वार,दरवाजा,फाटक,डेउढ़ी।

द्विज—ब्राह्मण, विप्र, भूसुर। (२) चन्द्रमा, इन्दु, शशि। (३) दाँत,रदन, दन्त। (४) पक्षी,पखेरू, चिड़िया। (५) जो दो बार उत्पन्न हुआ हो। जिसका जन्म दो बार हुआ हो।

द्विजराज—चन्द्रमा, मयङ्क, कलाधर। (२) ब्राह्मण, श्रेष्ठ विप्र, विद्वान् ब्राह्मण। (३) गरुड़, वैनतेय, पक्षिराज। (४) कपूर, चन्द्र।

द्विजपूज्य—ब्राह्मणों से आदरणीय। ब्राह्मणों से पूजा किये हुए। (२) विष्णु, नारायण।

द्वितिय } द्वितीय } —द्वितीयक, दूसरा, दूजा।

द्वेष—शत्रुता, बैर, रञ्ज, चित्त को अप्रिय लगने की वृत्ति। (२) ईर्ष्या, डाह, हसद।

द्वै—द्वय, दो, दोनों।

द्वैत—युग्म, युगल, दो का भाव। (२) अन्तर, भेद, अपने और पराये का भाव। (३) भ्रान्ति, भ्रम, दुबधा। (४) अज्ञान, मोह, अविवेक। (५) भेद-भाव, अपने को ऊँचा और दूसरों को लघु समझने का भाव।

द्वैतमूल—भेद-भाव की जड़, अज्ञान का कारण, मोह का हेतु। (२) संसार, जगत, दुनियाँ।

(ध)

ध—हिन्दी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यञ्जन और तवर्ग का चौथा अक्षर। इसका उच्चारण स्थान दन्तमूल है। (२) धर्म, पुण्य। (३) धन, सम्पति। (४) कुबेर, धनद।

धका } धक्का } —प्रति घात, टक्कर, एक बस्तु का दूसरी वस्तु के साथ ऐसा वेगयुक्त स्पर्श जिससे एक या दोनों पर गहरा आघात पड़े। (२) ढकेलने की क्रिया, झोंका देना, चपेटना, (३) आपदा, दुर्घटना, विपत्ति। (४) हानि, घाटा, टोटा, नुक़सान।

धन—सम्पत्ति, द्रव्य, अर्थ, वित्त, सम्पदा, विभव, लक्ष्मी, दौलत आदि (२) ज़मीन, जायदाद, गोधन, इत्यादि। (३) स्नेहपात्र, जीवनसर्वस्व, अत्यन्त प्रिय व्यक्ति। (४) बारह राशियों में से एक। नवीं राशि। (५) स्त्री, युवती, वधू। (६) धन्य, प्रशंसा के योग्य।

धनञ्जय—अग्नि, अनल, पावक, । (२) अर्जुन, पार्थ, पाँचों पाण्डवों में से एक। (३) धनको जीतने अर्थात् प्राप्त करनेवाला। (४) अर्जुन वृक्ष। (५) चित्रक, चित्ता। (६) विष्णु, नारायण।

धनद—कुबेर,धनाधिप, धनेश। (२)धन देनेवाला। दाता। (३) अग्नि, पावक। (४) समुद्रफल, हिज्जल वृक्ष। (५) चित्रक,चित्ता। (६) उत्तराखण्ड के एक देश का नाम।

धनदमित्र—शिव, शङ्कर, कुवेर के सखा।
धनदादि—(धनद+आदि) कुवेर आदि दिग्पाल। लोकपाल।
धनमय—सम्पत्तिशाली, धनका रूप, विभव-पूर्ण। (२) कुवेर, धनाधिप।
धनहीन—निर्धन, दरिद्र, कङ्गाल।
धनि—धन्य, प्रशंसनीय, सराहने लायक़ (२) स्त्री, युवती, वधू।
धनिक } —धनवान' मालदार, दौलतमन्द, जिसके
धनी } पास धन हो। (२) अधिपति, स्वामी, मालिक, वह जिसके अधिकार में कोई हो। (३) पति, भर्ता, शौहर। (४) उत्तमर्ण, महाजन, रुपया उधार देनेवाला।
धनु—धनुष, चाप, कमान। (२) ज्योतिष के बारह राशियों में से नवीं राशि। (३) पियाल वृक्ष। चिरौंजी का पेड़।
धनुर्द्धर—धनुर्धर, कमनैत, तीरन्दाज़, धनुष धारण करनेवाला। (२) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
धनुष—धनुस्, धन्वा, कार्मुक, कोदंड, चाप, शरासन, कमान वह अस्त्र जो बाँस या लोहे के लचीले डण्डे को झुका कर उसके दोनों छोरों के बीच डोरी या ताँत बाँध कर बनाया जाता है। फलदार तीर इससे चलाया जाता है।
धनेश—कुवेर, धनद, धनाधिप।
धन्य—प्रशंसनीय, श्लाघ्य, पुण्यवान्, सुकृती। बड़ाई के योग्य।
धन्यकृत—धन्य किया, सराहनीय बनाया।
धन्या—प्रशंसा योग्य। पुण्यशीला। (२) उपमाता। (३) वनदेवी। (४) धनियाँ। (५) मनु की एक कन्या का नाम जिसका विवाह ध्रुव के साथ हुआ था। (६) आमलकी, छोटा आँवला।
धर—धारण करनेवाला, ऊपर लेनेवाला, सँभालनेवाला। (२) ग्रहण करनेवाला, थामनेवाला, पकड़नेवाला। (३) पर्वत, शैल, पहाड़। (४) कूर्मराज, कच्छप जो पृथ्वी को अपने ऊपर लिए है। (५) धड़, बिना सिर का शरीर। (६) धरने वा पकड़ने की क्रिया। (७) श्रीकृष्ण (८) विष्णु।
धरत—'धरना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप। धरता है, पकड़ता है।
धरन—धरण, धारण, थामने वा ग्रहण करने की क्रिया। (२) सेतु, बाँध, पुल। (३) सूर्य्य, भानु, रवि। (४) संसार, जगत।
धरनहार—धरनेवाला, थामनेवाला, पकड़नेवाला।
धरनि } —पृथ्वी, भूमि, धरती। (२) शाल्मलि
धरनी } वृक्ष, सेमर का पेड़।
धरनीधर } —शेषनाग, पृथ्वी को धारन करने-
धरनीधरन } वाला। (२) पर्वत, पहाड़, विष्णु, (३) शिव।
धरनीधराभम्—पर्वत के समान कान्तिवाला। (२) विष्णु वा शिव के समान शोभावाला।
धरम—धर्म, स्वभाव, गुण।
धरमी—धर्मी, पुण्यात्मा, धार्मिक।
धरा—पृथ्वी, धरती, ज़मीन। (२) संसार, जगत, दुनियाँ। (३) स्थापित, ठहराया हुआ, रक्खा हुआ। (४) चार सेर की एक तौल। (५) एक वर्णवृत्त का नाम।
धराधर—पर्वत, शैल, पहाड़। (२) शेषनाग, अनन्त, पृथ्वी को धारण करनेवाले। (३) विष्णु, हरि।
धरित—पृथ्वी, धरित्री, धरती। (२) पकड़ती, थामती, गहती। (३) पकड़ कर, थाम कर।
धरु—धर, धड़, धज। (२) 'धरना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप। धरो, पकड़ो।
धरो—धरा हुआ, रक्खा हुआ, स्थापित किया हुआ। (२) ग्रहण करो, गहो, पकड़ो।
धर्त्ता—धारण करनेवाला, धरनेवाला। (२) कोई काम अपने ऊपर लेनेवाला।
धर्म—प्रकृति, स्वभाव, किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति जो उस में सदा रहे, कभी उस से अलग न हो। (२) गुण, वृत्ति, अलङ्कार शास्त्र के अनुसार उपमेय और उपमान के साधारण धर्म जो उन में समान रूप से रहते हैं। (३) शुभकर्म, पुण्यकार्य्य, किसी मान्य ग्रन्थ, आचार्य वा ऋषि द्वारा निर्दिष्ट वह कृत्य जो पारलौकिक सुख की प्राप्ति के अर्थ किया जाय।

(४) कर्त्तव्य, फ़र्ज़, किसी जाति, कुल, वर्ग, पद आदि के लिए ठहराया हुआ उचित व्यवहार। (५) पुण्य, सत्कर्म, सदाचार। (६) सम्प्रदाय, पन्थ, मजहब। (७) न्याय, नीति, कानून, परस्पर व्यवहार सम्बन्धी नियम। (८) न्याय बुद्धि, उचित अनुचित का विचार करनेवाली चित्तवृत्ति। (६) यमराज, शमन, धर्मराज। (१०) धनुष, धनु, कमान। (११) सन्ध्या तर्पण आदि नित्यकर्म आश्रम वर्ण के लिए वेद में कही हुई विधि।

धर्मज्ञ—धर्म्म को जनानेवाला।

धर्मा—धर्म्मवाला, स्वभाववाला।

धर्मार्थ—धर्म्म के निमित्त, पुण्य के हेतु, परोपकार के लिए। (२) धर्म्म और अर्थ, सुकृत और ऐश्वर्य्य।

धर्मी—पुण्यात्मा, सुकृती, धार्मिक, धर्म्म करनेवाला। (२) जिस में धर्म हो, गुण विशिष्ट प्राणी। (३) पुण्य का आश्रय, धर्म का आधार। (४) विष्णु, केशव, हरि।

धर्ष—धृष्टता, अविनय, गुस्ताख़ी। (२) असहनशीलता, तुनकमिज़ाजी। (३) अधीरता, बेसब्री, धीरज का अभाव। (४) शक्तिबन्धन, अशक्त करने वा होने का भाव। (५) अपमान, अनादर, हतक। (६) नपुंसक, नामर्द, हिजड़ा। (७) रोक, दबाव। (८) हिंसा, हत्या, जी दुखाने का कार्य्य। (६) सतीत्व हरण।

धवरहर—धवरहरा, धौरहर, मीनार, खम्भे की तरह ऊपर दूर तक गया हुआ मकान का एक भाग जिस पर चढ़ने के लिए भीतर सीढ़ियाँ बनी हों।

धवल—श्वेत, उज्वल, सफ़ेद। (२) सुन्दर, मनोहर, सुहावना। (३) निर्मल, स्वच्छ, झकाझक। (४) धव का पेड़। (५) अर्जुन वृक्ष। (६) श्वेत मिर्च (७) सिन्दूर।

धवलधार—श्वेत धारा, उज्वल प्रवाह।

धाइ, धाई—दौड़ी, शीघ्रता से चली। (२) धात्री, धाय, दाई।

धाता—ब्रह्मा, विधाता, चतुरानन। (२) पालक, रक्षक, पालने वा रक्षा करनेवाला। (३) विष्णु, श्रीपति। (४) शिव, पार्वतीपति।

धातु—सात धातु प्रसिद्ध हैं। जैसे—सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, लोहा, सीसा और जस्ता। इसी प्रकार सात उपधातु हैं। जैसे—सोनामाखी, रूपामाखी, तूतिया, मुरदासङ्ग, सिन्दूर, खपरिया और मण्डूर। कोई कोई काँसा, पीतल और शिलाजीत को भी उपधातु मानते हैं। यह सब धातुएँ खानि से उत्पन्न होती हैं। (२) वैद्यक के अनुसार शरीरस्थ सात धातुएँ हैं। रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र। (३) बात, पित्त और कफ। (४) शब्द का मूल। क्रिया वाचक प्रकृति। वह मूल जिससे क्रियाएँ बनी हैं या बनती हैं। (५) तत्व, भूत, सार। (६) पञ्चभूतों और पञ्चतन्मात्राओं को भी धातु कहते हैं।

धान—शालि, व्रीहि, तृणजाति का एक पौधा जिसके बीज की गिनती अच्छे अन्नों में है।

धान्य—अन्नमात्र, किसी किसी स्मृति में लिखा है कि खेत में के अन्न को शस्य और छिलके सहित अन्न के दाने को धान्य कहते हैं। (२) धान, व्रीहि, शालि। (३) धनियाँ, धना। (४) एक प्रकार का नागरमोथा।

धाम—घर, गृह, मकान। (२) शरीर, तनु, देह। (३) देवालय, देवस्थान, पुण्यस्थल। (४) प्रभाव, शक्ति, बल। (५) दीप्ति, प्रभा, ज्योति। (६) स्वर्ग, परलोक, वैकुण्ठ। (७) जन्म, पैदाइश। (८) किरण, रश्मि। (६) अवस्था, गति। (१०) विष्णु, हरि। (११) छवि, शोभा।

धामिनी—धामवाली, घरवाली, स्थान करनेवाली। (२) गमन करनेवाली, दौड़नेवाली

धाय—दौड़ कर, चल कर। (२) धात्री, धाई, दाया, बच्चों को दूध पिलानेवाली स्त्री।

धायो—दौड़यो, भाग्यो। (२) यत्रतत्र घूमते फिरना।

धार—जलप्रवाह, पानी आदि के बहने वा गिरने का तार। (२) चोखाई, बाढ़, तलवार छुरी आदि का वह तेज़ सिरा जिससे कोई चीज़

काटते हैं। (३) किनारा, छोर। (४) सेना, फ़ौज (५) दिशा, ओर, तरफ़। (६) गम्भीर, गहरा (७) ऋण, क़र्ज़, उधार। (८) प्रान्त, प्रदेश। (९) नोक, अनी, कोर। (१०) रेखा, लकीर।

धारन—धारण, ग्रहण करना, अङ्गीकार करना। (२) थामना, लेना, अपने ऊपरठहराना। (३) परिधान, पहनना, अलङ्कारादि धारण करना। (४) सेवन करना। (५) कश्यप के एक पुत्र का नाम। (६) शिवजी का एक नाम।

धारा—धार, जल-प्रवाह, पानी आदि का बहाव या गिराव। (२) घोड़े की चाल, घोड़े का चलना। (३) समूह, झुण्ड, समुदाय। (४) उत्कर्ष, उन्नति, तरक्क़ी। (५) बाढ़, चोखाई, काटनेवाले हथियार का तेज़ सिरा। (६) प्रकार, भाँति, तरह। (७) चलन, रीति, रिवाज।

धारि—धारण कर के, अङ्गीकार कर के। (२) सेना, कटक, फ़ौज। (३) समूह, झुण्ड।

धारिनि—धारिणी, धारण करनेवाली अपने ऊपर लेनेवाली। (२) पृथ्वी, धरती, ज़मीन।

धारी—धारण करनेवाला, किसी वस्तु को अपने ऊपर लेनेवाला, अङ्गीकार करनेवाला (२) सेना, फ़ौज, लश्कर। (३) समूह, झुण्ड। (४) रेखा, डाँड़ी, लकीर। (५) एक वर्णवृत्त का नाम।

धार्मिक—धर्मात्मा पुण्यात्मा, धर्मशील, धर्म का आचरण करनेवाला। (२) धर्म्म-सम्बन्धी, धर्म्म का।

धार्य—धारणीय, धारण करने के योग्य।

धावत—'धावना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप। दौड़ता है, भागता है, जल्दी जल्दी जाता है। 'ध्यावत' शब्द का अपभ्रष्ट रूप। ध्यान करता है, ध्यान धरता है।

धिक् } धिग् }—धिक्कार, तिरस्कार, लानत, अनादर या घृणा सूचक एक शब्द। (२) निन्दा, शिकायत।

धी—बुद्धि, मनीषा, अक्ल। (२) मन, चित्त। (३) पुत्री, बेटी, लड़की।

धीर—धैर्य्यवान्, जिसमें धैर्य्य हो। जो जल्दी घबरा न जाय, दृढ़ और शान्त चित्तवाला। (२) बलवान, शक्तिशाली, ताक़तवर। (३) विनीत, नम्र। (४) गम्भीर, उदाराशय। (५) मन्द, धीमा। (६) धैर्य्य, धीरज, ढाढ़स। (७) सन्तोष, सब्र।

धीरज—धैर्य, धीरता, चित्त की स्थिरता।

धुआँ—धूम, धुवाँ, अग्नि का विकार। (२) धुर्रा, धज्जी, टुकड़े टुकड़े होना। (३) मृत्यु, ध्वंस, विनाश।

धुन—लगन, किसी काम को निरन्तर करते रहने की अनिवार्य प्रवृत्ति। (२) कम्पन, काँपने का भाव। (३) मन की तरङ्ग। मौज। (४) चिन्ता, ख़याल, फ़िक्र। (५) ध्वनि, नाद, आवाज़।

धुनि—ध्वनि, काव्य में शब्दों के नियत अर्थों के योग से सूचित होनेवाले अर्थ की अपेक्षा प्रसङ्ग से व्यङ्गार्थ में विशेषता हो, उसे ध्वनि कहते हैं। (२) शब्द, नाद, आवाज़। (३) आशय, गूढ़ार्थ, मतलब। (४) धुन, लगन, मन की तरङ्ग।

धुर—अक्ष, गाड़ी या रथ आदि का धुरा। वह लोह-दण्ड जिस पर गाड़ी रथ आदि की पहिया स्थित होकर घूमती है। (२) भार बोझ। (३) आरम्भ, शुरू। (४) ध्रुव, दृढ़, पक्का।

धुरन्धर—भारबाहक, बोझ ढोनेवाला, वह जीव जो बोझ ढोता हो। (२) श्रेष्ठ, प्रधान, जो सब में बहुत बड़ा या बली हो। (३) एक राक्षस का नाम जो प्रहस्त का मन्त्री था।

धुरा—धुर, अक्ष, गाड़ी या रथ की धुरी। (२) भार, बोझ।

धुरीन—धुरीण, बोझ सँभालनेवाला। भार उठानेवाला (२) प्रधान श्रेष्ठ, मुख्य। (३) धुरन्धर, भारबाहक, बोझ ढोनेवाला।

धुवाँ—धुआँ, धूम। (२) नाश, खण्ड खण्ड होना।

धूप—देवपूजन में सुगन्ध के लिए, गुग्गुल, अगर, कपूर, चन्दन आदि गन्धद्रव्यों को जला कर उठाया हुआ धुआँ। (२) राल, सरलनिर्य्यास। (३) आतप, घाम, रौद्र।

धूम—धुआँ, धूम्र, अग्निविकार। (२) कोलाहल, हल्ला, शोर। (३) प्रसिद्धि, जनरव, शुहरत। (४) समारोह, भारी आयोजन। (५) उपद्रव, उत्पात, ऊधम। (६) आन्दोलन, चारों ओर सुनाई देनेवाली चर्चा।

धूमकेतु—अग्नि, अनल, आग। (२) पुच्छलतारा, दुमदार सितारा। केतुग्रह, जिसका चिह्न है धुएँ के आकार की पूँछ। (३) शिव महादेव। (४) रावण की सेना का एक राक्षस।

धूमध्वज—अग्नि, पावक, अनल।

धूरि—धूल, धूलि, रेणु, रज, रेनु, गर्द, मिट्टीरेत आदि का महीन चूर।

धूर्त्त—वञ्चक, दगाबाज़ धोखा देनेवाला। (२) मायावी, छली, चालबाज़। (३) जुआरी, दावपेंच करनेवाला आदमी। (४) धतूरा, कनक। (५) साहित्य में शठ नायक का एक भेद।

धृत—धारण किया हुआ, ग्रहण किया हुआ। (२) धरा हुआ, पकड़ा हुआ। (३) निश्चित, स्थिर किया हुआ, ठहराया हुआ। (४) पतित, गिरा हुआ।

धृति—धैर्य्य, धीरता, मन की दृढ़ता, चित्त की अविचलता। (२) धारण, धरना, पकड़ने की क्रिया। (३) ठहराव, रुकाव, स्थिर रहने का भाव।

धृष्ट—उद्धत, ढीठ, गुस्ताख़, बेजा हिम्मत करने वाला। (२) निर्लज्ज, बेहया, वह मनुष्य जो कोई अनुचित या बेढ़ङ्गा काम करने में कुछ न सहमावे। (३) साहित्य में धृष्ट नायक उसको कहते हैं जो अपराध करता जाता है, अनेक प्रकार का तिरस्कार सहता जाता है, पर अनेक बहाने करके बातें बना कर नायिका के पीछे लगा रहता है।

धेइ—ध्यान करके, सुरति लगा कर।

धेनु—गौ, सुरभी, गाय।

धैर्य्य—धीरज, धीरता, अव्यग्रता, चित्त की स्थिरता, विपत्ति, सङ्कट वा कठिनाई उपस्थित होने पर घबराहट का न होना। (२) उतावला न होने का भाव। हड़बड़ी न मचाने का भाव। सब्र। (३) निर्विकारचित्तता। चित्त में उद्वेग न उत्पन्न होने का भाव।

धोखा—छल, भुलावा, दग़ा, वह धूर्त्तता जिससे दूसरा भ्रम में पड़े। ऐसी चालाकी जिसके कारण दूसरा कोई अपना कर्त्तव्य भूल जाय। वह मिथ्या व्यवहार जिससे दूसरे के मन में मिथ्या प्रतीति उत्पन्न हो (२) डाला हुआ भ्रम। दूसरे के छल द्वारा उपस्थित भ्रान्ति। किसी की धूर्त्तता। (३) भूल, चूक, ग़लती, बिना समझे कोई अनिष्ट कार्य्य कर बैठना।

धोये, धोयो—'धोना' शब्द का भूतकालिक रूप। धोया स्वच्छ किया, निर्मल बनाया।

धौं—न जाने, कौन जाने, मालूम नहीं, एक अव्यय जो ऐसे प्रश्नों के पहले लगाया जाता है जिन में जिज्ञासा का भाव कम और संशय का भाव अधिक होता है। (२) या, कि, अथवा। (३) क्या? तो, भला। (४) विधि आदेश आदि वाक्यों के पहले आनेवाला एक शब्द जो केवल जोर देने के लिये आता है।

धौरहर—धवरहर, मीनार।

ध्याता—ध्यान करनेवाला, विचार करनेवाला।

ध्यान—मानसिक प्रत्यक्ष, देवता आदि के रूप को अन्तःकरण में उपस्थित करने की क्रिया। (२) चिन्तन, मनन, सोचविचार। (३) भावना, विचार, ख़्याल। (४) स्मृति, धारणा, याद। (५) बुद्धि, समझ, बोध करनेवाली वृत्ति। (६) चित्त को चारों ओर से हटा कर किसी एक पर स्थिर करने की क्रिया।

ध्यानी—ध्याता, ध्यान करनेवाला।

ध्रुव—निश्चित, दृढ़, पक्का, ठीक। (२) स्थिर, अचल, सदा एक ही स्थानपर रहनेवाला। (३) नित्य, अनश्वर, सदा एक ही अवस्था में रहनेवाला। (४) आकाश, नभ। (५) पर्वत, पहाड़। (६) खम्भा, थून। (७) बड़, बरगद। (८) विष्णु, हरि। (९) शिव, हर। (१०) ध्रुवतारा जो एक ही जगह स्थिर रहता है और सूर्य्य, चन्द्रमा, नक्षत्र सब

उसको प्रदक्षिणा करते रहते हैं। (११) राजा उत्तानपाद के पुत्र और हरिभक्तों में प्रसिद्ध। राजा उत्तानपाद के दो स्त्रियाँ थीं। सुनीति से ध्रुव और सुरुचि से उत्तम नाम का पुत्र हुआ। राजा सुरुचि को बहुत चाहते थे। एक दिन सुरुचि के महल में उत्तम को गोद में लिए बैठे थे इसी बीच में ध्रुव आ पहुँचे और वे भी पिता की गोदी में जा बैठे। पर सुरुचि ने अवज्ञा के साथ ध्रुव को उठा दिया, वे दुखी हो वन में तप करने चले गये। भगवान् उनकी भक्ति से प्रसन्न हुए और उन्हें वर दिया कि "तुम सब लोकों, ग्रहों और नक्षत्रों के ऊपर उनके आधार स्वरूप होकर अचल भाव से स्थिर रहोगे और जिस स्थान पर तुम रहोगे वह ध्रुवलोक कहलावेगा" इसके बाद ध्रुव ने घर आकर छत्तीस हज़ार वर्ष राज्य कर ध्रुव लोक में निवास किया। इनकी कथा भागवत और अभिनव विश्रामसागर में विस्तार पूर्वक लिखी है।

ध्वज, ध्वजा—पताका, झण्डा, निशान। (२) दर्प, गर्व, घमण्ड।

ध्वान्त—अन्धकार, अँधेरा, तिमिर।

ध्वान्तचर—राक्षस, मनुजाद, निशाचर। (२) चोर, तस्कर, भँड़िहा। (३) रात्रि में विचरनेवाले जीव जन्तु आदि।

ध्वंस—नाश, क्षय, हानि। (२) अभाव, तिरोभाव, अवस्थान्तर।

(न)

न—हिन्दी वर्णमाला का बीसवाँ व्यञ्जन और तवर्ग का पाँचवाँ वर्ण। इसका उच्चारण स्थान दन्त है। (२) नहीं, मत, निषेध-वाचक शब्द। (३) सुवर्ण, सोना। (४) उपमान, उपमा। (५) रत्न, जवाहिरात। (६) नर, मनुष्य। (७) सूर्य्य, दिवाकर।

नइ, नई—नवीन, नूतन, ताज़ी। (२) नीतिज्ञ, नीतिवान, नीति का जाननेवाला।

नकवान, नकवानी—नकवानी, हैरानी, नाक में दम। (२) उकताहट, ऊब, किसी के अनुचित व्यवहार से अकुलाना।

नक्र—नाक, कुम्भीर, घड़ियाल।

नख—नखर, नह, हाथ या पैर का नाखून। (२) व्याघ्रनखी, एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

नगन—नग्न, नंगा, जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। (२) नगण, पिङ्गलशास्त्र में तीन लघु अक्षरों का एक गण।

नगर—पुर, नगरी, शहर, मनुष्यों की वह बड़ी बस्ती जो गाँव या कस्बे से बड़ी हो। प्राचीन ग्रन्थों में लिखा है कि जिस स्थान पर बहुत सी जातियों के अनेक व्यपारी और कारीगर रहते हों तथा प्रधान न्यायालय हो उसे नगरकहते हैं।

नग्न—नगन, वस्त्र-हीन, दिगम्बर, नङ्गा, जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो।

नचायो—नृत्य कराया, नचाया, घुमाया।

नचाव—नचाता है, नृत्य कराता है। (२) घुमाता है, फिराता है।

नट—नर्त्तक, नचवैया, नाचनेवाला, नाट्यकला में प्रवीण पुरुष। (२) एक नीच जाति जो प्रायः गा बजा कर और तरह तरह के खेल तमाशे, डण्ड, कसरत कर के अपना निर्वाह करती है। (३) एक राग का नाम। (४) इन्द्रजाली, बाजीगर। (५) अशोक का पेड़। (६) मैनफल, मदन।

नत—नम्र, नमित, झुका हुआ। (२) नतु, नतरु, नहीं तो। (३) दीन, विनीत, ग़रीब।

नतग्रीव—नमितग्रीव, गरदन झुकाये, सिर नवाये।

नतपाल—प्रणतपाल, शरणपाल, प्रणाम करनेवाले को पालनेवाला।

नतमाथ—मस्तक नवाये, सिर झुकाये।

नतरु—अन्यथा, नहीं तो।

नति—नम्रता, नवनि। (२) प्रणाम, नमस्कार। (३) विनय, बिनती। (४) झुकाव, उतार।

नद—महानद, बड़ी नदी अथवा ऐसी नदी जिसका नाम पुल्लिङ्गवाची हो। जैसे—सोन, दामोदर, ब्रह्मपुत्र आदि।

नदी—आपगा, तटिनी, तरङ्गिणी, धुनी, निम्नगा, निर्झरणी, शैवलिनी, सरि, सरित, सरिता, स्रवन्ती, स्रोतस्वती, ह्रादिनी आदि। दरिया। पहाड़ या किसी झील से निकल कर जो बड़ी धारा समुद्र तक पहुँचती या बीच में किसी बड़ी नदी से मिलती है, वह नदी कहलाती है।

नन्द—आनन्द, हर्ष, प्रसन्नता। (२) पुत्र, बेटा, लड़का। (३) गोकुल के ग्वालों के मुखिया जिनके यहाँ श्रीकृष्णचन्द्र जी को जन्म के समय वसुदेव जाकर रख आये थे। श्रीकृष्ण-जी की बाल्यावस्था नन्द ही के घर बीती थी। (४) विष्णु, केशव। (५) सच्चिदानन्द, परमेश्वर। (६) नौ निधियों में से एक। (७) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। (८) वसुदेव के एक पुत्र का नाम जो मदिरा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। (९) एक राग का नाम, जिसे कोई कोई मालकोस का पुत्र मानते हैं।

नन्दन—आनन्द देनेवाला प्रसन्न करनेवाला। (२) मेघ, बादल, घन। (३) पुत्र, बेटा, लड़का। (४) इन्द्र के उपवन का नाम जो स्वर्गीय माना जाता है। (५) विष्णु, श्रीपति। (६) शिव, महादेव। (७) साठ सम्वत्सरों में से छब्बीसवाँ सम्वत्सर। (८) प्रिय, वत्सर, प्यारा। (९) चन्दन। (१०) केसर। (११) दादुर, मेंढक।

नन्दादि—(नन्द+आदि) नन्द आदि गोप-गण।

नन्दिनि }
नन्दिनी } —पुत्री, कन्या, बेटी, लड़की। (२) आनन्द देनेवाली। खुश करनेवाली। (३) पार्वती, उमा, गौरी। (४) ननद, पति की बहन। (५) दुर्गा का एक नाम। (६) गङ्गा का एक नाम। (७) एक वर्णवृत्त का नाम। (८) जटामासी, बालछड़। (९) रेणुका नामक गन्धद्रव्य।

नभ—आकाश, व्योम, आसमान, पञ्चतत्व में से एक। (२) शून्य, सुन्ना, सिफर। (३) आश्रय, आधार, सहारा। (४) श्रावण और भादों का महीना। (५) निकट, पास, नज़दीक। (६) मेघ, बादल। (७) शिव, शङ्कर। (८) पानी, जल। (९) अभ्रक। (१०) हिंसक।

नभचर—नभश्चर, आकाश में चलनेवाला। (२) पक्षी, खग। (३) मेघ, घन। (४) पवन, हवा। (५) देवता, गन्धर्व और ग्रह आदि।

नभवाटिका—आकाश का उपवन, आसमान की फुलवारी। (२) झूठा बगीचा जिसमें वृक्ष फूल फल कुछ भी न हों।

नम—नमः, नमस्, नमस्कार। (२) अन्न, अनाज। (३) वज्र, गाज। (४) यज्ञ, मख। (५) स्तोत्र, स्तुति। (६) त्याग, विरक्ति। (७) फ़ारसी भाषा के अनुसार—आर्द्र, गीला, तर।

नमत—नम्र, जो झुके, नवता हुआ। (२) प्रभु, स्वामी। (३) धूम, धुआँ। (४) नर्त्तक, नट।

नमित—नम्र, झुका हुआ, नमस्कार करता हुआ।

नम्र—विनीत, जिसमें नम्रता हो। (२) नमित, झुका हुआ।

नय—नीति, व्यवहार कुशलता (२) नम्रता, नवनि। (३) विष्णु, हरि। (४) नदी, सरिता।

नयन—आँख, नेत्र, लोचन। (२) एक प्रकार की मछली।

नया }
नयो } —नवीन, नूतन, ताजा। (२) नमित हुआ, नम्र हुआ, विनीत हुआ।

नर—पुरुष, मर्द, आदमी। (२) मनुष्य, मनुज, मानव। (३) अर्जुन, पार्थ, गाण्डीवी। (४) विष्णु, हरि। (५) शिव, हर। (६) धर्मराज और दक्षप्रजापति की एक कन्या से उत्पन्न एक ऋषि जो ईश्वर के अवतार माने जाते हैं, नारायण इनके बड़े भाई थे।

नरक—निरय, दोज़ख़, जहन्नुम, पुराणों और धर्म्मशास्त्रों के अनुसार वह स्थान जहाँ पापी मनुष्यों की आत्मा पाप का फल भोगने के लिए भेजी जाती है। (२) मल, पुरीष, विष्ठा। (३) बहुत ही अपवित्र और गन्दा स्थान।

नरकरूप—नरक का रूप, पापात्मा प्राणी।

नरकेसरी—नरकेशरी, नृसिंह जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं। (२) मनुष्यों में सिंह के समान निडर, निर्भय पुरुष, निर्भीक मनुष्य।

नरत—नरत्व, नरता, मनुष्यत्व। (२) अतत्पर, बिना प्रीति, नहीं लगनेवाला।

नरदेव—राजा, नृपति, महिपाल । (२) ब्राह्मण, भूसुर, विप्र । (३) मनुष्य रूप में देवता, श्रीरामचन्द्रजी ।

नरनारि—द्रौपदी, पाञ्चाली, अर्जुन की स्त्री । (२) पुरुष-स्त्री, मर्द और औरत ।

नरपति—राजा, नृपति, नृपाल ।

नरभूप—मनुष्य-राजा, मनुज-भूपाल ।

नरम—(फ़ारसीभाषा) मृदु, कोमल, मुलायम ।

नरमौलि—नरमुण्ड, मनुष्य का मस्तक, आदमी की खोपड़ी । (२) नर शिरोमणि ।

नरलोक—मनुष्यलोक मृत्युलोक, संसार ।

नरेस—राजा, नरेश, नरपाल, मनुष्यों का मालिक

नरो—नर, पुरुष, मर्द ।

नर्क—नरक, निरय, दोज़ख़ ।

नर्म—परिहास, क्रीड़ा, खेल, हँसी-दिल्लगी । (२) कल्याण, क्षेम, कुशल । (३) आनन्द, हर्ष, खुशी ।

नर्मद—आनन्ददायक, हर्ष देनेवाला । (२) कल्याणदाता, कुशल प्रदान करनेवाला । विदूषक, मसख़रा, दिल्लगीबाज़ ।

नल—निषध देश के चन्द्रवंशी राजा वीरसेन के पुत्र का नाम जो बहुत ही सुन्दर और बड़े गुणवान थे । विशेषतः घोड़ों की परीक्षा और सञ्चालन में बड़े दक्ष थे । ये विदर्भ देश के तत्कालीन राजा की कन्या दमयन्ती के रूप और गुणों की प्रशंसा सुन कर उस पर आशक्त हो गये थे । एक दिन जब ये बाग़ में दमयन्ती की चिन्ता में बैठे हुए थे तब कुछ हंस उड़ते हुए आकर इनके सामने बैठ गये । नल ने उनमें से एक हंस को पकड़ लिया । उस हंस ने कहा—महाराज ! आप मुझे छोड़ दें तो मैं जाकर आप के रूप और गुणों की प्रशंसा दमयन्ती से करूँगा । राजा ने छोड़ दिया, वह उड़ कर दमयन्ती के बाग़ में गया और राजा नल के रूप-गुण की भूरि भूरि प्रशंसा की । दमयन्ती का पहला अनुराग और भी बढ़ा, उसने नल के साथ विवाह करने की प्रतिज्ञा कर ली । हंस ने सब हाल जाकर नल को सुना दिया । जब राजा भीम ने दमयन्ती का स्वयम्बर रचा तब राजाओं के अतिरिक्त इन्द्रादि देवता भी आये । दमयन्ती ने नल को जयमाल पहनाई । राजा नल भार्य्या सहित अपनी राजधानी में आये और बारह वर्ष तक दोनों के दिन आनन्द से बीते । इस बीच में नल को इन्द्रसेन नामक एक पुत्र और इन्द्रसेना नाम की एक कन्या हुई । कलि की धूर्त्तता से एक दिन राजा नल अपने भाई पुष्कर से जुआ खेल कर अपना सर्वस्व हार गये । जब वे दरिद्र हो गये तब दमयन्ती ने पुत्र-कन्या को पिता के घर भेज दिया । राजा रानी वन में निकल गए वहाँ दम्पति को बड़े बड़े कष्ट भोगने पड़े । दमयन्ती का क्लेश राजासे देखा नहीं जाता था इस लिये बार बार उसे पिता के घर जाने को कहते थे, पर उसने नहीं माना । एक बार दमयन्ती सो गई, राजा उसे वन में छोड़ चल दिये । जब वह जगी तब बहुत विलाप करती इधर उधर ढूँढने लगी पर पता न चला । अन्त में अनेक कष्ट उठा कर पिता के घर पहुँची । इधर राजा नल चित्रकूट पर जा कर तप करने लगे । उनका अनुष्ठान निर्विघ्न समाप्त हुआ और ईश्वरानुग्रह से बुरे दिनों का अन्त हुआ । फिर वे जाकर अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के सारथी हुए । बहुत पता लगाने पर दमयन्ती को यह मालूम हुआ, उसने पिता के द्वारा ऋतुपर्ण के यहाँ कहलाया कि कल्ह दमयन्ती का स्वयम्बर होगा । उनके सारथी ने एक ही दिन में ऋतुपर्ण को विदर्भ पहुँचा दिया । दमयन्ती ने नल को पहचान लिया, तीन वर्ष घोर कष्ट के बाद दम्पति मिले । ऋतुपर्ण नल से माफी माँग कर अयोध्या चले आये और नल अपने भाई से राज्य जीत कर पुनः पूर्ववत सुख से रहने लगे । दमयन्ती का पतिव्रत आदर्श माना जाता है और घोर कष्ट भोगने के लिए नल दमयन्ती प्रसिद्ध हैं । (२) कमल, सरोज, पद्म । (३) नर-

कट, नरसल। (४) नली, फोंफी, चोंगा, डण्डे के रूप में बनी वह वस्तु जो पोपली हो और जिसमें से पानी, हवा, धुआँ आदि एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुँचाया जाता है। (५) रामचन्द्रजी की सेना का एक बन्दर जो विश्वकर्मा का पुत्र कहा जाता है। (६) यदुके एक पुत्र का नाम।

नलिनी—कमलिनी, पद्मिनी। (२) कमल, कञ्ज।

नव—नवीन, नूतन, नया। (२) स्तव, स्तोत्र। (३) नौ की संख्या, आठ और एक।

नवग्रह—फलित ज्योतिष में सूर्य्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, और केतु ये नव ग्रह गिनाये गये हैं।

नवद्वार—शरीर में के नौ द्वार। यथा—दो आँखें, दो कान, दो नाक, एक मुख, एक गुदा, और एक लिङ्ग का छिद्र। यही देह रूपी घर के नौ दरवाज़े हैं और मरते समय इन्हीं में किसी एक से प्राण-वायु बाहर निकलती है।

नवमी—चान्द्रमास के दोनों पक्षों की नवीं तिथि।

नवरस—काव्य के नौ रस। यथा-शृङ्गार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त।

नवल—नवीन, नव्य, नूतन। (२) सुन्दर, मनोहर, सुहावना। (३) युवा, नवयुवक, जवान। (४) उज्वल, स्वच्छ, साफ़।

नवाम्बुद—(नव+अम्बुद)। नवीन मेघ। तुरन्त के उमड़े जल भरे हुए मेघ।

नवीन—नव्य, नूतन, नया, टटका, ताजा, अभिनव, हाल का। प्राचीन का उलटा। (२) विचित्र अपूर्व, अनोखा, (३) तरुण, नवयुवक, जवान।

नष्ट—जिसका नाश हो गया हो, जो बरबाद हो गया हो। जो बहुत दुर्दशा को पहुँच गया हो। (२) जो अदृश्य हो, जो दिखाई न दे। (३) अधम, नीच, पापी। (४) दरिद्र, निर्धन, कङ्गाल। (५) व्यर्थ, निष्फल, बेफ़ायदा।

नसाइ—नष्ट हो, नाश को प्राप्त हो।

नसातो—नष्ट होता, बरबाद हो जाता।

नसानी—नष्ट हुई, बिगड़ गई, नाश को प्राप्त हुई, बरबाद हुई, ख़राब हो गई।

नसै—नष्ट हो, नाश को प्राप्त हो, नसाइ।

नहत—'नहना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप। नाधता है, जोतता है, काम में तत्पर करता है।

नहते—नाधते, जोतते, जुखते, यह शब्द प्रायः बैलों को हल आदि चलाने के लिए गले में जुआ डाल कर जोड़ने में किसान लोग प्रयोग करते हैं। जैसे—बैलों को जुखर दो।

नहि, नहीं—एक अव्यय जिसका व्यवहार निषेध या अस्वीकृति प्रगट करने के लिए होता है। इनकार।

नह्यो—दधि, दही, जमाया हुआ दूध। (२) मलाई, साढ़ी, पके दूध पर जमनेवाली मोटी फाँफी। (३) जलपान, कलेवा, नास्ता।

ना—न, नहीं, एक अभाव-सूचक शब्द।

नाइ, नाई—नम्र होकर, नवाकर। (२) डालकर, टपकाकर। (३) नापित, नाऊ, हज्जाम। (४) खोया, बहाया, पबारा।

नाईं—समान, तुल्य, बराबर।

नाउ—नाव, नौका, डोंगी। (२) नम्र हो, नवो या झुको, सिर नवावो।

नाउँ—नाम, आख्या, संज्ञा। (२) प्रसिद्धि, ख्याति, नामवरी।

नाओं—'नवना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप। नवता हूँ, सिर नवाता हूँ।

नाक—नासा, नासिका, घ्राण, निकुरा, सूँघने और साँस लेने की इन्द्रिय। पाँच ज्ञानेन्द्रियों में से एक, जिसका विषय गन्ध लेना है। (२) आकाश, व्योम, अन्तरिक्ष। (३) स्वर्ग, देवलोक। (४) नक्र, कुम्भीर, घड़ियाल। (५) मर्य्यादा, इज़्ज़त,

नाकहि आये—नाक में आने अर्थात् नाकोंदम होने से, ऊबने अथवा घबरा जाने से। (२) नहीं कह आया, नहीं कहते बना, न कहा।

नाग—सर्प, अहि, साँप। (२) हाथी, हस्ती, वारण। (३) मेघ, बादल। (४) आठ की संख्या। (५) पान, ताम्बूल। (६) दुष्ट या निर्दय मनुष्य।

(७) एक देश का नाम । (८) सीसा, सातों धातुओं में से एक । (९) नागकेसर, पुन्नाग । (१०) नागरमोथा, मुस्तक ।

नागर—नगर सम्बन्धी । नगर में रहनेवाला, शहर-निवासी मनुष्य । (२) प्रवीण, चतुर, होशियार । (३) शुण्ठी, सोंठ । (४) मुस्ता, नागरमोथा । (५) नारङ्गी ।

नागराज—शेषनाग, सर्पेश, साँपों के मालिक । (२) गजेन्द्र, बड़ा हाथी, हाथियों का स्वामी । (३) ऐरावत, इन्द्र का हाथी ।

नागरी—नगर की रहनेवाली स्त्री, शहर निवासिनी औरत । (२) प्रवीण स्त्री, चतुर औरत । (३) देवनागरी, भारतवर्ष की वह प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत और हिन्दी लिखी जाती है ।

नागेन्द्र—'नागराज' । गजेन्द्र और शेषनाग ।

नाच—नृत्य, लास्य, नर्त्तन, वह उछल कूद या खेल जो चित्त की उमङ्ग से हो । (२) कृत्य, कर्म, धन्धा । (३) इधर उधर फिरना, दौड़ना धूपना ।

नाज—अन्न, अनाज, ग़ल्ला । (२) खाद्यद्रव्य, भोजन सामग्री, खाना ।

नाटक—अभिनय, वह दृश्य जिसमें स्वाँग के द्वारा चरित्र दिखाये जाँय । रङ्गशाला में नटों की आकृति, हाव-भाव, वेश और वचन आदि द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन । (२) दृश्यकाव्य, अभिनय ग्रन्थ । वह काव्य या ग्रन्थ जिसमें स्वाँग के द्वारा दिखाया जानेवाला चरित्र हो । (३) काव्य दो प्रकार के माने गये हैं—श्रव्य और दृश्य । इसी दृश्यकाव्य का एक भेद नाटक है । (४) नट, नाच करनेवाला ।

नात—सम्बन्ध, नाता । (२) सम्बन्धी, नातेदार ।

नाथ—स्वामी, प्रभु, मालिक । (२) नथ, नथिया, एक आभूषण का नाम जिसे स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं । (३) गोरखपन्थी साधुओं की एक पदवी । (४) वह रस्सी जिसे बैल, भैंसे आदि की नाक छेद करवश में रखने के लिए पहनाते हैं ।

नाद—शब्द, ध्वनि, आवाज़ । (२) सङ्गीत, गान विद्या । (३) वर्णों का अव्यक्त मूल रूप ।

नाना—अनेक, विविध, बहुत प्रकार के, अनेक तरह के । (२) मातामह, माता का पिता । माँ का बाप । (३) नम्र करना, झुकाना, नवाना । (४) प्रविष्ट करना, घुसेड़ना । (५) डालना, फँकना । (६) अर्बीभाषा के अनुसार—पुदीना ।

नानाकस—नाना मनुष्य, अनेक व्यक्ति, बहुत आदमी । (२) विविध सखा, अनेक मित्र, बहु दोस्त ।

नान्त—(न + अन्त) । अनन्त, जिसका अन्त न हो ।

नाभ, नाभि, नाभी—तुन्दी, तुन्दिका, धुनी, बोड़री, पिण्डज जीवों के पेट के बीच में वह गड्ढा जहाँ गर्भावस्था में जरायु-नाल जुड़ा रहता है ।

नाभिसर—नाभि रूपी सरोवर ।

नाम—संज्ञा, आख्या, आह्वा, किसी वस्तु या व्यक्ति का निर्देश करनेवाला शब्द । वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति वा वस्तु का बोध हो । (२) प्रसिद्धि, ख्याति, नामवरी ।

नामिनी—नामवाली, संज्ञावाली ।

नामी—नामधारी, नामवाला । (२) प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर ।

नाय—नीति, नय । (२) नाम, नाउँ । (३) उपाय, युक्ति । (४) नेता, अगुआ । (५) आधार, सहारा ।

नायक—नेता, अगुआ, प्रधान, लोगों को अपने कहे पर चलानेवाला पुरुष । (२) स्वामी, प्रभु, मालिक । (३) श्रेष्ठ पुरुष, जिसकी शोभा पर मन मोहित हो जाय । (४) सेनाध्यक्ष, फ़ौज का अफ़सर । (५) कलावन्त, सङ्गीतकला में निपुण पुरुष । (६) एक वर्णवृत्त का नाम । (७) साहित्यदर्पण में लिखा है कि दानशील, कृती, सुश्री, रूपवान, युवक, कार्य्यकुशल, लोकरञ्जक, तेजस्वी, पण्डित और सुशील ऐसे पुरुष को नायक कहते हैं ।

नाये, नायो—नम्र हुए, नमित हुए, सिर झुकाये ।

नारकी—पापी, नरक भोगनेवाला, नरक में जाने योग्य कर्म करनेवाला प्राणी ।

नारद—एक ऋषि का नाम जो ब्रह्मा के पुत्र और देवर्षि माने जाते हैं । ऋग्वेद मण्डल ८ और

९ के कुछ मन्त्रों के कर्त्ता एक नारद का नाम मिलता है जो कहीं कण्व और कहीं कश्यप वंशी लिखे गए हैं, इतिहास और पुराणों में नारद देवर्षि कहे गए हैं जो नाना लोकों में विचरते रहते हैं और इस लोक का सम्वाद उस लोक में दिया करते हैं, हरिवंश में लिखा है कि नारद ब्रह्मा के मानस पुत्र हैं। ब्रह्मा ने प्रजा सृष्टि की अभिलाषा कर के पहले मरीचि अत्रि आदि को उत्पन्न किया, फिर सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार, स्कन्द, नारद और रुद्रदेव उत्पन्न हुए। विष्णु पुराण में लिखा है कि ब्रह्मा ने अपने सब पुत्रों को प्रजा सृष्टि करने में लगाया पर नारद ने कुछ बाधा की, इस पर ब्रह्मा ने उन्हें शाप दिया कि "तुम सदा सब लोकों में घूमा करोगे; एक स्थान पर स्थिर होकर न रहोगे।" महाभारत में इनका ब्रह्मा से सङ्गीत की शिक्षा लाभ करना लिखा है। भागवत और ब्रह्मवैवर्त्त आदि पुराणों में नारद के सम्बन्ध में तरह तरह की कथाएँ मिलती हैं। सृष्टि करना अस्वीकार करने से ब्रह्मा ने इन्हें शाप दिया और ये गन्धमादन पर्वत पर उपवर्हण नामक गन्धर्व हुए। एक दिन इन्द्र की सभा में रम्भा का नाच देखते देखते ये काम मोहित हो गए। इस पर ब्रह्मा ने फिर शाप दिया कि 'तुम शूद्र मनुष्य हो'। द्रुमिलनामक गोप की स्त्री कलावती के गर्भ में गन्धर्व देह त्याग कर मनुष्य होकर जन्म धारण किया। वह स्त्री वेदपाठी ऋषियों की नित्य टहल करती थी, माता के साथ वह बालक भी मुनियों की सेवा करने लगा। निरन्तर भगवान का चरित्र सुनने से बालक के मन में भगवद्धर्म में अपार श्रद्धा उत्पन्न हुई। पाँच वर्ष की अवस्था में माता का देहावसान होगया, तब ये हिमालय पर जाकर ईश्वराराधन करने लगे। इनके हृदय में भगवान के रूप का प्राकट्य हुआ और आकाश वाणी हुई कि 'तुमचिन्ता न करो, इस निन्द्य शरीर को त्याग कर तू मेरा पार्षद होगा और तभी प्रत्यक्ष दर्शन भी होंगे'। कल्पान्त में फिर ये ब्रह्माजी के कण्ठ से उत्पन्न हुए, इत्यादि। नारद बड़े भारी हरिभक्त और भगवान के प्यारे हैं, इनके हृदय में सर्वदा नारायण दर्शन देते रहते हैं। ये सदा भगवान का यश वीण बजा कर गान करते रहते हैं। इनका सिद्धान्त एक मात्र हरि-गुण-गान है।

नारदादि—नारद आदि ऋषीश्वर।

नारायन—विष्णु, ईश्वर, भगवान। नारायण शब्द की व्युत्पत्ति ग्रन्थों में कई प्रकार से बतलाई गई है। जल जिसका प्रथम अधिष्ठान है, इससे परमात्मा का नाम 'नारायण' हुआ। अथवा 'नर' नामक ऋषि के पुत्र हुए थे इससे नारायण नाम पड़ा, इत्यादि।

नारि, नारी—स्त्री, औरत।

नाव—तरणि, तरिका, तरी, तरण्ड, तरण्डी, वहन, वहित्र, पोत, होड़, नौ, नौका, तरनी, जलयान, डोंगी, किश्ती इत्यादि। लकड़ी लोहे आदि की बनी हुई जल के ऊपर तैरने या चलनेवाली सवारी। (२) नावो, नमन होने का आदेश सूचक शब्द।

नावत—'नावना' का वर्तमानकालिक रूप। नवाता है, झुकाता है। (२) प्रविष्ट करता है। घुसेड़ता है। (३) डालता है, गिराता है, फेंकता है।

नास—नाश, ध्वंस, निधन, लोप, न रह जाना। (२) मृत्यु, वध, संहार। (३) पलायन, दूर करनेवाला, न रहने देनेवाला।

नासक, नासकर्त्ता—नाशक, नाशकरनेवाला। ध्वंस करनेवाला। (२) मारनेवाला, वध करनेवाला, दूरभगानेवाला, पलायन करनेवाला

नासन—नाशन, नष्ट करना। (२) वध करना।

नासा, नासिका—नाक, घ्राणेन्द्रिय।

नाह—नाथ, स्वामी, मालिक। (२) भर्त्ता, पति।

नाहर—सिंह, बाघ, शेर।

नाहिं—नहीं, निषेध-सूचक अव्यय।

नाहिँत—नहीं तो, न तो।

नाहिँन
नाहिँनै } —नास्ति, नहीं है। अभाव सूचक अव्यय।

नाहीं—नहीं, नाहिँ, न।

नि—एक उपसर्ग जिसके लगने से शब्दों में निम्न अर्थों की विशेषता होती है। (१) सङ्घ वा समूह, जैसे—निकर। (२) अधोभाव, जैसे—निपतित। (३) अत्यन्त, जैसे—निगृहीत। (४) आदेश, जैसे—निदेश। (५) नित्य। (६) कौशल। (७) बन्धन। (८) अन्तर्भाव। (९) समीप। (१०) दर्शन। (११) उपरम। (१२) आश्रय। मेदिनी कोश में ये अर्थ और बतलाये गए हैं। (१३) संशय। (१४) क्षेप। (१५) दान। (१६) मोक्ष। (१७) विन्यास। (१८) निषेध। (१९) निषाद स्वर का सङ्केत।

निक—नीक, अच्छा, भला। (२) सुन्दर, मनोहर, सुहावनापन।

निकट—समीप, पास, नज़दीक।

निकन्दन—नाश, ध्वंस, विनाश।

निकर—समूह, झुण्ड, राशि, ढेर।

निकरत—'निकरना' शब्द का वर्तमानकाल। निकलता है। निर्गत होता है, घर से बाहर होता है।

निकाई—अच्छापन, भलाई, उम्दगी। (२) सौन्दर्य, सुन्दरता, खूबसूरती। (३) निकाय, समूह।

निकाम—अत्यन्त, अतिशय, बहुत। (२) यथेष्ट, पर्याप्त, काफ़ी। (३) इष्ट, इच्छित, अभिलाषित। (४) व्यर्थ, निष्प्रयोजन, फ़जूल। (५) निकम्मा, बेकाम, ख़राब।

निकाय—समूह, झुण्ड, राशि, एक ही मेल की वस्तुओं का ढेर। (२) घर, बासस्थान, मकान। (३) परमात्मा, परमेश्वर।

निकेत—घर, गेह, मकान।

निखङ्ग—त्रोण, तूणीर, तरकश।

निगड़—लोह की मोटी सीकड़। हाथी के पैर बाँधने की जञ्जीर। लोह की वह मोटी सकरी जिससे हाथी बाँधा जाता हो। (२) बेड़ी, बन्धन, बाँधने की चीज़।

निगम—वेद, श्रुति। (२) मार्ग, पथ, रास्ता। (३) हाट, बाज़ार, बनियों की फेरी का स्थान। (४) व्यापार, व्यवसाय, माल का आना जाना। (५) निश्चय, ध्रुव, पक्का। (६) मेला, भीड़, हजूम।

निगमागम—(निगम+आगम) वेद और शास्त्र।

निचय—समूह, झुण्ड। (२) निश्चय, ठीक। (३) सञ्चय, इकट्ठा करना।

निचाई—नीचता, ओछापन, कमीनापन। (२) नीचा होने का भाव। नीचे की ओर विस्तार, गहराई।

निचोयो—'निचोना' शब्द का भूतकालिक रूप। निचोया, निचोड़ा, गारा, दबा कर पानी निकाला।

निचोरि—निचोड़ कर, गार कर। (२) निचोड़, सारवस्तु। (३) मुख्यतात्पर्य। कथन का सारांश। वह सिद्धान्त जो मथ कर निकला हो। सब बातों का खुलासा।

निचोल—वस्त्र, पट, कपड़ा। (२) घाँघरा, लहँगा। (३) स्त्रियों की ओढ़नी। वह कपड़ा जो स्त्रियाँ लहँगे के ऊपर शरीर और मस्तक ढाँकने के लिए धारण करती हैं। (४) आच्छादन वस्त्र। ऊपर से शरीर ढाँकने का कपड़ा। चादर।

निज—स्वकीय, स्वीय, अपना जो, पराया न हो। (२) प्रधान, मुख्य, ख़ास। (३) वास्तविक, ठीक, सही, निश्चय, ध्रुव, यथार्थ।

निजरूप—अपनारूप, आत्मस्वरूप, निजत्व का परिज्ञान। (२) ब्रह्मज्ञान का होना। आत्मा और ब्रह्म का साक्षात्कार।

निजानन्द—आत्मानन्द, ब्रह्मानन्द। जीवात्मा का यथार्थ सुख।

निठुर—निष्ठुर, निर्दय, क्रूर, कठोर हृदय। जिसे दूसरे के पीड़ा की समझदारी न हो।

निठुरता—निष्ठुरता, निर्दयता, क्रूरता।

निठुराई—निर्दयता, क्रूरता, हृदय की कठोरता।

निडर—निर्भय, निःशङ्क, जिसे डर न हो। (२) प्रगल्भ, धृष्ट, ढीठ। (३) साहसी, दिलेर, हिम्मतवाला।

नित—प्रतिदिन, सब दिन, रोज। (२) सर्वदा, सदा, हमेशा। (३) नित्य, अविनाशी, नाश रहित।

नित्य—शाश्वत, अविनाशी, त्रिकाल व्यापी। जिसका कभी नाश न हो। उत्पत्ति और विनाश रहित, जैसे—ईश्वर नित्य है। न्याय के मत से परमाणु नित्य हैं। सांख्य के मत से पुरुष और प्रकृति दोनों नित्य हैं। वेदान्त इन सब का खण्डन करके केवल ब्रह्म को नित्य कहता है। (२) प्रति दिन का, नित का, रोज का। (३) सर्वदा, अनवरत, हमेशा। (४) निश्चय, ध्रुव, पक्का। (५) यथार्थ, ठीक।

निदरि—निरादर कर के, तिरस्कार कर के।

निदरे—निरादर किया, अपमान किया।

निदेश—आज्ञा, आदेश, हुक्म। (२) शासन, हुकूमत। (३) कथन, वर्णन। (४) सामीप्य, पास, निदेस।

निद्रा—नींद, स्वाप, औंघाई। निद्रा एक मनोवृत्ति है जिसका आलम्बन तमोगुण है। (२) काव्य का एक सञ्चारीभाव जिसमें पलकें बन्द करके प्राणी चेतना रहित हो जाता है।

निधन—दरिद्र, निर्धन, कङ्गाल। (२) नाश, ध्वंस, न रह जाना। (३) मृत्यु, मरण, मौत। (४) कुटुम्ब, कुल, खानदान। (५) विष्णु, हरि।

निधान—घर, स्थान, मकान। (२) आश्रय, आधार, सहारा। (३) निधि, भण्डार, ख़ज़ाना। (४) स्थापन, ठहराना, टिकाना। (५) लयस्थान, वह जगह जहाँ जाकर कोई वस्तु लीन हो जाय।

निधि—भण्डार, कोश, गड़ा हुआ ख़ज़ाना। (२) कुबेर के नौ प्रकार के रत्न नव-निधि कहे जाते हैं। वे नवों रत्न ये हैं—पद्म, महापद्म, शङ्ख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और खर्व। ये निधियाँ लक्ष्मी की अधीनता में हैं, जिन्हें प्राप्त होती हैं उन्हें भिन्न भिन्न रूपों में धनागम होता है। (३) घर, गेह, मकान। (४) समुद्र, सागर। (५) विष्णु, केशव। (६) शिव, महादेव। (७) नौ की संख्या। (८) जीवक नाम की औषधि।

निन्दक—निन्दा करनेवाला। दूसरों के दोष या बुराई कहनेवाला।

निन्दा—अपवाद, जुगुप्सा, दोषकथन बदगोई, बुराई का वर्णन। ऐसी बात का कहना जिससे किसी का दुर्गुण, दोष, तुच्छता इत्यादि प्रगट हो। (२) अपकीर्ति, अकीर्त्ति, बदनामी। मनुस्मृति में लिखा है कि यथार्थ दोष कथन परीवाद है और अयथार्थ दोषारोपण करना निन्दा है।

निन्दित, निन्द्य—दूषित, निन्दा के योग्य, जिसे लोग बुरा कहते हों। (२) निन्दनीय, निन्दा करने योग्य।

निपट—केवल, विशुद्ध, एकमात्र, खाली, निरा, जिसमें और कुछ न हो। (२) नितान्त, सरासर, बिलकुल, एकदम। (३) सर्वथा, सब प्रकार से, सम्पूर्ण रूप से।

निपात—नाश, ध्वंस, विनाश। (२) अधःपतन, पात, गिराव या गिर जाना।

निपुन—निपुण, कुशल, प्रवीण, चतुर, कार्य करने में दक्ष।

निबल—निर्बल, अशक्त, कमज़ोर।

निबाह—निर्वाह, रहाइस, गुजारा, निबाहने की क्रिया। (२) लगातार साधन। परम्परा की रक्षा। किसी बात के अनुसार निरन्तर व्यवहार। (३) पालन, साधन, पूरा करने का कार्य्य। (४) बचाव का ढंग, छुटकारे का रास्ता।

निबिड़—निविड़, सघन, गहरा घना। (२) भीषण, घोर, भयानक।

निबिड़ान्धकार—(निबिड़ + अन्धकार) घना अन्धकार, गहरा अँधेरा।

निमग्न—मग्न, डूबा हुआ। (२) तन्मय, लीन।

निमि—राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। इन्हीं से मिथिला का विदेह वंश चला। पुराणों में लिखा है कि एक बार महाराज निमि ने सहस्र वार्षिक यज्ञ कराने के लिए वशिष्ठजी को बुलाया। वशिष्ठजी ने कहा—मुझे देवराज इन्द्र पहले से ही पञ्चशत-वार्षिक यज्ञ के लिए निमन्त्रित कर चुके हैं। उनका यज्ञ कराके मैं आप का यज्ञ करा सकूँगा। वशिष्ठ के चले जाने पर निमि ने गोतमादि ऋषियों को बुला कर यज्ञ करना प्रारम्भ किया। इन्द्र का यज्ञ हो जाने पर जब वशिष्ठजी देवलोक से आये और

यह सुना कि निमि गोतम को बुला कर यज्ञ कर रहे हैं, तब उन्हें तिरस्कार पर बड़ा क्रोध हुआ वशिष्ठजी ने यज्ञशाला में पहुँच कर राजा निमि को शाप दिया कि तुम्हारा यह शरीर न रहेगा। इस पर राजा ने भी वशिष्ठ को शाप दिया कि आप का भी शरीर न रहेगा। दोनों का शरीर छूट गया। वशिष्ठजी तो अपना शरीर छोड़ कर मित्रावरुण के वीर्य्य से उत्पन्न हुए। यज्ञ की समाप्ति पर देवताओं ने निमि को फिर उसी शरीर में रख कर अमर कर देना चाहा पर राजा निमि ने अपने छोड़े हुए शरीर में जाना स्वीकार नहीं किया और देवताओं से कहा कि शरीर के त्यागने में मुझे बड़ा दुःख हुआ है, मैं फिर शरीर नहीं चाहता। देवताओं ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर के आँखों की पलकों पर जगह दी। उसी समय से निमि विदेह कहलाये और उनके वंशवाले भी इसी नाम से प्रसिद्ध हुए। शेष 'जनक' शब्द देखो। (२) महाभारत के अनुसार एक ऋषि का नाम जो दत्तात्रेय के पुत्र थे। (३) निमेष, पलक परना, आँखों का मिचना और खुलना।

निमित्त—हेतु, कारण, सबब। (२) चिह्न, लक्षण, अलामत। (३) शकुन, सगुन। (४) उद्देश्य, इष्ट, लक्ष्य, अभिप्रेत-प्रयोजन।

निमिष—निमेष, आँखों का मिचना। पलकों का गिरना। (२) उतना काल जितना पलक गिरने में लगता है। पलक मारने भर का समय।

नियत—निश्चित, स्थिर, ठीक किया हुआ, ठहराया हुआ, मुकर्रर, (२) संयत, परिमित, पाबन्द बँधा हुआ, नियम द्वारा स्थिर किया हुआ। नियोजित, स्थापित, प्रतिष्ठित, तैनात। (३) शिव, महादेव। (४) अर्बीभाषा के अनुसार—नीयत, इरादा, कस्द।

नियन्ता—व्यवस्था करनेवाला। नियम बाँधनेवाला। कायदा चलानेवाला। (२) विधायक, विधान करनेवाला। कार्य्य के चलानेवाला। (३) शिक्षक, शासक, नियम पर चलानेवाला। (४) अश्व सञ्चालन करनेवाला। घोड़ा फेरनेवाला। (५) विष्णु, हरि, केशव।

नियम—प्रतिबन्ध, नियन्त्रण, परिमित, रोक, पाबन्दी, विधि वा निश्चय के अनुसार रुकावट। (२) परम्परा, दस्तूर, बँधा हुआ क्रम। चला आता हुआ विधान। (३) व्यवस्था, पद्धति, कायदा, कानून, जाब्ता, ठहराई हुई रीति। (४) प्रतिज्ञा, शर्त, ऐसी बात का निर्धारण जिस के होने पर दूसरी बात का होना निर्भर किया गया हो। (५) शासन, दबाव। (६) योग के आठ अङ्गों में एक नियम भी है। शौच, सन्तोष तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान इन सब क्रियाओं का पालन नियम कहलाता है। (७) याज्ञवल्क्य स्मृति में दस नियम गिनाये गए हैं स्नान, मौन, उपवास, यज्ञ, वेदपाठ, इन्द्रिय निग्रह, गुरुसेवा, शौच, अक्रोध, अप्रमाद। (८) विष्णु, नारायण। (९) शिव, कैलाशपति। (१०) एक अर्थालङ्कार जिसमें किसी बात का एक ही स्थान पर नियम कर दिया जाता है।

नियामक—नियम करनेवाला, न्यामक, प्रबन्धक। (२) व्यवस्था करनेवाला। विधान चलानेवाला। (३) बध करानेवाला। मारनेवाला। (४) पोतवाह, माझी, मल्लाह। (५) पार करनेवाला। समुद्र या नदी आदि से पार उतारनेवाला।

निरखत—'निरखना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। निरखता है, देखता है, निहारता है।

निरखन्ति—अवलोकन करते हैं, देखते हैं, निरखते हैं, निहारते हैं।

निरखि—निरीक्षण कर, देख कर, निहार कर।

निरजोस—निर्णय, निश्चय, किसी विषय में कोई सिद्धान्त ठीक ठहराना। (२) निचोड़, मुख्य तात्पर्य, कथन का सारांश।

निरञ्जन—निर्दोष, कलमष शून्य। दोष रहित। (२) अञ्जन रहित, बिना काजल का। (३) माया से निर्लिप्त। माया रहित। (४) निर्मल, स्वच्छ, साफ़। (५) परमात्मा, ईश्वर। (६) शिव, हर।

निरत—तत्पर, लीन, मशगूल, किसी काम में लगा हुआ। (२) नृत्य, नाच।

निरधन—निर्धन, दरिद्र, कङ्गाल।

निरन्तर—अविच्छिन्न, अन्तर रहित। जो बराबर चला गया हो। जिस के बीच में फासला न हो। (२) निविड़, घना, गझिन। (३) जिसकी परम्परा खण्डित न हो। लगातार होनेवाला। (४) अविचल, स्थायी, सदा रहनेवाला। (५) सदा, लगातार, हमेशा। (६) जो अन्तर्धान न हो। जो दृष्टि से ओझल न हो।

निरबाह—निर्वाह, निबाह, रहाइस, गुजर।

निरमई—निर्माण किया, बनाया।

निरय—नरक, दोज़ख।

निरस—रस विहीन, जिस में रस न हो। (२) विना स्वाद का, बदजायका, फीका। (३) निस्सत्व, असार, बेमतलब। (४) रूखा, शुष्क, सूखा। (५) विरक्त, राग रहित।

निराकार—जिसका कोई आकार न हो। जिसके आकार की भावना न हो। (२) आकाश, व्योम, गगन,। (३) ब्रह्म, परमात्मा, ईश्वर।

निरादर—अपमान, अनादर, बेइज़्ज़ती।

निराधार—आश्रय रहित, जिसे कोई आधार न हो या जो सहारे पर न हो। (२)अयुक्त, मिथ्या, जो प्रमाणों से पुष्ट न हो। बे-जड़ बुनियाद का। (३) निर्जल व्रत, जो बिना अन्न जल आदि के हो।

निरापने—पराये, बेगाने, जो अपने नहीं हैं।

निरामय—आरोग्य, निरोग, जिसे रोग न हो। (२) प्रसन्न, सुखी, आनन्दित।

निरारी—निराली, अनोखी, अपूर्व। (२) केवल, एकमात्र, खालिस। (३) भिन्न, अलग, जुदी।

निरासा—निराशा, आशा रहित, नाउमेदी।

निरीह—चेष्टा रहित, जो किसी बात के लिये प्रयत्न न करे। (२) निस्पृह, जिसे किसी वस्तु की चाह न हो। (३) विरक्त, उदासीन, जो किसी का शत्रु या मित्र न हो। (४) शान्तिप्रिय। ईश्वर।

निरुपधि—निष्कपट, छल रहित, कपट हीन। (२) निःस्वार्थ, निष्प्रयोजन, वह उपकार जिस में अपना कोई मतलब न हो।

निरुपाधि—निरुपद्रव, बिना बाधा, उपाधि रहित। (२) नाम विहीन, जिसकी कोई संज्ञा वा पदवी न हो (३) ब्रह्म, परमेश्र।

निरै—नरक, निरय, दोज़ख़।

निर्गुन—'निर्गुण' सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों से परे। परमेश्वर (२) गुण रहित, बुरा, ख़राब, जिसमें कोई अच्छा गुण न हो।

निर्गुनी—निर्गुणी, मुर्ख, गुणों से रहित, जिसमें कोई गुण न हो।

निर्झर—'सोता' झरना, चश्मा, किसी ऊँचे स्थान से जलकी धारा का गिरना।

निर्दय—निष्ठुर, क्रूर, बेरहम, जिसे कुछ भी दया न हो।

निर्दलन—अक्षय, अविनाशी, नाश रहित। (२) निश्चय विनाश करनेवाला, संहार कर्त्ता।

निर्धन—दरिद्र, धनहीन, कङ्गाल।

निर्धूत—धोया हुआ, साफ़, किया हुआ। (२) खण्डित, चूर चूर हुआ, टूटा हुआ। (३) त्यागने योग्य, जिसका त्याग कर दिया गया हो।

निर्पेक्ष—निस्पृह, निरीह, इच्छा रहित। (२) उदासीन, विरक्त, जो किसी का शत्रु या मित्र न हो।

निर्भर—पूर्ण, भरपूर, भरा हुआ। (२) अवलम्बित, आश्रित, मुनहसर,। (३) युक्त, मिलित, मिला-हुआ। (४) अवैतनिक सेवक, बेगार। (५) अत्यन्त, अतिशय, बहुत।

निर्भरानन्द—(निर्भर+आनन्द) भरपूर आनन्द, पूरी ख़ुशी।

निर्मत्सर—ईर्षा डाह से रहित। दूसरे की भलाई देख कर जो द्वेष से न जले। (२) निर्दम्भ, पाखण्ड रहित, शुद्ध हृदयवाला।

निर्मथन—मन्थन रहित, जो मथने योग्य न हो, जिससे कोई पार न पा सके। (२) मथनेवाला। बिलोड़नेवाला, हलचल मचानेवाला।

निर्मम—जिसे ममता न हो, मोह रहित, जिसके हृदय में किसी वस्तु की चाहना न हो।

नर्मयी—रची, बनाई, निर्माण की।

निर्मल—मल हिरत, स्वच्छ, साफ़। (२) निष्पाप, अनघ, पाप रहित। (३) शुद्ध, पवित्र, पावन। (४) निर्दोष, कलङ्कहीन, दोष रहित। (५) अभ्रक, अभ्र। (६) निर्मली।

निर्मान—निर्माण, रचना, बनावट। (२) रचना का कार्य्य, बनाने का काम। (३) निरभिमान, मानरहित, जिसको प्रतिष्ठा की परवाह न हो।

निर्मित—रचित, बनाया हुआ, निर्माण किया हुआ।

निर्मुक्त—जो मुक्त हो गया हो, जो छूट गयाहो। (२) स्वतन्त्र, जिसके लिये किसी प्रकार का बन्धन न हो। (३) मुक्तकञ्चुक, वह साँप जिसने तुरन्त केचुली छोड़ी हो।

निर्मूल—मूल रहित, बिना जड़ का, जिसमें जड़ न हो। (२) जिसकी जड़ न रह गई हो, जड़ से उखड़ा हुआ। (३) असत्य, सारहीन, बेजड़की बात। (४) ध्वंस, नाश, जो न रह गया हो।

निर्मूलनी—निर्मूल करनेवाली, नाश करनेवाली।

निर्मोह—मोह रहित, जिसके मन में ममता न हो, ज्ञानी पुरुष। (२) निर्दय, निठुर, दयाहीन।

निर्वह्यो—निबहा, निपट चुका, छुट्टी पाया।

निर्वान—निर्वाण, मुक्ति, मोक्ष। (२) निश्चल, अटल। (३) बुझना, ठण्डा होना, गुल होना। (४) अस्त, गमन, डूबना। (५) शान्त, शान्ति, धीमा पड़ा हुआ। (६) मृत, मरा हुआ।

निर्वाप—दान, उत्सर्जन, खैरात। (२) मारना, बध करना, हिंसा का कार्य्य। (३) देना, बाहर करना। वह दान जो पितरों के उद्देश्य से किया जाय। (४) विस्मरण, बिसारन, भुला देना।

निर्वाह }
निर्वाहु } —निबाह, रहाइस, गुजारा। (२) समाप्ति, पूरा होना।

निर्विकार—विकर रहित, निर्दोष, जिसमें किसी प्रकार का ऐब या परिवर्त्तन न हो।

निर्वंश—वंश रहित, जिसका वंश नष्ट हो गया हो। (२) सन्तान हीन, जिसके सन्तति न हो, बिना औलाद का।

निर्व्यलीक—निष्कपट, निश्छल, कपट रहित। (२) पीड़ा रहित, बाधा हीन, सुखी, प्रसन्न। (३) सत्य, अलीक, जो झूठ न हो।

निलज—निर्लज्ज, बेशरम, बेहया।

निलजई }
निलजता } —निर्लज्जता, बेशरमी, बेहयाई।

निलय—घर, मकान। (२) स्थान, जगह।

निवरयो—निवृत्त हुआ, छुटकारा पाया।

निबहति—निबहती है, पूरी पड़ती है।

निवाज—(फ़ारसीभाषा)। नेवाज, कृपा करने वाला। मिहरबानी करनेवाला।

निवाजब—दया करना। मिहरबानी करना।

निवारक—रोधक, रोकनेवाला। (२) मिटानेवाला दूर करनेवाला। (३) छुड़ानेवाला, छुटकारा देनेवाला।

निवारन—निवारण, निवृत्ति, छुटकारा। (२) दूर करने की क्रिया। हटाने का भाव। (३) रोधक क्रिया, रोकने का भाव।

निवास—बास स्थान, रहने की जगह (२) घर, मकान। (३) रहने की क्रिया, ठहरने का भाव। (४) वस्त्र, कपड़ा।

निवासी—बसेरी, बसनेवाला, रहनेवाला

निवृत्त—मुक्त, छूटा हुआ। (२) विरक्त, जो अलग हो गया हो। (३) जो छुट्टी पा गया हो।

निवृत्ति—मुक्ति, छुटकारा, रिहाई,। (२) विरक्ति, विरिति, त्याग का भाव।

निवेरे—निबटाये, फैसल किये। (२) छुड़ाये, दूर किये। (३) समाप्त किये, ख़तम किये।

निवेरो—निबटायो, फैसल कियो। (२) छुड़ायो, दूर कियो (३) नवीन, अनोखो।

निशा—रात्रि, रजनी, रात। (२) हरिद्रा, हल्दी।

निशाकर—चन्द्रमा, इन्दु, शशि। (२) शिव, हर। (३) कुक्कुट, मुरग़ा। (४) एक ऋषि का नाम।

निशाचर—राक्षस, निश्चर। (२) शृगाल, गीदड़। (३) उलूक, उल्लू पक्षी। (४) चोर, तस्कर। (५) सर्प, साँप। (६) भूत, पिशाच। (७) चक्रवाक, चकवा। (८) रात में विचरनेवाले जीव-जन्तु आदि।

निशानी—(फ़ारसीभाषा)। स्मृति चिह्न, यादगार। वह जिससे किसी का स्मरण हो (२) निशान, चिह्न, वह लक्षण जिससे कोई चीज़ पहचानी जाय। (३) रेखा, लकीर।

निशि—रात्रि, रजनी, रात। (२) हरिद्रा, हल्दी।

निशिचर—राक्षस, निशाचर।

निशिचरी—राक्षसी, निशाचरों की स्त्रियाँ।

निशित—चोखा, तेज़, तीखा, जो सान पर चढ़ा हुआ हो। (२) लोहा, अय।

निशिदिन—रातदिन, सदा, सर्वदा।

निशेश—चन्द्रमा, शशि, चाँद।

निशेष—निःशेष, सब, समूचा, जिसका कोई अंश बाक़ी न रह गया हो। (२) समाप्त, पूरा, खतम।

निशोच—निसोच, सोच रहित।

निश्चय—निःशंसय ज्ञान, ऐसी धारणा जिसमें कोई सन्देह न हो। (२) दृढ़ सङ्कल्प, पक्का विचार, पूरा इरादा। (३) निर्णय, तसफ़िया। (४) विश्वास, यक़ीन। (५) एक अर्थालङ्कार जिसमें अन्य विषय का निषेध होकर यथार्थ विषय का स्थापन होता है।

निश्चर—राक्षस, निशिचर।

निश्चल—अचल, स्थिर, जो अपने स्थान से न हटे, जो जरा भी न हिले-डुले।

निश्चित—दृढ़, पक्का, जिसमें कोई परिवर्त्तन या फेरफार न हो सके। (२) निर्णीत, तै किया हुआ। जिसके विषय में निश्चय हो चुका हो।

निश्वास—निःश्वास, साँस, नाक से निकली हुई हवा।

निषङ्ग—तूणीर, तरकश। (२) खड्ग, खाँड़ा।

निषाद—कर्णधार, माझी, मल्लाह, चाण्डाल। एक बहुत पुरानी अनार्य्य जाति, इस जाति के लोग शिकार खेलते, मछलियाँ मारते, नाव चलाते और डाका डालते थे। अग्नि-पुराण में लिखा है कि जिस समय राजा वेणु की जाँघ मथी गई थी उस समय उसमें से काले रङ्ग का एक छोटा सा आदमी निकला। वही आदमी इस वंश का आदि-पुरुष था। परन्तु मनु के मत से इस जाति की सृष्टि ब्राह्मण-पिता और शूद्रा-माता से हुई है। मिताक्षरा में यह जाति क्रूर और पापी कही गई है। रामचरितमानस और विनयपत्रिका में जहाँ कहीं इस शब्द का प्रयोग है वह अधिकांश शृङ्गवेरपुर-निवासी गुह नामक निषाद के सम्बन्ध में है। (२) एक देश का नाम। (३) सात स्वरों में से एक जो सब से अन्तिम और ऊँचा स्वर है।

निषिद्ध—दूषित, बुरा, खराब। (२) जो न करने योग्य हो। जिसका निषेध किया गया हो। जिसके लिए मनाही हो।

निषेध—वर्जन, मनाही, न करने का आदेश। (२) बाधा, रुकावट, रोक।

निष्काम—निःकाम, इच्छा रहित, जिसको किसी प्रकार की कामना न हो। (२) बिना प्रयोजन, बिना मतलब।

निसम्बरी, निसम्बल, निसम्बला—सम्बल रहित, वह मनुष्य जिसके पास सफ़र करने के लिए राहख़र्च न हो।

निसरै—निकलै, बाहर हो।

निसा, निसि—रात्रि, रात। (२) हरिद्रा, हल्दी।

निसित—निशित, चोखा, तेज़।

निसेनी—सोपान, सीढ़ी, ज़ीना।

निसोच—निश्चिन्त, चिन्ता रहित, बेफ़िक्र।

निसोत—केवल, निरा, जिसमें और किसी चीज़ का मेल न हो।

निसोती—निरी, अगबी, खालिस।

निस्तरिये—निस्तार कीजिए, बचाव कीजिए, छुटकारा दीजिए। (२) मुक्ति हो, पार मिले।

निस्तार—मोक्ष, बचाव, छुटकारा। (२) उद्धार होने की क्रिया, पार होने का भाव।

निहार—कुहरा, कुहासा, कुहिरा। (२) हिम। पाला, बरफ़। (३) देखने का भाव।

निहारत—'निहारना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। निहारता है, देखता है।

निहारहि—देखै, चितवै, अवलोकन करै।

निहारि—देख कर, अवलोकन कर के।

निहाल—पूर्णकाम, जो सब प्रकार से सन्तुष्ट और प्रसन्न हो गया हो।

निहोरा—उपकार, नेकी, एहसान। (२) विनती, प्रार्थना, अर्ज़। (३) आश्रय, भरोसा, आसरा। (४) अनुग्रह, कृपा। (५) द्वारा, बदौलत, कारण से।

निःकम्प—निष्कम्प, स्थिर, जो कम्पायमान न हो।

निःकाज—निष्प्रयोजन, बिना मतलब।

निःकाम—निष्काम, कामना रहित।

निःप्राप्य—अप्राप्य, जो मिल न सके।

निःशुम्भ—निशुम्भ, एक असुर का नाम जिसका जन्म कश्यप ऋषि की स्त्री दनु के गर्भ से हुआ था और शुम्भ तथा निमुचि का भाई था। निमुचि तो इन्द्र के हाथ से मारा गया परन्तु शुम्भ और निशुम्भ ने देवताओं पर आक्रमण करके उन्हें जीत लिया और स्वर्ग के राजा बन गये। जब इन दोनों ने रक्तबीज से सुना कि दुर्गा ने महिषासुर को मार डाला तब निशुम्भ ने प्रतिज्ञा की कि मैं दुर्गा को मार डालूँगा। उस समय नर्मदा नदी से निकल कर चण्ड और मुण्ड नामक दो और राक्षस भी इन लोगों में मिल गए। पहले शुम्भ और निशुम्भ ने दुर्गा से कहलाया कि तुम हम में से किसी के साथ विवाह करो, पर दुर्गा ने कहला दिया कि रण में मुझे जो जीतेगा उसी से मैं विवाह करूँगी। युद्ध में दुर्गा ने पहले धूमलोचन, चण्ड, मुण्ड, रक्तबीज आदि को मारा। फिर शुम्भ और निशुम्भ ने संग्राम किया। देवी ने पहले निशुम्भ को और तब शुम्भ को मारा जिससे असुरों का उत्पात शान्त हुआ तथा इन्द्र को फिर स्वर्ग का राज्य मिला। (२) वध, संहार, नाश। (३) हिंसा, हत्या, हनन का भाव।

निःसरित—निकली हुई, प्रगट हुई। (२) निकलने का मार्ग, निकासी।

निःसीम—निरवधि, सीमा रहित, जिसका हद न हो। (२) अपार, बहुत बड़ा या बहुत अधिक।

नीक—सुन्दर, अच्छा, भला। (२) श्रेष्ठ, उत्तम। (३) आरोग्य, तन्दुरुस्त, चङ्गा।

नीच—क्षुद्र, न्यून, तुच्छ, जो जाति गुण कर्म या किसी और बात में घट कर हो (२) निकृष्ट, अधम, बुरा। जो उत्तम और मध्यम कोटि से घटकर हो। (३) नीच स्थान, गहिर, खाल।

नीचियो—नीची भी, तुच्छ भी, हलकी भी। (२) लघुता, छोटाई, हलुकई।

नीति—आचारपद्धति, व्यवहार की रीति, ले चलने की क्रिया। ले जाने का ढङ्ग। (२) व्यवहार की वह रीति जिससे अपना कल्याण हो और समाज को भी कोई बाधा न पहुँचे। वह चाल जिसे चलने से अपनी भलाई, प्रतिष्ठा आदि हो और दूसरे की कोई बुराई न हो। (३) नय, सदाचार, अच्छी चाल। लोकमर्य्यादा के अनुसार व्यवहार। (४) राजविद्या, राजा का कर्त्तव्य, राज्य की रक्षा के लिए ठहराई हुई विधि। (५) राजाओं की चाल जो वे राज्य की प्राप्ति वा रक्षा के लिये चलते हैं। राज्य की रक्षा के लिये काम में लाई जानेवाली तदबीर। (६) युक्ति, उपाय, हिकमत, किसी कार्य्य की सिद्धि के लिये चली जानेवाली चाल। (७) नीति के ग्रन्थ, वह पुस्तक जिसमें सदाचार, व्यवहार कुशलता आदि की बातें कही गई हों। जैसे—शुक्रनीति, चाणक्य नीति इत्यादि।

नींद—निद्रा, औंघाई, सोने की अवस्था।

नीब—निम्ब, नीम का पेड़, नीब का वृक्ष बड़ा होता है। इसकी पत्ती बकायन की तरह सींकों में दोनों ओर लगती हैं। फूल सफेद छोटे और छोटी छोटी फलियाँ लगती हैं, उसे निबकौर कहते हैं। इसके बीजों से तेल निकलता है। नीम की पकी लकड़ी ललाई लिए तथा कची। सफेद धूसर रङ्ग की मजबूत होती है और किवाड़, गाड़ी, करी आदि बनाने के काम में आती है। यह कड़ुएपन में प्रसिद्ध है। इसका प्रत्येक भाग अर्थात् पत्ती, सींक, छाल, लकड़ी, फूल, फल, बीज और तेल सभी तीत होते हैं। इसकी तिताई की उपमा प्रायः कवियों ने दी है।

यह दूषित रक्त को शुद्ध करनेवाली और घाव के लिए बहुत गुणकारी ओषधि है।

नीर—पानी, जल, वारि।

नीरज—कमल, पद्म, कञ्ज,। (२) मुक्ता, मोती। (३) जल में उत्पन्न वस्तु। (४) कुट, कूट।

नीरद—मेघ, बादल, वारिद। (२) पानी देनेवाला।

नीराजन—आरती, दीपदान, देवता को दीपक दिखाने की विधि।

नील—श्याम, श्यामल, नीले रङ्ग का। गहरा आसमानी रङ्गका। (२) एक पौधा जिससे नीला रङ्ग निकाला जाता है। (३) कलङ्क, लाञ्छन। (४) नव निधियों में से एक। (५) नीलम, इन्द्रनीलमणि। (६) विष, ज़हर। (७) एक वर्णवृत्त का नाम। (८) एक संख्या जो दस हज़ार अरब की होती है। (९) एक वन्दर का नाम, विश्वकर्मा का पुत्र और नल का भाई जो श्रीरामचन्द्र की सेना का एक सेनापति था। नील और नल दोनों भाई शिल्पकर्म में बड़े निपुण थे इन्हों ने रामचन्द्रजी की आज्ञा से समुद्र में पत्थर का पुल बनाया था।

नीलकण्ठ—मोर, मयूर, मुरैला पक्षी। (२) चाष पत्ती, एक चिड़िया जो नीले रङ्ग की होती है विजया दशमी के दिन इसका दर्शन बहुत शुभ माना जाता है (३) शिव, महादेव, कालकूट विष पान कर कण्ठ में धारण करने से गला काला हो गया, इससे शिवजी का यह नाम पड़ा।

नीलाम्बर—(नील+अम्बर) नीला वस्त्र।

नीलोत्पल—(नील+उत्पल) श्याम कमल।

नूतन—नवीन, नया, ताजा।

नूपुर—मञ्जीर, घुँघुरू, सोने चाँदी के बोर जो गुच्छे की भाँति पायजेब और करधनी आदि गहनों में लगते हैं तथा चलने या हिलने पर मधुर ध्वनि उत्पन्न करते हैं।

नूपुरा—नूपुर शब्द का बहुवचन। बहुत से नूपुर। मञ्जीरों के समुदाय।

नृ—नर, मनुष्य, आदमी।

नृकपाल—नर-मस्तक, मनुष्य की खोपड़ी।

नृग—एक राजा का नाम जिनकी कथा इस प्रकार है। राजा नृग बड़े दानी थे उन्होंने न जाने कितने गोदान आदि किए थे। एक बार उनकी गायों के झुण्ड में एक ब्राह्मण की गाय आ मिली, जिसको वे पहले दान कर चुके थे। गोदान करते समय अनजान में राजा ने उस गऊ को भी दूसरे ब्राह्मण को दे दिया। प्रथम पाये हुए ब्राह्मण ने जब अपनी गाय को पहचाना तब दोनों ब्राह्मण राजा नृग के पास आए। राजा ने ब्राह्मणों से गाय बदल लेने के लिए बहुत तरह से कहा पर वे राज़ी न हुए। अन्त में चिन्तित हो राजा सोचने लगे कि अब क्या करें? उनका सिर घबड़ाहट से काँपने लगा। ब्राह्मणों ने शाप दिया कि तू दो ब्राह्मणों को लड़ाने के लिए ऐसा अनर्थ करके निर्णय नहीं करता है और गिरगिट की तरह सिर हिलाता है? जा एक हज़ार वर्ष के लिए तू गिरगिटान हो। इस शाप से राजा गिरगिट हो कर एक कुएँ में रहने लगे और अन्त में श्रीकृष्णचन्द्रजी के हाथों से उनका उद्धार हुआ। इनकी कथा को हमने अपने काव्य ग्रन्थ 'अभिनव विश्राम सागर' में विस्तार-पूर्वक वर्णन किया है। महाभारत में ब्राह्मणों का शाप नहीं कहा गया है वहाँ इस कथा का इस प्रकार वर्णन है कि जब नृग का परलोकवास हुआ तब उनसे यमराज ने कहा कि आप का पुण्यफल बहुत है पर ब्राह्मण की गाय हरने का पाप भी आप को लगा है। चाहे पाप का फल पहले भोगिए, चाहे पुण्य का। राजा ने पाप का ही फलपहले भोगना चाहा अतः सहस्र वर्ष के लिए वे गिरगिट हुए।

नृत्य—नर्त्तन, नाच, सङ्गीत के ताल और गति के अनुसार हाथ पाँव हिलाने, उछलने कूदने आदि का व्यापार।

नृत्यकारी—नृत्यक, नाच करनेवाला।

नृप, नृपति, नृपाल—राजा, नरपाल, नरेश। (२) विनय पत्रिका में जहाँ 'गर्भ न नृपति जरथो' पाठ है। वहाँ नृपति शब्द राजा परीक्षित का बोधक है।

ने—सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्त्ता का चिह्न जो उसके पीछे लगाया जाता है। सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्त्ता की विभक्ति। जैसे-राम ने रावण को मारा।

नेक—किञ्चित, तनिक, कुछ, थोड़ा, ज़रा सा। (२) फ़ारसीभाषा के अनुसार—उत्तम, अच्छा, भला। (३) शिष्ट, सज्जन, साधु।

नेकु—नेक, किञ्चित, थोड़ा।

नेति—(न+इति) अन्त नहीं, जिसकी इति न हो।

नेतिनेति—नहीं इति है, नहीं अन्त है।

नेम—नियम, कायदा, बन्धेज। (२) रीति, दस्तूर, धर्म की दृष्टि से कुछ क्रियाओं का पालन जैसे व्रत उपवास आदि। (३) समय, काल। (४) अवधि, हद। (५) खण्ड, टुकड़ा। (६) अर्द्ध, आधा। (७) प्राकार, दीवार। (८) कैतव, छल। (६) अन्य, और। (१०) मूल, जड़। (११) गर्त्त, गड्ढा। (१२) सङ्कल्प, प्रतिज्ञा।

नेरे—समीप, पास, नज़दीक।

नेवाज—निवाज, कृपा करनेवाला।

नेह—स्नेह, प्रेम, प्रीति। (२) चिकना, तेल या घी।

नेही—प्रेमी, स्नेह करनेवाला।

नेहु—स्नेह, प्रेम, प्यार।

नेत्र }
नैन } —आँख, लोचन, नयन।

नैवेद्य—देवबलि, भोग, देवता के निवेदन के लिए भोज्य द्रव्य, वह भोजन की सामग्री जो देवता को चढ़ाई जाय।

नैहौं—नाऊँगा, झुकाऊँगा।

नौका—नाव, डोंगी, किश्ती।

नौमि—नमस्कार करता हूँ, प्रणाम करता हूँ।

न्यामक—नियामक, नियम करनेवाला।

न्याय—नीति, इन्साफ़, उचित बात। नियम के अनुकूल व्यवहार, हक बात। (२) सद्विवेक, प्रमाण-पूर्वक निश्चय, विवाद या व्यवहार में उचित अनुचित का निबटेरा। (३) विवेचन, पद्धति। तर्क आदि युक्त वाक्य। वह शास्त्र जिस में किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान के लिए विचारों की उचित योजना का निरूपण होता है।

न्यारो }
न्यारो } —विलक्षण, अनोखी, निराली। (२) पृथक, अलग, जुदा, जो मिला न हो। (३) दूर, जो पास न हो। (४) अन्य, भिन्न, और ही।

न्याव—न्याय, इन्साफ़, उचित निबटेरा।

———

(प)

प—हिन्दी वर्णमाला का इक्कीसवाँ व्यञ्जन और पवर्ग का पहला वर्ण। इसका उच्चारण स्थान ओठ है। (२) पवन, वायु। (३) पात, पत्ता। (४) स्वामी, प्रभु। (५) रक्षक, पनाह देनेवाला।

पइयत—पैयत, प्राप्त करता हूँ, पाता हूँ।

पकरै—पकड़ै, गहै। (२) पकड़ता है, थामता है।

पखान—पाषाण, पत्थर, पथरा (२) विनयपत्रिका में प्रायः यह शब्द 'अहल्या' गौतम ऋषि की पत्नी के सूचनार्थ आया है।

पखारे—'पखारना' शब्द का भूतकालिक रूप। धोये, साफ़ किये।

पग—पाँव, पैर, गोड़। (२) डग, फाल, चलनेमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैर रखने की क्रिया की समाप्ति। चलने में जिस स्थान से पैर उठाया जाय और जिस स्थान पर रक्खा जाय दोनों के बीच की दूरी।

पगार—भीत, दीवार, रहने के लिए मिट्टी, ईंट वा पत्थर की बनाई हुई ओट की चीज़। रक्षार्थ बनी हुई चहारदीवारी। (२) कीचड़, गारा, पैरों से कुचली हुई गीली मिट्टी। (३) वेतन, तनखाह।

पगि—पग कर, मिल कर, घुस कर, (२) अत्यन्त अनुरक्त होकर, मग्न होकर, प्रेम में डूब कर। (३) ओतप्रोत होकर, सन कर।

पगी—मिली, मग्न हुई, सन गई।

पङ्क—कीच, कीचड़, चहटा। (२) पाप, कलुष, अघ। (३) लेप वा चन्दन लगाने योग्य वस्तु।

पङ्कज }
पङ्करुह } —कमल, पद्म, कञ्ज। (२) कीचड़ में उत्पन्न होनेवाला।

पङ्गु—पङ्गुल, लुञ्ज, जो पैर से न चल सकता हो ।

पचत—'पचना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप । नष्ट होता है, क्षय होता है, समाप्त होता है । (२) क्षीण होता है, खिन्न होता है । (३) पचता है, चुरता है, पकता है । (४) तन्मय होता है, लीन होता है, पूर्ण रूप से लगता है । (५) कष्ट उठाता है, दुःख सहता है, हैरान होता है ।

पचि—लगने की क्रिया या भाव । तन्मय होकर, पूर्ण रूप से लग कर । (२) पच्ची हुआ, जड़ा हुआ, सटा हुआ ।

पछताउ, पछताय, पछताव—पश्चात्ताप, अनुताप, अपने किए को बुरा समझने से होनेवाला रञ्ज ।

पछतात—'पछताना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप । पछताता है । अपने किए पर पीछे से खेद प्रगट करता है । अनुताप करता है ।

पञ्च—पाँच, जो संख्या में चार से एक अधिक हो । पाँच की संख्या । (२) जन साधारण, लोक, जनता, पाँच वा अधिक मनुष्यों का समुदाय । (३) पाँच वा अधिक आदमियों का समाज जो किसी झगड़े वा मामले को निवटानेकेलिए एकत्र हो । न्याय करनेवाली सभा ।

पञ्चकोस—पञ्चकोसी, पाँच कोस की लम्बाई और चौड़ाई के बीच बसी हुई काशी की पवित्र भूमि । काशी की परिक्रमा ।

पञ्चगव्य—गाय से प्राप्त होनेवाले पाँच द्रव्य, दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र, जो बहुत पवित्र माने जाते हैं और पापों के प्रायश्चित्त आदि में खिलाए जाते हैं ।

पञ्चनदा—काशी के अन्तर्गत एक तीर्थ जिसे पञ्चगङ्गा कहते हैं (२) पाँच नदियाँ । काशी पुरी का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ गङ्गा के साथ किरणा और धूतपापा नाम की नदियाँ मिली थीं, अब ये दोनों सरिताएँ पट कर लुप्त हो गई हैं ।

पञ्चबान—पञ्चबाण, कामदेव के पाँच बाण जिन के नाम ये हैं—द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्मादन । कामदेव के पाँच पुष्पबाणों के नाम ये हैं—कमल, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल । (२) कामदेव, मन्मथ, मदन ।

पञ्चानन—पञ्चमुखी, पाँचमुँहवाला । जिसके पाँच मुख हों ।(२) शिव, रुद्र, महादेव । (३) सिंह, केशरी, सिंह को पञ्चानन कहने का कारण लोग दो प्रकार से बतलाते हैं । कुछ लोग ता पञ्च शब्द का अर्थ 'विस्तृत' करके पञ्चानन का अर्थ 'चौड़े मुँहवाला' करते हैं । कुछ लोग चारों पञ्जों को जोड़ कर पाँच मुँह गिना देते हैं ।

पञ्चाक्षरी—शिवजी का एक मन्त्र जिस में पाँच अक्षर हैं—ॐ नमः शिवाय । पाँच अक्षरोंवाला, पञ्चाक्षर मन्त्र ।

पञ्जर—अस्थि समुच्चय, कङ्काल, ठटरी । हड्डियों का ठट्टर या ढाँचा जो शरीर के कोमल भागों को अपने ऊपर ठहराये रहता है अथवा बन्द या रक्षित रखता है । (२) पिंजड़ा, पींजरा, पक्षियों का बन्धनागार । (३) शरीर, तनु, देह ।

पट—वस्त्र, बसन, कपड़ा । (२) पर्दा, चिक, कोई आड़ करनेवाली वस्तु । (३) पट्ट, किवाड़, दरवाज़े के खोलने और बन्द करने की वस्तु ।

पटतन्तु—वस्त्र और सूत । कपड़ा और डोरा ।

पटल—पंक्ति, श्रेणी, कतार । (२) आवरण, पर्दा, आड़ करने या ढकनेवाली कोई वस्तु । (३) छप्पर, छज्जा, छत । (४) समूह, राशि, ढेर । (५) परत, तह, तबक । (६) पिटारा, मोतियाबिन्द नामक आँख का रोग । (७) टीका, माथे पर का तिलक ।

पटलानिलं—(पटल + अनिल) । समूह पवन, गहरा अन्धड़, बहुत बड़ी आँधी ।

पटु—प्रवीण, निपुण, कुशल, दक्ष, चतुर, होशियार । (२) धूर्त्त, छलिया, दग़ाबाज़ । (३) निष्ठुर, निर्दय, क्रूर । (४) सुन्दर, मनोहर, सुहावना । (५) तीक्ष्ण, तीखा, तेज़ । (६) स्वस्थ, रोग रहित, तन्दुरुस्त । (७) व्यक्त, प्रकाशित, स्फुट । (८) उग्र, प्रचण्ड, भीषण । (९) बच । (१०) जीरा । (११) करेला । (१२) परवल । (१३) नमक ।

(१४) नकछिकनी। (१५) चीनी कपूर। (१६) दृढ़, ठोस, मजबूत।

पठये—भेजे, पठाये, रवाना किये।

पठाओं } पठावों } —भेजता हूँ, पठाता हूँ।

पढ़ि—अध्ययन कर, पढ़ कर।

पढिबो—अध्ययन करना, पढ़ना।

पढ़िय—पढ़िए, बाँचिए, (२) पढ़ता हूँ।

पण्डित—शास्त्रज्ञ, विद्वान्, ज्ञानी। (२) कुशल, प्रवीण, चतुर। (३) ब्राह्मण, वटु, पढ़ा-लिखा शास्त्रज्ञ विप्र। (४) संस्कृत भाषा का विद्वान्। लोक में 'पण्डित' शब्द का प्रयोग पढ़े-लिखे ब्राह्मणों ही के लिए होता है। शिष्टाचार में ब्राह्मणों के नाम के पहले यह शब्द रक्खा जाता है।

पण्डु—पीलापन लिए हुए मटमैला। (२) श्वेत, उज्वल, सफ़ेद। (३) पीत, पीला, पियर। (४) पाण्डु राजा जिनके पुत्र युधिष्ठिर आदि पाँचों पाण्डव थे। विशेष 'पाण्डु' शब्द देखो।

पण्डुसुत—राजा पाण्डु के पुत्र युधिष्ठर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव।

पतङ्ग—शलभ, पाँखी, फतिङ्गा, उड़नेवाला कृमि। एक परदार कीड़ा जो वर्षा के प्रारम्भ में दीपक और अग्नि के प्रकाश पर दौड़ कर प्राण गँवाता है। (२) टिड्डी, टींड़ी। (३) पक्षी, खग, चिड़िया। (४) सूर्य्य, भानु, रवि। (५) एक प्रकार का चन्दन। (६) नाव, नौका। (७) चङ्ग, गुड्डी, कनकौवा।

पताका—ध्वजा, बैजयन्ती, झण्डा, फरहरा। लकड़ी या बाँस के डण्डे के एक सिरे पर पहनाया हुआ तिकोना या चौकोन कपड़ा, जिस पर कभी कभी किसी राजा या संस्था का खास चिन्ह वा सङ्केत चिह्नित रहता है।

पताल—पाताल, अधोभुवन, नागलोक।

पति—स्वामी, प्रभु, अधिपति, किसी वस्तु या व्यक्ति का मालिक। (२) भर्त्ता, कान्त, दूल्हा, शौहर, स्त्री विशेष का विवाहित पुरुष। (३) प्रतिष्ठा, मर्यादा, इज्जत। (४) लज्जा, कानि, आबरू।

पतिआतो—पतियाता, विश्वास करता, प्रतीति करता, एतबार करता।

पतिआयो—विश्वास किया। भरोसा लाया। एतबार माना।

पतित—आचारच्युत, नीतिभ्रष्ट, धर्म्मत्यागी। आचार, नीति या धर्म से गिरा हुआ। (२) गिरा हुआ। ऊपर से नीचे आया हुआ। (३) महापापी, अति अघी, नारकी। (४) जातिच्युत, जाति से निकाला हुआ। जाति या समाज से ख़ारिज। (५) अधम, नीच, पामर। (६) अत्यन्त मलिन, महा अपावन।

पतितपवन } पतितपावन } पतितपुनीत } —पतित को पवित्र करनेवाला, अधम को शुद्ध करनेवाला। (२) ईश्वर, सगुण परमात्मा श्रीरामचन्द्रजी।

पतितायो—अधःपतन किया, गिराया, नीचे ढकेला। (२) धर्मच्युत किया, भ्रष्ट किया, अधम बनाया।

पतियातो—पतिआतो, विश्वास करता।

पथ—मार्ग, राह, रास्ता। (२) पन्थ, मत, मजहब। (३) विधान, व्यवहार। या कार्य्य आदि की रीति। (४) पथ्य, जूस, रोगी या तुरन्त रोग मुक्त के लिए उपयुक्त हलका आहार।

पथिक } पथी } —यात्री, बटोही, मुसाफ़िर, राही, रास्ता चलनेवाला।

पथ्य—वह हलका और जल्दी पचनेवाला भोजन जो रोगी के लिए लाभदायक हो। (२) हित, मङ्गल, कल्याण। (३) संयम, बचाव, परहेज। (४) पथ्या, हड़ का पेड़।

पद—पैर, पाँव, गोड़। (२) मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति। (३) व्यवसाय, उद्यम, काम। (४) उपाधि, पदवी, ओहदा। (५) अधिकार, योग्यता के अनुसार नियत स्थान वा दर्जा। (६) त्राण, रक्षा, पनाह। (७) लक्षण, चिह्न, निशान। (८) वस्तु, पदार्थ, चीज़। (९) डग, परग, क़दम। (१०) श्लोकपाद, श्लोक वा छन्द का चतुर्थांश अर्थात् एक चरण। (११) पद्य, गीत, ईश्वर-भक्ति सम्बन्धी भजन। (१२) शब्द, वाक्य।

पदज—पैर की उँगलियाँ। (२) शूद्र, जो पैर से उत्पन्न हो।

पदवी—उपाधि, ख़िताब, वह प्रतिष्ठा वा मानसूचक पद जो राज्य अथवा किसी प्रतिष्ठित संस्था आदि की ओर से योग्य व्यक्ति को मिलता है। (२) उपाधि, ओहदा, दर्जा। (३) पद्धति, परिपाटी, तरीका। (४) मार्ग, पन्थ, रास्ता।

पदत्राण—पदत्राण, पैरों की रक्षा करनेवाला जूता या खड़ाऊँ।

पदारविन्द—चरण-कमल, कञ्जवत चरण।

पदार्थ—(पद+अर्थ) पद का अर्थ, शब्द का विषय। वह वस्तु जिसका कोई नाम हो और जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सके। (२) वस्तु, द्रव्य, चीज़। (३) वैशेषिक दर्शन के अनुसार द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय ये छः पदार्थ हैं और इन्हीं छओं पदार्थों का उसमें निरूपण है। कुल चीजें इन्हीं छः के अन्तर्गत मानी गई हैं। इसके अतिरिक्त वेदान्त और सांख्य आदि ने भिन्न संख्याओं में अनेक पदार्थ माने हैं।

पदिक—पदाति, पैदल, सेना। (२) वज्र, हीरा। (३) रत्न, जवाहिर। (४) सुवर्ण, सोना। (५) जुगुनू नाम का गहना, गले में पहनने का वह गहना जिस पर किसी देवता आदि के चरण अङ्कित हों। चौकी।

पदिकहार—रत्नहार, मणिमाल, हीरा जवाहिर की वह माला या हार जिसमें रत्नजटित चौकी लगी हो और जो घुटने पर्यन्त लटकता हो।

पदुम }
पद्म } —कमल, कञ्ज, सरोज। (२) एक निधि का नाम। (३) सौ नील की संख्या। (४) एक पुराण।

पद्मालय—ब्रह्मा, विरञ्चि, विधाता।

पद्मालया—लक्ष्मी, रमा, कमला।

पद्मासन—योगसाधन का एक आसन जिसमें पालथी मार कर सीधे बैठते हैं। (२) ब्रह्मा, विरञ्चि। (३) शिव, हर। (४) सूर्य, भानु।

पन—प्रतिज्ञा, सङ्कल्प, अहद।

पनवार }
पनवारो } —पत्तल, पतरी,

पन्थ—मार्ग, पथ, राह। (२) आचार पद्धति। व्यवस्था, रीति, चाल, व्यवहार का क्रम। (३) सम्प्रदाय, धर्ममार्ग, मत। (४) पथ्य, संयम, परहेज।

पन्नग—सर्प, नाग, साँप।

पन्नगारि—गरुड़, पन्नगों के बैरी।

पपीहा—चातक, सारङ्ग, पपिहरा पक्षी।

पय—दूध, दुग्ध, क्षीर। (२) पानी, जल, नीर।

पयद }
पयोद } —मेघ, बादल। (२) मुस्तक, नागरमोथा।

पयोधि—समुद्र, सिन्धु, सागर।

पर—अन्य, और, दूसरा। (२) अतिरिक्त, भिन्न, जुदा। (३) उत्तर, पीछे का, बाद का। (४) श्रेष्ठ, सब के ऊपर। आगे बढ़ा हुआ। (५) प्रवृत्त, तत्पर, लीन। (६) पराया, दूसरे का। जो अपना न हो। (७) ऊपर, पै, सप्तमी या अधिकरण का चिह्न। (८) शत्रु, बैरी, दुश्मन। (९) परन्तु, किन्तु, लेकिन। (१०) अलग, दूर, जो परे हो। (११) ब्रह्म, परमेश्वर। (१२) शिव, रुद्र। (१३) ब्रह्मा, विधाता। (१४) मोक्ष, निर्वाण। (१५) फ़ारसीभाषा के अनुसार—पक्ष, पङ्खा, चिड़ियों का डैना।

परखि—परीक्षाकर के। गुण दोष स्थिर करके। जाँच कर। (२) प्रतीक्षा करके, इन्तजार करके।

परखे—परीक्षा किया, जाँच किया, गुण दोष स्थिर करने के लिये अच्छी तरह देखाभाला। (२) पतीक्षा किया, आसरा देखा, इन्तज़ार किया। (३) भला और बुरा पहचाना।

परचण्ड—प्रचण्ड, उद्धत, उग्र।

परत—पत्र, पटल, तह, मोटाई का फैलाव जो किसी सतह के ऊपर हो। (२) 'परना वा पड़ना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप। पड़ता है, सूचित करता है, ठहरता है।

परतीति—प्रतीति, विश्वास, यक़ीन।

परदा—पट, चिक, आड़ करनेवाला कपड़ा।

परब—पर्व, उत्सव, त्योहार। (२) पतित होऊगा। पड़ूँगा, गिरूँगा।
परबस—परवश, पराधीन, जो दूसरे के वश में हो।
परब्रह्म—निर्गुण निरुपाधि ब्रह्म, ईश्वर।
परम—अत्यन्त, सब से बढ़ा चढ़ा, हद से ज़्यादा। (२) उत्कृष्ट, जो बढ़ चढ़ कर हो। (३) प्रधान, प्रमुख, मुख्य। (४) सम्पूर्ण, सम्यक्, बिलकुल। (५) सुन्दर, रमणीय, सुहावना। (६) विष्णु, लक्ष्मीपति। (७) शिव, गौरीश।
परमगति—उत्तमगति, मोक्ष, मुक्ति।
परमपद—सब से श्रेष्ठ पद वा स्थान। (२) मोक्ष, मुक्ति।
परमरम्य—सबसे बढ़ कर सुन्दर। अत्यन्त सुहावना
परमसुजान—बहुत बड़ा चतुर, अत्यन्त चतुर।
परमहित—श्रेष्ठ उपकारी, सब से ज्यादे हितू।
परमाणु—अत्यन्त सूक्ष्म अणु, वह छोटा से छोटा कण जिसका विभाग न हो सके। (२) साठ निमेष का समय, अत्यल्प काल।
परमातमा / परमात्मा—परमेश्वर, ईश्वर, परब्रह्म।
परमान—प्रमाण, सीमा, अवधि। (२) यथार्थ बात।
परमानन्द—ब्रह्मानन्द, ब्रह्म के अनुभव का सुख। (२) बहुत बड़ा आनन्द। सब से बढ़ कर सुख। (३) आनन्द स्वरूप ब्रह्म।
परमारथ / परमार्थ—उत्कृष्ट पदार्थ,सब से बढ़ कर वस्तु। (२) यथार्थतत्व, सारवस्तु, वास्त विक सत्ता। (३) मोक्ष, पारलौकिक अमूल्य लाभ। (४) सुख,आनन्द,दुःख का अभाव रुप।
परमित / परमिति—सीमा, अवधि, हद। (२) प्रतिष्ठा, बड़ाई, इज़्ज़त।
परलोक—दूसरा लोक, वह स्थान जो शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त होता है। जैसे, स्वर्ग वैकुण्ठ आदि (२) श्रेष्ठ जन, उत्तम मनुष्य। अच्छे लोग। (३) अन्य जन, दूसरे मनुष्य।
परवश—पराधीन, परतन्त्र, परबस, जो दूसरे के वश में हो। (२) ग़ुलाम, चाकर, नौकर।
परशु—कुठार, भलुवा, एक अस्त्र जिसमें डण्डे के सिरे पर एक अर्द्धचन्द्राकार लोहे का फल लगा रहता है। एक प्रकार की कुल्हाड़ी जो पहले लड़ाई मे काम आती थी।
परशुधर—परसुराम, यमदग्नि ऋषि के एक पुत्र का नाम जिन्हों ने सहस्रार्जुन का संहार कर के २१ बार दिग्विजय कर पृथ्वी में क्षत्रिय वंश का नाश किया था। पिता की आज्ञा मान कर अपनी माता का सिर काट डाला और पिता के प्रसन्न होने पर फिर उन्हें जिला दिया। इनका स्वभाव क्रोधी था और विष्णु के छठें अवतार माने जाते हैं।
परस—स्पर्श, छूना, छूने की क्रिया।
परसत—'परसना' शब्द का वर्तमान काल। स्पर्श करता है, छूता है।
परा—ब्रह्मविद्या, उपनिषद् विद्या, वह विद्या जो ऐसी वस्तु का ज्ञान कराती है जो सब गोचर पदार्थों से परे हो। (२) सायण के अनुसार जो नादात्मक वाणी मूलाधार से उठती है और जिसका निरूपण नहीं हो सकता, उसका नाम परा है। चार प्रकार की वाणियों में पहली वाणी जो नादस्वरूपा और मूलाधार से निकली हुई मानी जाती है। (३) श्रेष्ठ, उत्तम, जो सब से बढ़ कर हो। (४) श्रेणी, पंक्ति, कतार। (५) प्रभुता, बड़ाई। (६) उलटा, विपरीत। (७) सामर्थ्य, बल। (८) अपमान, अनादर। (९) मण्डली, गरोह।
पराई—अन्य की, और की, दूसरे की (२) 'पराना' शब्द का भूत कालिक रूप, भागती थी, पलायन होती थी।
पराक्रम—शक्ति, सामर्थ्य, बल। (२) पुरुषार्थ, पौरुष, उद्योग। (३) शौर्य, शूरत्व, शूरता।
पराधीन—परवश, परतन्त्र,जो दूसरे के आधीन हो।
पराधीनता—परवश्यता, परतन्त्रता, दूसरे की अधीनता।
पराभव—पराजय, हार, शिकस्त। (२) मानध्वन्स, तिरस्कार, अनादर। (३) विनाश, ध्वन्स, नाश।
परायन—परायण, प्रवृत्त, तत्पर, निरत, लगा

हुआ। (२) मग्न, लवलीन, मशगूल। (३) आश्रय, भाग कर शरण लेने का स्थान। (४) गत, गया हुआ, बीता हुआ। (५) विष्णु केशव, अच्युत।
पराये—बिराने, बेगाना, गैर, जो आत्मीय न हो। (२) अन्य, और, दूसरे। (३) भागे, पलायन हुए।
परावर—सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, सबसे अच्छा। (२) ब्रह्मा आदि देवता और मनुष्यादि जीव, जड़ चेतन, चराचर।
परि—एक संस्कृत उपसर्ग जिसके लगने से शब्द में इन अर्थों की बृद्धि होती है। (१) चारों ओर। (२) सर्वतोभाव, अच्छी तरह। (३) अतिशय, बहुत, अधिक। (४) पूर्णता, सम्पूर्ण रूप से। (५) दोषाख्यान। (६) नियम, क्रम। (७) निश्चय।
परिगहै—सर्वतोभाव से ग्रहण करै। अच्छी तरह से पकड़ै, पूर्ण रूप से थामै।
परिगहैगो—सर्वतोभाव से पकड़ेगा, अच्छी तरह से ग्रहण करेगा, पूर्ण रूप से थाम्हेगा।
परिचारिका—सेविका, दासी, मजदूरनी।
परिजन—कुटुम्ब, परिवार, आश्रित वर्ग। (२) अनुचरवर्ग, सदा साथ रहनेवाले सेवक।
परिणाम—फल, परिनाम, नतीजा (२) विकृति, रूपान्तर, अवस्थान्तर, प्राकृतिक नियमानुसार वस्तुओं का रूपान्तरित होना। (३) अन्त, समाप्ति, अवसान, बीतना। (४) वृद्धि, विकाश, बाढ़। (५) वृद्ध होना, बूढ़ा होना। (६) एक अर्थालङ्कार जिसमें उपमेय द्वारा की जानेवाली क्रिया का उपमान द्वारा किया जाना कहा जाता है।
परिणामौ—फल भी। (२) अन्त भी।
परिताप—अत्यन्त जलन, गरमी, आँच। (२) दुःख, क्लेश, व्यथा, पीड़ा, दर्द। (३) उद्वेग, सन्ताप मानसिक दुःख। (४) पश्चात्ताप, पछतावा। (५) भय, डर, दहशत। (६) शोक, चिन्ता, रञ्ज।
परितोष—सन्तोष, तृप्ति, आसूदगी। (२) प्रसन्नता, ख़ुशी, हर्ष।
परिधान—वस्त्र, कपड़ा, पहनावा, पोशाक, वह वस्त्र जो पहना जाय। (२) धोती आदि जो कमर में बाँध कर पहनते हैं।

परिनाम—'परिणाम' फल, नतीजा।
परिपाक—प्रौढ़ता, पूर्णता, परिणति। (२) प्रवीणता, कुशलता, निपुणता, उस्तादी। (३) पकने का भाव या पकाया जाना। (४) पचने का भाव या पचाया जाना। (५) परिणाम, फल, नतीजा। (६) बहुदर्शिता, तजर्वेकारी।
परिपूरण / परिपूरन }—'परिपूर्ण', सम्पूर्ण।
परिपूर्ण—सम्पूर्ण, समाप्त किया हुआ, पूरा किया हुआ। (२) सम्यक् रीति से व्याप्त, खूब भरा हुआ। (३) पूर्ण, तृप्त, अघाया हुआ।
परिबे—पड़िबे, किसी नीचे स्थान में गिरना।
परिमरै—निश्चय मृतक हो, मरै, प्राण गँवावे।
परिय—पड़िय, गिरिय।
परिवा—पड़िवा, किसी पक्ष को पहली तिथि।
परिवार—'परिजन,' कुटुम्ब, कुल।
परिहरहु—त्यागहु, छोड़ दो।
परिहरि—त्याग कर, तज कर, छोड़कर।
परिहास—हँसी, क्रीड़ा, मज़ाक। (२) उपहास, निन्दा, तौहीनी।
परिहै—पड़ोगे, गिरोगे।
परी—पड़ी, पतित हुई, गिरी।
परीक्षित—पाण्डुकुल के एक राजा का नाम जो अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र थे। जिस समय ये अभिमन्यु की स्त्री उत्तरा के गर्भ में थे, द्रोणाचार्य्य के पुत्र अश्वत्थामा ने पाण्डवों का निर्वंश करने के अभिप्राय से गर्भ में ब्रह्मास्त्र चलाया जिससे गर्भ से झुलसा हुआ परीक्षित का मृत पिण्ड बाहर निकला। भगवान कृष्णचन्द्र को पाण्डुकुल का नाम निशेष हो जाना मञ्जूर न था इसलिये उन्हों ने अपने योगबल से मृत गर्भ को जीवित कर दिया। परिक्षीण होने से बचाये जाने के कारण इस बालक का नाम परीक्षित रक्खा गया। परीक्षित ने महाभारत युद्ध में कुरुदल के प्रसिद्ध महारथी कृपाचार्य्य से अस्त्र विद्या सीखी थी। युधिष्ठिरादि पाण्डव इन्हें राज्य देकर तपस्या

करने हिमालय पर्वत पर चले गये। इन्हीं के राज्यकाल में द्वापर का अन्त और कलियुग का आरम्भ हुआ। जब राजा को यह मालूम हुआ कि कलियुग मेरे राज्य में घुस आया है और अधिकार जमाने का अवसर ढूँढ़ रहा है तब वे अस्त्र शस्त्र लेकर घोड़े पर सवार होकर कलि को दण्ड देने के लिये निकले। राजा ने देखा कि एक राजवेषधारी शूद्र एक गाय और बैल को मार रहा है। बैल के एक ही पाँव है इससे वह भाग नहीं सकता। राजा से यह अत्याचार देखा नहीं गया डाँट कर शूद्र से पूछा। तीनों ने अपना परिचय दिया। गैया-पृथ्वी, बैल-धर्म और शूद्र कलि था। राजा शूद्र को मारने के लिये उद्यत हुआ। शूद्र ने गिड़-गिड़ा कर प्राणदान की भिक्षा माँगी, राजा को दया आ गई इससे हत्या न कर के कहा कि तू जुआ, कुलटा स्त्री, मद्य, हिंसा और सुवर्ण इन्हीं पाँच स्थानों में रहे तथा मिथ्या, मद, काम, हिंसा और बैर ये पाँच वस्तुओं पर तेरा अधिकार रहे। कपटी कलि ने पाँचवें स्थान सुवर्ण द्वारा राजा के मुकुट में प्रवेश कर उन्हें उन्मत्त बना कर सर्वनाश कर डाला। यह कथा श्रीमद्भागवत में विस्तार से वर्णित है।

परुष—कर्कश, कठोर, कड़ा, सख़्त, अत्यन्त रूखा या रसहीन। (२) अप्रिय लगनेवाला वचन, बुरी लगनेवाली बात। (३) निष्ठुर, निर्दय, न पिघलनेवाला।

परे—श्रेष्ठ, उत्तम, सब से अच्छा। (२) ऊँचे, ऊपर, बढ़ कर। (३) अतीत, बाहर, अलग। (४) दूर, उधर, उस ओर।

परेउ—पड्यो, गिर्यो।

परोपकार—वह काम जिससे दूसरों का भला हो, वह उपकार जो दूसरों के साथ किया जाय, दूसरों के हित का काम।

परोसो—परोसना, परसना, खाने के लिये किसी के सामने भाँति भाँति के भोजन पत्तल, या थाल में सजा कर रखना।

पर्यङ्क—शय्या, सेज, पलँग। (२) मञ्च, माँचा, खटिया। (३) एक प्रकार का वीरासन।

पर्यन्त—लौं, तक, तलक, एक विभक्ति जो किसी वस्तु वा व्यापार की सीमा सूचित करती है। (२) पार्श्व, पास, बग़ल।

पर्व—धर्म, पुण्यकाल, उत्सव आदि करने का समय। (२) पूर्णिमा, अमावस्या, अष्टमी, एकादशी आदि तिथि जो व्रत और स्नान के लिये नियत हैं उन्हें पर्व कहते हैं। (३) सूर्य्य अथवा चन्द्रमा का ग्रहण। (४) उत्सव, प्रसन्नता का दिन, त्योहार। (५) अंश, भाग, हिस्सा। (६) सर्ग, परिच्छेद, अध्याय। (७) सन्धिस्थान।

पर्वत—अचल, अद्रि, अवनीधर, अहार्य, अग, गिरि, गोत्र, कुधर, धराधर, धर, भूधर, महीधर, शिखरी, शैल, पहाड़ इत्यादि। जमीन के ऊपर बहुत अधिक उठा हुआ प्राकृतिक भाग जो पत्थर ही पत्थर होता है और बहुत दूर तक फैला रहता है।

पल—घड़ी या दण्ड का ६० वाँ भाग, विपल के बराबर समय, २४ सेकण्ड का काल। (२) मांस, आमिष, गोश्त। (३) एक तौल जो पाँच रुपये भर या चार कर्ष के बराबर होती है। (४) प्रतारणा, धोखेबाज़ी।

पलक—क्षण, पल, लहमा, दम। (२) नेत्रपट, पपनी, आँखों की रक्षा का परदा। (३) तुरत, शीघ्र, झटपट।

पलटे—बदले में, प्रतिफल स्वरूप, एवज में। (२) घूमे, लौटे, फिरे। (३) प्रतिकूल, उलटा, बरक्स।

पलपल—प्रत्येक पल में, हर एक विपल में।

पल्लव—पत्र, दल, पात, पत्ता। (२) किसलय, नवपत्र, कोपल, नये निकले हुए कोमल पत्तों का समूह। (३) करज, उँगली, अँगुरी। (४) चपलता, चञ्चलता।

पल्लवित—पल्लवयुक्त, जिसमें नये नये पत्ते निकले हों। (२) हराभरा, लहलहाता, हरित। (३) रोमाञ्चयुक्त, पुलकित, जिसके रोंगटे खड़े हों।

पवन—अनिल, गन्धवाह, जगत्प्राण, सदागति,

पवमान, प्रभञ्जन, मरुत, मारुत, मातरिश्वा, वात, वायु, समीर, बतास, बयारि, बाउ, हवा इत्यादि। पवन ४९ प्रकार के हैं। (२) पवित्र, पावन, शुद्ध, निर्मल। (३) निष्पाव, अन्न आदि का पछोरना वा साफ़ करना। (४) जल, पानी, सलिल।

पवनपूत, पवनसुत—'हनूमान' अञ्जनीकुमार।

पवि—वज्र, बिजली, गाज। (२) थूहर, सेहुँड़। (३) हीरा, हीरक, रत्न विशेष। (४) मार्ग, रास्ता, डगर।

पविपञ्जर—वज्र का पिंजड़ा, रक्षा का वह स्थान जहाँ किसी प्रकार के विघ्न बाधा का कोई भय न हो।

पवित्र—शुद्ध, निर्मल, साफ़, जो मैला या गन्दा न हो। (२) कुशा, दर्भ, डाभ। (३) जल, पानी। (४)दुग्ध, क्षीर, दूध।(५)वर्षा, बरसात,बारिश।

पशु—पूँछवाले चतुष्पद जन्तु, चौपाये, जानवर। जैसे—गाय, भैंस, घोड़ा, ऊँट, बकरी इत्यादि। (२) जीवमात्र, प्राणी। (३) देवता, विबुध।

पशुपाल—पशुओं को पालनेवाला, पशुपालक। (२) ग्वाल, गोप, अहीर।

पशू—'पशु' चौपाये।

पश्चात—पीछे, अनन्तर, बाद, फिर। (२) पश्चिम, प्रतीची, पिच्छम दिशा। (३) शेष, अन्त, अखीर।

पश्यन्ति—देखते हैं, निरखते हैं,अवलोकन करते हैं

पषान—पाषाण, पत्थर, पथरा। (२) अहिल्या, गौतमी।

पसाउ—प्रसाद, प्रसन्नता, कृपा, अनुग्रह, छोह।

पसारी—पसारा, फैलाया, बिछाया। (२) पसवन पसे ही, तिन्नी का धान।

पहचान—परिचय, चिन्हारी, देखने पर यह जान लेने का भाव कि अमुक वस्तु या व्यक्ति है। (२) लक्षण, चिह्न, चीह्नाने का कोई प्रधान सङ्केत।

पहर—याम, प्रहर, दिन का चतुर्थांश, तीन घड़ी का समय। (२) पाहरू, पहरूआ, पहरा देनेवाला। (३) समय, ज़माना, युग। पहला, प्रथम, आदि, अव्वल।

पहाड़—'पर्वत' शैल, महीधर।

पहिचान—'पहचान' परिचय।

पहिराव—पहनावा, परिच्छद, पोशाक। (२) पहनावे, वस्त्र से आच्छादित कर, कपड़े से से शरीर सजना।

पहिले—प्रथम' पहले, शुरू।

पहुँच—प्रवेश, पैठ, गुजर, समीप तक गति। (२) पकड़, दौड़, आशय समझने की शक्ति। (३) प्राप्ति, किसी वस्तु वा व्यक्ति के कहीं पहुँचने की सूचना। (४) परिचय, दखल, जानकारी का विस्तार। (५) किसी स्थान तक गति।

पहुनाई—अतिथि-सत्कार, पहुनई, मेहमानदारी, आगत व्यक्ति की पान इलायची आदि से ख़ातिर करना।

पक्ष—पंखा, पर, चिड़ियों का डैना। (२) पाख, पन्द्रह दिन का समय, कृष्ण और शुक्ल पक्ष। (३) पार्श्व, ओर, तरफ़। (४) निमित्त, सम्बन्ध,लगाव। (५) सखा, सहायक, साथी। (६) किसी विषय पर भिन्न भिन्न मत रखने वालों के अलग अलग दल। (७) पक्षी,पखेरू, चिड़िया। (८) घर, गृह, मकान।

पक्षकर्त्ता—पक्षपाती, तरफदार, पक्ष करनेवाला।

पत्र—पात, पत्ती, दल, पर्ण, वृक्ष का पत्ता। (२) पत्री, पत्रिका, चिट्ठी। (३) वह कागज जिस पर किसी विशेष व्यवहार के प्रमाण-स्वरूप कुछ लिखा गया हो। (४) समाचार पत्र, ख़बर का कागज, अखबार। (५) पृष्ठ, पन्ना, सफ़ा। (६) पक्ष, पंख, चिड़िया का डैना। (७) तेजपात, पत्रज।

पत्रिका—चिट्ठी, पत्री,खत। (२) कोई छोटा लेख। जैसे—विनयपत्रिका, जन्मपत्रिका आदि।

पा—प्राप्त, पाकर।

पाइ—प्राप्त करके, मिल कर।

पाई—प्राप्त हुई, मिली, पाई। (२) एक आने का बार-

हवाँ भाग। (३) चतुर्थांश, चौथा भाग, चौथाई।

पाउ—प्राप्त हो, मिलै, पावै। (२) पाँव, पद, पैर।

पाउँ—पाँव, पद, पैर।

पाऊँ, पाओँ—प्राप्त हो, मिलै, पावों।

पाक—पकाने की क्रिया, रींधना। (२) पकवान, रसोई, पका हुआ अन्न। (३) ओषधियों का पाक, जैसे मूसलीपाक, बादामपाक। (४) पचन, खाये हुए पदार्थ के पचने की क्रिया। (५) एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था। (६) पवित्र, शुद्ध, सुथरा। (७) निर्दोष, पाप रहित, अनघ। (८) समाप्त, बेबाक, जिसका कोई अंश बाकी न हो। (६) परिणाम, फल, नतीजा। (१०) शिशु, बालक।

पाकारि—'इन्द्र' पाक दैत्य के वैरी।

पाकारिजित—इन्द्रजित, मेघनाद।

पाकारिसुत—इन्द्र का पुत्र, जयन्त।

पाखण्ड—वेद विरुद्ध आचार, आडम्बर, ढोंग, ढकोसला। (२) छल, धोखा, दग़ाबाजी। (३) नीचता, शरारत, बुरे हेतु से ऐसा काम करना जो अच्छे इरादे से किया हुआ जान पड़े। किसी को ठगने के लिये उपाय रचना।

पाखण्डमुख—पाखण्डो, छली, धूर्त्त।

पागि—मग्न होकर, तन्मय होकर, डूब कर। (२) मीठी चाशनी में सान कर वा लपेट कर।

पागी—मग्न हुई, तन्मय हुई। (२) सनी, लिपटी।

पाँगुर—पङ्गल, लुञ्ज, पङ्गु।

पाँच—चार से एक अधिक, जो गिनती में तीन और दो हो, पाँच की संख्या। (२) पञ्च, बहुत लोग, कई एक आदमी।

पाँचों—पञ्चों, सदस्यों, सभासदों।

पाँचइ—पञ्चमी, प्रत्येक पाख की पाँचवीं तिथि।

पाछिल—पिछला, पहले का।

पाछिली—पिछली, पहले की।

पाणि, पाणी—हाथ, कर, हस्त।

पाण्डव—कुन्ती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पाण्डु के पाँचों पुत्र-युधिष्ठिर, भीम अर्जुन, नकुल, सहदेव।

पाण्डु—एक राजा का नाम जो पाण्डव वंश के आदि पुरुष थे। इनके जन्म की कथा महाभारत में विस्तार-पूर्वक बहुत ही विलक्षण प्रकार से वर्णित है। व्यासदेव की दृष्टि से विधवा अम्बिका के गर्भ से धृतराष्ट्र और अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु उत्पन्न हुए। पाण्डु का विवाह कुन्ती और माद्री से हुआ। एक बार राजा पाण्डु स्त्रियों को साथ लेकर जङ्गल में जाकर आमोद प्रमोद और शिकार आदि करके वहाँ रहने लगे। एक दिन एक हिरन और हिरनी मैथुन में आसक्त थे, राजा ने हिरन को बाण मार दिया। वास्तव में हिरन किमिन्दय नामक ऋषि थे रूप बदल कर अपनी स्त्री के साथ रतिक्रीड़ा करते थे। उन्हों ने शाप दिया कि तुमने मुझे स्त्री के साथ भोग करते समय मारा है अतः तुम भी जब अपनी स्त्री के साथ भोग करोगे उसी समय तुम्हारी मृत्यु होगी। इस पर पाण्डु दुखी हुए बहुत काल तक भोग विलास त्याग दिया। वंशोत्पत्ति के लिये ब्राह्मण द्वारा कुन्ती को आदेश किया इस पर कुन्ती ने धर्म, वायु और इन्द्र का आह्वान कर क्रमशः युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन नामक तीन पुत्र जने तथा माद्री ने अश्विनीकुमार के अनुग्रह से नकुल सहदेव नामक दो पुत्र पाये। ये ही पाचों पुत्र पाण्डव कहलाये और पाँचों ने द्रौपदी के साथ विवाह किया। राजा पाण्डु माद्री से रमण कर शाप वश मृत्यु को प्राप्त हुए और माद्री उनके साथ सती होगई। (२) कुछ लाली लिये पीला रङ्ग। वह रङ्ग जो ललाई के साथ पीलापन लिये हो। (३) एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर का रङ्ग पीला पड़ जाता है और कम्प, पीड़ा, आलस्य आदि होता है।

पात—पर्ण, पत्र, दल, पत्ता, वृक्षों के पत्ते। (२) पतन, प्रपात, गिरने की क्रिया या भाव। (३) ध्वंस, नाश, मृत्यु।

पातक—'पाप' अघ, गुनाह ।
पातकपीन—पुष्टपाप, महाअघ, बड़ापाप ।
पातकी—पापी, कुकर्मी, पाप करनेवाला ।
पातरि—पत्तल, पनवारा, पतरी । (२) सूक्ष्म, पतला, बारीक ।
पाता—संरक्षक, रक्षा करनेवाला । (२) पात, पत्ता, पत्र ।
पाताल—नागलोक, अधोलोक, पृथ्वी के नीचे के लोक । (२) विवर, बिल, गुफा । (३) पाताल सात माने गये हैं, पहला अतल, दूसरा वितल, तीसरा सुतल, चौथा तलातल, पाँचवाँ महातल, छठाँ रसातल और सातवाँ पाताल ।
पाँति } पाँती }—श्रेणी, पंक्ति, कतार । (२) समूह, वृन्द, अवली । (३) पङ्गत, परिवार-वृन्द ।
पाती—चिट्ठी, पत्री, पत्रिका । (२) प्रतिष्ठा, लज्जा, इज़्ज़त । (३) प्राप्त होती, मिलती, लहती । (४) पात, पत्र, वृक्ष के पत्ते ।
पातुमे—मेरी रक्षा कीजिये ।
पाथ—पानी, जल, नीर ।
पाथोज—कमल, पद्म, पङ्कज ।
पाथोजनाभ—कमलनाभ, विष्णु ।
पाथोद—बादर, मेघ, घन ।
पाथोधि—समुद्र, सिन्धु, सागर ।
पाद—पाँव, चरण, पैर, । (२) चतुर्थांश, चौथाई, किसी चीज़ का चौथा भाग । (३) किरण, रश्मि, ज्योत्स्ना । (४) पहरी, छोटा पहाड़ ।
पादप—वृक्ष, महीरुह, पेड़ ।
पादुका—पादत्राण, खड़ाऊँ, खरौंआ ।
पान—ताम्बूल, नागवेल, तमूल । (२) पीना, अँचवना, कोई तरल पदार्थ को घूँट घूँट करके गले के नीचे उतारना । (३) पीने का पदार्थ, पेय द्रव्य, मद्य आदि । (४) पात, दल, पत्ता । (५) पानी, जल, नीर ।
पानहीँ—पगरक्षणी, पनहीं, जूता ।
पानि—हाथ, हस्त, कर । (२) पानी, जल, नीर ।
पानी—अमृत, अम्बु, अम्भ, अर्ण, आपः, आब, उद, उदक, क, कीलाल, घनरस, जल, जीवन, तोय, नीर, पवित्र, पाथ, पानीय, पुष्कर, भुवन, मधु, मेघपुष्प, रस, वन, वारि, शम्बर, सलिल, क्षीर इत्यादि इसके पर्यायी नाम हैं । (२) वर्षा, वृष्टि, मेह । (३) ओप, चमक, कान्ति, आब । (४) प्रतिष्ठा, मान, इज़्ज़त, आबरू । (५) वर्ष, साल, बरस । (६) शुक्र, वीर्य, काम । (७) अवसर, समय, मौका । (८) हाथ, हस्त, कर ।
पाप—अघ, अधर्म, अंहस, कलुष, कल्मष, किल्विष, दुष्कृत, पङ्क, पातक, वृजिन, दुरित, गुनाह, कर्त्ता का अधःपात करनेवाला कर्म, वह कर्म जिसका फल इस लोक और परलोक में अशुभ हो । (२) अपराध, दोष, जुर्म । (३) वध, हत्या, घात । (४) पापबुद्धि, बुरीनीयत, खोटी बुराई । (५) सङ्कट, कठिनाई, मुश्किल । (६) दुराचार, दुष्टता, बदमाशी ।
पापमूल—पाप की जड़ ।
पापिष्ट—अतिशय पापी, बहुत बड़ा पापात्मा ।
पापी—अघी, पातकी, पाप करनेवाला । (२) क्रूर, नृशंस, निर्दय ।
पापौघ—पाप-समूह, कलुष-राशि ।
पामर—पापी, अधम, कमीना । (२) दुष्ट, खल ।
पाय—पा कर, प्राप्त हो कर । (२) पाँव, पैर ।
पाँय—पाँव, पैर, गोड़ ।
पाया } पायो }—हस्तगत हुआ, प्राप्त हुआ, मिला । (२) पावा, गोड़ा, पाया । (३) पद, पदवी, ओहदा । (४) स्तम्भ, खम्भा ।
पार—परे, आगे, दूर, लगाव से अलग । (२) परिमिति, अन्त, छोर, हद । (३) ओर, तरफ़, नदी आदि के आमने सामने के दोनों किनारों में से दूसरी ओर का किनारा जहाँ अपनी स्थिति हो । (४) दूसरा पार्श्व, दूसरी ओर । (५) समाप्ति, इति, खातमा ।
पारखी—परीक्षक, परखनेवाला, जाँचनेवाला । (२) वह जिसे परख या पहचान हो, जिसमें परीक्षा करने की योग्यता हो ।
पारण—किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन किया जानेवाला पहला भोजन और तत्सम्ब-

न्धी कृत्य। (२) समाप्ति, इति, खातमा। (३) तृप्त करने की क्रिया।
पारथ—'अर्जुन' पार्थ, धनञ्जय।
पारद—पारा, रसराज, सूत। (२) पारदाता, संसार समुद्र से पार करनेवाला।
पारन—'पारण' समाप्ति, तृप्त करने का भाव।
पारबती—'पार्वती' गौरी, उमा।
पारस—स्पर्शमणि, एक कल्पित पत्थर जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि लोहा उससे छुआया जाय तो सोना हो जाता है। (२) परसा हुआ भोजन। भोजन के लिये सजाया हुआ, खाना। (३) पार्श्व, समीप, पास। (४) फ़ारस अफगानिस्तान के पश्चिम एक देश।
पारायण } पारायन } —समाप्ति, पूर्णता, पूरा करने का कार्य्य। (२) समय बाँध कर किसी ग्रन्थ का आद्योपान्त पाठ। (३) परायन, तत्पर, लगा हुआ।
पारावार—वार पार, आर पार, दोनों तट। (२) सीमा, अन्त, हद। (३) समुद्र, सागर।
पार्थ—'अर्जुन' पारथ।
पार्वती—उमा, गौरी, गिरिजा, भवानी, शिवा, अम्बिका, रुद्राणी, शर्वाणी, दुर्गा, आद्या, चण्डिका इत्यादि। हिमालय की कन्या, शिवजी की अर्द्धाङ्गिनी देवी। गणेशजी और कार्तिकेय की माता। (२) तीसी, अलसी। (३) शल्लकी, सलई।
पार्श्व—कक्ष का अधोभाग, काँख के नीचे का हिस्सा, बगल, पाँजर। (२) समीप, पास, निकटता।
पाल—पालन, रक्षण, हिफाज़त। (२) पालक, पालनकर्त्ता। (३) वह लम्बा चौड़ा कपड़ा जिसे नाव के मस्तूल से लगा कर इसलिये तानते हैं जिसमें हवा भरे और नाव को तेजी से ले चले। (४) फलों को गरमी पहुँचा कर पकाने के लिये पत्ते आदि बिछा कर रखने की विधि। (५) तम्बू, चँदोवा, शामियाना।
पालक—रक्षक, पालनकर्त्ता, पालनेवाला। (२) दत्तकपुत्र, पाला हुआ लड़का।
पालत—'पालना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। पालते हैं, रक्षा करते हैं।
पालन—रक्षण, भरण पोषण, भोजन वस्त्र आदि दे कर जीवन रक्षा। (२) भङ्ग न करना, न टालना, अनुकूल आचरण द्वारा किसी बात की रक्षा या निर्वाह करना।
पालिका—पालन करनेवाली।
पालित—रक्षित, पाला हुआ।
पाले—रक्षा किये, बचाये। (२) अधीन, वश में, मातहत।
पाँव—अङ्घ्रि, पाद, पद, चरण, पाय, पाँव, पैर, पाउँ, गोड़, वह अङ्ग जिससे गमन हो।
पाव } पावइ } पावई } —पावै, प्राप्त हो, मिलै।
पावक—'अग्नि' अनल, आग। (२) चित्रक, चीता। (३) अग्निमन्थ, अगेथु का पेड़।
पावन—पवित्र, शुद्ध, पाक। (२) पवित्र करनेवाला, शुद्ध करनेवाला।
पाँवर—पतित, नीच, अधम, पापी।
पावस—वर्षाकाल, बरसात, सावन, भाँदों का महीना।
पाषाण } पाषान } —प्रस्तर, शिला, पत्थर। (२) अहिल्या, गौतमी, गौतम ऋषि की स्त्री। (३) गन्धक, क्रूरगन्ध, कीटघ्न।
पास—बन्धन, फन्दा, बाँधने की रस्सी। (२) समीप, निकट, नगीच। (३) बगल, ओर, तरफ़। (४) अधिकार, पल्ला, कब्ज़ा।
पासङ्ग—पसँघे में भी, तराजू के पलरे पर पत्थर वा मिट्टी रख कर डाँड़ी बराबर करने के लिये बोझ की चीज़। तराजू की डण्डी ऊँची नीची रहने को पसँघा कहते हैं।
पासा—पास, समीप, निकट। (२) वह खेल जो पासों से खेला जाता है, चौसर। (३) हाथीदाँत या हड्डी के बने उँगली के बराबर छेपहले टुकड़े जिन पर बिन्दियाँ बनी रहती हैं उससे चौसर खेलते हैं।

पाहन—'पाषाण' पत्थर। (२) अहिल्या, गौतमी।
पाहि—बचाइये, रक्षा कीजिये।
पाहिमाम्—मेरी रक्षा कीजिये, मुझे बचाइये।
पाहीं—समीप, निकट, पास।
पाहूँ—मनुष्य, व्यक्ति। (२) पाँव, पैर। (३) समीप, पास।
पात्र—भाजन, बरतन, वह वस्तु जिसमें कुछ रक्खा जा सके। (२) अभिनेता, नट, जो नाटक खेलता हो। (३) समर्थ, योग्य, लायक़।
पिआउ—पिलाओ, पिआओ।
पिउ—पिओ, पान करो। (२) पी, प्रीतम, पिय।
पिक—कोकिल, कोयल।
पिङ्ग—पीला, पीलापन लिये भूरा। (२) तामड़ा, भूरापन लिये लाल।
पिङ्गल—पीला, पीतरङ्ग, पियर। (२) पिङ्ग, भूरापन लिये लाल रङ्ग, तामड़ा। (३) छन्दःशास्त्र, वह ग्रन्थ जिसमें छन्द रचना के नियम वर्णन हों।
पिङ्गला—एक वेश्या का नाम जिसकी कथा भागवत में इस प्रकार है। विदेह नगर में पिङ्गला नाम की एक वेश्या रहती थी। एक दिन एक सुन्दर युवा पुरुष जो अत्यन्त धनी था उसने रात में उसके यहाँ आने को कहा, पर वह आया नहीं। रात भर पिङ्गला उसी की चिन्ता में पड़ी रही और सबेरा हो गया। उसको अपनी नासमझी पर बड़ी घृणा हुई सोचा कि आशा ही सारे दुःखों की मूल है। जिन्हों ने सब प्रकार की आशा छोड़ दी वे ही सुखी हैं। ऐसा सोच कर उसने भगवान् के चरणों में चित्त लगाया, और अन्त में हरि कृपा से मोक्ष को प्राप्त हुई। महाभारत में भी जहाँ भीष्म ने युधिष्ठिर को धर्म का उपदेश किया है वहाँ इस पिङ्गला वेश्या का उदाहरण दिया है।
पिञ्जरा—पिञ्जर, पिँजड़ा, पीँजरा। (२) पञ्जर, शरीर के भीतर का हड्डियों का ठट्टर। (३) पीला, पीतवर्ण।
पिण्ड—श्राद्ध, पिण्डा, खीर आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है। (२) गोला, कोई गोल वस्तु। (३) शरीर, तनु, देह। (४) भोजन, आहार, जीविका। (५) राशि, समूह, ढेर। (६) गन्धाविरोजा, गन्धरस।
पिण्डोदक—श्राद्ध-तर्पण, पिण्डा-पानी।
पिता, पितु—जनक, बाप, जन्म देकर पालन पोषण करनेवाला।
पिनाक—अजगव, शिवजी का धनुष जिसे रामचन्द्र जी ने जनकपुर में तोड़ा था। (२) त्रिसूल, शूल, एक अस्त्र का नाम।
पिपीलिका—चींटी, चिउँटी, एक प्रकार की कीड़ी, इसमें यह विशेष गुण होता है कि चीनी और बालू एक में मिला कर इसके सामने रख दी जाय तो चीनी को सुगमता से ग्रहण कर लेगी और धूल को त्याग देगी। यह चीनी शक्कर आदि मीठे की परम प्रेमिणी होती है।
पिय—स्वामी, पति, भर्त्तार, शौहर। (२) प्यारा, प्रिय, प्रीतम।
पियत—पान करता, अँचवता, पीता।
पियाउ—पिआउ, पिलाओ।
पियारे—प्यारे, प्रीतम, स्नेही।
पियास—प्यास, तृषा, पिपासा।
पियासा—प्यासा, तृषित, जिसे प्यास लगी हो।
पियूष—अमृत, सुधा, अमी। (२) दूध, पय, क्षीर। (३) पानी, जल, नीर।
पिरातो—पिराता, पीड़ा करता, दर्द होता।
पिरानो—पीड़ा किया, पिराना, दर्द हुआ।
पिरीते—प्रियतम, प्यारा, प्रिय। (२) प्रीतियुक्त, स्नेहसहित।
पिवत—पियत, पान करता है।
पिशाच—भूत, प्रेत, शैतान, ये देवताओं में हीनकोटि के यक्षों और राक्षसों से अधम अशुचि तथा गन्दे कहे गये हैं।
पिशाची—पिशाचिनी, पिशाच की स्त्री, चुड़इल, डाइन। (२) जटामासी, मांसी।
पिशुन—चुग़लखोर, चुग़ली करनेवाला, एक की बुराई दूसरे से करके भेद डालनेवाला। (२)

खल, दुर्जन, दुष्ट। (३) कुङ्कुम, केसर, लोहित। (४) काक, काग, कौआ। (५) तगर वृक्ष।
पी—पति, भर्त्ता, स्वामी। (२) प्रिय, प्यारा, प्रीतम। (३) पियो, पान करो।
पीछे—पश्चात्, पीठ की ओर।
पीटि—मार कर, चोट पहुँचा कर।
पीठ, पीठि—पृष्ठ, पेट का उलटा पीछे का भाग। (२) पीढ़ा, चौकी, आसन, लकड़ी या पत्थर आदि का बना बैठने का आधार। (३) राजासन, सिंहासन, तख़्त।
पीड़त—पीड़ा करना, वेदना पहुँचाना।
पीड़ित—पीड़ा युक्त, दुःखित, व्यथित। (२) रोगी, रुजी, बीमार। (३) दलमलित, दबाया हुआ। (४) उच्छिन्न, नष्ट किया हुआ।
पीत—पीतवर्णयुक्त, पीला, पियर। (२) पिया हुआ, जिसका पान किया गया हो। (३) पिङ्ग, कपिल, भूरे रंग का। (४) हरिचन्दन, श्रीखण्ड। (५) हरताल, पीतक।
पीतपट, पीताम्बर—पीले रंग का वस्त्र, पीला कपड़ा। (२) पीली रेशमी धोती, वर्तमान में लाल, हरी, नीले आदि रंगों की रेशमी धोतियाँ पीताम्बर कहलाती हैं।
पीन—स्थूल, पुष्ट, मोटा। (२) स्थूलता, पुष्टता, मोटाई। (३) सम्पन्न, भरा पूरा।
पीनता—स्थूलता, पुष्टता, मोटाई।
पीय—पिय, पति, भर्त्ता। (२) प्रिय, प्यारा, प्रीतम। (३) पान करने की क्रिया, पीना, अँचवना।
पीयूष—'पियूष' अमृत, सुधा। (२) धारोष्ण दुग्ध, पय, क्षीर। (३) पानी, जल।
पीर—पीड़ा, दुःख, दर्द, तकलीफ़। (२) सहानुभूति, हमदर्दी, दया। (३) प्रसव की पीड़ा।
पीरकारक—पीड़ा करनेवाला, क्लेशकारी।
पीरा—पीड़ा, दुःख, दर्द।
पील—(फ़ारसी)। हस्ति, गज, हाथी। (२) शतरञ्ज का एक मोहरा जो तिरछे चलता और मारता है।
पीवत—पीता है, पान करता है।
पीसत—'पीसना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप, कुचलता है, चूर चूर करता है। (२) ध्वंस करता है, नाश करता है।
पुकार—हाँक, टेर, किसी का नाम लेकर बुलाने की क्रिया या भाव। (२) गोहार, दुहाई, सहायता के लिये बुलाना, मदद के लिये दी हुई आवाज। (३) माँग की चिल्लाहट, गहरी माँग।
पुकारत—'पुकारना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप, पुकारता है, बुलाता है। (२) नाम का उच्चारण करता है, टेरता है, धुन लगाता है। (३) चिल्लाकर कहता है, घोषित करता है।
पुङ्गव—श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दर। (२) वृषभ, बैल, बरधा।
पुजाइ—आराधना कराकर, पूजा लेकर, सम्मानित होकर। (२) पूरा करके, सम्पन्न करके।
पुजाइये—पूजा कराइये, आराधना कराइये। (२) पूर्ण कराइये, सम्पन्न कीजिये।
पुञ्ज—राशि, ढेर, गाँज।
पुण्डरीक—श्वेतपद्म, सफ़ेद कमल। (२) कमल, पङ्कज, कञ्ज। (३) बाघ, शेर, नाहर। (४) अग्नि कोण के दिग्गज का नाम, सफ़ेद हाथी। (५) अग्नि, पावक, आग।
पुण्य—धर्मविहित, शुभ, सुकृत, अच्छा, भला। वह कर्म जिसका फल शुभ हो। (२) सुन्दर, मनोहर, रमणीय। (३) पवित्र, पुनीत, पावन।
पुनि—पुनः, फिर, दोबारा। (२) अनन्तर, उपरान्त, पीछे।
पुनीत—पवित्र, शुद्ध, पाक।
पुनीतता—पवित्रता, शुद्धता, निर्मलता।
पुर—नगर, शहर, कसबा। (२) गाँव, पुरवा, छोटी बस्ती। (३) शरीर, देह, तनु। (४) घर, आगार, मकान। (५) लोक, भुवन। (६) गुग्गुल, गूगुल। (७) दुर्ग, किला, गढ़। (८) पूर्ण, भरपूर, भरा हुआ। (९) एक दैत्य का नाम जिसका संहार शिवजी ने किया था।
पुरजन—पुर के लोग, गाँव के मनुष्य।
पुरट—सुवर्ण, कञ्चन, सोना।
पुरन्दर—'इन्द्र' मघवा, देवराज।
पुरबासी—पुरजन, नगर के लोग, ग्रामबसेरी।

पुराण—प्राचीन, पुरातन, पुराना। (२) प्राचीन आख्यान, पुरानी कथा, हिन्दुओं के धर्म सम्बन्धी कथा के ग्रन्थ जिनमें सृष्टि, लय, प्राचीन ऋषियों, मुनियों और राजाओं के वृत्तान्त आदि रहते हैं। पुराण अठारह हैं, उनके नाम ये हैं—विष्णु, पद्म, ब्रह्म, शिव, भागवत, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त्त, लिङ्ग, वाराह, स्कन्द, बावन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, ब्रह्माण्ड और भविष्य।

पुरातन—प्राचीन, पुराना।

पुरान—'पुराण' पुरानी कथा के ग्रन्थ। (२) प्राचीन, पुरातन, पुराना।

पुरारि—शिव, शङ्कर, पुर दैत्य के बैरी।

पुरी—नगरी, पत्तन, शहर। (२) जगन्नाथ पुरी, पुरुषोत्तम धाम। (३) गोसाँइयों की एक उपाधि।

पुरीष—विष्टा, मैला, पाखाना।

पुरुष—मनुष्य, पुमान्, आदमी। (२) आत्मा, जीव, चेतन। (३) विष्णु, नारायण। (४) सूर्य्य, भानु। (५) शिव, महादेव। (६) पुन्नाग का वृक्ष, नागकेसर। (७) पति, स्वामी। (८) पारा, पारद। (९) गुग्गुल, गूगुल। (१०) व्याकरण में सर्वनाम और तदनुसारिणी क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे यह निश्चय होता है कि सर्वनाम वा क्रियापद वाचक के लिये प्रयुक्त हुआ है। जैसे, 'मैं' उत्तम पुरुष हुआ, 'वह' प्रथम पुरुष और 'तुम' मध्यम पुरुष।

पुरुषारथ, पुरुषार्थ—पौरुष, पराक्रम, उद्यम। (२) सामर्थ्य, शक्ति, बल, पुरुषत्व। (३) पुरुष के उद्योग का विषय, पुरुष का धर्म। (४) अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। (५) साहस, हिम्मत, दिलेरी।

पुरुषोत्तम—पुरुषश्रेष्ठ, उत्तम पुरुष। (२) विष्णु, केशव, हरि। (३) मलमास का महीना।

पुलक—रोमाञ्च, प्रेम हर्ष आदि के उद्वेग से रोमकूपों का प्रफुल्ल होना।

पुलकित—रोमाञ्चित, गद्गद, हर्ष से जिसके रोएँ फूल आये हों। प्रेम की दशा।

पुष्ट—दृढ़, पक्का, मज़बूत। (२) बलिष्ठ, तैयार, मोटाताजा। (३) बलवर्द्धक, पुष्टई लानेवाला।

पुष्पक—इस वायुयान का आकार हंस की जोड़ी के समान है। स्फटिकमणि का श्वेतवर्ण और भीतर की बनावट बड़ी अद्भुत मनोहर है। इस पर मनमाने लोग सवार होते तो भी जगह की कमी नहीं होती है और इच्छानुसार गमन करता है। इसके स्वामी कुवेर हैं किन्तु रावण ने जोरावरी से छीन लिया था। रामचन्द्र जी ने रावण का वध करके कुवेर को पुष्पक विमान लौटा दिया तब से वह कुवेर के पास है। (२) पुष्प, फूल।

पुष्पकारूढ़—पुष्पकारोही, पुष्पक विमान पर सवार।

पुहुमि—'पृथ्वी' पुहुमी, धरती।

पुत्र—तनय, आत्मज, सूनु, सुवन, सुत, बेटा, लड़का। पुत्र शब्द की व्युत्पत्ति के लिये यह कल्पना की गई है कि जो पितरों को पुन्नाम नरक से उद्धार करे उसकी संज्ञा पुत्र है। मनुजी ने बारह प्रकार के पुत्र कहे हैं—औरस, क्षेत्रज, दत्तक, कृत्रिम, गूढ़ोत्पन्न, अपविद्ध, कानीन, सहोढ़, क्रीत, पौनर्भव, स्वयंदत्त और शौद्र।

पुत्रिका—पुत्री, कन्या, बेटी, लड़की। (२) मूर्त्ति, गुड़िया, कपड़े की बनी स्त्री की आकृति। (३) कठपुतली, लकड़ी की बनी हुई लड़की वा स्त्री की मूर्त्ति (४) स्त्री का चित्त, औरत की तसवीर।

पूछिये, पूँछिये—जिज्ञासा कीजिये, प्रश्न कीजिये, दरियाफ़्त कीजिये।

पूजत—'पूजना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। पूजता है, आराधन करता है। (२) पूरा होता है, पटता है, समाप्त होता है।

पूजन—अर्चन, आराधन, पूजा की क्रिया, देवता की सेवा और वन्दना।

पूजनीय—आराध्य, अर्चनीय, पूजने योग्य, जिसकी पूजा करना कर्त्तव्य या उचित हो। (२) आदरणीय, सम्माननीय, सत्कार करने योग्य।

पूजा—अर्चना, आराधन, उपासना, ईश्वर या किसी देवी देवता के प्रति श्रद्धा, सम्मान, विनय

और समर्पण का भाव प्रगट करने का कार्य्य। (२) आदर,सत्कार, ख़ातिर। (३) पूर्ण हुआ, समाप्त हुआ, पूरा हुआ।

पूजि—अर्चना करके, आराधन कर, पूजा करके। (२) पूर्ण कर, समाप्त करके, इति कर।

पूजिआई—पूर्ण हुई, पूरी पड़ी, पर्याप्त हुई।

पूजित—अर्चित,आराधित,जिसकी पूजा की गई हो।

पूजोपहार—(पूजा+उपहार), अर्चन के लिये भेंट-जैसे—चन्दन,पुष्प,धूप,दीप और नैवेद्य इत्यादि।

पूज्य—पूजनीय, अर्चनीय, पूजा के योग्य। (२) माननीय, आदरणीय, सत्कार के योग्य। (३) श्वसुर, ससुर।

पूत—पवित्र, शुद्ध, पुनीत। (२) पुत्र, बेटा, लड़का। (३) सत्य, सच्चा, यथार्थ। (४) उत्पन्न, उपजा, पैदा। (५) निस्तुष अन्न, वह अनाज जिसकी भूसी निकाल दी गई हो। (६) शङ्ख, कम्बु, दर। (७) पलास, छीउल, परसा।

पूतना—एक दानवी जो कंस के भेजने से श्रीकृष्ण-चन्द्र को मारने के लिये गोकुल में आई थी। इसने अपने स्तनों में विष लगा लिया था जिसमें शिशु श्रीकृष्ण दूध पीते ही मर जाँय। बालक श्रीकृष्णचन्द्र ने उसके छल का पलटा इस प्रकार दिया कि रक्त चूस कर उसे मार डाला और उन पर विष का भाव कुछ भी नहीं पड़ा। (२) बालकों की ग्रहबाधा, बालरोग। (३) पीली हड़, पकी हुई हर्रें। (४) गन्धमासी, गन्धद्रव्य।

पूतरो—पुतला, पुतरा, लकड़ी मिट्टी धातु कपड़े आदि का बना हुआ पुरुष का आकार या मूर्त्ति जो खेल के लिये बनी हो। विशेषतः भाट जिसके यहाँ कुछ नहीं पाते हैं उसके नाम का एक पुतला बाँस में बाँध कर घूमते हैं और उसे कञ्जूस कह कर गालियाँ देते हैं।

पूति—पवित्रता, शुद्धता, निर्मलता। (२) गन्ध, महँक, खुशबू।

पूनो—पूर्णिमा, पूर्णमासी, शुक्लपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि।

पूर—'पूर्ण' समाप्त, पूरा। (२) जलप्रवाह, बाढ़, बढ़ियार। (३) व्रण संशुद्धि, घाव पूर्ण होना या भरना।

पूरण—पूरक, पूरा करनेवाला, समाप्त करनेवाला। (२) समाप्त, पूरा, ख़तम। (३) पूर्ण करने की क्रिया, तमाम करने का भाव। (४) सेतु, पुल।

पूरत—'पूरन' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। पूरा करता है। (२) पूरा पड़ता है।

पूरन—'पूर्ण' समस्त, सब।

पूरब—'पूर्व' प्राची दिशि। (२) पहले, पेश्तर।

पूरि—पूरा करके, पूर्ण कर, समाप्त कर। (२) पूरा, यथेच्छ, काफ़ी।

पूर्ण—परिपूर्ण, पूरित, पूरा, भरा हुआ। (२) अभाव, शून्य, जिसे कोई इच्छा न हो। (३) आप्तकाम, परितृप्त, जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो। (४) यथेष्ट, भरपूर, काफी। (५) सम्पूर्ण, समस्त, सब।

पूर्णानन्द—(पूर्ण+आनन्द), भरपूर प्रसन्नता। (२) ईश्वर, परमात्मा।

पूर्व—प्राची, पूरब, पूरुब दिशा, जिस ओर सूर्य्योदय होता है। (२) पहले का, आगे का, अगला। (३) पीछे का, पेश्तर का, पिछला। (४) प्राचीन, पुराना, पुरान। (५) प्रथम, पहले।

पृथक्—भिन्न, अलग, जुदा।

पृथवी—'पृथ्वी' धरती, ज़मीन।

पृथ्वी—अचला, अदिति, अनन्ता अवनी, आद्या, इड़ा, इरा, इला, उर्वरा, उर्वी, काश्यपी, कु, गो, गोत्रा, जगती, ज्या, धरणी, धरती, धरा, धरित्री, धात्री, निश्चला, पारा, भू, भूमि, महि, मही, मेदिनी, रत्नगर्भा, रत्नावती, रसा, वसुधा, वसुन्धरा, वसुमती, विपुला, श्यामा, सहा, स्थिरा, दमा, क्षमा, क्षिति, क्षोणी, भुइँ, भुइयाँ, ज़मीन, पृथवी, पञ्चतत्वों में से एक जिसका प्रधान गुण गन्ध है। (२) कृष्णजीरक, स्याहजीरा। (३) हींग, कवरी।

पृष्ठ—पीठ, पीछे का भाग, पीछा। (२) पुस्तक का पत्रा, पन्ना।

पृष्ठोपरि—(पृष्ठ+ऊपरि,) पीठ पर।

पेखत—'पेखना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप, देखता है, निहारता है।

पेखन—अवलोकन, चितवन, देखना । (२) दृश्य, खेल, तमाशा ।

पेट—उदर, तुन्द, शरीर का वह भाग जिसमें पहुँच कर भोजन पचता है । (२) गर्भ, हमल ।

पेम—प्रेम, स्नेह, प्रीति ।

पेरि—पेर कर, पीस कर, दबा कर ।

पेरो—पेरा, दबाया, पीसा, दो भारी और कड़ी वस्तुओं के बीच में कोई तीसरी चीज़ डाल कर इस प्रकार दबाना कि उसका रस निकल आवे । (२) कष्ट दिया, बहुत सताया । (३) प्रेरणा किया, पठाया ।

पै—पर, परन्तु, लेकिन । (२) निश्चय, अवश्य, ज़रूर । (३) अनन्तर, पीछे, बाद । (४) समीप, निकट, पास । (५) प्रति, ओर, तरफ़ । (६) पर, ऊपर (७) दोष, ऐब । (८) दूध, पय । (९) पानी, जल, नीर ।

पैज—पराक्रम, बल, जोर । (२)प्रतिज्ञा, प्रण, काल। (३) प्रतिद्वन्दिता, रीस, होड़ ।

पैठि—प्रविष्ट होकर, प्रवेश करके, घुस कर ।

पैयत—पाता हूँ, मिलता है।

पोच—निकृष्ट, तुच्छ, क्षुद्र, नीच, अधम, बुरा । (२) अशक्त, क्षीण, हीन ।

पोत—शिशु, बालक, बच्चा । (२) वह गर्भस्थ पिंड जिस पर झिल्ली न चढ़ी हो । पशु पक्षी आदि का छोटा बच्चा । (३) दस वर्ष का हाथी का बच्चा । (४) नौका, नाव, जहाज़ । (५) पारी, ओसरी, दाँव । (६) प्रवृत्ति, ढङ्ग, ढब । (७) भूकर, लगान, मालगुज़ारी ।

पोथा—पुस्तक, पुस्तिका, किताब ।

पोलो—पोपला, खोखला, सारहीन, जिसका भीतरी भाग खाली पोल हो ।

पोष—'पोषण'पुष्टि।(२)अभ्युदय,उन्नति,तरक्की।(३) आधिक्य,वृद्धि,बढ़ती।(४)सन्तोष,तुष्टि,तृप्ति।

पोषण—पालन, रक्षण, परवरिश । (२) वर्द्धन, वृद्धि, बढ़ती ।

पोषन—'पोषण' पालन ।

पोसु—'पोष' पोषण, पालन ।

प्यार—प्रेम, स्नेह, चाह, मुहब्बत ।

प्यारा—प्रेमपात्र, प्रिय, स्नेही, जिसे प्यार करें । (२) जो अच्छा लगे, जो भला मालूम हो ।

प्यास—तृषा, तृष्णा, पिपासा, जल पीने की इच्छा । (२) प्रबलकामना, किसी पदार्थ आदि की प्राप्ति की जोरदार ख़्वाहिश ।

प्यासा—तृषित, पिपासित, पिपासा युक्त ।

प्रकट—प्रत्यक्ष, प्रगट, जो सामने आया हो । (२) आविर्भूत, उत्पन्न, पैदा । (३) स्पष्ट, व्यक्त, खुला हुआ, ज़ाहिर ।

प्रकर्ष—उत्कर्ष, श्रेष्ठता, बड़ाई । (२) अधिकता, बहुतायत ।

प्रकार—भेद, क़िस्म, तरह । (२) सदृशता, समानता, बराबरी ।

प्रकाश—आभा, आलोक, दीप्ति, ज्योति, चमक, तेज, वह जिसके भीतर पड़ कर चीज़ें दिखाई पड़ती हैं । (२) उजाला, उँजियार अँजोर (३) विकाश, स्फुटन । (४) स्फुटित, विकसित, प्रफुल्ल । (५) प्रसिद्धि, ख्याति, जाहिरात । (६) स्पष्ट होना, खुलना, साफ़ समझ में आना । (७) घाम, धूप, रौदा । (८) प्रकट, प्रत्यक्ष, गोचर ।

प्रकाशी—प्रकाश करनेवाला, चमकता हुआ, वह जिसमें प्रकाश हो । (२) सूर्य्य । (३) दीपक ।

प्रकृति—स्वभाव,आदत, मिज़ाज,प्राणी की प्रधान प्रवृत्ति जो सहज में छूटनेवाली न हो । (२) माया, जगत का उपादान कारण, कुदरत, वह मूल शक्ति जिसका विकाश ब्रह्माण्ड मात्र है । (३) सत्य, यथार्थ, ठीक ।

प्रखर—तीक्ष्ण,प्रचण्ड, तीव्र, बहुत तेज, (२) चोखा, पैन, धारदार ।

प्रख्यात—प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर, जिसे सब लोग जानते हों । (२) प्रतिष्ठित, नामवर, इज़्ज़तदार ।

प्रगट—'प्रकट' प्रत्यक्ष, ज़ाहिर ।

प्रगल्भ—निर्भय, निडर, बेख़ौफ़। (२) निपुण, चतुर, होशियार। (३) प्रतिभाशाली, सम्पन्न बुद्धिवाला, अच्छा समझदार (४) उत्साही, साहसी, हिम्मती। (५) समय पर ठीक उत्तर देनेवाला, बोलने में सङ्कोच न रखनेवाला, हाजिरजवाब। (६) निर्लज्ज,धृष्ट, बेहया। (७) गम्भीर, भरापूरा। (८) प्रधान,प्रमुख,मुखिया। (९) उद्धत, अभिमानी, जिसमें नम्रता न हो।

प्रगाढ़—कठोर, कठिन, कड़ा। (२) बहुत अधिक, अत्यन्त घना, बड़ा गहरा।

प्रचण्ड—उग्र, प्रखर, बहुत तीखा। (२) प्रबल, अत्यन्तबली, बहुत अधिक वेगवान्। (३) भयङ्कर, भीषण, विकराल। (४) कठिन, दृढ़, मज़बूत। (५) असह्य, दुःसह, जो सहने योग्य न हो। (६) बृहद्, बड़ा, भारी। (७) प्रतापी, तेजस्वी, प्रतापवान। (८) अतिउष्ण, बहुत गरम। (९) महाक्रोधी, निहायत ग़ुस्सावर। (१०) शिवजी का एक गण।

प्रचलित—चलता हुआ, जारी, चलनसार, जिसका चलन हो।

प्रचार—चलन, रवाज, किसी वस्तु का निरन्तर व्यवहार। (२) प्रसिद्धि, ख्याति, जिसे सब जानते हों। (३) प्रकाश, विस्तार, फैलाव। (४) उत्तेजन, ललकार, चुनौती।

प्रचुर—विपुल, अधिक, बहुत। (२) तस्कर, चोर, भँड़िहा, वह जो चोरी करता हो।

प्रच्छन्न—आच्छादित, छिपा हुआ, ढँका हुआ। झरोखा, खिड़की।

प्रजा—रिआया, रैयत, वह जनसमूह जो किसी राजा के अधीन या एक राज्य के अन्तर्गत रहता हो। (२) सन्तान, सन्तति, औलाद। (३) भारतीय गाँवों में नाऊ, बारी, भाट, नट, कुम्हार, लोहार, चमार, धोबी, कहार इत्यादि गृहस्थों के कुछ ऐसे काम बिना तनखाह के करते हैं उन्हें साल में थोड़ी मजूरी दे दी जाती है वे प्रजा कहे जाते हैं।

प्रज्वलित—जलता हुआ, धधकता हुआ, दहकता हुआ। (२) अत्यन्त स्पष्ट, बहुत साफ, निहायत खुलासा।

प्रण—प्रतिज्ञा, किसी काम को करने के लिये किया हुआ अटल निश्चय। (२) प्राचीन, पुराना, पुतरान।

प्रणत—नम्र, दीन, विनीत। (२) बहुत झुका हुआ, प्रणाम करता हुआ। (३) सेवक, दास, किङ्कर। (४) भक्त, आराधक, उपासक। (५) प्रणाम करनेवाला, सिर झुकानेवाला। (६) शरणागत शरण में आया हुआ।

प्रणतपाल—दीन रक्षक, सेवक और भक्तजनों का पालन करनेवाला।

प्रणतानुकूल—दीनों के अनुकूल, शरणागतों की रक्षा करनेवाला।

प्रणति—प्रणाम, नमस्कार, दण्डवत्। (२) नम्रता, दीनता, विनीतता। (३) विनती, प्रार्थना, विनय।

प्रणय—प्रेम, प्रीति, स्नेह। (२) विश्वास, भरोसा, यतबार। (३) मोक्ष, निर्वाण, परमपद। (४) श्रद्धा, स्पृहा, आकांक्षा। (५) नम्रता, नवनि, दीनता।

प्रणव—ओङ्कार, ब्रह्मबीज, बीजमन्त्र। (२) त्रिदेव अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश।

प्रणाम—अभिवादन, नमस्कार, प्रनाम।

प्रणामी—प्रणाम करनेवाला।

प्रताप—पौरुष, वीरता, मरदानगी। (२) प्रभाव, तेज, इक़बाल, बल पराक्रम आदि महत्व का ऐसा प्रभाव जिसके कारण उपद्रवी या विरोधी शान्त रहें। (३) महत्व, महिमा, बड़ाई। (४) ताप, उष्णता, गरमी। (५) अर्क, मदार का पेड़। (६) रामचन्द्रजी के एक सखा का नाम।

प्रतापी—प्रतापवान, तेजस्वी, इक़बालमन्द। (२) दुःखदायी, सतानेवाला।

प्रति—एक उपसर्ग जो शब्दों के आरम्भ में लगाया जाता है और नीचे लिखे अर्थ देता है। (१) विरुद्ध, विपरीत। (२) सामने, सौंह। (३) बदले में, पलटे में। (४) हर एक, एकएक। (५) समान, सदृश। (६) जोड़ का, मुकाबिले का। (७) इसके अतिरिक्त कहीं कहीं यह उप-

सर्ग "ऊपर, अंश, अग्रभाग" आदि का भी अर्थ देता है। (८) सामने सन्मुख। (९) ओर, दिशि, तरफ़। (१०) प्रतिलिपि, नक़ल। (११) पुस्तक, पोथी, किताब।

प्रतिकार—प्रतीकार, बदला, वह कार्य्य जो किसी कार्य्य को रोकने, दबाने अथवा बदला चुकाने के लिये किया जाय। (२) चिकित्सा, इलाज। (३) उद्धार, छुटकारा। (४) वर्जन, निवारण।

प्रतिकूल—विपरीत, विरुद्ध, उलटा, खिलाफ़, जो अनुकूल न हो। (२) प्रतिपक्षी, विरोधी, वह जो विरोध या प्रतिकूलता करे।

प्रतिदिन—दिन दिन, रोज रोज।

प्रतिपाल—पोषक, रक्षक, पालन करनेवाला।

प्रतिपालक—पालनकर्त्ता, रक्षक, पालनेवाला।

प्रतिपालन—पालन, रक्षा करने की क्रिया या भाव। (२) निर्वाह, तामील।

प्रतिफल—परिणाम, फल, नतीजा। (२) बदला, वह कार्य जो किसी बात का बदला देने वा लेने के लिये किया जाय। (३) प्रतिबिम्ब, छाया, परछाहीं।

प्रतिबिम्ब—परछाहीं, छाया, छायाकृति। (२) प्रतिमा, मूर्त्ति, अनुकृति। (३) चित्र, तसवीर। (४) दर्पण, मुकुर, आइना (५) झलक, आभा।

प्रतिष्ठा—मानमर्यादा, गौरव, बड़ाई। (२) आदर, सम्मान, इज्ज़त। (३) स्थापना, प्रतिष्ठित करना, रक्खा जाना। (४) देवता की मूर्त्ति स्थापन करना, देव-स्थापन। (५) स्थान, जगह, ठौर। (६) प्रख्याति, प्रसिद्धि। (७) यश, कीर्त्ति, सुयश। (८) शरीर, देह। (९) पृथ्वी, धरती। (१०) यज्ञ की समाप्ति।

प्रतिहत—अवरुद्ध, रुका हुआ, अटका हुआ। (२) हतोत्साह, निराश, नाउम्मीद। (३) पतित, गिरा हुआ, लुढ़का हुआ। (४) अनादृत, तिरस्कृत, अपमानित। (५) फेंका हुआ, हटाया हुआ, दूर किया हुआ। (६) ध्वंस, नष्ट, नाश।

प्रतिज्ञा—'प्रण' भविष्य में कोई कर्त्तव्य पालन करने, कोई काम करने या न करने आदि के सम्बन्ध में दृढ़ निश्चय। वह दृढ़ता पूर्ण कथन या विचार जिसके अनुसार कोई कार्य्य करने या न करने का दृढ़ सङ्कल्प हो। किसी बात को अवश्य करने या कभी न करने के सम्बन्ध में वचन देना। (२) शपथ, सौगन्द, क़सम। (३) अभियोग, नालिश, अपराध की योजना।

प्रतीत—ज्ञात, विदित, जाना हुआ। (२) प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर। (३) प्रसन्न, आनन्दित, खुश। (४) प्रतीति, विश्वास, भरोसा।

प्रतीति—विश्वास, भरोसा, यक़ीन। (२) ज्ञान, समझ, जानकारी। (३) प्रसिद्धि, ख्याति, जाहिरात। (४) आनन्द, प्रसन्नता, खुशी। (५) आदर, सम्मान, सत्कार।

प्रत्यक्ष—जो देखा जा सके, जो आँखों के सामने हो। जिसका ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा हो सके। (२) प्रकट, प्रसिद्ध, जाहिर। (३) चार प्रकार के प्रमाणों में से एक प्रमाण जो सब से श्रेष्ठ माना जाता है।

प्रत्यूह—विघ्न, बाधा, अटकाव।

प्रथम—आदि का, पहला, अव्वल, जिसका स्थान गणना में सब से पहले हो। (२) सर्व श्रेष्ट, सब से अच्छा, श्रेष्टतर। (३) प्रधान, मुख्य, प्रमुख।

प्रद—दाता, देवैया, देनेवाला।

प्रदान—दान, बख़्शिश, देने की क्रिया। (२) विवाह, ब्याह, शादी। (३) अङ्कुस, आँकुस, हाथी को बस में रखने का औज़ार।

प्रदीप—दीपक, दिया, चिराग। (२) प्रकाश, उजाला, रोशनी।

प्रदेश—प्रान्त, सूबा, किसी देश का वह बड़ा विभाग जिसकी भाषा, रीतिव्यवहार, जलवायु, शासन पद्धति आदि उसी देश के अन्य विभागों की इन सब बातों से भिन्न हों। (२) स्थान, जगह, मुक़ाम। (३) अवयव, अङ्ग, गात्र।

प्रदोष—सन्ध्याकाल, सूर्य्य के अस्त होने का समय, साँझ। (२) बड़ा अपराध, भारी दोष, सख़्त ऐब। (३) खल, पाजी, दुष्ट।

प्रधान—मुख्य, प्रमुख, खास। (२) सर्वोच्च, श्रेष्ठ, सब से अच्छा। (३) सचिव, मन्त्री, वज़ीर।

(४) मुखिया, नेता, सरदार। (५) बुद्धि, समझ, अकल। (६) सेनाध्यक्ष, सेनापति, महापात्र। (७) ईश्वर, परमात्मा।

प्रपञ्च—संसार, सृष्टि, भवजाल। (२) संसारिक व्यवहारों का विस्तार, संसारी झञ्झट, दुनियाँ का जञ्जाल। (३) छल, आडम्बर, धोखा, ढोंग। (४) झगड़ा, बखेड़ा, झमेला।

प्रपञ्ची—प्रपञ्च रचनेवाला, छली, जालिया, धोखेबाज। (२) झगड़ालू, बखेड़िया, झगड़ा लगानेवाला।

प्रफुल्ल—प्रस्फुटित, विकसित, खिला हुआ, फूला हुआ। (२) प्रसन्न, आनन्दित, हँसता हुआ खुश। (३) कुसुमित, जिसमें फूल लगे हों।

प्रबन्ध—निबन्ध, लेख या अनेक सम्बद्ध पद्यों में पूरा होनेवाला काव्य। एक दूसरे से सम्बद्ध वाक्य रचना का विस्तार। (२) बन्धान, प्रकृष्ट बन्धन, बाँधने की डोरी आदि। (३) पूर्वापर सङ्गति, बँधा हुआ सिलसिला। (४) उपाय, यत्न, तदबीर।

प्रबल—बलवान, अत्यन्त बली, बड़ा जोरावर। (२) प्रचण्ड, उग्र, तेज। (३) भारी, वृहद, महान। (४) साहसी, हिम्मती, दिलेर।

प्रबोध—सान्त्वना, आश्वासन, ढाढ़स, तसल्ली, दिलासा। (२) यथार्थज्ञान, सम्यक्ज्ञान, पूर्ण बोध। (३) जागना, नींद से सचेत होना, सो कर उठना। (४) चेतावनी, सतर्क होने की सूचना।

प्रभञ्जन—पवन, वायु, हवा। (२) प्रचण्ड पवन, उग्र-वायु, आंधी। (३) नाश, उखाड़ पछाड़, तोड़ फोड़। (४) महाभारत के अनुसार मणिपुर के एक राजा का नाम।

प्रभव—उत्पत्तिकारण, उत्पत्ति हेतु, पैदाइश की वजह। (२) उत्पत्तिस्थान, जन्म लेने की जगह। (३) उत्पत्ति, जन्म, पैदाइश। (४) सृष्टि, संसार, दुनियाँ। (५) पराक्रम, बल, जोर। (६) जल का निर्गम स्थान, उद्गम, वह स्थान जहाँ से नदी आदि निकले। (७) साठ सम्बत्सरों में एक सम्बत्सर। (८) ज्ञान का प्रथम स्थान।

प्रभा—प्रकाश, दीप्ति, आभा, चमक। (२) ज्योति, उजाला, तेज। (३) छवि, शोभा। (४) सूर्य्य का बिम्ब, सूर्य्य की एक स्त्री का नाम।

प्रभाकार—'सूर्य्य,' दिवाकर, भानु।

प्रभात—प्रातःकाल, सबेरा, भिनसार।

प्रभाव—माहात्म्य, महिमा, बड़ाई। (२) सामर्थ्य, शक्ति, बल। (३) उद्भव, प्रादुर्भाव, आविर्भाव। (४) दबाव या साख, इतना अधिकार कि जो बात चाहे कर या करा सके। (५) परिणाम, असर, धाक। (६) प्रताप, तेज, इक़बाल।

प्रभु—स्वामी, मालिक, जिसके सहारे में जीवन निर्वाह होता हो। (२) अधिपति, नायक, वह जो अनुग्रह और दण्ड देने में समर्थ हो। (३) भगवान, ईश्वर, परमात्मा। (४) पति, भर्त्ता, ख़ाविन्द। (५) समर्थ, शक्तिशाली, बलवान।

प्रभुता—महत्व, बड़ाई, महिमा। (२) मालिकपन, प्रभुत्व, साहिबी। (३) शासनाधिकार, हुकूमत, शासन करने का अख़तियार। (४) वैभव, ऐश्वर्य्य।

प्रभुताई—'प्रभुता' बड़ाई, साहिबी।

प्रभुदासी—माया, प्रकृति, जगनिर्माण कर्त्री।

प्रमथ—शिवजी के एक प्रकार के पार्षद जिनकी संख्या ३६ करोड़ बताई जाती है। कालिका पुराण में लिखा है कि प्रमथों में से कुछ तो भोग विमुख योगी और त्यागी हैं, कुछ कामुक भोग परायण और शिवजी की क्रीड़ा में सहायक हैं। प्रमथगण बड़े मायावी होते हैं। (२) मथन या पीड़ित करनेवाला। (३) अश्व, बाजि, घोड़ा। (४) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

प्रमथराज, प्रमथाधिपति }—शिव, शङ्कर, ईशान।

प्रमदा—युवती स्त्री, कामिनी, प्रौढ़ा नायिका। (२) मालकङ्गनी, काकुन।

प्रमाण—वह बात जिससे कोई दूसरी बात सिद्ध हो। वह मुख्य हेतु जिससे ज्ञान हो। सबूत। (२) सत्यता, सचाई, यथार्थता। (३) निश्चय, दृढ़धारणा, यकीन। (४) मर्य्यादा, थाप, साख। (५) प्रामाणिक बात, मानने योग्य, विषय,

आदर की वस्तु । (६) निर्दिष्ट परिमाण, हद, अन्दाज़ । (७) शास्त्र, आगम, षट शास्त्र । (८) आदेशपत्र, प्रमाणपत्र । (९) सत्य, प्रमाणित, ठीक घटता हुआ । (१०) मान्य, स्वीकार योग्य, माना जानेवाला । (११) पर्यन्त, तक, अवधि सूचक शब्द । (१२ एक अलङ्कार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का कथन होता है। उनके नाम ये हैं—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, (परम्परा-प्रसिद्ध आत्मतुष्टि) अर्थापत्ति, सम्भव, अभाव (अनुपलब्धि) । अलङ्कार शास्त्रियों का इसमें बड़ा मतभेद है।

प्रमान—'प्रमाण' निश्चय, सबूत ।

प्रमुख—प्रधान, मुख्य, अगुवा । (२) प्रतिष्ठित, मान्य, श्रेष्ठ । (३) प्रथम, पहला, आदि । (४) सम्मुख, सामने, आगे । (५) समूह, भूरि, बहुत । (६) तत्काल, तुरन्त, उसी समय (७) इत्यादि, वगैरह इससे आरम्भ करके और और ।

प्रमुदित—हर्षित, आनन्दित, प्रसन्न ।

प्रमोद—हर्ष, आनन्द, सुख, प्रसन्नता ।

प्रयत्न—अध्यवसाय, चेष्टा, कोशिश, किसी उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये की जानेवाली क्रिया । (२) वर्णों के उच्चारण में होनेवाली क्रिया ।

प्रयाग—बहुत से यज्ञों का स्थान, जिस स्थान में असंख्यों बार यज्ञ हुआ हो । (२) तीर्थराज, हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गङ्गा यमुना के सङ्गम पर है । यह तीर्थ बहुत प्राचीन काल से प्रसिद्ध है और यहाँ के जल से पूर्वोत्पन्न राजाओं का अभिषेक होता था । इस बात का उल्लेख वाल्मीकि रामायण में है । यहाँ सरस्वती नदी का अप्रत्यक्ष सङ्गम माना जाता है इसी से इस तीर्थ को त्रिवेणी कहते हैं । ब्रह्मा ने गङ्गा तट पर यहाँ दस बार अश्वमेध यज्ञ किया था इसी से वह अबतक दसाश्वमेध घाट कहलाता है । अकबर बादशाह का बनवाया किला सङ्गम पर वर्तमान है जो अब ब्रिटिश गवर्नमेन्ट के कब्जे में है । मत्स्य पुराण के १०२ अध्याय से लेकर १०७ अध्याय तक प्रयाग माहात्म्य का वर्णन है । उसमें लिखा है कि प्रयाग प्रजापति का क्षेत्र है जहाँ गङ्गा और यमुना बहती हैं । साठ सहस्र वीर गङ्गा की और स्वयं सूर्य्य यमुना की रक्षा करते हैं । यहाँ जो वट है उसकी रक्षा स्वयं शूलपाणि करते हैं । पाँच कुण्ड हैं जिनमें से होकर जाह्नवी बहती हैं । माघ महीने में यहाँ सब तीर्थ आकर बास करते हैं इससे उस महीने में इस तीर्थ बास का बहुत फल है । सङ्गम पर जो लोग अग्नि द्वारा देह विसर्जित करते हैं। उनके जितने रोम हैं वे उतने सहस्र वर्ष स्वर्गलोक में बास करते हैं। यहाँ चोटी कखौरी और उपस्थ के बालों को छोड़ कर सर्वाङ्ग के बाल मुँड़वाने का बड़ा फल कहा गया है । मकर की संक्रान्ति भर सन्त समागम का अच्छा अवसर रहता है ।

प्रयास—परिश्रम, आयास, मेहनत । (२) प्रयत्न, उद्योग, कोशिश । (३) इच्छा, ख़्वाहिश ।

प्रयोजन—अभिप्राय, आशय, उद्देश्य, मतलब, गरज़ । (२) कार्य्य, अर्थ, काम । (३) उपयोग, व्यवहार, इस्तेमाल ।

प्रलय—विलीन होना, न रह जाना, लय को प्राप्त होना । (२) संसार का तिरोभाव, जगत के नाना रूपों का प्रकृति में लीन हो कर मिट जाना, भू आदि लोकों का न रह जाना । (३) मूर्च्छा, बेहोशी, गशी । (४) साहित्य में एक सात्विक अनुभाव जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने से पूर्व स्मृति का लोप हो जाता है ।

प्रलाप—निरर्थक वाक्य, व्यर्थ की बकवाद, अनाप शनाप बात, पागलों की सी बड़बड़ । (२) कहना, बकना, बड़ बड़ करना । (३) वियोगियों की दस दशाओं में एक दशा ।

प्रवर—श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा । (२) प्रधान, मुख्य, नायक । (३) गोत्र, गोत, परवर । (४) सन्तति, सन्तान, औलाद । (५) गोत्रप्रवर्त्तक मुनि । (६) अगर की लकड़ी ।

प्रवाह—जलस्रोत, पानी की गति, बहाव । (२)

धारा, नदी का वह बहता हुआ जल जो बीच में तीव्रगति से गमन करता है। (३) प्रवृत्ति, झुकाव, मन का किसी ओर लगाव। (४) व्यवहार, चलता हुआ काम, वह कारबार जो बराबर चलता रहे।

प्रवीण—निपुण, कुशल, दक्ष, चतुर, होशियार। (२) अच्छा गाने बजाने या बोलने वाला।

प्रवृत्ति—प्रवाह, बहाव, झुकाव। (२) वृत्तान्त, वार्ता, हाल। (३) संसारिक विषयों का ग्रहण, संसार के कामों में लगाव, दुनिया के धन्धे में लीन होना, निवृत्ति का उलटा। (४) उत्पत्ति, आरम्भ। (५) प्रवेश, पहुँच, पैठ। (६) इच्छा वाञ्छा, ख़्वाहिश।

प्रवेश—अन्तर्निवेश, पैठना, घुसना, भीतर जाना। (२) गति, पहुँच, रसाई। (३) किसी विषय की जानकारी।

प्रशस्त—प्रशंसनीय, सराहनीय, तारीफ़ करने लायक़। (२) भव्य, श्रेष्ठ, उत्तम। (३) सुन्दर, मनोहर, सुहावना। (४) विस्तृति, विस्तार युक्त, लम्बा चौड़ा।

प्रशस्ति—प्रशंसा, स्तुति, बड़ाई।

प्रशंसत—'प्रशंसन, शब्द का वर्तमान कालिक रूप। प्रशंसा करता है, बड़ाई करता है। (२) धन्यवाद देता है, साधुवाद देता है।

प्रशंसा—श्लाघा, स्तुति, गुण वर्णन, सराहना बड़ाई, तारीफ़।

प्रसङ्ग—मेल, सम्बन्ध, सङ्गति, लगाव। (२) बातों का परस्पर सम्बन्ध, अर्थ की सङ्गति, विषय का लगाव। (३) स्त्री प्रसङ्ग, स्त्री पुरुष का समागम। (४) वार्ता, विषय, बात। (५) उपयुक्त संयोग, अवसर, मौक़ा। (६) हेतु, कारण, वजह। (७) विस्तार, फैलाव, पसार। (८) अनुरक्ति, लगन। (९) प्रस्ताव, प्रकरण, विषयानुक्रम।

प्रसन्न—हर्षित, आनन्दित, ख़ुश। (२) निर्मल, स्वच्छ, साफ़। (३) अनुकूल, पक्षमें रहनेवाला मुआफ़िक़। (४) सन्तुष्ट, तुष्ट राज़ी।

प्रसन्नता—हर्ष, आनन्द, ख़ुशी। (२) निर्मलता, स्वच्छता, शुद्धि। (३) अनुग्रह, कृपा, प्रसाद। (४) सन्तोष, तुष्टि, तृप्ति।

प्रसव—प्रसूति, जनना, बच्चा जनने की क्रिया। (२) उत्पत्ति जन्म, पैदाइश। (३) सन्तान, अपत्य, बच्चा। (४) फल, वनस्पति में होनेवाला गूदे से परिपूर्ण बीज-कोश जो फूल आने के बाद उत्पन्न होता है। (५) सुमन, पुष्प, फूल। (६) वृद्धि, उन्नति, बढ़ती। (७) विकाश, निकास।

प्रसाद—कृपा, अनुग्रह, मिहरबानी। (२) प्रसन्नता, हर्ष, ख़ुशी। (३) निर्मलता, स्वच्छता, सफाई। (४) स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती। (५) वह वस्तु जो देवता को चढ़ाई जाय। (६) वह पदार्थ जिसे देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों को दें। (७) देवता, गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम में लाई जाय। (८) भोजन, रसोई। (९) काव्य का एक गुण। (१०) शब्दालङ्कार के अन्तर्गत एक वृत्ति, कोमला वृत्ति।

प्रसिद्ध—विख्यात, ख्यात, मशहूर। (२) अलंकृत, भूषित, सजा हुआ। (३) यशस्वी, कीर्त्तिवान, नामवर।

प्रसिद्धि—विख्याति, ख्याति, मशहूरी। (२) शृङ्गार, भूषा, बनाव।

प्रसून—पुष्प, सुमन, फूल। (२) उत्पन्न, जात, पैदा। (३) वृक्षादि के फल।

प्रहलाद—'प्रह्लाद' हिरनकशिपु का पुत्र।

प्रह्लाद—आमोद, आनन्द, अत्यन्त ख़ुशी। (२) एक दैत्य जो राजा हिरण्यकशिपु का पुत्र था। प्रह्लाद बचपन ही से बड़े भगवद्भक्त थे। हिरण्यकशिपु ने इनको ईश्वर की भक्ति से विचलित करने के लिये अनेक प्रयत्न किये और बहुत कष्ट पहुँचाया पर वे विचलित नहीं हुए। अन्त में दैत्य प्रहलाद को पत्थर के खम्भे से बाँध कर खड्ग लेकर मारने को उद्यत हुआ, तब भगवान ने नरसिंह रूप धारण कर हिरण्यकशिपु का संहार करके भक्त प्रहलाद की रक्षा की।

प्रहलाद के पुत्र विरोचन और विरोचन के पुत्र राजा बलि थे ।

प्रहार—आघात, चोट, मार, वार । (२) मारना, चोट पहुँचाना, वार करना ।

प्रहारी—प्रहार करनेवाला, मारनेवाला । (२) नष्ट करनेवाला, चूर चूर करनेवाला ।

प्रज्ञा—बुद्धि, धी, मनीषा । (२) ज्ञान, विवेक, विचार । (३) सरस्वती, शारदा, वाणी ।

प्राकृत—प्रकृति सम्बन्धी, प्रकृति से उत्पन्न । (२) साधारण, मामूली, सामान्य । (३) स्वाभाविक, नैसर्गिक, कुदरती । (४) संसारी, लौकिक, लोक में होनेवाली बात । (५) नीच, पामर, अधम । (६) भौतिक, भूत प्रेत सम्बन्धी या जीवजन्तु सम्बन्धी ।

प्राचीन—पुरातन, पुराना, जो पूर्वकाल में उत्पन्न हुआ हो, पिछले ज़माने का । (२) जो पूर्व देश में उत्पन्न हुआ हो, पूरब का ।

प्राण—पवन, वायु, हवा । (२) जीव, जीवन तत्व, जान । (३) शक्ति, पराक्रम, बल । (४) श्वास, साँस, दम । (५) परमप्रिय, वह जो प्राणों के समान प्यारा हो । शरीर की वह वायु जिससे मनुष्य जीवित रहता है । इसके दस भेद हैं, उन में पाँच मुख्य हैं—प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान ।

प्राणनाथ, प्राणपति—प्रियतम, प्यारा । (२) पति, भर्त्ता, शौहर ।

प्रात—प्रतःकाल, सबेरा, भोर ।

प्रान—'प्राण' जीवनतत्व, जीव ।

प्राप्त—लब्ध, प्रस्थापित, मिला हुआ । (२) उत्पन्न, उपजा, पैदा हुआ । (३) समुपस्थित, विद्यमान, मौजूद ।

प्राप्ति—उपलब्धि, लाभ, मिलना । (२) अधिगम, अर्जन, उपार्जन, पैदा करना । (३) प्रवेश, पहुँच, पैठ । (४) उदय, निकलना, प्रगट होना । (५) आठ सिद्धियों में से एक । (६) आय, आमदनी ।

प्राप्य—प्राप्तव्य, पाने योग्य, प्राप्त करने योग्य । (२) गम्य, जो पहुँच में हो, जिस तक पहुँच हो सकती हो । (३) जो मिल सके, मिलने योग्य ।

प्राज्ञ—बुद्धिमान, समझदार, चतुर । (२) विज्ञ, विद्वान, पण्डित । (३) मूर्ख, बेवकूफ ।

प्रिय—वल्लभ, प्यारा, जिससे प्रेम हो । (२) मनोहर, सुहावना, जो भला जान पड़े । (३) स्वामी, पति, मालिक । (४) कन्या का पति, जामाता, दामाद । (५) हित, कल्याण, भलाई ।

प्रियतम—सब से अधिक प्यारा, प्राणों से भी बढ़ कर प्रिय । (२) पति, स्वामी, मालिक ।

प्रीत—प्रीतियुक्त, 'प्रीति' प्रेम ।

प्रीतम—'प्रियतम' । (२) पति, भर्त्ता, स्वामी ।

प्रीति—प्रेम, स्नेह, मुहब्बत । (२) हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता । (३) तृप्ति, वह सुख जो किसी इष्ट वस्तु के देखने या पाने से होता है ।

प्रेत—पिशाचों की तरह एक कल्पित देवयोनि जिसके शरीर का रङ्ग काला, शरीर के रोम खड़े और स्वरूप बड़ा विकराल कहा जाता है । भूतप्रेत । (२) मृतक प्राणी, मरा हुआ मनुष्य । (३) पुराणानुसार वह कल्पित शरीर जो मनुष्य को मरने के उपरान्त प्राप्त होता है । (४) नरक में रहनेवाला प्राणी । (५) बहुत ही चालाक और कञ्जूस आदमी ।

प्रेतपावक—लुक, शहाब, वह प्रकाश जो प्रायः दल-दलों, जङ्गलों या क़ब्रिस्तानों में रात के समय चलता हुआ दिखाई पड़ता है और जिसे लोग भूतों तथा पिशाचों की लीला समझते हैं । (२) चिता की अग्नि, वह आग जिस में मुर्दा जलता है । शास्त्रों में चिता की अग्नि अन्य किसी कार्य्य के योग्य नहीं कही गई है । गोस्वामीजी ने धन की समता प्रेतपावक से इसी लिये दी है कि जैसे चिता की अग्नि छू जाने से शरीर को अपवित्र करती है और जलाती है पर उससे कोई काम नहीं निकलता । उसी प्रकार धन प्राणियों को मिलने पर मतवाल बना देता है और न रहने पर बुरे से बुरा कर्म कराने को प्रेरित करता है ।

प्रेम—अनुराग, स्नेह, प्रीति, मुहब्बत, वह भाव जिसके अनुसार किसी दृष्टि से अच्छी जान पड़नेवाली किसी चीज़ या व्यक्ति को देखने, पाने, भोगने, अपने पास रखने अथवा रक्षित करने की इच्छा हो।

प्रेरक—प्रेषित करनेवाला, भेजनेवाला, पठानेवाला। (२) प्रेरणा करनेवाला, उत्तेजना देने या दबाव डालनेवाला, किसी काम में प्रवृत करनेवाला। (३) आज्ञा देनेवाला, हुकूमत करनेवाला।

प्रेरित—प्रेषित, प्रचालित, जो किसी कार्य्य के लिये प्रेरित या नियुक्त किया गया हो। भेजा हुआ। (२) ढकेला हुआ, धक्का दिया हुआ। (३) आज्ञा किया हुआ।

प्रेक्ष्य—दर्शन के योग्य, देखने लायक। (२) दर्शन देनेवाला, दिखाई देनेवाला।

प्रौढ़—जिसकी अवस्था अधिक हो, चली हो जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। (२) प्रवृद्ध, अच्छी तरह बढ़ा हुआ। (३) दृढ़, पुष्ट, पक्का, मजबूत। (४) निपुण, चतुर, होशियार।

प्लव—दादुर, भेक, मेढक,। (२) बन्दर, कपि, कीश। (३) शब्द, बोल, आवाज। (४) कुक्कुट, मुरगा। (५) शत्रु, दुश्मन। (६) स्नान, नहाना। (७) अन्न, अनाज। (८) भेड़।

प्लवग—वानर, मर्कट, बन्दर। (२) दादुर, भेंघा, मेढक। (३) सूर्य का सारथी। (४) हरिन।

(फ)

फ—हिन्दी वर्णमाला का बाइसवाँ व्यञ्जन और पवर्ग का दूसरा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान ओठ है। (२) कटुवाक्य, रूखावचन, दुतकार। (३) निष्फल भाषण, वृथावार्त्ता। (४) यज्ञसाधन। (५) फुफकार। (६) अन्धड़।

फटत—'फटना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। फटता है, चिरता है, खंड खंड होता है।

फन—फण, फैला हुआ साँप का मस्तक जब वह गर्दन की नलियों में वायु भर कर उसे फैलाता है।

फनि—फणि, सर्प, साँप।

फन्द—पाश, बन्ध, बन्धन, फन्दा। (२) जाल, फाँस। (३) छल, धोखा। (४) दुःख, कष्ट। (५) रहस्य, मर्म, गुप्तभेद।

फबि—छबि, शोभा, फबन।

फबिआयो—शोभा देता आया, फबता आया, सुहाता आया।

फर—'फल'। (२) लाभ। (३) कर्म भोग।

फरत—'फरना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। फलता है, फल देता है।

फरन—फलनेवाला। (२) फल शब्द का बहुवचन, समूह फल।

फरित—फलित, फला हुआ।

फरु—फल, फर।

फल—वनस्पतियों में होनेवाला गूदे से परिपूर्ण बीजकोश जो फूलों के बाद उत्पन्न होता है। जैसे आम का फल, कटहल का फल इत्यादि। (२) लाभ, फायदा। (३) परिणाम, हेतु, नतीजा। (४) प्रतिफल, प्रतीकार, बदला। (५) कर्मभोग, कर्म का परिणाम जो दुःख सुख है। (६) गुण, प्रभाव। (७) अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चारों फल। (८) फर, नोक, भाले आदि की गाँसी। (९) फाल, फार, हल में नीचे लगनेवाला लोहा। (१०) चर्म, ढाल। (११) मूल का व्याज, सूद। (१२) प्रयोजन, मतलब। (१३) सन्तति, सन्तान, औलाद। (१४) पुरस्कार, इनाम। (१५) सुवर्ण, सोना। (१६) जातीफल, जायफल।

फलत—फलता है, फल देता है।

फलित—फला हुआ, फरित।

फहम—(अरबी) अनुमान, अटकल, कयास। (२) विचार, समझ, बुद्धि।

फाग—फगुवा, होली, वह त्योहार जो फाल्गुण की पूर्णिमा वा चैत्र कृष्ण की प्रतिपदा को होता है जिसमें लोग परस्पर गुलाल अबीर आदि रङ्ग डाल कर उत्सव मनाते हैं। (२) धमार राग जो फाल्गुण में गाया जाता है।

फाटत—फट जाता है, खंड खंड होता है ।
फारो—चीरा, फाड़ा, टुकड़े टुकड़े किया ।
फाँस—फन्दा,बन्धन, जाल । (२) काँटा,बाँस आदि की बाल के समान पतली नुकीली चुभनेवाली लकड़ी ।
फिर—पुनः, पुनि, पीछे, इसकेबाद ।
फिरत—'फिरना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप । घूमता है, डोलता है, चलता है ।
फिरिफिरि—पुनः पुनः, पुनिपुनि । (२) घूमिघूमि, चलिचलि, डोलिडोलि ।
फीकी, फीको }—स्वादुहीन, नीरस, बेमजा । (२) अनसुहाता,चित्त से उतरा हुआ ।
फुर—प्रमाणित हो, सच हो, सही हो ।
फुल्ल—उत्फुल्ल, फूला हुआ, प्रसन्न, ख़ुश ।
फूँकि—फूँक कर,मुख से वायु निकाल कर किसी वस्तु को हवा देना । (२) भस्म करके, जला कर, फूँक कर ।
फूटे—छिन्नभिन्न हुए, बिखरे, टुकड़े हुए । (२) स्ववर्ग से भिन्न शत्रुपक्ष में मिलने का भाव ।
फूल—पुष्य,प्रसून,सुमन,सुमनस,कुसुम, पुहुप,गुल ।
फूलत—'फूलना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप । फूलता है, पुष्प लेता है ।
फेन—जलविकार, झाग । (२) समुद्रफेन, डिण्डीर, अब्धिकफ ।
फेर—तदनन्तर,पुनः,फिर । (२) घुमाव,चक्कर, दूरी ।
फेरु—शृगाल,सियार,गीदड़ । (२) किसी को लौटा लेने की आज्ञा ।
फेरे—लौटाये, घुमाये, वापस किये । (२) घुमाव, चक्कर, फेरा ।
फेरो—आनाजाना, घूमघाम, फेरा ।
फोकट—सेंतमेंत,बिना दाम कौड़ी का, मुफ़्त । (२) मिथ्या, सारहीन, झूठा ।

(ब)

ब—हिन्दी वर्णमाला का तेईसवाँ व्यञ्जन और पवर्ग का तीसरा अक्षर । इसका उच्चारण स्थान ओठ है । (२) पानी, जल । (२) कुम्भ, घट, घड़ा । (४) समुद्र, सागर, सिन्धु । (५) वरुण, पाशी, प्रचेता ।
बई—बोयी, वपी, बीज डाली ।
बक—'वक' बकुला ।
बकुल—'वकुल' मौलसिरी का वृक्ष ।
बक्यो—'वक्यो' बकवाद किया ।
बक्र—'वक्र' टेढ़ ।
बक्त्र—'वक्त्र' मुख, आनन ।
बखान—'वर्णन' सराहना, तारीफ़ । (२) कीर्त्तन, गुणगान, यश गाना ।
बगरि—फैलि, पसरि, छितराइ । (२) फेंकी हुई, बहाई, गिराई ।
बचन—'वचन' वाक्य, बोल ।
बचनानुसारी—'वचनानुसारी' कहने के अनुसार चलनेवाला ।
बचे—रक्षित हुए, बच गये । (२) शेष रहे, उबरे, बाकी बचे । (३) भिन्न हुए, छूटे, अलग हुए ।
बच्छ—'वत्स' बछड़ा । (२) प्रिय, प्यारा, स्नेही ।
बजत—'बजना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप । शब्द होता है,स्वर निकलता है, आवाज़ करता है । युद्ध करता है, लड़ता है, बाजता है ।
बजाइ—बजा कर, डंका देकर, पुकार कर । (२) युद्ध कराकर, लड़ाई कराकर ।
बज्र—'वज्र' बिजली । (२) हीरा ।
बज्रसार—'वज्रसार' अत्यन्त कठोर ।
बझत—'बझना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप । उलझता है, लिपटता है, फँसता है । (२) जाल आदि के बन्धन में फँसना ।
बझाउ, बझाऊ }—उलझन, बझौआ, फँसाव । (२) उलझानेवाली लता वृक्षादि झाड़दारवस्तु ।
बझावों—बझाता हूँ, फँसाता हूँ ।
बञ्चक—'वञ्चक' ठग ।
बञ्चना—'वञ्चना' ठगने की क्रिया ।
बञ्चित—'वञ्चित' ठगा गया, छला हुआ ।
बट—'वट' बड़ का वृक्ष ।
बटत—बटता हूँ, पूरता हूँ, भाँजता हूँ,रस्सी बनाने का काम ।

बटपार—'वञ्चक' ठग, धोखा देनेवाला ।
बटु—'वटु' ब्रह्मचारी । (२) ब्राह्मण, विप्र ।
बटोरा—सिकोड़ा, किसी वस्तु वा पदार्थ को समेट कर इकट्ठा किया । (२) बटोर कर, सिकोड़ कर, बचा कर ।
बटोरि—सिकोड़ कर, इकट्ठा करके ।
बटोरे—सिकोड़े, इकट्ठा किये ।
बड़—वट, बर का पेड़ । (२) बड़ा, भारी ।
बड़भागी—बड़ा भाग्यवान ।
बड़ा—वृहत्, विशाल, भारी । (२) श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया । (३) बड़ी उमरवाला ।
बड़ाई—श्रेष्ठता, बड़प्पन, महिमा । (२) यश, कीर्त्ति । (३) उच्चता, ऊँचाई ।
बड़ीबोल—प्रामाणिक वचन, बड़ी बात, वह बात जिसका प्रमाण माना जाता हो ।
बड़ेरो—बड़प्पन, श्रेष्ठता, बड़ाई ।
बढ़ता—उन्नत होता, ऊँचे जाता, वृद्धि करता ।
बढ़ाउ, बढ़ाव—बढ़ने की क्रिया वा भाव । बढ़ती उन्नति, तरक्की । (२) उत्तेजन, साहस प्रदान, बढ़ावा ।
बतायो—बतलाया, जनाया, सूचित किया ।
बतावत—बतलाता है, सुझाता है, ज्ञान कराता है, चेताता है ।
बतास—'पवन' वायु, हवा ।
बत्स—'वत्स' बछड़ा । (२) प्रिय, प्यारा ।
बत्सर—'वत्सर' वर्ष, साल । (२) स्नेही ।
बत्सल—'वत्सल' प्यारा । (२) दयालु ।
बद—'वद' कह, बोल ।
बदत—'वदत' कहता है, भाषण करता है ।
बदन—'वदन' मुख, आनन ।
बदरिकास्रम—'वदरिकाश्रम' वदरीनाथ ।
बदलि—बदल कर, किसी वस्तु को देकर उसके बदले में दूसरी वस्तु लेना ।
बदि—हेतु, कारण, वजह । (२) बद कर, कह कर, ठान कर । (२) बदी, कृष्णपक्ष ।
बदी—कृष्णपक्ष, अँधेरा पाख । (२) (फ़ारसी) । अनिष्ट, अनहस, बुराई।
बद्ध—बँधा हुआ, जकड़ा हुआ ।
बध—'वध' हनन, मरण ।
बधाय—बधावा, बधाई, आनन्द की दुन्दुभी बजना । (२) मङ्गलाचार, उत्सव के समय नगारे आदि का बजना ।
बधिक—'वधिक' हिंसक, घातक, हत्या करनेवाला । (२) व्याधा, बहेलिया । (३) गोमर, कसाई, कस्साब ।
बधिर—बहिर, बहरा, कान से न सुननेवाला ।
बधू—'बधू' पुत्र की पत्नी, पतोहू । (२) पत्नी, भार्य्या, जोड़ू ।
बँधो—बँधा हुआ, बन्धन में पड़ा । (२) लगा, फँसा, अटका ।
बन—'वन' जङ्गल । (२) समूह । (३) पानी ।
बनचर—'वनचर' वन में विचरनेवाले जीव ।
बनचरध्वज—'वनचरध्वज' कामदेव ।
बनचारी—'वनचारी' बन्दर मृग आदि ।
बनज—'वनज' कमल ।
बनजनाभ—'वनजनाभ' विष्णु ।
बनत—'बनना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप । (२) बनता है, निर्माण होता है ।
बनद—'वनद' मेघ, बादर ।
बनदाभ—'वनदाभ' मेघ की कान्ति ।
बनमाल—'वनमाल' फूलों की लम्बी माला ।
बनसी—बंसी, कँटिया, मछली फँसाने का काँटा । (२) बंशी, मुरली, बाँसुरी ।
बना—सिद्ध, तैयार ।
बनाइ—बना कर, रच कर ।
बनाई—बनाओ, रची, तैयार की ।
बनाय—बनाव, सुधार, सजाव । (२) सङ्ग, साथ । (३) इच्छित, चाही हुई बात ।
बनाये—निर्माण किये, सुधारे, सँवारे ।
बनाव—'बनाय' सुधार, सजाव ।
बनावत—'बनाना' शब्द का वर्तमानकालिक । रूप बनाता है, सुधारता है, सजावट करता है ।
बनिआई—बनती आई, पटती आई । (२) बन पड़ी, हो सकी । (३) शोभित, शोभनीय ।

बनिआवै—बन पड़े, हो सके। (२) शोभित हो।
बनिज—वाणिज्य, व्यापार, बनिअई।
बनिता—'वनिता' स्त्री।
बन्द—(फ़ारसी), बन्धन, बँधुअई, कैद। (२) प्रतिज्ञा, क़ौल करार। (३) यन्त्र, ताला। (४) अवयव, अङ्ग। (५) नस, नाड़ी। (६) अधार, सहारा।
बन्दत—'वन्दत' प्रणाम करता हुआ।
बन्दन—'वन्दन' प्रणाम।
बन्दनीय—'वन्दनीय' प्रणाम करने योग्य।
बन्दारु—'वन्दारु' वन्दना करनेवाला।
बन्दि—'वन्दि' प्रणाम करके (२) वन्दी।
बन्दिछोर—'वन्दिछोर'।
बन्दित—'वन्दित' प्रणाम किया गया।
बन्दिनि—'वन्दिनि' वन्दना की गई।
बन्दी—'वन्दी' बँधुआ।
बन्दीछोर—'वन्दीछोर' बँधुआ को छुड़ानेवाला।
बन्द्य—'वन्द्य' वन्दनीय।
बन्द्याङ्घ्रि—'वन्द्याङ्घ्रि' वन्दनीय चरण।
बन्ध— बन्धन, कैद।
बन्धन—बन्ध, बँधुअई, क़ैद। (२) पराधीनता, परवश्यता, दूसरे के अधीन होना। (३) ग्रन्थि, गाँठ।
बन्धु—सौंदर्य्य, सहोदर, सगा भाई (२) सहायक, दुःख का साथी। (३) स्वजन, कुटुम्बी, बान्धव।
बन्धो—'बन्धु' भाई।
बन्यो—बनेउ, बना, सँवारा।
बपत—'वपत' बोता है, बीज डालता है।
बपु—'वपु' शरीर।
बपुरा—असमर्थ, दीन, ग़रीब। (४) दरिद्र, कङ्गाल, कँगला।
बपुष—'वपुष' शरीर।
बबा—'पिता' जनक, बाप। (२) पितामह, दादा, पिता का बाप।
बबुर, बबूर—कण्टकवृक्ष, कीकर, बबूल, एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष जिसकी अनेक जातियाँ होती हैं।
बमन—'वमन' उलटी।
बय—'वय' अवस्था।
बयस—'वयस' आयु।
बयम्—'वयम्' हम लोग।
बयो—वप्यो, बोयो, बीज डाल्यो।
बर—'वर' श्रेष्ठ।
बरजत—'वरजत' हटकत।
बरजित—'वरजित' रोका हुआ।
बरजिये—'वरजिये' मना कीजिये।
बरजोर—बलवान, जोरावर, ज़बर्दस्त।
बरजोरी—जोरावरी, जबरी, ज़बर्दस्ती।
बरतिका—'वर्त्तिका, बत्ती।
बरद—'वरद' वर देनेवाला।
बरदान—'वरदान' वर देना।
बरदायक—'वरदायक' वर दाता।
बरदेस—'वरदेश' वरदायकों के स्वामी।
बरन—'वरण' वर्ण, जाति।
बरनत—'वरणत' वर्णत।
बरना—'वरणा'। (२) विवाह करना।
बरनित—'वरणित' वर्णित, भाषित।
बरबस—'वरवश' बरजोरी।
बरबानी—'वरवाणी' श्रेष्ठ वाणी।
बरवारि—'वरवारि, श्रेष्ठ जल।
बरबिराग—'वरविराग' श्रेष्ठवैराग्य।
बरबीर—'वरवीर' श्रेष्ठवीर।
बरषि—'वरषि, वर्षा करके।
बरषे—'वरषे' बरसने से।
बरषै—'वरषै' वर्षै, वृष्टि करै।
बरस—'वर्ष' साल।
बरहि—'वरहि' वर्हि, मुरैला। (२) बरा कर, बरका कर, अलग करके।
बरहिजात—'वरहिजात' बराया जाता है।
बराइ—'वरा कर' बरका कर, वर्जन करके।
बराका—'बराका' दीन, ग़रीब।
बराबरी—तुल्यता, समानता।
बराह—'वराह' शूकर।
बरिआई—बलपूर्वक, जोरावरी, जबर्दस्ती।
बरिवण्ड—बलवान, जोरावर।

बरिसो—वर्षा होना, बरसना।
बरु—'वर'। (२) चाहे, बल्कि।
बरुन—'वरुण' प्रचेता। (२) वृक्षविशेष।
बरुनाग्नि—'वरुणाग्नि' (वरुण+अग्नि)।
बरूथ—'वरूथ' झुण्ड।
बरे—'वरे' विवाहे।
बरेखी—बरच्छा, वर की ठहरौनी, वर कन्या के सम्बन्धन में विवाह की बातचीत पक्की होना।
बरै—विवाह करे, वर ठहरावे।
बर्ग—'वर्ग' जाति का समूह।
बर्जित—'वर्जित' मना किया हुआ।
बर्तमान—'वर्त्तमान' आश्रुत।
बर्तिका—'वर्तिका' बाती।
बर्धन—वर्धन' बढ़नेवाला।
बर्बर—लंठ, मूर्ख, बेवकूफ़। (२) व्यर्थ बकनेवाला, बकवादी।
बर्म—'वर्म' कवच।
बर्मनि—'वर्मनि' सनाह।
बर्मधारी—'वर्मधारी' कवचधारी।
बर्य—'वर्य' श्रेष्ठ। (२) प्रधान, प्रमुख।
बर्ष—'वर्ष' सम्वत्सर, साल।
बल—सामर्थ्य, पराक्रम, जोर। (२) सेना, कटक, फौज। (३) शौर्य्य, शूरत्व,शूरता। (४) स्थूलता, मोटाई। (५) बलदेव, हलधर। (६) अत्याचार, ज़बर्दस्ती। (७) भरोसा, आसरा, सहारा। (८) ऐंठन, मरोड़, घुमाव। (९) काक, कौआ।
बलन्द—(फ़ारसीभाषा)। उच्च, ऊँचा, ऊपर को उठा हुआ। (२) बड़ा, भारी।
बलवन्त, बलवान—पराक्रमी, बली, जोरावर।
बलि—पूजा, सत्कार, आदर करना। (२) पुरस्कार, उपहार, भेंट। (३) हिंसा, हत्या, कुरबानी। (४) होम, हवन। (५) पाठ, स्तोत्रपठन। (६) किरण, रश्मि। (७) कर, मालगुजारी, महसूल। (८) इष्टदेव पर प्राणों की न्योछावर करना। (९) त्रिवली, उदर कीरेखा। (१०) राजा बलि, बलि के यज्ञ से डर कर इन्द्र ने भगवान से प्रार्थना की, तब विष्णु भगवान् ने वामन रूप ब्राह्मण होकर बलि से जाकर तीन परग धरती की भिक्षा माँगी। बलि ने गुरु शुक्राचार्य के मना करने की उपेक्षा करके तीन डग पृथ्वी दे दी। भगवान् ने विराट रूप से सारा ब्रह्मांड दो परग में नाप लिया। तीसरे परग के लिये बलि ने अपनी पीठ नपवा दी। हरि प्रसन्न होकर बोले वर माँगो। बलि ने कहा—महाराज! मुझे प्रतिदिन प्रातःकाल आप के दर्शन मिलें। ऐसा ही हो, कह कर भगवान् वैकुण्ठ कोपधारे।
बलिजाउँ—बलि जाता हूँ, प्राणों की न्योछावर करता हूँ, तसद्दुक होता हूँ।
बलिदान—बलिप्रदान, हिंसा, वध, प्रेत पिशाच आदि तामसी देवी देवताओं के निमित्त पशु को मार कर भेंट करना। (२) देवतर्पण, देवता की पूजा। (३) अतिथि सेवा, नवागत पुरुष का सत्कार।
बली—पराक्रमी, जोरावर, बलवान।
बल्कल—'वल्कल' छाल।
बल्मीक—'वल्मीक' बिल।
बल्लभ—'वल्लभ' प्यारा।
बल्लभा—'वल्लभा' प्यारी।
बल्लि—'वल्लि' लता।
बल्लिमिव—'वल्लिमिव' (वल्ली+इव)
बल्ली—'वल्ली' लतर।
बस—'वश' अधीन, काबू में।
बसकर्त्ता—'वशकर्त्ता' वश करनेवाला।
बसकारी—'वशकारी' अधीन में रखनेवाला।
बसत—'वसना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। बसता है, टिकता है, ठहरता है।
बसन—'वसन' वस्त्र।
बसन्त—'वसन्त' ऋतुराज।
बससि—वसती हो, निवास करती हो। (२) बसनेवाली, ठहरनेवाली।
बसाई—टिकाई, ठहराई, निवास दिया।

बसावत—बसाता, टिकाता, ठहराता है,
बसावन—बसानेवाले, टिकानेवाले।
बसी—टिकी, ठहरी।
बसु—'वसु' देवता। (२) बसो, टिको।
बसुधा—'वसुधा' पृथ्वी।
बसुन्धरा—'वसुन्धरा' धरती।
बसैहों—बसाऊँगा, टिकाऊँगा।
बस्तु—'वस्तु' चीज़।
बस्त्र—'वस्त्र' कपड़ा।
बस्य—'वश्य' वश में।
बहत—'बहना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। बहता है, प्रवाहित होता है, बहा जाता है। (२) निबहता है। (३) पानी आदि तरल पदार्थों का एक स्थान से दूसरे स्थान में जाना।
बहन—बहने की क्रिया वा भाव। जाना, निकलने का रास्ता। (२) बहिन, भगिनी।
बहि—बाहर, बाहिर।
बहिकाढ़न—बाहर निकालना, वहिष्कार।
बहित्र—'वहित्र' जलयान, जहाज़।
बहु / बहुत }—समूह, अधिक।
बहुतेरो—बहुत सा, अधिकांश।
बहुरि—पुनि, फिर।
बहुल—बहुत, समूह।
बहुबिधि—बहुत प्रकार, अनेक तरह।
बहेड़ा / बहेरो }—विभीतक, अक्ष, बहेड़े का वृक्ष बड़ा पत्ते खरदरे होते हैं। यह निषिद्ध वृक्षों में गिना जाता है।
बहोर—बहोरनेवाला, लौटानेवाला।
बहोरि—पुनि, बहुरि, फिर। (२) लौटा कर, फेर कर।
बह्नि—'वह्नि' अग्नि।
बा—विद्यमानता सूचक। (२) वा, अथवा।
बाई—खुली, उघार। (२) स्त्री, अबला।
बाँओं—बाँयाँ, वाम। (२) विमुख, विरोधी। (२) पीठ, पीछा देना।
बाँकी—अपूर्व, चोखी, अनोखी। (२) वक्र, टेढ़ी, तिरछी।

बाँकुर—बाँका, अनोखा।
बाँकुरे—बाँके, चोखे। (२) वक्र, टेढ़े।
बाँको—बाँकुर, बाँका। (२) सुन्दर, सुघर।
बाक्य—'वाक्य' वचन।
बाग़—(फ़ारसी)। बागीचा, बगिया। (२) रास, घोड़े की लगाम। (३) हिन्दीभाषा के अनुसार बाग—बाणी, बोल। (४) घूमने की क्रिया, चाल, हरकत।
बागत—चलत, घूमत, डोलत।
बागीस—'वागीश' ब्रह्मा।
बागुरा—'वागुरा' फन्दा, जाल।
बागे—चले, फिरे, घूमे।
बाघ—'व्याघ्र' शेर।
बाघिनी—'व्याघ्रिणी' शेरनी।
बाचक—'वाचक' वक्ता। (२) शुद्ध सार्थक शब्द।
बाँचि—बचे, रक्षा पाये, पनाह पाये। (२) बाँच कर, पढ़ कर। (३) बचा कर, रक्षा करके।
बाँचो—पढ़ो, पाठ करो। (२) अवलोकन करो, देखो। (२) बचे, रक्षित हुए।
बाच्य—'वाच्य' वाचक का अर्थ
बाज—'वाज' सचान, शिकारी पक्षी।
बाजत—बजता है, शब्द करता है। (२) युद्ध करता है, लड़ाई करता है।
बाजन—बाजा, बजनेवाला यंत्र जैसे सितार हारमोनियम, सारङ्गी, मृदङ्ग आदि।
बाजपेई—'वाजपेई' वाजिपेय यज्ञ कर्ता।
बाज़ी—(फ़ारसी)। कुतूहल, क्रीड़ा, खेल।
बाज़ीगर—(फ़ारसी)। मदारी, आश्चर्य जनक खेल करनेवाला।
बाँट—अंश, भाग, हिस्सा में पड़ी हुई वस्तु।
बाट—'वाट' पथ, राह।
बाटिका—'वाटिका' फुलवारी।
बाढ़—उन्नति, बढ़ती, तरक्क़ी। (२) नदी आदि का जल अधिक वृष्टि से ऊपर को उमड़ना, बाढ़ आना।
बाढ़त—बढ़ता है, उमड़ता है।
बाढ़न—बढ़नेवाला। (२) बाढ़ न, नहीं बढ़नेवाला।

बाण—शर, विशिख, मार्गण, शिलीमुख, बान, तीर एक प्रकार का अस्त्र जो धनुष द्वारा चलाया जाता है। (२) बाणासुर नामक दैत्य जो बलि का पुत्र और अत्यन्त बली था।
बात—'वात' वचन, बोली । (२) पवन, बतास, हवा।
बातसञ्जात—'वातसञ्जात' हनूमान ।
बात्सल्य—'वात्सल्य' प्रेम, स्नेह ।
बाद—'वाद' विवाद, कहासुनी ।
बादर—'मेघ' जलधर, बलाहक ।
बादि } —'वादि-वादी' व्यर्थ ।
बादी }
बाद्य—'वाद्य' बाजन, बाजा ।
बाधक—बाधा करनेवाला, रुकावट डालनेवाला। (२) कष्टकारी, दुःख पहुँचानेवाला। (३) हानि कर, हर्ज करने वाला ।
बाँधत—बाँधता है, जकड़ता है, बन्धन में डलता है।
बाधा—दुःख व्यथा, पीड़ा । (२) कष्टसाध्य, मुश्किल। (२) अटकाव, रुकावट ।
बान—'बाण' शर,तीर। (२) स्वभाव,बानि,आदत । (२) रङ्ग, वर्ण । (३) कान्ति, चमक, दीप्ति ।
बानइत—बानावाला, प्रख्यात,नामवर। (२) किसी विशेषता से जिसकी नामवरी बहुत बढ़ कर हो। (२) वीर, बहादुर ।
बानक } —बनाव, सजाव । (२) वेष, लिबास ।
बाना } (२) ख्याति, नामवरी ।
बानप्रस्थ—'वानप्रस्थ' वैखानस ।
बानर—'वानर' कपि ।
बानरबन्धु—'वानरबन्धु' बन्दरों का भाई।
बानराकार—'वानराकार' (वानर+आकार)।
बाना—'बानक' बनाव।
बानि—स्वभाव, आदत।
बानी—'वाणी' गिरा, भारती। (२) वैश्य, वणिक, बनियाँ। (३) (फ़ारसी)—नीव डालनेवाला, बुनियाद जमानेवाला ।
बानीर—'वानीर' वेत, वञ्जुल ।
बानैत—'बानइत' नामवर ।

बान्धव—'बन्धु' सगाभाई । (२) सुहृद, सखा, मित्र। (३) सहायक, सहायता करनेवाला।
बाप } —'पिता' जनक ।
बापु }
बापी—'वापी' बावली ।
बापुरा—'बपुरा' दीन ।
बाम—'वाम' विपरीत । (२) बाँयाँ, बाउँ ।
बामदेव—'वामदेव' शिव ।
बामन—'वामन' बवना मनुष्य ।
बामबिधि—'वामविधि' विधाता की टेढ़ाई
बामा—'वामा' स्त्री, महिला।
बामासि—'वामासि' (वामा+असि)।
बामौ—'वामौ' टेढ़े भी ।
बाय } —'पवन' वायु, हवा ।
बायु }
बायौ—बाया खोला, उघारा ।
बार—'वार' दिन, वासर । (२) विलम्ब, देरी । (३) बाल, केश, चिकुर । (४) बेर, दफ़ा, मर्तबा। (५) समय, बेला। (फ़ारसी भाषा) (६) भार, बोझा। (७) दायित्व, जिम्मेदारी। (८) काम, धन्धा। (९) भाग्य, किस्मत।(१०) स्वत्व, अधिकार। (११) बिदा, रुखसत। (१२) दुर्भिक्ष, गिराना। (१३) भलामानुष।
बारक—एक बार, एक दफ़ा ।
बारन—'वारण' हाथी ।
बारान्निधे—'वारान्निधे' समुद्र ।
बाराह—'वाराह' शूकर ।
बारिचर—'वारिचर' जलजीव ।
बारिछालित—'वारिछालित' स्नान ।
बारिज—'वारिज' कमल ।
बारिद—'वारिद' मेघ ।
बारिदनाद—'वारिदनाद' मेघनाद ।
बारिदाभ—'वारिदाभ' मेघ की कान्ति।
बारिधर—'वारिधर' मेघ, घन ।
बारिधि—'वारिधि' समुद्र ।
बारिय—'वारिय' वारन कीजिए। (२) न्योछावर।
बारिये—'वारिये' वर्जन कीजे। (२)न्यौछावर कीजे।

बारी—बाग, बगीचा, बगिया। (२) पारी, ओसरी, बेरी। (३) गोंडा, खाँवाँ, डाँड़। (४) बालिका, कन्या, लड़की। (५) बाली, बाला, कान का आभूषण। (फ़ारसी भाषा)। (६) ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता। (७) एक बार, एक मर्तबे। (८) ईश्वर, परमात्मा।

बारीस—'वारीश' समुद्र।

बारीसकन्या—'वारीशकन्या' लक्ष्मी।

बारुनी—'वारुणी' मदिरा।

बाल—केश, कुन्तल, कच, चिकुर, बार। (२) बालक, शिशु, लड़का। (३) मूर्ख, अनाड़ी। जौ गेहूँ आदि की फली। (५) पानी, जल। (६) सुगन्धबाला, ह्रीबेर।

बालक—शिशु, शावक, अर्भक, पोत, बच्चा, लड़का। (२) पुत्र, तनय, बेटा।

बालधि—'वालधि' लूम।

बालमीक—'वाल्मीकि' आदिकवि।

बालमिताई—लड़कपन की मित्रता।

बाला—स्त्री, औरत, नारी, सोलह वर्ष की अवस्था वाली नवयौवना। (२) बालिका, कुमारिका, कन्या। (३) बारी, कान का भूषण।

बालार्क—(बाल+अर्क) उदय काल के सूर्य्य। (२) कन्या के सूर्य्य, कुआर मास के रवि।

बालि—बाली नाम का बन्दर जो किष्किन्धा का राजा था। इसके छोटे भाई का नाम सुग्रीव, स्त्री तारा और पुत्र अङ्गद था। बाली ने तप करके वर पा लिया था कि जो मुझ से लड़ने आवे उसका आधा बल मुझ में आ जाय। इसकी कथा रामचरितमानस के किष्किन्धा काण्ड में विस्तार से वर्णित है। (२) बाल, जौ गेहूँ आदि की फली।

बालिका—पुत्री, कन्या, लड़की।

बालिस—वालिश, मूर्ख, गँवार। (२) बालक, लड़का।

बाल्मीकि—'वाल्मीकि' वालमीक मुनि।

बाल्य—शैशव, लड़कपन।

बावन—'वामन'। (२) पचास और दो की संख्या।

बावरी—पगली, बौरही, दीवानी। (२) पागलपन, बौरहपन।

बावरो—बौरहा, पागल, दीवाना।

बाँवों—'वाम' बाँयाँ, पीछा।

बाँस—वेणु, वंश, कर्मार, धानुष्य, तृणध्वज, वन्य। बाँस के वृक्ष गाँव, जङ्गल और पर्वतों की तराई में उत्पन्न होते हैं। इसके वृक्ष पतले और लम्बे मज़बूत होते हैं। जाति भेद से कई प्रकार का होता है। यह पोपला सारहीन होता है चन्दन की गन्ध इसमें नहीं बेधती।

बास—घर, स्थान, मकान। (२) निवास, बसेरा, डेरा। (३) गन्ध, महँक, ख़ुशबू।

बासना—'वासना' कामना, ख़्वाहिश।

बासर—'वासर' दिन, बार।

बासव—'वासव' इन्द्र।

बासि—बासित करके, महँका कर, सुगन्ध देनेवाला बनाकर।

बासित—बासा हुआ, महँकाया हुआ।

बासी—बसनेवाला, निवासी। (२) वासित, सुगन्धित की हुई। (३) पूर्व दिन का बना हुआ भोजन।

बाँह—भुजदण्ड, भुजा, बाहु। (२) शरण, रक्षा, पनाह। (३) सहायता के लिये वचन देना, बाहुबल का भरोसा देना। (४) सहाय, बल, मदद।

बाहन—'वाहन' सवारी।

बाहर, बाहिर—भीतर का उलटा, अलग, दूर।

बाहु—'बाँह' भुज, भुजा।

बि—'वि' एक उपसर्ग। (२) पक्षी, पखेरू।

बिकट—'विकट' भयङ्कर।

बिकटतनु—'विकटतनु' भयानक शरीर।

बिकटतर—'विकटतर' अत्यन्त भीषण।

बिकटबेष—विकटवेष, भयङ्कर आकृति।

बिकरार, बिकराल—'विकराल' डरावना।

बिकल—'विकल' व्याकुल।

बिकलता—'विकलता' व्याकुलता।

बिकाउँ—विकता हूँ, विक्री होता हूँ।

बिकात—विकता है, विक्री होता है।

बिकार—'विकार' अवगुण, दोष।
बिकास—'विकाश' प्रकाश।
बिकासी—'विकाशी' प्रकाशक।
बिक्रम—'विक्रम' पराक्रमी।
बिख्यात—'विख्यात' प्रसिद्ध।
बिगत—'विगत' रहित, बिना।
बिगतसार—'विगतसार' तत्वहीन।
बिगरत—'बिगड़ना' शब्द का वर्त्तमानकालिक रूप। बिगड़ता है, नष्ट होता है।
बिगरायल—बिगड़ू, बिगड़ा हुआ।
बिगरिये—बिगाड़िये, ख़राब कीजिये।
बिगरी—बिगड़ी, नष्ट, ख़राब।
बिगारी—बिगाड़ी, नष्ट की, ख़राब की। (२) बिगाड़ की, बुराई की।
बिगोय—'विगोय' छिपा कर।
बिगोयो—'विगोयो' छिपाया।
बिग्रह—'विग्रह' शरीर। (२) युद्ध, लड़ाई।
बिघटन—'विघटन' बिगाड़ना, घटाना।
बिघन—'विघ्न' प्रत्यूह।
बिच—बीच, मध्य, अन्तर।
बिचरत—'विचरत' विचरता है।
बिचरन—'विचरण' पर्यटन।
बिचल—'विचल' चञ्चल।
बिचार—'विचार' समझ।
बिचारे—'विचारे' समझे।
बिचित्र—'विचित्र' अद्भुत।
बिच्छेद—'विच्छेद' अन्तर।
बिच्छेदकारी—'विच्छेदकारी' जुदा करनेवाला।
बिछुरे—विलग हुए, बिलगाने।
बिछोहै—विच्छेद करता, वियोगी बनाता।
बिजई—'विजई' जीतनेवाला।
बिजय—'विजय' जीत, फतह।
बिजयजस—'विजययश' जीत का यश।
बिजयदाई—'विजयदाई' जयदाता।
बिट—'विट' विष्ठा।
बिटप—'विटप' वृक्ष।
बिटपाटबी—'विटपाटवी' (विटप+अटवी)।

बिडम्ब—'विडम्ब' पाखण्ड।
बिडम्बरत—'विडम्बरत' पाखण्ड में तत्पर।
बिडम्बित—तिरस्कृत।
बित—'वित्त,' धन, सम्पत्ति।
बितई—व्यतीत किया, बिताया, गुजराया।
बितर्क—'वितर्क' बड़ी दलील।
बितान—'वितान' मण्डप।
बितु—'वित्त' धन।
बिथा—'व्यथा' पीड़ा, दुःख।
बिद—'विद' विज्ञ, जाननेवाला।
बिदारन—'विदारण' चीरना।
बिदारित—'विदारित' चीरा हुआ।
बिदित—'विदित' जाहिर।
बिदुर—'विदुर' धृतराष्ट्र के छोटे भाई।
बिदुष—'विदुष' पण्डित।
बिदूषहि—'विदूषहि' चिढ़ावे।
बिदेस—'विदेश' परदेश।
बिद्दरनि—'विद्दरणि' फाड़नेवाली।
बिद्दरित—'विद्दरित' चीरा हुआ।
बिद्ध—'विद्ध' छेदा हुआ।
बिद्यमान—'विद्यमान' आछत।
बिद्या—'विद्या' शास्त्रज्ञान।
बिद्याग्रनी—'विद्याग्रणी' विद्या में अगुआ।
बिद्यानिपुन—'विद्यानिपुण' विद्या में प्रवीण।
बिद्याबारिधि—'विद्यावारिधि' विद्यासिन्धु।
बिद्युच्छटाभं—'विद्युच्छटाभं' बिजली की शोभा।
बिद्युत—चपला, विद्युत, बिजली।
बिद्युल्लता—'विद्युल्लता' बिजली की लतर।
बिद्रावनी—'विद्रावनी' नाशक करनेवाली।
बिद्रुम—'विद्रुम' मूँगा।
बिध—'विध' विधि।
बिधाई—'विधाई' विधान करनेवाला।
बिधाता—'विधाता' ब्रह्मा।
बिधान—'विधान' व्यवस्था।
बिधि—'विधि' ब्रह्मा। (२) प्रकार, तरह।
बिधिबस—'विधिवश' दैवात।
बिधु—'विधु' चन्द्रमा।

बिधुन्तुद—'विधुन्तुद' राहु।
बिध्वन्स—'विध्वन्स' नाश।
बिन—'विन' विना।
बिनती
बिनय } —'विनती, विनय, प्रार्थना।
बिनयपत्रिका—'विनय-पत्रिका' विनय की चिट्ठी।
बिनवौं—'विनवौं' प्रणाम करों।
बिना—'विना' रहित, सिवाय।
बिनायक—'विनायक' गणेश।
बिनास—'विनाश' संहार।
बिनासी—'विनाशी' नाश करनेवाला।
बिनीत—'विनीत' नम्र, विनयी।
बिनु—'विना' बग़ैर।
बिनमोल—विनामूल्य, विना दाम का।
बिनोद—'विनोद' आनन्द।
बिन्दु—'विन्दु' बूँद, क़तरा।
बिन्दुमाधव—'विन्दुमाधव' विष्णु, हरि।
बिन्धि
बिन्ध्य } —'विन्ध्य' विन्ध्याचल।
बिन्ध्याद्रि—'विन्ध्याद्रि' विन्ध्यपर्वत।
बिपत
बिपति } —'विपत्ति' आपदा।
बिपतिभार—'विपतिभार' विपत्ति का बोझ।
बिपति हर्त्ता—'विपति हर्त्ता' आपदहर।
बिपत्ति
बिपद } —'विपत्ति' आफ़त।
बिपरीत—'विपरीत' उलटा, खिलाफ़।
बिपच्छ—'विपक्ष' शत्रु।
बिपिन—'विपिन' वन।
बिपुल—'विपुल' बहुत, विशेष।
बिप्र—'विप्र' ब्राह्मण।
बिप्रतिय—'विप्रतिय' अहल्या।
बिप्रबन्धु—'विप्रबन्धु' अधम ब्राह्मण।
बिफल—'विफल' निष्फल।
बिबिध—'विविध' अनेक।
बिबिध बिधि—'विविध विधि' अनेक प्रकार।
बिबुध—'विबुध' देवता।

बिबुधजननी—'विबुधजननी' अदिति।
बिबुधनदी—'विबुधनदी' गङ्गा।
बिबुधबन्दिनि—'विबुधवन्दिनि' देव बन्दनीया।
बिबुधान्तकारी—'विबुधान्तकारी' दैत्य।
बिबुधापगा—'विबुधापगा' गङ्गा।
बिबुधारि—'विबुधारि' देवशत्रु, दानव।
बिबुधेस—'विबुधेश' इन्द्र।
बिबेक—'विवेक' ज्ञान।
बिबेकी—'विवेकी' ज्ञानी।
बिभङ्ग—'विभङ्ग' बड़ी लहर। (२) अतिध्वंस।
बिभङ्गतर—'विभङ्गतर' अत्यन्त तरङ्ग।
बिभव—'विभव' धन, ऐश्वर्य्य।
बिभाति—'विभाति' अत्यन्त शोभा।
बिभासि—'विभासि' शोभा है।
बिभीषन—'विभीषण' रावण का छोटा भाई।
बिभु—'विभु' स्वामी। (२) समर्थ, योग्य।
बिभूति—'विभूती' ऐश्वर्य्य। (२) राख, ख़ाक।
बिभूषन—'विभूषण' गहना।
बिभूषित—'विभूषित' अलंकृत।
बिमत—'विमत' भिन्नमत।
बिमल—'बिमल' निर्मल।
बिमान—'विमान' व्योमयान।
बिमुख—'विमुख' प्रतिकूल।
बिमूढ़—'विमूढ़' महामूर्ख।
बिमोचन—'विमोचन' छुड़ानेवाला।
बिमोह—'विमोह' बड़ा अज्ञान।
बिम्ब—परछाहीं, छाया। (२) कुन्दुरू, बिम्बाफल।
बिम्बोपमा—बिम्बाफल की समानता।
बिय—'विय' द्वितिय, दूसर।
बियत—'वियत' आकाश।
बिया—उत्पन्न हुआ। (२) अन्य। (३) बीज।
बियो—उपजा, पैदा हुआ।
बियोग—'वियोग' बिछोह।
बियोगी—'वियोगी' बिछोही।
बिरक्त—'विरक्त' विरागी।
बिरचि—'विरचि' बनाकर।
बिरचित—'विरचित' रचा हुआ।

बिरज—'विरज' निर्मल।
बिरजतर—'विरजतर' अत्यन्त निर्मल।
बिरञ्चि—'विरञ्चि' ब्रह्मा।
बिरत—'विरत' विरक्त।
बिरति—'विरति' वैराग्य।
बिरतियष्ठी—'विरतियष्ठी' त्याग का सोटा।
बिरद—'विरद' बड़ाई, नामवरी।
बिरदहित—'विरदहित' बड़ाई के हेतु।
बिरदावली—'विरदावली' बड़ाई की श्रेणी।
बिरदैत—'विरदैत' नामवर।
बिरधाई—'विरधाई' वृद्धावस्था।
बिरह—'विरह' वियोग।
बिरहार्क—'विरहार्क' वियोग का सूर्य्य।
बिरहित—'विरहित' सब तरह से अलग।
बिरही—'विरही' बिछोही।
बिराग—'विराग' वैराग्य, त्याग।
बिरागी—'विरागी' वैराग्यवान, त्यागी।
बिराज—'विराज' अत्यन्त शोभित।
बिराध—'विराध' एक राक्षस का नाम।
बिराने—पराये,दूसरे, बेगाने।
बिराम—'विराम' विश्राम।
बिरोध—विरोध' वैर।
बिल—'वल्मीक' विवर, बाँबा।
बिलग—'विलग' भिन्न, जुदा।
बिलगावै—'विलगावै' जुदा करे।
बिलच्छन—'विलक्षण' अद्भुत।
बिलम
बिलम्ब } —'विलम्ब' देरी।
बिलसत—'विलसत' क्रीड़ा करता है।
बिलाप—'विलाप' रोदन।
बिलास—'विलास' विहार, ऐश।
बिलोकत—'विलोकत' देखत।
बिलोकनि—'विलोकनि' चितवनि।
बिलोचन—'विलोचन' आँख।
बिलोयो—'विलोयो' मथा।
बिवर्धन—'विवर्धन' बढ़ाने वा बढ़नेवाला।
बिबस—'विवश' पराधीन।
बिबाद—'विवाद' विरुद्ध कथन। (२) कलह।
बिष—'विष' ज़हर।
बिषपान—'विषपान' गरल पीना।
बिषफल—'विषफल' विष का फल।
बिषम—'विषम' असम। (२) वक्र, टेढ़ा।
बिषमता—विषमता, असमता। (२) टेढ़ाई।
बिषय—'विषय' इन्द्रियों के विषय।
बिषयमुद—'विषयमुद, विषयानन्द।
बिषयबन—'विषयवन' विषय का बन।
बिषयबारि—'विषय वारि' विषय रूपी जल।
बिषयी—'विषयी' विषय करने वाला।
बिषाद—'विषाद, उदासी, रञ्ज।
बिषान—'विषाण' सींग।
बिष्नु—'विष्णु' केशव, हरि।
बिष्नुजस—विष्णुयश' एक ब्राह्मण का नाम जिनके घर कल्कि अवतार होता है।
बिसद—'विशद' उज्वल, सफ़ेद।
बिसरना—विस्मरण होना, भूलना।
बिसराइ—'बिसराइ' भुला दिया।
बिसरिये—'बिसरिये' भुलाइये।
बिसारद—'विशारद' पण्डित।
बिसारन—बिसरानेवाला, भुलाना।
बिसारनसील—'बिसारनशील' भूलने का हद।
बिसाल—'विशाल, बड़ा।
बिसिख—'विशिख' बाण, तीर।
बिशुद्ध—'विशुद्ध' अति पवित्र।
बिसेष—'विशेष' अधिक।
बिसोक—'विशोक' बड़ाशोक। (२) शोकहीन।
बिस्राम—'विश्राम' विराम।
बिस्रामकर—'विश्राम कर' सुखदायक।
बिस्रामप्रद—'विश्रामप्रद' विश्रामकर।
बिस्व—'विश्व' संसार, ब्रह्माण्ड।
बिस्वअभिरामिनी—'विश्वअभिरामिनी' संसार को सुख देनेवाली।
बिस्वकंटक—'विश्वकण्टक' जग का काँटा।
बिस्वकर
बिस्वकरन } —'विश्वकर' विश्वकरण' जगकर्त्ता, ईश्वर।

बिस्वकारन—'विश्व कारण' सृष्टिकर्त्ता।
बिस्वधृत—'विश्वधृत, शेषनाग।
बिस्वनाथ—'विश्वनाथ' शिव। (२) परमेश्वर।
बिस्वमूल—'विश्वमूल'संसार की जड़।
बिस्वम्भर—'विश्वम्भर' विष्णु।
बिस्वसेबित—'विश्वसेवित' संसार से सेव्य।
बिस्वातमा—'विश्वात्मा' ईश्वर।
बिस्वायतन—'विश्वायतन' विश्वरूप।
बिस्वास—'विश्वास, यकीन।
बिस्वासी—'विश्वासी, विश्वास करनेवाला।
बिस्वेस—'विश्वेस' परमात्मा।
बिस्वोपकारी—'विश्वोपकारी' जगत की भलाई करनेवाला, परमेश्वर।
बिहग—'विहग' पक्षी, विहङ्ग।
बिहगराज, बिहगेस—विहगराज, विहगेश, गरुड़।
बिहङ्ग—'बिहङ्ग' पत्ती।
बिहँसि—'विहँसि' हँस कर।
बिहाइ—'विहाइ' छोड़कर।
बिहाई—'विहाई' छोड़ा, त्यागा।
बिहाय—'विहाय' छोड़कर।
बिहार—'विहार' विलास, क्रीड़ा।
बिहारथल—'विहारथल' विहार का स्थान।
बिहारी—विहारी, विहार करनेवाला।
बिहारु—'विहारु' विहार।
बिहाल—'विहाल, बुरी दशा।
बिहित—'विहित, विख्यात। (२) निश्चित।
बिहीन—'विहीन, रहित।
बिहंडनि—'विहण्डनि, छिन्न भिन्न करनेवाली।
बिज्ञ—'विज्ञ'प्रवीण,ज्ञाता।
बिज्ञता—'विज्ञता' प्रवीणता, कुशलता।
बिज्ञान—'विज्ञान' विशेषज्ञान।
बिज्ञानघन—'विज्ञानघन' विज्ञान के राशि।
बिज्ञानभवन—'विज्ञानभवन' विज्ञान मन्दिर।
बिज्ञानमय—'विज्ञानमय' विज्ञानयुक्त।
बिज्ञानरूप—'विज्ञानरूप' विज्ञान के स्वरूप।
बिज्ञानसाली—'विज्ञानशाली' विज्ञानमय।

बीच—'मध्य, बीचोबीच। (२) सन्धि, अन्तर, फर्क। (३) विरोध, वैर, फूट।
बीचि, बीची—वीचि, वीची, तरङ्ग, लहर।
बीज—'वीज' बिया। (२) कारण। (३) सार।
बीजमन्त्र—रामनाम, तारकमन्त्र।
बीजहारी—बीज नाशक।
बीता, बीति, बीती, बीते—बीत गया, गुजर गई।
बीथिन—'वीथी' शब्द का बहुवचन, गलियाँ।
बीर—'वीर' योद्धा, बहादुर।
बीरता—'वीरता' शूरता।
बीरभद्र—'वीरभद्र' रुद्रगण।
बीर्ज—'वीर्य' शुक्र। (२) बल, पराक्रम।
बीस—बीस की संख्या, दस का दूना।
बीसभुज—रावण, बीस भुजावाला।
बुझाइ—'बुझना और बुझाना'शब्दों का पूर्वकालिक रूप। बुझा कर,बुताकर ठंढाकर। (२) समझा कर, ज्ञान करा कर।
बुझाउ—बुझाओ,ठण्ढा करो।(२) समझाओ,सुझाओ।
बुझाये—बुझा दिये, शीतल किये। (२) समझाये, सुझाये।
बुझयो—बुझ गया, शान्त हुआ। (२) समझ गया, जान गया।
बुड़ि—डूब कर, मग्न होकर।
बुड़िबेजोग—डूबने योग्य, बूड़ाने लायक।
बुताइ—बुझाइ, शान्त हो।
बुद्ध—ज्ञात,विदित,जाना गया। (२) बुध, पण्डित। (३) विष्णु भगवान का नवाँ औतार बौद्ध मत के स्थापन करनेवाले।
बुद्धअवतार—बुद्धावतार, विष्णुभगवान का औतार
बुद्धि—धी, मनीषा, मति, मेधा, चेतना, अक्ल, अकिल, अभ्यन्तर की द्वितीय इन्द्रिय। (२) विवेक, ज्ञान, विचार।
बुध—'पण्डित' विद्वान्, कोविद। (२) बुद्धिमान

श्रीमान। (३) चौथा दिन, बुधबार। (४) नवग्रहों में से एक ग्रह जो चन्द्रमा के वीर्य से बृहस्पति की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं।
बुधजन—पण्डितजन, विद्वान लोग।
बुरो—निकृष्ट, खराब, बुरा।
बुलाई—बुलायी, तलब की।
बुलाये—बुलाया, तलब किया।
बूझ—ज्ञान, विवेक, समझ।
बूझत—बूझता है, समझता है।
बूझि—बूझ, विवेक, समझ।
बूट—'बूट' वृक्ष। (२) बूटी, औषधि।
बूड़त—'बूड़ना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। बूड़ता है, डूबता है।
बूँद—बुन्द, विन्दु, टोप।
बृक—'बृक' हुँड़ार, भेड़िया।
बृजिन—'बृजिन' पाप। (२) कुटिल। (३) कष्ट।
बृजिनाटवी—'बृजिनाटवी' पाप का वन।
बृत्त—'बृत्त' घेरा। (२) पद्य, छन्द।
बृत्तान्त—'बृत्तान्त' समाचार।
बृत्ति—'बृत्ति' जीविका।
बृथा—'बृथा' व्यर्थ, निरर्थक।
बृद्ध—'बृद्ध' बुड्ढा, ज़ईफ़।
बृद्धि—'बृद्धि' बढ़ती, बाढ़।
बृन्द—'बृन्द' समूह, यूथ।
बृन्दारक—'बृन्दारक' देवता।
बृन्दारकानन्द—'बृन्दारकानन्द' देवानन्दकर।
बृश्चिक—'बृश्चिक' विच्छू।
बृष—'बृष' धर्म। (२) श्रेष्ठ। (३) मूस, चूहा।
बृषभ—'बृषभ' बैल।
बृषभजान—'बृषभयान' बैल की सवारी।
बृषभेस—'बृषभेश' शिव। (२) नन्दी।
बृष्टि—'बृष्टि' वर्षा।
बृष्नि—'बृष्णि' एक यदुवंशी राजा का नाम।
बृष्निकुल—'बृष्णिकुल' बृष्णि का कुल।
बृहत, बृहद—'बृहत्' बृहद्, विशाल, बड़ा।
बृच्छ—'बृक्ष' पेड़।
बृत्र—'बृत्र' एक दैत्य का नाम। (२) शत्रु।
बेग—'वेग' प्रवाह। (२) बल।
बेगार—बिना मजदूरी दिये काम लेना।
बेगारी—बेगार, अपनी इच्छा के विरुद्ध बिना मजूरी के काम करनेवाला मनुष्य।
बेगि—'वेगि' शीघ्र, तुरन्त।
बेँचि—बेँच कर, विक्रय करके।
बेँचे—बेँचा, विक्रय किया। (२) बेँचने से।
बेटा—'पुत्र' सुवन, लड़का।
बेत—'वेत' वञ्जुल, वानीर।
बेता—'वेत्ता' जाननेवाला।
बेताल—'वेताल' पिशाच।
बेत्ता—'वेत्ता' विज्ञ, जानकार।
बेद—'वेद' निगम।
बेदगर्भ—'ब्रह्मा' विधाता।
बेदगर्भार्भकादभ्र—'वेदगर्भार्भकादभ्र' ब्रह्मा के पुत्र सनत्कुमारादि।
बेदन—'वेदन' पीड़ा।
बेदना—'वेदना' दुःख।
बेद बिख्यात—'वेदविख्यात' वेद विहित।
बेदसार—'बेदसार' वेद के तत्व।
बेदाङ्ग—'वेदाङ्ग' वेदों के अङ्ग।
बेदाङ्गबिद—'वेदाङ्गविद' वेदाङ्ग के ज्ञाना।
बेदान्त—'वेदान्त' शास्त्र आदि।
बेदान्त बिधि—'वेदान्त विधि' शास्त्रविधान।
बेधत—बेधता है, छेदता है, चुभता है।
बेनु—'वेनु' बाँस। (२) एक राजा का नाम।
बेर—बदरीफल, बैर का काँटेदार वृक्ष वा फल।
बेरा, बेरे, बेरो—'वेड़ा' बेड़े, वेड़ो, बँधी हुई नौका।
बेलि—'वल्ली' लता।
बेष—'वेष' स्व रूप।
बेस—'वेश' आकृति।
बेहाल—विकल, विह्वल।
बैकुंठ—'वैकुण्ठ' हरिलोक।
बैकठस्वामी—'वेकुण्ठस्वामी' विष्णु।

बैठत—'बैठना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। बैठता है, आसीन होता है।
बैताल—'वेताल' प्रेतों की जाति।
बैद—'वैद' चिकित्सक।
बैदर्भि—'वैदर्भि' रुक्मिणी।
बैदर्भिभर्त्ता—'वैदर्भिभर्त्ता' श्रीकृष्णचन्द्र।
बैदेहि—'वैदेहि' सीता, जनकनन्दिनी।
बैदेहिभर्त्ता—'वैदेहिभर्त्ता' श्रीरामचन्द्र।
बैद्य—'वैद्य' भिषग्।
बैन—'बैन' वचन, वाणी।
बैनतेय—'वैनतेय' गरुड़।
बैभव—'वैभव' ऐश्वर्य्य, विभूति।
बैर—'बैर' विरोध। (२) बेरफल।
बैरक—(फ़ारसी) ध्वजा, पताका, फरहरा।
बैराग
बैराग्य } —'वैराग, वैराग्य' विरति।
बैरि
बैरी } —'वैरि, वैरी, शत्रु, दुश्मन।
बैल—वृष, बृषभ, गौ, बर्द बरधा, गोपुत्र। (२) मूर्ख, अनाड़ी।
बैस—वैश्य, वणिक, बनियाँ। (२) अवस्था, उमर। (३) युवा, जवानी। (४) क्षत्रियों की एक शाखा जिनकी बैस संज्ञा है।
बोझा—भार, गरुअई, वजन।
बोध—ज्ञान, बुद्धि, समझ।
बोधक—बोध करनेवाला, उपदेशक, शिक्षक।
बोधित—बोध्य, बोधकराया हुआ, समझाया हुआ। (२) सिखाया हुआ, ज्ञान कराया हुआ।
बोधैकरासी—यथार्थ ज्ञान की राशि, सम्यक् ज्ञान के समूह।
बोरत—'बोरना, शब्द का वर्तमान कालिक रूप। बोरता है, डुबाता है। (२) खोता है, डह-काता है, गँवाता है।
बोल—वचन, बाणी, बोली। (२) प्रतिज्ञा, बात देना, वचन हारना।
बोहित—जलजान, पोत, जहाज़। (२) नौका, नाव, डोंगी।
बौराई—बौरहई, पागलपन।
बंस—'वंश' सन्तान, औलाद। (२) कुल, कुटुम्बी, परिवार। (३) बाँस का पेड़।
बंसाटवी—'वंशाटवी, बाँस का जङ्गल।
बंसी—'वंशी' वंशवाला, कुलवाला, सगोत्री। (२) मुरली, बाँसुरी। (३) मछली फँसानेवाली कँटिया।
ब्यक्त—'व्यक्त' फैला हुआ, प्रगट।
ब्यक्तगुन—'व्यक्तगुण' स्पष्ट गुण।
ब्यक्ति—'व्यक्ति' प्राणी, शरीरधारी।
ब्यग्र—'व्यग्र' आकुल, परेशान।
ब्यङ्ग—'व्यङ्ग' व्यञ्जक अर्थ।
ब्यङ्गजुत—'व्यङ्गयुत' व्यङ्ग के सहित।
ब्यञ्जन—'व्यञ्जन' भोजन के पदार्थ।
ब्यतिरेक—'व्यतिरेक' बिना।
ब्यतीत—'व्यतीत' बीता हुआ।
ब्यथा—'व्यथा' पीड़ा, दुःख।
ब्यभिचार—'व्यभिचार' छिनरई।
ब्यर्थ—'व्यर्थ' वृथा, बेमतलब।
ब्यलीक—'व्यलीक' पीड़ा। (२) मिथ्या, झूठ।
ब्यवस्था—'व्यवस्था' धर्मनिर्णय।
ब्यवहार—'व्यवहार' परस्पर लेनदेन।
ब्यवहारी—'व्यवहारी' व्यवहार करनेवाला।
ब्यसन—'व्यसन' परस्त्री गमन आदि।
ब्यस्त—'व्यस्त' घबराया हुआ।
ब्याकरन—'व्याकरण' शब्दशास्त्र।
ब्याकुल—'व्याकुल' दुखी, विकल।
ब्याघ्र—'व्याघ्र' बाघ।
ब्याघ्रिनी—'व्याघ्रिणी' बाघिन।
ब्याज—'व्याज' मिस, बहाना। (२) कपट, कैतव। (३) बिआज, सूद। (४) लक्ष्य।
ब्याध
ब्याधा } —'व्याध, व्याधा, बहेलिया।
ब्याधादि—'व्याधादि,' व्याधा आदि पापी।
ब्याधि—'व्याधि' रोग।
ब्यापई—'व्यापई' फैलती।
ब्यापक—'व्यापक' व्यापनेवाला।

व्यापकानन्द—'व्यापकानन्द' ईश्वरानन्द ।
व्यापत—'व्यापत' व्यापता है, फैलता है ।
व्यापार—'व्यापार' उद्यम ।
व्यापित—'व्यापित' व्यापा हुआ ।
व्यापी—'व्यापी' व्यापनेवाला ।
व्याप्त—'व्याप्त' व्यापा हुआ, व्यापित ।
व्याप्य—'व्याप्य' व्यापनेवाला ।
व्याल—'व्याल' साँप । (२) हाथी ।
व्यालसूदन, व्यालाद, व्यालारि—'व्यालसूदन' व्यालाद, व्यालारि, सर्पों के शत्रु, सर्पनाशक, गरुड़ ।
व्याह—'व्याह' विवाह ।
व्यूह—'व्यूह' सेना की रचना ।
व्योम—'व्योम' आकाश' गगन ।
व्रज—'व्रज' वृन्द ।
व्रत—'व्रत' उपवास ।
व्रतधारी—'व्रतधारी' व्रती ।
व्रती—'व्रती' व्रतधारी ।
व्रन—'व्रण' घाव, पाका ।
ब्रह्म—आदिपुरुष, परमेश्वर । (२) वेद, निगम । (३) ब्रह्मा, विधाता । (४) ब्राह्मण, विप्र । (५) तप, तपस्या ।
ब्रह्मकर्म—ब्राह्मण का कर्म, ईश्वर उपासना ।
ब्रह्मचारी—ब्रह्मचर्य व्रत पालन करनेवाला, चारों आश्रमों में प्रथम ।
ब्रह्मन्य—ब्रह्मण्य, विप्रसेवी, ब्राह्मण को इष्टदेव माननेवाला । (२) विष्णु, केशव, जनार्दन । (३) ब्रह्म में लीन ।
ब्रह्मर्षि—ब्राह्मण ऋषि, वेद और भगवद्धर्म का जाननेवाला, जैसे वशिष्ठ, गौतम, नारद आदि ।
ब्रह्मबादी—ब्रह्मज्ञ, वेदान्ती ।
ब्रह्मबिद्—वेद विद, ब्रह्म को जाननेवाला ।
ब्रह्मज्ञानी—परमेश्वर का ज्ञान रखनेवाला ।
ब्रह्मा—विधि, विरंचि, विधाता, धाता, स्वयम्भू, अञ्जयोनि, पितामह, ब्रह्म, द्रुहिण, चतुरानन, कमलासन, प्रजापति, विधना, सिरजनहार इत्यादि । त्रिदेवों में प्रथम सृष्टिकर्त्ता, ब्रह्मा के चार मुख हैं इस से चतुर्मुख कहे जाते हैं । इनकी शक्ति सरस्वती, बाहन हंस और मरिच्यादि ऋषि पुत्र हैं ।
ब्रह्मांड—ब्रह्माण्ड, भूमण्डल, जगत ।
ब्रह्मादि—ब्रह्मा आदि देववृन्द ।
ब्रह्मैक—एक ब्रह्म, मुख्य तत्व ।
ब्रात—'व्रात' समूह, सन्दोह ।
ब्राह्मण—अग्रजन्मा, द्विज, भूसुर, भूदेव, महिदेव, महीसुर, बाभन, विप्र, चारों वर्णों में प्रथम । वेद के जाननेवाले । पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, कराना, दान देना तथा लेना ब्राह्मण के ये छे कर्म हैं । अपने सत्कर्म के प्रभाव से ब्राह्मण पृथ्वी के देवता माने जाते हैं ।
ब्रीड़ा—'व्रीड़ा' लाज, शरम । (२) तेंतीस सञ्चारी भावों में से एक ।

(भ)

भ—हिन्दी वर्णमाला का चौबीसवाँ व्यञ्जन और पवर्ग का चौथा वर्ण । इसका उच्चारण स्थान ओठ है । (२) भ्रमर, मधुकर । (३) बृहस्पति के पुत्र भरद्वाज । (४) नक्षत्र, तारा । (५) शुक्राचार्य, भार्गव । (६) दीप्ति, प्रभा, चमक ।
भइ, भई—हुई, होगई ।
भक्त—सेवक, दास, भगत, सेवा करनेवाला । (२) प्रेमी, सनेही, प्रीति करनेवाला । (३) भात, ओदन, पका हुआ चावल ।
भक्तजन—भक्तिवान मनुष्य ।
भक्तवत्सल—भक्तों को प्यार करनेवाला, भक्तानुरागी । (२) परमेश्वर, नारायण ।
भक्तानुकूल—भक्तों के अनुकूल, सेवकों पर प्रसन्न ।
भक्ति—सेवा शुश्रूषा, पूज्य अथवा इष्टदेव के प्रति हार्दिक प्रेम भाव । भक्ति नौ प्रकार की रामचरितमानस में कही है, यथाः—सज्जनों का सङ्ग, हरि कथा में प्रेम, गुरु सेवा, हरिकीर्त्तन, तारक मन्त्र का जप, इन्द्रियदमनशील, जगमय ईश्वर को देखना और सन्तों को हरि तुल्य समझना,

यथा लाभ में सन्तुष्ट और नवें निष्कपट सीधा स्वभाव किसी से द्वेष न रखना । श्रीमद्भागवत के अनुसार श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पूजा, सेवा, प्रणाम, दासता, सखत्व, आत्मसमर्पण।

भखा—भक्षण किया, खाया, भोजन किया।

भग—ऐश्वर्य्य, विभव, विभूति,। (२) श्री, लक्ष्मी, सम्पत्ति। (३) महत्त्व, महिमा। (४) कीर्त्ति, सुयश। (५) शूरत्व, वीरता। (६) जननेन्द्रिय, योनि। (७) इच्छा, कामना। (८) उपाय, तदवीर।

भगत—'भक्त' सेवक, दास।

भगति—'भक्ति' सेवा।

भगवन्त } भगवान }—परमेश्वर, विष्णु, ईश्वर। (२) ऐश्वर्य्यवान, विभवशाली, श्रीमान्,। (३) महिमान्वित, यशस्वी।

भगीरथ—अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र जो तपोबल से अपने पितरों को तारने के लिये स्वर्ग से श्रीगङ्गाजी को पृथ्वीतल पर ले आये थे।

भगीरथनन्दिनि—'गङ्गा' देवनदी।

भग्न—टूटा हुआ, खण्डित, टुकड़े टुकड़े हुआ। (२) नाशमान, नाश को प्राप्त हुआ। (३) पराजित, हारा हुआ।

भङ्ग—ध्वन्स, छिन्नभिन्न, नष्ट, नाश। (२) तरङ्ग, वीचि, लहर। (३) विजया, भाँग (४) टूटा हुआ, भग्न, खण्डित।

भङ्गुर—नाशवान, नष्ट होनेवाला, वक्र, तिरछा, टेढ़ा।

भज—सेवा, टहल, ख़िदमत।

भजत—'भजना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। भजता है।

भजन—सेवा, टहल, ख़िदमत करना। (२) हरिस्मरण, राम नाम सुमिरन।

भञ्जन—खण्डन, तोड़ना, फोड़ना। (२) क्षय, ध्वन्स, नाश।

भञ्जनि—खण्डन करनेवाली, नसानेवाली।

भट—योधा, वीर, बहादुर।

भटकि—भूल कर, भ्रम में पड़ कर, और को और समझ कर। (२) बिना जाने मार्ग में भ्रम से इधर उधर घूमकर।

भटभेर—धक्का, टक्कर, ठेल कर वा ठोकरें मार कर किसी वस्तु वा प्राणी को स्थान से बाहर करना। (२) ठेलना, रेलने की क्रिया, पीछे हटाने का भाव। (३) भगाना, दूर करना।

भटभेरो—धक्का देकर, पीछे हटाकर।

भण्डार—भंडार, कोठार, वह मकान जिस में अन्न, घी, चीनी और फल आदि भोजन के लिये संग्रह करके संचित किया जाता है। (२) कोश, ख़ज़ाना। (३) राशि, ढेर।

भद्र—कल्याण, मंगल, क्षेम।

भनि—कह कर, बोल कर।

भने—कहे, भाषे, बोले।

भभरि—भयभीत होकर, डर कर।

भय—त्रास, भीति, डर, ख़ौफ़। (२) नव रसों में भयानक रस का स्थायी भाव।

भयङ्कर—भीषण, भयावना, डरावना।

भयदा—डरावना, ख़ौफ़नाक।

भयभीत—भयातुर, डराहुआ।

भयानक—भयङ्कर, भीषण, डरावना। (२) काव्य के नव रसों में से एक।

भये—हुए (२) उत्पन्न हुये, उपजे।

भर—पूर्ण, पूरा भरा हुआ। (२) नितान्त, निरन्तर, लगातार। (३) अतिशय, बहुत अधिक। (४) सम्पूर्ण, समस्त, तमाम। (५) भरण, पालने की क्रिया (६) द्वारा, से।

भरत—अयोध्यानरेश महाराज दशरथजी के पुत्र जो केकयी के गर्भ से उत्पन्न परम भागवत और रामचन्द्रजी के लघुबन्धु हैं। (२) एक अत्यन्त प्रतापी राजा का नाम जिन के कुल के आदि पुरुष ययाति राजा थे। ययाति के यदु और पुरु दो पुत्र हुए। यदु का वंश यादव कहलाया इसी कुल में भोज, वृष्णि और अन्धक आदि महापुरुष हुये हैं। पुरु के वंश में राजा भरत उत्पन्न हुये इसी कुल में महाबली राजा कुरु हुये जिनके नाम से इनके वंश का नाम कौरव पड़ा।

इन्हीं भरत के नाम से भारतवर्ष देश का नाम प्रसिद्ध हुआ है।

भरतखंड—भारतवर्ष, आर्यभूमि।

भरतादि—भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, कुटुम्बी, पुरजन और सेवक आदि।

भरतानुगामी—(भरत+अनुगामी) भरतजी के पीछे चलनेवाले शत्रुघ्न।

भरन—भरण, पोषण, पालन। (२) वेतन, काम करने के बदले में तनख़ाह वा मज़दूरी। (३) उद्योगी, प्रयत्नशील, यत्न करनेवाला।

भरनि—भरनेवाली, पूरा करनेवाली।

भरपूर } —पूर्ण, पूरा, ख़ूब भरा हुआ।
भरपूरि }

भरम—'भ्रम' भ्रान्ति, और को और मानना। (२) भुलावा, धोखा। (३) प्रतिष्ठा, सभाय, इज़्ज़त।

भरि—भर कर, पूरा करके।

भरित—पूरित, पूर्ण, भरी हुई। (२) भरनेवाली, पूर्ण करनेवाली। (३) पोषित, पालित।

भरिभरि—भरभर, बारबार पूर्ण करके।

भरेभाग—भाग्य का पूरा, सौभाग्यशाली।

भरोस } —विश्वास, प्रतीति, यक़ीन। (२) आशा, उम्मेद।
भरोसा }

भर्त्ता—पति, स्वामी, ख़ाविन्द। (२) पालक, पालनेवाला, रक्षा करनेवाला। (३) ब्रह्मा, विरञ्चि, धाता।

भल } —श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा। (२) सुन्दर, मनोहर, सुहावना।
भला }

भलाई—श्रेष्ठता, उत्तमता, निकाई। (२) उपकार, नेकी, हितकारिता।

भलेरो—भला, कल्याण, कुशल।

भव—संसार, जगत, दुनियाँ। (२) उत्पन्न, उपज, पैदा। (३) कल्याण, क्षेम, कुशल। (४) प्राप्त, पाना, मिलना। (५) शिव, ईशान, महादेव।

भवआपगा—संसार रूपी नदी, भव सरिता।

भवचाप—शिवधनुष, पिनाक।

भवजाल—संसार का बन्धन, जगत का जाल।

भवत्—भवदीय, आप का, तुम्हारा।

भवतारक—संसार से पार करनेवाला।

भवतु—हो, होहु।

भवदङ्घ्रि—(भवत्+अङ्घ्रि) आप के चरण।

भवदीय—भवत्, त्वदीय, तुम्हारा।

भवदंस—(भवत्+अंश) आप का भाग।

भवधनु—शिवधनु, पिनाक।

भवन—'घर' गृह, मकान।

भवन्त—भवत्, भवदीय' आप का। (२) श्रेष्ठ, उत्तम। (३) प्रधान, पूज्य। (४) समय, काल, वक्त। (५) होना।

भवन्ति—होते हैं।

भवपास—भवजाल, संसार का बन्धन।

भवभीर—संसार का भय, भव बाधा।

भँवर—भ्रमर, मधुकर, भँवरा। (२) आवर्त्त, पानी का चक्कर।

भवरोग—संसार सम्बन्धी रोग।

भवबन्द्य—संसार के वन्दनीय, जगतवन्द्य। (२) शिवजी से वन्दनीय, शंकर के पूज्य।

भवानी—'पार्वती' उमा, गौरी।

भविष्य—आगमकाल, आनेवाला समय।

भव्य—कल्याण, क्षेम, मंगल।

भव्यभूषन—कल्याणकारी आभूषण, मंगल रूप गहना।

भस्म—भभूत, राख, ख़ाक। (२) क्षय, नाश।

भक्ष—भोज्य पदार्थ, भोजन की वस्तु। (२) भक्षणीय, भोजन के लायक।

भक्षक—भक्षण करनेवाला, भोजन कर्त्ता।

भक्षण—भोजन, आहार।

भक्ष्य—भोजन के योग्य, भक्षणीय।

भा—'प्रभा' दीप्ति, चमक। (२) छबि, शोभा, कान्ति। (३) प्रकाश, तेज।

भाइ } —'बन्धु' भ्राता, सहोदर। (२) ज्ञाति, स्वजन, कुटुम्बी। (३) सखा, मित्र, सहायक। (४) सुहाई, अच्छी लगी।
भाई }

भाउ—'भाव' प्रेम। (२) अभिप्राय, मन का विकार

भाओं—भावों, सुहावों, अच्छा लगूँ।

भाखइ—भाषण करे, कहै।

भाग—अंश, बाँट, हिस्सा। (२) भाग्य, तकदीर। (३) भाग गया, दूर हुआ।

भागि—भाग कर, पराइ कर।

भागी—भाग्यवान, नसीबवर। (२) अधिकारी, मुस्तहक़। (३) साझी, हिस्सेदार।

भाग्य—दैव, प्रारब्ध, नसीब, क़िस्मत, तक़दीर। पूर्वजन्म के किये कर्म का भोग।

भाजन—'पात्र' बरतन।

भाति—(भा+अति), अत्यन्त शोभा।

भाँति—प्रकार, तरह।

भाथ, भाथा—'त्रोण' तरकस।

भाना—सुहाना, अच्छा लगना। (२) नाश किया।

भानि—नष्ट करके, नाश करके।

भानी—नष्ट किया, ध्वन्स किया।

भानु—'सूर्य्य' दिवाकर, रवि।

भानुकुल—सूर्य्यवंश, रविकुल।

भानुमन्त—तेजस्वी, सूर्य्य के तुल्य प्रकाशमान।

भामिनी—'स्त्री' ललना।

भामौ—कोपना स्त्री भी।

भाय—'भाव' अभिप्राय।

भाये, भायो—सुहाये, अच्छे लगे।

भार—गरुअई, बोझा, वजन। (२) चार मन, १६० सेर की भार संज्ञा मानी गई है।

भारती—सरस्वती, भाषा, वाणी, गिरा, ब्रह्माणी, शारदा देवी। (२) भारतीय, भारतबासी।

भारापहर—(भार+अपहर) बोझ को दूर करनेवाला, भार हरनेवाला।

भारी—गरुआ, वज़नी। (२) बृहद्, बड़ा।

भार्गव—शुक्र, कवि, दैत्यगुरु। (२) परशुराम, भृगुनाथ। (३) लक्ष्मी, भगवती।

भार्या—पत्नी, सहधर्मिणी, दारा।

भाल—माथ, ललाट, मस्तक। (२) भालू, रीछ।

भालु, भालू—भल्लुक, भल्लूक, ऋक्ष, रीछ, एक प्रकार का जंगली जन्तु जिसके शरीर पर बड़े बड़े बाल होते हैं।

भाव—अभिप्राय, तात्पर्य, प्रयोजन। (२) प्रेम, स्नेह, प्रीति। (३) सत्ता, धर्म, गुण। (४) मानस विकार, चेष्टा मात्र से मनोवृत्ति का प्रगट करना। (५) साहित्यशास्त्र में नो रसों के स्थायीभाव और तेंतीस सञ्चारी भाव। (६) स्वभाव, प्रकृति। (७) आत्मा, जीव। (८) जन्म, उत्पत्ति। (९) पण्डित, विद्वान्। (१०) मोल, निर्ख़, दर। (११) सम्मति, सलाह।

भावई—भाती है, सुहाती है, अच्छी लगती है।

भावगम्य—भाव से प्राप्य, प्रेम से मिलनेवाला।

भावते, भावतो—सुहाते, अच्छे लगते।

भावना—इच्छा, कामना, ख़ाहिश। (२) ध्यान, चेत, ख़याल।

भावनातीत—(भावना+अतीत) इच्छा से परे, निस्पृह, अनिच्छित।

भाषा—भाखा, बोली, ज़बान।

भाषी—वक्ता, बोलनेवाला, भाषण करनेवाला।

भास—प्रभा, दीप्ति। (२) शोभा, छबि। (३) दृष्टिगोचर, सूझ पड़नेवाला।

भासै—दृष्टिगोचर हो, दिखाई दे, सूझै। (२) प्रकाश करे, चमकै, झलकै।

भिखारि, भिखारी—भिक्षुक, मङ्गन।

भिजई—भिगोया, तर किया।

भितैहो—भयभीत होगे, डरोगे।

भिद्यो—चुभ्यो, धँस्यो। (२) वेध्यो, छिद्यो। (३) खंडखंड हुआ, फूटा।

भिन्न—पृथक्, न्यारा, जुदा, अलग। (२) भेदित, चीरा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

भिया—भैया, भाई, सहायकबन्धु।

भियो—भयो, हुआ है। (२) भार से व्यथित, बोझइल, बोझ से दबा हुआ। (३) उत्पत्ति, उपज, पैदा।

भीख—भिक्षा, याचना।

भीत—भय, डर। (२) भयभीत, डरा हुआ। (३) दीवार, भीति।

भीतर—बीच, मध्य, अन्दर।

भीति—'भीत' भय। (२) दीवार।
भीम—भीषण, भयानक, डरावना। (२) शिव, महेश्वर, ईशान। (३) भीमसेन, राजा पाण्डु के पुत्र जो कुन्ती के गर्भ से पवन द्वारा उत्पन्न हुए थे और बड़े पराक्रमी गदा युद्ध में जगत्प्रसिद्ध भट थे।
भीमासि—(भीम+असि) भयानक हो, डर उत्पन्न करनेवाली हो।
भीर—भीड़, हजूम, मनुष्यों का जुमावड़ा। (२) भय, त्रास, डर। (३) बाधा, झंझट, अड़चन।
भीरु—त्रस्त, डरपोक, डरा हुआ। (२) 'भीर'।
भील—भिल्ल, किरात, जङ्गल बासी मनुष्य जो वन में लकड़ी तोड़ कर और पशुओं का शिकार करके निर्वाह करते हैं। मुक्तिफौज की बदौलत अब इस जाति के लोग भी मनुष्यता सीख रहे हैं।
भीलनी—भिल्लिनी, शबरी, भील की स्त्री।
भीषन—भीषण, भयानक, डरावना।
भीषनाकार—(भीषण+आकार) भयानक आकृति का, डरावनी सूरतवाला।
भीषम—'भीष्म' शन्तनुनन्दन। (२) भयानक।
भीष्म—भयानक, भीषण, डरावना। (२) भीष्मपितामह, देवव्रत, राजा शन्तनु और गङ्गाजी के पुत्र। ये वशिष्ठ मुनि के शाप से पृथ्वी पर शरीरधारी हुए 'द्यु' नामक वसु हैं। इन्होंने पिता की कामलोलुपता की पूर्त्ति के लिये अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा करके धीवर की कन्या सत्यवती को प्राप्त कर पिता को अर्पण किया। द्वैपायन वेदव्यास इनके भाई थे। भीष्म पितामह अद्वितीय योद्धा थे इनका वर्णन महाभारत में विस्तार पूर्वक है। कौरव पाण्डवों के युद्ध में दुर्योधन की ओर से युद्ध कर प्राणहत हुए थे।
भुआल—राजा, नरेश, भूपाल।
भुइँ—'पृथ्वी' धरती, ज़मीन।
भुक्त—भक्षित, भोजन किया हुआ, खाया हुआ। (२) भोग्य, भोगने लायक।
भुक्ति—भोजन, अहार, खाने का पदार्थ।

भुज—'बाँह' बाहु, भुजा।
भुजग—'साँप' सर्प, नाग।
भुजगभोग—साप का शरीर, सर्प की देह।
भुजगराज, भुजगेन्द्र—शेषनाग, फणिपति, अनन्त।
भुजङ्ग—'साँप' सर्प, अहि।
भुजदंड—'बाँह' भुजा।
भुजबीस—बीस भुजावाला रावण।
भुजा—'बाँह' भुज, बाहु।
भुवन—जगत, लोक, दुनियाँ। (२) पानी, जल। (३) पाताल, नागलोक।
भुवनभर्त्ता—भुवनेश, लोकों के मालिक।
भुवनाभिराम—(भुवन+अभिराम) लोकों को आनन्द देनेवाले। (२) जगत में सब से बढ़ कर सुन्दर नयनानन्द दाता।
भुवनेस—भुवनेश, लोकेश, लोकों के स्वामी।
भुवनैक—(भुवन+एक) लोक में अद्वितीय, जगत के प्रधान।
भुवि—पृथ्वी, भुवि, धरती।
भुविभार—भुविभार, धरती का बोझा।
भू—'पृथ्वी' धरा, धरती।
भूख—क्षुधा, भोजन की इच्छा।
भूखा, भूखो—क्षुधित, क्षुधावन्त, भोजन का इच्छुक। (२) दरिद्र, कङ्गाल।
भूचर—पृथ्वी पर चलनेवाले जीव, जैसे—मनुष्य पशु, मृग, कुत्ता, बिल्ली आदि।
भूत—जीव, जीवात्मा। (२) प्रेत, पिशाच, जिन्द। (३) मृत, मृतक, मुर्दा। (४) शरीर, देह। (५) भूतकाल, बीता हुआ समय। (६) लब्ध, प्राप्त, मिला हुआ।
भूतनाथ—'शिव' भूतेश, महादेव।
भूतल—'पृथ्वी' धरातल, बसुधा।
भूति—ऐश्वर्य्य, विभूति। (२) धन, सम्पत्ति। (३) भस्म, राख।
भूतेस—भूतेश, शिव, ईश।
भूधर, भूधरन—'पर्वत' पहाड़।

भूधरद्रोनि—भूधरद्रोणि, पर्वत और नौका। (२) पर्वत रूपी नाव, पत्थर की नौका।

भूधरनधारी—गिरिधर, हनूमान और श्रीकृष्णचन्द्र।

भूधराधिप } —पर्वतों के मालिक, सुमेरु, हिमाचल। (२) शिव, कैलासपति।
भूधराधीस }

भूनन्दिनी—धरती की कन्या, सीता, जानकी।

भूनाथ—पृथ्वीपति, धरती के मालिक। (२) परमेश्वर, नारायण। (३) शिव, महादेव। (४) राजा, भूपति।

भूप }
भूपति } —राजा, नृपति, भुआल।
भूपाल }

भूपालमनि—राजमणि, राजाओं के शिरोमणि।

भूभार—पृथ्वी का बोझ, धरती का भार, भूमि की गरुआई। (२) पापात्मा, राक्षस, अत्याचारी।

भूमि—'पृथ्वी' धरती, वसुन्धरा।

भूमिकोस—भूमण्डल, धराधाम।

भूमिजा—'सीता' जानकी।

भूमिजारमन—रामचन्द्र, सीतारमण।

भूमिपति } —राजा, भूपति, भूपाल। (२) पृथ्वी का पालन करनेवाला परमेश्वर।
भूमिपाल }

भूम्यञ्जना—(भूमि+अञ्जना) अञ्जनी रूपी धरती, पृथ्वी रूपी अञ्जनी।

भूरि—समूह, प्रचुर, बहुत।

भूरुट—जलअलि, पानी पर तैरनेवाला भ्रमर, एकप्रकार का काले रंग का कीड़ा जो जल पर दौड़ता है। यह शब्द विनय-पत्रिका में नहीं है पाठान्तर करके कुछ प्रतियों में छपा है इससे अर्थ लिख दिया गया है।

भूरुह—वृक्ष, विटप, पेड़। (२) तृण, घास।

भूल—चूक, गलती। (२) विस्मृति, बिसरना।

भूषन—भूषण, गहना, ज़ेवर।

भूषित—अलंकृत, गहनों से सजा हुआ।

भूसुर—'ब्राह्मण' विप्र, द्विज।

भृकुटी—भौंह, भौं।

भृगु—एक ब्रह्मर्षि का नाम जिन्हों ने विष्णु की छाती में लात मारा जिसका दाग भगवान् के हृदय में अमिट रूप से पड़ गया। सारूप्य भक्तों के बीच वे इसी लाञ्छन द्वारा पहचाने जाते हैं भृगुमुनि का आश्रम बलिया में गङ्गाजी के तट पर है। (२) ब्रह्मा के पुत्र, एक प्रजापति।

भृङ्ग—भ्रमर, मधुकर, भँवरा। (२) कलिङ्ग, गौरैया-पक्षी। (३) तज, त्वच।

भृङ्गी—भ्रमरी, अलिनी, भँवरी। (२) नन्दी, शृङ्गी, नन्दिकेश्वर शिवगण।

भृत—भरण, पोषण, पालन। (२) वेतन, तनख़्वाह। (३) मूल्य, मोल, कीमत।

भृत्य—सेवक, दास, टहलू।

भे—भये, हुए।

भेँई—भींगी, ओद, तर। (२) निमग्न, सराबोर।

भेक—मेढक, दादुर, मेघा।

भेख—भेष, पहनावा, लिबास।

भेँट—मिलन, मिलाप, मुलाकात। (२) पुरस्कार, उपहार, नजर।

भेते—भयभीत किये, डराये। (२) भय से, त्रास से। (३) भये थे, हुए थे।

भेद—भिन्नता, अन्तर, अलगाव, फ़र्क़। (२) प्रकार, भाँति, तरह। (३) रहस्य की बात, गुप्तवार्त्ता, मर्म, राज़। (४) विरोध, अनबन, मनमोटाव। (५) राजनीति के चार उपयों में से एक।

भेदमति—भिन्नता भरी बुद्धि, अपने को बड़ा और दूसरों को तुच्छ माननेवाली समझ।

भेव—'भेद' मर्म, राज़। (२) स्वभाव, प्रकृति, आदत। (३) प्रकार, भाँति।

भेष—वेष, वेश, लिबास।

भेषज—औषध, दवा।

भै—भइ, भई, हुई।

भैरव—भयानक, भीषण, डरावना। (२) रुद्र, भूतेश, शिवजी का एक औतार।

भैषज्य—औषधि, भेषज, दवा। (२) वैद्य, चिकित्सक, दवा करनेवाला।

भो—भया, हुआ। (२) एक सम्बोधनार्थ वाचक अव्यय, हो। (३) आह्वान।

भोग—सुख, चैन, आराम। (२) विषय, विलास,

सुख की सामग्री, ऐशआराम । (३) शरीर, तनु, देह । (४) नवयौवना बाला के सङ्ग का विहार, कामकुतूहल ।

भोगी—भोगनेवाला, विहार करनेवाला । (२) सुखी, चैन उड़ानेवाला । (३) सर्प, साँप ।

भोगौघ—(भोग+ओघ), सुख की राशि, विलास का समुदाय ।

भोजन—आहार, जेवनार, भोजन के पदार्थ । (२) भक्षण, जेवन, भोजन करना ।

भोतो—भया था, हुआ था ।

भोर—प्रभात, सवेरा, सुबह । (२) भूलवश, धोखे से । (३) सीधा, सरल प्रकृतिवाला ।

भौं—भौंह, भृकुटी ।

भौ—भया, हुआ । (२) भव, संसार । (३) शिव ।

भौतिक—वह मानसिक पीड़ा जो शरीर में भूत, प्रेत, जीव, जन्तुओं द्वारा उत्पन्न हो । पिशाच और जीवजन्तु सम्बन्धी पीड़ा ।

भौंतुवा—भौंतुआ, भौंती, भौंतू । इसको घुमा कर रस्सी वा नार बनाने की चरही किसान लोग तैयार करते हैं । तीन चार अंगुल चौड़ी और एक हाथ लम्बी लकड़ी छील कर पटरी की भाँति बनाते हैं उसके दोनों छोर पर निशान कर के पतली रस्सी धनुष की प्रत्यञ्चा के समान लगा कर उस लकड़ी के बीच में डेढ़ इंच का गोला छेद करते हैं उस छेद में एक बीते की लम्बी घुंडीदार गोली लकड़ी डाल पृष्ठ भाग में उसे हाथ से पकड़ते हैं और धनुषाकार बनी लकड़ी के नीचे पाव आधपाव कंकड़ वज़न के लिये बाँध कर लटकाते हैं । प्रत्यञ्चावाली डोरी में सन लगा कर एक मनुष्य उसको घुमाता जाता है दूसरा बैठ कर समान रूप से सन जोरता जाता है इसको चरही करते हैं । (२) घूमनेवाला, एक ही धूरी पर चक्कर खानेवाला ।

भौंर—आवर्त्त, भँवर, पानी का चक्कर । (२) भ्रमर, भँवरा ।

भौंह—भृकुटी, [illegible]रोरी, भौं ।

भ्रम—भ्रान्ति, मिथ्यामति, और को और मान लेना । (२) भ्रमना, भूलना । (३) भरम, मभाय । (४) वह अलंकार जिसमें भ्रान्ति से और वस्तु को और ही मान ली जाती है ।

भ्रमत—'भ्रमना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप । भ्रमता है, घूमता है, चक्कर खाता है । (२) भूलता है, धोखे में पड़ता है ।

भ्रमन—भ्रमण, पर्यटन, घूमना, फिरना ।

भ्रमर—अलि, द्विरेफ, भँवर, भवरा, भृङ्ग, भौंरा, मधुकर, मधुप, मधुव्रत, मलिन्द, षट्पद । यह फूलों के रस का रसिक और अत्यन्त प्रेमी होता है । कमलपुष्प सन्ध्या में सम्पुटित हो जाता है और भ्रमर मकरन्द में लुब्ध उसमें फँस गया तो रात भर उसी में पड़ा रहेगा । यद्यपि वह काठ को छेद डालता है; किन्तु प्रेम मुग्ध हुआ कमलपुष्प को छेद कर बाहर नहीं निकलता । इसके प्रेम की प्रशंसा कवियों ने बहुत तरह से वर्णन की है । (२) आवर्त्त, भँवर, पानी का चक्कर ।

भ्रमि—भ्रम में पड़ कर, भूल कर ।

भ्रमित—भ्रमा हुआ, भ्रम में पड़ा हुआ ।

भ्रष्ट—नष्ट, बिगड़ा, खराब । (२) पापी, पतित, धर्म से गिरा हुआ । (३) ध्वस्त, दलामला ।

भ्राज, भ्राजमान—सुशोभित, अतिशय शोभायमान । (२) भूषणादि से सुन्दर सजा हुआ ।

भ्राता—बन्धु, भाई, सहोदर ।

भ्रान्ति—'भ्रम' मिथ्यामति ।

भ्रू—भृकुटी, भौंह, भौं ।

(म)

म—हिन्दी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यञ्जन और पवर्ग का पाँचवाँ अक्षर । इसका उच्चारण स्थान ओठ है । (२) विष्णु केशव । (३) ब्रह्मा, विधाता । (४) शिव, ईशान । (५) चन्द्रमा, शशि । (६) यम, काल ।

मई—मयी, युक्त, मिली हुई ।

मकर—'मगर' ग्राह ।

मकरन्द—पुष्परस, फूल का रस।
मकुट—'मुकुट' किरीट, ताज।
मख—'यज्ञ' क्रतु, याग।
मग—मार्ग, पथ, राह।
मगन—'मग्न' डूबा हुआ। (२) प्रसन्न, खुश।
मगर—मकर, ग्राह, मङ्गर, एक प्रकार का जलजीव जो जल का व्याघ्र कहा जाता है। यह बड़े बड़े जानवरो को घसीट ले जाता और पकड़ कर छोड़ना नहीं जानता। ग्राह-गज के युद्ध की कथा पुराणों में प्रसिद्ध है, वह मगर हूहू नाम का गन्धर्व था। इन्द्र की प्रेरणा से एक बार देवलऋषि को अपने गान विद्या से प्रसन्न करने गया, परन्तु ऋषि ध्यान में मग्न थे। जब वे कुछ न बोले तब गन्धर्व ने क्रुद्ध हो मुनि को तिरस्कृत किया। देवलऋषि ने कुपति हो शाप दिया कि तू मुझे ग्राह की तरह ग्रसना चहता है? अरे दुष्ट! जाकर ग्राह योनि को प्राप्त हो। गन्धर्व की विनती करने पर कहा कि अगस्त्यमुनि के शाप से राजा इन्द्रद्युम्न हाथी हुआ है कालान्तर में जब तू उसे ग्रसेगा उस समय विष्णु भगवान् स्वयम् जाकर हाथी की रक्षा करेंगे और दोनों शाप से साथ ही छुटोगे। 'हाथी' शब्द देखो।
मगु—मग, मार्ग, रास्ता।
मग्न—निमग्न, मगन, डूबा हुआ। (२) प्रसन्न, आनन्दित, खुश।
मघवा—'इन्द्र' शक्र, सुनासीर।
मङ्गल—कल्याण, क्षेम, कुशल। (२) कुज, भौम, नवग्रहों में से एक तारा। (३) भौमबार, मङ्गल का दिन।
मङ्गलाचरे—(मङ्गल+आचरे) शुभाचरण किये।
मङ्गलाचार—(मङ्गल+आचार) शुभाचरण।
मंङ्गलालय—(मङ्गल+आलय), कल्याण का स्थान।
मचला—माचल, अबोध बालक का किसी वस्तु को पाने के लिए हठियाना।
मचलाई—हठ, मगराई।
मज्जत—'मज्जन' शब्द का वर्तमान कालिकरूप। स्नान करता है, नहाता है।
मज्जन—स्नान, अन्हान, नहाना।
मझार—मध्य, बीच, अन्दर।
मञ्जरी—वल्लरी, बौर, तुलसी, आम का फूल।
मञ्जु }
मञ्जुल } —सुन्दर, मनोहर, सुहावना, शोभन। (२) समीचीन, साधु, बहुत अच्छा।
मञ्जुलाकर—(मञ्जुल+आकर) शोभा की खान।
मणि—मनि, मोती हीरा आदि रत्न, जवाहिरात।
मणिकर्णिका—मनिकर्निका, मनिकनिका, काशी में प्रसिद्ध तीर्थस्थान जो विश्वनाथजी के मन्दिर से पूर्व दिशा में गङ्गाजी के किनारे कुंड रूप में स्थित है। उसमें यात्री गण स्नान करते हैं यह घाट इसी कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है।
मण्ड—माँड़, मासर। (२) रेंड़, एरण्ड।
मण्डन—अलङ्कार, आभरण, गहना। (२) अलंकृत, विभूषित, गहनों से सुसज्जित। (३) सुन्दर, मनोहर। (४) प्रतिपादन, समर्थन।
मण्डप—माँड़व, मँड़वा, उपनयन और विवाहोत्सव के समय हरे हरे बाँसों को गाड़ कर सरपत से छाई हुई छाजन जिसके नीचे बैठ कर मंगल कार्य सम्पन्न हाता है।
मण्डल—गोलाकार घेरा, गोल स्थान। (२) चन्द्रमा और सूर्य्य का बिम्ब, चन्द्रमंडल, सूर्य्यमंडल। (३) उपसूर्य्यक, वह गोल परिधि जो चन्द्रमा और सूर्य्य के चारों ओर बादलों के रहने पर प्रगट होता है। (४) देश, प्रान्त, सूबा।
मण्डलाकार—गोलाकार, गोलाई का घेरा।
मण्डली—सभा, समिति, समाज (२) लीला मंडली, नाच गान का वह गरोह जिसमें ईश्वराव तारों की लीला की जाती है।
मण्डित—भूषित, अलंकृत, आभरण से सुसज्जित। (२) शोभित, शोभनीय।
मत—सम्मति, राय, सलाह। (२) सिद्धान्त, अभिप्राय, आशय। (३) धर्म, पन्थ, मजहब। (४) पूज्य, पूजा हुआ, मान्य। (५) नहीं, न, निषेधार्थ वाचक।
मति—'बुद्धि' मनीषा, अकिल। (२) इच्छा, चाहना, ख़्वाहिश। (३) स्मृति, धारणा, मेधा। (४)

विचार, सूझ। (५) एक सञ्चारी भाव जिसमें तत्त्वानुसन्धान द्वारा ज्ञान लाभ होता है।
मतिधीर—धीरबुद्धि, शान्त विचारवाला।
मतिमन्द—नीच बुद्धि, खोटी मतिवाला।
मतो—'मत' सम्मति, सलाह।
मत्त—मस्त, मतवाला। (२) उग्र, विकट। (३) दम्भी, गर्वीला। (४) तृप्त, आसूदा। (५) हर्षित, आनन्दित। (६) प्रेम, प्रीति।
मत्तकरि—मस्तहाथी, मदीला गज। (२) मतवाला करके, बेहोश बना कर।
मत्सर—मात्सर्य, मत्सरता, षड्वर्ग में से एक विकार। (२) ईर्ष्या, डाह, दूसरे की भलाई देख कर जलना। (३) कृपण, सूम, कञ्जूस।
मथत—'मथना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। मथता है, महता है, बिड़ोलता है।
मथन—मन्थन, महन, बिड़ोलन।
मद—मस्ती, मतवालापन। (२) मदिरा, शराब। (३) गर्व, अहङ्कार, घमण्ड। (४) हर्ष, आनन्द। (५) कस्तूरी, मृगमद। (६) हाथी के कनपटी से चूनेवाला पानी।
मदन—'कामदेव' मन्मथ, अनङ्ग। (२) मैनफल, एक प्रकार का आँवले के बराबर फल। (३) कनक, धतूर।
मदनमर्दन }
मदनरिपु } —'शिव' कामारि, मनोज को भस्म करनेवाले।
मदनार्क—(मदन+अर्क) कामदेव रूपी सूर्य्य।
मदमाते—मस्ती में चूर, गर्व से मतवाले।
मदमोचन—हर्ष हटानेवाले आनन्द मिटानेवाले। (२) गर्व छुड़ानेवाले, घमंड नसानेवाले।
मदातीत—(मद+अतीत) गर्व रहित, निरभिमान। (२) शान्त, गम्भीर।
मदिरा—दारू, मद्य, वारुणी, शराब, सुरा और हाला इत्यादि। जो नलिका यंत्र से तैयार की जाती है उसको मधु, माध्वीक, माधवक कहते हैं और जो सिरका के रीति से बनती है उसको आसव, अरिष्ट तथा सीधु कहते हैं। क्रिया और वस्तु भेद से मदिरा अनेक प्रकार की होती है।
मद्य—'मदिरा' शराब।
मधु—मधुर, मीठा। (२) पुष्परसोद्भव, शहद। (३) चैत्र, चैत का महीना। (४) वसन्तऋतु, चैत्र और बैशाख मास। (५) मदिरा, शराब। (६) मधूक, महुआ। (७) दूध, क्षीर। (८) पानी, जल। (९) अमृत, सुधा। (१०) एक दैत्य का नाम जो अत्यन्त बली और अजेय था, आदि शक्ति की सहायता से विष्णु भगवान ने उस का संहार किया था।
मधुकर }
मधुप } —'भ्रमर' भृङ्ग, भौंरा।
मधुर—मीठ, जीभ को अति प्रिय लगनेवाली मिठाई। (२) मधु, छे रसों में से एक रस।
मधुरतर—अत्यन्त मीठा, बहुत मीठापन।
मध्य—बीच, माँझ, दर्मियान। (२) मध्यम, जो न उत्तम हो और न ख़राब। (३) न्याय, इन्साफ़। (४) मध्यप्रान्त।
मध्यम—मध्य, जो न उत्तम हो और न निकृष्ट हो। (२) एक स्वर का नाम जो सात प्रकार का माना जाता है।
मध्यस्थ—तटस्थ, निरपेक्ष, उदासीन, निष्पक्ष, जो न शत्रु हो और न मित्र। (२) बीच-बिचाव करनेवाला, बिचवई।
मध्यान्त—(मध्य+अन्त) मध्य और अन्त।
मन—अन्तःकरण का एक भेद वा वृत्ति। वेदान्तसार के अनुसार अन्तःकरण की चार वृतियाँ हैं—मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। सङ्कल्प विकल्पात्मक वृत्ति को मन कहते हैं। आन्तरिक व्यापार में मन स्वतंत्र है। अन्तःकरण, जी, चित्त, हृदय, दिल इसके पर्यायी नाम हैं। मन की चञ्चलता बड़ी प्रबल है इसको वश में रखना योगियों के लिये भी कठिन है। जीव को स्वर्ग और नरक में पहुँचानेवाला एकमात्र मन ही कारण है।
मनन—चिन्तवन, विचारण, मन में श्रद्धा-पूर्वक बार बार मंत्र वा का विषय स्मरण करना, गवेषणा के साथ हृदय में विचारना।

मननसील—मननशील, विचारशील, चिन्तवन करनेवाला।
मनभङ्ग—मन को हतोत्साह करनेवाला, हृदय को हरानेवाला।
मनभाई—वाञ्छित, मन में सुहानेवाली बात।
मनभाये—मन में सुहानेवाला, मनभावना।
मनमथ—'कामदेव' मनोज, मनसिज।
मनमारे—उदास, रञ्जीदा।
मनशा—(अर्बी)। हार्दिकअभिप्राय, दिली ख़्वाहिश (२) सम्मति, राय, सलाह।
मनसा—'मनशा' इच्छा, ख़्वाहिश।
मनसिज—'कामदेव' अनङ्ग, मीनकेतु।
मनस्वी—यथेच्छाचारी, मनमौजी, स्वतंत्र, अपनी इच्छा के अनुसार काम करनेवाला।
मनहुँ—मानों, मनो, उत्प्रेक्षा अलङ्कार का वाचक जो कल्पनाशक्तिद्वारा उपमेय का कोई उपमान ठहराता है।
मना—(अर्बी)। बर्जन, रोक, ममानियत। (२) बर्जना, रोकना, मना करना, हटकना।
मनाक—किञ्चित्, थोड़ा, ज़रा भी। (२) सूक्ष्म, बारीक, महीन।
मनावत—मनाता हूँ चाहता हूँ,। (२) मनाने की क्रिया, प्रसन्न रखने का भाव।
मनि—'मणि' रत्न, जवाहिर।
मनिकर्निका—'मणिकर्णिका' काशी में एक घाट वा कुंड विशेष।
मनियत—मानता हूँ अङ्गीकार करता हूँ।
मनी—'मणि' रत्न, जवाहिर।
मनु—'मन' चित्त, हृदय।
मनुज—'मनुष्य' आदमी।
मनुजाद—'राक्षस' मनुष्यभक्षी।
मनुजैर्दुरापं—(मनुज+दुः+आप) मनुष्य रूपी दुखदाई जल (२) मनुष्य के लिये बुरा पानी।
मनुष्य—मर्त्य, मानुष, मनुज मानव, मनई, नर, आदमी मनु से उत्पन्न हुई सन्तान। (२) पुरुष, मर्द।
मनुसाई—पुरुषार्थ, पराक्रम, मनसेधुई।
मने—'मना' ममानियत, रुकावट।
मनोज
मनोभव } —'कामदेव' अनङ्ग।
मनोरथ
मनोर्थ } —'इच्छा' चाह, ख़्वाहिश।
मनोहर—'सुन्दर' छबीला, मन को हरनेवाला।
मन्द—अभागा, भाग्यहीन, कमबख़्त। (२) नीच, बुरा, ख़राब। (३) मूर्ख, अनाड़ी बेवकूफ़। (४) आलसी, सुस्त, काहिल। (५) तुच्छ, लघु। (६) गड्ढा, गड़हा, खाल। (७) पापी, पातकी, मलिन। (८) अप्रवीण, कुन्दज़ेहन।
मन्दर—मन्दराचल, मन्दर नाम का पर्वत जिसकी मथानी बनाकर और वासुकी नाग को रस्सी की भाँति लपेट कर पूँछ की ओर देवता और मुख की ओर दैत्यों ने लग कर समुद्र मथा था जिससे अमृत आदि रत्न निकले। 'राहु' शब्द देखो।
मन्दाकिनी—आकाशगङ्गा। अत्रि मुनि की पत्नी अनुसूया देवि ने अपने तपोबल से इन्हे धरती में लाकर लोक का बड़ा उपकार किया। यह पुनीत नदी चित्रकूट में बहती है। गङ्गाजीकी तीन धाराओं में से एक धारा जो स्वर्ग को गई थी।
मन्दात्म—(मन्द+आत्मा) पापात्मा, अधम।
मन्दार—पारिजात, हरसिंगार, परजाता। (२) कल्पवृक्ष, देवतरु। (३) महानिम्ब, बकायन।
मन्दिर—'घर' गृह, मकान। (२) देवालय।
मन्दोदरी—मय नामक दैत्य की कन्या, रावण की पटरानी, मेघनाद की माता।
मन्मथ—'कामदेव' मार, मीनकेतु।
मन्यु—क्रोध, रिस, गुस्सा। (२) शोक, चिन्ता, फ़िक्र। (३) दीनता, ग़रीबी। (४) यज्ञ, मख।
मन्त्र—सम्मति, राय, सलाह। (२) गुप्तवार्ता, छिपीबात। (३) वेदमंत्र, वेदों की वाणी, वेद-वाक्य। (४) मन्त्र के प्रभाव से देवता, दैत्य, भूत, ग्रहबाधा आदि वशवर्त्ती होते हैं। सब तरह के उत्पातों की शान्ति मंत्र द्वारा होती है।
मन्त्रजापक—मंत्र का जपनेवाला, मंत्रजापी।

मन्त्राभिचार—(मंत्र+अभिचार) मंत्र, यंत्र और मारण मोहन आदि प्रयोग।
मन्त्रावली—(मंत्र+अवली) मंत्रों की श्रेणी, मंत्रसमूह।
मम—मेरा, हमारा। (२) मैं।
ममता—ममत्व, अपनता, अपना समझना। (२) मोह, अज्ञान, अविवेक। (३) प्रेम, प्रीति, स्नेह। (४) गर्व, अभिमान, घमण्ड।
ममतायतन—(ममता+आयतन) ममता के स्थान, गर्व का मन्दिर।
मय—युक्त, मिश्रित; मिला हुआ, दूसरे शब्दों के पीछे जब यह शब्द आता है तब उपर्युक्त अर्थ ग्रहण होता है। (२) पर्ण, पूरा, भरपूर। (३) अधिक, बहुत, ज़्यादा। (४) उष्ट्र, ऊँट। (५) एक राक्षस का नाम जो शिल्पकला में बड़ा चतुर था, मन्दोदरी इसकी कन्या रावण के साथ विबाही गई थी।
मयङ्क—'चन्द्रमा' निशाकर, चन्द्र।
मयन—'कामदेव' अनङ्ग, मनोज।
मयनमर्दन, मयनरिपु—'शिव' कामदेव के नाशक, मार के शत्रु।
मयूर—'मोर' केकी, सुरैला।
मयूख, मयूष—किरण, मरीचि, रश्मि। (२) कान्ति, दीप्ति। (३) तेज, लपट।
मरइ—मृतक हो, मुर्दा हो, मरे।
मरकत—नीलमणि, पन्ना (ज़मुर्रद) मरकत मणि, हरे नीले रंगवाला भारी, चिकना, कान्तिवान उत्तम कहा जाता है। कवियों ने भगवान के शरीर से इसकी उपमा दी है।
मरजाद, मरजादा—मर्याद, मर्यादा, स्थिति।
मरत—'मरना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। मरता है, मृतक होता है।
मरन—'मृत्यु' मरण, मौत।
मरनकाल—मरणकाल, मरने का समय।
मरम—'मर्म' रहस्य, छिपा बात।
मरयाद, मरयादा—मर्याद, मर्यादा, इज़्ज़त।

मरामरा—इस शब्द के बार बार उच्चारण करने पर तीसरे अक्षर के बाद 'राम' शब्द हो जाता है। इसी का जाप करके व्याधा से वाल्मीकि ब्रह्मर्षि हुए हैं।
मराल—'हंस' मानसौकस। (२) भौंरे का बच्चा, बालअलि।
मरि—मर कर, मुर्दा होकर।
मरिय—मरिये, प्राण तजिये।
मरीचि—किरण, मयूख, रश्मि। एक ऋषि का नाम जो ब्रह्मा के दस पुत्रों में से प्रथम हैं।
मरु—मारवाड़, मरुप्रदेश। (२) पर्वत, पहाड़। (३) मर जाओ।
मरुत—'पवन' वायु, हवा।
मरुदञ्जनी—(मरुत्+अञ्जनी) पवन और अञ्जनी।
मरुदग्नि—(मरुत्+अग्नि) पवन और आग।
मरो—मुर्दा, मराहुआ।
मर्कट—वानर, कीश, बन्दर।
मर्कटाधीस—(मर्कट+अधीश) वानरेन्द्र, वानरों के मालिक, हनूमान और सुग्रीव।
मर्दन—मलना, मीड़ना, मसलना। (२) ध्वन्स, विनाश, संहार। (३) अदर्शन, अनदेख, जो दिखाई न दे।
मर्दनमयन—'शिव' कामदेव के नसानेवाले।
मर्म—मरम, भेद, रहस्य, छिपीबात। (२) सन्धि-स्थान, जोड़ की जगह, शरीर के वे स्थान जहाँ हड्डियों का जोड़ रहता है। (३) प्राणस्थान।
मर्मभित, मर्मज्ञ—भेद का जाननेवाला, रहस्यविद।
मर्मी—मर्मज्ञ, भेद जाननेवाला।
मर्याद, मर्यादा—प्रतिष्ठा, मान, इज़्ज़त। (२) सीमा, सींव, हद। (३) स्थिति, संस्था, धारणा।
मल—मैल, कीट, कुचिष्ट। (२) पाप, पातक, अघ। (३) विष्ठा, पुरीष, पाख़ाना।
मलभार—पाप का बोझा।
मलय—मलयाचल, मलयगिरि, एक पर्वत का नाम जो दक्षिण भारत में विद्यमान है। इस पर्वत पर उत्पन्न होनेवाले चन्दन को मलयज'

गन्धसार, श्रीखंड, सर्पावास, श्वेत चन्दन और सन्दल सफ़ेद कहते हैं। (२) सुगन्ध, महँक, ख़ुशबू।
मलयबात—सुगन्धित पवन, ख़ुशबूदार हवा।
मलजुग—कलियुग, कलिकाल।
मलिन—मल से दूषित, मलीन, मैला। (२) दुखी, उदास, रञ्जीदा। (३) अपवित्र, नापाक।
मलिन्द—'भ्रमर' भृङ्ग, भौंरा।
मलीन—'मलिन' मैला। (२) उदास, रञ्जीदा।
मलीनता—अपवित्रता, नापाकी।
मल्ल—माल, पहलवान, जो बाहु युद्ध में प्रवीण हो। (२) योद्धा, सुभट, शूरवीर।
मसक—मसा, मच्छड़।
मसान—श्मसान, मरघट, वह स्थान वा नदी का किनारा जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं।
मस्तक—सिर, कपाल, मूँड़। (२) भाल, ललाट, माथ। (३) महँ, में, मध्य, बीच।
महत्—महान्, श्रेष्ठ, उत्तम। (२) वृहद, विशाल, बड़ा। (३) विपुल, समूह। (४) प्रतिष्ठा, बड़ाई, इज़्ज़त। (५) पूजनीय, पूजा करने योग्य।
महतत्व—परब्रह्म, परमात्मा, महान् तत्व।
महतारी—माता, जननी।
महर्षि—महाऋषि, ब्रह्मर्षि, मुनिश्रेष्ट।
महल—(अर्बी)। गृह, घर, मकान। (२) राजप्रासाद, राजमहल, राजमन्दिर।
महलमहल—घर घर, मन्दिर मन्दिर।
महा—महत्, उत्तम, श्रेष्ठ। (२) वृहद्, विशाल, बड़ा। (३) अत्यन्त, अधिक, बहुत।
महाकल्पान्त—(महाकल्प+अन्त) महाकल्प का अन्त, महाप्रलय, चारों युग हज़ार बार अर्थात् चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष बीतने पर ब्रह्मा का एक दिन होता है और इतना ही समय बीतने पर रात होती है। इसी दिन रात के ३० दिन का महीना, १२ महीना का वर्ष होता है। इसी वर्ष से सौ वर्ष ब्रह्मा जीते हैं। जब ब्रह्मा का नाश होता है तब महाप्रलय वा महाकल्प का समय आता है और ब्रह्मा का नाश होना ही महाकल्प कहलाता है।
महाकाय—वृहदकाय, भारी शरीरवाला। (२) नन्दी, भृङ्गी, नादिया। (३) एक राक्षस का नाम जो रावण का सेनापति था।
महाकाल—प्रलयकाल में रुद्र का भयानक रूप। (२) सब का नाश करनेवाला, यमराज।
महाघोर—अत्यन्त भीषण, बहुत डरावना।
महातम / महात्म—महत्व, महिमा, बड़ाई। प्रशंसा, कीर्त्ति, तारीफ़। (२) (महा+तम) बहुत अन्धकार, बड़ा अँधेरा।
महादेव—'शिव' हर। (२) सर्व श्रेष्ट देवता।
महान्—अतिश्रेष्ट, सर्वोत्तम, सब से बड़ा। (२) विष्णु, केशव, नारायण।
महानाटक—वृहदनाटक, बड़ी नाच।
महाप्रलय—'महाकल्पान्त' सृष्टि का नाश।
महाफल—श्रेष्ट फल, उत्तम परिणाम।
महाबली—अत्यन्तपराक्रमी, बड़ा बलवान।
महामङ्गल—महान् मङ्गल, बड़ा कुशल।
महामाया—आदिशक्ति, महालक्ष्मी, नारायणी। (२) ब्रह्माणी, शारदा, सरस्वती। (३) उमा, पार्वती, गिरिजा। (४) भगवती, दुर्गा।
महामोह—अत्यन्तअज्ञान, घनी अविद्या।
महाराज—सार्वभौम, चक्रवर्त्ती राजा। (२) ब्राह्मण।
महावीर—महाबली, बड़ा बलवान। (२) हनूमान, पवनकुमार।
महि—'पृथ्वी' भूमि, धरती।
महिदेव—'ब्राह्मण' विप्र, महीसुर।
महिपाल—'राजा' नृपाल, भूपाल।
महिभार—पृथ्वी का बोझ, पापात्मा।
महिमण्डल—पृथ्वीमंडल, भूमण्डल।
महिमा—महत्व, श्रेष्ठता, बड़ाई। (२) कीर्त्ति, सुयश, नेकनामी। (३) प्रतिष्ठा, इज़्ज़त।
महिष—कासर, भैंसा। (२) महिषासुर नाम का दैत्य जिसका संहार कालिका देवी ने किया था।
महिषेश—महिषेश, महिषासुर नामक दैत्य। (२) यमराज, कृतान्त काल।
मही—'पृथ्वी' धरा, वसुन्धरा।
महीधर—'पर्वत' पहाड़। (२) शेषनाग, अनन्त।

महीप }
महीपति } —'राजा' भूपाल, नरेश ।
महीसुर—'ब्राह्मण' द्विज, भूसुर ।
महेस—'शिव' महेश, शङ्कर ।
महेसभामिनी—'पार्वती' उमा । (२) गङ्गा, देवापगा ।
महोत्सव—महान् उत्सव, बड़ा पर्व ।
महोदर—एक राक्षस का नाम जो रावण का पुत्र और बड़ा पराक्रमी जिसका पेट बहुत बड़ा था ।
मा—'लक्ष्मी' रमा, कमला । (२) माता, जननी, महँतारी । (३) माम्, मुझे, मुझको । (४) निवारण, वर्जन, मना किया हुआ ।
माइ }
माई } —'माता' जननी ।
माखी—मक्षिका, माछी, मक्खी ।
माँगत—'माँगना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप । माँगता है, याचना करता है ।
माँगन—माँगने की वस्तु, वह वस्तु जो मांगी जाय, माँगनेवाले का इच्छित पदार्थ ।
माँगने }
माँगनो } —मङ्गन, भिक्षुक, भिखमङ्गा ।
माचल—मचला, वह वस्तु जिसको पाने के लिये अबोध बालक हठ करे चाहे वह प्राप्त होने योग्य हो अथवा नहीं ।
माणिक—पद्मराग, मानिक, लाल, चुन्नी । लाल रङ्ग का एक मूल्यवान पत्थर, यह सिंहल देश में उत्पन्न होनेवाला सर्वश्रेष्ठ माना जाता है ।
माण्डवी—मांडवी, राजा जनक की कन्या जिनका पाणिग्रहण भरतजी के साथ हुआ था ।
मात—हार, कैद । (२) 'माता' जननी ।
माता—मातृ, मातरि, मा, माय, मातु, मात, माई, मैया, महँतारी, अम्ब, अम्बा, जननी, जनयित्री, जन्म देनेवाली । (२) उन्मत्त, मतवाला । (३) गाय, गौ, गैया । (४) शीतला, विस्फोटक, चेचक ।
माँति—उन्मत्त हो, मतवाली होकर ।
मातु—'माता' जननी, महँतारी ।
मातुपितु—माता-पिता, मा और बाप ।
माते—मतवाले हुए, उन्मत्त हुए ।
माथ—मस्तक, सिर । (२) ललाट, भाल ।
माधव—'विष्णु' केशव, लक्ष्मीकान्त । (२) वैशाख मास, वसन्त ऋतु का दूसरा महीना ।
माधुरी—मीठापन, मिठाई ।
माधुर्य—मधुरता, माधुरी, मिठास । (२) मृदु, कोमल, मुलायमियत ।
मान—प्रतिष्ठा, बड़ाई, इज्ज़त । (२) अभिमान, गर्व, घमण्ड । (३) आदर, सत्कार, सन्मान । (४) परिमाण, तोल, माप । (५) साहित्य शास्त्र में नायक के अपराध से जो नायिका के हृदय में प्रेम युक्त कोप उत्पन्न होता है उसको मान कहते हैं । (६) समान, तुल्य, बराबर । (७) दूसरों से प्रतिष्ठा पाने की इच्छा, बड़प्पन प्राप्त होने की स्पर्द्धा ।
मानत—'मानना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप, मानता है, अंगीकार करता है ।
मानद—मान देनेवाला, प्रतिष्ठा करनेवाला ।
मानस—'मन' चित्त, हृदय । (२) झील, सरोवर, तड़ाग, एक झील का नाम जो हिमालय पहाड़ के उत्तरीभाग तिब्बत के पश्चिम में वर्तमान है उसमें मोती उत्पन्न होता है, राजहंस निवास करते हैं और सरयूनदी इसी से निकली है ।
मानी—स्वीकार किया, क़बूल किया । (२) आदर दिया, सन्मान किया ।
मानाथ—'विष्णु' लक्ष्मीकान्त ।
मानिक—'माणिक' लाल ।
मानी—अभिमानी, घमण्डी । (२) मानेच्छुक, मान की इच्छा रखनेवाला । (३) सन्मान किया गया, सम्मानित ।
मानु—मानो, अंगीकार करो । (२) मनहुँ, जनु ।
मानुष—'मनुष्य' नर, आदमी ।
मानों—मनहुँ, मनु, जनु ।
मान्य—माननीय, पूजने योग्य ।
माम्—मुझे, मुझको । (२) मेरी, हमारी ।
मामीस—(माम्+ईश) मेरे स्वामी, हमारे मालिक ।
माय—माता, जननी । (२) 'माया' ईश्वरीय शक्ति ।

माया—ईश्वरीयशक्ति, कुदरत, इसके विद्या और अविद्या दो भेद हैं, पहली गुणमयी और दूसरी दोष रूप है। (२) कपट, धोखा, फरेब। (३) धन, सम्पति, दौलत। (४) अज्ञान, अविवेक, मोह। (५) करुणा, मया, छोह। (६) साबर मंत्र का खेल, इन्द्रजाल, नजरबन्द। (७) माता, महँतारी।

मायानाथ } मायापति }—ईश्वर, माया के स्वामी।

मायापास—माया का बन्धन, मोह की बेड़ी।

मार—'कामदेव, मनोज।

मारअरि—कामदेव के शत्रु, शिव।

मारकण्डेय—'मार्कण्डेय' चिरजीवी मुनि।

मारग—मार्ग, पन्थ, राह।

मारत—'मारना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। मारता।है, घात करता है, चोट पहुँचाता है।

मारतण्ड—'सूर्य्य' दिवाकर, भानु।

मारन—मारण, बध, घात।

मारा—बध किया, मार डाला। (२) कामदेव, मार।

मारि—मार कर, बध कर के।

मारीच—एक राक्षस का नाम जो ताड़का राक्षसी का पुत्र सुबाहु का भाई और रावण का अनुचर था।

मारु—'कामदेव' मार।

मारुत—'पवन' वायु, हवा।

मारुति—हनुमान, पवननन्दन।

मार्कंण्डेय—चिरजीवीमुनि, मारकण्डेय, मृकंड ऋषि के पुत्र। पुराणों के कथनानुसार ये अजर अमर हैं, इनका नाश महाप्रलय में भी नहीं होता। एक बार इन्हों ने तपस्या कर के भगवान को प्रसन्न किया। वर माँगा कि प्रभो! अपनी माया का प्रभाव मुझे दिखाइये। एवमस्तु कह कर भगवान् अन्तर्हित होगये। विना प्रलय काल के समुद्र उमड़ा और महाप्रलय हो गया। मारकण्डेय मुनि अनन्तकाल पर्यन्त उसी जल में बहते रहे, अन्तको अक्षयवट के पत्ते पर मुकुन्द भगवान् शयन कर रहे थे उनके चरणों के सहारे मुनि को ठहरने का दम मिला। बड़ी स्तुति करने पर ईश्वर ने अपनी माया का विस्तार समेट लिया और मुनि अपना पूर्व स्थान पाकर प्रसन्न हुए।

मार्ग—अयन, डगर, डगरा, पथ, पन्थ, पथि, पैंड़ा, मग, मगु, मारग, रास्ता, राह, बाट, वह पन्थान जिस पर मनुष्य बैलगाड़ी आदि चल कर एक स्थान से दूसरे स्थान में गमन करते हैं। (२) राजमार्ग, सड़क।

मार्जार—आखुभुक्, ओतु, बिड़ाल, बिलाव, बिलार, बिलरवा, बिलैया, बिलारि, बिल्ली, एक छोटा जानवर जो शेर की आकृति का होता है। चिड़िया, गिलहरी आदि और विशेष कर चूहे का शिकार करता है। बिलाव दूध, दही, घृत को घरों में ढूँढ़ ढूँढ़ कर खाता है। यह गाँव और जङ्गल में रहता है इसे लोग पालते भी हैं। छिप कर धोखे से जीवों को पकड़ कर शिकार करता है।

मार्जारधर्मा—बिलावधर्मी, बिलार के समान छिप कर धोखे में घात करनेवाला।

मार्त्तण्ड—'सूर्य्य' भानु, किरणमाली।

माल—'माला' फूलों का हार। (२) विपुल, समूह, ढेर। (३) धन, सम्पति, दौलत,। (४) मल्ल, पहलवान, कुश्तीबाज।

मालधारी—मालाधारी, माला धारण करनेवाला।

माला—माल्य, स्रक्, स्रग, माल, फूलों का हार। (२) रुद्राक्ष, स्फटिक, तुलसी के काठ आदि की बनी माला जिसके द्वारा मंत्रजाप की संख्या की जाती है। (३) श्रेणी, पंक्ति, कतार। (४) समूह, विपुल, बहुत।

मालिका—पंक्ति, अवली, श्रेणी। (२) समूह, राशि।

मालिन—माली की स्त्री, बाग सींचनेवाली।

माली—बागरक्षक, बागवान, वाटिका सींचनेवाला, एक जाति विशेष जो फूलों के व्यापार से जीवन निर्वाह करती है।

मालूम—(अर्बी—मालूम)। जाना हुआ, परिचय प्राप्त। (२) ज्ञान, समझ।

मालेव—(माल+इव) माला के समान ।
मालोरधारी—(माला+उर+धारी) हृदय में माला धारण करनेवाला ।
मास—महीना, माह, दो पक्ष का समय (२) मांस, पल, गोश्त । (३) माष, उड़द, उर्दी ।
माँह
माहिँ } —मध्य, में, बीच ।
माहीँ
माहुर—'विष' ज़हर ।
मात्र—केवल, इतना ही, सिवा इसके और कुछ नहीं । (२) अल्प, थोड़ा, कुछ ।
मिट—नष्ट, मिटनेवाला ।
मिटत—'मिटना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप । (२) मिटता है, नष्ट होता है, नाश होता है ।
मिटति—मिटती है, नाश होती है ।
मित—परमित, सीमा, अवधि । (२) मापा हुआ, तोला हुआ, वजन किया हुआ ।
मितप्रद—थोड़ा देनेवाला, नाप कर देनेवाला ।
मिताई—सखत्व, मित्रता, दोस्ती ।
मिति—'मित' सीमा, अवधि । (२) अन्त, ओर, अखीर । (३) वचन, पण, वादा ।
मिती—तिथि, हिन्दी की तारीख । (२) व्याज, सूद ।
मिथिला—तिरहुत, जनकपुर ।
मिथ्या—असत्य, मृषा, झूठ ।
मिथ्यावाद—असत्य कथन, झूठ कहना ।
मिलत—'मिलना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप । मिलता है, भेंटता है । (२) प्राप्त होता है ।
मिलन—सम्मिलन, मिलाप, भेंट । (२) प्राप्त होना, पाना, मिलना ।
मिलित—मिश्रित, मिला हुआ ।
मिष
मिस } —बहाना, ओढ़र, हीला । (२) हेतु, कारण, सबब । (३) कपट, छल, फरेब । (४) स्वाँग, कौतुक, खेलतमाशा ।
मिसकीनता—(अर्बी) दीनता, कँगलई, ग़रीबी । (२) अशक्तता, निर्बलता, जिसको हिलने डोलने की ताकत न हो । (३) बुढ़ाई, ज़ईफ़ी । (४) भुक्खड़, मुहताज ।
मित्र—सखा, सुहृद, मीत, हितू, दोस्त, जो आपद्-काल में निःस्वार्थ भाव से सहायता कर साथ रहनेवाला हो । (२) प्यारा, प्रेमी, स्नेही ।
मित्रता—सख्य, मिताई, दोस्ती ।
मीच
मीचु } —'मृत्यु' मरण, मौत ।
मीजत—'मीजना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप । मीजता है, मलता है, मसलता है । (२) मीजते हुए, मलते हुए, मसलते हुए ।
मीजि—मल कर, मसल कर ।
मीजो—मला, मसला । (२) हाथ फेरा, ठोंका ।
मीठे—मधुर, मीठ । (२) प्रिय, सुहानेवाला ।
मीत—'मित्र' सखा, दोस्त ।
मीन—अण्डज, झष, मछली, मत्स्य, शकुली, एक प्रकार का जलजीव जो पानी से एकाङ्गी प्रेम रखता है । अन्य जलजीव जल से बाहर दिन दो दिन वा मास दो मास जीते रहते हैं; किन्तु मछली तुरन्त मृतक हो जाती है । शिकारी लोग बनसी में चारा लगा कर इसे फँसाते और झटका देकर पानी से बाहर निकालते हैं । कवियों ने इसके प्रेम की प्रशंसा की है जल इसके मरने की परवा नहीं करता परन्तु मछली जल के बिना प्राण तज देती है ।
मीनता—मछलीपन, तैरना डूबना जल में विहार करना ।
मीनराव—मीनराज, पहिना, रोहू आदि ।
मुए—मृतक हुए, मरे हुए । (२) मृतक, मुर्दा ।
मुक़ाम—(अर्बी) । स्थान, जगह, ठौर । (२) टिकान, ठहराव, क़याम ।
मुकुट—किरीट, ताज, राजा महाराजाओं के मस्तक पर शोभित होनेवाला एक आभूषण ।
मुकुटमनि—मुकुटमणि, शिरोमणि, सब से श्रेष्ठ । (२) मुकुट में लगा हुआ रत्न ।
मुकुन्द—'विष्णु' केशव, मोक्षदाता ।
मुकुर—दर्पण, आरसी, आइना ।
मुकुलित—कलिका, अधखिली फूल की कली ।
मुक्त—छूटा हुआ, रिहा, बरी, बन्धन से छुटकारा पानेवाला । (२) छुटकार, रिहाई ।

मुक्तकृत—मुक्त किया, छोड़ा हुआ ।
मुक्ता—मौतिक, मुक्ताफल, शुक्तिबीज, मोती । फ़ारसीभाषा में इसको मर्वारीद और दुर कहते हैं । यह समुद्र के सीपी में उत्पन्न होता है और हाथी,शूकर, मछली, मेढक, शंख और साँप के मस्तक में भिन्न भिन्न प्रकार का उत्पन्न होता है ।
मुक्तावली—(मुक्ता+अवली) मोतियों की माला ।
मुक्ति—'मोक्ष' निर्वाणअ,पवर्ग ।(२) उद्धार,निस्तार, नजात पाना, संसारी बन्धनों से छूट जाना ।
मुक्तिदायिनि—मोक्ष देनेवाली, संसार बन्धन से छुड़ानेवाली ।
मुख—आनन, आस्य, तुंड, वक्त्र, वदन, मुँह, वह इन्द्रिय जिससे अन्नादि पदार्थ भोजन किया जाता है । (२) निकलना, बाहर होना ।
मुखभञ्जन—मुँह तोड़नेवाला ।
मुखर—वचन, बोल, आवाज़ । (२) बकवादी,बक्की, बहुत बोलनेवाला । (३) अप्रियवादी, कठोर वचन बोलनेवाला ।(४) दुर्मुख, बुरे मुखवाला ।
मुख्य—अग्र, प्रधान, प्रमुख, अगुवा, मुखिया, सरदार । (२) श्रेष्ठ, वर्य्य,उत्तम ।(३) सारांश, निचोव । (४) प्रथम कल्प ।
मुग्ध—आसक्त, मोहित, लट्टू । (२) मूर्ख,नासमझ, गँवार । (३) अल्पवयस्क, कमसिन ।
मुञ्ज—सरपत, सरई, मूँज ।
मुञ्जाटवी—(मुञ्ज+अटवी,) सरपत का जंगल ।
मुण्ड—मुंड, मूँड़, कपार ।
मुण्डमाल—मुंडमाला, नर खोपड़ी की माला ।
मुद—आनन्द, हर्ष, खुशी । (२) सुख, चैन,आराम । (३) प्रेम, प्रीति, मुहब्बत ।
मुदित—आनन्दित, हर्षित, खुश । (२) सुखी,चैन में ।
मुद्रिक—मुद्रिका, मुँदरी, अँगूठी । (२) चिह्नित ।
मुनि—ऋषि, तपस्वी, संयम-पूर्वक बोलनेवाला । (२) बुद्धदेव, श्रीवन, मुनीन्द्र ।
मुनितीय, मुनिनारी —मुनिपत्नी, अहल्या ।
मुनिन्द्र—(मुनि+इन्द्र) ऋषीश्वर ।
मुनिबधू—मुनिभार्या, गौतमी, अहल्या ।
मुनिबन्ध—मुनियों से वन्दित, ऋषियों के वन्दनीय ।
मुनिबर, मुनिबर्ज —मुनिवर, मुनिवर्य, मुनि श्रेष्ठ ।
मुनिवृन्द—मुनिवृन्द, ऋषि समूह ।
मुनीन्द्र, मुनीस —मुनीश, मुनीश्वर ।
मुमुक्षु—मोक्ष का इच्छुक, मुक्ति चाहनेवाला ।
मुर—एक दैत्य का नाम जिसके पाँच सिर थे वह बड़ा विकट योद्धा था जिससे समस्त देवता हार गये तब श्रीकृष्णचन्द्रजी ने उसका बध किया इसीसे उनका नाम मुरारि पड़ा ।
मुरारि, मुरारी —मुर दैत्य के शत्रु श्रीकृष्णचन्द्र, विष्णु ।
मुसाहेब—(अर्बी)सभासद, सदस्य, दरबारी । (२) एक साथ बैठनेवाला, मिलने जुलनेवाला, हमनशीन । (३) मुखिया, सरदार ।
मुसुकानी—हँसी, मुस्कुराई, हँस दी ।
मुँह—'मुख' वदन, आनन ।
मुँहबायो—मुँह बाया, मुख खोला । (२) खीस निकाला, हाहा किया ।
मूक—मौन, चुप, न बोलनेवाला । (२) अवाक्, गूँगा, जो शब्दोच्चारण न कर सके ।
मूँड़—मुण्ड, कपार, सिर ।
मूँड़चढ़े—सिर चढ़े, गुस्ताख़ हुए, ढीठ हुए ।
मूँड़मारि—मूँड़ मार कर, सिर पटक कर, दिमाग़ लड़ा कर ।
मूढ़—मूर्ख, अज्ञ, अपढ़, नाख़ाँदा ।
मूढ़माँगने—मूर्खमंगन, गँवार भिखमङ्गा ।
मूरख—'मूर्ख' अनाड़ी, बेवकूफ़ ।
मूरति—'मूर्त्ति' प्रतिमा । (२) शरीर, देह ।
मूरि—जड़, मूल, सोढ़ । (२) जड़ी बूटी, ओषधि ।
मूरुख—'मूर्ख' गँवार, मूरख ।
मूर्ख—अज्ञ, अनाड़ी, बालिश, मूढ़, मूरख, मूरुख, लंठ, गँवार, बेवकूफ़ । (२) अपढ़, अक्षर ज्ञान हीन, नाख़ाँदा ।
मूर्त्ति—'शरीर' तनु, देह । (२) प्रतिमा, देवता वा मनुष्यादि की बनाई हुई प्रतिमूर्त्ति ।

मूल—जड़, मूरि, सोर, सोढ़, मिट्टी के भीतर रहनेवाली वृक्षों की जड़। (२) हेतु, कारण, वजह। (३) उन्नीसवाँ नक्षत्र।
मूलभूत—मुख्यकारण, असलीवजह।
मूला—'मूल' जड़। (२) हेतु, कारण।
मूलासि—(मूल+असि) जड़ हो। (२) कारण हो।
मूषक—मूस, चूहा, आखु।
मूत्र—मूत, पेशाब।
मृग—हरिण, कुरङ्ग, मृगा। (२) पशुमात्र-हाथी, घोड़ा, ऊँट, गाय, बैल, भैंसा, सिंह, भालु, बन्दर, वृक आदि चौपायों की मृग संज्ञा है। (३) खोज, ढूँढ़, तलाश।
मृगजल—मिथ्याजल, झूठापानी, ग्रीष्मऋतु में लहलहाती हुई सूर्य्य की किरणों को देख कर प्यास से व्याकुल हुआ हरिण अपनी मूर्खता से उसको जल समझ कर दौड़ता है, किन्तु सूर्य्य की किरणों में कहाँ जल रक्खा है? भ्रम से वह आगेदौड़ता ही जाता है, अन्त को थक कर पानी के बिना तड़प कर प्राण त्याग देता है। कवियों ने इसको मृगतृष्णा के नाम से प्रसिद्ध किया है।
मृगतृष्णा—'मृगजल' मिथ्यापानी।
मृगपति, मृगराज—'सिंह' मृगेन्द्र, केसरी।
मृगबारि—'मृगजल' झूठापानी।
मृगव्रात—मृगसमूह, मृगों का झुण्ड।
मृगालि—(मृग+आलि) मृगों की श्रेणी।
मृत—मृत्यु को प्राप्त, मरा हुआ।
मृतक—मृत, मुर्दा, जीव रहित देह।
मृत्तिका—मिट्टी, माटी।
मृत्यु—मरण, मरन, मीच, मीचु, मौत, कज़ा, शरीर से जीवात्मा का भिन्न होना। (२) निधन, नाश, अन्त। (३) कालधर्म, पञ्चत्व को प्राप्त होना।
मृदङ्ग—मुरज, एक प्रकार का बाजा जो ढोल के आकार का होता है परन्तु इससे शब्द ढोल से सरस निकलता है।
मृदु—कोमल, मुलायम। (२) सुकुमार, नाजुक।
मृदुता—कोमलता, मुलायमियत। (२) सुकुमारता।
मृदुचारो—कोमल चारा, मुलायम चारा।
मृदुल—मृदु, कोमल, मुलायम।
मृदुलचित—कोमल हृदय, दयालु।
मृनाल—मृणाल, कमलनाल, कमल का डंठल।
मृषा—'मिथ्या' झूठ, अलीक।
मैं—मध्य, महँ, बीच।
मे—मुझे, मुझको।
मेखल—'मेखला' करधनी।
मेखला—काञ्ची, क्षुद्रघण्टिका, मेखल, करधनी, कटिप्रदेश में पहनने का आभूषण। (२) म्यान, मियान, तलवार की खोली।
मेघ—अब्द, अभ्र, अम्बुद, अम्बुधर, अम्भोद, घन, जलद, जलधर, जीमूत, तड़ित्वान, तोयद, धाराधर, धुरवा, धूमयोनि, पयद, पयोद, बलाहक, बदरी, बादर, बादल, वारिद, वारिवाह इत्यादि। वह पदार्थ जो आकाश में धुआँ, पानी और हवा के योग से स्वयम् तैयार होता है और पृथ्वी पर जलवृष्टि करता है। (२) कपास, मनवाँ, जिसमें रूई निकलती है।
मेघनाद—मेघगर्जन, बादलों की गरज। रावण का पुत्र, जिसने जन्मते ही मेघ के समान गर्जना की, इसी से उसका मेघनाद नाम पड़ा। यह युद्ध में इन्द्र को जीत कर और बाँध कर लंका में ले आया जिससे इन्द्रजीत कहलाया बड़ा मायावी और विकट योद्धा था देवता इसके डर से सदा डरते थे। लक्ष्मणजी के हाथ से इसका संहार हुआ।
मेचक—श्याम, श्यामल, नील। (२) कृष्ण, असित, काला। (३) मोरपंख की चन्द्रिका।
मेचकताई—श्यामता, नीलापन। (२) कृष्णता, कालापन, करिआई।
मेटत—'मेटना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। मेटता है, नसाता है, निर्मूल करता है। (२) मिटता है, नष्ट होता है।
मेढ़क—दर्दुर, दादुर, प्लव, भेक, मण्डूक, वर्षाभू, मेघा, बेंग। एक जलजीव जो वर्षाकाल में

विशेष उत्पन्न होता है। मेढक को जीभ नहीं होती इसके गले से अवाज निकलती है इसी से बोलते समय गला धौंकनी की तरह फूल आता है। ग्रीष्म में सूख कर मट्टी में मिला हुआ मेढक वर्षा का जल पड़ते ही पुनः जीवित हो जाता है और बरसात के दिनों में सहस्रों की संख्या में मिल कर बड़ा कोलाहल मचाते हैं।

मेध—'यज्ञ' क्रतु, याग।

मेरी—हमारी।

मेरे—हमारे।

मेरो—हमारो।

मेलि—मिला कर, डाल कर।(२) समेट कर, बटोर कर।

मेह—'मेघ' जलद, बादर।

मैं—अहम्, मुझे।

मैथुन—रतिरंग, सहबास, स्त्रीप्रसङ्ग। (२) सङ्गति, सङ्ग, साथ।

मैन—'कामदेव' मदन, मार।

मैंमोर—मेरी तेरी, ममता मोह।

मैया—'माता' जननी, महँतारी।

मैलो—मैला, मलिन, गन्दा। (२) उदास, रञ्जीदा। (३) अपवित्र, नापाक। (४) रुख़ बदलना, नज़र मोटी करना।

मैंहूँ—मैं भी।

मैत्री—मित्रता, मयत्री।

मो, मोकहँ, मोकहुँ, मोको—मैं, मुझको।

मोचन—छोड़ना, तजना, बन्धन से छुड़ाना। (२) उद्धार करना, बचाना, छुटकारा देना।

मोट, मोटे—स्थूल, पुष्ट, मोटा। (२) अमीर, धनी।

मोद—हर्ष, आनन्द, खुशी।

मोदक—लड्डू, लड्डुआ। (२) आनन्दकारी, प्रसन्न करनेवाला।

मोपर—मुझ पर, मेरे ऊपर।

मोपाहीं, मोपै—मुझ से, मेरे से, हमारे समीप।

मोर—मेरा, हमारा। (२) मयूर, केकी, शिखी, बर्ही, नीलकंठ, मुरैलापक्षी। मोर की पूँछ बड़ी सुहावनी होती है और बोली भी प्यारी लगती है। यह जीवित सर्प को खा जाता है।

मोल—मूल्य, दाम, क़ीमत। (२) क्रय, बिसाह, ख़रीद। (३) भाव, निर्ख़, दर।

मोबिनु—मेरे बिना, वगैर मेरे।

मोसम, मो समान, मोसे—मेरे समान, मुझ से, मेरे बराबर।

मोह—अज्ञान, अविवेक, अविद्या। (२) मूर्छा, बेहोशी, गशी। (३) मद, मस्ती, नशा। (४) मूर्खत्व, जड़ता, नासमझी। (५) संसार की प्रवृत्ति, सत्य को झूठ और झूठ को सच मान लेना। (६) करुणा, दया, छोह। (७) एक सञ्चारीभाव जिसमें विरह की चिन्ता से चित्त विक्षेप होता है।

मोहअम्भोधि—मोह का समुद्र, अज्ञानसागर।

मोहग्रासी—मोहग्रस्त, अज्ञान से जकड़ा हुआ।

मोहतम—अज्ञानान्धकार, मोह रूपी अँधेरा। (२) अत्यन्त मोह, महा अज्ञान।

मोहनिसि—अज्ञान की रात्रि, मोहरजनी।

मोहमय—मोह युक्त, अज्ञान मिश्रित।

मोहमूषक—अज्ञान रूपी चूहा।

मोहरजु—मोह की रस्सी, अज्ञान का बन्धन।

मोहबस—मोहवश, अज्ञान के अधीन।

मोहापह—(मोह+अपह) मोह को नसानेवाले।

मोहि—मुझ को, मुझे। (२) मोह कर, अज्ञान वश।

मोहित—मूर्छित, बेहोश। (२) मेरे लिये, हमारे कारण। (३) मेरे हितकारी, हमारे हितू।

मोहु, मोहू—मुझे, मुझ को भी। (२) मोह, अज्ञान, अविवेक।

मोक्ष—मुक्ति, निर्वाण, कैवल्य, अपवर्ग, निर्बान, मुकुति, सुगति, संसार के बन्धन से छूट जाना,

जन्म, मृत्यु से रहित होना। मोक्ष चार प्रकार की कही गई है—सायुज्य, सामिप्य, सारूप और सालोक। (२) लोध्र।

मौक्तिक—'मुक्ता' मोती।

मौन—चुप, मूक, नहीं बोलना।

मौर—बौर, मञ्जरी, आम का फूल, शिरोभूषण, माथे का आभूषण।

मौलि—मस्तक, सिर, कपाल। (२) बाल, कुन्तल, केश। (३) मुकुट, किरीट, ताज। (४) वेणी, जूड़ा, बँधे हुए केश। (५) शिखा, चोटी, चूनी।

म्लेच्छ—म्लेछ, यमन। (२) नास्तिक, अधर्मी। (३) अधम, नीच। (४) मलिन, गन्दा। (५) अपवित्र, नापाक। (६) पापी, अघी। (७) एक जंगली जाति जो हिंसा मात्र से जीवन निर्वाह करती है, कोल भिल्लादि।

(य)

य—हिन्दी वर्णमाला का छब्बीसवाँ व्यञ्जन और यवर्ग का प्रथम अक्षर। इसका उच्चारण स्थान तालु है। (२) यान, विमान (३) पवन, वायु। (४) मिलाप, मिलना। (५) गति, चाल। (६) यश, कीर्त्ति।

यजन—'यज्ञ' जजन, मख। (२) पूजा, बलिदान।

यजुर—यजुर्वेद, यजुः, जजुर।

यत्—यतः, जत, जितना। (२) यस्मात्, जिससे।

यतन—'यत्न' जतन, उपाय।

यती—यति, यतिन्, जती, इन्द्रियों को जीतनेवाला। (२) सन्यासी, चतुर्थाश्रमी।

यत्न—उपाय, यतन, जतन, तदबीर, प्रयत्न। (२) चिकित्सा, इलाज।

यत्प्रणामी—जत्प्रनामी, जो प्रणाम करते हैं, जितने प्रणाम करनेवाले हैं।

यथा—जथा, जैसे, जिस प्रकार। (२) संस्था, मण्डली, गरोह। (३) इव, एवम्।

यथार्थ—(यथा+अर्थ) जैसा मतलब। (२) सत्य, ठीक, जैसा चाहिये वैसा ही।

यदपि—'यद्यपि' जो भी।

यदुपति—श्रीकृष्णचन्द्र, वनमाली, कान्हर। (२) राजा ययाति, भरतवंश में ये आदिपुरुष हुए हैं विशेष विवरण 'भरत' शब्द में देखो।

यद्यपि—यदपि, जद्यपि, जो भी, अगर्चे।

यन्त्र—जन्त्र, तन्त्रिक, यंत्रमंत्र, टोटके के वस्तु की तावीज। (२) कल, औज़ार। (३) नलिका-यन्त्र, डेगभभका, अर्क खींचने का पात्र। (४) ताला, कुफुल। (५) इञ्जिन, मोटर, घड़ी आदि कलपुर्जे से बनी चीज़ें।

यन्त्रणा—जंत्रना, दुर्दशा, सासति। (२) दण्ड, शासन। (३) दुःख, पीड़ा, क्लेश।

यन्त्रित—जंत्रित, बन्द, जकड़ा हुआ, ताले के भीतर जकड़बंद हुआ।

यम—संयम, परहेज, सत्य अहिंसा और ब्रह्मचर्य्यादि का शरीर से साधन करने योग्य नित्य-कर्म। विषयादिकों का त्याग। (२) यमराज, कृतान्त, काल।

यमगण, यमदूत—जमगन, यम के दूत, यमराज के चाकर

यमन—जमन, म्लेच्छ, नीचजाति।

यमनगर, यमपुर—यमलोक, यमराज का नगर।

यमभट—यमदूत, यमराज के योद्धा, सेवक।

यमयातना—यमराज द्वारा होनेवाली दुर्दशा, जमजातना, नरक भोग का दुःख।

यमराज—जमराज, यम, कृतान्त, अन्तक, शमन, काल, दंडधर, प्रेतराज, धर्मराज, यमुनाबन्धु। दक्षिण दिशा के दिगपाल। पापियों को दण्ड देनेवाले देवता।

यमल—जमल, युगल, जोड़ा। (२) यमज, वह जोड़ी वस्तु जो साथ ही उत्पन्न हो।

यमलार्जुन—(यमल+अर्जुन,) जमलार्जुन, जुड़े हुए दो ककुभ के वृक्ष, जोड़ा कोहतरु जो नन्द के दरवाज़े पर जमे थे। ये दोनों कुवेर के पुत्र थे, इनका नलकूबर और मणिग्रीव नाम था। एक बार दोनों देवगंगा में स्त्रियों के सहित नग्न होकर जल विहार करते थे उसी समय वहाँ

नारदजी आ गये। स्त्रियों ने लज्जा से वस्त्र पहन लिया, किन्तु ये दोनों मदिरा के नशे में मतवाले नंगे ही जलकेलि करते रहे। उनकी धृष्टता देख कर देवर्षि ने अप्रसन्न हो शाप दिया कि तुम दोनों जड़योनि को प्राप्त होगे और द्वापर के अन्त में श्रीकृष्ण भगवान के स्पर्श से उद्धार पाओगे। माता यशोदा ने एक बार श्रीकृष्ण भगवान् को बाल्यावस्था में ऊखल से बाँध कर आप घर का काम करने लगीं। भगवान् ऊखल के सहित खिसकते हुए पेड़ के पास आये, छूते ही दोनों अरमरा कर गिर पड़े और अपनी गति को प्राप्त हो स्तुति करके पिता के लोक को चले गये।

यमालय—(यम+आलय) यमका स्थान, जमपुरी।

यमुना—कालिन्दी, सूर्य्यतनया, भानुनन्दिनी, तरणितनूजा, रविकन्या, जमुना, यमराज की भगिनी और सूर्य्य की कन्या। यमराज ने इन्हें वर दिया है कि कैसा ही पापात्मा अधम प्राणी जो तुम्हारी शरण आवेगा उसको हमारे दूत न पकड़ सकेंगे और वह मेरे दण्ड से मुक्त हो जायगा इसी से यमदूत यमुनाजी के समीप पापियों को नहीं पकड़ पाते। यदि समीप में जाँय तो मुख में कालिख लगा कर लौटना पड़े और पापियों का वे बाल भी बाँका नहीं कर सकते।

ययाति—राजा नहुष के छे पुत्र थे, उन्हीं में एक ययाति हैं। इनके बड़े भाई यति ने राज्य को अनर्थमूल जान कर त्याग दिया तब ये राज्यासन पर विराजमान हुए। इन्हों ने वृषपर्वा दैत्य की कन्या शरमिष्ठा से प्रथम विवाह किया, फिर शुक्राचार्य की कन्या देवयानी पर आसक्त हुए। शुक्राचार्य्य ने राजा से प्रतिज्ञा करा ली कि वे शरमिष्ठा के साथ सहवास त्याग दें जब राजा ने इसे स्वीकार किया तब शुक्राचार्य ने देवयानी का विवाह राजा ययाति के साथ कर दिया। कालान्तर में शरमिष्ठा ने ऋतुकाल से निवृत्त हो राजा से निवेदन किया उन्हों ने प्रतिज्ञा भूल कर रति दान दिया। शरमिष्ठा गर्भवती हुई, यह जान कर देवयानी रुष्ट हो पिता के घर चली गई और राजा का प्रतिज्ञा त्यागना पिता से कह सुनाया। शुक्राचार्य को बड़ा क्रोध हुआ, उन्हों ने राजा को जर्जर वृद्ध हो जाने का शाप दिया। राजा की प्रार्थना पर प्रसन्न हो कहा कि यदि तुम्हारी बुढ़ाई लेकर कोई अपनी जवानी दे तो ऐसा हो सकेगा। राजा ने अपने बड़े पुत्र यदु से तथा अन्यपुत्र तुर्वसु, द्रुह्य, अनु से कहा पर उन्होंने अधर्म जान कर नहीं कर दिया। अन्त में छोटे पुत्र पुरु से कहा उसने प्रसन्नता से अपनी युवावस्था देकर बुढ़ाई ले ली। 'भरत' शब्द देखो।

यव—जव, जौ, धान्यराज, एक पौधा जिसका बीज अनाजों में श्रेष्ठ माना जाता है

यवन—'यमन' म्लेच्छ।

यवनादि—(यमन+आदि) म्लेच्छादि पापी।

यवास—'जवास' अनन्ता, जवासा।

यश—कीर्त्ति, ख्याति, सुयश, बड़ाई, नामवरी, नेकनामी, कीरति, बड़प्पन का विस्तार। (२) प्रशंसा, स्तुति, तारीफ़।

यशस्वी—यशी, कीर्त्तिवान, नामवर।

यशुमति—यशोदा, जसुमति, नन्दरानी, महरि, श्रीकृष्णचन्द्रजी की अपर माता।

यष्टी—लाठी, सोटा, डंडा।

यस्य—जिसका, जिस किसी का।

यस्याङ्घ्रि—(यस्य+अङ्घ्रि) जिसका चरण।

यह—एव, निश्चयवाचक। (२) या, इसका।

यहाँ—अत्र, इस जगह। (२) इधर, इस ओर।

यहि / यही—'यह' यही, इसका।

यक्ष—'कुवेर' धनद। (२) देवताओं की जाति का एक भेद।

यत्र—जहाँ, जिस जगह।

यज्ञ—क्रतु, मख, याग, मेध, जग्य, यजन, एक शुभ कर्म जो बड़े आयोजन से सम्पन्न होता है। यज्ञ के विविध विधान हैं, यथा—"पंच-

महायज्ञ, देवयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, अश्वमेध, गोमेध इत्यादि।
यज्ञरच्छुन—जग्य रक्षण, यज्ञ रक्षा, मख की रखवाली।
यज्ञांश—(यज्ञ+अंश) यज्ञ का भाग।
यज्ञांशमय—(यज्ञ+अंश,+मय) यज्ञ के अंश से युक्त, क्रतुभाग का रूप।
यज्ञेश—(यज्ञ+ईश) यज्ञ का स्वामी।
यज्ञोपवीत—उपनयन संस्कार, जनेऊ, ब्रतबन्ध, द्विजाति मात्र में संस्कृत सूत पहनाने की क्रिया।
या—अथवा, वा। (२) यह, एव। (३) इस, इसे।
याके—इसके, इसको।
याग—'यज्ञ' मख, जग्य।
याचक—भिक्षुक, मङ्गन, भिखारी।
याचकता—मङ्गनता, भिखारीपन।
याचत—'याचना' का वर्तमान कालिक रूप। जाचता है।
याचन, याचना—याञ्चा, माँगना।
याचने—याचक, भिक्षुक, मङ्गन।
यातना—दुर्दशा, दुर्गति, सासति। (२) तीव्र वेदना, नरक की भीषण पीड़ा।
यातुधान—'राक्षस' निश्चर।
यातुधानी—'राक्षसी' निशिचरी।
यातुधानोद्धत—(यातुधान+उद्धत) उग्र निशाचर।
यादव—यदुवंश, राजा यदु की सन्तान।
यादवराय—यदुकुल के स्वामी श्रीकृष्णचन्द्रजी।
यान—वाहन, सवारी, हाथी घोड़े आदि।
याप्य—जाप्य, जपने योग्य। (२) कुत्सित, निकृष्ट, अधम।
याम—जाम, पहर, तीन घंटे का समय। (२) संयम, यम, परहेज।
यामिनी—'रात्रि' रजनी, निशा।
यावत—जितना, जिस कदर। (२) जब तक।
याहि, याही—यही, एव।
यात्रा—प्रस्थान, गमन करना, एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने की क्रिया वा भाव।
युक्त—मिलित, मिश्रित, मिला हुआ। (२) यथार्थ, उचित, ठीक। (३) न्याय्य, नीति से किसी वस्तु का प्राप्त होना।
युक्ति—उपाय, जुगुति, तदबीर। (२) चतुराई, होशियारी। (३) एक अलङ्कार का नाम जिसमें कोई मन की बात क्रिया द्वारा छिपाई जाती है।
युग—युग्म, युगल, जोड़ा। (२) सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। (३) योग, विधान, विधि।
युगम, युगल, युग्म—युग, जोड़ा, एक और एक।
युत—'युक्त, मिला हुआ। (२) सहित।
युद्ध—समर, संयुग, संग्राम, लड़ाई, परस्पर का कलह, जङ्ग।
युधिष्ठिर—धर्म, राजा पाण्डु के ज्येष्ठ पुत्र।
युवति, युवती—तरुणी, नवयौवना स्त्री।
युवा—तरुण, युवक, जवान, जुवा, सोलह वर्ष से तीस वर्ष की अवस्था का पुरुष अथवा स्त्री।
यूथ—जूथ, जत्था, झुण्ड, गरोह। (२) तिर्यक् योनिवाले जीवों का समुदाय।
यूथजन्ता—जूथ को जीतनेवाले, समुदाय को हरानेवाले।
ये—जे, जो। (२) यह, यही।
येचापि—(ये+च+अपि) जो भी, जो निश्चय।
येतु—जो, जे। (२) किन्तु, परन्तु।
येन—जिसने, जे। (२) जिससे, जिस करके।
यों—इस प्रकार, ऐसे। (२) सहज ही, आसानी से। (३) निष्प्रयोजन, बेमतलब।
योग—संयोग, मिलाप, मिलन। (२) सम्बन्ध, लगाव, तअल्लुक। (३) युक्ति, उपाय, तदबीर। (४) सङ्ग, सङ्गति, साथ। (५) कवच, सनाह, बख्तर। (६) चित्तवृत्ति का रोकना, समाधि, ध्यान, योग के सात साधन हैं। यथा—"षटकर्म, आसन, मुद्रा, प्रत्याहार, प्राणायाम, ध्यान और समाधि"। घेरण्ड मुनि कहते हैं कि—नास्ति माया समं पापं नास्ति योगात्परं बलम्।

नास्ति ज्ञानात्परो बन्धुर्नाहङ्कारात्परो रिपुः॥
योगबल ही सच्चा बल है और इसके प्रभाव से प्राणी ब्रह्मलीन आनन्द स्वरूप हो जाते हैं।
योगिनी—प्रेतिन, पिशाचिन, डाइन। (२) आदि शक्ति दुर्गा देवी की सहचरी चौंसठ योगिनियाँ।
योगी—योगाभ्यासी, योग में तत्पर, योग की साधना करनेवाला।
योगीन्द्र, योगीश—योगियों का स्वामी, योगेश्वर। (२) ईश्वर, परमात्मा।
योग्य—समर्थ, शक्तिवान, लायक। (२) यथार्थ, उचित, ठीक। (३) प्रवीण, चतुर, होशियार। (४) ऋद्धि नाम की औषधि।
योग्यता—समर्थता, शक्ति। (२) प्रवीणता, होशियारी
योजन—चार कोस का प्रमाण।
योद्धा, योधा—भट, शूरवीर, सावन्त, बहादुर।
योनि—जननेन्द्रिय, जोनि, भग। इसकी संख्या चौरासी लाख कही गई है। कवियों ने इसी ८४ लक्ष योनियों में जीव के भ्रमण करने का उल्लेख किया है।
योवन—तरुणता, जवानी।
योवनज्वर—जवानी का ज्वर।
योषित—'स्त्री' महिला।
योंहीं, यौं—इसी प्रकार, ऐसे ही।
यौवन—तरुणता, तरुणई, जवानी।
यौंहीं—'योंहीं' इसी प्रकार।

(र)

र—हिन्दी वर्णमाला का सत्ताइसवाँ व्यञ्जन और यवर्ग का दूसरा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। (२) अग्नि, अनल। (३) क्रोध, गुस्सा। (४) तेज, तीखा। (५) वेग, गति।
रई—रङ्गी, सराबोर। (२) आनन्दित, प्रसन्न। (३) मथानी, दही महने की छोंड़ी। (४) गेहूँ की भूसी, गोधूम का तुष।
रक्त—लोहित, अरुण, लाल। (२) रुधिर, लोहू ख़ून (३) कुङ्कुम, केसर।
रक्तबीज—एक दैत्य का नाम जिसके पराक्रम का पार नहीं था युद्ध में इसके शरीर में अस्त्र शस्त्र लग कर रुधिर की जितनी बूंदें गिरती थीं उतने योद्धा तैयार होते थे। इस अजेय दैत्य का संहार कालिका देवी ने किया था। युद्ध की विस्तृत कथा मार्कण्डेय पुराण में है।
रख—रक्खो, रख लो।
रखि—रख कर, रक्षा करके।
रँग—'रङ्ग' वर्ण।
रँगीले—रङ्गे हुए, रङ्गवाले। (२) रसीले, रसिया, छयल।
रघु—एक सूर्य्यवंशी अयोध्या के राजा जो दिलीप के पुत्र और श्रीरामचन्द्रजी के परदादा थे। ये बड़े ही धर्मात्मा, यशस्वी, प्रतापवान, पराक्रमी, गुणज्ञ और शूरवीर थे। इनके समय से यह कुल रघुवंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
रघुनन्द, रघुनन्दन—रघुकुल को आनन्दित करनेवाले, रामचन्द्रजी।
रघुबंस—रघुवंश, रघुकुल, राजा रघु की सन्तान। (२) प्रसिद्ध कवि कालिदास निर्मित एक काव्य ग्रन्थ का नाम जिसमें रघुवंशी राजाओं की कीर्त्ति ललित वृत्तों में वर्णन की गई है।
रघुबंसबीर—रघुवंशवीर, रघुकुल के योद्धा।
रघुबंसभूषन—'रघुवंशभूषण' रघुकुल के गहना।
रघुबंसमनि—रघुवंशमणि, रघुकुल के रत्न, श्रीरामचन्द्रजी।
रङ्क—दरिद्र, कङ्गाल, ग़रीब।
रङ्कतर—अत्यन्त दरिद्री, निहायत ग़रीब।
रङ्ग—रङ्गने की वस्तु, रँगना, रँगनेवाली चीज़। (२) वर्ण, पीला, काला, लाल हरा आदि। (३) आनन्द, प्रसन्नता, खुशी। (४) कौतुक, खेल, तमाशा। (५) रीति, ढङ्ग। (६) राँगा, वङ्ग, एक धातु विशेष।
रचना—निर्माण करना, बनाना, तैयार करना। (२) सृष्टि की उत्पत्ति, जग का निर्माण।
रचि—निर्माण करके, बनाकर।
रचित—निर्माण किया हुआ, बनाया हुआ।

रची—निर्माण की, बनायी।

रज—'धूरि' धूलि, रेणु। (२) रजोगुण, राजस वृत्ति। (३) आर्तव, रजोदर्श, स्त्रियों का ऋतु काल। (४) धोबी, रजक।

रजक—रज, धोबी, एक जाति जो कपड़ा धोने का व्यवसाय करती है।

रजत—चाँदी, रूपा। (२) उज्वल, सफ़ेद।

रजनि, रजनी —'रात्रि' निशा, विभावरी। (२) हरिद्रा, हल्दी।

रजनीचर—'राक्षस' यातुधान।

रजनीस—'चन्द्रमा' रजनीश, निशाकर।

रजाई—रजाय, आज्ञा, हुक्म। (२) गिलाफ़, दुलाई, रूई भरा हुआ जाड़े में ओढ़ने का वस्त्र।

रजायसु—आज्ञा, निर्देश, रजाय।

रजु—'रज्जु, रस्सी, डोरी।

रजोगुन—रजोगुण, रज, राजस वृत्ति, तीनों गुणों में से एक। लोभ के सहित जगत का व्यवहार जिसके अन्तर्गत क्रोध और अहङ्कार निवास करते हैं।

रज्जु—रस्सी, रसरी, लेजुरी। (२) गुन, डोरी, सुतरी, बाध, जेंवरि, जेंवरी।

रञ्जन—प्रसन्नकारक, आनन्ददायक, हर्ष बढ़ानेवाला। (२) रङ्गना, रङ्ग चढ़ना। (३) रक्तचन्दन, लालचन्दन।

रञ्जित—प्रसन्न किया हुआ, खुश। (२) रङ्ग चढ़ाया हुआ, रङ्गा हुआ।

रट—बोल, पुकार, एक ही बात वा शब्द को बार बार दुहराना।

रटत—'रटना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। रटता है, एक ही बात बार बार कहता है।

रटनि—रटने की क्रिया वा भाव, रट।

रत—तत्पर, लवलीन, लगा हुआ। (२) मैथुन, व्यवाय, स्त्रीप्रसङ्ग।

रतन—'रत्न' जवाहिर।

रति—प्रेम, प्रीति, अनुराग, स्नेह। (२) मैथुन, व्यवाय। (३) कामदेव की स्त्री, कन्दर्पपत्नी। (४) साहित्यशास्त्र के अनुसार शृङ्गाररस का स्थायी भाव।

रतिपति—'कामदेव' अनङ्ग।

रतिमार—रति और कामदेव, सपत्नीक मनोज।

रतियातो—प्रीतिवान होता, अनुरागी बनता।

रती—प्रतिष्ठा, बड़ाई, इज्ज़त। (२) रति, कामदेव की भार्या। (३) रति, प्रेम, प्रीति। (४) सम्मान, सत्कार, आदर।

रत्न—रतन, मणि, जवाहिरात। रत्न नौ प्रकार के गिनाये गये हैं, यथा—हीरा, मोती, पन्ना, माणिक, पुखराज, नीलम, गोमेद, लहसुनियाँ और मूँगा। (२) आभूषण, अलङ्कार, गहना।

रथ—स्यन्दन, चक्रयान, गाड़ी, बग्घी। (२) वञ्जुल, वेतस, वेत।

रथगामी—रथ पर चढ़ कर चलनेवाला।

रथत्रानकेतु—रथ की रक्षा का पातका। ध्वजा पर बैठ कर रथ की रखवाली करनेवाला।

रद—'दाँत' दन्त, दशन। (२) (अर्बी)। रद्द, रद्दी, बेकाम।

रदन—'दाँत' दसन।

रदमद—दाँतों का घमण्ड, दन्तगर्व।

रद्द—(अर्बी) नष्ट, बिगड़ा हुआ, बेकाम, रद रद्दी (२) लौटा देना, फेरना, अस्वीकार करना, न मानना।

रन—रण, संग्राम, समर।

रनअजिर—रणाङ्गन, लड़ाई का मैदान।

रनधीर—रणधीर, युद्ध में साहसी, समर विचक्षण।

रनरोर—रणरोर, युद्ध का कोलाहल, जङ्ग का शोर। (२) समर में हल्ला मचानेवाला, संग्राम में आतंक उत्पन्न करनेवाला।

रन विजयदाई—रण में विजय दाता, जंग में जीत करानेवाला।

रन्ध्र—छिद्र, छेद, सूराख। (२) बिल, विवर, बाँबी। (३) दूषण, दोष, ऐब।

रमन—रमण, पति, रमनेवाला। (२) क्रीड़ा, विहार, खेल। (३) मैथुन, व्यवाय, रसरङ्ग। (४) विचरण, घूमना, सैर करना। (५) कामदेव।

रमनीय—रमणीय, सुन्दर, मनोहर।

रमा—लक्ष्मी, कमला, श्री।

रमापति, रमारमन —लक्ष्मीकान्त, विष्णु भगवान्।

रमु—रमण कर, क्रीड़ा कर ।
रम्भा—'कदली' केला, केरा । (२) एक देवाङ्गना का नाम जो समुद्र मथते समय निकली और इन्द्र को प्राप्त हुई ।
रम्य—रमणीय, मनोहर, सुहावना ।
ररिहा—भिक्षुक, मङ्गन, ररा ।
रव—'शब्द' ध्वनि, आवाज़ ।
रवन—रमन,रमण, प्रीतम । (२) चिल्लाना, शोर ।
रवनि, रवनी —भार्या, सहधर्मिणी, पत्नी ।
रवि—'सूर्य्य' भानु, दिवाकर ।
रविकर—सूर्य्य की किरण, मरीचिका ।
रविकरजल—'मृगजल' सूर्य्य की किरण का पानी ।
रविकुल—सूर्य्यवंश, भानुकुल ।
रविकोटि—करोड़ों सूर्य्य, अनन्त भानु ।
रश्मि—किरण, कर, मरीचि ।
रस—स्वाद, ज़ायक़ा, मज़ा । (२) प्रेम, अनुराग, प्रीति । (३) स्वरस, वृक्ष की छाल वा पत्तों का निचोड़ कर निकाला हुआ पानी । (४) द्रवपदार्थ,बहने की वस्तु,जल में घोली हुई चीनी शक्कर आदि का बना शरबत । (५) परस्पर का प्रेम, मेलमिलाप । (६) पारद, पारा । (७) शरीरस्थ धातु जो अन्न के परिपाक से बनती है । (८) पाँच विषयों में से एक । (९) भस्म हुई धातुओं का चूर्ण, रसायन । (१०) व्यञ्जन के छे रस, यथा—खट्टा, नमकीन,कड़ुवा, कषैला, तीता और मीठा । (११) काव्य के पढ़ने से पाठकों को जो आनन्द प्राप्त होता है, साहित्यशास्त्र में उसको 'रस' कहते हैं । साहित्याचार्यों ने इसे नौ भागों में विभक्त किया है, यथा—शृंगार, वीर, करुणा, अद्भुत, हास्य, भयानक, वीभत्स, रौद्र और शान्तरस । कोई कोई दसवाँ वात्सल्यरस और ग्यारहवाँ प्रेयान् रस मानते हैं
रसना—'जीभ' जिह्वा, ज़बान ।
रसरासी—रस की राशि, प्रीतिपुञ्ज ।
रसज्ञ—रसिक, रस का ज्ञान रखनेवाला ।
रसाल—आम,आम्र,सहकार । (२) सुन्दर,मनोहर, सुहावना । (३) सरस, रसीला, रसवान् । (४) इक्षु, ऊख, गन्ना ।
रसिक—रसज्ञ, रसिया, रस का जाननेवाला । (२) आसक्त, चाहनेवाला । (३) पण्डित, विद्वान् । (४) कवि, काव्य करनेवाला ।
रस्मि—'किरण' रश्मि, मरीचि, ।
रह—थम्ह, ठहर, रुक (२) एकान्त, निर्जन ।
रहत—रहता है, ठहरता है ।
रहन—रह न, नहीं रहना । (२) रहनि, रीति ।
रहना—बसना, ठहरना, टिकना ।
रहनि—रीति,रहने का ढंग । (२) स्वभाव, आदत । (३) सम्बन्ध, नाता । (४) प्रेम, प्रीति ।
रहस्य—गुप्तविषय, छिपाभेद, राज़ की बात, वह कार्य्य अथवा सम्मति जिसका व्यवहार गुप्त रीति से किया जाय ।
रहित—'वर्जित, बिना, हीन । (२) शून्य, खाली । (३) पृथक्, भिन्न, अलग किया हुआ ।
रहैगो—रहेगा, ठहरेगा ।
रक्षक—रच्छक, रक्षा करनेवाला, बचानेवाला ।
रक्षण, रक्षा —रच्छन, त्राण, हिफ़ाज़त ।
रक्षित—रक्षा किया हुआ, बचाया हुआ ।
राई—राय, प्रधान' अगुआ । (२) राजा, नरेश, भूप । (३) किञ्चित,थोड़ा । (४) राजिका, राजी ।
राउ—राव, राय, सरदार । (२) राजा, जनेश, भूपाल । (३) प्रधान, मुखिया, अगुवा । (४) प्रभु, स्वामी मालिक ।
राउत—'रावत' योधा, बहादुर ।
राउर, राउरि —आप का, आप की, रौरा ।
राका—पूर्णिमा की रात्रि, वह रातजिसमें सूर्यास्त से सूर्य्योदय पर्यन्त पूर्ण चन्द्रमा प्रकाशित रहे ।
राकेश—(राका+ईश) चन्द्रमा, इन्दु । पूर्णमासी के चन्द्रमा ।
राकेसकर—पूर्णमासी के चन्द्रमा की किरणें ।
राख—भस्म, विभूति, भसम, राखी ख़ाक । (२)

राखो, रखवाली करो, बचाओ। (२) रख लिया, बचाया।

राखत—'राखना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। रक्षा करता है, रखवाली करता है, बचाता है।

राखि } —रख कर, रक्षा कर के, बचाव करके।
राखी } (२) राख, भस्म, ख़ाक।

राग—ममता, मोह, अज्ञान। (२) ईर्ष्या, द्वेष, डाह। (३) प्रेम, प्रीति, स्नेह। (४) विषयासक्ति, इन्द्रिय लोलुपता। (५) आलाप, गान। (६) गान विद्या के प्रसिद्ध छः राग, यथा—भैरव, मेघ वा मलार, श्री वा सारङ्ग, हिण्डोल, बसन्त और दीपक। इनके गानेका समय गायनाचार्यों ने इस प्रकार निर्धारित किया है। भैरवराग—शरद्ऋतु की रात्रि के चौथे प्रहर में। मेघराग—वर्षाऋतु में शृङ्गार रस युक्त इसके गाने से जल-वृष्टि होने लगती है। श्रीराग—हेमन्तऋतु में सिंहानासीन श्रीमान् सुन्दर पुरुषों के सामने। हिंडोल—वसन्तऋतु में दिन के प्रथम पहर में। वसन्त राग—वसन्त पञ्चमी से राम नौमी पर्यन्त वीर रस पूर्ण आठों पहर गाया जाता है। दीपक राग—ग्रीष्मऋतु के मध्याह्नकाल में, इसके गाने से बुझा हुआ दीपक जल उठता है। सातों स्वरों की व्याख्या 'स्वर' शब्द में देखो।

रागरङ्ग—प्रीतिरीति, प्रेम और प्रसन्नता। (२) गाना बजाना, हँसीख़ुशी। (३) मेलमिलाप, मिलनाजुलना।

रागादि—(राग+आदि) काम, क्रोध और लोभ।

राघव—राजा रघु के वंशज, रघुकुल में उत्पन्न, रघुवंशी। (२) रामचन्द्रजी, कौसल्यानन्दन। (३) समुद्र की एक प्रसिद्ध मछली।

राँची—रची, निर्माण की, बनाई।

राज—राज्य, राजा का प्रदेश, राज्य के अधिकार-वालेदेश। (२) राजा, नरेश, भूपाल। (३) विराजमान, राजित, शोभित। (४) राजगीर, मन्दिर बनानेवाला कारीगर। (५) टाँकी हथौड़े से पत्थर काटनेवाला, सङ्गतराश।

राजडगर } —राजमार्ग, सड़क, राजा महाराजाओं
राजडगरो } द्वारा निर्मित पक्का रास्ता जिस पर गाड़ी, रथ, मनुष्यादि एक स्थान से दूसरे स्थान को सुगमता से गमन करते हैं।

राजद्वार—राजमहल का दरवाज़ा, राजा के मन्दिर का फाटक, ड्योढ़ी।

राजधानी—राजा के रहने का स्थान, दारुलसल्तनत।

राजमनि—राजशिरोमणि, राजाओं में रत्न।

राजसभा—राजा का दरबार, राजा की कचहरी।

राजसमाज—राजाओं का समुदाय, नरपति वृन्द। (२) राजा के मन्त्री, दरबारी, नौकर, दास, दासी इत्यादि। (३) राजसभा, राजा का दरबार।

राजहंस—हंस, मराल, वह हंस जिसका चरण और चोंच लाल होता है।

राजा—छोनिप, छोनीपति, जनेश, नरपति, नरेश, नृप, नृपति, नृपाल, भूप, भूपति, भूपाल, भूमि-पति, राज, राजन, राट, क्षितिनाथ, क्षितिपाल, आदि। (२) चक्रवर्ती, सार्वभौम, सम्राट। (३) क्षत्रिय, क्षत्री। (४) प्रभु, स्वामी, देव। (५) चन्द्रमा, सोम।

राजाराम—राजा रामचन्द्रजी।

राजि—पंक्ति, अवली, श्रेणी। (२) राजित, शोभित। (३) रेखा, लकीर।

राजित—विराजित, शोभित। (२) आसीन, बैठे हुये।

राजिव } —'कमल' पद्म, कञ्ज।
राजीव }

राजी—'राजि' श्रेणी, अवली। (२) (अर्बी)—प्रसन्न, ख़ुश' रजामन्द।

राजेन्द्र—(राजा+इन्द्र) राजाओं के राजा, सम्राट।

राज्य—'राज' राजा का देश।

राँड—विधवा स्त्री, बेवा, वह स्त्री जिसका पति मर गया हो। (२) निर्बल, अनाथ, कमज़ोर। (३) कादर, डरपोंक, बुज़दिल।

राँड़रोर—राँडों का हल्ला, बेवाओं का शोर। (२) व्यर्थ की कलकोहट, नाहक का शोरगुल। (३) व्यर्थ का हल्ला, बिना मतलब का शोर।

रात } —'रात्रि' रजनी, तमी।
राति

रातिचर—'राक्षस' यातुधान ।

राती—'रात्रि' विभावरी, रात। (२) रक्त, लाल, सुर्ख। (३) प्रीतियुक्त, प्रेम से भरी।

राते } —प्रेययुक्त हुये, प्रीतिमान हुये। (२) रङ्ग
रातेउ } सराबोर हुये, लवलीन हुये। (३) लाल
रातो } रङ्ग।

राधा—राधिका, वृषभाननन्दिनी, वृषभानुजा। (२) विशाखा नक्षत्र, सत्ताईस नक्षत्रों में से एक।

राधारमन—राधिका को रमानेवाले श्रीकृष्ण, चन्द्रजी, वनमाली, गोपानाथ।

रानी—राजपत्नी, महिषी, राजा की सहधर्मिणी।

राम—ब्रह्म, परमात्मा, सर्वव्यापक जो तीनों लोकों में रमे हैं, जिसके ध्यान में योगी लोग सदा लीन रहते हैं और जो योगियों को अपने में रमाते हैं। (२) श्रीरामचन्द्र, दशरथनन्दन, सीता-नाथ। (३) परशुराम, भृगुपति। (४) बलदेव, रेवतीरमण। (५) महामंत्र, मोक्ष का कारण।

रामगुलाम—रामचन्द्रजी का दास, रामभक्त।

रामगोसाँई—स्वामी रामचन्द्रजी।

रामचन्द्र—श्रीरामचन्द्र, दशरथकुमार।

रामदूत—रामचन्द्रजी के दूत, हनूमान, पवन-कुमार।

रामनाम—रामचन्द्रजी का नाम।

रामपट—रामचन्द्रजी का वस्त्र।

रामपुर—रामचन्द्रजी का नगर, अयोध्यापुरी।

रामप्रसाद—रामकृपा। (२) रामचन्द्रजी का प्रसाद।

रामबोला—राम शब्द बोलनेवाला, गोस्वामी तुलसीदासजी का एक नाम जिसको उन्हों ने लिखा है कि मेरा यह नाम रामचन्द्रजी ने रक्खा है।

रामभक्त—रामानुरागी, रामचन्द्रजी के चरणों में अमायिक प्रेम करनेवाला।

रामभक्तानुवर्ती—(रामभक्त+अनुवर्त्ती) रामदासों के अनुसार बरताव करनेवाला, रामभक्तों के अनुयायी उनकी पैरवी करनेवाला।

रामभक्ति—रामचन्द्रजी की भक्ति, रामानुराग।

रामभगत—'रामभक्त' रामानुरागी।

रामभगति—रामभक्ति, रामचन्द्रजी में अनुराग।

रामभजन—रामचन्द्रजी की सेवा, निरन्तर राम नाम का जाप करना।

रामभद्र—कल्याण रूप रामचन्द्रजी।

रामभद्रानुगन्ता—(रामभद्र+अनुगन्ता) कल्याण रूप रामचन्द्रजी के अनुगामी।

रामभूप—राजा रामचन्द्रजी।

रामरँगीले—रामचन्द्रजी के प्रेम रङ्ग में रङ्गा हुआ, रामरङ्ग में सराबोर, रामानुरागी।

रामरटु—राम नाम रटो, बार बार राम कहो।

रामरमु—रामनाम में रमण करो, राम से प्रेम करो।

रामराज—रामराज्य, सुख का समय, रामचन्द्रजी के राज्य में कोई अन्याय नहीं होता था, सब कार्य मर्यादा-पूर्वक होते और प्रजा सदा प्रसन्न रहती थी।

रामराजा } —राजा रामचन्द्रजी।
रामराय

रामबस—रामचन्द्रजी के अधीन, रामवश।

रामसनेही—रामानुरागी, रामचन्द्रजी से स्नेह करनेवाला। (२) स्नेही रामचन्द्रजी, प्रीति करनेवाले राजा रामचन्द्रजी।

रामसिय—राम जानकी, सीताराम।

रामहित—रामचन्द्रजी के लिये, रामचन्द्रजी के वास्ते। (२) रामचन्द्रजी के हितकारी।

रामा—रामचन्द्रजी, श्रीरघुनन्दन। (२) सीता, जानकी। (३) सुन्दरी, रमणी।

रामादर्यो—(राम+आदरेउ) रामचन्द्रजी ने आदर दिया वा सम्मान किया।

रामाभिराम—(राम+अभिराम) आनन्द देनेवाले रामचन्द्रजी, सुख के रूप रामचन्द्र।

रामायन—(राम+अयन) रामायण, रामचन्द्रजी के मिलने का मार्ग। (२) रामचन्द्रजी के रहने का स्थान, राम निकेतन। (३) रामकथा।

रामासि—(रामा+असि) रामचन्द्रजी की प्रियतमा हो, राम प्रिया हो।

रामौ—रामचन्द्र भी।

राय, राया }—'राव' नायक, सरदार ।

रार, रारि }—'युद्ध' कलह, लड़ाई, तकरार ।

राव—राइ, राई, राउ, राय, एक सम्मान सूचक पदवी। (२) राजा, नरेश, भूपाल । (३) नायक, ठाकुर, सरदार ।

रावत—राउत, सरदार, नायक । (२) योद्धा, शूर, सावन्त, बहादुर । (३) राजकुमार, युवराज । (४) जुझार, लड़ाका । (५) प्रधान, मुखिया ।

रावर, रावरि }—राउर, आप का ।

रासि, रासी }—राशि, पुञ्ज, ढेर, अन्नादि का कूरा । (२) समूह, प्रचुर, बहुत । (३) ज्योतिष शास्त्र के अनुसार—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ और मीन बारहों राशि ।

राहु—विधुन्तुद, स्वर्भानु, क्रूरग्रह, नवग्रहों में से एक ग्रह । समुद्र मथने पर जब अमृत निकला तब उसके बटवारे के लिये देवता और दैत्यों में वैमनस्य बढ़ा । दैत्यों ने जोरावरी से अमृत अपना लिया, तब देवताओं ने विष्णु भगवान् से पुकार की। भगवान् ने मोहिनी रूप धारण कर दैत्यों को मोहित कर अमृत ले लिया और कहा कि तुम दोनों भाई पंक्ति लगा कर आमने सामने बैठो हम सब को बराबर अमृत परस देंगे जिसमें आपस का द्रोह मिट जाय तब तुम्हें पति भाव से स्वीकार करेंगे । दैत्यों ने कामातुरी से मान लिया; किन्तु राहु इस चालबाज़ी को ताड़ गया वह देव रूप बन कर चन्द्रमा और सूर्य्य के बीच में जा बैठा । पहले मोहिनी रूपधारी भगवान् देवपंक्ति को परस गये । अन्त में पान करने पर सूर्य्य चन्द्रमा को मालूम हुआ कि यह छद्मवेषी दैत्य है, उन्हों ने विष्णु को इशारे से सूचित किया । भगवान् ने अमृत का पात्र भूमि पर रख कर चक्र से राहु का सिर काट लिया और चन्द्रमा सारा अमृत पात्र में जो बच रहा था अकेले पान कर गये । राहु अमृत पान कर चुका था इससे सिर कट जाने पर भी मरा नहीं । उसका सिर राहु और धड़ केतु कहलाता है । हिन्दू शास्त्रानुसार इसी वैर से सन्धि पाकर अबतक कभी कभी राहु सूर्य्य और चन्द्रमा को ग्रसने का प्रयत्न करता है उसको उपराग वा ग्रहण कहते हैं ।

राक्षस—असृप, आशर, कर्बुर, कुनप, कौणप, कौनप, निशाचर, निशिचर, निश्चर, मनुजाद, यातु, यातुधानु, रजनीचर, रक्षः, रातिचर, रात्रिचर, क्रव्याद, मनुष्य के मांस को खानेवाले । (२) दानव, दैत्य, असुर । (३) हिंसक, घातक, वधिक । (४) पापी, अधम ।

रात्रि—जामिनी, तमस्विनी, तमी, निशा, निशि, निशीथिनी, यामिनी, रजनी, रात, राति, राती, रात्री, रैन, विभावरी, शर्वरी, सर्वरी, क्षणदा, क्षपा, त्रियामा इत्यादि । सूर्य्यास्त से सूर्य्योदय के बीच का समय । कृष्णपक्ष की रात्रि को तमिस्रा और शुक्लपक्ष की रात्रि को ज्योत्स्नी कहते हैं ।

रिक्त—शून्य, छूँछ, खाली ।

रिझाइ—प्रसन्न कर, ख़ुश करके ।

रितई—छूँछ किया, खाली कर दिया ।

रिधि—ऋद्धि, सम्पदा, ऐश्वर्य ।

रिन—ऋण, उधार, क़र्ज़ा ।

रिनियाँ, रिनी }—ऋणी, कर्ज़दार ।

रिपु—शत्रु, बैरी, दुश्मन ।

रिपुता—शत्रुता, दुश्मनी, अदावत ।

रिपुदवन—शत्रुघ्न, शत्रुहन ।

रिपुमय—शत्रुमय, बैरी का रूप ।

रिपुसङ्कट—शत्रुद्वारा उत्पन्न कष्ट, दुश्मन की करतूत से उपजी हुई पीड़ा ।

रिस—'क्रोध' कोप, गुस्सा ।

रिसभरे—क्रोध से पूर्ण, गुस्से से भरे ।

रिसरेते—क्रोध से चूर हुए, गुस्से से बिखरे हुए । (२) केवल क्रोध कर, खाली गुस्सा करके ।

रिसौहिँ—क्रोधित, गुस्सावर, रिसौहें।
रीछ—'भालु' भालू, ऋच्छ।
रीझ—प्रसन्नता, खुशी। (२) अनुकूलता, मिहरबानी।
रीझत—रीझता है, प्रसन्न होता है।
रीझि—प्रसन्नता, रीझ, मिहरबानी।
रीझिरीझि—प्रसन्न हो होकर, ख़ुश हो होकर।
रीति—लोकव्यवहार, रसम, रिवाज। (२) ढङ्ग, तौर, तरीका। (३) प्रकार, भाँति, तरह। (४) पद्धति, क़ायदा, क़ानून। (५) स्वभाव, आदत। (६) पीतल धातु।
रीते—'रिक्त' शून्य, ख़ाली।
रु—अरु, और, इसके सिवा।
रुख—(फ़ारसी)। मुखमण्डल, चेहरा, मुखड़ा। (२) सामना, सौंहेंसाटे, आगे। (३) दिशा, ओर, तरफ़।
रुचि—इच्छा, अभिलाषा, ख़्वाहिश। (२) प्रेम, प्रीति, मुहब्बत। (३) छबि, शोभा, सुन्दरता। (४) किरण, मरीचि। (५) प्रभा, दीप्ति। (६) आलिङ्गन, हृदय से लगाना।
रुचिर—'सुन्दर' मनोहर, सुहावना।
रुचिराई—सुन्दरता, मनोहरता, शोभा।
रुची—सुहाई, अच्छी लगी। (२) रुचि, चाह।
रुज—'रोग' व्याधि, आमय।
रुजाली—(रुज+अलि) रोगों की अवली, व्याधि समूह।
रुंड—कबन्ध, बिना सिर के धड़।
रुदन—रोना, प्रलाप करना।
रुद्ध—आवृत, घिरा हुआ, छेका हुआ। (२) रुका हुआ, रुकावट में पड़ा हुआ।
रुद्र—'शिव' ग्यारह रुद्रों में एक।
रुद्राग्रनी—(रुद्र+अग्रणी) रुद्रों में अगुवा, ग्यारहों रुद्र में प्रधान।
रुधिर—रक्त, शोणित, क्षतज, लोहित, लोहू, लहू, रकत, खून, वह शरीरस्थ धातु जो देह के कटने वा फटने पर द्रव रूप लाल रङ्ग निकलती है और अधिक निकलने पर प्राणान्त हो जाता है।
रुष्ट—क्रुद्ध, कुपित, नाराज।
रुह—उत्पन्न, जन्मा, पैदा।
रूख—'वृक्ष' विटप, तरु।
रूझै—उलझै, अरूझै, फँसै, लपटै।
रूठना—अप्रसन्न होना, नाराज होना।
रूढ़—कठिन, कड़ा, हद से ज्यादा पका हुआ।
रूँधो / रूँध्यो —घेरा किया, छेक लिया। (२) घिरा हुआ, काँटे आदि से घेरा हुआ।
रूप—आकार, चेष्टा, सूरत। (२) सुन्दर, शोभन, मनोहर। (३) शोभा, छबि, सुन्दरता। (४) स्वभाव, प्रकृति।
रूपनिधान—सुन्दरता के स्थान।
रूपरासि / रूपरासी —शोभा की राशि, छबि के ढेर।
रूपादि—(रूप+आदि) रस, शब्द, गन्ध, स्पर्श पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के विषय।
रूपी—रूपवाला, आकारवान्, किसी रूप के तादृश।
रूरी / रूरो —सुन्दर, सुहावनी, भला, शोभन।
रूसना—रुष्ट होना, रूठना।
ऋग—ऋग्वेद, प्रथम वेद।
ऋण—रिन, उधार, कर्ज़ा, वह द्रव्य वा अन्नादि जो देने की मिती बद कर व्याज युक्त अथवा बिना सूद के लिया जाय।
ऋणियाँ / ऋणी —रिनियाँ, रिनी, क़र्ज़दार।
ऋतु—वर्ष में छः ऋतु होती हैं, यथा—चैत्र, बैशाख-वसन्त, जेठ आषाढ़-ग्रीष्म, श्रावण भादों-वर्षा, कुवार कार्तिक-शरद, अगहन पूस-हेमन्त और माघ फाल्गुण-शिशिर। (२) आर्तव, रजोदर्श।
ऋद्धि—समृद्धि, बढ़ती, उन्नति। (२) धन, सम्पति, दौलत। (३) धान्य की राशि, अनाज का ढेर। (४) एक औषधी का नाम जो अष्टवर्ग में गिनी जाती है।
ऋषय—ऋषि शब्द का बहुवचन, मुनि समूह।
ऋषि—मुनि, तपस्वी, ईश्वर की उपासना में तत्पर और संसार से विरक्त। (२) मन्त्रद्रष्टा,

वेदमन्त्रों का प्रकाशक। (३) सत्यवक्ता, सच बोलनेवाला।

ऋक्ष—भालु, रीछ, भालू। (२) नक्षत्र, तारागण। (३) सोनापाठा का वृक्ष।

रे—अरे, एक निरादर सूचक सम्बोधन।

रेख
रेखा } —चिह्न, निशान, लकीर। (२) प्रारब्ध, भावी, भाग्य।

रेता—बालुका, बालू, रेत। (२) रेतने का बड़ा औजार जिससे काठ और लोहा धूल के समान किया जाता है।

रेते—रीते, खाली, छूँछ। (२) चूर चूर, रवा रवा, टुकड़े टुकड़े। (३) छिन्नभिन्न, तितर बितर।

रेनु—'धूरि' धूलि, रेणु।

रेनुका—बालुका, बालू, रेता। (२) धूरि, रज, रेनु। (३) रेणुका नाम की ओषधि।

रैन—'रात्रि' निशा, रजनी।

रोइ—रुदन कर, रोकर।

रोक—बाधा, रुकावट। (२) विवर, बिल।

रोग—आमय, गद, रुज, रुजा, रुग्नावस्था, व्याधि, बीमारी, मरज, मर्ज। शरीर की अस्वस्थता जिससे दोषों की विषमता से नाना प्रकार के कष्ट उत्पन्न होते हैं।

रोटी—फुलका, चपाती।

रोदन—रुदन, रोना।

रोध—'रुद्ध' रुका हुआ, छेका हुआ।

रोना—'रुदन' क्रन्दन।

रोम—लोम, रोवाँ।

रोमाञ्च—रोवें का फूलना, अत्यन्त हर्ष और शोक दोनों अवस्थाओं में रोमाञ्च होता है।

रोय
रोयो } —रोया, रो दिया, रुदन किया।

रोर—हौरा, कलकोहट, शोरगुल।

रोवही—रोता है, रुदन करता है।

रोष—'क्रोध' कोप, गुस्सा।

रोषानल—(रोष+अनल) क्रोधाग्नि।

रोषान्त—(रोष+अन्त) क्रोध का अन्त, हद दरजे का कोप।

रोषु
रोस } —'क्रोध' रिस, गुस्सा।

रौताई—शूरत्व, शूरता, बहादुरी।

रौद्र—उग्र, प्रचण्ड, घोर। (२) साहित्य शास्त्र के अनुसार नव रसों में से एक रस जिसका स्थायीभाव क्रोध है।

रौर—'रोर' चिल्लाहट, हौरा। (२) यश, कीर्त्ति, नामवरी।

रौरव—महारौरव, यमपुरी के सत्ताईस नरकों में से एक नरक का नाम जिस में पापी जीवों को भीषण दण्ड मिलता है।

(ल)

ल—हिन्दी वर्णमाला का अट्ठाइसवाँ व्यञ्जन और यवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चरण स्थान दन्त है। (२) आह्लाद, आनन्द, हर्ष। (३) सम्मति, सलाह। (४) दीप्ति, प्रकाश। (५) छेदन, काटना। (६) इन्द्र, देवराज। (७) पवन, वायु, हवा।

लइ
लई } —लिया, ग्रहण किया।

लख—लक्ष्य, निशाना। (२) लखो, देखो।

लखत—'लखना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। लखता है, निहारता है। (२) देखते ही।

लखन—'लक्ष्मण' लछिमन, सौमित्रि। (२) लख न, देखता नहीं।

लखि—लख कर, देख कर।

लग—लौं, तक।

लगत—'लगना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। लगता है, जुटता है। (२) लगते ही।

लगाई—लगा कर, जुटाकर।

लगाउ
लगाऊ
लगाव } —सम्बन्ध, मिलाप, जोड़।

लगि—लौं, लग, तक। (२) लग्गी, लग्गा, वह पतला बाँस जिसके द्वारा वृक्षादि के फल तोड़ते और बहेलिया लासा लगा कर पेड़ पर बैठे पक्षियों को फँसाते हैं।

लघु—छोटा, छोट, क्षुद्र, न्यून,। (२) किञ्चित, अल्प, थोड़ा। (३) निकृष्ट, नीच, ख़राब। (४) शीघ्र, तुरन्त, जल्दी। (५) ह्रस्ववर्ण, एक मात्रावाला अक्षर। (६) इष्ट, वाञ्छित।

लघुता—नीचता, छोटाई, ओछाई।

लङ्क—लङ्का नगरी, रावण की राजधानी। (२) कटि, करिहाँव, कमर। (३) समूह, बहुत।

लङ्का—लङ्कापुरी, रावण की राजधानी। (२) निर्गुण्डी, मेउँड़ी।

लङ्केस—(लङ्क+ईश) रावण, दसवदन।

लङ्घन—अनाहार, उपवास, व्रत। (२) लाघना, डाँकना, उछल कर किसी वस्तु के पार जाना।

लङ्घि—लाँघ कर, डाँक कर, कूद कर।

लच्छि—'लक्ष्मी' इन्दिरा, रमा। (२) लक्षाधीश, लक्ष्मीवान्, लखपती। (३) लक्ष, लाख, सौहज़ार।

लजाइ, लजाई—लज्जित होकर, लजा कर, शरम करके।

लजात, लाजवै—लजाता है, शरमिन्दा होता है।

लटत—'लटना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। लटता है, खिन्न होता है, दुबला पड़ता है। (२) लट्टू होता है, आसक्त होता है।

लटपट—लड़खड़ानेवाला, ठोकर खानेवाला। (२) उलटापलटा, टेढ़ामेढ़ा। (३) मूर्ख, गँवार।

लटे—दुर्बल, खिन्न, दुबले हुए।

लता—वल्ली, वल्लरी, वेल, बौंड़, बँवरि, लतर। गुडूची आदि धरती पर फैलनेवाली तथा वृक्षों पर चढ़कर विस्तार करनेवाली वेल।

लताजाल—लताओं के समूह।

लपटाई—लपटती, उलझती, उरझाती है।

लपत—लपकता है, लहकता है, लालच करता है। (२) कहता है, भाषण करता है, बोलता है।

लपेटन—लपेटुई, लपटनेवाली वेल, वह लता जो छू जाने से वस्त्र और शरीर में लपटती है। (२) झाड़दार छोटे वृक्ष जैसे करील झरवेरी आदि।

लबार—मिथ्यावादी, झूठ बोलनेवाला।

लम्पट—व्यभिचारी, परस्त्रीगामी। (२) कुकर्मी, दुराचारी। (३) लबार, झूठा।

लय—लीन होना, लवलीन, लगा हुआ। (२) प्रलय, नाश, संहार। (३) ईश्वर के ध्यान में निमग्न होना। (४) स्वर ताल से मिला हुआ शब्द।

लयो—लिया, ग्रहण किया। (२) लया, काटा।

लरिकपन—लड़कपन, लड़काई।

लरिका—लड़का, बालक, पुत्र।

लरिकाई—लड़काई, बाल्यावस्था।

लरौं—लड़ता हूँ, तकरार करता हूँ।

ललकि—ललक कर, चाह कर, अभिलाषा करके। (२) उत्साहित होकर, उमंग में आकर। (३) चढ़ाई कर, धावा करके।

ललचानी—लालच की, लुभानी, तरसी।

ललाट—माथ, लिलार।

ललात—सिहकता, तरसता, ललकता। (२) ललानेवाला, तरसनेवाला।

ललाम—'सुन्दर' मनोहर, सुहावना। (२) प्रधान, प्रमुख, मुख्य। (३) भूषण, गहना। (४) घोड़े के मस्तक का एक चिन्ह और घोड़े का ज़ेवर। (५) मानिक, चुन्नी, लाल। (६) केतु, ध्वजा।

ललित—'सुन्दर' शुभ्र, मनोहर। (२) मृदु, कोमल, मुलायम। (३) चमकीला, कान्तिमान, झलकदार। (४) प्रेमी, प्यारा, प्रिय। (५) एक रागिनी का नाम। (६) संयोग शृङ्गार में नायिका के अङ्गों का अलंकृत किया जाना ललित हाव कहलाता है। (७) एक अलंकार का नाम जिस में जो वृत्तान्त कहना है उसे सीधे न कह कर उसका प्रतिबिम्ब मात्र वर्णन किया जाता है।

ललितललाम—सुन्दरकान्तिमान, मनोहर झलक वाला। (२) चमकीला माणिक, झलकदार लाल।

ललिताई—सुन्दरता, शोभा।

लल्लाट—ललाट, माथ, मस्तक।

लवन—लवण, नोन, नमक। (२) लवणासुर नाम का दैत्य जो शत्रुघ्नजी के हाथ से मारा गया था।

लवनाम्बुनिधि—(लवण+अम्बुनिधि) लवणासुर

रूपी समुद्र। (२) लवणसिन्धु, खारासागर, क्षारसमुद्र।
लषन—लक्ष्मण, लषण, सौमित्रि।
लसत—सोहता है, फबता है।
लसदञ्जना—(लसत+अञ्जनी) शोभन अञ्जनी, फबनेवाली अञ्जनी।
लसस्सि—लसती हो, सोहती हो।
लह—लब्ध, प्राप्त।
लहत—लहता है, पाता है।
लक्ष—लच्छ, लाख। (२) लक्ष्य, निशाना।
लक्षण—लच्छन, पहचान, अलामत। (२) लाञ्छन, कलंक। (३) लक्ष्मण, लषण।
लक्षित—लखा हुआ, जाना। (२) चिह्नित।
लक्ष्मण—लछिमन, लखण, लषनलाल, सौमित्रि, ये शेषजी के अवतार माने जाते हैं, इसी से इनका नाम अनन्त, सहस्रफणि, शेष आदि भी पुकारा जाता है। (२) लक्ष्मीवान्, श्रीमान्।
लक्ष्मणानन्त—(लक्ष्मण+अनन्त) लछमन शेषावतार।
लक्ष्मणानन्द—(लक्ष्मण+आनन्द) लछिमनजी को आनन्ददेनेवाले।
लक्ष्मणानुज—(लक्ष्मण+अनुज) लछिमनजी के छोटे भाई शत्रुघ्न।
लक्ष्मी—कमला, पद्मा, पद्मालया, रमा, लछमी, लच्छि, श्री, सिन्धुजा, हरिप्रिया विष्णुभगवानकी प्रियतमा, योगमाया। (२) धन, सम्पत्ति, सम्पदा। (३) ऋद्धि, अष्टवर्ग की एक औषधि का नाम।
लक्ष्य—लक्ष, निशाना। (२) व्याज, हीला, बहाना।
ला—ले आ, समीप ले आने का आदेश।
लाइ / लाई —ले आकर, समीप में लाकर। (२) संयुक्त करके, मिला कर।
लाख—लक्ष, सौ हज़ार। (२) लाक्षा, लाही।
लाग—लगै, संयुक्त हो, मिलै। (२) संयुक्त हुआ, लगा, मिला। (३) लगाव, तअल्लुक। (४) बैर, विरोध। (५) होड़, रेसारेसी।
लागत—लागता है, मिलता है।
लागि—लग कर, मिल कर। (२) हेतु, कारण, लिये, वास्ते।
लाघव—लघुता, हलकापन। (२) शीघ्रता, तुरन्त, बड़ी फुर्ती। (३) क्षुद्रता, छोटाई, ओछापन। (४) अपमान, अनादर। (५) स्वस्थ, आरोग्यता।
लाज—लज्जा, व्रीड़ा, शरम, हया।
लाञ्छन—कलंक, धब्बा, दाग़,। (२) लक्षण, पहचान, निशान।
लाञ्छनमुदारं—(लाञ्छनं+उदारं) उदारता सूचक चिह्न, भृगुलता।
लाड़िले—प्यारा, दुलरुआ।
लाभ—लाहु, नफा, फ़ायदा। (२) प्राप्ति, मिलना।
लाय—लाइ, लाकर।
लायक—(अर्बी)। योग्य, समर्थ।
लाल—रक्त, लोहित, सुर्ख़। (२) लाड़िला, प्यारा। (३) एक पत्थर जो रत्नों में माना जाता है, माणिक। (४) एक स्नेह सूचक सम्बोधन।
लालच—लोभ, तृष्णा, तमा।
लालची—लोभी, लालच करनेवाला।
लालत—प्यार करता है, दुलारता है।
लालसा—अत्यन्तचाह, बड़ीअभिलाषा। (२) उत्कण्ठा, प्रबल इच्छा। (३) प्रार्थना, बिनती।
लालित्य—सुन्दरता, मनोहरता।
लावन्य—शरीरसौन्दर्य, शोभा, छबि। (२) लवणयुक्त, नमकीन।
लावत—लाता है, ले आता है। (२) लगाता है, जोड़ता है, लगाव करता है।
लासा—लसदार चिपकनेवाली वस्तु, जैसे—बड़ वा गूलर के वृक्ष का दूध जिसका लासा बना कर बहेलिया पक्षी फँसाता है।
लाह / लाहु —'लाभ' फ़ायदा। (२) लाक्षा, लाख।
लिखा—लेख, लिखी हुई लिखावट।
लिखाउ—लिखाओ, लेखवद्ध कराओ।
लिखीलिपि—अक्षरविन्यास, लिखित लेख।
लिङ्ग—उपस्थ, मूत्रेन्द्रिय, पेशाब करने की इन्द्री। (२) पार्थिव, लिङ्गाकार शिवजी की प्रतिमा। (३) पुरुष का चिह्न, पुल्लिङ्ग (४) चिह्न।
लिपि—लेख, लिखावट।

लिय
लिया
लिये
ली } —निमित्त, हेतु, वजह। (२) ग्रहण किया, अङ्गीकार किया, अपनाया।

लीक—रेखा, चीन्ह, लकीर। (२) कलंक, धब्बा, दाग़। (३) मर्यादा, प्रतिष्ठा, बड़ाई। (४) सत्पथ, सुडगर।

लीख—'लीक' रेखा, लकीर। (२) लेख, लिखावट, तहरीर। (३) जुएँ का अण्डा, केशों में उत्पन्न होनेवाले कृमि।

लीजिये
लीजे } —ग्रहण कीजिये, अपनाइये।

लीन—संलग्न, तत्पर, लगा हुआ। (२) लिया, लीन्ह, पाया।

लीन्ह—लिया, ग्रहण किया, स्वीकार किया।

लीन्हे—लिये, लिया। (२) हेतु, कारण।

लीला—क्रीड़ा, केलि, खेल। (२) कुतूहल, कौतुक, तमाशा। (३) संयोग शृङ्गार में नायक नायिका जब प्रेम वश परस्पर एक दूसरे का वेष धारण करते हैं, वह लीला हाव कहलाता है।

लीलावतारी—(लीला+अवतारी) खेल से जन्म लेनेवाले।

लीलि—ग्रसि, निगलि, लील कर।

लुगाई—'स्त्री' महिला।

लुनियत—लवता हूँ, काटता हूँ।

लुब्ध—आसक्त, लट्टू हुआ, मोहित। (२) लोभी, लालची, अभिलाषा रखनेवाला।

लूगा—'वस्त्र' कपड़ा, धोती ओढ़ना आदि।

लूट—अपहरण, डकैती, डाकेज़नी। (२) दूसरे की सम्पत्ति ज़ोरावरी से छीन कर अपने अधिकार में करना।

लूम—लाङ्गूल, बालधि, पूँछ।

लूमलीला—पूँछ का खेल।

लेखहि—समझै, जानै। (२) गणना करे।

लेखा—'देवता' विबुध, अमर। (२) गणित, ब्योरा, हिसाब। (३) हेतु, कारण, वजह।

लेत—लेता है, प्राप्त करता है।

लेवा—लेना, पाना, प्राप्त करना।

लेवादेई—लेनादेना, परस्पर का व्यवहार।

लेस—लेश, सूक्ष्म, अल्प, थोड़ा। (२) एक अलङ्कार का नाम जिसमें गुण को दोष और दोष को गुण रूप वर्णन किया जाता है। जैसे—जौं नहिँ होत मोह अति मोही, मिलतेउँ तात कवन विधि तोही।

लै—लेइ, लेकर, ग्रहण करके।

लैउठी—ले उठी, समर्थन की, ताईद की। (२) किसी बात को एक मत होकर समाज के लोगों का उचित ठहराना।

लौं—लौं, लग, तक।

लोक—'जगत' विश्व, भुवन। (२) लोग, मनुष्य, आदमी। (३) स्वर्गलोक, मृत्युलोक और पाताल लोक।

लोकनाथ
लोकनायक
लोकप
लोकपति
लोकपाल } —दिक्पाल, दिगीश, दिशापति। (२) ब्रह्मा, विरञ्चि, विधाता। (३) विष्णु, केशव, नारायण। (४) राजा, भूपाल, नरनाथ।

लोकान्तकृत—(लोक+अन्त+कृत) लोकों का अन्त किया, जगत का नाश किया।

लोकाभिराम—(लोक+अभिराम) लोक को आनन्द-दायक। (२) मनुष्यों में सुन्दर।

लोकेस—लोकेश, लोकनाथ, लोकपाल। (२) ब्रह्मा। (३) विष्णु। (४) राजा।

लोग—मनुष्य, नर, आदमी।

लोचन—'आँख' चक्षु, नेत्र।

लोटन—झाड़, झुरमुट, झाड़ी। (२) लपटनेवाली लता,, सूक्ष्म काँटेवाली ज़मीन पर फैली हुई लघु बेल वा लतर। (३) भूतजटा, जटामासी, बिलाईलोटन।

लोप—अदृश्य, अन्तर्हित, गुप्त, छिपा। (२) प्रलय, नाश, क्षय।

लोपित—अदृश्य किया, छिपाया। (२) नाश किया।

लोपी—लोप कर दिया, नाश किया।

लोभ—लुब्धता, तृष्णा, लालच, तमा, पराया धन वा पराई वस्तु बिना किसी परिवर्तन के ले लेने

की प्रबल इच्छा। (२) कृपणता, कंजूसी, सूमड़ापन।

लोभागि—(लोभ+आगि) लोभ की अग्नि, लोभ रूपी पावक।

लोभादि—(लोभ+आदि) काम, क्रोध, मद, मोह और मत्सरता।

लोभाहिँ—लुभाते हैं, मोहित होते हैं।

लोम—राम, रोवाँ।

लोयन—'आँख' नेत्र, लोचन।

लोल—चञ्चल, हिलता डोलता, जो स्थिर न रहे। (२) लोभी, लालची। (३) लोर, आँसू।

लोलुप—लोलुभ, अत्यन्त लालची, बड़ा लोभी।

लोह—अय, तीक्ष्ण, शस्त्रक, लौह, लोहा, यह सात प्रकार की धातुओं में खानि से उत्पन्न होनेवाली धातु है। इस्पात, फौलाद, कान्त और मुण्ड आदि भेदों से लोहा कई प्रकार का होता है। (२) सुवर्ण, सोना। (३) रौप्य, चाँदी। (४) ताँबा, ताम्र। (५) अगर का वृक्ष,

लोहित—रक्त, लाल, सुर्ख। (२) रुधिर, लोहू।

लौँ—लों, लग, तक।

लौकिक—संसारी, लोक व्यवहार में आनेवाला, इस लोक का जो जगत में व्यवहृत होता हो।

ल्यावौँ—ले आता हूँ, लाता हूँ।

(व)

व—हिन्दी वर्णमाला का उन्तीसवाँ व्यञ्जन और यवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान दन्त ओष्ठ है। (२) अथवा, किम्वा, वा। (३) कल्याण, क्षेम। (४) वरुण, प्रचेता। (५) मन्त्रणा, सलाह। (६) समुद्र, सागर। (७) पवन, वायु, हवा।

वक—कङ्क, बलाक, बक, बकुला, बगुला, पक्षी विशेष जो हंस की सूरत से मिलता है और मछली मेढक आदि जलजीवों को भक्षण करता है। यह जल में अचल होकर खड़ा रहता है, मछली मेढक ज्यों ही पास आते हैं त्यों ही झपट कर चोंच से पकड़ उन्हें निगल जाता है इसी से धोखेबाज़ी में वकध्यान प्रसिद्ध है। (२) व्यर्थ वार्ता, बेमतलब की बात।

वकुल—मौलसिरी का वृक्ष, मकुल का पेड़ आम्र-वृक्ष के समान बड़ा होता है।

वक्यो—बकेउ, बकवाद किया, बका।

वक्र—कुटिल, टेढ़ा, घूमा हुआ। (२) भग्न, टूटा हुआ। (३) भिदा, छेदा हुआ। (४) दीन, नत।

वक्त्र—'मुख' आनन, वदन।

वचन—वचः, वच, बचन, बात, बोल, वह शब्द जो मुख से उच्चारण किया जाय। (२) प्रतिज्ञा, पण, कौल। (३) वाक्, वाग, शब्द समूह। (४) उक्ति, कथन। (५) तिङ् और सुप आदिक विभक्त्यान्त पदों का समूह।

वचनानुसारी—(वचन+अनुसारी) बचन के अनुसार चलनेवाला।

वज्र—असनि, अशनि, पवि, दधीच के हाड़ से बना हुआ देवराज इन्द्र का अस्त्र। (२) चाकी, गाज, बिजली। (३) हीरा, हीरक। (४) थूहर, सेहुँड़।

वज्रसार—वज्र का हीर, अत्यन्त कठोर।

वञ्चक—'ठग' बटपार, लुटेरा। (२) धूर्त्त, छली, धोखेबाज। (३) शृगाल, सियार।

वञ्चना—ठगना, धोखा देना, ठगहारी।

वञ्चित—ठगा गया, छला गया, लूटा गया।

वट—न्यग्रोध, बहुपाद, क्षीरी, वृक्षनाथ, यक्षतरु, जटिल, बरगद का पेड़। बड़ का वृक्ष बड़ा होता है, पत्ते हरे रंग के गोल और फल लाल रंग के लगते हैं। इसकी छाया घनी और सुहावनी होती है। शाखाओं से जटाएँ निकलती हैं वे कालान्तर में धरती पर वृक्ष रूप धारण करती हैं इसका वृक्ष सहस्रों वर्ष तक वर्तमान रहता है। प्रयाग, गया और जगन्नाथपुरी में अक्षैवट के नाम से इसके वृक्ष प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि उन वृक्षों का कभी नाश नहीं होता।

वटु—ब्रह्मचारी, प्रथमआश्रमी, ब्रह्मचर्य ब्रत पालन करते हुए गुरु से वेदाध्ययन करनेवाला। (२) ब्राह्मण, विप्र, भूसुर।

वत्—समान, तुल्य, बराबर।

वत्स—बछुवा, बछड़ा, गाय का बच्चा। (२) बालक, शिशु, लड़का। (३) वत्सर, वर्ष, साल। (४) प्रिय, प्यारा, स्नेही। (५) वक्षस्थल, छाती।

वत्सर—वर्ष, साल, बरिस। (२) वत्सल, प्यारा।

वत्सल—प्रिय, प्यारा, स्नेही, छोह करनेवाला। (२) दयालु, मिहरबान।

वद—कह, बोल, भाषण करने के लिये आदेश। (२) वक्ता, बोलनेवाला, कहनेवाला।

वदत—'वदना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। कहता है, बोलता है, कथन करता है।

वदन—'मुख' आनन, मुँह।

वदरिकाश्रम—वदरीश, नरनारायण के तपस्या का स्थान जो चार प्रसिद्ध धामों में एक धाम हिमालय पर्वत में वर्तमान है।

वध—मारण, घात, हिंसा, हत्या। (२) निर्वासन, स्थान छुड़ाना, खदेड़ना, भगाना।

वधिक—व्याधा, हिंसक, हत्या करनेवाला।

वधू—भार्या, पत्नी, जोरू। (२) पतोहू, पुत्र की स्त्री। (३) स्त्री, वनिता, औरत। (४) असवरग नाम की एक औषधि।

वन—अटवी, अरण्य, कानन, गहन, विपिन, बन, जंगल, वृक्ष लताओं से परिपूर्ण वह निर्जन स्थान जहाँ व्याघ्रादि हिंसक जन्तु निवास करते हैं और मनुष्य का गुजर कठिनता से होता है। (२) समूह, व्रात, समुदाय। (३) पानी, जल, नीर।

वनचर—'वानर' बलीमुख, बन्दर। (२) मृग और कोल भील आदि वन में विचरनेवाले जीव। (३) जलजन्तु, मछली नक्रादि।

वनचरध्वज—मछली के निशानवाली पताका। (२) कामदेव, मीनकेतु।

वनचारी—'वनचर' वन में विचरण करनेवाले जीवजन्तु।

वनज—'कमल, पद्म, कञ्ज।

वनजनाभ—'विष्णु' कमलनाभ, जिसकी नाभि से कमल उत्पन्न होता हो।

वनद—'मेघ, जलद, वारिद।

वनदाभ—(वनद+आभ) मेघकान्ति, बादर के समान द्युतिवाला, श्याम शरीर।

वनमाल—पुष्पमाल, वह माला जो तुलसी, कुन्द, मन्दार, पारिजात और कमल के फूलों की घुटने पर्यन्त लम्बी बनती है।

वनिता—'स्त्री' महिला, औरत।

वन्दत—'वन्दना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। वन्दना करता है, प्रणाम करता है।

वन्दन—अभिवादन, प्रणाम, नमस्कार।

वन्दनीय—अभिवादनीय, प्रणाम करने योग्य, नमस्कार करने लायक।

वन्दारु—अभिवादक, प्रणाम करनेवाला।

वन्दि—अभिवादन कर, प्रणाम करके। (२) वन्दी, बँधुआ, कैदी।

वन्दिछोर—'वन्दीछोर, बँधुआ को छुड़ानेवाला।

वन्दित—अभिवादन किया गया, प्रणाम किया गया।

वन्दिनि—वन्दनीया, प्रणाम की गई। (२) बँधुआई में पड़ी, कैद हुई।

वन्दी—बँधुआ, कैदी, बन्धन में पड़ा हुआ।

वन्दीछोर—वन्दिछोर, बँधुआ को छुड़ानेवाला, बन्धन से छुटकारा देनेवाला, कैद से रिहा करनेवाला।

वन्द्य—वन्दनीय, अभिवादनीय, वन्दना करने योग्य, प्रणाम करने लायक।

वन्द्याङ्घ्रि—(वन्द्य+अङ्घ्रि) वन्दनीय चरण, वन्दना करने योग्य पद।

वपत—'वपना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। बोता है, बीज डालता है।

वपु
वपुष } —'शरीर' तनु, देह।

वमन—छर्दि, वमि, वमथु, छाँट, उलटी, कै, भोजन किए हुए अन्न जल का वेग के साथ मुख द्वारा बाहर आना।

वय
वयस } अवस्था, आयु, उमर, जीवनकाल में शरीर की दशा का परिवर्तन। (२) पक्षी, विहङ्ग, खग।

वयम्—हमलोग, हम सब।
वर—श्रेष्ठ, उत्तम, बर। (२) वरदान, आशीर्वाद, गुरु ब्राह्मण और देवता प्रदत्त आसीस। (३) दूलह, दुलहा। (४) कुङ्कुम, केसर।
वरजत—वर्जत, हटकत, मना करत।
वरजित—वर्जित, मना किया हुआ।
वरजिये—वर्जिये, मना कीजिये।
वरण—'वर्ण' जाति, क़ौम।
वरणत—वर्णत, भाषत, कहत।
वरणा—बरनानदी जो जिला इलाहाबाद से निकल कर भदोही और कसिवार होती हुई काशी के उत्तर गङ्गा में मिली है। वरणा के दक्षिण और अस्सी घाट के उत्तर की भूमि वाराणसी कहलाती है। 'बनारस' शब्द वाराणसी का अपभ्रंष्ट रूप मालूम होता है।
वरणित—वर्णित, कथित, कहा हुआ।
वरद—वर दाता, वर देनेवाला।
वरदान—वर, देवता प्रदत्त वाञ्छित आशीर्वाद।
वरदायक—वरद, वर देनेवाला।
वरदेस—(वर+द+ईश) वरदायकों के स्वामी, वर देनेवालों के मालिक।
वरवश—बरबस, जोरावरी, जबर्दस्ती।
वरवाणी—बरबानी, श्रेष्ठ वाणी।
वरवारि—श्रेष्ठ जल, अच्छा पानी। (२) गङ्गाजल।
वरविराग—श्रेष्ठ वैराग्य, उत्तम विरति।
वरवीर—अच्छा शूरवीर।
वरषि—वर्षा करके, बरस कर।
वरषे—वर्षा से, बरसने से।
वरषै—वर्षै, वृष्टि करै, बरसै।
वरहि—बराइ, वर्जन करके। (२) मोर, मुरैला।
वरहिजात—बराया जाता, परहेज किया जाता।
वराका—दीन, ग़रीब। (२) तुच्छ, लघु, नाचीज़।
वराह—'शूकर' कोल, सुअर।
वरु—'वर' श्रेष्ठ। (२) वरदान, आशीर्वाद।
वरुण—अप्पति, पाशी, प्रचेता, जल के देवता, पश्चिम दिशा के स्वामी दिगपाल। आठों दिक्पालों में से एक।

वरुणाग्नि—(वरुण+अग्नि) वरुण और अग्नि दोनों दिगपाल।
वरूथ—झुण्ड, गोल, गरोह। (२) रथ की खोली जो रक्षार्थ ओढ़ाई जाती है।
वरे—विवाहे, व्याह किये। (२) नाता जोड़े।
वर्ग—जाति का समूह, एक ही प्रकार के जीव अथवा पदार्थों का समुदाय।
वर्जित—मना किया, रोका हुआ।
वर्ण—अक्षर, हरूफ़। (२) रङ्ग, लाल पीला आदि। (३) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों की चातुर्वर्ण्य संज्ञा है। (४) स्तुति, प्रशंसा, बड़ाई। (५) हाथी को पीठ पर बिछानेवाला गद्दा। (६) जाति, क़ौम।
वर्णन—कथन, भाषण, वरणन, बरनन, बखान, बयान। (२) किसी विषय का प्रतिपादन करना।
वर्णाश्रमाचार—(वर्ण+आश्रम+आचार) वर्ण और आश्रम का आचार, वर्णाश्रम धर्म।
वर्णित—कथित, बरनित, कहा हुआ।
वर्तमान—उपस्थित समय, जो वक्त बीत रहा है, वर्तमान काल। (२) विद्यमान, आछत, मौजूद।
वर्तिका—वर्त्ति, बाती, बत्ती।
वर्द्धन, वर्धन—वृद्धि, उन्नति, बढ़ती। (२) उन्नत करनेवाला, बढ़ानेवाला। (३) छेदना, काटना, भेदनेवाला।
वर्म, वर्माणि—'कवच' सनाह।
वर्मधारी—कवचधारी, जिरहबकतर पहननेवाला
वर्य, वर्य्य—श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा, भला। (२) प्रधान, प्रमुख, अगुवा।
वर्ष—सम्वत्सर, वत्सर, अब्द, बरस, बरिस, साल, बारह मास का समय जो देवताओं का एक दिन कहलाता है। (२) भारत, हिन्दुस्थान। (३) वर्षा, वृष्टि, बरसात।
वल्कल—त्वच, छाल, बोकला।
बल्मीक—विवर, बाँबी, बिल। (२) रन्ध्र, छिद्र, छेद। (३) माँद, खोह। धरती अथवा तालाब के भीटों में बनाया हुआ विवर जिसमें सियार, बिगवा'

साही आदि प्रवेश करते हैं वह माँद कहाती है। चूहा, नेवले आदि के घुसने योग्य विवर बिल और चींटी, चींटे, दीमक आदि के पैठने का विवर रन्ध्र कहलाता है।

वल्लभ—प्रिय, प्यारा, प्रेमी। (२) पति, भर्त्ता, भतार। (३) स्वामी, मालिक।

वल्लभा—प्रिया, प्यारी, प्रेमिनी। (२) अध्यत्ता, स्वामिनी, मालकिन।

वल्लि—'लता' वल्ली, बौंड़।

वल्लिमिव—(वल्ली+इव) लता के समान।

वल्ली—'लता' वल्लरी, बेल।

वश—अधीन, वशीभूत, बस में। (२) अधिकार, क़ाबू, इख़्तियार। (३) शक्ति, बल, जोर। (४) इच्छा, चाह, ख़्वाहिश।

वशकर्त्ता
वशकारी } —वश में करनेवाला, क़ाबू में रखने-वाला।

वश्य—वशवर्त्ती, वशीभूत, अधीन रहनेवाला। (२) सेवक, ताबेदार, टहलू।

वसन—'वस्त्र' कपड़ा, पट।

वसन्त—ऋतुराज, मदनमित्र, छः ऋतुओं में से एक जिसका भोग काल चैत्र और वैशाख मास है। इस ऋतु में वृक्षों के पुराने पत्ते गिर जाते और उनमें नवीन पत्ते निकलते हैं। (२) एक राग का नाम जो फाल्गुण चैत्र मास में गाया जाता है। (३) माघ शुक्ल पंचमी तिथि वसन्त के नाम से पुकारी जाती है।

वसीला—(अर्बी) अवलम्ब, सहारा, ज़रिया। (२) घर, मकान, रहने की इमारत। (३) विस्तार, फैलाव। (४) किसी इच्छित स्थान पर पहुँचने के लिये अच्छा साथ।

वसु—गण देवता जिनकी संख्या आठ है, यथा—धर, ध्रुव, सोम, सावित्र, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास। (२) धन, सम्पत्ति, दौलत। (३) कुवेर, वैश्रवण। (४) पानी, जल। (५) अग्नि, पावक। (६) अष्ट, आठ की संख्या (७) रत्न, मणि, जवाहिरात। (८) सुवर्ण, हेम, सोना। (९) बड़ी मौलसिरी का पेड़। (१०) किरण, मरीचि।

वसुधा
वसुन्धरा } —'पृथ्वी' धरा, धरती।

वस्तु—पदार्थ, द्रव्य, चीज़। (२) साहित्यशास्त्र के अनुसार जहाँ सीधी कहनूति में अलंकार नहीं पाया जाता, वह प्रगट वा व्यङ्ग चाहै जैसे हो उसकी वस्तु संज्ञा है।

वस्त्र—अम्बर, आच्छादन, ओढ़ना, अंशुक, कपड़ा, चैल, निचोल, पट, वसन, लूगा। कपास से रूई निकाल कर सूत बनाया जाता है। उसको हाथ से यंत्र द्वारा बुनते हैं वह वस्त्र कहलाता है। यह मनुष्यादिकों के लिये शोभा वर्द्धक और लज्जा का रक्षक है।

वह—वे सब, अन्यवाची सर्वनाम। (२) बैल का कन्धा।

वहित्र—जलयान, पोत, जहाज।

वह्नि—'अग्नि' पावक, अनल।

वा—अथवा, किम्बा, या, विकल्पवाचक। (२) यथा, इव, उपमावाचक। (३) पुनः, फिर।

वाक्य—वाक, वाग, वचन, वाणी, बोल। (२) शब्दसमूह, पदों का इकट्ठा होना, जुमला।

वाक्यज्ञान—शब्दज्ञान, बचन की समझदारी।

वाग—'वाक्य' वचन, बोल।

वागीश—(वाक+ईश) ब्रह्मा, विधाता। (२) वाक-पटु, चतुर बोलनेवाला।

वागुरा—फन्दा, मृगबन्धन, मृग और पक्षियों को फंसाने का जाल।

वाचक—सार्थक शब्द, ऐसा शब्द जिसका अर्थ हो, जिस शब्द के सुनते ही किसी वस्तु विशेष का अर्थ जाना जाय। जैसे 'जल' कहने से साथ ही 'पानी' का बोध होता है। जल शब्द वाचक है और द्रवपदार्थ पानी वाच्यार्थ है। इसी प्रकार प्रत्येक शब्दों में वाचक वाच्य समझना चाहिये। (२) वक्ता, बोलनेवाला।

वाच्य—वाचक का अर्थ, वाचार्थ शब्दार्थ, नामार्थ, अभिधेयार्थ, मुख्यार्थ। (२) वर्णनीय, कहने योग्य, बखान करने के लायक।

वाज—पत्री, शशादन, श्येन, स्येन, सचान, बाज,

एक पत्ती जो चील्ह के समान होता है और जीवित पक्षियों का शिकार करता है। इसके भय से उड़ते हुए पखेरू मात्र धरती पर गिर पड़ते हैं। शिकारी मनुष्य इसे पालते हैं और इसके द्वारा पक्षियों का शिकार करते हैं।

वाजपेयी—बाजपेई, अश्वमेध यज्ञ करनेवाला।

वाजिमेध—अश्वमेध, घोड़े का यज्ञ, वह यज्ञ जिस में यज्ञकर्त्ता के लोकविजयी होने की सूचना के साथ घोड़ा छोड़ा जाता है, वह देश देशान्तरों में भ्रमण करता है और साथ में बड़ी सेना रखवाली करती जाती है जब घोड़ा सकुशल लौट आताहै तब यज्ञ पूर्ण होता है। सार्वभौम महाराजाओं के सिवा अन्य कोई इस यज्ञ को कर नहीं सकता।

वाजी—अश्व, तुरंग, घोड़ा।

वाट—मार्ग, पन्थ, रास्ता।

वाटिका—पुष्पोद्यान, उपवन, फुलवारी।

वाणी—शारदा, सरस्वती, गिरा। (२) वचन, बोल, बानी।

वात—बचन, बात, बोल। (२) वायु, बतास।

वातसञ्जात—पवनकुमार, हनुमान, वायुनन्दन। पवनदेव से उत्पन्न।

वात्सल्य—प्यार, प्रेम, स्नेह। (२) दयालुता, कृपालुता, मिहरबानी।

वाद—शास्त्रार्थ, विवाद, परस्पर की कहा सुनी, बहस। (२) कलह, झगड़ा। (३) दावा, फरियाद। (४) वचन, बोल।

वादि—व्यर्थ, वृथा, निष्प्रयोजन, बेमतलब।

वादी—वक्ता, बोलनेवाला। (२) बादी, विरोधी, मुद्दई, झगड़ा करनेवाला।

वाद्य—बाजा, बाजन।

वान्—यह प्रत्यय जिस शब्द के अन्त में लगता है उसका अर्थ कर्त्ता का पाया जाता है जैसे—दयावान्, गाड़ीवान् आदि।

वानप्रस्थ—वैषानस, तपस्वी, तृतीय आश्रम, जिसमें स्त्री संयुक्त शीलावृत्ति द्वारा क्षुधा की शान्ति करते हुए एकान्त में ईश्वर की उपासना की जाती है।

वानर—कपि, कीश, प्लवंग, बन्दर, मरकट, मर्कट वनौका, वलीमुख, शाखामृग। बन्दरों में जाति भेद से अनेक प्रकार नीले, पीले, श्वेत और लाल रङ्ग के होते हैं।

वानरबन्धु—बन्दरों के भाई, कीशों के सहायक। श्रीरामचन्द्रजी।

वानराकार—(वानर+आकार) बन्दर की आकृति, मर्कट का रूप।

वानीर—'वेत' वञ्जुल, बेंत का वृक्ष।

वापी—वापिका, बावली।

वाम—बायाँ, दक्षिण का उलटा। (२) विपरीत, विपर्यय, उलटा (३) वक्र, कुटिल, टेढ़ा। (४) अधम, नीच। (५) शिव, रुद्र। (६) स्त्री, वामा, औरत।

वामदेव—'शिव' महेश, ईशान। (२) एक ऋषि का नाम।

वामन—ह्रस्व, लघु, छोटा। (२) वह मनुष्य जिसकी उँचाई बावन अंगुल की हो, बवना आदमी। (३) वामनावतार, विष्णु भगवान का एक अवतार जो राजा बलि को छलने के निमित्त हुआ था। (४) दक्षिण दिशा का दिग्गज, हाथी। विशेष विवरण 'बलि' शब्द में देखो।

वामविधि—विधाता की टेढ़ाई, ब्रह्मा की प्रतिकूलता।

वामा—'स्त्री' वनिता, महिला।

वामासि—(वामा+असि) स्त्री हो।

वामौ—टेढ़े भी, उलटे भी।

वाय } वायु }—'पवन' बतास, हवा। (२) त्रिदोष, सन्निपात, बाई।

वार—दिन, वासर, दिवस। (२) बेर, दफा, मर्तबा। (३) अवसर, समय, मौका। (४) पानी जल। (५) समूह, व्रात।

वारण } वारन }—'हाथी' गज, करि (२) निवारण, निषेध, छुड़ाना। (३) अर्पण, भेंट, न्योछावर होना। (४) कवच, बख़्तर।

वारान्निधे—(वारि+निधि) समुद्र, सागर।

वाराह—'शूकर' सुअर।
वारि—'पानी' जल, नीर।
वारिचर—जलचर, जलजन्तु, पानी में विचरनेवाले जीव मछली आदि।
वारिछालित—पानी से धोया हुआ, जल से पखारा हुआ। (२) स्नान किया हुआ, नहाया हुआ।
वारिज—'कमल' कञ्ज, पद्म।
वारिद—'मेघ' बादर, घन।
वारिदनाद—मेघनाद, रावण का पुत्र। (२) मेघ का गर्जन, बादलों का शब्द।
वारिदाभ—(वारिद+आभ) मेघ की कान्ति, बादलों की चमक।
वारिधर—'मेघ' घन, बादर।
वारिधि—'समुद, सिन्धु।
वारिय } —वारन कीजिये, न्योछावर कीजिये।
वारिये } (२) भेंट करता हूँ, न्योछावर करता हूँ।
वारीश—'समुद्र' अर्णव, सागर।
वारीशकन्या—'लक्ष्मी' कमला, रमा।
वालधि—लूम, लाङ्गल, पूँछ।
वालमीकि—आदिकबि, बालमीक मुनि, रामायण के प्रथम आचार्य्य। पहले ये किरातों के संग में पड़ कर चोरी, ठगी और हिंसा में तत्पर घोरकर्म करते थे। एक वार सप्तर्षियों के उपदेश से इन्हें ज्ञान हुआ, पापकर्म त्याग कर 'मरा मरा' जपने लगे। राम नाम के प्रभाव से पाप मुक्त होकर ब्रह्मर्षि पद को प्राप्त हुए और ईश्वर के रूप हो गए।
वासना—'इच्छा' चाह, ख़्वाहिश।
वासर—'दिन' दिवस, बार।
वासव—'इन्द्र' मघवा, देवराज।
वासि—बास कर, भावित करके।
वासित—भावित, बसाया हुआ, पुष्पादि से सुगन्धित किया हुआ पदार्थ।
वाहन—यान, सवारी।
वि—यह उपसर्ग जब शब्दों के आदि में आता है तब उसका अर्थ कभी वियोग, कभी विशेष, कभी निश्चय, कभी भिन्नता, कभी हीन, कभी विरोध और कभी आधार का होता है। (२) पक्षी, विहङ्ग।
विकट—भीषण, भयानक, डरावना। (२) वक्र, बंक, टेढ़ा। (३) कठिन, दुर्गम, कठोर। (४) दुःखद, कष्टप्रद, संकट उत्पन्न करनेवाला।
विकटतनु—भीषण शरीर, भयङ्कर, देह।
विकटतर—अत्यन्त भयङ्कर, अति डरावना।
विकटवेष—भयानक भेश, डरावनी सूरत।
विकराल—भयङ्कर, भय उपजानेवाला।
विकल—व्याकुल, घबराया हुआ।
विकलता—व्याकुलता, घबड़ाहट।
विकार—दुर्गुण, दोष, ऐब। (२) विकृति, प्रकृति का बदल जाना, स्वभाव परिवर्तन।
विकाश—प्रकाश, उजाला, रोशनी। (२) प्राकट्य, प्रसिद्धि, उजागर। (३) प्रफुल्ल, बिकास, फूला हुआ।
विकाशी—विकाश करनेवाला, प्रकाशक। (२) कुसुमित करनेवाला, फूलनेवाला (३) सूर्य्य, भानु।
विक्रम—पराक्रम, प्रबलता, अत्यन्तबल। (२) क्रान्ति, अराजकता, बलवा।
विख्यात—प्रसिद्ध, जाहिर, मशहूर।
विगत—बिना, रहित, हीन। (२) गया, भिन्न हुआ, दूर हुआ। (३) व्यतीत, बीता, गुजरा। (४) निष्प्रभ, तेज रहित होना।
विगतसार—तत्व हीन, सारवस्तु से ख़ाली।
विगोय—विगोना, गुप्त करना। (२) नष्ट करके।
विगोयो—विगोया, गुप्त किया, छिपाया। (२) नाश किया, ध्वन्स किया।
विग्रह—'शरीर' तनु, देह। (२) युद्ध, झगड़ा, लड़ाई। (३) व्यास, विस्तार, फैलाव। (४) वैमनस्य, अकस, मनमोटाव।
विघटन—घटाना, लघु करना, तुच्छ पद को पहुँचाना। (२) नष्ट करना, नसाना, बिगाड़ना। (३) तोड़ना, खंड खंड करना। (४) बचना, बचाव रखना, महफ़ूज रखना।
विघ्न—अन्तराय, प्रत्यूह, बाधा, ज्ञान का बाधक। (२) अटकाव, रोक, रुकावट।

विचरत—'विचरना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। विचरण करता है, घूमता है। (२) पर्यटन करता हुआ, सैर करता हुआ ।
विचरण—पर्यटन, भ्रमण, घूमना, सैर करना ।
विचल—अनस्थिर, चञ्चल, चलायमान। (२) अधीर होना, साहस छोड़ना। (३) अनखाना, रूठना।
विचार—तत्वनिर्णय, विचारणा, किसी विषय पर अपना मत निश्चित करना। (२) ज्ञान, समझ, सूझ। (३) अभिप्राय, मन का भाव, दिली ख़याल।
विचारे—समझे, सोचे, ज्ञान किये। (२) असहाय, अनाथ, मुँहदूबर ।
विचित्र—विलक्षण, अद्भुत, आश्चर्यजनक । (२) एक अलंकार का नाम जिसमें उद्यम के विपरीत फल की चाहना की जाती है ।
विच्छेद—वियोग, अन्तर, जुदाई ।
विच्छेदकारी—जुदा करनेवाला ।
विजई—विजयी, जीतनेवाला, फतहयाब ।
विजय—जय, जीत, फ़तह ।
विजयदाई—जयदातार, जितानेवाला ।
विजययश—जीत का सुयश, फ़तह की नामवरी ।
विजयी—विजई, फ़तहयाब ।
विट—विष्ठा, पुरीष, मैला । (२) वञ्चक, धूर्त्त, ठग । (३) वैश्य, वणिक, बनियाँ ।
विटप—'वृक्ष' द्रुम, पेड़ । (२) यमलार्जुनतरु, जोड़ा ककुभ का पेड़ ।
विटपाटवी—(बिटप+अटवी) वृक्षों का वन, पेड़ों का समूह, जङ्गल ।
विडम्ब—पाखण्ड, धूर्त्तता, मक्कारी। (२) अपमान, अनादर, तिरस्कार । (३) दुःख, कलेश ।
बिडम्बरत—पाखण्ड में तत्पर, कपट में लगा हुआ। (२) अपमान करने में अनुरक्त ।
विडम्बित—अनादृत, तिरस्कृत, अपमानित । (२) दुखी, पीड़ित, कष्ट पहुँचाया हुआ ।
वितर्क—हेतुपूर्ण युक्ति, विवेचना, दलील । (२) अनुमान, विचार, ऊहापोह। (३) तेंतीस सञ्चारी भावों में से एक जिसमें शङ्का निवारणार्थ तर्क वितर्क किया जाता है ।
वितान—मण्डप, माँड़व, मँड़वा । (२) चँदोवा, तम्बू, खेमा । (३) विस्तार, फैलाव । (४) यज्ञ, मख, याग। (५) तुच्छ, लघु, छोटा । (६) मन्द, नीच ।
वित्त—'धन' सम्पत्ति, दौलत । (२) विख्यात, प्रसिद्ध, जाहिर। (३) विचारित, जाना हुआ, समझा हुआ ।
विद—अभिज्ञ, विज्ञ, जाननेवाला ।
विदारण—चीरना, फाड़ना, विदीर्ण करने की क्रिया या भाव । (२) विदीर्ण करनेवाला, चीरनेवाला, फाड़नेवाला ।
विदारित—चीरा हुआ, फाड़ा हुआ ।
विदित—प्रसिद्ध, जाहिर। (२) संश्रुत, सुना हुआ।
विदुर—धृतराष्ट्र के लघु बन्धु, कुरुराज मंत्री, विदुर की उत्पत्ति दासी से है, ये बड़े धर्मात्मा, नीति निपुण और हरिभक्त थे। जब कौरवों और पाण्डवों से मेल कराने की बातचीत करने के लिये श्रीकृष्णचन्द्रजी हस्तिनापुर गये थे तब अहङ्कारी दुर्योधन का निमंत्रण अस्वीकार कर इन्हीं के घर भोजन किया था। (२) ज्ञाता, प्रवीण, जाननेवाला ।
विदुष—'पण्डित' कोविद, विद्वान ।
विदूषहि—दोष लगावे, निन्दा करे, चिढ़ावे ।
विदेश—परदेश, स्वदेश से भिन्न प्रदेश ।
विद्दरणि—विदारनेवाली, फाड़नेवाली ।
विद्दरित—विदारा हुआ, फाड़ा हुआ ।
विद्ध—वेधित, छेदा हुआ ।
विद्यमान—उपस्थित, आछत, मौजूद ।
विद्या—पाण्डित्य, शास्त्रज्ञान, इल्म । (२) गुण, कला, हुनर। विद्या चौदह प्रकार की शास्त्रज्ञों ने कही है, यथा—ब्रह्मज्ञान, रसायन, वेदज्ञता, वैद्यक, ज्योतिष, व्याकरण, धनुर्धर, जलतरण, संगीत, नाच, घोड़े की सवारी, कोक शास्त्र का जानना, चोरी और वचनचातुरी ।
विद्याग्रणी—(विद्या+अग्रणी) विद्या में अग्रगण्य, विद्वानों में प्रधान ।
विद्यानिपुण—विद्या में प्रवीण ।

विद्यावारिधि—विद्या के समुद्र, विद्यासागर।
विद्युत्—चपला, सौदामिनी, बिजली।
विद्युच्छटाभं—(विद्युत+छटा+आभ) बिजली जैसी चकाचौंध करनेवाली शोभा की झलक।
विद्युल्लता—(विद्युत+लता) तड़ितवल्ली, बिजली की भाँति चमकनेवाली बेलि।
विद्रावनी—विध्वंस करनेवाली, नसानेवाली, क्षयकारिणी। (२) पिछलानेवाली, बहानेवाली, अपक्रम करनेवाली।
विद्रुम—प्रवाल, रक्ताङ्ग, मूँगा, नव रत्नों में एक रत्न जो समुद्र में पानी के भीतर वृक्ष रूप में उत्पन्न होता है। इसका रङ्ग लाल और पत्थर के समान गरुआ होता है।
विध—विधि, प्रकार, तरह।
विधाई—व्यवस्थापक, विधान करनेवाला।
विधाता—'ब्रह्मा' विरञ्चि, धाता।
विधान—व्यवस्था, विधि, तरकीब। (२) शास्त्रोक्त व्यवहार, आचार, रीति।
विधि—'ब्रह्मा' चतुरानन, करतार। (२) भाग्य, क़िस्मत, तकदीर। (३) प्रकार, भाँति, तरह। (४) कल्प, क्रम, नियोग शास्त्र। (५) व्यवस्था, विधान, तरकीब। (६) चाल, ढङ्ग, ढब। (७) एक अलंकार का नाम जिसमें स्वयम् सिद्ध अर्थ का फिर से विधान किया जाता है।
विधिता—ब्रह्मत्व।
विधिवश—दैवात्, संयोगवश, इत्तिफाकन।
विधु—'चन्द्रमा' इन्दु, निशेश। (२) विष्णु, केशव। (३) राक्षस, यातुधान। (४) कर्पूर, कपूर।
विधुन्तुद—'राहु' स्वर्भानु।
विध्वंस—नाश, क्षय, संहार।
विन—विना, बिनु, सिवा।
विनती, विनय—प्रार्थना, बिनती, अर्ज़।
विनय-पत्रिका—विनय की चिट्ठी, विनती की पुस्तक, गोस्वामी तुलसीदासजी कृत विनय।
विनवौं—विनती करता हूँ, प्रर्थना करता हूँ।
विना—विन, बिनु, बिदून, वर्जन करनेवाला वाचक। (२) अतिरिक्त, सिवा, बगैर। (३) अलग, भिन्न, रहित, बिना।
विनायक—'गणेश' गणपति, गजानन। (२) विघ्न, अन्तराय, बाधा। (३) गुरु, श्रेष्ठ, माननीय। (४) गरुड़, बैनतेय, पक्षिराज। (५) बुद्धदेव, मुनीन्द्र।
विनाश—नाश, संहार, ध्वंस। (२) अदर्शन।
विनाशी—विनाशक, संहार करनेवाला।
विनीत—विनयी, नम्र।
विनोद—क्रीड़ा, केलि, खेल। (२) आनन्द, हर्ष, खुशी।
विन्दु—बुन्द, बूँद, कतरा। (२) अनुस्वार, सुन्ना, सिफर। (३) ज्ञाता, जाननेवाला।
विन्दुमाधव—'विष्णु' अच्युत, केशव। (२) त्रिवेणी सङ्गम से दक्षिण तटपर, दारागंज और काशी में स्थापित विन्दुमाधव भगवान् की मूर्त्ति।
विन्ध्य—विन्ध्यपर्वत, विन्ध्याचल।
विन्ध्याद्रि—(विन्ध्य+अद्रि) विन्ध्यपहाड़।
विपति—'विपत्ति' आपद, आफ़त।
विपतिभार—विपत्ति का बोझा।
विपतिहर्त्ता—विपत्ति हरनेवाला।
विपत्ति—आपत, आपद, आपदा, आफत, विपद, बिपदा, विपति मुसीबत।
विपद—'विपत्ति' मुसीबत।
विपरीत—विपर्यय, उलटा, खिलाफ़। (२) विरोधी, शत्रु, दुश्मन।
विपक्ष—प्रतिकूल, विपरीत, उलटे पक्षवाला। (२) शत्रु, बैरी, दुश्मन।
विपिन—'वन' कानन, जङ्गल।
विपुल—विशाल, अत्यन्त बड़ा, बहुत भारी। (२) अधिक, विशेष, बहुत। (३) गम्भीर, गहरा, अथाह।
विप्र—'ब्राह्मण' भूदेव। (२) ब्रह्मचारीद्विज।
विप्रतिय—ब्राह्मण की स्त्री, अहल्या, गौतमी।
विप्रबन्धु—अधमब्राह्मण, पतितद्विज, ब्रह्मत्व हीन भूसुर। (२) अजामिल।
विफल—निष्फल, वृथा, बेफ़ायदा।
विबुध—'देवता' अमर, सुर।

विबुधजननी—देवताओं की माता अदिति, कश्यप मुनि की पत्नी।

विबुधनदी—'गङ्गा' सुरापगा, जाह्नवी।

विबुधवन्दिनि—देवताओं से वन्दनीय, जिसकी वन्दना देववृन्द करते हों।

विबुधान्तकारी—(विबुध+अन्तकारी) देवताओं के नाशक दैत्य और राक्षस।

विबुधापग—(विबुध+आपगा) गङ्गा, देवसरिता।

विबुधारि—(विबुध+अरि) देवताओं के दुश्मन दैत्य और राक्षस।

विबुधेश—(विबुध+ईश) देवताओं के मालिक इन्द्र, पाकशासन।

विभङ्ग—अतिऊर्मि, बहुतरंग, बड़ी लहर। (२) विशेष ध्वंस, अतिशय नाश।

विभव—ऐश्वर्य, विभूति, ऐश का सामान। (२) धन, सम्पत्ति, वित्त। (३) विस्तार, फैलाव, लम्बाई चौड़ाई।

विभाति—शोभित, शोभायमान।

विभासि—(विभा+असि) सोहती हो, शोभा वगारती हो।

विभीषण—रावणानुज, दशानन का छोटा भाई, यह राक्षस वृन्द में रह कर भी परम भागवत हुआ। जब रामचन्द्रजी ने बानरी सेना के सहित लङ्का पर चढ़ाई की तब इसने रावण को बहुत समझाया कि सीताजी को लौटा कर रामचन्द्रजी से मेल कर लो इसमें तुम्हारा कल्याण है; किन्तु रावण ने एक न मानी उलटे लात मार कर तिरस्कृत किया तब यह रघुनाथजी की शरण आया। रामचन्द्रजी ने बिना किसी आगापीछा के अपनी शरण में रख लिया मंत्री बनाया और लङ्का का राजतिलक कर दिया।

विभु—प्रभु, स्वामी, मालिक। (२) समर्थ, योग्य, लायक। (३) परमेश्वर, परमात्मा, ईश्वर।

विभूति—ऐश्वर्य, विभव, भूति। (२) भस्म, राख, ख़ाक।

विभूषण—आभूषण, गहना, जेवर।

विभूषित—अलंकृत, गहना से शोभित।

विमत—विरुद्धमत, भिन्न सम्मति, बहुमत। (२) निश्चित मत, पक्की राय।

विमल—स्वच्छ, निर्मल, साफ़। (२) शुद्ध, पवित्र, पावन।

विमान—व्योमयान, हवाईजहाज।

विमुख—प्रतिकूल, बहिर्मुख, विरोधी, फिराहुआ, सन्मुख का उलटा।

विमूढ़—महामूर्ख, अत्यन्त अज्ञानी।

विमोचन—मुक्त करना, बन्धन से छुड़ाना, बँधुआई से छुटकारा देना, छोड़ना।

विमोह—महा अज्ञान, बहुत बड़ी मूर्खता।

विय—द्वितिय, दूसरा। (२) उत्पन्न, पैदा।

वियत—'आकाश' व्योम, गगन।

विया / वियो }—उपजा, उत्पन्न हुआ, पैदा हुआ। (२) अन्य, दूसरा, और।

वियोग—बिछोह, बिछुड़ना, साथ छूटना, अपने स्नेही सम्बन्धियों से दूर होना।

वियोगी—बिछोही, बिछुड़ा हुआ, जुदा हुआ।

विरक्त—वैराग्यवान, विरागी।

विरचि—निर्माण करके, बना कर।

विरचित—निर्माण किया, बनाया हुआ।

विरज—स्वच्छ, निर्मल, साफ़। (२) अक्रोध, शान्त हृदय, अज्ञान रहित।

विरजतर—अत्यन्त निर्मल, अतिशय स्वच्छ।

विरञ्चि—'ब्रह्मा' विधाता।

विरत—विरक्त, वैराग्यवान, विरागी।

विरति—वैराग्य, निवृत्ति, त्याग।

विरतियष्ठी—विराग का डंडा, वैराग्य रूपी सोटा।

विरद—ख्याति, बड़ाई, नामवरी। (२) बाना, अपने अपने कुल, जाति, पदवी, पथ के अनुसार वस्त्राभूषण, वेश और शस्त्र आदि धारण करना जिससे पहचान हो।

विरदहित—ख्याति के लिये, नामवरी के वास्ते।

विरदावली—(विरद+अवली) बड़ाई की श्रेणी, नामवरी का समुदाय।

विरदैत—विरदवाला, नामवर, प्रख्यात।
विरधाई—बुढ़ाई, ज़ईफ़ी।
विरह—वियोग, बिछोह, जुदाई। (२) वियोग से उत्पन्न हुआ दुःख, वह मानसिक व्यथा जो प्रियजनों के बिछुड़ने से उत्पन्न हो।
विरहार्क—(विरह+अर्क) विरह रूपी सूर्य, वियोग का भानु।
विरहित—विभिन्न, सब प्रकार से अलग।
विरही—वियोगी, बिछड़ा हुआ।
विराग—वैराग्य, विरति, निवृत्ति, त्याग, मनुष्य की वह मनोवृत्ति जब संसारी झंझटों से अलग हो कर ईश्वर आराधान में अनुरक्त हो जाय फिर किसी प्रकार की कामना शेष न रहे।
विरागी—विरक्त, वैराग्यवान, त्यागी। कलियुगी वैरागी जो द्वार द्वार भीख माँगते फिरते हैं और तरह तरह के पाखण्ड रचते हैं वे विरागी नहीं, ठग हैं।
विराज—शोभित, विराजमान।
विराध—एक राक्षस जो रावण का अनुयायी था। इसने घोर तप करके वर पा लिया कि अस्त्र शस्त्र से मेरी मृत्यु न हो जब तक कि जीते जी धरती में न गाड़ दिया जाऊँ। इसका संहार रामचन्द्रजी ने अरण्यवन में जीते जी धरती में गाड़ कर किया था, इसी से रामचरितमानस में गोसाँईजी ने 'खर दूषण विराध वध पंडित' कहा है।
विराम—विश्राम, रुकाव, ठहराव। (२) समाप्ति, अन्त, अवसान। (३) सङ्केत, लखाव, इशारा। (४) निवृत्ति, छुटकारा, संसारी झंझटों से मुक्त होना।
विरुद—'विरद' बड़ाई।
विरुदावली—'विरदावली' बड़ी प्रख्याति।
विरोध—वैर, विद्वेष, शत्रुता, दुश्मनी। (२) निग्रह, त्याग, न मानना।
विलग—पृथक्, भिन्न, जुदा, अलग।
विलगावै—पृथक् करे, अलगावे।
विलम्ब—अबेर, देरी; अरसा।
विलसत—'विलसना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। विलसता है, विहार करता है, क्रीड़ा करता है। (२) आनन्द करता है, प्रसन्न होता है।
विलक्षण—'अद्भुत' आश्चर्यजनक, बिलच्छन, अनोखा, अजीब।
विलाप—रुदन, रोदन, रोना, विलपना।
विलास—क्रीड़ा, विहार, खेल, ऐश। (२) आनन्द, हर्ष, प्रसन्नता। (३) घुमाना, फेरना, लौटाना। (४) सङ्केत करना, इशारा करना। (५) नायिका का नायक को रिझाने का प्रयत्न करना विलास हाव कहलाता है।
विलोकत—देखत, अवलोकत, निहारत।
विलोकनि—चितवन, देखने की क्रिया, चितवने का भाव।
विलोचन—'आँख' नेत्र।
विलोयो—मन्थन किया, मथा, महा, महन किया, मथ डाला।
विवर्द्धन, विवर्धन—वृद्धि करनेवाला, बढ़ानेवाला। (२) अत्यन्त बढ़नेवाला।
विवश—परवश, अधीन, बिबस, जो स्वतन्त्र न हो। (२) जिसका मरणकाल समीप आया हो।
विवाद—विरुद्धकथन, अपने पक्ष का समर्थन और दूसरे पक्ष का खण्डन। (२) द्वन्द, कलह, झगड़ा।
विविध—अनेक प्रकार, नाना रूप, बिबिध।
विविधविधि—अनेक प्रकार की विधि, नाना रीति।
विवेक—'ज्ञान' बोध, समझ।
विवेकी—'ज्ञानी' बोधवान, समझदार।
विशद—श्वेत, उज्वल, सफ़ेद, बिसद। (२) निर्मल, स्वच्छ, साफ़। (३) मनोहर, सुहावना, प्यारा, प्रिय लगनेवाला।
विशारद—'पण्डित' विद्वान्, सत् असत् का पहचाननेवाला। (२) प्रवीण, निपुण, जाननेवाला चतुर। (३) प्रगल्भ, निर्भीक, ढीठ।
विशाल—वृहद, भारी, बड़ा।
विशिख—'बाण' बिसिख, तीर।
विशुद्ध—अत्यन्त पवित्र, बहुत निर्मल।
विशेष—अधिक, बहुत, बिसेष। (२) प्रधान, मुख्य'

ख़ास। (३) समूह, वृन्द, समुदाय। (४) वह अलंकार जिसमें आधार के बिना आधेय की रमणीयता वर्णन की जाय।

विशोक—अधिक शोक, बड़ी चिन्ता। (२) अशोक, शोक रहित, बेफ़िक्र।

विश्राम—सुख, चैन, आराम। (२) विराम, अटकाव, ठहराव।

विश्रामकर—विश्राम करनेवाला, आराम देनेवाला।

विश्रामप्रद—विश्रामदाता, सुख देनेवाला।

विश्व—'संसार' जगत, दुनियाँ। (२) सम्पूर्ण, समग्र, अखिल। (३) शुण्ठी, सोंठ। (४) एक देवता जिनको श्राद्ध में पिण्ड और बलि प्रदान होता है।

विश्वअभिरामिनी—विश्व सुख दायिनी, संसार को आनन्द देनेवाली।

विश्वकण्टक—जगत का काँटा, संसार को दुःखदाई।

विश्वकर
विश्वकरण } —सृष्टिकर्ता, जगत का उत्पन्न करनेवाला।

विश्वकारण—सृष्टि के हेतु, जगत के कारण। (२) ब्रह्मा। (३) विष्णु। (४) शिव।

विश्वधृत—जगत को धारण किये हुए, शेषनाग।

विश्वनाथ—विष्णु, हरि, केशव। (२) शिव महादेव; जगत के स्वामी।

विश्वमूल—संसार की जड़, महामाया।

विश्वमूलासि—(विश्व+मूल+असि) संसार की जड़ हो।

विश्वम्भर—विष्णु, संसार का पालन करनेवाला।

विश्वसेवित—संसार से सेवा किये हुए।

विश्वातमा
विश्वात्मा } —जगत के आत्मा, संसार के प्राण। (२) विष्णु, नारायण।

विश्वायतन—(विश्व+आयतन) संसार ही जिसका घर है। (२) विष्णु, केशव।

विश्वास—विस्रम्भ, यकीन, यतबार, किसी वस्तु वा व्यक्ति पर प्रीति पूर्वक विशेष रूप से मन का अड़ जाना। (२) भरोसा, उमैद, निश्चय से उत्पन्न हुआ सन्तोष।

विश्वासी—विश्वास के योग्य, यकीन करने लायक। (२) विश्वास करनेवाला।

विश्वेस—(विश्व+ईश) जगत के मालिक। (२) विष्णु, हरि। (३) शिव, महादेव।

विश्वोपकारी—(विश्व+उपकारी) लोकोपकारी, संसार का भला करनेवाला।

विष—गर, गरल, माहुर, जहर, वह वस्तु जिसके खाने से मृत्यु होती है। स्थावर और जङ्गम के भेद से इसके दो प्रकार हैं। स्थावर विष दस प्रकार और जंगम विष सोलह प्रकार के हैं।

विषपान—विष पीना, माहुर का पान करना।

विषफल—विष का फल, बुरा नतीजा।

विषम—असम, अतुल्य, जो सम न हो। (२) कुटिल, वक्र, टेढ़ा। (३) एक प्रकार का ज्वर जिसके पाँच भेद हैं। (४) भीषण, भयानक। (५) एक अलंकार का नाम जिसमें अनमिल वस्तुओं का वर्णन होता है।

विषमता—कुटिलता, टेढ़ाई। (२) असमानता।

विषय—दसों इन्द्रियों के विषय। देखना, सुनना, गन्धलेना, स्वाद का ज्ञान, स्पर्शज्ञान, बोलना, पकड़ना, चलना, मलत्याग और मैथुन, (२) मैथुन, सहबास, व्यवाय। (३) आश्रय, आधार, सहारा। (४) ज्ञात विषय, जानी हुई वस्तु।

बिषयमुद—विषयानन्द, इन्द्रियों के विषय का सुख।

विषयवन—विषय का वन, विषयों का जङ्गल।

विषयवारि—विषयजल, विषय रूपी पानी।

विषयी—विषयासक्त, विषय में लीन, विषय करनेवाला।

विषाण—शृङ्ग, सींग, विषान, गाय भैंस हरिन आदि पशुओं के सिर पर उगनेवाली सींघ। (२) गजदन्त, हाथी का दाँत।

विषाद—खेद, शोक, उदासी। (२) दुःख, क्लेश, पीड़ा। (३) तैंतीस सञ्चारी भावों में से एक जिस में उपायापाय चिन्ताजन्य मनोभङ्ग होता है।

विष्णु—अच्युत, अधोक्षज, उपेन्द्र, कृष्ण, केशव, कैटभजित, कंसाराति, गरुड़ध्वज, गोविन्द,

चक्रपाणि, चतुर्भुज, जनार्दन, दामोदर, देवकीनन्दन, दैत्यारि, नारायण, पद्मनाभ, पुण्डरीकाक्ष, पुरुषोत्तम, मधुरिपु, माधव मुकुन्द, मुरारि, यज्ञेश, बनमाली, रमापति, रमारमण, लक्ष्मीकान्त, वासुदेव, विधु, विश्वम्भर, विश्वेश, विष्वक्सेन, वैकुण्ठ, वैकुण्ठनाथ, शार्ङ्गिन्, शौरि, श्रीपति, श्रीवत्सलाञ्छन, स्वभू, हृषीकेश, त्रिविक्रम इत्यादि । जगत के पालन करनेवाले त्रिदेवों में से एक जिनके गरुड़ वाहन लक्ष्मी भार्या, सुदर्शनचक्र अस्त्र और वैकुण्ठ लोक है । (२) परब्रह्म, परमेश्वर ।

बिष्णुयश—बिष्णुजस, एक ब्राह्मण का नाम जिसके घर में विष्णु भगवान् कल्कि औतार धारण कर धरती से अधर्म का नाश करते हैं ।

बिसराई—विस्मरण किया, भुला दिया ।

बिसरिये—विस्मरण कीजिये, भुलाइये ।

बिसारन—विस्मरण, भूलना वा भूलने का भाव । (२) मारण, प्रतिघातन ।

बिसारनशील—विस्मरण की अवधि, भूल जाने के हद । (२) भूलनेवाले ।

बिस्तार—व्यास, फैलाव, पसराव । (२) विस्तीर्ण, लम्बा चौड़ा विस्तृत, फैला हुआ ।

बिस्तारिणी—विस्तार करनेवाली, पसारनेवाली, फैलानेवाला ।

बिस्तृत—विस्तीर्ण, फैला हुआ ।

बिस्मय—आश्चर्य, अद्भुत, बिचित्र, अचरजमय । (२) खेद, रञ्ज । (३) अद्भुत रस का स्थायी भाव ।

बिहग—'पक्षी' खग ।

बिहगराज, बिहगेश—'गरुड़' पक्षिराज ।

बिहङ्ग—'पक्षी' पखेरू ।

बिहण्डनि—बिड़ारनेवाली, तितर बितर करनेवाली । (२) छिन्न भिन्न करनेवाली, भेदनेवाली, काटनेवाली ।

बिहँसि—हँस कर, मुसकुरा कर ।

बिहाइ—त्याग कर छोड़ कर ।

बिहाई—त्यागा, छोड़ा, तज दिया ।

बिहाय—बिहाइ, त्याग कर, छोड़ कर । (२) अतिरिक्त, अलावे, सिवा ।

बिहार—विचरण, सैर, हवाखोरी । (२) विलास, क्रीड़ा, ऐशआराम । (३) प्रसन्नता, आनन्द, खुशी । (४) रसरङ्ग, केलि, क्रीड़ा, स्त्री सङ्ग का विहार ।

बिहारथल—क्रीड़ास्थल, बिहार का स्थान, विचरने की जगह ।

बिहारी—विचरण करनेवाला, टहलनेवाला । (२) विलासी, क्रीड़ा करनेवाला ।

बिहारु—'बिहार' विलास ।

बिहाल—बेहाल, बुरी दशा, ख़राब हालत ।

बिहित—विदित, विख्यात, जाहिर । (२) उचित, ठीक, मुनासिब । (३) निश्चित करने योग्य, ठहराया हुआ ।

बिहीन—त्यक्त, त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ । (२) बिना, रहित, बिनु, बिन । (३) अत्यल्प, महाअधम । (४) अतिदीन, अत्यन्त ग़रीब ।

बिज्ञ—'प्रवीण' कुशल, चतुर ।

बिज्ञता—प्रवीणता, कुशलता, चतुराई ।

बिज्ञान—विशेषज्ञान, अत्यन्तबोध, बड़ी समझ । (२) तत्वज्ञान, अनुभव, अनुभूत ज्ञान । (३) शास्त्रज्ञान, शास्त्र में व्युत्पन्नता, शास्त्र में बुद्धि लगनेवाली । (४) शिल्प विद्या में दक्षता, कर्मों का ज्ञान, शिल्प शास्त्र की प्रवीणता ।

बिज्ञानघन—विज्ञान के मेघ, विज्ञान रूपी बादल ।

बिज्ञानभवन—विज्ञान के मन्दिर ।

बिज्ञानमय—विज्ञानयुक्त, विज्ञान मिश्रित ।

बिज्ञानरूप—विज्ञान के स्वरूप, तत्वज्ञान के रूप ।

बिज्ञानशाली—बिज्ञान से युक्त, विज्ञानमय ।

वीचि—ऊर्मि, वीची, तरङ्ग, भङ्ग, वीचिका, पानी की लहर, जलतरंग ।

वीची—'वीचि' तरंग, लहर ।

वीज—बीज, बिया, बिसार । (२) कारण, हेतु, वजह । (३) वीर्य, शुक्र, मनी । (४) सार, हीर ।

वीजमन्त्र—बीजमंत्र, तारकमंत्र 'ॐ रामायनमः' राम नाम । सप्तकोटि महामंत्रा शिवत्त विभ्रामकारकाः । एकएव परो मन्त्रः राम इत्यक्षर द्वयम् ।

वीथिन—'वीथी' शब्द का बहुवचन, गलियाँ। (२) श्रेणी, पंक्ति, कतार।

वीर—शूर, विक्रान्त, योद्धा, भट, सुभट, सूरमा, बहादुर। (२) काव्य के नवरसों में से एक। (३) भ्राता, बन्धु, भाई। (४) सखा, मित्र, दोस्त।

वीरता—शूरता, योद्धापन, बहादुरी।

वीरभद्र—रुद्रगण, शिवजी के एक गण का नाम।

वीर्य—पराक्रम, पुरुषार्थ, बल। (२) प्रताप, प्रभाव तेज। (३) शुक्र, रेत, मनी। (४) कठिन कार्य करने में असीम साहस रखना।

वूट—'वृक्ष' पादप, पेड़। (२) ओषधि, बूटी, जड़ी। (३) चणक, चना, एक प्रकार का अन्न।

वृक—बिगवा, बीग, भेड़िया, हुँड़ार।

वृजिन—'पाप' कलुष, अघ। (२) कुटिल, वक्र, टेढ़ा। (३) क्लेश, व्यथा, वेदना।

वृजिनाटवी—(वृजिन+अटवी) पाप का वन।

वृत / वृत्त—वर्त्तुल, गोल, मण्डलाकार। (२) श्लोक, पद्य, वर्णिक छन्द। (३) दृढ़, कठिन, कड़ा। (४) आचरण, चरित्र, जीवनी। (५) व्यतीत, बीता हुआ, गुजरा हुआ।

वृत्तान्त—समाचार, कथा, हाल। (२) प्रकार, भाँति, तरह। (३) प्रकरण, निबन्ध। (४) पूर्णता, समाप्ति। (५) पारायण, पाठ। (६) प्रवृत्ति, प्रवेश, पहुँच, पैठ।

वृत्ति—जीविका, रोजी। (२) सेवा, खिदमत। (३) सूत्रार्थ, ऐसे वाक्य का अर्थ जो थोड़े शब्दों में अर्थ का बोधक हो। (४) कौशिकी, विश्वामित्रजी की बहिन। (५) एक नदी का नाम।

वृथा—व्यर्थ, निष्प्रयोजन, बेमतलब, निरर्थक।

वृद्ध—बुड्ढा, बूढ़ा, जईफ। (२) जीर्ण, पुराना, जीन। (३) पण्डित, बुध। (४) शीलाजीत।

वृद्धि—वृद्धि, बढ़ती, बाढ़। (२) उन्नति, तरक्की। (३) एक ओषधि का नाम।

वृन्द—समूह, व्रात, यूथ, झुण्ड।

वृन्दारक—'देवता' विबुध।

वृन्दारकानन्दप्रद—देवताओं को आनन्ददाता।

वृश्चिक—बिच्छू, बिच्छी, बीछू। (२) ऊर्णकृमि, ऊन का कीड़ा। (३) बारह राशियों में से आठवीं राशि।

वृष—वृषभ, वर्द, बैल। (२) धर्म, पुण्य, सुकृत। (३) बारह राशियों में से दूसरी राशि। (४) श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा। (५) मूषक, चूहा। (६) वासा, अडूसा। (७) काकड़ासिङ्गी, ऋषभ। (८) अण्डकोश, बैजा।

वृषभ—बैल, वर्द, बरधा।

वृषभयान—बैल की सवारी, जो बैल पर चढ़ कर चलता हो।

वृषभेश—(वृषभ+ईश) बैल के स्वामी शिवजी। (२) नन्दी, नादिया, शिवजी की सवारी का बैल, नन्दीश्वर।

वृष्टि—वर्षा, बरसात, बारिश।

वृष्णि—मेष, मेढ़ा, भेड़ा। (२) यदुकुल के एक प्रतापी राजा का नाम 'यदुपति' शब्द देखो।

वृष्णिकुल—यदुवंश, राजा यदु के वंशज।

वृहत् / वृहद—महत्, विशाल, भारी। (२) विपुल, बहुत, अधिक।

वृक्ष—अनोकह, आगम, कुट, तरु, दरखत, दरख़, द्रु, द्रुम, पादप, पेड़, भूरुह, महीरुह, वनस्पति, विटप, वूट, शाखिन्, शाखी, शाल, रूख। वृक्ष की अनेक जातियाँ हैं।

वृत्र—शत्रु, बैरी, दुश्मन। (२) अंशु, रश्मि, किरण। (३) बलिभाग, पूजा की सामग्री। (४) एक प्रबल दैत्य का नाम जिसका संहार देवराज इन्द्र ने किया था, इसी से वे वृत्रहा, वृत्रारि और वृत्रहन कहे जाते हैं।

वेग—शीघ्रगति, जल्दीजाना, उतावली से चलना। (२) बल, पुरुषार्थ, ताकत। (३) प्रवाह, धारा, बहाव।

वेगि—शीघ्र, तुरन्त, जल्दी।

वेत—वञ्जुल, वानीर, विदुल, वेतस, बेंत के वृक्ष जल के समीप तर भूमि में उत्पन्न होते हैं। इसके पेड़ लताकार, पत्ते बाँस के समान और फूल फल नहीं आते। बेत की जड़ बहुत लम्बी होती है उसके ऊपर का छिलका अत्यन्त

कड़ा होता है। इससे पलँग, कुरसी और वेञ्च आदि बुने जाते हैं।
वेताल—पिशाच, भूताधिष्ठित शव, वह मृतक शरीर जिसमें प्रेत का प्रवेश होने से जीवित जान पड़े।
वेत्ता—जाननेवाला, जानकार।
वेणु—बाँस, कर्मार। (२) एक अत्याचारी राजा का नाम जिसने अपने ही को ईश्वर मान रक्खा था और अन्त में ब्राह्मणों के शाप से नाश को प्राप्त हुआ।
वेद—निगम, श्रुति, ब्रह्म, हिन्दू धर्म के सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ जिसके वाक्य का प्रमाण सर्वत्र माननीय माना जाता है।
वेदगर्भ—'ब्रह्मा' विधाता। (२) ब्राह्मण, विप्र।
वेदगर्भार्भकादभ्र—(वेदगर्भ+अर्भक+अदभ्र) ब्रह्मा के पुत्र समूह सनत्कुमार मरीच्यादि।
वेदन—सम्वेद, पीड़ा, दुःख, कलेश। (२) 'वेद' शब्द का बहुबचन, चारों वेद।
वेदना—सम्वेद, पीड़ा, दुःख, क्लेश, तकलीफ़।
वेदविख्यात—वेदविहित, वेद द्वारा प्रसिद्ध।
वेदसार—वेद का तत्व, वेद के प्राण। (२) ईश्वर।
वेदाङ्ग—षड्ङ्ग, वेदों के अवयव। शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द और ज्योतिष वेदाङ्ग कहलाते हैं।
वेदाङ्गविद्—वेद के अङ्गों का जाननेवाला।
वेदान्त—उपनिषदशास्त्र, आगम, उपदेशपूर्ण ग्रन्थ जिसमें वेद निर्णीत ईश्वर विषयक बातों का संग्रह किया गया हो।
वेदान्तविधि—शास्त्रविधान, आगम की रीति।
वेधत—'वेधना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। वेधता है, छेदन करता है, छेदता है। (२) गड़ता है, धँसता है, चुमता है।
वेनु—बाँस, वंश, त्वक्सार। (२) वेणु राजा जो ब्राह्मणों के शाप से विनष्ट हुआ था और उसकी लाश मथने से पृथु नामक पुत्र बड़ा हरिभक्त उत्पन्न हुआ था।
वेरो—'बेरा' बेड़ा, घन्नई।
वेश—वेष, भेश, स्वरूप। (२) श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा। (३) वेश्या का निवास।
वेष—'वेश' आकल्प, भेश। (२) आकृति, आकार, बनावट। (३) पहिनावा, लिबास। (४) मूर्त्ति, रूप, सूरत।
वैकुण्ठ—विष्णुलोक, परधाम, हरिलोक। (२) विष्णु, केशव, शौरि।
वैकुण्ठस्वामी—वेकुंठ के स्वामी विष्णु।
वैताल—'वेताल' प्रेत के प्रवेश से मृतक शरीर का बोलना चलना आदि।
वैद—वैद्य, चिकित्सक, कविराज।
वैदर्भि—रुक्मिणी, विदर्भराज की कन्या।
वैदर्भिभर्त्ता—श्रीकृष्णचन्द्र, रुक्मिणीकान्त।
वैदेहि—'सीता' जानकी।
वैदेहिभर्त्ता—रामचन्द्र, भरताग्रज।
वैदेही—'सीता' रामवल्लभा।
वैद्य—चिकित्सक, भिषग, वैद, कविराज, हकीम, दवा इलाज करनेवाला।
वैन—बैन, वाणी, गिरा। (२) जिह्वा, जीभ।
वैनतेय—'गरुड़' खगराज।
वैभव—विभाव, ऐश्वर्य।
वैर—विद्वेष, विरोध, दुश्मनी।
वैराग्य—विराग, विरति, त्याग।
वैरि—वैरी, शत्रु, दुश्मन।
वंश—कुल, गोत, कुटुम्ब, परिवार। (२) सन्तति, सन्तान। (३) बाँस, वेनु।
वंशाटवी—(वंश+अटवी), बाँस का जङ्गल।
वंशी—कुटुम्बी, गोतिया, खानदानवाला। (२) मुरली, बाँसुरी, बंसी।
व्यक्त—स्पष्ट, प्रगट, फैला हुआ। (२) स्फुट, फुटकर। (३) पण्डित, विद्वान्।
व्यक्तगुण—स्पष्टगुण, प्रकट दक्षता।
व्यक्ति—मनुष्य, प्राणी, शरीरी, देहधारी।
व्यग्र—आकुल, दुचित, परेशान।
व्यङ्ग—जो शब्द उच्चारण किया जाय उसके वाच्यार्थ से अतिरिक्त अर्थ का सूचित होना व्यङ्ग कहलाता है। (२) हृदय में प्रीति और मुख से विपरीत वचन बोलना।

व्यङ्गजुत—व्यंग के सहित।

व्यञ्जन—सिद्धान्न, असन, भोजन। (२) चिह्न, लाञ्छन, निशान। (३) अङ्ग, अवयव, अजो। (४) स्वर के अतिरिक्त वर्ण।

व्यतिरेक—बिना, रहित, सिवा। (२) अपराध, दोष, जुर्म। (३) भिन्नता, पृथक्ता, अलगाव। (४) उल्लङ्घन, पार जाना। (५) एक अलंकार जिसमें उपमान का अपेक्षा उपमेय में कुछ उत्कृष्टता वर्णन की जाती है।

व्यतीत—विगत, बीता, गुजरा हुआ।

व्यथा—दुःख, पीड़ा, कष्ट।

व्यभिचार—लम्पटता, छिनरई, पुरुष का पराई स्त्री से और स्त्री का पर पुरुष से विहार करना। (२) निन्दितकर्म, भ्रष्टता, दुराचार।

व्यर्थ—वृथा, निरर्थक, बेमतलब।

व्यलीक—व्यथा, कष्ट, पीड़ा। (२) कपट, छल, फरेब। (३) असत्य, मिथ्या, झूठ।

व्यवस्था—धर्मशास्त्र की आज्ञा, शास्त्र का वचन, शास्त्रीय क़ानून। (२) समाचार, हाल, ख़बर। (३) धर्मनिर्णय, कर्मों के विषय में शास्त्रोक्त मत प्रकाशन।

व्यवहार—उद्यम, व्यापार, कामधन्धा। (२) परस्पर लेन देन, व्योहार। (३) विवाद, कहासुनी।

व्यवहारी—व्यवहार करनेवाला, उद्यमी, व्यापारी। (२) परस्पर लेन देन करनेवाला।

व्यसन—अकर्त्तव्य पर प्रेम, ख़राब कामों का चसका। (२) परस्त्रीगमन, मद्यपान, जुआ, चोरी, हिंसा, बैर, कठोर बोलना आदि। (३) स्वभाव, आदत। (४) विपत्ति, आपदा। (५) नाश, ध्वंस। (६) पतित, नीच।

व्यस्त—व्याकुल, विकल, घबराया हुआ।

व्याकरण—शब्द शास्त्र, शब्द और धातु का बोधक, वह शास्त्र जिसके द्वारा शुद्ध शब्द उच्चारण का ज्ञान उत्पन्न हो।

व्याकुल—व्यस्त, विकल, घबराया हुआ।

व्याघ्र—बाघ, नाहर, शेर, शार्दूल, द्वीपी।

व्याघ्रिणी—बाघिन, शेरनी।

व्याज—कपट, छद्म, कैतव। (२) मिस, बहाना, हीला। (३) बिआज, सूद। (४) लक्ष्य, निशाना।

व्याध, व्याधा—हिंसक, घातक, बहेलिया, मृग और पक्षियों को फंसानेवाला शिकारी, जीवहिंसा से जीविका करनेवाला। (२) पापी, अधम, नीच। (३) वाल्मीकि मुनि जो मरा मरा जप कर व्याधा से ब्रह्मर्षि हुए थे।

व्याधादि—(व्याध+आदि) पापीगण जैसे गणिका, शवरी, गिद्ध, अजामिल, यमन, भील इत्यादि।

व्याधि—रोग, रुज, बीमारी। (२) कुट नाम की ओषधी। (३) एक संचारी भाव जिसमें मनोविकार से रोग उपजता है।

व्यापई—व्यापती है, फैलती है, प्रभाव जमाती है।

व्यापक—व्याप्त, व्यापित, सर्वत्र फैला हुआ। (२) परब्रह्म, परमेश्वर।

व्यापकानन्द—(व्यापक+आनन्द) व्याप्तसुख, ईश्वरानन्द।

व्यापत—'व्यापना' शब्द का वर्त्तमान कालिक रूप, व्यापता है, फैलता है।

व्यापार—उद्यम, सौदागरी।

व्यापित, व्यापी, व्याप्त, व्याप्य—व्यापा हुआ, व्यापनेवाला, फैला हुआ, फैलनेवाला।

व्याल—'साँप' अहि, सर्प। (२) हाथी, गज, गयन्द। (३) शठ, निर्दय, क्रूर।

व्यालसूदन, व्यालाद, व्यालारि—'गरुड़' सर्प नाशक, साँपों के भक्षक, नाग शत्रु।

व्याह—विवाह, उद्वाह, शादी।

व्यूह—सेना की रचना चक्रव्यूह आदि। (२) समूह, व्रात।

व्योम—'आकाश' गगन, नभ।

व्रज—गोष्ठ, गोशाला (२) व्रजमंडल, प्रान्त विशेष। (३) समूह, वृन्द। (४) मार्ग, पन्थ, राह।

व्रण—पाका, फोड़ा। (२) घाव, खत।

व्रत—लङ्घन, उपवास, फ़ाक़ा । (२) नियम, नेम । (३) संयम, परहेज ।

व्रतधारी } —व्रत धारण करनेवाला ।
व्रती }

व्रात—'समूह' वृन्द ।

व्रीड़ा—लाज, लज्जा, शरम । (२) तेंतीस संचारी भावों में से एक जिसमें स्तुति आदि से मन में सकोच उत्पन्न होता है ।

(श)

श—हिन्दी वर्णमाला का तीसवाँ व्यञ्जन और ऊष्मा का प्रथम अक्षर । इसका उच्चारण स्थान तालु है । (२) शिव, शङ्कर । (३) कल्याण, क्षेम । (४) शयन, सोना । (५) शय्या, पलँग । (६) शस्त्र, आयुध । (७) लोहा, लोह । (८) हृदय, उर । (९) मन, चित्त ।

शकुन—'पक्षी' खग, विहङ्ग । (२) सगुन, शुभ-चिह्न, अच्छे लक्षण ।

शक्ति—'बल' पराक्रम, जोर । (२) भगवती, दुर्गा, महामाया । (३) प्रभाव, उत्साह और मंत्र शक्ति । (४) कुन्त, भाला, बरछा ।

शक्तिहीन—निर्बल, कमजोर ।

शक्र—'इन्द्र' मघवा । (२) कुरैया का वृक्ष ।

शक्रसुत—जयन्त, इन्द्र का पुत्र ।

शङ्कर—'शिव' उमापति । (२) कल्यणकर्त्ता, मङ्गल करनेवाला ।

शङ्का—संशय, सन्देह, शक । (२) भय, डर, ख़ौफ़ ।

शङ्ख—कम्बु, दर, संख, एक प्रकार का जलजन्तु जो समुद्र में उत्पन्न होता है । (२) सौ पदुम की गणना, संख्या की अन्तिम गणना । (३) नव निधियों में से एक । (४) खुर, पशुओं का नख ।

शची—इन्द्राणी, पुलोमजा, सची, इन्द्र की भार्या ।

शठ—कपटी, छली, दग़ाबाज । (२) मूर्ख, मूढ़, बेवक़ूफ़ । (३) खल, दुष्ट, दुर्जन । (४) कुटिल हृदय, टेढ़े मनवाला । (५) वह पुरुष जो छल से अपराध छिपाने में चतुर हो ।

शठता—दुष्टता, दुर्जनता । (२) धूर्त्तता, दग़ाबाजी ।

शत—सौ, एक सैकड़ा ।

शतकोटि—'समूह' समुदाय, व्रात । (२) सौ करोड़, एक अरब की संख्या । (३) वज्र, कुलिश ।

शतपत्र—'कमल' पद्म, कञ्ज ।

शतरञ्ज—(अर्बी) । एक प्रकार का खेल जिसमें दो तरह के रङ्गों में रँगे हुए काठ के सोलह सोलह मोहरे होते हैं । प्रत्येक पक्ष में १ बादशाह, १ मंत्री, २ ऊँट, २ घोड़ा, २ रथ, ८ सिपाही रहते हैं । ६४ खानेवाला चौकोर कपड़े वा कागज़ पर बना बिसात होता है जिस पर यह खेल खेला जाता है । हर मोहरों का चाल भिन्न भिन्न होती है । जब बादशाह को चलने की गुँजाइश नहीं रह जाती है तब बाजी मात कहलाती है । इस खेल में विचारशक्ति से विशेष काम लेना पड़ता है ।

शपथ—सौगन्द, कसम, किरिया । (२) प्रतिज्ञा, पण ।

शब्द—ध्वनि, नाद, रव । (२) निर्घोष, घोष, आवाज़ । (३) वचन, बोल, बोली । (४) संज्ञा, नाम, वस्तु विशेष का बाचक । (५) पाँचों विषयों में से कान का विषय ।

शब्दब्रह्म—'वेद' श्रुति । (२) ब्रह्मा, धाता ।

शब्दादि—(शब्द+आदि) रूप, रस, गन्ध, स्पर्श । (२) अर्थ, लक्षणा, व्यञ्जना ।

शमन—क्षय, ध्वंस, संहार, नाश । (२) यमराज, कृतान्त, दण्डधर ।

शमनि—संहार करनेवाली, नसानेवाली ।

शम्भु—'शिव' शङ्कर । (२) ब्रह्मा, विधाता ।

शम्भुजाया—'पार्वती' शंकर की भार्या ।

शम्भुधनु—शिवजी का धनुष, पिनाक ।

शम्भुसेवित—शिवजी से सेवित, जिसकी सेवा शङ्करजी करते हैं ।

शयन—निद्रित होना, निद्रा; सोना । (२) शय्या, सेज, बिछावन ।

शर—'बाण' तीर । (२) सरपत, मूँज, सरई ।

शरण—रक्षा, बचाव, पनाह । (२) आश्रय, सहारा, आधार । (३) रक्षक, रक्षा करनेवाला, बचाने-वाला । (४) घर, गृह, मकान ।

शरणद—शरणदाता, आश्रय देनेवाला ।

शरणपाल—शरणागतों का रक्षक।
शरणागत—(शरण+आगत) शरण में आया हुआ।
शरद—शरदतु, सरदरितु, क्वार और कार्तिक मास का समय। (२) सम्वत्सर, वर्ष, साल।
शरदविधु—शरत्काल के चन्द्रमा।
शरम—(फ़ारसी)। लाज, लज्जा, व्रीड़ा।
शरासन—'धनुष' चाप, कमान।
शरीर—कलेवर, काय, गात, गात्र तन, तनु, देह, मूर्त्ति, वपु, वर्ष्म, विग्रह, जिस्म।
शर्करा—शक्कर, खाँड़। (२) चीनी, बूरा। (३) बालू, रेत।
शर्म—कल्याण, क्षेम। (२) हर्ष, आनन्द।
शर्मराशी—कल्याणराशि, मंगल के पुञ्ज। (२) आनन्द के समूह।
शर्व—'शिव' ईशान, महादेव।
शर्वरी—'रात्रि' यामिनी, रजनी।
शर्वरीश—(शर्वरी+ईश) चन्द्रमा, रात्रि के स्वामी।
शर्वहृदि—शिव का हृदय, शंकर-मानस।
शलभ—'पाँखी' पतंग।
शव—मृतक, बिना प्राण का शरीर, मुर्दा, मुर्दे की लाश।
शवर—किरात, कोल, भील, एक जंगली मनुष्यों की जाति जो हिंसा ठगी आदि पापाचरण से जीवन निर्वाह करती है।
शवरि, शवरी—किरातिनी, भिल्लिनी, शवर की स्त्री। विनय-पत्रिका में उस शवरी से तात्पर्य है जो मतङ्ग ऋषि के आश्रम में दोना पत्तल पहुँचाती थी और मुनि के आदेश से जिसने रामभक्ति में मन लगाया। अन्त में रामचन्द्रजी ने जिसके आश्रम में पधार कर दर्शन दिया और जिसके दिये फलों को बड़ी रुचि से बखान कर खाया तथा योगियों को दुर्लभ गति जिसे दी।
शशाङ्क, शशि—'चन्द्रमा' सुधानिधि।
शस्त्र—आयुध, हथियार, वह औजार जो हाथ से पकड़े हुये शत्रु पर प्रहार किया जाय, जैसे-तलवार, भाला, छुरी इत्यादि।
शस्त्रधारी—शस्त्र धारण करनेवाला।
शस्त्रास्त्र—(शस्त्र+अस्त्र) हरबा हथियार।
शहर—(फ़ारसी)। नगर, नगरी, वह बस्ती जहाँ लाखों मनुष्य निवास करते हों।
शत्रु—अभिघाती, अमित्र, अराति, अरि, अहित, असहो, दुर्हृद, दुश्मन, द्वेषी, वैरी, रिपु, विपक्षी, विरोधी, विरोध माननेवाला, अमित्रता का व्यवहार करनेवाला।
शत्रुघ्न, शत्रुसूदन—'शत्रुहन' लक्ष्मणानुज।
शत्रुहन—भरतानुगामी, रिपुसूदन, रिपुहन, लक्ष्मणानुज, शत्रुघ्न, शत्रुसूदन, सुमित्राजी के द्वितीय पुत्र और लक्ष्मणजी के छोटे भाई।
शाका—शक, शाक, शालिबाहन राजा का सम्बत्। (२) चिह्न, निशान, यादगार की वस्तु। (३) पुरुषार्थ, सामर्थ्य, बल।
शाकिनि, शाकिनी—पिशाचिनी, योगिनी, दुर्गादेवि की सहचरी।
शाख—(फ़ारसी)। शाखा, डाली, टहनी। (२) शृङ्ग, विषाण, सींग। (३) सुराही, भंभड़।
शाखा—स्कन्ध, डाल, लढ़ा, वृक्षों की मोटी मोटी डालें। (२) शाख, टहनी, डाली।
शान्त—अचल, स्थिर, चलायमान न होनेवाला। (२) मौन, मूक, चुप। (३) नम्र, विनीत। (४) नव रसों में से एक जिसका स्थायी भाव निर्वेद अर्थात् विषयसुख का तिरस्कार है।
शान्ति—शम, साँति, सब्र। (२) चैन, आराम, कल। (३) काम क्रोधादि को जीत कर विषय सुखों का तिरस्कार।
शाप—साप, सराप, बद्दुआ।
शायक—'बाण' शर, तीर।
शारद, शारदा—सरस्वती, वाणी, गिरा, सरसइ, ब्रह्माणी, भारती, वाक्, ब्राह्मी, भाषा। (२) सप्तपर्ण, छतिवन का पेड़।
शार्दूल—व्याघ्र, बाघ, शेर। (२) श्रेष्ठ, उत्तम, वर।
शाल—'वृक्ष' पादप, पेड़। (२) साँखू, सँखुआ का

दरख्त। (३) शाखा, स्कन्ध। (४) दुःख, कष्ट, पीड़ा। (५) वैरभाव, अकस, दूसरे की उन्नति से जलना। (६) सौर, सौरीमछली। (७) मिश्रित, युक्त, मिला हुआ।

शाला—'घर' गृह, मकान। (२) पर्णशाला, कुटी, मुनियों के रहने का स्थान। (३) पीड़ा पहुँचाया।

शालि } —धान, जड़हन, चावल के वृक्ष। (२)
शाली } मिश्रित, युक्त, मिला हुआ।

शावक—'बालक' शिशु, अर्भक।

शास्त्र—आगम, निदेशग्रन्थ, शास्त्र छे हैं, यथा—न्याय, मीमांसा, सांख्य, पातञ्जलि और वैशेषिक।

शिख—शिक्षा, सिखावन। (२) चोटी, चुटिया।

शिखर—शृङ्ग, पहाड़ की चोटी। (२) डाली, टहनी।

शिखा—अर्चि, लौ, लवर। (२) शिख, चुटिया, चोटी, चूनी। (३) चूड़ा, वेणी, जूड़ा (४) किरण, रश्मि, मरीचि। (५) मोर की चोटी, मुरैला के सिर की चन्द्रिका।

शिखी—'मोर' केकी, मयूर। (२) अग्नि, अनल, पावक।

शिथिल—थकित, विह्वल, जड़ता को प्राप्त होना। (२) मन्द, ढील, सुस्त। (३) अकर्मण्य, आलसी, काहिल। (४) असमर्थ, दुर्बल, कमजोर। (५) इन्द्रियों के विषय भूल जाना, शरार की शक्ति का अवरोध होना।

शिथिलवाणी—वाणी का थक जाना, बोल न सकना।

शिर—सिर, कपाल, मस्तक, शीश, मूँड़।

शिरताज—शिरोभूषण, शीशमुकुट।

शिरधामिनी—सिर पर दौड़नेवाली।

शिरमौर—शिरताज, मस्तक, का अलंकार।

शिरसि—शिर, मस्तक, कपाल।

शिरोमणि—शिरोरत्न, सिर पर रहनेवाली मणि। (२) श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा। (३) प्रधान, अगुवा।

शिला—पाषाण, पत्थर, पथरा। (२) अहिल्या, गौतमी। (३) शीलावृत्ति, सीलाकर्म, शीला। (४) चौकठ, लतमरा।

शिलीमुख—'बाण' शर, तीर। (२) भ्रमर, भँवरा।

शिव—अन्धकरिपु, ईश, ईशान, ईश्वर, उग्र, उमापति, कपर्दिन्, कपर्दी, कपालभृत्, कपाली, कामारि, कृत्तिवास, कृशानुरेता, कैलाशपति, क्रतुध्वन्सी, खंडपरशु, गङ्गाधर, गरलकंठ, गिरीश, चन्द्रशेखर, धूर्जटि, नीलकंठ, नीललोहित, पशुपति, पिनाकी, प्रमथनाथ, प्रमथाधिप, भर्ग, भव, भीम, भूतनाथ, भूतेश, भूतेश्वर, मदनारि, महादेव, महेश, महेश्वर, मृड़, मृत्युञ्जय, रुद्र, वामदेव, विरूपाक्ष, विश्वनाथ, विश्वेश्वर, वृषभध्वज, व्योमकोश, शङ्कर, शम्भु, शर्व, शितिकंठ, शूलिन, श्रीकंठ, शर्वज्ञ, स्थाणु, स्मरहर, हर, त्रिनेत्र, त्रिपुरान्तक, त्रिपुरारि, त्रिलोचन, और त्र्यम्बक इत्यादि। त्रिदेवों में से एक जिनका निवाश कैलाश, पत्नी पार्वती, पुत्र गणेश और षड़ानन, सवारी नन्दीश्वर तथा भूत प्रेतादिगण हैं। (२) कल्याण, क्षेम, मङ्गल।

शिवचाप—पिनाक, शम्भुधनु।

शिवता—शिवत्व, ईश्वरता, संहारशक्ति।

शिवपुरी—काशी, वाराणसी, बनारस।

शिवलिङ्ग—रुद्रलिङ्ग, शिवजी की पूज्य मूर्त्ति।

शिवा—'पार्वती,' उमा, गौरी। (२) हड़, हर्रै।

शिवि—एक राजा का नाम जो बड़ा धर्मात्मा, कर्मदक्ष और दानी था। इन्द्र और अग्नि ने छल से बाज और कबूतर का रूप धारण कर राजा की परीक्षा ली। शरणागत कबूतर को लौटाना राजा ने स्वीकार नहीं किया उसके बदले में अपने शरीर का मांस काट कर दिया। राजा की इस प्रतिज्ञा से भगवान् प्रसन्न हुए और उन्हें अपना लोक दिया।

शिविका—पालकी, महाफा, खड़खड़िया।

शिशु—'बालक' शावक, लड़का।

शिशुपन—बाल्यावस्था, लड़कपन।

शिशुपाल—चन्देरी का राजा जो श्रीकृष्णचन्द्रजी की फूआ का लड़का और प्रबल योद्धा था। इसके चार भुजाएँ थीं उनमें दो कृष्णचन्द्र से भेंटने में गिर गई तब उनकी फूआ ने विनती

की कि मुनि ने पूर्व में कहा था कि इस बालक की दो भुजाएँ जिससे भेंटने पर गिरेंगी यह उसी के हाथ मारा जायगा। मैं आपसे वर माँगती हूँ आप इसे वध न करें, भगवान् कृष्णचन्द्र ने कहा मैं इसके सौ गुनाह क्षमा करूँगा। पाण्डवों की सभा में इसने श्रीकृष्णचन्द्र को अकारण बहुतेरा दुर्वचन कहा और अन्त में उन्हीं के हाथ से मारा गया। उसको भगवान् ने अपना लोक दिया।

शिक्षा—उपदेश, सिखावन, हित की बात कहना। (२) सम्मति, मंत्र, सलाह। (३) वेदाङ्ग, वेद के षड़ङ्ग में से एक।

शिक्षादि—(शिक्षा+आदि) कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द। (२) उपदेश आदि से रक्षा करना।

शीघ्र—आशु, चपल, जल्द, तुरत, तुरन्त, तूर्ण, त्वरित, द्रुत, वेगि, सत्वर, क्षिप्र, फौरन्।

शीत—शीतल, ठण्ढा, ठण्ढक। (२) वेत, वञ्जुल, वानीर। (३) उद्दाल, लसोड़े का वृक्ष।

शीतल—शीत, ठण्ढा, सर्द। (२) शान्त, स्थिर, उद्वेग रहित।

शीतलता—शीत, ठण्ढ, सर्दी, ठण्ढकपन।

शील—अवधि, सीमा, हद। (२) सकोच, मुरौअत। (३) शुद्धाचरण, पवित्रचरित। (४) स्वभाव, आदत। (५) विशुद्धकर्त्तव्य, शुद्धकर्म।

शीलजिता—शील से जीता हुआ, मुरौअत के अधीन।

शीलनिधि—शीलसागर, शील के समुद्र।

शीला—शीलावृत्ति, शिला, सीलाकर्म, जिस खेत से किसान ने फसल काट ली हो, बिनियाँ करनेवाले बीन चुके हों और चिड़ियाँ आदि चारा चुग चुकी हों ऐसे खेत से एक एक अन्न बीन कर कुछ अन्न इकट्ठा करके उदर-पूर्ति की जाय उसको शीलावृत्ति करते हैं। पूर्वकाल में वाणप्रस्थाश्रमी इसी प्रकार उदरपूर्त्ति करते थे। (२) शिला, पत्थर, पाथर। (३) अवधि, सीमा, हद। (४) अहिल्या, गौतमी, गौतमकी स्त्री।

शीश—शिर, मस्तक, कपार।

शीशदस—'रावण' दशानन।

शीशावली—(शीश+अवली) मस्तक समूह।

शुक—कीर, तोता, सुआ, सुग्गा, एक पक्षी जिसको लोग जिलाते हैं और रामनाम पढ़ाते हैं, उनमें कोई कोई पढ़ाया हुआ पाठ अच्छी तरह मनुष्य भाषा में बोलते हैं। विनय-पत्रिका में इस पक्षी की मूर्खता का उदाहरण गोस्वामीजी ने कई स्थलों में दिया है। बहेलिया लोग मोटे धागे में बाँस की पुपुली मालाकार गूथ कर बीच में लाल मिर्चा धागे में बाँध कर लटकाते और उसको वृक्ष की डालियों में बाँध देते हैं। सुग्गा मिर्चाखाने के लोभ से पुपुली पर बैठता है और भार से नीचे लटक पड़ता है। चाहै तो पुपुली छोड़ कर उड़ जाय, किन्तु भ्रम से उड़ता नहीं डरता है कि इसे छोड़ते ही धरती पर गिर पड़ूँगा। बहेलिया जाकर हाथ से पकड़ लेता है। (२) शुकदेव मनि जिन्हों ने राजा परीक्षित को सात दिन में श्रीमद्भागवत सुना कर हरिलोक भेज दिया। ये बाल ब्रह्मचारी और परम योगीश्वर विष्णु के रूप माने जाते हैं।

शुचि—स्वच्छ, पवित्र, साफ़। (२) निष्कपट, छलहीन। (३) श्वेत, शुक्ल, उज्वल। (४) शृङ्गार, सजावट। (५) अमात्य, मन्त्री। (६) अग्नि, पावक। (७) आषाढ मास, असाढ़ का महीना।

शुण्ड—सूँड़, हाथी का बाहु और नाक।

शुद्ध—स्वच्छ, पवित्र, शुचि। (२) निर्दोष, अवगुण रहित। (३) निष्कपट, निश्छल।

शुद्धता—पवित्रता, निर्मलता।

शुद्धि—शोधन, सफ़ाई।

शुन्य—शून्य, ख़ाली।

शुभ—'कल्याण' क्षेम, कुशल। (२) श्रेष्ठ, उत्तम, भला। (३) छाग, बकरा।

शुभअंग—कल्याणकारी अवयव, मंगलीक अंग।

शुभकर्म—श्रेष्ठकर्म, अच्छा काम।

शुभग—सुन्दर, रुचिर, शोभन।

शुभरीति—उत्तम व्यवहार, अच्छी रीति।
शुभी—श्रेयस्कर, क्षेमकर्त्ता, कल्याणकारी। (२) शुभान्वित, क्षेमयुक्त पुरुष जो सब की भलाई करता है।
शुभ्र—श्वेत, उज्वल, सफ़ेद। (२) प्रज्वलित, प्रकाशमान, उद्दीप्त।
शुम्भ—एक दैत्य का नाम जिसका संहार दुर्गा देवि ने किया था। इसका विस्तृत वर्णन मारकण्डेय पुराण में है।
शूकर—कोल, क्रोड़, घृष्टि, घोणी, दंष्ट्री, भूदार, वराह, वाराह, सुअर। (२) विष्णु भगवान् का एक औतार।
शूकरी—वाराही, सुअरि।
शून्य—रिक्त, ख़ाली, छूँछ। (२) आकाश, व्योम, नाक। (३) विन्दु, सुन्न, सिफर। (४) निर्जन, सूनसान।
शूर—योद्धा, सावन्त, सुभट, बहादुर।
शूरता—शौर्य, वीरता, बहादुरी।
शूल—पीड़ा, क्लेश, दुःख। (२) त्रिशूल, साँगी, एक शस्त्र का नाम।
शूलधर—'शिव' त्रिशूल धारणकरनेवाले।
शूलधारिणि—त्रिशूल धारणकरनेवाली।
शूलपाणि—'शिव' हाथ में त्रिशूलधारी।
शूलाग्रकृत—(शूल+अग्र कृत) त्रिशूल की नोक से किया।
शूलिन—'शिव' पिनाकी।
शृगाल—गीदड़, गोमाय, गोमायु, जम्बुक, फेरव, फेरु, भूरिमाय, मृगधूर्त्त, शिवा, सियार, कुत्ते के आकार का एक डरपोंक जानवर जो मल मांस भक्षण करता है।
शृङ्खला—निगड़, बेड़ी, लोहे की मोटी साँकड़ जिससे हाथी बाँधा जाता है। (२) क्रम, सिलसिला, तरतीबवार।
शृङ्ग—शिखर, कंगूरा, पहाड़ की चोटी। (२) विषाण, सींग। (३) उच्च, ऊँच, ऊँचा।
शृङ्गार—सिङ्गार, वस्त्राभूषण से शरीर को सजाना। शृङ्गार सोलह प्रकार के हैं, यथा—अङ्गशुचि, स्नान, शुद्धवस्त्र धारण, अञ्जन, महावर, बाल सुधारना, सिन्दूर से माँग भरना, विन्दी, तिल बनाना, मेहँदी लगाना, अर्गजालेपन, आभूषण, पुष्पमाल, ताम्बूल, मिस्सी और ओंठों को लाल करना। (२) नव रसों में से प्रथम जिसका स्थायी भाव प्रीति है।
शेखर—मुकुट, किरीट, माथे का गहना। (२) वह पुष्पमाला जो मुकुट के ऊपर पहनी जाय।
शेष—शेषनाग, अनन्त, फणिपति। (२) अवशेष, बचाहुआ, बाकी।
शेषनाग—अनन्त, फणिपति, फणेश, सर्पराज, सर्पेश, सहस्रफणि, सहस्रशिर, सहस्रशीश, शेष, पाताल के दिक्पाल, हिन्दू शास्त्रानुसार धरती को धारण करनेवाले देवता। शेषजी दो हज़ार जीभ से निरन्तर भगवान् का गुण गान करते हैं और वक्ताओं में श्रेष्ठ हैं।
शैल—'पर्वत' अद्रि, पहाड़।
शैलकन्या—'पार्वती' हिमवान की पुत्री।
शैलकन्यावर—'शिव' पार्वती के स्वामी।
शैलात्मजा—'पार्वती' पर्वत की कन्या।
शैशव—शिशुत्व, बाल्यावस्था, लड़कपन।
शोक—मन्यु, खेद, सोच, रञ्ज। (२) पश्चात्ताप, पछतावा, अफसोस। (३) दुःख, क्लेश, सन्ताप। (४) करुण रस का स्थायी भाव।
शोकविकल—शोक से व्याकुल।
शोकसम्पन्न—शोकपूर्ण, चिन्ता से भरा।
शोकहर—शोकापहारी, चिन्ता हरनेवाला।
शोकाकुल—(शोक+आकुल) शोक से व्याकुल, चिन्ता से परेशान।
शोकापह—(शोक+अपह) शोक को नसानेवाला।
शोकार्त्त—(शोक+आर्त्त) शोक से दुखी।
शोच—'शोक' चिन्ता, रञ्ज।
शोचति—सोच करती है।
शोचमोचन—सोच छुड़ानेवाला, चिन्तापहारी।
शोचवश—शोक के अधीन, चिन्तावश।
शोणित—'रुधिर' रक्त, लोहू।
शोध—खोज, पता, तलाश। (२) शोधना, निर्दोषबनाना।

शोधि—शुद्ध करके, निर्दोष बनाकर।
शोभा—छबि, सुखमा, सुन्दरता।
शोभित—शोभायमान, मनोरम।
शौर्य—शूरत्व,शूरता, बहादुरी। (२) बल,पराक्रम।
श्मसान—मसान, मरघट, मुर्दाजलने का स्थान।
श्याम—नील,श्यामल,नीलारंग। (२) कृष्ण, मेचक, काला। (३) रात्रि। (४) हल्दी। (५) सारिवा।
श्यामल—श्याम, नील रंग।
श्येन—'बाज' पत्नी, सचान।
श्रद्धा—आकांक्षा, स्पृहा, ख़ाहिश। (२) सम्मान, आदर, सत्कार।
श्रम—क्लान्ति, थकाई,हारु। (२) व्यायाम, परिश्रम, मिहनत। (३) तैंतीस सञ्चारी भावों में एक जिसमें मार्ग आदि के चलने से थकावट होती है।
श्रमभञ्जन—श्रमनाशक, हारु चूर चूर करनेवाला।
श्रमित—थकित, थका हुआ।
श्रवण—'कान' कर्ण, श्रुति।
श्राद्ध—पिण्डदान,पिण्डा,सराध, शास्त्रोक्त रीति से पितरों के निमित्त पिण्डदान और तर्पण करना।
श्रिखण्ड—श्वेतचन्दन, मलयज।
श्री—'लक्ष्मी' कमला, इन्दिरा। (२) धन, सम्पत्ति, विभव। (३) छबि, शोभा, सुन्दरता।
श्रीखण्ड—श्वेतचन्दन. सन्दल सफ़ेद।
श्रीगणपति, श्रीगणेश—'गणेश' विनायक।
श्रीपति—'विष्णु' लक्ष्मीकान्त, नारायण।
श्रीफल—बिल्व, मालूर, बेल का वृक्ष। इसका पेड़ बड़ा होता है और फल गोले कोई कोई चार पाँच सेर तौल के होते हैं।
श्रीरंग, श्रीरमण—विष्णु' लक्ष्मीपति, श्रीकान्त।
श्रीराम, श्रीरामचन्द्र—जानकीनाथ, कौशल्यानन्दन, कोशलेन्द्र। (२) परमेश्वर, परब्रह्म।
श्रीवत्स—'विष्णु, लक्ष्मीजी के प्यारे।
श्रीवत्सलाञ्छन—भृगुलता, विष्णु भगवान् की छाती में भृगु मुनि ने लात मारा उसका दाग भगवान् की छाती में वर्तमान है। पंडित लोग उस निशान को श्रीवत्सलाञ्छन कहते हैं।
श्रीवर, श्रीनिकेत, श्रीहरि—'विष्णु' जिनके धाम में लक्ष्मीजी निवास करती हैं।
श्रुत—श्रवणगत, सुना हुआ। (२) शास्त्र, आगम।
श्रुति—'वेद' निगम। (२) कान, श्रवण।
श्रुतिकीर्ति—शत्रुहनजी की पत्नी, जनक की कन्या।
श्रुतिमाथ—'विष्णु' नारायण।
श्रुतिसार—वेदतत्व, वेद का सार। (२) ईश्वर।
श्रेणी—पंक्ति, अवली, पाँति, कतार। (२) समूह, समुदाय, वृन्द। (३) वीथी, गली, डगर।
श्रेष्ठ—उत्तम, अच्छा, भला। (२) अत्यन्त शोभन, बहुत सुहावना। (३) ज्येष्ठ, जेठ, बड़ा।
श्वपच—चाण्डाल, निषाद, जनङ्गम। (२) हेला, मेहतर, ख़ाकरोब।
श्वान—कुकुर, कूकर, कुत्ता।
श्वेत--उज्वल, धवल, सफ़ेद। (२) चाँदी, रजत।

(ष)

ष—हिन्दी वर्णमाला का इकतीसवाँ व्यञ्जन और ऊष्मा का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। (२) श्रेष्ठ, उत्तम। (३) केश, बार। (४) हृदय, उर।
षट—छे, तीन की दूनी संख्या।
षटरस—छे रस, यथा—अम्ल, लवण, कटु, कषाय, तिक्त और मधुर। इन्हीं छओं रसों में अनेक प्रकार के व्यञ्जन बनते हैं।
षड़ङ्ग—(षट+अंग) वेदा, वेदङ्ग के छे अंग यथा—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द।
षड़वर्ग—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सरता।
षड़ानन—कार्तिकेय, स्कन्द, सेनानी।
षष्ठ—षष्ठम्, छठाँ।
षोड़श—सोलह, आठ की दूनी संख्या।

(स)

स—हिन्दी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यञ्जन और ऊष्मा का तीसरा अक्षर । इसका उच्चारण स्थान दन्त है । (२) विष्णु, केशव । (३) शिव, रुद्र । (४) पक्षी, खग । (५) साँप, सर्प । (६) समेत, सहित । (७) तुल्य, बराबर । (८) सन्मुख, सामने । (९) पवन, वायु, हवा ।

सई—(अर्बी) । प्रयत्न, कोशिश, सिफ़ारिश । (२) सै, बढ़ती, बरकत ।

सकत—'सकना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप । सकता है, शक्ति रखता है ।

सकल—'सम्पूर्ण' समग्र, सब, कुल ।

सकुच—सङ्कोच, सिकोड़ । (२) लाज, शरम ।

सकुचत—'सकुचना'शब्द का वर्तमान कालिक रूप । सकुचता है, लाज करता है । (२) सिकुड़ता है, बटुरता है ।

सकुल—सकुटुम्ब, कुल के सहित ।

सकृत—एक बार भी, एक दफ़े भी । (२) सङ्ग, साथ ।

सकोच—सङ्कोच, सिकोड़ । (२) लाज, शरम ।

सकोप—क्रोध के सहित, क्रोध-पूर्वक ।

सक्र—'इन्द्र' शक्र, मघवा ।

सक्रसुत—'जयन्त' इन्द्र का पुत्र, शक्रतनय ।

सखा—'मित्र' सुहृद, दोस्त ।

सखाउ—मित्र भी, दोस्त भी ।

सँग—सङ्ग, साथ ।

सग—सगा, सम्बन्धी ।

सगर—अयोध्या के एक प्रतापी राजा का नाम जिनके साठ हज़ार पुत्र थे ।

सगरसुत, सगरसुवन —राजा सगर के साठ हज़ार पुत्र जो कपिलमुनि के शाप से दुर्गति को प्राप्त हुए थे । तपस्या करके भगीरथ ने गंगाजी को धरती पर लाकर पितरों को तारा, यहकथा वाल्मीकीय रामायण में विस्तार से वर्णित है ।

सगाई—सम्बन्ध, नतैती, रिश्ता । (२) पुनर्विवाह, ठहरौनी ।

सगुण—सद्गुण, अच्छे गुण । (२) साकार ईश्वर, शरीरधारी परमेश्वर । (३) सत रज तम तीनों गुणों के सहित । (४) शकुन, शुभचिह्न ।

सगुन—'शकुन' शुभलक्षण । (२) साकार ईश्वर

सगुनशुभ—शुभशकुन, कल्याणकारी सगुन ।

सघन—घना, गझिन, गुञ्जान ।

सघनतम—घना अन्धकार, गहरी अँधियारी ।

सँघाती—साथी, सङ्गी, साथ देनेवाला ।

सङ्कट—दुःख, क्लेश, तकलीफ़ । (२) सङ्कीर्णता, सकेत, चपकुलिश । (३) आपदा, आफ़त ।

सङ्कटहारी—दुःखहर्त्ता, आपदाहारक ।

सङ्कर—शङ्कर, शिव, महेश्वर । (२) और जाति का पुरुष तथा अन्य जाति की स्त्री से उत्पन्न सन्तान वर्णसङ्कर कहलाती है । (३) एक अलङ्कार, जब दो तीन वा अधिक अलङ्कार दूध पानी की तरह मिल जाते हैं तब सङ्कर अलंकार कहा जाता है ।

सङ्कल्प—प्रतिज्ञा, पण, यकरार । (२) मनोरथ, मनोविकार, मन की कामना ।

सङ्कष्ट—'सङ्कट' क्लेश, आपदा ।

सङ्का—शङ्का, संशय, सन्देह ।

सङ्काश—समान, तुल्य, बराबर ।

सङ्कुल—आकीर्ण, परिपूर्ण, भरा हुआ । (२) व्याप्त, फैला हुआ, मिला हुआ । (३) क्लिष्ट, कठिन । (४) परस्परविरुद्ध, पूर्वापर से विपरीत ।

सङ्कुलित—व्यापित, सम्मिलित, मिश्रित ।

सङ्कोच—सकोच, सिकोड़ । (२) लाज, शरम ।

सङ्ख—'शङ्ख' दर, एक समुद्री जन्तु ।

सङ्ग—साथ, सङ्गम, मेल ।

सङ्गत—सम्बद्धवार्त्ता, उचित बात । (२) हृदयङ्गम, हृद्गत, मन में धारण किया हुआ ।

सङ्गति—सङ्ग, साथ, सोहबत ।

सङ्गी—'मित्र' साथी, मेली ।

सङ्ग्रह—सञ्चय, बटोर, इकट्ठा किया हुआ । (२) किसी वस्तु को एक एक करके इकट्ठा करना ।

सङ्ग्रही—संग्रह करनेवाला, इकट्ठा करनेवाला ।

सङ्ग्राम—'युद्ध' समर, लड़ाई ।

सङ्ग्रामसागर—युद्ध रूपी समुद्र, रणसिन्धु ।

सङ्घट—संघर्ष, रगड़, घिसाव । (२) संयोग, दैवयोग, इत्तिफ़ाक़ ।

सङ्घात—समूह, सन्दोह, व्रात ।

सच—'सत्य' तथ्य, सहा ।

सचराचर—(स+चर+अचर), जड़ जेतन के सहित, चराचर समेत ।

सचाई—सत्यता, ईमानदारी ।

सचि—संचित करके, बटोर कर, इकट्ठा करके । (२) शची, इन्द्राणी, पुलोमजा ।

सचिव—मंत्री, अमात्य, प्रधान ।

सची—शची, इन्द्राणी, इन्द्र की भार्या ।

सचु—आनन्द, हर्ष, खुशी । (२) सत्य, साँच ।

सचेत—सावधान, सजग, चौकन्ना ।

सच्चिदानन्द—(सत्+चित्+आनन्द) परब्रह्म, परमात्मा ।

सज—सजावट, बनावट, तैयारी । (२) सज्जित करै, सजै, बनावै ।

सजग—सचेत, सावधान, चौकन्ना ।

सजत—'सजना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप । सजता है, बनाता है, सँवारता है । (२) बटोरता है, इकट्ठा करता है ।

सजन—सज्जन, सत्पुरुष, सुजन । (२) सम्बन्धी, स्वजन, नातेदार । (३) प्रिय, स्नेही, प्यारा ।

सजल—जल के सहित, पानी युक्त ।

सजा—सज्जित, सजाया, सँवारा हुआ । (२) फ़ारसी भाषा के अनुसार दण्ड ।

सजाई—सुधारी, बनाई, सँवारी ।

सजाति—सजातीय, कुटुम्बी । (२) एक प्रकार का पुरुष वा पदार्थ ।

सज्जन—सभ्य, सत्पुरुष, साधु, कुलीन, आर्य, सुजन । (२) रक्षण, रखवाली ।

सज्जनसाल—सज्जनों की पीड़ा । (२) सज्जनों को पीड़ा देनेवाला, दुष्ट ।

सज्जनानन्ददं—(सज्जन+आनन्द+दं) सज्जनों को आनन्ददायक ।

सञ्चित—संग्रहीत, इकट्ठा किया हुआ ।

सञ्जात—उत्पन्न, जन्मा हुआ, पैदा हुआ ।

सञ्जीवनी—अमृतलता, अमृता, जीवन्ती, गुडूची, गुर्च, गिलोय । (२) वह ओषधि जो मुर्दे को जीवित करने की शक्ति रखती हो ।

सठ—'शठ' मूर्ख, लंठ । (२) खल, दुष्ट ।

सठता—'शठता' मूर्खता । (२) दुष्टता, खलई ।

सत—सज्जन, सभ्य, साधु । (२) शत, सौ की संख्या । (३) सत्य, साँच, फुर । (४) सत्व, सार, हीर । (५) पूज्य, माननीय । (६) श्रेष्ठ, उत्तम । (७) भाग्यवान, किस्मतवर । (८) पंडित, बुध । (९) पराक्रम, बल । (१०) विद्यमान, मौजूद । (११) परमेश्वर, ईश्वर ।

सतकोटि—'शतकोटि' समूह, व्रात । (२) सौ करोड़, एक अरब ।

सतपत्र—'कमल' शतपत्र, कञ्ज ।

सतपन्थ—सन्मार्ग, सच्चा रास्ता ।

सतरञ्ज—'शतरञ्ज' ३२ गोटी और ६४ खाने का एक खेल जिस में हार जीत होती है ।

सतसङ्ग, सत्सङ्ग—सतसङ्गति, सज्जनों का साथ, साधुसङ्गति, बुधजनों का समागम, श्रेष्ठसङ्ग, अच्छा साथ । (२) शान्त रस का आलम्बन विभाव ।

सतावई, सतावै—सताता है, दुःख देता है ।

सति—सत्य, सच्चा । (२) सरल, सीधा ।

सतिभाय—सच्चे भाव से, स्वाभाविक सत्य । (२) सीधे भाव से, सरल भाव से ।

सती—साध्वी, पतिधर्मा, पतिव्रता स्त्री जो अपने पति के सिवा अन्य को पुरुष भाव से नहीं देखती । (२) सहगामिनी, मृतक पति के साथ चिता पर जलनेवाली स्त्री । (३) भवानी, दक्षकन्या, शिवजी की भार्या ।

सतोगुन—सत्वगुण, तीनों गुणों में प्रथम ।

सत्कर्म—श्रेष्ठकर्म, उत्तम करनी ।

सत्कार—सम्मान, आदर, खातिर ।

सत्य—सम्यक, तथ्य, यथार्थ, सच, साँच, ठीक, सही । (२) शपथ, सौगन्द, कसम । (३) सतयुग, चारों युगों में प्रथम ।

सत्यकृत—सम्यक कृत, सच किया हुआ ।

सत्यता—सचाई, यथार्थता ।

सत्यरत—सत्य में तत्पर, यथार्थ संलग्न ।

सत्यव्रत—सम्यक शुभानुष्ठान, तथ्यनियम।
सत्यसङ्कल्प—सच्चीप्रतिज्ञा, यथार्थपण।
सत्यसन्ध—सत्य को सम्यक प्रकार धारण करनेवाला।
सत्यसन्धान—सत्यान्वेषी, सत्याचरण।
सत्व—सत, सार, हीर। (२) सत्वगुण, सतोगुण। (३) व्यवसाय, उद्यम। (४) जीव, आत्मा।
सत्वगुण—सतोगुण, श्रेष्ठधर्म।
सत्वर—'शीघ्र, तुरन्त, जल्दी।
सद—'सत'श्रेष्ठ, उत्तम।
सदई—सदा, सर्वदा, हमेशा।
सदन—'घर' गृह, गेह।
सदय—दयालु, दयावान, कृपालु।
सदसि—सभा, समिति, मजलिस।
सदा—सर्वदा, सब दिन, हमेशा।
सदासिव—'शिव' सदाशिव, ईशान।
सदासीन—(सदा+आसीन) सब दिन विराजमान।
सदृश—'समान' तुल्य, बराबर।
सदेह—सशरीर, देह के सहित।
सद्गति—श्रेष्ठगति, अच्छी अवस्था, मोक्ष।
सद्गुन—उत्तम गुण, श्रेष्ठधर्म।
सद्म—'घर' गृह, मकान।
सद्य—तत्क्षण, तत्काल, तुरन्त।
सद्युक्ति—(सद+युक्ति) तथ्यउपाय, सही तदबीर।
सन—से, साथ, ताँई।
सनक—ब्रह्मा के पुत्र, एक मुनि का नाम।
सनकादि—(सनक+आदि) सनातन, सनन्दन और सनत्कुमार ऋषीश्वर जो ब्रह्मा के पुत्र सदा बालक रूप और दिगम्बर रहते हैं।
सनमान—सन्मान, आदर, सत्कार।
सनातन—शाश्वत, नित्य, ध्रुव। (२) ब्रह्मा के पुत्र, चार ऋषीश्वरों में एक।
सनेह—स्नेह, प्रेम, प्रीति।
सनेही—स्नेही, प्रेम करनेवाला। (२) मित्र।
सन्त—सज्जन, सत्पुरुष, साधु, ईश्वर में अटल भक्ति रखनेवाला।
सन्तजन—सज्जन लोग, साधुजन।
सन्तत—सतत, अनवरत, निरन्तर, लगातार।
सन्तद्रोह—सज्जनों का वैर, साधुओं से दुश्मनी
सन्तद्रोही—सज्जनों से वैर भाव रखनेवाला।
सन्तप्त—तपा हुआ, जला हुआ।
सन्तसङ्गति
सन्तसंसर्ग } —'सत्सङ्ग' सज्जनों का साथ।
सन्ताप—ज्वर, बोखार। (२) दुःख, क्लेश।
सन्तापहर—तापहारी, जलन दूर करनेवाला।
सन्तापहाता—दुःखनाशक, दाह नसानेवाला।
सन्तुष्ट—तृप्त, तुष्ट, आसूदा।
सन्तोष—तृप्ति, तोष, सब्र। (२) आनन्द, हर्ष, खुशी।
सन्तोषकारी—सन्तोष करनेवाला।
सन्तोषु—'सन्तोष' तृप्ति।
सन्दग्ध—अच्छी तरह जला हुआ।
सन्देश—सनेसा, कहावत।
सन्देह—संशय, शङ्का, किसी वस्तु का निश्चय न होना। (२) एक अलङ्कार का नाम जिसमें तथ्यातथ्य का निश्चय न हो, सन्देह बना रहे।
सन्दोह—'समूह' व्रात समुदाय।
सन्धान—अन्वेषण, खोज, तलाश। (२) अचार, खटाई। (३) मदिरा, शराब।
सन्ध्या—सायङ्काल, साँझ, शाम। (२) सन्ध्योपासन, सन्ध्यावन्दन।
सन्निपात—त्रिदोष, वात पित्त और कफ के प्रकोप से उत्पन्न हुआ ज्वर जिसमें रोगी बेहोश हो कर आनतान बकता है और बचने की बहुत कम आशा रहती है।
सन्मान—सम्मान, सत्कार, आदर।
सन्मुख—सामने, सौंह, विमुख का उलटा।
सन्यास—सन्यस्तधर्म, चतुर्थाश्रमी।
सपथ—शपथ, सौगन्द, कसम।
सपदि—'शीघ्र' तुरन्त, जल्दी।
सपन
सपना } —'स्वप्न, ख़्वाब।
सपूत—सुपुत्र, लायक लड़का।

सप्त—सात, छः और एक की संख्या ।
सप्तधातु—शरीरस्थ-रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और वीर्य सातों धातु । (२) खनिज सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, सीसा, जस्ता और लोहा सप्तधातु हैं ।
सप्रीति, सप्रेम—प्रीति-पूर्वक, स्नेह के सहित ।
सफरी—एक प्रकार की मछली जो बहुत छोटी होती है ।
सफल—कृतकार्य, सफलीभूत, कामयाब । (२) फल युक्त, फल के सहित ।
सब—संम्पूर्ण, समस्त, कुल ।
सबअँग—सर्वाङ्ग, सारा अवयव । (२) सब प्रयत्न, समस्त उपाय, सारी तदबीर ।
सबप्रकार, सबभाँति—सब बिधि, सब तरह ।
सबल—बलवान, सामर्थी, जोरावर ।
सबेर, सबेरा, सबेरो—प्रभात, भिनसार, बिहान । शीघ्र, तुरन्त, जल्दी ।
सब्द—'शब्द' वाक्य, बोल ।
सभय—भयभीत, भययुक्त ।
सभा—समज्या, गोष्ठी, समिति, परिषद । (२) पञ्चायत, मजलिस, जलसा । (३) घर, गृह, मकान ।
सँभार—रक्षा, बचाव, हिफाजत । (२) सहाय, गोहार, मदद । (३) स्मरण, सुधि, याद ।
सभीत—सभय, भयभीत, डराहुआ ।
सम—समान, तुल्य, बराबर । (२) शान्त, सौम्य, जिसको क्रोध न हो । (३) सम्पूर्ण, समग्र । (४) एक अलंकार का नाम जिसमें यथायोग्य का साथ वर्णन किया जाता है ।
समचर—समान चलनेवाला, तुल्य व्यवहार करनेवाला ।
समझ—ज्ञान, विचार । (२) सम्मति, राय ।
समझत—'समझना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप । समझता है, विचारता है, सोचता है ।
समझाइबी—समझाइयेगा, बुझाइयेगा ।
समता—समानता, तुल्यता, बराबरी । (२) सम्पूर्णता, सर्वज्ञता ।
समताभवन—सौम्यता के घर, सर्वज्ञता के मन्दिर ।
समदरसी—समान देखनेवाला ।
समन—'शमन' ध्वन्स । (२) यमराज, काल ।
समनि—नाश करनेवाली ।
समय—काल, बेला, जून, वक्त । (२) आचार, व्यवहार, चलन । (३) शपथ, सौगन्द । (४) सिद्धान्त, निर्णय किया हुआ ।
समर—'युद्ध' संग्राम, जंग ।
समरथ—'समर्थ' योग्य ।
समर्थ—सामर्थ्य, शक्ति, बल । (२) योग्य, लायक । (३) हित, भला, अच्छा । (४) सम्बद्ध, मिला हुआ, बँधा हुआ ।
समसेवा—समान सेवा, बराबर टहल ।
समस्त—सम्पूर्ण, समग्र, सब ।
समाई, समाउ—समाने का स्थान, अँटने की जगह, गुञ्जाइश । (२) सहनशीलता, शाम्य ।
समाउँ—समाऊँगा, जगह पाऊँगा ।
समागम—सङ्ग, मेल, साथ । (२) आगमन, अवाई ।
समाचार—वृत्तान्त, हाल, खबर ।
समाज—'सभा' समिति, परिषद । (२) समूह' व्रात, वृन्द । (३) उत्सव, जलूस ।
समाते—समाता, अमाता, अँटता ।
समाधान—विवाद का निपटाव, किसी प्रकार के प्रश्न का यथोचित उत्तर । (२) धीरज, ढाढ़स ।
समाधि—ध्यान, चित की वृति को रोक कर ईश्वर के रूप को हृदय में निरन्तर ले आना । (२) प्रतिज्ञा, पण, अङ्गीकार की हुई बात । (३) एक अलंकार जिसमें आकस्मिक कारणान्तर के योग से विचारा हुआ कार्य अति सुगमता से हो जाय ।
समान—सम, तुल्य, सदृश, संकाश, निभ, बराबर उपमालंकार का वाचक । (२) सत्य, सच । (३) पंडित, विद्वान, कोविद ।
समाने—अमाने, अँटे ।

समाप्त—इति, खतम । (२) अन्त, ओर, अखीर ।
समाश्रित—(सम+आश्रित) सबतरहआसरेवाला ।
समाहिँ—समाते हैं, अँटते हैं ।
समिट
समिटि } —बटुर कर, इकट्ठा होकर ।
समिध—यज्ञ का ईंधन, यज्ञ में जलनेवाली लकड़ी ।
समीचीन—प्राचीन, बहुकालीन, पुराना । (२) यथार्थ, सत्य, ठीक । (३) श्रेष्ठ, उत्तम ।
समीचीनता—सत्यता,सचाई । (२) श्रेष्ठता, उत्तमता । (३) प्राचीनता, पुरानापन ।
समीति—'सभा' समिति, मजलिस ।
समीप—आसन्न,निकट, सन्निकट, नगीच, नीयर, नज़दीक, पास ।
समीर—'पवन' वायु, हवा ।
समुझ—समझ, ज्ञान ।
समुझत—समझत, समझता है ।
समुझनि—समझदारी, जानकारी ।
समुझाइबी—समझाइयेगा, सुझाइयेगा ।
समुदाई
समुदाय } —'समूह' व्रात, सन्दोह ।
समुद्र—अकूपार, अर्णव, अब्धि, उदधि, कम्पति, जलधि, जलनिधि, नदीश, नीरधि, नीरनिधि, पयोधि, वननिधि, सरित्पति, सागर, सिन्धु, इत्यादि, जलभेद से समुद्र सात प्रकार का कहा जाता है ।
समुहाहिँ—समुहाते हैं, सामने आते हैं ।
समूह—ओघ, कदम्ब, गण, चय,निकर, वृन्द, व्रात, व्यूह, सङ्घात, सन्दोह, समुदाय, समवाय आदि । (२) सङ्घ, वर्ग, यूथ, गोल ।
समृति—स्मृति, धर्मशास्त्र ।
समृद्ध—लक्ष्मीवान, धनी ।
समृद्धि—उन्नति, बढ़ती, तरक्की । (२) विधि, विधान, व्यवस्था ।
समेत—युक्त, सहित, साथ ।
सम्पत्ति—धन, लक्ष्मी, दौलत । (२) ऐश्वर्य, विभव ।
सम्पद
सम्पदा } —सम्पत्ति, लक्ष्मी, विभव ।
सम्पन्न—युक्त, सम्मिलित, मिला हुआ । (२) सम्पत्तिशाली, भाग्यवान ।
सम्पाति—एकगिद्ध का नाम जो जटायु का बड़ा भाई था । इसकी कथा रामचरितमानस में किष्किन्धा-काण्ड के अन्त में विस्तार पूर्वक वर्णन की गई है ।
सम्पूर्ण—अखिल, अशेष, समग्र, समस्त, सब,सर्व, सकल, निखिल, कुल, तमाम, सारा ।
सम्प्रद—श्रेष्ठदानी, अच्छा देनेवाला ।
सम्वत—अब्द, वर्ष, वत्सर, सम्वत्सर, साल ।
सम्बन्ध—नाता, रिश्ता, तअल्लुक ।
सम्बर
सम्बरी
सम्बल
सम्बली } —मार्गव्यय, पन्थ का आधार, राह-ख़र्च, रास्ते के लिये ख़र्चा ।
सम्भव—उद्भव,उत्पन्न,पैदा । (२) संयोग, होनहार, मुमकिन, होने लायक ।
सम्भाषन—सम्भाषण, अच्छी तरह बातचीत, मजे में बोलचाल ।
सम्भु—शम्भु, शिव, शङ्कर ।
सम्भुजाया—'पार्वती' उमा ।
सम्भुधनु—शम्भुधनु, पिनाक ।
सम्भुसेवित—शिवजी से सेवित ।
सम्भूत—उत्पन्न, उद्भव, पैदा ।
सम्भ्रम—त्वरा,तुरन्त,शीघ्रता,जल्दी, बहुत जल्दी । (२) सम्वेद । (३) भय से उत्पन्न हुई शीघ्रता । (४) आवेग, मन की झोंक । (५) भय, डर । (६) भ्रमसहित,महाभ्रम । (७) आदर,सम्मान ।
सम्भ्राज—भलीभाँति शोभायमान ।
सम्मत—मत, राय, सलाह ।
सम्मुख—सन्मुख, सौंह, सामने, आगे ।
सम्मोह—पूर्ण अज्ञान, पूरी नासमझी ।
सम्म्राज—साम्राज्य, बादशाहत ।
सम्यक—अच्छे प्रकार,भली भाँति । (२)सत्य, तथ्य, साँच ।
सयन—शयन,सोना ।
सयानप—चतुराई, सयानपन ।
सयानी—प्रवीणा, चतुरा स्त्री ।
सयाने—प्रवीण, चतुर, होशियार ।
सर—'शर' बाण, तीर । (२) सरोवर, सरसी,

तालाब। (३) चिता, मुर्दा जलाने के लिये लकड़ी का सजाया हुआ ढेर।
सरग—स्वर्ग, नाक, आकाश। (२) देवलोक।
सरजू—'सरयू' मानसनन्दिनी।
सरत—सरता है, बनता है, पूरा पड़ता है।
सरद—'शरद ऋतु' क्वार कार्तिक का महीना।
सरदबिधु—शरद्काल के चन्द्रमा।
सरन—शरण, पनाह।
सरनद—शरणदाता, पनाह देनेवाला।
सरनपाल—शरण आये हुए का रक्षक।
सरनागत—(शरण+आगत) शरण आया हुआ।
सरब—सर्व, समग्र, कुल।
सरबस—'सर्वस्व' सर्व, समग्र।
सरम—'शरम' लाज।
सरयू—सरय्वा, सरयु, मानसनन्दिनी, वह नदी जो मानसरोवर से निकल कर अयोध्यापुरी के उत्तर बहती हुई गंगाजी में मिली है।
सरल—अनुकूल, उदार, सीधा। (२) निष्कपट, छल हीन, सच्चा। (३) जीर्ण, सड़ियल, सड़ा हुआ। (४) धूप का वृक्ष।
सरलप्रकृति—उदार स्वभाव, सीधी प्रकृति।
सरस—रसवान, रसीला, रस से भरा। (२) अधिक, बहुत, ज्यादा। (३) श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा। (४) सर, सरसि, तालाब।
सरसाई—अधिकता, बहुतायत। (२) उत्तमता, श्रेष्ठता। (३) सरसता, रसीलापन।
सरसिज—'कमल' कञ्ज।
सरसिजोपरि—(सरसिज+ऊपर) कमल के ऊपर।
सरसीरुह—'कमल' पद्म।
सराध—श्राद्ध, पिण्डदान।
सरासन—धनुष, शरासन।
सराहत—'सराहना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। सराहता है, बड़ाई करता है, प्रशंसा करता है, तारीफ़ करता है।
सरि, सरित, सरिता—'नदी' आपगा, तरङ्गिणी।
सरिस—सदृश, तुल्य, समान।
सरीर—'शरीर' देह, तनु।
सरु—सर, सरोवर, तालाब।
सरुख—रुख के सहित, मन से, दिल से। (२) सरोष, क्रोध से, गुस्सा के सहित।
सरूप—'शरीर' रूप, देह। (२) समान रूप, तुल्यदेह।
सरै—बनै, पूरा पड़े, होवे।
सरो—बना, पूरा पड़ा, हुआ।
सरोग—रोगयुक्त, रोगी।
सरोज—'कमल' अरविन्द।
सरोजजा—कमल से उत्पन्न।
सरोरुह—'कमल' सरोज, कञ्ज।
सर्करा—शर्करा, शक्कर, चीनी।
सर्ग—अध्याय, विराम, प्रसङ्ग का ठहराव। (२) स्वर्ग, नाक, आकाश। (३) मोक्ष, निर्वाण। (४) त्याग, विरति। (५) स्वभाव, प्रकृति। (६) सृष्टि।
सर्प—'साँप' अहि, भुजङ्ग।
सर्पेश—(सर्प+ईश) शेषनाग, साँपों के मालिक।
सर्म—'शर्म' कल्याण।
सर्व—'सम्पूर्ण' सब, कुल।
सर्वकृत—सब किया।
सर्वग—सब जगह जानेवाला।
सर्वगत—सब में प्राप्त, सर्वत्र पहुँचा हुआ।
सर्वजित—अजेय, सब को जीतनेवाला।
सर्वतोभद्र—स्वस्तिक, नन्द्यावर्त, वह राजमन्दिर जिसमें चारों ओर दरवाजे हों। (२) यज्ञ में प्रधान देवता का आसन। (३) मण्डल, घेरा। (४) विष्णु का रथ। (५) नींब का वृक्ष।
सर्वतोभद्रनिधि—यज्ञपुरुष, विष्णु, नारायण।
सर्वदा—सदा, निरन्तर, हमेशा।
सर्वदाता—सब देनेवाला।
सर्वदानन्द—(सर्वदा+आनन्द) सदा प्रसन्न।
सर्वदापुष्ट—सदापुष्ट, निरन्तर स्थूल।
सर्वबासी—सब में बसनेवाला।
सर्वभक्षक—सब को भक्षण करनेवाला।
सर्वभूत—सब का पालन करनेवाला।
सर्वमेवात्र—(सर्व+एव+अत्र) सब इस स्थान पर।

सर्वरक्षक—सब की रक्षा करनेवाला।
सर्वस
सर्वस्व } —सम्पूर्ण, समग्र, सब।
सर्वहित—सब की भलाई करनेवाला।
सर्वत्र—सब जगह, सब स्थान में।
सर्वज्ञ—सर्वविद्, सब का ज्ञाता, सब जाननेवाला। (२) शिव, महेश, रुद्र। (३) बुद्धदेव, श्रीघन।
सर्वाङ्ग—(सर्व+अङ्ग) समस्त अङ्ग। (२) सम्पूर्ण साधन, सारा उपाय,
सर्वाङ्गसुन्दर—समस्त अङ्गों से सुहावना।
सर्वाधिकारी—(सर्व+अधिकारी) सब का मालिक।
सर्वाभिराम—(सर्व+अभिराम) समस्त चैन, सारा आनन्द।
सर्वास्पद—(सर्व+आस्पद) सब प्रतिष्ठा, सारा ओहदा।
सर्वेश—(सर्व+ईश) सब के स्वामी।
सर्वोपकार—(सर्व+उपकार) सब की भलाई।
सलिल—'पानी' जल।
सलोने—'सुन्दर' मनोहर, सुघर। (२) स्वादिष्ट, ज़ायकेदार। (३) लवण युक्त।
सवति—एक पुरुष की दो वा अधिक स्त्रियाँ परस्पर एक दूसरे की सवति कहलाती हैं।
सँवारत—'सँवारना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। सँवारता है, सुधारता है, बनाता है।
सँवारी—सुधारी, सजाई, बनाई।
सविष—गरलसंयुक्त, विष के सहित।
ससि—'शशि' चन्द्रमा, चन्द्र। (२) कृषि, खेती, किसनई।
सह—सहित, समेत, साथ। (२) सह्य, सहनीय, सहने योग्य। (३) पराक्रम, बल।
सहज—स्वाभाविक, सहल, आसान। (२) साधारण, मामूली। (३) सुगम, सरल, सीधा, अनुकूल। (४) सहोदर, सगाभाई। (५) स्वतः, अपने आप खुदबखुद। (६) जन्म लग्न से तीसरा स्थान।
सहजसखा—स्वाभाविक मित्र।
सहजसनेह—स्वाभाविक प्रीति।
सहजसरूप—स्वाभाविक रूप, जैसा का तैसा।
सहजसुख—सहजानन्द, स्वाभाविक सुख।
सहजसुन्दर—स्वाभाविक सुन्दर।
सहजसुभाय—सरलप्रकृति, सीधी आदत।
सहत—'सहना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। सहता है, सहन करता है, बरदास्त करता है।
सहमत—'सहमना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। सहमता है, रुकता है, थम्हता है। (२) एक मन होना, इत्तिफ़ाक राय।
सहल—सहज, आसान।
सहस—सहस्र, एक हज़ार।
सहसजीहा
सहसफन
सहससीसावली } —'शेशनाग' सहस्र जिह्वावाले, सहस्रफणि, सहस्र सिरों की पंक्तिवाले।
सहसबाहु—सहस्रार्जुन, एक बलवान राजा जिसका परशुरामजी ने संहार किया था।
सहसा—शीघ्र, तुरन्त, चटपट। (२) अचानक, अकस्मात, एकाएक।
सहस्र—सहस, सौ का दसगुना, हज़ार।
सहाइ
सहाई
सहाय } —सहायक, सहायता करनेवाला, मदद देनेवाला। (२) सहायता, मदद।
सहि—सह कर, बरदास्त करके। (२) सही, हस्ताक्षर, दस्तखत। (३) सत्य, साँच।
सहित—संयुक्त, समेत, साथ। (२) हित-पूर्वक, भलाई के सहित।
सही—(अर्बी)। सत्य, साँच, ठीक। (२) निर्दोष, बेऐब। (३) स्वस्थ, आरोग्य, तन्दुरुस्त। (४) हस्ताक्षर, दस्तखत, अन्वेषण के अनन्तर किसी लेख के कागज़ पर स्वीकृति के लिये अपने हाथ से कोई चिह्न बनाना अथवा दस्तख़त करना।
सहीले—सहनशील, सहनेवाले।
सहे—सहन किये, बरदास्त किये।
सा—सो, वह। (२) सादृश्य का बोधक, बराबरी का जतलानेवाला।
साँइ—स्वामी, मालिक।
साँइदोहाई—स्वामिद्रोहता, मालिक से वैर। (२) स्वामी की सौगन्द, मालिक की कसम।

साँइद्रोह—स्वामिद्रोह, मालिक से बिरोध।
साँई—स्वामी, प्रभु, मालिक।
साँइद्रोहै—स्वामिद्रोही को।
साँकरे—सकेत, तङ्ग। (२) कठिनता, अड़चन।
साख—शाख, डाल।
साखि / साखी—साक्षी, गवाह, शहादत। (२) वृक्ष, विटप, पेड़।
साग—शाक, भाजी।
सागर—'समुद्र' उदधि, सिन्धु।
साँच—सत्य, सही, ठीक।
साँचिलो—सचाई युक्त, सच्चे।
साँचोपरे—सच पड़ने पर, सही होने पर।
साज—सामान, सरञ्जाम। (२) घोड़े का साज।
साठ / साठि—प्रतिज्ञा, पण। (२) तीस की दूनी संख्या।
सात—सप्त, छः और एक की संख्या।
सातइँ—सप्तमी, सातवीं तिथि।
साँति—'शान्ति' चैन। (२) अन्त, अवसान। (३) दान, त्याग।
सात्विक—सत्वगुणी, सगुत्वण से उत्पन्न होनेवाला, नैसर्गिक अङ्ग विकार। (२) अङ्गिक, अन्तःकरण का अभिप्राय।
साथ—सङ्ग, सङ्गति, सोहबत।
साथी—सङ्गी, साथ रहनेवाला।
सादर—आदर के साथ, सत्कार पूर्वक।
साध—इच्छा, चाह, ख्वाहिश।
साधक—अभ्यासी, उपाय करनेवाला, साधना करनेवाला। (२) तपस्वी, तप करनेवाला।
साधत—साधता है, अभ्यास करता है।
साधन—उपाय, यत्न, तदबीर। (२) मृतसंस्कार, मृतककर्म। (३) धनोपार्जन, द्रव्य कमाना। (४) अपना मतलब पूरा करना। (५) धातुओं का भस्म बनाना।
साधनधाम—साधन का घर, उपाय निकेतन।
साधनफल—साधन का फल, यत्न का नतीजा।
साधित—सिद्ध किया, साधा हुआ। (२) वश में किया, आधीन में किया हुआ।
साधी—सिद्ध की गई, साधना की।
साधु—सज्जन, सभ्य, कुलीन। (२) सत्य, सच, ठीक। (३) सुन्दर, शोभायमान, मनोरम। (४) बैरागी, एक सम्प्रदाय।
साधुता—सज्जनता, सभ्यता, कुलीनता।
साध्य—साधन के योग्य, सिद्ध होने लायक। (२) आरोग्य होने योग्य, वह रोगी जो चिकित्सा से आराम होने लायक हो।
सानन्द—आनन्द के सहित, सुख-पूर्वक।
सानि / सानी—सान कर, मिला कर। (२) सम्मिलित की हुई, मिलाई हुई।
सानुकूल—प्रसन्न, राजी, मुआफ़िक। (२) कृपालु, मिहरबान।
सानुज—छोटे भाई के सहित।
सानुराग—अनुराग सहित, प्रेम-पूर्वक।
साँप—अहि, आशीविष, उरग, काकोदर, कुण्डली, गूढ़पाद, चक्री, चक्षुःश्रवा, दन्दशूक, दर्वीकर, दीर्घपृष्ठ, नाग, पन्नग, पवनाशन, फणि, फणी, भुजग, भुजङ्ग, भुजङ्गम, भोगी, विषधर, व्याल, सरप, सर्प, कीरा इत्यादि। साँप जातिभेद से अनेक प्रकार के होते हैं। जिन सर्पों के मस्तक में मणि होती है वे मणिधर कहलाते हैं।
साबर—सर्प विष नाशक मंत्र, साबरी मंत्र, वह विद्या जिससे साँप काटे हुए का विष दूर होता है।
साम—चार वेदों में एक, तीसरा वेद। (२) राजा के चार उपायों में प्रथम जिसके द्वारा विरोधी को समझा बुझा कर वश में किया जाता है।
सामगाताग्रनी—(साम+गाता+अग्रणी) साम वेदों के गाने में अगुवा, वेद गान करने में सर्व श्रेष्ठ।
सामगायक—सामवेद का गान करनेवाला।
सामर्थ / सामर्थ्य—'बल' पराक्रम, जोर।
सामान / सामौ—सामग्री, असटाला।
साय—ध्वन्स, नष्ट, नाश।
सायक—'बाण' बान, तीर। (२) खड्ग, तलवार।

सार—सत्व, हीर, गूदा। (२) श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा। (३) बल, पराक्रम, ज़ोर। (४) न्याय, इन्साफ़। (५) घर, मकान,। (६) तत्व, सिद्धान्त। (७) गोशाला, खरका। (८) साला, स्त्री का भाई। (९) कान्तीसार लोहा। (१०) एक अलङ्कार जिसमें उत्तरोत्तर उत्कर्ष वा अपकर्ष का वर्णन रहता है।

सारङ्ग—शार्ङ्ग, विष्णु भगवान् का धनुष। (२) चातक, पपीहा। (३) पक्षी, विहङ्ग। (४) भ्रमर, भँवरा। (५) देवता, सुर। (६) मृग, हरिण। (७) हाथी, मतङ्ग (८) छत्र छाता। (९) राजहंस, मराल। (१०) चित्र कबरामृग। (११) एक प्रकार का बाजा। (१२) वस्त्र, कपड़ा। (१३) नानारंग। (१४) मोर, मुरैला। (१५) कामदेव, (१६) बाल, केश। (१७) सुवर्ण, सोना। (१८) आभूषण। (१९) पद्य, छन्द। (२०) शंख, दर। (२१) चन्दन। (२२) कपूर। (२३) फूल, पुष्प। (२४) कोकिल पच्छी। (२५) मेघ, घन। (२६) पृथ्वी, धरती। (२७) राजि, रजनी। (२८) छवि, शोभा। (२९) सिर।

सारङ्गपानि
सारङ्गधारी } —'विष्णु' केशव।

सारथि—सूत, रथ हाँकनेवाला।

सारद
सारदा } —शारद, शारदा, सरस्वती। (२) काव्य, कविता, कवि निर्मित वाक्यसमूह।

सारहीन—सत्व हीन, निःसार। (२) पोपला, पोल।

सारा—सम्पूर्ण, सब। (२) पूरा किया, बनाया।

सारिखो—समान, तुल्य, बराबर।

सारी—सम्पूर्ण, समग्र, तमाम।

सार्‍यो—कियो, बनायो, पूर उतारेउ।

साल—'शाल' दुःख पीड़ा। (२) साखू, सँखुआ का पेड़। (३) वर्ष, सम्वत्सर, बरिस।

सालन—रामसालन, कढ़ी, गोदवा, बेसन मसाला दही और खटाई के योग से बना हुआ व्यञ्जन जो दाल के समान खाया जाता है।

साला—'शाला' घर, मकान। (२) सला हुआ, जुड़ा हुआ। (३) सार, श्वसुरपुत्र।

साली—युक्त, मिली हुई, जुड़ी हुई। (२) सढुआइन, स्त्री की बहिन।

सावत—ईर्ष्या द्वेष, सवतियाडाह, दूसरे की बढ़ती देख कर कुढ़ना। (२) सावन्त, योद्धा।

सावधान—सचेत, सजग, होशियार।

सावन—श्रावण, सावन का महीना।

साँसति—दुर्दशा, दुर्गति, फजीहत।

सासुरे—श्वसुर के घर, ससुरे।

साहस—ढारस, हियाव, हिम्मत। (२) बल, पराक्रम, जोर। (३) वेग, शीघ्रता। (४) दण्ड, दमन, सजादेना।

साहसी—पराक्रमी, दिलेर, हिम्मतवर।

साहेब—(अर्बी)। स्वामी, प्रभु, मालिक। (२) ठाकुर, गाँव का मालिक, हाकिम।

साहेबी—प्रभुता, मलिकई। (२) ठकुरई, हाकिमी।

सिकता—बालु, बालूका, रेता।

सिख
सिखवन } —शिक्षा, उपदेश। (२) दण्ड, दमन, सजा।

सित—श्वेत, शुक्ल, सफ़ेद।

सितसुमन—श्वेतपुष्प, सफ़ेद फूल।

सिद्ध—देवताओं में एक जाति, एक प्रकार के देवता। (२) साधन से सिद्ध हुआ पुरुष, वह प्राणी जो किसी साधना द्वारा सिद्ध पद को प्राप्त हुआ हो। (३) निवृत्त, निष्पन्न, त्यागी। (४) निश्चित, पक्की ठहराई हुई बात।

सिद्धान्त—निर्णीत, निश्चितवार्ता, निश्चय की हुई बात। (२) परिणाम, नतीजा।

सिद्धि—अष्ट सिद्धि, आठों प्रकार की सिद्धियाँ, यथा—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व। (२) लक्ष्मी, अष्टवर्ग की एक ओषधी का नाम। (३) मनोरथ की प्राप्ति, वाञ्छित लाभ।

सिद्धिसदन—सिद्धियों के स्थान।

सिधि—'सिद्धि' मनोरथ की प्राप्ति।

सिन्धु—'समुद्र' सागर।

सिन्धुसुत—जलन्धर दैत्य, यह अत्यन्त बली और दुर्जय असुर था। इसकी स्त्री वृन्दा पतिव्रता थी उसके व्रत के प्रभाव से शिवजी समर में

असुर को जीत न सके तब भगवान् ने छल से वृन्दा का व्रत भङ्ग किया जिससे दैत्य मारा गया।
सिन्धुसुता—'लक्ष्मी' इन्दिरा।
सिय—'सीता' जनकनन्दिनी।
सियत—सीता है, मिलाता है, जोड़ता है।
सिय पी—रामचन्द्रजी, सीतापति।
सिया—'सीता' सिय।
सिर—शिर, मस्तक, कपार।
सिरजा—रचा, बनाया। (२) उपजाया, पैदा किया।
सिरताज—शिरोभूषण, राजमुकुट।
सिरसि—शिर, मस्तक, कपाल।
सिराई—चुकै, खतम हो। (२) ठण्ढी हो।
सिराऔं—समाप्त करूँ, चुकाऊँ। (२) शीतलकरूँ।
सिरानी, सिराने—चुकी, खतम हुई, समाप्त हुई। (२) शीतल हुई, ठण्ढे हुए।
सिवार—शैवाल, जलनील, पानी में उत्पन्न होनेवाली एक प्रकार की घास जिससे लाल शक्कर को सफ़ेद बनाते हैं।
सिहाउँ—सिहाता हूँ, किसी अच्छी चीज़ को देख कर लालच करता हूँ।
सिहानी—सिहाई। (२) सिहाती हैं, बड़ाई करती हैं।
सिहोर—शाखोट, सहोड़ा, एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष जो बबूल के भेद में माना जाता है, इसका वृक्ष सवत्र पाया जाता है। किसान लोग इसकी पतली डालियों को गरमाकर घोरई मेंड़रा बनाते हैं।
सी—सम, समान, से, उपमा का वाचक।
सीकर—जलविन्दु, पानी का बहुत छोटा कण जैसा कोहिरा पड़ने पर टपकता है। (२) पहले पकनेवाला आम का फल, कोंपरि।
सींच—सींचनेवाली, जल छिड़कनेवाली।
सींचो—सींचा, पानी का छिड़काव किया।
सीझे—तपे, आँच सहे। (२) सिद्ध हुए, पके।
सीठे—सीठी, खुज्झी, रस आदि को छान लेने पर कपड़े में जो निस्सार पदार्थ रह जाता है उसको सीठी कहते हैं।
सीता—जनकजा, जनकनन्दिनी, मिथिलेशजा, सिय, सीय, रामवल्लभा इत्यादि। एक बार राजा जनक के राज्य में वर्षा नहीं हुई उन्होंने यज्ञ किया। पृथ्वी को अपने हाथ से हल द्वारा जोतने लगे, धरती से घड़ा निकला उस में से एक अपूर्व कन्या प्राप्त हुई। हल की रेखा को सीता कहते हैं, इसीसे कन्या का सीता नाम पड़ा। ये परमात्मा की आदिशक्ति योगमाया हैं।
सीतानाथ, सीतापति, सीतारमन, सीतावरु, सीतेश—रामचन्द्र, दशरथनन्दन।
सीदत—'सीदना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। दुःख पाता है, कष्ट पाता है। (२) खिन्न होता है, क्षीण होता है, कमजोर होता है।
सीम, सीमा—अवधि, सींवा, सींव, हद।
सीमातिरम्यम्—(सीमा+अति+रम्यं) अत्यन्त रमणीयता की अवधि, बहुत बड़ी शोभा की हद।
सीमासि—(सीमा+असि) अवधि हो, हद हो।
सीय—'सीता' जानकी।
सीयरवन—रामचन्द्र, कौशल्यानन्दन।
सीले—सी लो, फटे कपड़े को सुई धागे से एक में मिला दो। (२) लाज रख लो।
सींव—अवधि, सीमा, हद।
सु—सुन्दर, शोभन, सुहावना। (२) अत्यन्त, अतीव, बहुत।
सुआउ, सुआयु—सुन्दर आयुर्बल, अच्छी आयु।
सुकण्ठ—सुग्रीव, कपिराज।
सुकर—सुन्दर कर्त्ता, अच्छा करनेवाला।
सुकाल—सुभिक्ष, सुन्दर समय।
सुकुल—सुन्दर कुल, अच्छावंश।
सुकृत—पुण्य, धर्म, अच्छी करनी, भला काम। (२) श्रेष्ठता, बड़ाई।
सुकृतज्ञ—धर्मज्ञ, सुकृत का जाननेवाला।
सुकृती—पुण्यात्मा, धर्मात्मा।
सुकृतैकफल—(सुकृत+एक+फल) पुण्य का

प्रधान फल, धर्म का मुख्य नतीजा।

सुख—हर्ष, आनन्द, चैन। (२) विलास, भोग।

सुखकन्द—सुखमूल, आनन्द के मेघ।

सुखकारी—सुखकर, आनन्द करनेवाला।

सुखखानि—सुखाकर, आनन्द की खान।

सुखजनक—सुख उत्पादक, आनन्द उत्पन्न करनेवाला। (२) सुख के पिता।

सुखद, सुखदाई, सुखदायक—सुख देनेवाला, आनन्द प्रदान करनेवाला।

सुखधाम, सुखनिधान—सुख के मन्दिर, आनन्दभवन।

सुखप्रद—सुखद, आनन्ददायक।

सुखभवन—सुखधाम, आनन्दभवन।

सुखमा—अत्यन्त शोभा, बड़ी छबि।

सुखमारूप—अत्यन्त शोभा के रूप।

सुखरासि—सुख के राशि, आनन्द के पुञ्ज।

सुखसाधन—सुख का साधन, चैन का उपाय।

सुखसार—सुख का तत्व, प्रधान आनन्द।

सुखसिन्धु—आनन्द के समुद्र।

सुखसींव—सुख की अवधि, आनन्द की सीमा।

सुखहानि—सुख का क्षय, आनन्द का नाश।

सुखात—सूखता है, झुराता है।

सुखारी, सुखि, सुखी—आनन्दित, प्रसन्न।

सुखेत—सुन्दर क्षेत्र, अच्छी उपजाऊ धरती।

सुगति—सुन्दर गति, मोक्ष।

सुगन्ध—सुरभि, अच्छा गन्ध, शखुबू।

सुगम—सहज, सरल, आसान।

सुगुरु—सुन्दर गुरु, अच्छा उपदेशक।

सुग्रीव—कपिपति, कपिराज, कपीश, वानरराज, वानरेन्द्र, सुकंठ। किष्किन्धा के राजा बाली के लघुबन्धु। बाली सुग्रीव की कथा रामचरितमानस के किष्किन्धा काण्ड में विस्तारपूर्वक वर्णित है। रामचन्द्रजी ने इन्हें अपना मित्र बनाया और बाली को मार कर किष्किन्धा का राजा बना दिया। छोटे भाई की स्त्री कन्या के समान है इस अपराध से बाली को मारा; किन्तु बड़े भाई की पत्नी माता के समान है उसको सुग्रीव ने पत्नी बना लिया इसे जानते हुए रामचन्द्रजी ने कभी क्रोध नहीं किया सदा मित्र भाव से आदर ही करते रहे।

सुघट—सुन्दर घटना, अच्छा होनहार।

सुघर—सुन्दर, मनोहर, छबीला।

सुचाल—सुन्दर चाल, अच्छी चलन।

सुचित—सुन्दर चित्त, अच्छा मन। (२) निश्चिन्त, बेफिक्र। (३) सजग, सावधान।

सुछम—अति योग्य, सुन्दर समर्थ।

सुजन—सज्जन, कुलीन।

सुजान—'प्रवीण' चतुर,।

सुझाउ—सुझाओ, लखाओ। (२) समझाइये, बुझाइये, बोध कराइये।

सुटेक—सुन्दर आधार, अच्छा सहारा।

सुठि—अत्यन्त, अतिशय, निहायत। (२) सुन्दर, मनोहर, सुहावना।

सुढर—अनुकूल, अच्छी ढरनि।

सुढरढरत—भलीभाँति प्रसन्न होता है।

सुत—'पुत्र' आत्मज, बेटा।

सुतन—सुन्दर शरीर, अच्छी देह। (२) लड़के।

सुतवित—पुत्र और धन।

सुता—कन्या, पुत्री, लड़की।

सुतिय—सुन्दर स्त्री, अच्छी भार्या।

सुथल—सुंदर स्थान, अच्छी जगह।

सुथिर—सुन्दर स्थिर, अच्छी तरह ठहरा हुआ।

सुदरशन, सुदर्शन—सुदर्शनचक्र, विष्णु का शस्त्र। (२) सुन्दर दर्शनीय, अच्छा दिखाई देनेवाला।

सुदाउ—अच्छा खेल, भला खेलवाड़। (२) भला मौका।

सुदाता—सुन्दर दानी, अच्छा दाता।

सुदाम—सुन्दर दाम, अच्छा द्रव्य, भली कीमत। (२) सुदामा ब्राह्मण जो बालकपन में श्रीकृष्णचन्द्रजी के मित्र थे और मध्यावस्था तक

दरिद्रता के भीषण दुःख सहे, अन्त को स्त्री के कहने सुनने पर द्वारकाधीश से मिलने गये। भगवान् ने उन्हें करोड़ों कुबेर के तुल्य धनी बना दिया।

सुदुर्लभ—अत्यन्त दुर्लभ, सर्वथा अप्राप्य।

सुदृढ़—अत्यन्त कठोर, खूब मज़बूत।

सुध—स्मरण, सुधि, याद। (२) शुद्ध, सही।

सुधन—सुन्दर धन, अच्छी सम्पदा।

सुधरत—'सुधरना'शब्द का वर्तमानकालिक रूप। सुधारता है,सँभलता है,अच्छा होता है,सुधार करता है।

सुधरि—सुधर कर, बनकर, अच्छा होकर।

सुधरिये—सुधारिये, बनाइये, अच्छा कीजिये।

सुधा—'अमृत' पियूष, अमी। (२) मधुर, मीठा। (३) पानी, जल। (४) सेहुँड़, थूहर।

सुधाकर, सुधाकरु—'चन्द्रमा' इन्दु, निशाकर।

सुधार—बनाव, सजाव, दुरुस्तगी। (२) अच्छे मार्ग पर चलना।

सुधारस—अमृतरस, मीठारस।

सुधारि—सँवार कर, बना कर।

सुधि—स्मरण, चेत, याद।

सुधी—'पण्डित' विद्वान, कोविद।

सुनत—'सुनना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। सुनता है, श्रवण करता है।

सुनाइ, सुनाई—सुना कर, श्रवणगोचर कराकर। (२) सुनाता है, सुन पड़ता है।

सुनाज—सुन्दर अन्न, अच्छा अनाज।

सुनात—सुन पड़ता है, सुनाई देता है।

सुनाभ—सुदर्शनचक्र, विष्णु का हथियार।

सुनाभधरन—'विष्णु' सुदर्शनचक्र के धारण करनेवाले।

सुनाम—सुन्दर नाम।

सुनाये—सुनाया, वर्णन किया।

सुनिखङ्ग—सुन्दर त्रोण, अच्छा तरकस।

सुनिय—सुनिये, श्रवण कीजिये। (२) सुनता हूँ।

सुनियत—सुनता हूँ, श्रवण करता हूँ।

सुन्दर—कान्त, चारु, मञ्जु मञ्जुल, मनहरण, मनोरम, मनोहर, मनोज्ञ, रमणीय, रुचिर, रुच्य, शुभग, शोभन, शोभायमान, सुखम, सलोना, साधु, सुभग, सुषम, सुहावना, खूबसूरत,छबीला। (२) विलक्षण,अद्भुत, अनोखा, निराला।

सुपञ्चनदा सी—सुन्दर पाँचों नदियों के समान।

सुपथ, सुपन्थ—सुन्दर मार्ग, अच्छा रास्ता।

सुपास—सम्पन्नता, सुबीता। (२) सुख, चैन।

सुपासी—सुखी, सम्पन्न, सुबीतेवाला।

सुपूत—सुपुत्र, लायक बेटा।

सुफल—सुन्दर फल, अच्छा नतीजा।

सुबस—स्वतन्त्र, स्वाधीन।

सुबोध—सुन्दर ज्ञान, अच्छा विचार।

सुभग—'सुन्दर' शुभग, मनोहर।

सुभट—योद्धा, वीर, बहादुर।

सुभाइ—सुन्दरबन्धु। (२) स्वाभाविक, सहज।

सुभाउ, सुभाय, सुभाव—'स्वभाव' प्रकृति, आदत। (२) सुन्दर भाव, भला अभिप्राय।

सुभूमि—सुन्दर धरती, अच्छी भूमि।

सुमग—सुन्दर मार्ग, अच्छा रास्ता।

सुमङ्गल—सुन्दर मङ्गल, भला कल्याण।

सुमति—सुबुद्धि, अच्छी समझ।

सुमन—'फूल' पुष्प,प्रसून। (२) सुन्दर मन, अच्छा चित्त। (३) गोधूम, गेहूँ।

सुमारग—सुन्दर मार्ग, सुपथ, अच्छा रास्ता।

सुमिरन—स्मरण, चेत करना, याद करना।

सुमिरत—'सुमिरना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। सुमिरता है, स्मरण करता है।

सुमित्रा—लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता, राजा दशरथजी की भार्या।

सुमित्रासुवन—लक्ष्मण और शत्रुहन।

सुमुख—सुन्दर मुख, प्रसन्नवदन।

सुमेर, सुमेरु—मेरु, सुरालय, हेमाद्रि, हिमाञ्चल, हिमगिरि,तुहिनाचल, हिमालय पहाड़।

सुयश—सुन्दर यश, अच्छी कीर्त्ति ।
सुयोधन—दुर्योधन, धृतराष्ट्र तनय ।
सुर—'देवता' विबुध, अमर ।
सुरगुरु—बृहस्पति, आङ्गिरस, देवगुरु ।
सुरत—सुन्दर रत, अच्छी तरह लगा हुआ ।
सुरतटिनी—'गङ्गा' सुरापगा, देवनदी ।
सुरतरु—'कल्पवृक्ष' देवतरु ।
सुरति—स्मरण, सुधि, याद ।
सुरदुर्लभ—देवताओं को दुर्लभ, जिसका मिलना अमरों को दुर्गम हो ।
सुरनायक, सुरपति—'इन्द्र' देवपति, मघवा ।
सुरपतिसुत—जयन्त, इन्द्रनन्दन ।
सुरपुर—देवलोक, सुरालय ।
सुरपुरबासी—देवलोक निवासी ।
सुरभि—सुगन्ध, महँक, खुशबू । (२) धेनु, गौ, गाय । (३) शल्लकी, सलई ।
सुरभी—'सुरभि' ।
सुरमनि—देवमणि, चिन्तामणि, सुररत्न । (२) विष्णु, नारायण । (३) इन्द्र, शक्र ।
सुररञ्जन—देवताओं को प्रसन्न करनेवाला ।
सुरलोक—देवलोक, सुरालय, अमरावती ।
सुरसरि, सुरसरित, सुरसरिता, सुरसरी—गङ्गा' देवनदी, भागीरथी ।
सुरस्वामिनी—आदिशक्ति, महामाया ।
सुरासुर—(सुर+असुर) देवता और दैत्य ।
सुरुख—सुन्दर रुख, अच्छा चेहरा ।
सुरुचि—सुन्दर रुचि, अच्छी चाह । (२) राजा उत्तानपाद की छोटी स्त्री जिसने पाँच वर्ष की अवस्था में ध्रुव का तिरस्कार कर राजा की गोदी से उन्हें उतार दिया और वे अपनी माता सुनीति के आदेश से वन में तपस्या करने चले गये ।
सुलभ—सुगम, सहल में मिलने लायक ।
सुलक्षण—सुन्दर लक्षण, अच्छे चिह्न,
सुलोक—सुन्दर लोक, वैकुण्ठ ।
सुवन—'पुत्र' बेटा, लड़का ।
सुवर्ण—कञ्चन, कनक, काञ्चन, कलधौत, चामीकर, जातरूप, जाम्बूनद, सोन, स्वर्ण, सोना, हाटक, हिरन्य, हेम, पुरट, सातों खनिज धातुओं में से एक । (२) सुन्दर वर्ण, सुवरण, सुबरन । (३) कर्ष, सोलह मासे की तौल । (४) अमिलतास का वृक्ष ।
सुबास—सुन्दर गन्ध, महँक । (२) अच्छा स्थान, सुगृह ।
सुबाहु—सुभुज, एक बली राक्षस रावण का अनुचर जिसको विश्वामित्र मुनि के यज्ञ की रक्षा करते समय रामचन्द्रजी ने वध किया था ।
सुविचार, सुविचारु—सुन्दर विचार, अच्छी समझ ।
सुविचित्र—अत्यन्त अद्भुत, बड़ा विलक्षण ।
सुशील—सुन्दर शील, पवित्र आचरण ।
सुशृंग—सुन्दर शृङ्ग, सुहावनी चोटी ।
सुसङ्ग—अच्छा सङ्ग, भला साथ ।
सुसमय—सुन्दर समय, अच्छा वक्त ।
सुसाँई—सुन्दर स्वामी, अच्छा मालिक ।
सुसाधन—भला यत्न, सुन्दर उपाय ।
सुसाधित—सुन्दर साधित, अच्छी तरह साधा हुआ । (२) अच्छी तरह करने के योग्य ।
सुसाहेब—सुन्दर स्वामी, सुसाँई ।
सुसेवक—सुन्दर सेवक, अच्छा दास ।
सुसेव्य—सुन्दर सेवनीय, अच्छे प्रकार सेवा के योग्य ।
सुहाइ, सुहाई—सुहानेवाला, अच्छा लगनेवाला ।
सुहात—'सुहाना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप । सुहाता है, भाता है, अच्छा लगता है ।
सुहावन—'सुन्दर' मनोहर, मञ्जु ।
सुहित—सुन्दर हितैषी, अच्छा उपकारी ।
सुहृद—'मित्र' सखा, दोस्त ।
सुक्षम—'सूक्ष्म' अल्प । (२) सुन्दर समर्थ ।
सूखत—'सूखना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप । सूखता है, झुराता है, शुष्क होता है ।

सूचक—ज्ञापक, बोधक, जनानेवाला।
सूचत—सूचित करता है, जाहिर करता है।
सूझ—दृष्टि,निगाह। (२) प्रवेश,समझने की शक्ति।
सूझत—सूझता है, दिखाई देता है।
सूझी—देख पड़ी, दिखाई दी।
सूत—सारथी, रथ हाँकनेवाला। (२) सम्मति, सलाह। (३) डोरा, तागा। (४) पौराणिक, पुराण बाँचनेवाला एक विद्वान् जो क्षत्रिय के वीर्य से ब्राह्मणी के गर्भ द्वारा उत्पन्न हुआ था।
सूदन—क्षय, नाश, संहार करनेवाला।
सूध
सूधे } —सीधा, सरल, सोझ।
सून—'शून्य' खाली। (२) निर्जन, एकान्तस्थल।
सूम—(अर्बी)। कृपण, कञ्जूस, मक्खीचूस। (२) अधम, क्षुद्र, नीच।
सूर—'शूर' योद्धा, सावन्त। (२) सूर्य्य,भानु, दिवाकर। (३) अन्धा, आँधर, दृष्टि हीन।
सूरज—'सूर्य्य' दिवाकर, रवि।
सूरा—'सूर' शब्द का बहुवचन।
सूर्य्य—अरुण, अर्क, अर्यमा, अहर्पति, अहस्कर, आदित्य, करमाली, ग्रहपति, ग्रहेश, चित्रभानु, तपन, तमारि, तरणि, तरणी, तरनि, दिनकर, दिनपति, दिनमणि, दिनेश, दिवाकर, द्वादश आत्मा, पूषण, पूषा, प्रभाकर, भानु, भास्कर, भस्वान्, मार्तण्ड,मिहिर, मित्र, रवि, विकर्तन, विभाकर, विभावसु, विरोचन, विवस्वान, सप्ताश्व, सविता, सहस्रांशु, सूर, सूरज, हरिदश्व, हंस इत्यादि। नवग्रहों में से प्रथम ग्रह। जगत के प्रकाशक तेजोराशि। सूर्य्य ज्योतिष के मत से बारह हैं।
सूल—'शूल' पीड़ा, दुःख।
सूक्ष्म—अल्प, लेश, थोड़ा, तनिक, कम। (२) क्षुद्र, छोटा, लघु। (३) छल, कपट। (४) आत्मज्ञान, ब्रह्म विचार। (५) एक अलङ्कार जिसमें दूसरे का किया सूक्ष्मकृत्य देख कर इशारे से उसका उत्तर दिया जाता है।

सृजेउ
सृज्यो } —सिरजा, उत्पन्न किया, पैदा किया।
सृष्टि—ब्रह्माण्ड की रचना, लोकनिर्माण। (२) उत्पत्ति,जन्म,पैदाइश। (३) संसार, दुनियाँ।
सृष्टिस्रष्टा—लोकरचना के विधाता, ब्रह्मा के समान संसार की रचना करनेवाले।
से—सदृश, सम, समान, उपमा का वाचक।
सेइ—सेवा कर के, खिदमत कर के।
सेइय—सेवा कीजिये, टहल कीजिये।
सेज—शय्या, पर्यङ्क, पलँग।
सेत—'श्वेत' उज्वल। (२) सेतु, पुल।
सेतु—बन्ध, पुल, नदी और समुद्र में लोह पत्थर से बना मार्ग पार करने योग्य। (२) वरुण का पेड़।
सेन—सैन्य, सेना, फौज। (२) बाज, श्येन, सचान। (३) संकेत, सैन, इशारा।
सेनोलूक—(श्येन+उलूक) बाज और उल्लू पक्षी।
सेमर—शाल्मलि, मोचश्रुत, सेमल का वृक्ष बड़ा होता है। इसके फूल और फल लाल रंग के बड़े सुहावने होते हैं। फल के भीतर से रूई निकलती है। सुआ पक्षी सुन्दर फल देख कर चोंच मारता है, किन्तु रूई देख कर निराश हो खेद के साथ उसे त्याग देता है।
सेये
सेयो } —सेवा की, टहल की।
सेल—कुन्त, भाला, बरछा।
सेव—सेवते, सेवा करते। (२) एक फल। (३) सेवा करो, टहल करो, सेवो।
सेवक—दास, टहलू, खिदमत करनेवाला। (२) चाकर, नौकर, गुलाम। (३) हरिभक्त, दास।
सेवकाई—सेवा, टहल, खिदमत।
सेवत—'सेवना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। सेवता है, सेवा करता है, टहल करता है। (२) सेवा करने से, टहल करने से।
सेवा—सेवकाई, टहल, खिदमत।
सेवि
सेवित } —सेवनीय, सेवा की गई।
सेव्य—उपास्य,सेवा करने योग्य। (२) खस,उशीर।

सेव्यमान—सेवित, सेवा किये गये।
सोँ—सम, समान। (२) शपथ, सौंह।
सो—सः, वह, उपमावाचक।
सोइ, सोई—सः, वह, वही।
सोउ, सोऊ—सो, सोऊ, वही।
सोख, सोखु—सोखनेवाला, सुखानेवाला।
सोग, सोच—'शोक' चिन्ता, फ़िक्र।
सोचत—'सोचना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। सोचता है, चिन्ता करता है।
सोध—'शोध' खोज, तलाश।
सोन—'सुवर्ण' सोना, काञ्चन।
सोभ—'शोभ' शोभायमान।
सोम—'चन्द्रमा' इन्दु, विधु। (२) एक यज्ञ का नाम।
सोमज़ाजी—सोमयज्ञ करनेवाला।
सोय—वही, सो। (२) सो कर, निद्रित होकर।
सोये—सोया, निद्रित हुआ।
सोवत—सोता है, नीद वश होता है।
सोष—'सोख' सोखनेवाला।
सोहत—सुहाता है, अच्छा लगता है।
सोहात, सोहातो, सोहै—सुहाता है, सोहता है, अच्छा लगता है।
सौजन्य—सज्जनता, शराफ़त।
सौदा—(फ़ारसी)। क्रय विक्रय की वस्तु, खरीद फरोख़ करने की चीज़। (२) प्रेम, प्रीति।
सौंधी—सीधी, सोझ। (२) अच्छी, भली।
सौन्दर्य—सुन्दरता, शोभा, छबि।
सौन्दर्यनिधि—सुन्दरता के समुद्र।
सौंपिये—समर्पण कीजिये, सपुर्द कीजिये।
सौभाग्य—सोहाग, अहिवात। (२) भाग्य, खुश, क़िस्मती, खुशनसीबी।
सौभाग्यप्रद—सौभाग्य का देनेवाला।
सौमित्रि—'लक्ष्मण' लछिमन।
सौरज—शौर्य, शूरता, वीरत्व।
सौरभ—आम, रसाल, आम्रवृक्ष। (२) सुरभि, सुगन्ध, खुशबू।
संयम—नियम, नेम, इन्द्रियनिग्रह, विषयों से परहेज रखना। (२) अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य, दान न लेना ये पाँचों संयम कहलाते हैं।
संयुत, संयुक्त—युक्त, सम्मिलित, अच्छीतरह मिला हुआ।
संयोग—योग, मेल, मिलाप। (२) दैवयोग, इत्तिफ़ाकन्।
संशय—'सन्देह' शङ्का, शुबहा।
संसर्ग—सम्बन्ध, साथ, सङ्ग।
संसार—जगत, जगती, दुनियाँ, लोक, संसृति, जिसकी ऊपरी बनावट पर प्राणी मुग्ध होकर घना दुःख उठाते हैं।
संसारकान्तार—संसार रूपी वन।
संसारतरन—संसार से पार करनेवाला।
संसारपथ—संसारी मार्ग, नरक का रास्ता।
संसारपाता—संसार से रक्षा करनेवाला।
संसारपादप—संसार रूपी वृक्ष।
संसारसार—संसार के तत्व, जगत में मुख्य।
संसारहर—संसार को हरनेवाले, मोक्षदाता।
संसृति—संसार, जगत, दुनियाँ। (२) आवागमन, जन्म मृत्यु, गर्भबास। (३) ममत्व, मेरा तेरा, अज्ञानता की समझ।
संहार—नाश, ध्वंस, क्षय, प्रलय। (२) वध।
संहारकर्त्ता, संहारकारी—नाशक, प्रलय करनेवाला।
संक्षेप—संक्षिप्त, मुखतसर, थोड़े में।
संत्रास—त्रास, भय, डर।
सिंह—केसरी, पञ्चानन, पञ्चास्य, मृगपति, मृगराज, मृगेन्द्र, हरि। सिंह मृगों का राजा बलवान और सदा निर्भय रहनेवाला होता है।
सिंहासन—सिंह के मुखाकृति का आसन, राज्यासन, भद्रासन, सुवर्णादि से बना हुआ राजा महाराजाओं के बैठने का आसन।

सिंहासनासीन—(सिंहासन+आसीन) सिंहासन पर विराजमान।
सिंहिका—एक राक्षसी राहु की माता का नाम जो समुद्र में टिक कर उड़ते हुए जीव जन्तुओं की परछाहीं पकड़कर उन्हें खा जाती थी। समुद्र लाँघते समय हनूमानजी के हाथ से हत हुई।
स्तम्भ—थम्भ, खम्भ, खम्भा।
स्तुति—प्रशंसा, बड़ाई, तारीफ़।
स्तुत्य—प्रशंसनीय, बड़ाई के योग्य।
स्थल } —जगह, ठौर, ठाँव।
स्थान }
स्थापन—थापना, टिकाना, ठहरना।
स्थापित—स्थापन किया हुआ, ठहराया हुआ।
स्थित—टिका, ठहरा, बैठा।
स्थिति—अवस्था, दशा, हालत। (२) मर्यादा, प्रतिष्ठा, इज्जत। (३) आसन, बैठक, बैठने की जगह।
स्थिर—अचल, स्थित, ठहरा हुआ।
स्नेह—प्रेम,प्रीति। (२) घी तेल चिकने पदार्थ।
स्पष्ट—प्रत्यक्ष, प्रकट, खुला, साफ़।
स्मर—'कामदेव' अनङ्ग। (२) स्मरण, याद।
स्मरण—सुधि, चेत, याद। (२) एक अलङ्कार जिसमें सदृश वस्तु को देख कर किसी की याद आती है।
स्मृति—धर्मशास्त्र, मनुस्मृति आदि। (२) स्मरण, सुधि, याद। (३) एक संचारी भाव जिसमें पूर्वानुभुक्त विषयों की याद आती है।
स्यन्दन—रथ, चक्रयान, बघ्घी।
स्रग—माला, माल्य।
स्रष्टा—ब्रह्मा, विधाता।
स्राध—'श्राद्ध' पिण्डदान।
स्रुत—सुना, सुनने में आया। (२) स्त्रुत, बहता हुआ।
स्रोत—सोता, नाला।
स्व—स्वकीय,निज का,अपना। (२) जीव, आत्मा। (३) सम्पत्ति, दौलत। (४) स्वजन, गोती, कुटुम्बी।
स्वच्छ—निर्मल, शुद्ध, साफ़।
स्वच्छता—निर्मलता, सफ़ाई।
स्वच्छन्द—स्वाधीन, स्वतन्त्र, मनमौजी।
स्वच्छन्दचारी—स्वतन्त्र विचरनेवाला।
स्वतन्त्र—स्वच्छन्द, स्वाधीन, स्ववश।
स्वदृक—अपनी दृष्टि, अपना नेत्र, अपने वास्ते देखना।
स्वपच—'श्वपच' मेहतर।
स्वपर—अपना पराया, मेरा तेरा।
स्वप्न—सपना, ख़्वाब, सोते हुए जागृत अवस्था का कार्य्य करना। (२) निन्द्रा, नींद।
स्वभाव—प्रकृति, टेव, आदत।
स्वर—स्वर वर्ण अ-इ-उ-आदि। (२) आकाश, नाक। (३) स्वर्ग, देवलोक, सुरालय। (४) वज्र, कुलिश। (५) गान विद्या के सातों स्वर, यथा—निषाद, ऋषभ,गान्धार,षड्ज, मध्यम, धैवत और पञ्चम, हाथी का शब्द निषाद, बैल का शब्द ऋषभ, बकरी भेड़ की बोली गान्धार, मोर की बोली षड्ज, कराकुल पक्षी की बोली मध्यम, घोड़े की बोली धैवत और कोकिल की बोली से पञ्चम स्वर की समानता दी जाती है।
स्वरूप—अपना रूप, अपनी देह, स्वशरीर। (२) स्वभाव,निसर्ग,प्रकृति। (३) सुन्दर, मनोहर। (४) पण्डित, विद्वान्, बुध।
स्वर्ग—त्रिदशालय, देवलोक, अमरपुर। (२) आकाश, नाक, व्योम। (३) भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वरलोक, महरलोक, जनलोक, तपलोक और सत्यलोक ये सातों लोक स्वर्ग कहलाते हैं।
स्वर्गसोपान—स्वर्ग की सीढ़ी।
स्वर्ण—'सुवर्ण, कनक, हेम।
स्वलोक—निजलोक, अपना लोक। (२) वैकुण्ठ, परधाम।
स्वल्प—थोड़ा, कम, अल्प।
स्वाँग—कौतुक, खेल, तमाशा। (२) वेश बदलना, नकल करना, भँड़ैती। (३) वेश, बनावट, लिबास।

स्वाति } —पन्द्रहवाँ नक्षत्र जो हर सत्ताइसवें
स्वाती } दिन आता है और शरदऋतु में तेरह या चौदह दिन का इसका भोगकाल माना जाता है। आर्द्रा नक्षत्र से स्वाती पर्यन्त वर्षाकाल होता है । स्वाती के जल से मोती, गोलोचन, बंशलोचन आदि कितनी ही मूल्यवान चीज़ें पैदा होती हैं। चातक पक्षी स्वाती के जल के सिवा दूसरा पानी पीता ही नहीं। 'चातक' शब्द देखो।

स्वाद—'स्वादु' मीठा।

स्वादित—स्वाद पाये हुए, मधुरता जाने हुए।

स्वादु—स्वादिष्ठ, मधुर, मीठा। (२) सुरस, रसीला, ज़ायकेदार । (३) इष्ट, वाञ्छित, चाहा हुआ।

स्वाधीन—स्वतन्त्र, स्वच्छन्द ।

स्वामि—'स्वामी' मालिक ।

स्वामिनि } —ईश्वरी, मालकिन।
स्वामिनी }

स्वामी—प्रभु, स्वामि, पति, मालिक। (२) राजा, नृपाल, नरेश। (३) वैष्णव, आचारी। (४) ईश्वर, ईश। (५) गुरु, उपदेशक। (६) यती, सन्यासी। (७) नेता, अगुवा, प्रमुख।

स्वारथ—स्वार्थ, अपना मतलब ।

स्वारथसाधक—स्वार्थी, खुदग़र्ज़, अपना मतलब चाहनेवाला।

स्वारथ साधन—स्वार्थसाधन, अपना मतलब निकालना, खुदग़र्ज़ी।

स्वारथी—स्वार्थी, अपना मतलबी, खुदग़र्ज़ ।

स्वार्थ—स्वारथ, अपना मतलब।

स्त्री—अङ्गना, अबला, औरत, कान्ता, कामिनी, कोपना, नारी, प्रमदा, महिला, भामिनी; मानिनी, मेहरारू, मेहरिया, योषा, योषित, योषिता, ललना, वधू, वनिता, वरवरनी, वरवर्णिनी, वरारोहा, वामलोचना, वामा, श्यामा।

(ह)

ह—हिन्दी वर्णमाला का तेंतीसवाँ व्यञ्जन और उष्मा का चौथा अक्षर। इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है। (२) शिव, ईशान। (३) पानी, जल। (४) आकाश, व्योम। (५) स्वर्ग, सुरलोक। (६) प्रसिद्ध, विख्यात। (७) त्याग, फेंकना।

हई—ध्वन्स किया, नाश किया, संहार कर डाला।

हटकि—हटक कर, मना करके, वर्जन कर।

हटकेउ—वर्जन किया, मना किया।

हटत—'हटना' शब्द का वर्तमानकालिक रूप। हटता है, पिछड़ता है, पीछे आता है। (२) हटकता है, मना करता है, ममानियत करता है।

हठ—टेक, ज़िद।

हठजोग—हठयोग, हठ से चितवृत्ति को रोकना, बलात्कार योग साधन में प्रवृत्तहोना।

हठि—हठ कर, ज़िद करके।

हठिहठि—बार बार ज़िद करके कार्य करना।

हठी } —हठ करनेवाला, ज़िद्दी, टेकी।
हठीले }

हत—नष्ट, नाश, ध्वंस। (२) बँधा हुआ।

हतभाग्य—भाग्यहीन, अभागा, बदक़िस्मत।

हताश—(हत+आश निराश, नाउमेद।

हति—हत कर, हनन करके, मार कर। (२) वध, संहार, मार डालना। (३) बन्धन, क़ैद, मात। (४) पराजय, हार, हारी। (५) हती, हुती, थी।

हते—हने, मारे, वध किये। (२) हुते, रहे, थे।

हन—ध्वंस, क्षय, नाश। (२) मार, चोट।

हनत—'हनना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। हनता है, मारता है, चोट पहुँचाता है।

हनुमन्त } 'हनूमान' पवनकुमार।
हनुमान }

हनूमान—अञ्जनीकुमार, केशरीनन्दन, पवनपुत्र, महावीर, वायुतनय, हनुमन्त, हनुमान, ग्यारह रुद्रों में प्रथम। शास्त्रों में इनकी उत्पत्ति इस प्रकार कही है कि जब शिवजी को मोहित करने के लिये विष्णु भगवान् ने मोहिनी रूप

धारण किया तब शङ्कर का वीर्यपात हुआ। भगवान् ने उसे हाथ पर ले लिया और अञ्जनी देवि तपस्या करती थी दीक्षा के बहाने कानों के द्वारा पवनदेव की सहायता से उनके उदर में प्रवेश कर दिया। केशरी नाम का बन्दर वृक्ष पर सामने बैठा यह दृश्य देख रहा था। इस प्रकार हनूमानजी का जन्म हुआ और वे पवन-कुमार तथा केशरीसुवन कहलाये। जन्म लेते ही माता से कहा—अम्ब! क्षुधा लगी है। माता बोली कि पुत्र वन में जाकर लाल गोल और मीठे फल खाओ। प्रातःकाल का समय था, सूर्य्य के बिम्ब को लाल और गोल देख कर हनूमानजी ने मन में विचारा कि इसी फल को माता ने खाने के लिये कहा है। तुरन्त उछले और सूर्य्य को गाल में रख लिया। राहु ने जाकर यह समाचार इन्द्र से कहा, उन्हों ने कनपटी में वज्र मारा जिससे हनूमानजी मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़े और सूर्य्य मुख के बाहर निकल गये। पुत्र को बेहोश देख कर पवनदेव बहुत ही नाराज हुए, उन्हों ने तीनों लोकों से अपना प्रभाव समेट लिया। सब देवता, दैत्य, सिद्ध, मुनि व्याकुल होकर पवन के समीप आकर स्तुति करने लगे और हनू-मानजी को सचेत कर दिया। सब ने मिल कर आशीर्वाद दिया कि इनका शरीर वज्र से भी कठिन होगा और हमलोगों के कोई शस्त्रास्त्र इन्हें चोट न पहुँचा सकेंगे। ये अद्वितीय योद्धा होंगे इनके पराक्रम के आगे तीनों लोकों के किसी योद्धा की करनी न चलेगी। पवनदेव प्रसन्न हो पूर्ववत सर्वत्र व्याप्त हुए और देवता आदि अपने अपने लोक को सिधारे।

हन्ता—नाशक, हनन करनेवाला।

हम—अहम्, हम सब।

हय—अश्व, वाजि, घोड़ा।

हयो—हन्यो, मार्यो।

हर—'शिव' सम्भु, महेश। (२) अपहरण, हर लेना। (३) हल, भूमि जोतने का यन्त्र।

हरत } —अपहरण करता है, छीनता है। (२) हरता } हरनेवाला।

हरतार—हरता, हरनेवाला। (२) तालक, चित्र-गन्ध, हरताल।

हरन—हरण, हरना, छीनना।

हरपुरी—'काशी' बनारस।

हरष—'हर्ष' आनन्द, खुशी।

हरषित—'हर्षित' आनन्दित, प्रसन्न।

हरि—विष्णु, अच्युत। (२) सूर्य्य, भानु। (३) चन्द्रमा, इन्दु। (४) पवन, वायु। (५) इन्द्र, मघवा। (६) यमराज, कृतान्त। (७) सिंह, केसरी। (८) अश्व, घोड़ा। (९) बन्दर, कीश। (१०) साँप, भुजङ्ग। (११) शुकपक्षी, सुग्गा। (१२) दादुर, मेढक। (१३) किरण, रश्मि। (१४) पिङ्गल, तामड़ारङ्ग। (१५) अपहारक, हरनेवाला। (१६) हर कर, छीन कर।

हरिजन—रामभक्त, हरिदास।

हरित—हरियर, हरारङ्ग। (२) दिशा, ओर। (३) हरती, हर लेती।

हरिता—हरित्री, हरनेवाली।

हरिधाम—'वैकुण्ठ,' परमधाम।

हरिन—कुरङ्ग, मृग, वातायु, हरिण, हरना, हिरन, एक जंगली जीव जो अधिकांश तामड़े रङ्ग का होता है। इसकी नाभि में कस्तूरी उत्पन्न होती है। जब उसकी सुगन्ध उड़ती है तब उसको यह ज्ञान नहीं होता कि यह भारी खुशबू मेरे शरीर से निकल रही है, वह दौड़ता हुआ जङ्गल पहाड़ों में ढूँढता है। ग्रीष्मऋतु में जब यह प्यास से व्याकुल होता है तब लहराती हुई सूर्य्य की किरणों को पानी समझ कर दौड़ता है; किन्तु सूर्य्य की किरणों में पानी कहाँ? दौड़ते दौड़ते थक कर प्राण गँवा देता है। मृग की यह दोनों मूर्खताएँ प्रसिद्ध हैं, इसी का उदाहरण स्वरूप कवियों ने उल्लेख किया है। 'मृगजल' शब्द देखो।

हरिनवारि—'मृगजल' झूठापानी।

हरिनाम—भगवान का नाम, राम।

हरिपद—विष्णुपद, वैकंठ ।

हरिभक्त
हरिभगत } —भगवद्भक्त, हरिदास ।

हरिभक्ति
हरिभगति } —भगवद्भक्ति, भगवान् की उपासना ।

हरिभजन—भगवद्भजन, हरि की सेवा ।

हरियान—'गरुड़' वैनतेय, पक्षिराज । (२) हरियाना, हरियर हुआ ।

हरिरस—भगवत्प्रेम का आनन्द ।

हरिलोक—'वैकुण्ठ' विष्णुधाम ।

हरिसङ्करी—हरि और शङ्कर की सम्मिलित स्तुति का पद्य जो विनय-पत्रिका में वर्णित है ।

हरी—अपहरण किया, हर लिया । (२) हरे रङ्ग की, हरियर । (३) विष्णु, हरि ।

हरुअ—हरुआ, हलुक, हलका ।

हरुआई—हलुकई, हलकापन ।

हर्त्ता—अपहारक, हरनेवाला ।

हर्ष—आनन्द, आमोद, प्रमोद, ख़ुशी, प्रसन्नता । (२) प्रीति, स्नेह । (३) सुख, चैन । (४) कल्याण, क्षेम । (५) तेंतीस सञ्चारीभावों में एक जिसमें उत्सवादि से चित्त प्रसाद होता है ।

हर्षहाता—हर्ष का नाश करनेवाला ।

हर्षित—आनन्दित, प्रसन्न, ख़ुश ।

हलाहल—'विष', गरल, ज़हर ।

हवन—होम, आहुति ।

हवि—हव्य, हविष्यान्न, यज्ञ के अर्थ बनी हुई खीर । (२) साकल्य, साकला, हवन का पदार्थ (३) घृत, सर्पि, घी ।

हँसि—हँस कर, प्रसन्न होकर ।

हस्त—हाथ, पानि, कर । (२) हस्त नक्षत्र ।

हहर—भय, डर, त्रास ।

हहरि—डर कर, भयभीत होकर ।

हा—खेद, दुःख । (२) शोक, सोच । (३) हाय, आह । (४) आर्ति, पीड़ा ।

हाँक—ललकार, पुकार ।

हाटक—'सुवर्ण' कञ्चन ।

हाता—हन्ता, घातक, नसानेवाला । (२) (अर्बी) । इहाता, घेरा, डँड़वारी ।

हाथ—कर, पाणि, पानि, पञ्चशाख, हस्त, पाँच कर्मेन्द्रियों में से एक ।

हाथी—इभ, करि, करी, कुञ्जर, गज, गजेन्द्र, दन्तावल, दन्ती, द्विप, द्विरद, नाग, पद्मी, बारन, मतङ्ग, वारण, व्याल, हस्ती, द्रविणदेश के पाण्ड्यवंशीय राजा इन्द्रद्युम्न एक बार देव-मन्दिर में बैठे जप करते थे । शिष्यों समेत वहाँ अगस्त्य मुनि आ गये, किन्तु मुनि को देख कर राजा न उठे और न दण्डप्रणाम किया । राजा के तिरस्कार से मुनि ने क्रोधित हो शाप दिया कि तू पशु की भाँति बैठा रह गया जा हाथी होकर बहु काल पर्यन्त पशुयोनि में निवास करेगा । ग्राह से पकड़े जाने पर भगवान् का नाम लेकर दीनता से पुकारेगा तब विष्णु भगवान् स्वयम् आकर तेरा उद्धार करेंगे । वही हाथी अपने कुटुम्बियों के साथ एक बार सरोवर में विहार करता था कि ग्राह ने पाँव पकड़ लिया । सब तरह हार कर भगवान् का नाम लेकर पुकारा, लक्ष्मीनाथ पैदल दौड़े आये और ग्राह से छुड़ा कर दुःख दूर किया तथा दोनों शाप मुक्त हो अपनी गति को प्राप्त हुए । 'मगर' शब्द देखो ।

हानि—घाटा, टोटा, नुकसान ।

हाय—खेद, आह, अफसोस ।

हार—मुक्तावली, मुक्तमाल, मोती का हार । (२) पराजय, पराभव, हारी । (३) दुःख, क्लेश, पीड़ा ।

हारना—पराजित होना, हार जाना । (२) गँवाना, खोना ।

हारि—पराजित होकर, हार कर । (२) हरनेवाली ।

हारिनी—हरित्री, हारि, हरनेवाली ।

हारिपर्यो—हार पड़ा, पराजित हुआ ।

हारी—हरनेवाली, छोरनेवाली । (२) हार ।

हास—हास्य, हँसी, मजाक । (२) साहित्यशास्त्र के अनुसार नव रसों में से एक जिसका स्थायी भाव हँसी है ।

हाहा—हाय हाय। (२) एक गन्धर्व का नाम।
हाहाकरि—हाय हाय करके।
हि—निश्चय वाचक।
हित—उपकार, भलाई, नेकी। (२) मित्र, सखा, दोस्त। (३) निमित्त,हेतु,कारण। (४) सम्बन्धी, हितू, नातेदार। (५) प्रीति, प्रेम, मुहब्बत। (६) उचित, योग्य, ठीक।
हितकारी—हितैषी, भलाई करनेवाला।
हितता—उपकारिता, हिताई।
हितहानि—हित की हानि, उपकार का टोटा।
हितहीनता—उपकार की न्यूनता, भलाई की कमी।
हितहेरि—भलाई देख कर, उपकार लख कर।
हितू, हितै—'हित' मित्र, दोस्त।
हिम—तुषार,तुहिन,पाला,बरफ़। (२) शीतल,ठण्ढा। (३) हेमन्त ऋतु, अगहन और पूस का महीना।
हिमकर—'चन्द्रमा' इन्दु, निशाकर।
हिमयामिनी—जाड़े की रात, हिम निशा।
हिमसैल—'सुमेरु,' हिमालय पर्वत।
हिय—'हृदय' मन, चित्त।
हियहारि—हृदय में हार कर।
हियहेरि—हृदय में देख कर।
हिया, हिये—'हृदय,' हिय, मन।
हियाउ, हियाव—साहस, हिम्मत।
हिरदय—'हृदय' चित्त, मन।
हिलोर, हिलोरे—वीचि, तरङ्ग, लहर।
ही—निश्चय वाचक। (२) हृदय, हिय। (३) अहो, विस्मय वाचक।
हीको—हृदय को, चित्त को, मन को।
हीन—न्यून, लघु, थोड़ा। (२) रहित, बिना, ख़ाली। (३) दरिद्र, कंगाल,ग़रीब। (४) गर्हित, निन्दित, निन्दनीय। (५) त्यक्त, त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
हीनता—लघुता, न्यूनता, गरीबी।
हीनसुख—सुख रहित आनन्द से ख़ाली।
हीय—'हृदय' हिय।
हीर—सत्व, सार।
हुत—हवन का पदार्थ, होम की सामग्री। (२) अग्नि, पावक।
हुतासन—'अग्नि', हुताशन, अनल।
हुतो—था, रहा।
हुलसत—हुलसता है, प्रसन्न होता है।
हुलसि—हुलस कर, प्रसन्न होकर।
हुलसी—प्रसन्न हुई, ख़ुश हुई। (२) तुलसीदास जी की माताका नाम।
हूँ—हाँ, सही, स्वीकृति वाचक। (२) वर्तमान काल एक वचन उत्तम पुरुष का चिह्न।
हृद, हृदय—हृत्, हृदि, हिय, हिया, हियो, हिरदय, ही, हीय, चित्त,मन, मानस, चार अन्तरेन्द्रियों में से एक।
हृदि—'हृदय', मन।
हृषीकेश—(हृषीक+ईश) विष्णु, केशव।
हे—सम्बोधन, आह्वान करना।
हेठ—नीचे, खाले, तरे। (२) नीच, अधम।
हेत—'हेतु' कारण। (२) लिये, वास्ते। (३) प्रेम।
हेतु—कारण, हेत, वजह। (२) प्रयोजन, मतलब। (३) लिये, वास्ते। (४) प्रेम, स्नेह, प्रीति। (५) एक अलंकार जिसमें कारण और कार्य का साथ ही वर्णन होता है।
हेतुरहित—अकारण, बिना प्रयोजन, बेमतलब।
हेतुबाद—स्वार्थपरता, खुदगर्जी, अपने मतलब की बात। (२) नास्तिकता,पाखंडमत,नास्तिकपन।
हेम—'सुवर्ण' स्वर्ण, सोना।
हेमलता—सुवर्णलता, स्वर्णवल्ली, सोने की बेल। (२) मालकङ्गनी, मालकाकुन।
हेरम्ब—'गणेश,' गजानन, गणपति।
हेरि—ढूँढ़ कर, खोज कर, तलाश कर। (२) देख कर, निहार कर।
हेरिये—अवलोकिये,निहारिये। (२) ढूँढ़िये,खोजिये।
हेलया—खेल ही में, कूतूहल से।
हेला—क्रीड़ा, केलि, खेल। (२) मेहतर, ख़ाकरोब। (३) संयोग काल में नायक को प्रसन्न करने के

लिये ढिठाई के साथ नायिका का विविध विलास हेला हाव कहलाता है।
हैं—विद्यमानता सूचक अव्यय।
है—सम्बोनार्थ वाचक।
हो—सम्बोधन का चिह्न।
होइ
होई
होउ
होऊ —होय, होवे।
होड़—बाजी, शर्त्त।
होत—'होना' शब्द का वर्तमान कालिक रूप। होता है, हो रहा है।
होलिका—होली, ढुँढ़ेरी, होल्लइ। वह घास फूस और काठ का कूड़ा जो प्रत्येक नगर गाँव में फाल्गुण शुक्ल पूर्णिमा को जलाया जाता है।
होलिय—हाली, फगुआ, फाग। (२) धमार, चाँचरि राग जो फाल्गुण मास में गाया जाता है।
होहिँ—होंगे, होते हैं।
होहु—होउ, हो।
हौं—हम। (२) मैं।
हौ—हो, होउ।
हौंहूँ—हम भी। (२) मैं हूँ।
हंस—मराल, मानसौकस, राजहंस। (२) सूर्य्य, भानु।
हिंसा—वध, मारण, हत्या। (२) चोरी, तस्करी।
हिंसारत—जीव हत्या में अनुरक्त, चोरी ठगहारी में लगा हुआ।
ह्रद—कुण्ड, दह, गहरे जल की तलैया।
ह्रास—क्लान्ति, थकावट, हरास। (२) अवनति, कमी, घटती। (३) क्षय, नाश।
ह्वै—होइ, हो।
ह्वैहै—होइहै, होगा।
ह्वैहौं—होइहौं, होऊँगा।

(क्ष)

क्ष—क और ष का संयुक्ताक्षर जिसका उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है। कोशकारों ने इस वर्ण को 'क' अक्षर की श्रेणी में लिखा है।
क्षई—क्षयी, राजयक्ष्मा, तपेदिक।
क्षण—तीस कला, चार मिनट का समय। (२) समय, काल, वक्त। (३) विश्राम, ठहराव, विराम। (४) उत्सव, जलसा। (५) निरुद्यम, बेरोज़गार।
क्षणिक—क्षणभङ्गुर, छनिक, अनित्य।
क्षत—व्रण, पिरकी, फाड़ा। (२) घाव, खत, जख़म। (३) आघात पहुँचाना, मारना।
क्षति—छति, नाश, हानि।
क्षम—समर्थ, योग्य, छम। (२) पराक्रम, शक्ति।
क्षमता—सामर्थ्य, छमता, योग्यता।
क्षमा—छमा, शान्ति, सहिष्णुता, सहनशीलता, एक प्रकार की चित्तवृत्ति जिससे दूसरे के द्वारा पहुँचाये हुए कष्ट को चुपचाप सह लेते हैं और बदला लेने की इच्छा नहीं करते।
क्षय—नाश, ह्रास, क्रमशः घटना। (२) प्रलय, कल्पान्त। (३) क्षयी, राजयक्ष्मा। (४) अन्त, समाप्ति। (५) घर, मकान।
क्षरण—छरन, छलना, धोखा देना। (२) छलनेवाला, धोखा देनेवाला। (३) स्राव होना, चूना। (४) क्षय होना, नाश होना।
क्षत्र—क्षत्रिय, क्षत्री, द्वितीय वर्ण। (२) राष्ट्र, देश, मुल्क। (३) पराक्रम, बल, जोर। (४) शरीर, देह। (५) धन, सम्पत्ति। (६) पानी, जल।
क्षत्रिय—क्षत्री, द्वितीय वर्ण, इस वर्ण के मनुष्यों का कर्त्तव्य शासन और देश को बाहरी शत्रुओं से रक्षा करना है।
क्षत्रियाधीस—(क्षत्रिय+अधीश) क्षत्रियों के मालिक, राजा।
क्षाम—कृश, क्षीण, दूबर, छाम। (२) न्यून, अल्प, थोड़ा। (३) क्षय, ध्वन्स, नाश।
क्षार—छार, खार, लवण, नमक। (२) भस्म, राख, राखी। (३) सज्जी शोरा सोहागा आदि।
क्षालित—छालित, स्नान किया, धोया हुआ। (२) साफ़ किया हुआ।
क्षिति—'पृथ्वी' धरती, ज़मीन। (२) क्षय, ध्वन्स, नाश। (३) निवासस्थल, रहने की जगह।

क्षितिपति, क्षितिपाल—'राजा' भूपति, भूपाल ।

क्षीण—खिन्न, दुर्बल, दुबला । (२) सूक्ष्म, अल्प, लेश । (३) क्षयशील, घटा हुआ ।

क्षीणता—खिन्नता, दुर्बलता, दुबलापन । (२) सूक्ष्मता, लघुता ।

क्षीर—'दूध' दुग्ध, पय । (२) पानी, जल । (३) खीर, दूध में पका चावल । (४) वृक्ष का दूध जो सूख जाने पर पर गोंद कहलाता है ।

क्षीरसागर, क्षीराब्धि—क्षीरनिधि, पयोधि, जिस समुद्र में सदा विष्णु भगवान् शयन करते हैं ।

क्षीराब्धिवासी—'विष्णु' क्षीरसागर में निवास करनेवाले ।

क्षुण्ण—पिसा, चूर्ण किया गया, चूर चूर हुआ ।

क्षुद्र—तुच्छ, अल्प, लघु । (२) कृपण, सूम, (३) अधम, नीच । (४) क्रूर, निर्दय । (५) दरिद्र, कङ्गाल ।

क्षुधा—भूख, भोजन की इच्छा ।

क्षुधित—भूखा, छुधित, जिसको भूख लगी हो ।

क्षुर—छुरा, छूरा, अस्तुरा । (२) वह बाण जिसकी गाँसी छूरे की धार के समान हो । (३) गोक्षुरक, गोखुरू ।

क्षुरधार—छूरे की धार, चोखी धार का छुरा ।

क्षेम—'कल्याण' मङ्गल, कुशल । (२) सुख, आनन्द, मोद । (३) मोक्ष, मुक्ति । (४) उन्नति, अभ्युदय । (५) सुरक्षा, हिफ़ाजत ।

क्षेत्र—केदार, खेत, वह धरती जहाँ अन्न बोते हैं । (२) स्थान, प्रदेश । (३) तीर्थस्थल, तीर्थ की भूमि । (४) शरीर, देह । (५) भार्या, पत्नी ।

क्षोभ—छोभ, व्याकुलता, खलबली, घबराहट । (२) विचलता, हलचल, डाँवाडोल । (३) भय, त्रास, डर । (४) शोक, चिन्ता, रञ्ज । (५) क्रोध, गुस्सा ।

क्षोभित—क्षुब्ध क्षुभित, क्षोभ से भरा, घबड़ाया हुआ । (२) भयभीत, त्रस्त, डरा हुआ ।

क्ष्मा-'पृथ्वी' वसुधा, भूमि ।

(त्र)

त्र—त और र का संयुक्ताक्षर जिसका उच्चारण स्थान दन्त और मूर्द्धा है । कोशकारों ने इसको 'त' अक्षर की श्रेणी में लिखा है ।

त्रय—तीन, दो और एक की संख्या ।

त्रयताप—'त्रिताप' तीनों ताप ।

त्रयनयन—'शिव' त्रिनेत्र, महादेव ।

त्रयलोक—'त्रिलोक' तीनों लोक ।

त्रयवर्ग—त्रिवर्ग, अर्थ, धर्म, काम । (२) सत्व, रज और तम । (३) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य । (४) वृद्धि, स्थिति और नाश । (५) त्रिफला और त्रिकुटा आदि ।

त्रयव्याधि—आधिदैहिक, आधिदैविक और आधिभौतिक पीड़ा । (२) काम, क्रोध और लोभ ।

त्रसित, त्रस्त—भयभीत, डरा हुआ (२) दुःखित पीड़ित, सताया हुआ । (३) भीरु, डरपोक । (४) विस्मित, चकित ।

त्रस्यो—त्रस्त, भयभीत, डरा हुआ ।

त्राण—रक्षा, बचाव, हिफ़ाजत । (२) कवच, सनाह, बखतर (३) त्रात, रक्षित ।

त्राणकेतु—रक्षा के पताका, ध्वजा पर बैठ कर रक्षा करनेवाला ।

त्रात, त्राता—रक्षक' रखवार हिफ़ाजत करनेवाला । (२) रक्षित, रखवाली किया हुआ ।

त्रातुमे—हमारी रक्षा कीजिये ।

त्रान—त्राण, रक्षा-बचाव । (२) कवच, बखतर ।

त्रास—भय, डर, खौफ़ । (२) क्लेश' कष्ट, तकलीफ । (३) एक संचारी भाव जब अकस्मात चित्त में विक्षेप उत्पन्न होता है ।

त्रासक, त्रासकारी—त्रास उत्पन्न करनेवाला, डरानेवाला (२) भगानेवाला, दूर करने वाला ।

त्रासनिधि—भयसागर, डर का समुद्र ।

त्रासित—त्रस्त, त्रसित, डराया हुआ ।

त्राहि—रक्षा करो, बचाओ ।

त्रिकाल—तीनों काल अर्थात् भूत, वर्तमान और भविष्य । (२) प्रातः, मध्याह्न और सन्ध्या ।

त्रिकोण—तिकोन, तीन कोन की वस्तु । (२) योनि, जननेन्द्रिय ।

त्रिगुण—तीनों गुण सत्व, रज और तम। (२) दुर्गा,भगवती। (३) तंत्र में एक प्रसिद्ध बीज।
त्रिजग—तीनों लोक स्वर्ग, पृथवी और पाताल। (२) तिर्यक्, तिरछे वा आड़े चलनेवाले जीव पशु पक्षी आदि।
त्रिजगजोनि—तिर्यक्योनि, तिरछी योनिवाले जीव पशु पक्षी आदि।
त्रिताप—दैहिक,दैविक और भौतिक तीनों ताप।
त्रिदोष—बात, पित्त और कफ, इन तीनों के कोप से उत्पन्न हुआ ज्वर, सन्निपात। (२) काम, क्रोध और लोभ।
त्रिपथ—तीनों मार्ग स्वर्ग, पृथवी और पाताल। (२) कर्म, उपासना और ज्ञान।
त्रिपथगा—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल तीनों मार्ग में गमन करनेवाली गङ्गाजी।
त्रिपुर—महाभारत के अनुसार वे तीनों नगर जो तारकासुर के तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माला नामक तीनों पुत्रों ने मय दानव से अपने लिये बनवाया था इनमें एक नगर सोने का स्वर्ग में था, दूसरा अन्तरिक्ष में चाँदी का तथा तीसरा मर्त्यलोक में लोहे का था। जब इन असुरों ने बड़ा उपद्रव मचाया तब देवताओं के विनय करने पर तीनों नगरों को एक ही बाण में शिवजी ने नष्ट कर दिया और पीछे तीनों राक्षसों का बध किया। इसी से शिवजी त्रिपुरारि, त्रिपुरान्तक, त्रिपुर के बैरी, कहे जाते हैं।
त्रिपुरारि, त्रिपुरारी—'शिव' त्रिपुरान्तक।
त्रिभुवन—स्वर्ग, धरती और पाताल तीनों लोक।
त्रिभुवनपति—'विष्णु' त्रिलोकीनाथ।
त्रिया—'स्त्री' वामा, औरत।
त्रिलोक—त्रिभुवन, स्वर्ग पृथ्वी और पाताल।
त्रिलोचन—'शिव' त्र्यनयन।
त्रिवली—त्रिबली, वे तीन रेखाएँ जो पेट पर पड़ती हैं जिनका सौन्दर्य में वर्णन होता है।
त्रिविध—तीन प्रकार का, तीन तरह का।
त्रिविध धाम, त्रिविध ज्वर, त्रिविध ताप—'त्रिताप' तीनों ताप।
त्रिविधार्त्ति—(त्रिविध+आर्त्ति) तीनों प्रकार के दैहिक, दैविक और भौतिक दुःख।
त्रिवेणी—तीन नदियों का संगम, गंगा, यमुना, और सरस्वती का सम्मेलन जो प्रयाग में हुआ है। 'प्रयाग' शब्द देखो।
त्रिशिर—त्रिशिरा, तीन मस्तक वाला राक्षस जो रावण का बन्धु था और खर दूषण के साथ दण्डकवन में रहता था रामचन्द्रजी के हाथ से युद्ध में मारा गया। (२) ज्वर पुरुष जिसे दानवों के राजा बाण की सहायता के लिए शिवजी ने उत्पन्न किया था जिसके तीन सिर, तीन पैर, छे हाथ और नौ आँखें कही गई हैं।
त्रिशूल—रुद्रास्त्र, शिवजी का हथियार, एक अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं। (२) त्रिताप, त्रयशूल, तीनों तरह की पीड़ा।
त्रुटि—न्यूनता, अभाव, कमी। (२) सूक्ष्म, अल्प, लेश। (३) चूक, भूल, गलती। (४) संशय, शङ्का, सन्देह। (५) छोटी इलायची।
त्रेता—चारों युगों में से दूसरा युग, इसकी अवधि बारह लाख छानबे हज़ार वर्ष की है। इस युग में मनुष्यों की आयु दस हज़ार वर्ष और मनु के मतानुसार तीन सौ वर्ष की होती है।
त्रै—त्रय, तीन, तीनि।
त्रैलोक, त्रैलोक्य—'त्रिलोक' त्रिभुवन, तीनों लोक।

(ज्ञ)

ज्ञ—ज और ञ का संयुक्ताक्षर जिसका उच्चारण स्थान तालु है। कोशकारों ने इसका 'ज' अक्षर की श्रेणी में उल्लेख किया है। (२) ज्ञान,विवेक। (३) ज्ञानी, बोधवान। (४) पण्डित, बुध। (५) ब्रह्मा, विधाता।
ज्ञात—विदित, जाना हुआ (२) ज्ञान, बोध।

ज्ञाता—जाननेवाला, जानकार।

ज्ञाति—जाति, सगोत्र, बान्धव, स्वजन, गोती। (२) वर्ण, कौम।

ज्ञान—विवेक' बोध, विचार, समझ ,जानकारी। (२) मोक्ष में बुद्धि लगाना, न्याय आदि दर्शनों के अनुसार जब विषयों का इन्द्रियों के साथ और इन्द्रियों का मन के साथ और मन का आत्मा के साथ सम्बन्ध होता है तभी ज्ञान उत्पन्न होता है। मीमांसा को छोड़ कर प्रायः सब दर्शनों ने ज्ञान से मोक्ष माना है। न्याय में ज्ञान द्वारा मिथ्या ज्ञानका नाश, मिथ्याज्ञान के नाश से दोष का नाश, दोष न रहने पर प्रवृत्ति से निवृत्ति, प्रवृत्ति के नाश से जन्म से निवृत्ति और जन्मके निवृत्ति से दुःख का नाश, दुःखनाश से मोक्ष माना है। सांख्य ने पुरुष और प्रकृति के बीच विवेक ज्ञानप्राप्त होने से जब प्रकृति हट जाती है तब मोक्ष का होना कहा है।

ज्ञानअवधेश—ज्ञान रूपी अयोध्यानरेश, विवेक रूपी राजा दशरथ।

ज्ञानघन—ज्ञानराशि, ज्ञान के समूह। (२) ज्ञान के मेघ, ज्ञान रूपी जल बरसानेवाले बादल।

ज्ञाननिधान—ज्ञान के स्थान, ज्ञान मन्दिर।

ज्ञानप्रद—ज्ञानदाता, बोध उत्पन्न कारक।

ज्ञानप्रिय—ज्ञान के प्रेमी, ज्ञान के प्यारे। (२) ज्ञान को प्यार करनेवाले, ज्ञान से स्नेह रखनेवाले।

ज्ञानमूल—ज्ञान की जड़।

ज्ञानअरि } —अज्ञान, काम क्रोधादि।
ज्ञानरिपु }

ज्ञानवान—ज्ञानी, बोधवान।

ज्ञानव्रत—बोधव्रती, ज्ञान का व्रत धारण करनेवाला।

ज्ञानशाली—ज्ञान से युक्त, बोध मय।

ज्ञानसुग्रीव—ज्ञान रूपी सुग्रीव, बोध रूपी कपिराज।

ज्ञानी—ज्ञानवान, बोधवान, जिसको ज्ञान प्राप्त हो, जानकार, समझदार, जाननेवाला ज्ञाता। (२) तत्वज्ञानी, आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मपद को जाननेवाला। (३) दैवज्ञ, ज्योतिषी।

ज्ञेय—जानने योग्य, जिसका जानना कर्त्तव्य हो, ब्रह्मज्ञानी लोग एकमात्र ब्रह्म ही को ज्ञेय मानते हैं, जिसको जाने बिना मोक्ष नहीं हो सकता। (२) जिसका जानना सम्भव हो, जो जाना जा सके।

इति श्रीविनयकोश समाप्त।

शुभमस्तु मङ्गलमस्तु

Printed at The Belvedere Press, Allahabad, by E. Hall.

लोक परलोक हितकारी (सचित्र)

(चौथा छापा—सपरिशिष्ट)

इस पुस्तक में देश और विदेश के अनेकों संतों, महात्माओं और विद्वानों की उक्तियों का संग्रह है। बालक से वृद्ध तक सभी इसको पढ़ कर आनन्द प्राप्त कर सकते हैं और अपने जीवन को महत्व पूर्ण बना सकते हैं। इस पुस्तक को पढ़ कर मनुष्य संसार के दुर्व्यसनों से तो बच ही सकता है परन्तु स्वर्गवासी हो जाने पर परलोक को भी बना सकता है। अब तक ऐसी कोई पुस्तक नहीं प्रकाशित हुई जिसमें कि महात्माओं की सूक्तियों का संग्रह हो। इसके तीन संस्करण बिक चुके यह चौथा संस्करण है। यही इसकी उत्तमता का प्रमाण है। मूल्य बेजिल्द का ।।।=) और सजिल्द का १।) मात्र है।

नव-कुसुम

(प्रथम भाग)

इस पुस्तक में कई अति मनोहर और भावपूर्ण कहानियाँ संग्रहीत हैं। कहानियाँ बड़ी रोचक और शिक्षा प्रद हैं। इसको पढ़ने से जीवन की सभी घटनायें व्यक्त होने लगती हैं। भाषा बहुत सीधी सादी है जिससे कि साधारण लोग भी आनन्द ले सकें। पढ़िये और घरेलू ज़िन्दगी का आनन्द लूटिये। मूल्य केवल ।।।) है।

मिलने का पता—मनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

संतबानी पुस्तकमाला

[जीवन-चरित्र हर महात्मा के उन की बानी के आदि में दिया है]

कबीर साहिब का साखी-संग्रह	१=)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहिला भाग	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	।=)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	≡)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते और झूलने	।=)
कबीर साहिब की अखरावती	=)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	॥-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १	१=)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित	१=)
तुलसी साहब का रत्नसागर	१।-)
तुलसी साहब का घट रामायण पहला भाग	१॥)
तुलसी साहब का घट रामायण दूसरा भाग	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली सटिप्पण पहला भाग	१॥)
गुरु नानक की प्राण संगली दूसरा भाग	१॥)
दादू दयाल की बानी, भाग १ "साखी"	१॥)
दादू दयाल की बानी, भाग २ "शब्द"	१)
सुन्दर बिलास	१-)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	॥।)
पलटू साहिब भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कवित्त सवैया	॥।)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	॥।)
जगजीवन साहिब की बानी, पहला भाग	॥।-)
जगजीवन साहिब की बानी, दूसरा भाग	॥।-)
दूलन दास जी की बानी	।)॥
चरनदास जी की बानी, पहला भाग	॥।-)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	॥।)
ग़रीबदास जी की बानी	१।-)
रैदास जी की बानी	॥)

दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर ...	।≡)॥
दरिया साहिब (बिहार) के चुने हुए पद और साखी ...	।-)
दरिया साहिब (माड़वाड़ वाले) की बानी ...	।≡)
भीखा साहिब की शब्दावली ...	॥=)॥
गुलाल साहिब की बानी ...	॥।=)
बाबा मलूकदास जी की बानी ...	।)॥
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासा ...	-)
यारी साहिब की रत्नावली ...	=)
बुल्ला साहिब का शब्दसार ...	।)
केशवदास जी की अमीघूँट ...	-)॥
धरनीदास जी की बानी ...	।=)
मीरा बाई की शब्दावली ...	॥)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश ...	।≡)॥
दया बाई की बानी ...	।)
संतबानी-संग्रह, भाग १ [साखी] ...	१॥)
[प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित]	
संतबानी-संग्रह भाग २ [शब्द] ...	१॥)
[ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जो पहले भाग में नहीं हैं]	
	कुल ३२ ।-)
अहिल्या बाई ...	≡)
दुःख का मीठा फल ...	॥।=)
कर्मफल ...	॥।)
प्रेम तपस्या ...	॥)
विनय पत्रिका (सचित्र और सटीक) ...	२॥)
विनय कोश ...	२)
सचित्र द्रौपदी ...	॥।)
लोक परलोक हितकारी (चौथा छापा, सचित्र) ...	॥।=)

दाम में डाक महसूल व रजिस्टरी शामिल नहीं है वह इस के ऊपर लिया जाएगा। कृपा कर अपना पता साफ़ साफ़ लिखिए।

मिलने का पता

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।